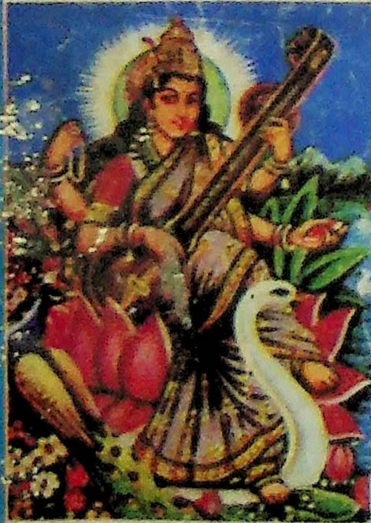
अज्ञानान्धविनाशाय नभोगणतुलां वहन् ॥ ॥श्रीगणेशाय नमः॥ "विश्वविजय पंचाङ्गं" सदाऽस्तु विदुषां मुदे

श्री महासरस्वत्यै नमः।



महोअर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना।
धियो विश्वा विराजति ॥

राजा गुरु



मंत्री गुरु

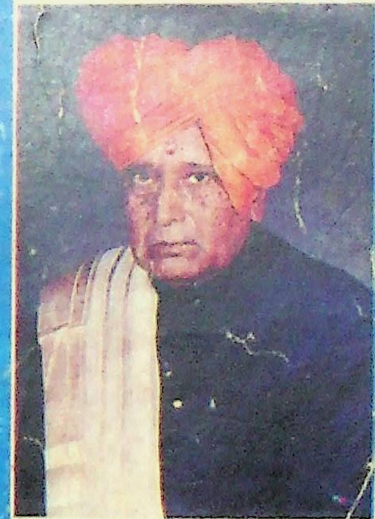
नवैः प्राच्यैर्मार्गैरखिलनिगमाद्यैरपि तथा।
समानीतात्सारादु गणितमनवद्यं वहति यः॥



श्रीसनातनधर्म-प्रतिनिधिसभया सम्मानितम्

सदास्तेऽयं प्रज्ञैर्विविधगणितज्ञैरपि मतः।
सुरम्यं पंचाङ्गं भुवि जयते 'विश्वविजयः'॥

अ.भा.ज्योतिष-परिषद् के मुख्य अध्यक्ष



श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य
सोलन (हिमाचल प्रदेश)

श्रीविश्वविजय-पञ्चांगम्

श्री विक्रम सवत् २०४६ शकः १९११ सन् १९८९-९० भारतीय गणराज्य सम्वत् ४०-४१

सम्पादक-श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी- ज्योतिषाचार्य,मुख्य अध्यक्ष-अ.भा.ज्योतिषपरिषद् (भारत सरकार से रजिस्टर्ड) ज्योतिष्मती-निकेतन,सोलन,हि.प्र.

मू. रु १७.००
सजिल्द
रु. २०,००

प्रकाशक
ज्योतिष्मती प्रकाशन
सहगलपुरा
मथुरा (उ.प्र.) २८१००१

वर्ष-४५

विषय – सूची

प्रकाशकीय-निवेदन

(श्री विश्व विजय पञ्चांग के स्नेही श्रद्धालु पाठकों विक्रेताओं एवं अपने स्नेही स्वजनों से)

प्रिय बन्धुवर

जगत जननी माँ भगवती की प्रेरणा से एवं पितृतुल्य श्रद्धेय श्री पंडित हरदेव शर्मा जी त्रिवेदी के असीम स्नेह व शुभाशीर्वाद से, हमें आपके समक्ष **'श्री विश्वविजय पञ्चांग'** सम्वत् २०४६ वि. नवीन प्रारूप एवं उत्कृष्ट, अनूठी साज सज्जा के साथ प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष हो रहा है। गत वर्ष जैसा कि हमने आप को विश्वास दिलाया था कि अगामी वर्ष हम समय से पूर्व ही पञ्चांग प्रकाशित कर आ[illegible]ह भागी बनेंगे, किन्तु इस वर्ष कुछ विशिष्ट कारणों से पञ्चांग प्रकाशन में विलम्ब हो गया। पाठकों एवं पञ्चांग स्नेहियों से इसका हमें दुःख है। हम उन्हें विश्वास दिलाते हैं कि माँ जगदम्बा की कृपा से सं. २०४७ का पञ्चांग हम उन्हें समय से बहुत पूर्व ही पञ्चांग प्रकाशित कर देंगे। आशा है कि आप इस विलम्ब की ओर ध्यान न देकर अपना स्नेह बनाये रखेंगे।

गत वर्षों में हमने पञ्चांग के कागज मुद्रण-साज-सज्जा में आमूल-चूल परिवर्तन कर पञ्चांग को नितांत नवीन प्रारूप में आपकी सेवा में प्रस्तुत किया है, और आप लोगों ने अति विलम्ब के उपरान्त भी जिस गर्मजोशी से पञ्चांग का स्वागत किया उसके लिए हम आपके हृदय से आभारी हैं। आपकी उस प्रेरणा से ही उत्साह प्राप्त कर हमने इस वर्ष पञ्चांग को और भी आकर्षक, उपयोगी एवं त्रुटिहीन बनाने का प्रयत्न किया है। गत वर्ष चतुर्थ प्रयास होने के कारण मुद्रण में सुधार किये थे। इस वर्ष भी हमारा यही प्रयत्न रहा है कि हम पञ्चांग के सर्वांग सुन्दर रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत कर सकें। हो सकता है फिर भी शीघ्रता के कारण कुछ त्रुटियाँ रह गई हों, विज्ञ, सुधी पाठकगण पत्र द्वारा उन त्रुटियों की ओर हमारा ध्यानाकर्षित करेंगे तो हमें हर्ष होगा ताकि भविष्य में हम उनमें आवश्यक सुधार कर पञ्चांग को पूर्ण प्रतिष्ठा के अनुरूप बना सकें। अपने पाठकों के सुझावों की हमें हमेशा ही प्रतीक्षा रहती है। हमारी सद्भाव अभिलाषा है कि हम इस पञ्चांग प्रकाशन का स्तर राष्ट्रीय ही नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर कर सकें। इस इच्छापूर्ति के लिए आप सभी विज्ञ पाठकों का सहयोग आवश्यक है। इस वर्ष पञ्चांग को पूर्वापेक्षा अधिक उपयोगी बनाने के ध्येय से कई नवीन उपयोगी लेखों एवं सामग्री का समावेश किया है। पञ्चांग की पृष्ठ संख्या अधिक है एवं कागज उत्तम स्तर का है। कागज मूल्य में काफी वृद्धि हो गई है तथापि आपलोगों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए मूल्य में नाम मात्र ही वृद्धि की है।

हमें पञ्चांग पाठकों श्रद्धालुओं, आदरणीय श्रद्धेय विद्वान पं. श्री हरदेव शर्मा जी त्रिवेदी के समक्ष नतमस्तक हैं, एवं सदा ही उनके मार्गदर्शन, स्नेह एवं सहयोग के आकांक्षी हैं। हम अनन्य मित्र श्री महेशनाथ समाधिया एवं श्री सत्यप्रकाश मंगला व श्री नरेन्द्र भटनागर एवं श्री हर्षपति नौटियाल के अत्यधिक आभारी हैं, जिन्होंने पञ्चांग प्रकाशन व्यवस्था में अत्यधिक सहयोग दिया है एवं सदैव ही हमारे मार्गदर्शक रहे हैं। हम समस्त ज्योतिष्मती परिवार ज्योतिष्मती निकेतन के कार्यकर्त्ताओं एवं उन सभी सहयोगियों (जिनका नाम स्थानाभाव के कारण नहीं दे पा रहे हैं) को साभार धन्यवाद देते हैं जिनके सहयोग एवं कर्मठता से पञ्चांग का प्रकाशन किया गया है। हार्दिक शुभकामनाओं के साथ धन्यवाद सहित

सहयोगी—आकांक्षी

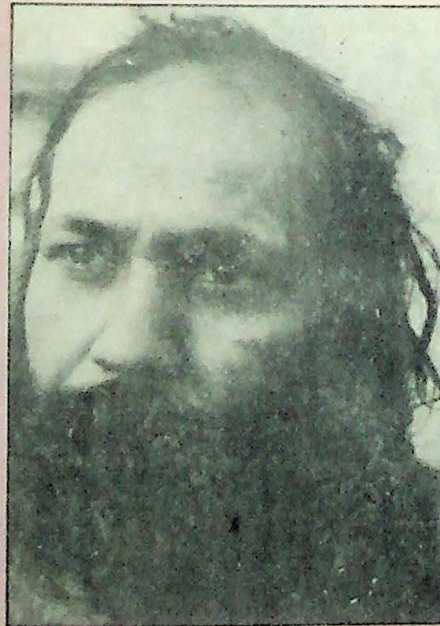
प्रकाशक

श्रीः

'श्रीविश्वविजय पञ्चांग को ब्रह्मा-विष्णु-शिव स्वरूप ब्रजमण्डल के त्रिदेवों का स्नेहाशीर्वाद



परमपूज्य अनन्तश्रीविभूषित भगवत्स्वरूप श्री देवराहा बाबा



योगिराज तपःपूत श्री १०८ श्री पादबाबा



योगिराज श्री १०८ स्वामी कार्ष्णि गुरुशरणानन्दजी महाराज

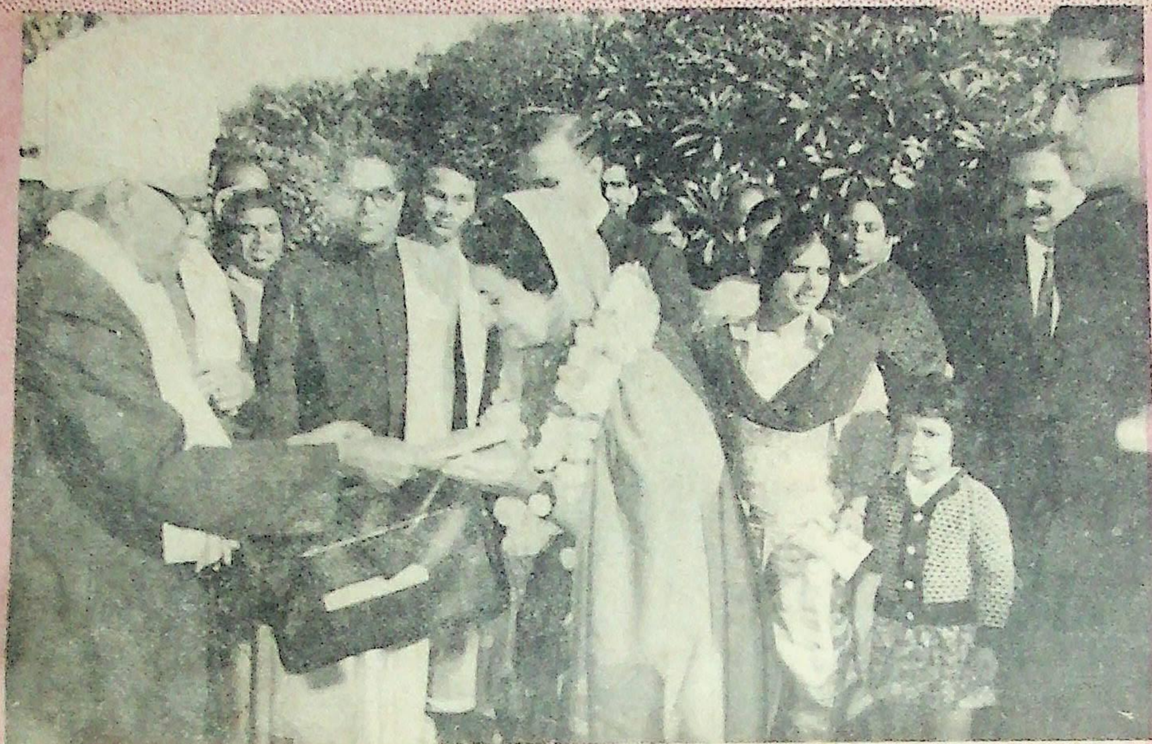
विश्व की तीन महान् दैवी विभूतियों का स्नेहाशीर्वाद एक साथ प्राप्त करने का सौभाग्य **'श्री विश्वविजय पञ्चाग'** को ४५वें वर्ष में प्राप्त हुआ। यह पञ्चांग प्रेमियों के लिए परम् हर्ष का विषय है। इनमें प्रथम महान् विभूति हैं विश्व विख्यात तपःपूत आध्यात्मिक जगत् के अमितायु, भीष्मपितामह दिगम्बर योगिराज परम सन्त अनन्त श्रीविभूषित श्री देवरहा बाबा जो अनेक वर्षों से गंगा-यमुना तट पर घास फूस काष्ठ निर्मित उँचे मचान पर दिगम्बर रूप में निवास करते हैं। कब वे मचान से उतर कर गंगास्नान करने जाते हैं और कब वापिस लौटते हैं यह कोई देख नहीं पाया। राष्ट्रपति पद तक के सभी छोटे-बड़े अधिकारी मुख्यमंत्री, मंत्रिगण आपके श्रीचरणों के दर्शन को लालायित रहते हैं। गत गुरुपूर्णिमा दि. २९ जुलाई १९८८ को अपरान्ह कालमें वृन्दावनधाम यमुनापार पवित्र मचान पर आपके दर्शनार्थ पञ्चांग संपादक पहुंचा। साथ में मथुरा के श्री सतीश कुमार गुप्ता और श्री महेशनाथ समाधिया एडवोकेट भी थे। जब श्री विश्वविजय पञ्चांग' और 'ज्योतिष्मती' का नववर्षांक मचान पर आपकी सेवा में पहुंचा तो बाबा ने अत्यन्त प्रसन्नता व्यक्त की। त्रिवेदी जी के प्रार्थना करने पर कि 'नेत्र-व्याधि के कारण ३ वर्ष बाद मैं अब दूर से श्रीचरणों के दर्शन ठीक नहीं कर पा रहा हूं।' तो स्नेहार्द्र भाव से तत्काल दिगम्बर रूप में खड़े होकर बोले - 'ले करले अच्छी तरह दर्शन, हम तुम्हारे कार्य से बड़े प्रसन्न हैं।' इतना कह कर अपने कर-कमलों से एक अमूल्य उपवस्त्र और पुष्कल-फल-प्रसाद प्रदान कर पञ्चांग-कर्ता को स्नेहाशीर्वाद दिया।

दूसरे हैं—भारत के महान् सन्त, ब्रजअकादमी वृन्दावन के संस्थापक, अनन्त श्रीविभूषित योगिराज श्री श्रीपादबाबा जिनके श्रीचरणों में रंक से राजा, राष्ट्रपति तक साष्टांग दण्डवत् प्रणाम करते हैं। गत गुरु पूर्णिमा पर आपने भी श्रीविश्वविजय पञ्चांग-कर्ता को अपने कर-कमलों से उपवस्त्र पहना कर पूजा का विशेष श्रीफल कदली फल प्रसाद प्रदान कर उपकृत किया। आपका हस्तलिखित स्नेहाशीर्वाद आगे पृष्ठ ३ पर अंकित है।

तीसरे हैं— ब्रजमण्डल के प्रसिद्ध विद्वान सन्त श्री उदासीन कार्ष्णि आश्रम श्रीरमणरेती महावन के अध्यक्ष तपःपूत कार्ष्णि स्वामी श्री गुरुशरणानन्द जी महाराज। आपका हस्तलिखित शुभाशीर्वाद आगे पृष्ठ ३-४ पर प्रकाशित है। आप न्यायवेदान्तादि के आचार्य हैं, "सन्तहृदय नवनीत समाना" की प्रतिकृति परमदयालु परन्तु खकातर महापुरुष के साथ स्वयं कठोर तपस्वी भी हैं। गतवर्ष आपने गोवर्धन-क्षेत्रस्थ-श्रीमानसी गंगा का जीर्णोद्धार महीनों तक स्वयं सैकड़ों भक्तों के साथ खड़े रह कर करवाया एवं इस वर्ष गिरिराज गोवर्धन की दण्डवती परिक्रमा का कष्टसाध्य, पावनयज्ञ पूर्ण किया। ऐसे तपस्वी सन्तों का स्नेहाशीर्वाद "श्रीविश्वविजय पञ्चांग" के लिये गौरव की वस्तु है।

भूतपूर्व प्रधान मंत्रियों की दृष्टि में

आपका यह प्रिय पंचांग ज्योतिर्विज्ञानाचार्यों, धर्माचार्यों एवं वरिष्ठ विद्वानों का ही कृपापात्र नहीं अपितु रंक से लेकर राजा तक के हृदय में अपना स्थान बना चुका है। (भू० पू० राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद जी—भू० पू० प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू जी, श्री लालबहादुर जी शास्त्री, श्रीमती इन्दिरा गांधी, श्री चौ० चरण सिंह एवं अनेक प्रान्तों के राज्यपालों तथा मुख्यमंत्रियों के उद्गार यथा सम्भव पंचांग व पत्रिका में प्रकाशित होते रहे हैं। पं० जवाहरलाल जी नेहरू को पंचांग से विशेष प्रेम था और वे अपने को पंडित कहलाने में गर्व का अनुभव करते थे। इसका प्रमाण २० वर्ष पूर्व सोलन में घटी एक घटना प्रत्यक्ष दर्शियों को अब भी स्मरण है। १६ जुलाई १९५९ को श्री पंडित नेहरू जी शिमला से लौटते समय कुछ देर नागरिकों का अभिनन्दन स्वीकार करने के लिये सोलन में रुके थे। श्री त्रिवेदी जी ने पुष्प माला के साथ संवत् २०१६ वि० का 'विश्वविजय पंचांग' भेंट किया तो बोले—"धन्यवाद, इस वर्ष अभी तक मैंने आपका यह पंचांग खरीदा भी नहीं था।" इसपर त्रिवेदी जी ने पूछा—"क्या आप भी पंचांग खरीदते हैं ?" तत्काल उत्तर मिला—"क्या आप मुझे पंडित नहीं मानते।" उस समय श्री नेहरू के साथ श्रीमती इन्दिरा गांधी और तत्कालीन उपराज्यपाल राजा बजरंग बहादुर सिंह जी भी थे। १० वर्ष पूर्व श्रीमती इन्दिरा गांधी ने अपने जन्म दिवस पर १९ नवम्बर १९६८ को प्रधानमंत्री निवास में श्री त्रिवेदी जी से संवत् २०२६ विक्रमी का 'श्री विश्वविजय पंचांग' अभिवादन पूर्वक सस्नेह ग्रहण किया—उस समय का एक स्मृतिचित्र यहाँ प्रस्तुत है।



* "श्री विश्वविजय पंचांग" के अभिनव प्रशंसक *



"जनमानस–हृदय–सम्राट, भारत के युवा–कर्णधार सर्वकल्याणकारी, लोकप्रिय, प्रधानमन्त्री 'राजीव लोचन' श्री राजीव गाँधी"



"देवतात्मा हिमाचल प्रदेश के यशस्वी वर्तमान मुख्य मंत्री "श्री १०५ राजा वीर भद्रसिंह जी"



श्री बिश्वबिजय पचांग के प्रधान सम्पादक संस्थापक श्री हरदेवशर्मा त्रिवेदी जी अपनी आदर्श अर्धांगिनी गृहलक्ष्मी श्रीमती गोबिन्दी देवी जी के साथ

ईश्वर से कामना

चि० सुपुत्र श्री सुधाकर शर्मा एवं श्रीमती सुमन शर्मा अपने इन पूज्य माता पिता तथा श्री सतीश कुमार गुप्ता एवं श्रीमती विजय लक्ष्मी परम श्रद्धेय पितृ तुल्य श्री त्रिवेदी दम्पति को प्रणपात पूर्वक प्रभु से शतायु की कामना करते हैं –

ज्योतिर्विज्ञान परिषद् मथुरा द्वारा

ज्योतिष-मार्तण्ड श्रीयुत पं. हरदेव शर्मा त्रिवेदी जी का हार्दिक अभिनन्दन



बायें से (कुर्सियों पर) सर्वश्री चन्द्रभान भाटिया, कृष्णगोपाल शास्त्री, निरंजन प्रसाद शर्मा, पं. हरदेव शर्मा त्रिवेदी, हर्षपति नौडियाल, महेश प्रसाद पाठक, गोपालदास सेठ।
(खड़े हुए) सर्वश्री डॉ. अवतारकृष्ण गुर्टू, पं. शंकरलाल शर्मा, डा. रामनिवास शर्मा 'अधीर', कान्तीमोहन शर्मा, डॉ. अशोक भाटिया

जितना पावन, जितना शोभन है, पुण्य ज्ञान की वेदी का।
उतना ही है नाम विघ्नहर, श्री हरदेव त्रिवेदी का॥
'पण्डित-भूषण' जिनसे भूषित, वे शब्द कहाँ कैसे पाऊँ।
हे 'ज्योतिर्मार्तण्ड' आपको, दीप कौन सा दिखलाऊँ॥१॥
अगणित भविष्य-वक्ताओं से शोभित भारत की दिव्य मही।
पर देख समय के मुख-रूख को कहने की सबने बान गही॥
आपने समय का नहीं, समय ने वाणी का अनुगमन किया।
इसलिए व्यक्ति को नहीं, ज्ञान-गौरव को सबने नमन किया॥२॥
हे ज्ञानवीर पा ज्ञानपुंज उच्चस्थ देश का भाल आज।
हे विश्ववन्द्य ! हे विगतमान ! तुमसे सेवित सारा समाज॥
तुम जग-वन्दन में निरत, याकि कर रहा तुम्हारा जग वन्दन।
हे नवयुग के वाराहमिहिर ! स्वीकार करो यह अभिनन्दन॥३॥
इस आर्ष प्रभा का, प्रतिभा का प्रतिक्षण विकास मतिमान करें।
होकर चिरायु ज्योतिष-रथ को द्युतिमान् करें गतिमान करें॥
ब्रजवास करें, ब्रज-त्रास हरें, ब्रजनाथ सदा अनुकूल रहें।
आपकी प्रभा से आलोकित इस ब्रजमण्डल की धूल रहें॥४॥

ह्रीं

प्राक्कथन

"आनन्द सुन्दर पुरन्दर मुक्तमाल्यं मौली हठेन निहितं महिषासुरस्य।
पदाम्बुजं भवतु मे विजयाय मञ्जु मञ्जीर शिञ्जित मनोहरमम्बिकाया"॥

पञ्चाग-प्रेमी पाठकों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब उनके इस विश्वविख्यात 'श्री विश्वविजय पञ्चांग' का प्रकाशन किसी अन्य अर्थ-लोलुप प्रकाशक के हाथ में न रहकर श्री ब्रजेश्वरी की कृपा से विगत सं. २०४१ वि. की श्री राधाष्टमी के पुण्यपर्व पर मोक्षदा मथुरापुरी में स्थापित 'ज्योतिष्मती प्रकाशन' से हो रहा है। गत ४ वर्षों में 'ज्योतिष्मती' त्रैमासिक पत्रिका के १६ अंक भी इसी संस्था से प्रकाशित हो चुके है।

अब गत चार वर्षों से यह पञ्चांग विगत वर्षों की अपेक्षा कागज-मुद्रण एवं छपाई की दृष्टि से अधिक सुन्दर रूप में प्रकाशित हो रहा है। गणित-फलित, तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र एवं अनुभवसिद्ध औषध सम्बन्धी श्रमसाध्य सामग्री भी बढ़ाई गई है। इस श्रम-साध्य कार्य में व्यय अधिक हुआ किन्तु पञ्चांग प्रेमी पाठकों की संतुष्टि एवं सुविधा को ध्यान में रखकर ही संस्था ने यह भार उठाया है। कागज का भाव गत वर्ष की अपेक्षा अत्यधिक वृद्धिगत है, फिर भी इस वृहद्काय पञ्चांग के मूल्य में अपेक्षाकृत नाम-मात्र वृद्धि की गई है। आशा है सहृदय-पाठकगण इसे उचित समझ सहर्ष स्वीकार करेंगे।

आज से ४५ वर्ष पूर्व सं. २००० वि. में जब उत्तर भारत में कोई भी श्रमसाध्य सर्वांगपूर्ण शुद्ध दृक् पक्षीय पञ्चांग नहीं था, उस कठिन काल में मुझ जैसे एक सर्वथा निराश्रित साधन-हीन निर्बल व्यक्ति के हृदय में किसी अव्यक्त महाशक्ति की अन्तः प्रेरणा से शुद्ध चित्रापक्षीय पञ्चांग-निर्माण का सत् संकल्प उत्पन्न हुआ। आरम्भ में १४ वर्ष तक 'श्री मार्तण्ड पञ्चांग' के सम्पादन, मुद्रण प्रकाशन का मुझे अनुभव था कि किसी भी नये पञ्चांग को चलाने में कितनी विषम समस्याएँ और कठिनाइयाँ आती है। इससे विचलित न होकर स्थिरचित्त से सं. २०००१ वि. से दिल्ली के अक्षांश रेखांश पर एक सर्वांग शुद्ध दृक् पक्षीय पञ्चांग-प्रकाशन का निश्चय कर लिया। नाम रक्खा "श्री विश्वविजय पञ्चांग"। आरम्भ में चार वर्ष तक इस पञ्चांग का मुद्रण, प्रकाशन लाहौर से हुआ। पंजाब विभाजन के बाद सं. २००५ वि. से इस पञ्चांग का मुद्रण, प्रकाशन दिल्ली से होता रहा। बीच में कुछ वर्ष अजमेर से भी हुआ। प्रारम्भ के बारह वर्षों में पर्याप्त कठिनाइयाँ आई, पर माँ जगत् जननी की कृपा से पञ्चांग निरन्तर प्रकाशित होकर लोकप्रिय होता गया। यह पञ्चांग इतना उच्च स्थान प्राप्त करलेगा इसकी मुझे कल्पना भी नहीं थी, आज असंख्य पाठक इसको पढ़ने व पाने के लिए लालायित रहते है। यह माँ की अहेतु की कृपा का फल है।

मथुरा में नयी व्यवस्था के एवं अनके कठिनाइयों के कारण योग्य विद्वान सहयोगी के अभाव में पञ्चांग समय पर प्रकाशित नहीं हो पाया। इसका मुझे खेद है। इस वर्ष सं. २०४६ वि. का यह पञ्चांग मकर संक्रान्ति से पूर्व जनवरी ८९ के प्रारम्भ में ही प्रकाशित करने की इच्छा थी, परन्तु नवम्बर ८८ में मुझे दूसरी आँख का आपरेशन करवाना पड़ा। बाद में पत्नी मरणासन रूग्णा हो गयी। इस प्रकार दो माह तक लेखन पाठन का कार्य नहीं हो पाया। यह आकस्मिक व्यवधान पड़ जाने से यह पञ्चांग मार्च मास के प्रारम्भ में 'श्री शिवरात्रि' पर्व पर प्रकाशित हो रहा है। माँ की कृपा रही और भविष्य में कोई दैवी व्यवधान न पड़ा तो आगामी वर्ष सं. २०४७ वि. का पञ्चांग निश्चित रूप में मकर संक्रान्ति से पहले प्रेमी पाठकों तक पहुँचाने का पूर्ण प्रयत्न करेंगे।

"प्रसीद मातर्जगतो खिलस्य"

ज्योतिष्मती निकेतन
सोलन (हि. प्र.)

मातृचरण चञ्चरीकः
हरदेव शर्मा त्रिवेदी

आरम्भिका

या विद्या शिवकेशवादि जननी या वै जगन्मोहिनी
या पञ्चप्रणवद्विरेफनलिनी या चित्कलामालिनी ।
या ब्रह्मादि पिपीलिकान्ततनुषुप्रोन्ता जगत्साक्षिणी
सा पायात्परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी ॥

ज्योतिशशास्त्र प्रत्यक्ष फल दायक है। इसमें सन्देह नहीं, किंतु इस शास्त्र पर सूक्ष्म अध्ययन और अनुशीलन की आवश्यकता है। इस शास्त्र का सृष्टि के आदि काल में भारतीय महर्षियों ने ही आविष्कार किया। भारतीय लोगों की असावधानता और उपेक्षा बृत्ति से यह विज्ञान विदेशियों के हाथ लगा, उन्होंने इसको अपनाकर अद्‌भुत नाम एवं यश प्राप्त किया। अनेकों मुसलमान और अंग्रजों ने ज्योतिष सम्बन्धी ग्रन्थ लिखे और आज का समस्त पश्चिमी संसार इस विद्या के प्रभाव से लोगों को आश्चर्यचकित कर रहा है। ग्रीनवीच की संसार प्रसिद्ध प्रयोगशाला कौन नहीं जानता? वहां की जनता एवं सरकार अब भी प्रतिवर्ष करोड़ों रु० व्यय कर इस शास्त्र के अनुसंधान में लगी हुई है। पर, इसी शास्त्र के उद्‌गम स्थान भारत की दशा बड़ी शोचनीय है। यहां इस विज्ञान को कोई किसी प्रकार की सहायता तो पहुंचाता नहीं, पर आक्षेप या कुठाराघात करने पर सब प्रस्तुत हो जाते हैं। इन सब कारणों से व्यथित होकर यथाशक्ति इस वैज्ञानिक शास्त्र के द्वारा भारतीय संस्कृति के समुत्थान की शुभकामना से ही हम गत ४६ वर्षों से 'श्रीविश्वविजय- पंचांग' के माध्यम से जनता जनार्दन की सेवा कर रहे है।

केतकी चित्रापक्षीय पंचांगों की सब ओर से संपुष्टि

उत्तर - भारत में केतकी चित्रापक्षीय पंचांग का जो कार्य हमने ४६ वर्ष पूर्व प्रारम्भ किया था उसके प्रचार में उत्तरोत्तर वृद्धि होती जा रही है। प्रायः सभी प्राचीन पंचांगकारों ने सूर्यसिद्धान्त, ग्रहलाघव, मकरन्द और ब्रह्म पक्षीय ग्रहों के स्थान में चित्रापक्षीय (ज्योतिर्गणित केतकी आदि से) शुद्ध दृक्तुल्य ग्रह ग्रहणोदयास्तादि लगाने प्रारम्भ कर दिये हैं। विद्वान् सहयोगियों ने अनुभव किया है कि इस समय जब सूर्य परम मंदफल और चन्द्रमा के संस्कार फलों में कई कलाओं का अन्तर प्रत्यक्ष सिद्ध है तब सूर्य चन्द्रमा से निष्पन्न तिथिमान में भी १० - १५ घटी तक का अन्तर स्वाभाविक है। केतकी गणित के आधार पर दिये हुए 'श्रीविश्वविजय - पंचांग' के तिथ्यादि धर्मशास्त्रीय निर्णय व्रतोपवासादि के लिए उपयोगी हैं, इसमें अब किसी प्रकार की शंका नहीं है।

भारत - सरकार के 'राष्ट्रीय पंचांग' और 'कैलेण्डर - रिफार्म कमेटी की रिपोर्ट' में भी यही तिथि स्वीकार की गई है और इसके आधार पर राष्ट्रीय पंचांगों और राजकीय कैलेण्डरों में पर्व त्यौहार एवं छुट्टियां लगाई जाती हैं। विगत सं० २०१९ के चैत्र मास में कुम्भ महापर्व पर भगवती भागीरथी के तट पर हरिद्वार में श्रीसनातन धर्म प्रतिनिधि सभा, पंजाब के आमन्त्रण पर उत्तर - भारतीय ज्योतिर्विदों का सम्मेलन हुआ था, उसमें सर्वसम्मति से निर्णय हुआ कि अगले वर्ष सं० २०२० वि० से उत्तर - भारत के सभी पंचांगकार अपने - अपने पंचांगों में तिथि नक्षत्र योग के घट्यादि का मान भी नवीन दृक्पक्ष (केतकी ज्योतिर्गणित वैजयन्ती आदि) से ही लगावेंगे। तदनुसार पंजाब, राजस्थान, उत्तरप्रदेश के प्रसिद्ध पंचांगों में विगत वर्ष सं० २०२० से तिथ्यादि भी नवीन सूक्ष्म गणित से लगानी प्रारम्भ कर दी, यह उत्तर - भारत में पंचांग एकीकरण के लिए परम हर्ष का विषय है।

इससे कुछ वर्ष पहले वैष्णव - सम्प्रदाय के धर्माचार्य श्री १०८ गो० गोकुलनाथ जी महाराज, जगद्‌गुरु शंकराचार्य श्री १०८ स्वामी योगेश्वरानन्दजी तीर्थ, पुरीमठ, श्री १०८ जगद्‌गुरुशङ्कराचार्य सिकेश्वर करवीर मठ, जगद्‌गुरु श्री १०८ अनन्ताचार्य महाराज काञ्ची काम- कोटि मठ आदि के शङ्कराचार्यचरणों ने भी सूक्ष्म तिथि से ही धर्मनिर्णय महाराज करने के आज्ञा पत्र निकाले हैं। वल्लभ- सम्प्रदाय की प्रधानपीठ श्रीनाथद्वारा के तिलकायत गोस्वामी श्री १०८ गोविन्दलालजी महाराज की आज्ञानुसार गत २६ वर्षों से 'श्रीनाथपचांग का भी केतकी चित्रापक्ष से ही निर्माण हो रहा है और नवलगढ़ के 'सरस्वती पचांग' में भी अब तिथ्यादि मान, सूक्ष्म केतकी गणित से ही छपने लगा है। जगद्‌गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य और जैन- धर्म के आचार्यों के भी सूक्ष्म गणित प्रत्यक्ष पचांग दृग्गणितानुसार प्रकाशित होने लगे है।

कुछ सज्जन तिथिमान को अदृश्य या अप्रत्यक्ष कहकर उसे आधुनिक काल के लिए अप्रत्यक्ष स्थूल गणित मकरन्द ग्रहलाघव सूर्यसिद्धान्त ब्रह्मपक्षादि से बनाने का आग्रह करते हैं--यह वर्तमान काल के लिए उपयुक्त नहीं। इस विषय में तैत्तिरीय संहिता, सिद्धान्त - कामधेनु, विष्णुधर्मोत्तरपुराण, नारदीय- पुराण आदि प्राचीन आर्ष ग्रन्थों के अनेक प्रमाण गत वर्षों के पंचांग की आरम्भिका में हम प्रकाशित कर चुके हैं। स्थानाभाव के कारण यहाँ केवल दो आप्तवचन दे रहे हैं-

यस्मिन् पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यकम्।
दृष्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादि निर्णयम् ॥ (वशिष्ठः)
तेभ्यः स्याद् ग्रहणादि दृक्समनियं प्रोक्ता मया सा तिथिः।
ग्राह्या मंगलधर्मनिर्णयविधावेषा यतो दृक्समा ॥ (ति० चि०)

भारत सरकार के मौसम - विभाग और अखिल - भारतीय - ज्योतिषपरिषद् के संयुक्त तत्वावधान में दि० १९ - २० नवम्बर १९६८ को विज्ञानभवन, नई दिल्ली में विशाल पचांग गोष्ठी का आयोजन किया गया --उसमें समस्त भारत के नवीन प्राचीन पद्धति के शताधिक प्रसिद्ध विद्वान् पीचांगकार सम्मिलित हुए थे। दो दिन के विचार विमर्श के अनन्तर भारी बहुमत से दृक्पक्षीय (चित्रापक्षीय अयनांश) पचांग गणना को ही शास्त्र सम्मत प्रमाणित किया गया।

इस वर्ष पचांग के अन्त में दैनिक चन्द्र का उदय—अस्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम घण्टा- मिनटों में (दिल्ली, बम्बई, मद्रास और कलकत्ता वाराणसी भोपाल जोधपुर पटना के दिये गये हैं। आगामी वर्ष के पंचांग में अन्य कई उपयोगी विषय बढ़ाये जायेंगे।

ज्योतिष्मती निकेतन — विदुषामनुचरः-
सोलन (हि० प्र०) — हरदेव शर्मा त्रिवेदी

पंचांग देखने की विधि

१—इस पंचांग (श्रीविश्वविजय) का सभी गणित दिल्ली के अक्षांश २८।३८ रेखांश ७७।१२ पर किया गया है। तिथि नक्षत्र के घटी पल दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय से समाप्ति काल के हैं। तिथि नक्षत्र योग करण के घण्टा मिनट भा. स्टे. टा. से समाप्ति काल के हैं, जो भारत में सर्वत्र उसी टाइम से होंगे।

२—सूर्योदय सूर्यास्त भारतीय समयानुसार दिल्ली के हैं। सूर्योदय सूर्यास्त किरण वक्री भवन संस्कार रहित है। प्रत्यक्ष देखने के लिए सूर्योदय में दो मिनट घटावें और सूर्यास्त में दो मिनट बढ़ावें।

३—इस पंचांग में करण सूर्योदय कालान दिये गये हैं। अग्रिम करण उससे आगे वर्तमान तिथि के अर्धभाग तक जानें।

४—सूर्य चन्द्रादि ग्रहों का राश्यादि संचार एवं भद्रा पंचक, ग्रहों के उदय अस्त वक्र - मार्ग आदि भारतीय स्टें. टा. में हैं . जो भारत में सर्वत्र उसी टाइम में होंगे। यह इस पंचांग की विशेषता है।

५—महीनों में अष्टमी पूर्णिमा एवं अमावश्या के ग्रह स्पष्टों के राश्यादि स्टे. टा. प्रातः घं० ५ मि० ३० के हैं। नीचे उस दिन की गति और वक्री मार्गी उदय - अस्त व ग्रहों के नक्षत्रचरण दिये हैं। ग्रह स्पष्टों के साथ कुंडली भी उपरोक्त समय की हैं।

६—तिथ्यादि तथा चन्द्रमा भद्रा ग्रहाचार आदि में २४ - २५ - २६ आदि अंक लिखे हैं उनका अर्थ यह है कि २४ को रात्रि के बारह बजे, २५ को रात्रि के १ बजे, २६ को रात्रि के २ बजे समझें। इसी प्रकार आगे के अंकों में भी २४ घटाकर अर्द्ध रात्रि बाद के अगली तारीख में समझेंगे।

७—इस पंचांग का गणित आचार्यों ऋषियों द्वारा ग्राह्य और भारत सरकार द्वारा स्वीकृत सूक्ष्म दृश्य पद्धति से किया है। जहां सायन गणना की गई है वहां अयनांश चित्रा पक्षीय शुद्ध मानकर ग्रहण किये गये हैं। यहां निरयन पद्धति को सर्वत्र मान्य की है।

८—दैनिक लग्न सारिणी में समय का उल्लेख स्टैण्डर्ड टाइम के अनुसार दिल्ली का है। और लग्न का समाप्ति काल लिखा गया है।

९—लस्टर में ∆ɸ×.+. आदि चिन्ह दिये हैं, उनका मतलब यह है कि मैटर उस लाईन में नहीं आ सका जो चिन्ह जहां लगाया वैसा ही चिन्ह कहीं दूसरी लाइन में लगाकर शेष मैटर लिखा है - नीचे लिखी संकेतावली को पंचांग देखने में काम लेने से संपूर्ण विषय समझ में आजावेंगे।

पंचांग में लिखे शब्दों की संकेतावली (अकारादि क्रम से)

अ.=अश्विनी (नक्षत्र) अतिगंड (योग)
अं.=अंश, अंग्रेजी (मास तारीख)
अग्नि (पंचक) अक्टूबर अगस्त अप्रैल (मास)
उ.=उदय उपरान्त
अनु.=अनुराधा (नक्षत्र)
उ.फा.=उत्तरा फाल्गुनी (नक्षत्र)
आ.=आर्द्रा न. आयुष्मान् यो. आषा. अश्विन
उ. षा.=उत्तराषाढ़ (नक्षत्र)
उ. भा.=उत्तरा भाद्रपद (नक्षत्र)
ब.=ब्रह्म (योग)
ऐं.=ऐन्द्र (योग)
वृ=वृद्धि (योग)
क.=कर्क, कन्या (राशि) कला
बु.=बुध (वार) बुध ग्रह

का.=कार्तिक (मास)
क्रां. सा.=क्रान्ति साम्य (महापात)
कृ.=कृतिका (नक्षत्र) कृष्ण पक्ष
कु.=कुंभ (राशि)
गु.=गुरु (वार) गुरु ग्रह
गु. दा.=गुरु दान से
गो.=गोधूलि (लग्न)
गं.=गंड (योग)
घ.=घटी
घ.=घन्टा
चि.=चित्रा (नक्षत्र)
चै.=चैत्र (मास)
चौ.=चौर (पंचक)
चं.=चन्द्र (सोमवार) चन्द्र ग्रह
ज.=जयन्ती, जनवरी (मास)
जू.=जून (मास)
जु.=जुलाई (मास)
ज्ये.=ज्येष्ठ (मास) ज्येष्ठा (नक्षत्र)
ता.=तारीख
तु.=तुला (राशि)
दि. ल.=दिन में लग्न
ध.=धनु (राशि) धनिष्ठा (नक्षत्र)
धूलिमु.=धूलिमुख (अन्यगोधूलि) लग्न
ध्रु.=ध्रुव (योग)
धृ.=धृति (योग)
निं.=निंबार्क (संप्रदाय)
नृ.=नृप (पंचक)
प.=परिघ (योग) पल
प्र.=प्रवेश
प्रा.=प्रारम्भ
प्री.=प्रीति (योग)
पु.=पुष्य (नक्षत्र)
पुन.=पुनर्वसु (नक्षत्र)
पू.फा.=पूर्वाफाल्गुनी (नक्षत्र)
पू.षा.=पूर्वाषाढ़ा (नक्षत्र)
पू.भा.=पूर्वाभाद्रपद (नक्षत्र)

भ.=भरणी (नक्षत्र) भद्रा
भाद्र.=भाद्रपद (मास)
म.=मघा (नक्षत्र) मकर (राशि) मई मास
मा.=मार्गशीर्ष, माघ मार्च (मास)
मि=मिनट, मिथुन राशि (लग्न) मिति
मी.=मीन (राशि)
मु.=मुहूर्त
मू.=मूल (नक्षत्र)
मे.=मेष (राशि) लग्न
मृ=मृगशिर (नक्षत्र) मृत्यु (पंचक)
र.=रवि (वार) रवि (ग्रह)
रा.=राहु. (ग्रह) राष्ट्रीय, राशि
रे=रेवती (नक्षत्र)
रो.=रोहिणी (नक्षत्र) रोग (पंचक)
ल.=लग्न
व.=वज, वरियान् यो. वणिज क. बक्र गति
व्र.=व्रत
व्य.=व्यतिपात (योग)
वृ.=वृद्धि (योग) वृष, वृश्चिक (राशि)
व्या.=व्याघात (योग)
वि.=विशाखा (नक्षत्र) विष्कंभ (योग) विकला
वि.मु.=विवाह मुहूर्त
वै.=वैष्णव संप्र. वैधृति यो. वैशाख मास
श.=शनिवार, शनिग्रह, शतभिषा नक्षत्र
शि.=शिव योग
शु.=शुक्रवार, शुक्रग्रह, शुभ, शुक्ल (योग) शुक्ल (पक्ष)
श्रा.=श्रावण (मास)
सा.=साध्य (योग)
स्वा.=स्वाती (नक्षत्र)
स्मा.=स्मार्त (संप्रदाय)
सि.=सिद्धि (योग) सितम्बर (मास)
सि.=सिंह (राशि)
सु.=सुकर्मा (योग)
सौ.=सौभाग्य (योग)
ह.=हस्त (नक्षत्र) हर्षण (योग)
हि.=हिन्दी (मास - तारीख)

श्रीविश्वविजय पञ्चांग-निर्माता को राज्य सरकार एवं सार्वजनिक संस्थाओं से अनेक गौरवपूर्ण उच्चस्तरीय सम्मानोपाधियाँ

"श्री विश्वविजय पञ्चांग" और "ज्योतिष्मती" के प्रधान सम्पादक वयोवृद्ध पूज्य पितृव्यपाद पं. श्रीहरदेव शर्मा त्रिवेदी जी को अर्द्धशताब्दी से अधिक उनकी अनवरत साहित्य-साधना से प्रभावित होकर राजस्थान सरकार ने विगत ४ अगस्त १९८२ को संस्कृत दिवस समारोह पर जयपुर में तत्कालीन महामहिम राज्यपाल श्री ओ. पी. मेहरा ने अभिवादन कर आपको पुरस्कार प्रशस्ति पत्र पुष्पमाला के साथ शाल भेंट कर सम्मानित किया। तदनन्तर गत २४ मार्च १९८५ को महाराणा-मेवाड़ फाउण्डेशन उदयपुर ने राजमहल में आपको ५००१) रुपये उत्तरीय (शाल) और रजत मण्डित प्रशस्ति पत्र प्रदान कर हारित ऋषि पुरस्कार से सम्मानित किया। इससे पूर्व भी पितृव्य-पाद को उनकी लम्बी निःस्वार्थ साधना एवं विद्वत्ता से प्रभावित होकर भारत-धर्म-महामण्डल, काशी (वाराणसी), सनातन धर्म-दिग्विजयमण्डल, अखिल भारतीय संस्कृत-प्रचारक मण्डल, अखिल भारतीय निम्बार्काचार्य पीठ निम्बार्क तीर्थ (सलेमाबाद) आदि अनेक धार्मिक पीठों से पंडितभूषण, ज्योतिषमार्तण्ड, ज्योतिर्विज्ञानाचार्य, दैवज्ञ-शिरोमणि, समाजशिरोमणि आदि अनेक मानद उपाधियाँ एवं अभिनन्दन-पत्र प्राप्त हो चुके हैं। गत कुछ वर्षों से आपने नागरिक अभिनन्दन एवं उपाधि ग्रहण करना तथा सभा सम्मेलन में उपस्थित होना बन्द कर दिया है। फिर भी सार्वजनिक संस्थाएँ आपके दिव्य गुणों से परिचित हैं। वे बिना आपकी स्वीकृति के भी अभिनन्दन करते रहते हैं। गत दिसम्बर से अप्रैल ८७ तक आप जयपुर (मुख्यमंत्री निवास में) अस्वस्थ थे। उस समय पश्चिम बंगाल की विश्व-उन्नयन-संसद ने आपको 'डाक्टर ऑफ एस्ट्रोलौजी' की सर्वोच्च मानद उपाधि से सम्मानित किया। इसकी सूचना हिन्दी अंग्रेजी के कई पत्र पत्रिकाओं में छप चुकी है।

गत १४ अगस्त १९८७ को इण्डियन कौंसिल ऑफ एस्ट्रोलॉजी [illegible] की दिल्ली शाखा ने भारतीय विद्या भवन नई दिल्ली में केन्द्रीय मंत्री श्री अर्जुन सिंह जी द्वारा एक बहुमूल्य शाल, एक प्लेक और सुन्दर थैली में श्री फल पुरस्कार भेंट करके सम्मानित किया।

डा. भवानीशंकर त्रिवेदी

'श्रीविश्वविजय-पञ्चांग' के प्रशंसक महापुरुष

श्रीविश्वविजय-पञ्चांग पर भारत के प्रायः सभी गण्यमान्य विद्वानों, नेताओं, उच्च राज्याधिकारियों, धर्माचार्यों और पत्र-पत्रिकाओं ने अपना अभिमत व्यक्त करके इसकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। उन अनेक सम्मान्य महापुरुषों में से कुछ विशिष्ट महानुभावों के शुभ नाम मात्र यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं।

महामहिम भू. पू. राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद जी। उ. प्र. के भू. पू. मुख्यमंत्री और राजस्थान के भू. पू. राज्यपाल स्व. श्री सम्पूर्णानन्द जी। उ. प्र. के भू. पू. मुख्यमंत्री एवं केन्द्रीय भूतपूर्व रेलमंत्री वयोवृद्ध राष्ट्रनेता श्री कमलापति त्रिपाठी, भारत के भू. पू. प्रधानमंत्री स्व. श्री चौधरी चरणसिंह जी, रा. स्व. से. के भू. पू. सरसंघचालक स्व. श्री मा. स. गोलवलकर जी। भू. पू. अजमेर मेवाड़ राज्य के मुख्यमंत्री और राजस्थान के भू. पू. वित्त व शिक्षामंत्री स्व. श्री हरिभाऊजी उपाध्याय भारत सरकार के भू. पू. राज्यमंत्री और संसद के सचेतक, म. प्र. के भू. पू. राज्यपाल स्व. श्री सत्यनारायण सिंह, लोकसभा के भू. पू. अध्यक्ष स्व. श्री अनन्तशयनम् आयंगर। राजस्थान के दिवंगत भू. पू. मुख्यमंत्री श्री हीरालाल जी शास्त्री, श्री जयनारायण जी व्यास, एवं राजस्थान के भू. पू. यशस्वी मुख्यमंत्री श्री हरिदेव जी जोशी, राजस्थान के पूर्व शिक्षा स्वास्थ्य वाणिज्य मंत्री एवं भू. पू. उद्योग पर्यटन विद्युत आदि के वरिष्ठ मंत्री श्री हीरालाल जी देवपुरा, उदासीन सम्प्रदाय आचार्य विश्व भर में वेद मन्दिरों के प्रतिष्ठापक १०८ वर्षीय वयोवृद्ध विद्वान सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामण्डलेश्वर श्री १०८ स्वामी गंगेश्वरानन्द जी, महाराज अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर "श्री जी" श्री राधा सर्वेश्वर शरण देवाचार्य जी महाराज, वृन्दावन के परम तपस्वी संत ब्रज अकादमी के संस्थापक योगिराज परमपूज्य श्री १०८ श्रीपाद बाबा महाराज, ब्रजधाम गोकुल महावन रमणरेती श्री कार्ष्णि आश्रम के महान् विद्वान तपस्वी संत महामण्डलेश्वर श्रद्धेय श्री १०८ स्वामी गुरुशरणानन्द जी महाराज, ब्रह्मलीन द्वारिका शारदा पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य अनन्त श्री विभूषित अभिनव सच्चिदानन्द तीर्थ महाराज, परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री १०८ स्वामी स्व. अखण्डानन्द जी सरस्वती महाराज, ब्रह्मलीन ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य श्री १०८ स्वामी कृष्णबोधाश्रम जी महाराज, श्री पीताम्बरापीठ दतिया के महान संत योगिराज राष्ट्रगुरु अनन्तश्री विभूषित परमशाक्त मौनि पुरवासी श्री स्वामीजी महाराज, श्री भुवनेश्वरी पीठाधीश गोंडल के भूतपूर्वाधिकारी श्री १०८ आचार्य श्री चरण तीर्थ जी महाराज, स्व. महामहोपाध्याय पं. श्री गिरिधर शर्माजी चतुर्वेदी कविकुलगुरु महामहोपाध्याय स्व. श्री पं. नारायण शास्त्री खिस्ते वाराणसी, स्व. श्री पं. गणपतिदेव जी शास्त्री पञ्चांगकर्ता काशी, स्व. त्यागमूर्ति श्री १०८ गो. गणेशदत्त जी महाराज, रामभक्त स्व. श्री पं. कपीन्द्र जी महाराज, स्व. पद्मभूषण डा. सूर्यनारायण जी व्यास ज्योतिषाचार्य, स्व. श्री हनुमान प्रसाद जी पोद्दार आद्य सम्पादक 'कल्याण' स्व. पं. सीतारामजी झा ज्योतिषाचार्य वाराणसी आदि।

दो सन्त महापुरुषों के आशीर्वाद

(१)

Brij Academy
Institute of Research - Cultural Studies
Vrindravan - 281121 (U.P.)

'श्रीविश्वविजय पञ्चांग' को शुभाशीर्वाद।

"व्रजेन्दनन्दनो देवो राधिका प्राणवल्लभः।
ज्योतिश्चक्रधरः कृष्णः संसेव्यो भूतिमिच्छता"॥

"श्री विश्वविजय पञ्चांग" अपने ४४ वर्ष का प्रतिमान 'ज्योतिष्मती प्रकाशन' के प्रकल्प में पूर्णकर ४५वें वर्ष में पदार्पण करते हुए ज्योतिश्चक्रधारी लीला बिहारी की सतत् सेवा में अग्रसर हो रहा है। उसके यशस्वी सम्पादक एवं प्रणेता ज्योतिषाचार्य पंडित श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ८० वर्ष की आयु में भी पञ्चांग कर्तृत्व अभिजात्य को अक्षुण्ण बनाये हुए हैं। ज्योतिष शास्त्र वेदपुरुष का नेत्र है, प्रतिपल पलक के समान श्री त्रिवेदी जी इसकी रक्षा में संलग्न हैं। वेद वेद्य परमात्मा श्रीकृष्ण ने विभूति योग का उपदेश करते हुए स्वयं को रवि और शशि कहा है—"**आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान्। मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी**"॥ (श्रीगीता १०।२१) इसी कारण शास्त्रकारों ने ज्योतिषशास्त्र को परमात्मा की शरणागति एवं आस्था में सहायक स्वीकार किया है।

आज के आस्था संक्रमण काल में ज्योतिष की सहायता से श्री त्रिवेदी जी ने मानव आस्था को समूल बनाये रखने का भगीरथ प्रयास किया है। यह एक भव्य कीर्तिध्वज के रूप में सदा फहराता रहेगा। 'जीवेम शरदः शतम्' के अनुसार त्रिवेदी जी के सुदीर्घ पूर्णायुष्य की कामना प्रभुचरणारविन्द में सदा करते हैं।

इनका योगदान कालजयी एवं प्रेरणादायक हो इस मंगल कामना के साथ सस्नेह —

(ह.) श्री पादबाबा
सम्प्रेरयिता
ब्रज अकादमी संस्कृति प्रज्ञा संस्थान वृन्दावन।

पौष शु. १५ सं. २०४५
२१ जनवरी १९८९

(२)

॥ "श्री रमण विहारिणेनमः" श्री गुरु कार्ष्णि भगवते नमः ॥

स्वामी कार्ष्णि गुरुशरणानन्द

श्री उदासीन कार्ष्णि आश्रम
श्री रमणरेती, पो. महाबन, (पुरानी गोकुल)
जिला. मथुरा (उ.प्र.)।

"श्री विश्वविजय पंचांग"

दि. १२-१-८९

यह पचांग हम गत कई वर्षों से देख रहे हैं। उत्तर भारत में इस पंचांग ने अत्यधिक लोकप्रियता एवं प्रतिष्ठा प्राप्त की है, इसका श्रेय पचांग के प्रवर्तक प्रधान सम्पादक वयोवृद्ध विद्वान् श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी जी को है—जो विगत ६० वर्षों से केतकी चित्रा पक्षीय शुद्ध पंचाग निर्माण के श्रमसाध्य कार्य में जुटे हुये हैं। पंचाग भारतीय सनातन संस्कृति का मूलाधार है, प्रत्येक धार्मिक कृत्य, व्रत पर्व एवं महापुरुषों की जयन्तियों का निर्णय शुद्ध पंचाग से ही होता है। पंचांग का निर्माण ज्योतिष-शास्त्रानुसार होता है। वेद के ६ प्रधान अंगों में ज्योतिष शास्त्र को नेत्र माना है— "**वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिरशास्त्रमकल्मषम्**"।

सूर्यादि समस्त ग्रह आकाश में गतिशील हैं, ग्रहणादि गणित एवं पंचांग निर्माण के लिये प्राचीन आचार्यों ने जिन सिद्धान्तकरण ग्रन्थों का निर्माण किया उनके अनेक वर्षों के बाद ग्रहगणना में कुछ अन्तर पड़ना स्वाभाविक है, सूर्य सिद्धान्तकार ने स्पष्ट लिखा है-

"शास्त्रमाद्यं तदेवेदं यत्पूर्वं प्राह भास्करः ।
युगानां परिवर्तेन कालभेदोऽत्रकेवलम्" ॥

अतएव उन आचार्यों के वचन अनुसार प्राचीन सिद्धान्त ग्रन्थों के गणित में समय-समय पर नलिकावेध आदि द्वारा संशोधन कर ग्रह गणित में बीज संस्कार के द्वारा नवीन करण ग्रन्थ से पचांग बनाये जावे तभी वे सर्वथा शुद्ध होंगे। प्राचीन ग्रन्थों से (ग्रह लाघव, मकरन्द, चण्डू आदि की सारणियो से) बने पंचांग के ग्रहणादि में भारी अन्तर आने लगा था। वेद का नेत्र (ज्योतिषशास्त्र) जब शुद्ध निर्मल होगा तभी विश्व का सही मार्गदर्शन हो सकता है। नेत्र में विकार आने पर कुछ भी स्पष्ट दिखाई नही देता अतः समाज के नेत्र रूप पंचांग का सर्वथा शुद्ध निर्मल होना परमावश्यक है। ज्योतिष को काल विधान शास्त्र भी कहा गया है।शुद्ध काल (समय) मे अनुष्ठित यज्ञानुष्ठान आदि कार्य पूर्ण सफल होते हैं।

वे० ज्यो० मे लिखा है -

वेदाहि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ता कालानुपूर्वा विहिताश्चयज्ञाः ।
तस्मादिदं कालविधान शास्त्रं यो ज्योतिषं वेद सवेद यज्ञान्" ॥

हमारी जानकारी के अनुसार इधर उत्तर भारत मे सभी पचांग ४०-५० वर्ष पूर्व तक प्राचीन स्थूल गणित से ही बनाये जाते थे, उनमे लिखे सूर्य चन्द ग्रहण ग्रहो के उदयास्तादि में पर्याप्त अन्तर आने लगा था, इस त्रुटि को सर्व प्रथम इधर उत्तर भारत के दो प्रमुख ज्योतिर्विदो श्री (१) प० मुकुन्दवल्लभ जी तथा (२) श्री प० हरदेव शर्मा त्रिवेदी जी ने अनुभव किया और तदअनुरूप संशोधित श्री मार्तण्ड-पंचांग सर्वप्रथम सं० १९८५ वि० का उन्होने कुराली पंजाब से प्रकाशित किया। पंजाब के सुप्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य स्व० श्री मुकुन्द वल्लभ जी मिश्र के साथ १४ वर्ष तक (सं० १९८५ से १९९८ वि० तक) श्री मार्तण्ड पंचांग सम्पादन कार्य मे श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी जी का भी पूर्ण सहयोग रहा। तदनन्तर सं० २००१ वि० से सोलन-हिमाचल प्रदेश से दिल्ली के अक्षांश रेखांश पर एक सर्वांग शुद्ध श्री विश्वविजय पंचांग का प्रकाशन प्रारम्भ किया-जिसका विगत ४५ वर्षों से श्री त्रिवेदी जी निरन्तर सम्पादन कर रहे है। इस ६० वर्ष की लम्बी अवधि मे कई ज्योतिर्विदो ने नये पचांग निकालने के प्रयत्न किये किन्तु वह २-४ वर्ष प्रकाशित होकर बन्द हो गये। इस अवधि में सर्वाधिक सफलता श्री विश्वविजय पंचांग ने प्राप्त की है। इसे न केवल भारत के सभी धर्माचार्यों, धुरन्धर विद्वानो का अपितु पत्रकारो एव राजपुरुषों का भी आदर स्नेह सम्मान प्राप्त है।

श्री विश्वविजय पंचांग की राष्ट्रिय अन्तराष्ट्रिय-भविष्यवाणियों की सफलता की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा हिन्दी एवं अंग्रेजी की सुप्रसिद्ध पत्र पत्रिकाओं मे प्रायः दृष्टिगोचर होती रहती है। यह देखकर हमें अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि वयोवृद्ध विद्वान् श्री त्रिवेदी जी ने विगत ४ वर्षों से अपने पंचांग पत्रिका का मुद्रण प्रकाशन अब ब्रज मण्डल मथुरा से प्रारम्भ किया है। भगवान् श्री राधा रमण बिहारी जी से हमारी प्रार्थना है कि वे श्री त्रिवेदी जी को श्रमसाध्य पंचांग निर्माण की शक्ति एवं दीर्घ जीवन प्रदान करे ताकि वे ब्रजवास करते हुये पंचाग पत्रिका के द्वारा भारतीय संस्कृति की अधिकाधिक सेवा करते रहें। इस ८० वर्षीय वृद्धावस्था एवं नेत्र व्याधि ग्रस्त होते हुये भी त्रिवेदी जी अवाध गति से लेखन पाठन का कार्य करते रहते है, यह उन पर वाग्वादिनी माँ सरस्वती का वरद हस्त एवं गुरुजनो की कृपा का फल ही समझना चाहिये। हम नये विद्वानो से आग्रह करते है कि वे आदरणीय त्रिवेदी जी से प्रेरणा लेकर शास्त्र मे श्रम करें तभी शास्त्र का रहस्य स्पष्ट होगा। धर्म संस्कृति के संरक्षण एव उत्थान के लिये श्री त्रिवेदी जी सदृश विद्वानो का समादर न केवल सामान्यजनो के द्वारा अपितु समाज के नेतृ वर्ग द्वारा भी आवश्यक कर्तव्य है। मैं भगवान् रमण विहारी जी से सम्मान्य पंडित जी की दीर्घायु की तथा पंचांग की अहर्निश प्रगति की कामना करता हूँ ॥ शुभमस्तु ॥

(ह-) स्वामी कार्ष्णि गुरु शरणानंद

स्नेही सन्मित्रों के पत्र

गत अर्धशताब्दी की लम्बी अवधि में देश-विदेश के अनेक महापुरुषों (अनुभवी तन्त्र-मन्त्रमर्मज्ञों, दैवज्ञों, वैद्यों एवं प्रमुख राजपुरुषों) से मेरा स्नेह-सम्पर्क रहा है। कुछ वयोवृद्ध-विश्वविख्यात-सिद्धहस्त-सफल चिकित्सकों, तान्त्रिकों एवं ज्योतिर्विदों का आत्मीय-स्नेह प्राप्त करने का सौभाग्य भी इस जन को प्राप्त हुआ है। समय-समय पर उन महापुरुषों के आत्मीय स्नेहपूर्ण पत्र मुझे प्राप्त होते रहे हैं-जो साहित्य की अमूल्य निधि थी। उनमें से अनेक अनुसन्धानोपयोगी पत्र मेरी उपेक्षावृत्ति से नष्ट हो गये (कुछ दीमक, कीड़े, चूहों ने खा लिए) इसका मुझे भारी संताप है। जो कुछ बचे है उनमें से कुछ उपयोगी पत्र प्रतिवर्ष पंचांग में प्रकाशित करना गत दस वर्षों से प्रारम्भ किया है। उसी क्रम में नये पुराने तीन पत्र यहाँ प्रकाशित किये जा रहे है :

१

आर्यकुल कमलदिवाकर वीराग्रगण्य महाराणा प्रतापवंश विभूषण, मेवाड़ राजवंश के उत्तराधिकारी महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन हिस्टोरीकल पब्लिकेशन ट्रस्ट एवं श्री एकलिंगजी ट्रस्ट आदि अनेक ट्रस्टों के अध्यक्ष विद्यानुरागी महामहिम श्री अरविन्दसिंह जी 'मेवाड़' के हृदयोद्‌गार-

श्री एकलिंग जी जयति



राजमहल
उदयपुर (राजस्थान)
१८ जनवरी १९८८

आदरणीय पं. श्री हरदेव जी शर्मा त्रिवेदी,

सादर नमस्कार ।

आशा है आप सपरिवार स्वस्थ और प्रसन्न है। मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि आप इतने बड़े वार्द्धक्य में भी ज्योतिष के क्षेत्र मे इतनी बडी सेवाएँ दे रहे है। यह मेरे लिए गर्व का विषय है कि आप मेवाड़ के है और भारतीयस्तर पर इस धरती की ज्ञान-गरिमा को उन्नत किये हुए है। 'मेवाड़ विजय पंचांग' बहुत सुन्दर रूप में प्रकाशित हुआ है। इस प्रयास का सम्पूर्ण श्रेय आपको है। इसे अब चूंकि आपके वरदहस्तों का स्पर्श हुआ है, मुझे पूरा विश्वास है कि यह प्रतिवर्ष उत्तरोत्तर विकसित होता चला जाएगा।

शेष शुभ। आपके स्वस्थ सुदीर्घ जीवन की मंगल कामना के साथ नयेवर्ष का अभिनन्दन स्वीकारें।

भवदीय
अरविन्द सिंह 'मेवाड़'

२

वराहमिहिर-संस्थान और रामतीर्थ केन्द सहारनपुर के सुप्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य पं० केदारनाथ प्रभाकर के हृदयोद्गार

वराहमिहिर-संस्थानम्

रामतीर्थ केन्द, सहारनपुर
दिनांक २५ मार्च १९८८

आदरणीय एवं श्रद्धेय त्रिवेदी जी,

सादर प्रणाम

आप द्वारा प्रेषित विक्रमाब्द २०४५ का श्री विश्वविजय पंचांग धन्यवाद पूर्वक प्राप्त हो गया है। "ज्योतिष्मती" भी निरन्तर पढने को मिलती रहती है। उसके लिए भी कृतज्ञता स्वीकार करें।

पंचांग का स्वरूप पहले से कहीं ज्यादा बदला हुआ देखकर मन को प्रसन्नता हुई। अनेक उपयोगी एवं नवीन विषयों का भी आपने विद्वतापूर्ण इसमें समावेश कर दिया है। ऐसे सुन्दर और ज्ञानवर्धक प्रकाशन हेतु आप एवं ज्योतिष्मती प्रकाशन मथुरा के कर्मठ कार्यकर्ता वास्तव में ही बधाई के पात्र है।

भवदीय
केदारनाथ प्रभाकर

(४५ वर्ष पूर्व सं. २००१ वि. में जब मैंने सर्वप्रथम सम्पूर्ण शुद्ध चित्रापक्षीय दृग्गणित से पञ्चांग निर्माण का दुर्गम कठिन कार्य प्रारम्भ किया उस समय कोई भी पञ्चांगकर्ता सहयोग देने को प्रस्तुत नहीं था। किन्तु धीरे-धीरे सच्चाई की ओर विद्वानों का ध्यान जाने लगा। ७ वर्ष बाद विद्या गुरु बाबा विश्वनाथ की पुरी काशी से ज्योतिर्विज्ञान के उदभट् विद्वान स्व. म. म. पं. बापू देवशास्त्री जी के सुपुत्र श्री पं. गणपति देव जी शास्त्री ने काशी से एक सर्वांङ्गपूर्ण दृकपक्षीय पञ्चांग बापूदेव शास्त्री जी का पत्र नाम से प्रारम्भ किया। उस पञ्चांग को तत्कालीन विद्वान मुख्यमंत्री डा. सम्पूर्णानन्दजी ने राजकीय मान्यता प्रदान की। सत्यमेव जयते के अनुसार धीरे-धीरे समस्त भारत में दृग्गणितीय शुद्ध पञ्चांग का प्रचार होने लगा। ३२ वर्ष पूर्व शुद्धमत प्रचार के लिए पं. श्री गणपतिदेव शास्त्री जी को भी काशी में कितना संघर्ष करना पड़ा। यह उनके दस जून १९५६ के पत्र से स्पष्ट है। मुझे इस बात से आत्मसंतोष है कि मेरी अर्धशताब्दि की संघर्षपूर्ण कठिन साधना से अब उत्तर दक्षिण पश्चिम भारत के सभी पञ्चांग और पूर्वीय भारत के कई पञ्चांग दृकपक्षानुयायी हो गये हैं। एक सहृदय सहयोगी बनारस के सुप्रसिद्ध विद्वान मित्र स्व. पं. गणपतिदेव जी शास्त्री की ३२ वर्ष पूर्व लिखी यह पंक्ति–"आज से पहले के दस वर्ष की स्थिति से आज की स्थिति की तुलना करने पर मालूम होता है कि आगे आपके ही मत का प्रचार होना अवश्यम्भावी है।" उस दिग्गज विद्वान की उक्त भविष्यवाणी अब सत्य सिद्ध हो रही है। ३२ वर्ष पुराने उस पत्र की अक्षरशः प्रतिलिपि यहाँ प्रस्तुत है : –

सम्पादक

श्रीः

रतन फाटक, बनारस
१०-६-१९५६ ई०

श्रीमत्सु विद्वद्वर्येषु नमस्कारा,

आपका दिनांक २८ मई १९५६ का कृपा पत्र, सर्वांग सुन्दर 'स्वाध्याय' का बसंतांक तथा सं. २०१३ का पंचांग प्राप्त हुआ। तदर्थ अनेक धन्यवाद। सं. २०१३ का राजकीय पंचांग भेजा है। उसके स्वीकृति पत्र को भेजने की कृपा करेंगे। इस वर्ष आपको पंचांग भेजा न गया, इसके लिये क्षमा करेंगे। इसका कारण यह है कि शासन द्वारा इस पंचांग का प्रकाशनादि भार जिन पर रक्खा गया है उनके विरोधी दृष्टिकोण के कारण ही आज पांच वर्ष का समय बीतने पर भी अभी तक इसकी ठीक-ठीक व्यवस्था नहीं हो सकी है। इस पंचांग को राजकीय मान्यताप्राप्त होना विरोधी लोगों के लिए असह्य है। फिर भी आशा है कि आगामी जुलाई मास में इसकी सुव्यवस्था होगी।

विगत उ. भा. ज्योतिष सम्मेलन के सभापति पद से दिल्ली में आपने जो भाषण किया था वह अत्यन्त मार्मिक तथा संग्राह्य था। इसकी एक प्रति हम को आपके द्वारा प्राप्त हुई थी, जिसके लिए हमने आपका यथा समय अभिनन्दन भी किया था। हम को भी यहाँ आपके मत प्रचारार्थ बहुत संघर्ष करना पड़ता है। यद्यपि अभी तक इसमें संतोषजनक सफलता मिल नहीं सकी है तथापि आज से पहले के दस वर्ष की स्थिति से आज की स्थिति की तुलना करने पर मालूम होता है कि आगे आपके ही मत का प्रचार होना अवश्यम्भावी है। केवल अपने प्रयत्न में शैथिल्य कथमपि नहीं होना चाहिए। विरोधी लोग बात को समझते नहीं इसका कारण उनका अज्ञान तथा दुराग्रह ही है।

यहाँ कुशल है। आपके आयुरारोग्यैश्वर्याधभिवृध्यर्थ तथा कार्यों में सफलता प्राप्त्यर्थ श्री विश्वनाथ से नित्य प्रार्थना है। ॥ इति शुभं ॥

भवदीय
गणपतिदेव

श्रीहरि

"सुख प्रसवकर-प्रयोग

(ले० पं० रामविलास शर्मा, गौतम, काव्यतीर्थ, निवाई (टोंक-राज०)

(१) प्रथम प्रयोग –

"अस्ति गोदावरीतीरे जम्भला नाम राक्षसी।
तस्या : स्मरण मात्रेण विशल्या गर्भिणी भवेत्॥

विधि – इस मात्र से जल अभिमन्त्रित कर पिलाने से गर्भवती का सुखपूर्वक शीघ्र प्रसव होता है। प्रसव कष्ट को दूर करने का यह अनुभूत प्रयोग है।

(२) द्वितीय प्रयोग –

"य इहामृतञ्च सोमश्च चित्रभानुश्च भामिनि।
उच्चैश्रवाश्च तुर्गौ मन्दिरे निवसन्तु ते॥१॥
"इदमृतमपां समुद्धृतं वै तव लघुगर्भमिमं।
विमुच्चन्तु रथी, तदनल पवनाकी वासवास्ते।
सह लवणाम्बुधरैर्दिशन्तु शान्तिम् ॥२॥
मुक्ता : पाशा विपाशाश्च मुक्ता सूर्येण रश्मय :।
मुक्त : सर्वभयादगर्भ : एहिमे हिमा चिरं स्वाहा॥३॥
जलं वानेत मंत्रेण सप्तवाराभि मंत्रितम्।
पीत्वा प्रसूयते गर्भ : दृष्टवा चोभय त्रिंशिकाम्॥४॥
तथोभय पंचदशी दर्शनम् सुप्रसूतिकृत॥
(माघवी चिकित्सा ग्रन्थे)

विधि –उपर्युक्त तीन मंत्रों से ७ बार जलको अभिमन्त्रित कर गर्भिणी को पिलाने और नीचे लिखे दोनों यन्त्रों को दिखाने से तुरन्त प्रसव होता है। दोनों यन्त्रों को केसर चन्दन या अष्टगन्ध से थाली या किसी तस्तरी में लिखकर गर्भिणी को दिखाने तथा पवित्र जल से धोकर पिलावें भी। दर्शन व पान दोनों ही प्रसव के कष्ट को मिटाकर शान्ति प्रदान करते हैं। यह प्रयोग माधव निदान के प्रणेता के 'माधवी चिकित्सा' ग्रन्थ से उद्धृत है। इसका चमत्कार अवश्य देखना चाहिये।

पंचदशी यंत्र

८	३	४
१	५	९
६	७	२

'त्रिशंक-यन्त्र'

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

नोट – इन यन्त्रों को पहले होली, दिवाली, नवरात्र सूर्य तथा चन्द्रमा के ग्रहण के अवसर पर लिखकर सिद्ध करलेना चाहिए। ताकि वह शीघ्र कार्य कर सके। चाकी पर घिसने से जैसे शस्त्र में धार आती है। उसी तरह पर्व काल में लेखन करने से यन्त्रों में नयी शक्ति, प्रभाव व तेज अवतरित होता है।

अवकाश दिन (छुट्टियां तातीलें)

विक्रम संवत् २०४६ सन्१९८९-९० में भारत सरकार द्वारा मान्य अवकाश दिन

(दिनांक ७ अप्रैल १९८९ से २६ मार्च १९९० तक)

१ वैशाखी, पंजाब-काश्मीर	१३ अप्रैल सन् १९८९ गुरुवार
२ श्री राम नवमी	१४ अप्रैल सन् १९८९ शुक्रवार
३ श्री महावीर जयंती	१८ अप्रैल सन् १९८९ मंगलवार
४ जमातुल विदा * (वै.)	५ मई सन् १९८९ शुक्रवार
५ ईदुल फितर *	७ मई सन् १९८९ रविवार
६ बुद्ध पूर्णिमा	२० मई सन् १९८९ शनिवार
७ बैंकों की अर्ध वार्षिक लेखा बंदी	३० जून सन् १९८९ शुक्रवार
८ ईदुल जुहा (बकरीद) *	१४ जुलाई सन् १९८९ शुक्रवार
९ मोहर्रम (ताजिया) *	१३ अगस्त सन् १९८९ रविवार
१० स्वतंत्रता दिवस	१५ अगस्त सन् १९८९ मंगलवार
११ रक्षाबन्धन (वै.)	१७ अगस्त सन् १९८९ गुरुवार
१२ श्री कृष्ण जन्माष्टमी	२४ अगस्त सन् १९८९ गुरुवार
१३ चेहल्लुम (वै.) *	२१ सितम्बर सन् १९८९ गुरुवार
१४ गांधी जयन्ती	२ अक्टूबर सन् १९८९ सोमवार
१५ महानवमी (वै.)	९ अक्टूबर सन् १९८९ सोमवार
१६ दशहरा विजया दशमी	१० अक्टूबर सन् १९८९ मंगलवार
१७ ईद-ए मिलाद (वै.) *	१३ अक्टूबर सन् १९८९ शुक्रवार
१८ बाल्मीकि जयंती (वै.)	१४ अक्टूबर सन् १९८९ शनिवार
१९ रूप चतुर्दशी (वै.)	२८ अक्टूबर सन् १९८९ शनिवार
२० दीपावली	२९ अक्टूबर सन् १९८९ रविवार
२१ गोवर्धन पूजा (वै.)	३० अक्टूबर सन् १९८९ सोमवार
२२ भैया दूज (वै.)	३१ अक्टूबर सन् १९८९ मंगलवार
२३ ग्यारहवीं शरीफ (वै.) *	११ नवम्बर सन् १९८९ शनिवार
२४ गुरु नानक जयंती, कार्तिक पूर्णिमा	१३ नवम्बर सन् १९८९ सोमवार
२५ गुरु तेग बहादुर बलिदान दिवस (वै.)	३ दिसम्बर सन् १९८९ रविवार
२६ बड़ा दिन क्रिसमस डे	२५ दिसम्बर सन् १९८९ सोमवार
२७ बैंकों की वार्षिक लेखा बन्दी (वै.)	३१ दिसम्बर सन् १९८९ रविवार
२८ अंग्रेजी नववर्ष प्रारंभ (वै.)	१ जनवरी सन् १९९० सोमवार
२९ गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती	३ जनवरी सन् १९९० बुधवार
३० लोहड़ी (काश्मीर व पंजाब) (वै.)	१३ जनवरी सन् १९९० शनिवार
३१ मकर संक्रान्ति पोंगल (वै.)	१४ जनवरी सन् १९९० रविवार
३२ गणतंत्र दिवस, मौनी अमावस्या	२६ जनवरी सन् १९९० शुक्रवार
३३ बसन्त पंचमी (वै.)	३१ जनवरी सन् १९९० बुधवार
३४ गुरु रविदास जयन्ती (वै.)	९ फरवरी सन् १९९० शुक्रवार
३५ हजरत अली जन्मदिन (वै.)	१० फरवरी सन् १९९० शनिवार
३६ श्री महाशिव रात्रि	२४ फरवरी सन् १९९० शनिवार
३७ होला (वै.)	१० मार्च सन् १९९० शनिवार
३८ छारण्डी (धूलेण्डी)	११ मार्च सन् १९९० रविवार
३९ शबे बरात (वै.) *	१२ मार्च सन् १९९० सोमवार

नोट (क) मुस्लिम * त्योहारों की छुट्टियों में कभी कहीं स्थानीय चन्द्रदर्शन के अनुसार जिलाधीश फिर निर्धारित कर एक दिन का अन्तर डाल सकते है;

(ख) उपर्युक्त छुट्टियों को सरकारी गजट से मिला लेना आवश्यक है। किसी भूल या फेर बदल का दायित्व सम्पादक पर नहीं है।

(ग) (वै.) शब्द लिखा है उन्हें वैकल्पिक (ऐच्छिक) छुट्टियां समझें।



भारतीय अन्य विशेष पर्व त्यौहार आदि



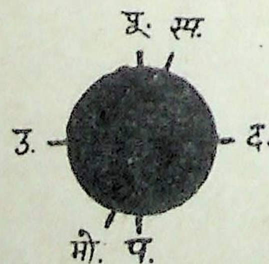
१ नववर्षारंभ, वसंत नवरात्र प्रा	६ अप्रैल गुरुवार	२३ जन्माष्टमी	२३ अगस्त बुधवार
२ गणगौरी पूजन	८ अप्रैल शनिवार	२४ वत्स द्वादशी	२८ अगस्त सोमवार
३ नवरात्र समाप्त	१४ अप्रैल शुक्रवार	२५ श्रीगणेश जन्मदिन	४ सितम्बर सोमवा.
४ वैशाख स्नान प्रारंभ	२१ अप्रैल शुक्रवार	२६ ऋषि पंचमी	५ सितम्बर मंगलवार
५ श्री वल्लभाचार्य जयन्ती	२ मई मंगलवार	२७ वामन जयंती	१२ सितम्बर मंगलवार
६ श्री परशुराम, टैगोर जयंती	७ मई रविवार	२८ नवरात्र प्रारंभ	३० सितम्बर शनिवार
७ मोहनी ११ व्रत	१६ मई मंगलवार	२९ दशहरा	१० अक्टूबर मंगलवार
८ श्री नृसिंह १४ जयंती	१९ मई शुक्रवार	३० बाल्मीकि जयंती	१४ अक्टूबर शनिवार
९ वट सावित्री पूजन	३ जून शनिवार	३१ करवा चौथ व्रत	१७ अक्टूबर मंगलवार
१० श्री गुरु अर्जुनदेव बलि दिवस	७ जून बुधवार	३२ दीपावली	२९ अक्टूबर रविवार
११ गंगा दशहरा	१३ जून मंगलवार	३३ गोवर्धन पूजा	३० अक्टूबर सोमवार
१२ निर्जला ११ व्रत	१५ जून गुरुवार	३४ भैया दूज	३१ अक्टूबर मंगलवार
१३ कबीर जयंती	१९ जून सोमवार	३५ गोपाष्टमी	६ नवम्बर सोमवार
१४ गुरु हरगोबिन्द जयंती	२० जून मंगलवार	३६ बाल दिवस	१४ नवम्बर मंगलवार
१५ श्री जगदीश यात्रा	५ जुलाई बुधवार	३७ मोक्षदा ११ व्रत	९ दिसम्बर शनिवार
१६ गुरु पूर्णिमा, व्यासपूजा	१८ जुलाई मंगलवार	३८ शाकम्भरी जयंती	११ जनवरी गुरुवार
१७ श्री तिलक जयंती	१ अगस्त मंगलवार	३९ सकट गणेश ४ व्रत	१४ जनवरी रविवार
१८ मधुश्रवा तीज	४ अगस्त शुक्रवार	४० मेला प्रयाग राज	२६ जनवरी शुक्रवार
१९ रक्षाबन्धन	१७ अगस्त गुरुवार	४१ लाला लाजपतराय जय	४ फरवरी रविवार
२० कजली तीज	१९ अगस्त शनिवार	४२ चन्द्रग्रहण	९ फरवरी शुक्रवार
२१ गणेश संकट ४ व्रत	२० अगस्त रविवार	४३ मेला (खाटू) श्याम जी	७-८ मार्च बुध-गुरुवार
२२ चन्द्रषष्ठी	२१ अगस्त सोमवार		

ग्रहण निर्णय सं. २०४६ वि.

सं. २०४६ वि. (७ अप्रैल १९८९ से २६ मार्च १९९० तक) भूमण्डल पर ४ ग्रहण दिखाई देंगे इनमें दो सूर्य और दो चन्द्रमा के हैं। भारत में केवल १ चन्द्रग्रहण माघ शु. १५ का ही ९।१० फरवरी १९९० को दिखाई देगा। शेष दो सूर्य और एक चन्द्रमा का ग्रहण भारत में कहीं भी दिखाई नहीं देगा। अतः हम यहाँ पहले भारत में दिखाई देने वाले चन्द्रग्रहण का विवरण प्रस्तुत करके अन्त में विदेशों में होने वाले तीनों ग्रहणों का विवरण प्रस्तुत करेंगे।

(१) खग्रास चन्द्रग्रहण : माघ शुक्ला पूर्णिमा शुक्रवार दिनांक ९।१० फरवरी १९९० ई. को खग्रास चन्द्रग्रहण समस्त भारत में दिखाई देगा। भारत के अतिरिक्त एशिया, महाद्वीप, दक्षिणी ध्रुव प्रदेश, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, यूरोप, अलास्का, हिन्दमहासागर, अफ्रीका, फिलीपाइन, ग्रीनलैंड में भी दिखाई देगा। भारतीय स्टैंडर्ड टाइम के अनुसार इस ग्रहण का स्पर्शादिकाल समस्त भारत में इस प्रकार है

दिनांक	स्पर्शादि	घं. मि.
९-२-९०	स्पर्श (ग्रहण प्रारम्भ)	१०-५९
१०-२-९०	सम्मीलन (पूर्ण ग्रस्त)	१२-२०
१०-२-९०	मध्य	१२-४१
१०-२-९०	उन्मीलन (ग्रास मुक्ति प्रारम्भ)	१-०३
१०-२-९०	मोक्ष (ग्रहण समाप्ति)	२-२३
पर्वकाल	(ग्रहण का कुल समय)	३ घंटे २४ मिनट



ग्रहणवेध : इस ग्रहण का वेध (सूतक) ९ फरवरी को मध्याह्न उपरान्त १ बजकर ५९ मिनट पर प्रारम्भ होगा। ग्रहण वेध एवं ग्रहणकाल में भोजनादि का निषेध है। बालवृद्ध रोगीजन ग्रहणवेध में पथ्य सेवन कर सकते हैं। यह चन्द्रग्रहण माघी पूर्णिमा को हो रहा है अतः स्नान दानादि में इस ग्रहण का विशेष महत्व है।

राशिफल : यह ग्रहण अश्लेषा नक्षत्र कर्कराशि में हो रहा है।

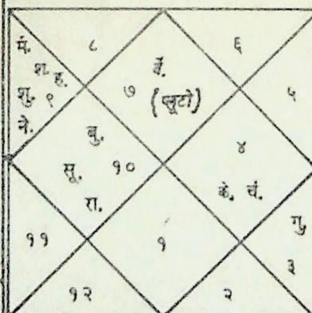
द्वादश राशिफल चक्र :

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	राशि
कष्ट	धनलाभ	हानि	घात	हानि	लाभ	सुख	मानहानि	अति कष्ट	स्त्रीकष्ट	सौख्य	चिन्ता	फल

अश्लेषा नक्षत्र और अशुभ फलदायी राशि वाले व्यक्ति तथा गर्भवती महिलायें ग्रहण का दर्शन न करें। गंगादि तीर्थ या स्थानीय सरोवर में स्नान करके देवालय या अपने घर में शुद्ध आसन पर बैठकर अपने इष्ट मंत्र का जप एवं स्तोत्र पाठ करें। ग्रहण के स्पर्श होते ही स्नान मध्य में हवन देव पूजन, मोक्ष से कुछ मिनट पहले उन्मीलन, रात्रि एक बजकर तीन मिनट के बाद दान और मोक्ष रात्रि २ बजकर २३ मिनट के बाद पुनः शुद्ध स्नान करना चाहिए।

"स्पर्शे स्नानं जपं कुर्यान्मध्ये होमं सुरार्चनम् । मुच्यमाने प्रदातव्यं मुक्ते स्नानं विधीयते ॥"

ग्रहण मध्य लग्न :



लग्न में वेंकटेश (प्लूटो) बैठा है और लग्नेश शुक्र धनेश सप्तमेश मंगल व चतुर्थेश पचमेश शनि से आक्रान्त होकर दशमस्थ राज्येश चन्द्रमा से षडष्टक योग बना रहा है। अतः भारत रूस अमेरिका में कुछ अप्रत्याशित घटनाएँ घटेंगी। पश्चिमी एशिया की स्थिति जटिल बनेगी। केन्द्रीय सरकार में और कुछ प्रान्तीय सरकार में राजनैतिक बदलाव आवेगा। साम्प्रदायिक और भाषायी झगड़े होंगे। गुरु की दृष्टि के कारण विश्वयुद्ध नहीं होगा। कर्क राशि पर ग्रहण होने के कारण वनवासी जनजाति अहीर मल्लाह एवं गर्दभादि पशुओं को पीड़ा और मंगल शनि के कारण किसी राजा या प्रधान शासक की मृत्यु होगी।

"कर्कटे ग्रहणे पीड़ा गर्दभानां च जायते ॥
आभीर बर्बराणाञ्च पीड़ा च महती मता ॥
क्रूर संदृष्ट सूर्येन्द्वोर्ग्रहणे नृपतिक्षयः ॥
राष्ट्रभंग इति प्राहुर्भप्रज्ञावै मुनीश्वरः ॥
सर्वग्रस्तौ चन्दसूर्यौ दुर्भिक्षमरणप्रदौ ॥

विदेशों में दिखाई देने वाले तीन ग्रहण :

(१) खग्रास चन्दग्रहण : श्रावण शुक्ला १५ गुरुवार दि. १७ अगस्त १९८९ का खग्रास चन्दग्रहण भारत में कहीं भी नहीं दीखेगा। भारत के पश्चिमोत्तर की ओर पाकिस्तान, ईराक, ईरान, सऊदी अरब में दिखाई देगा। ग्रहण लगता हुआ (स्पर्शकाल) यूरोप मध्यपूर्व अफ्रीका, अण्टार्कटिका, अन्ध महासागर, दक्षिण-मध्य अमेरिका, उत्तरी अमेरिका के आधे पूर्वी भाग और दक्षिणी प्रशान्त महासागर के आधे पूर्वी भाग में दिखाई देगा। उन्मीलन के बाद ग्रहण छूटता हुआ मोक्ष पश्चिमी यूरोप, पश्चिमी अफ्रीका, अन्टार्कटिका, अन्ध महासागर, दक्षिणी और मध्य अमेरिका, अलास्का के अतिरिक्त सम्पूर्ण उत्तरी अमेरिका और प्रशान्त महासागर के आधे पूर्वी भाग में दिखाई देगा। भारतीय स्टैन्डर्ड टाइम के अनुसार इस ग्रहण का स्पर्शादि काल इस प्रकार है : स्पर्श प्रातः ६।५१, सम्मीलन ७।५०, मध्य ८।३८, उन्मीलन ९।२५, मोक्ष १०।२६ ।

(२) खण्ड ग्रास सूर्यग्रहण : भाद्रपद कृष्ण अमावस्या गुरुवार दिनांक ३१ अगस्त १९८९ का यह खण्डग्रास सूर्यग्रहण केवल अफ्रीका के सुदूर दक्षिणी पूर्वी भाग, मेडागास्कर और अण्टार्टिका के कुछ भाग और दक्षिणी ध्रुव प्रदेश में ही दिखाई देगा। भारतीय स्टैंडर्ड टाइम के अनुसार इस ग्रहण का स्पर्शादि काल इस प्रकार है . स्पर्श ९।४, मध्य ११।१, मोक्ष १२।५८ भारत में दिखाई न देने से इस सूर्यग्रहण का पर्वकाल यहाँ नहीं माना जायेगा। यहाँ एक चन्द्रमास में १५ दिन में दो ग्रहण हो रहे हैं। यह विश्व के लिए हानिप्रद है, जहाँ ग्रहण दिखाई देंगे वहाँ अधिक हानि होगी।

(३) कंकण सूर्यग्रहण : माघ कृष्ण अमावस्या शुक्रवार दिनांक २६ जनवरी १९९०ई. को उत्तराषाढ़ नक्षत्र मकर राशि पर यह ग्रहण सम्पूर्ण दक्षिणी अमेरिका, न्यूजीलैंड के दक्षिणी भाग, दक्षिणी ध्रुव प्रदेश में दिखाई देगा। इस ग्रहण का स्पर्शादि काल भारतीय स्टैंडर्ड टाइम के अनुसार इस प्रकार है : स्पर्श रात्रि १०।४३, मध्य (२७ जनवरी प्रातः) ०।२५, मोक्ष ३।१८ रात्रि होने के कारण भारत में यह ग्रहण कहीं भी दिखाई नहीं देगा। अतः यहाँ इस ग्रहण का पर्वकाल नहीं माना जायेगा।



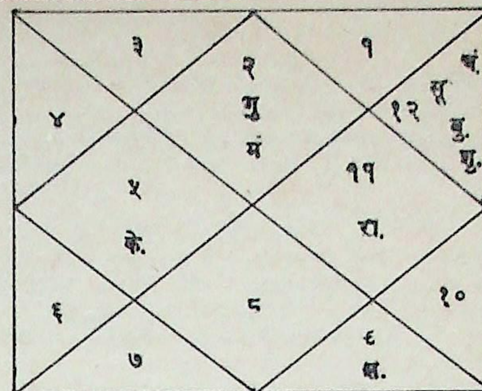
१९८९-९० में धनु: के शनि का संसार पर कुप्रभाव

—श्री के. एन. राव (आई. ए. ए. एस.)

काल का भयावह चक्र चल रहा है। पृथ्वी विनाश की ओर अग्रसर हो रही है। तुला से धनु तक, शनि के भ्रमण के बारे में इस पञ्चाङ्ग के सम्पादक हरदेव शास्त्री त्रिवेदी जी कम से कम सात सालों से चेतावनी देते आ रहे है। इनमें से मेरे अनुभव में धनु का शनि प्राकृतिक आपदाओं और आर्थिक समस्याओं की दृष्टि से समस्त संसार के लिए अवश्य बड़े संकट का सूचक है। पूरे विश्व में और खास कर भारत में पत्रकारिता का स्तर इतना गिर चुका है कि पत्रकार गिरते हुए नैतिक मूल्यों की ओर ध्यान न देकर राजनीतिक गतिविधियों को ही मुख्य घटनाएँ मानते हुए असली समस्याओं की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित नहीं करते। मैंने यह भविष्यवाणी ९ सितम्बर को कृषिमन्त्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों को दी थी कि सितम्बर के अन्तिम सप्ताह में अचानक आई हुई बरसात से खड़ी फसल को नुकसान पहुँच सकता है। किन्तु मौसम विभाग ने १२ सितम्बर को पश्चिमोत्तर भारत में मानसून के अन्त होने की घोषणा कर दी थी। यही नहीं भाखड़ा नंगल के अधिकारियों को मौसम विभाग के निदेशक ने लिखित रिपोर्ट भेजी थी कि सितम्बर के महीने में १९ प्रतिशत कम बरसात होगी। हुआ बल्कि उल्टा २० से २४ सितम्बर के बीच में पंजाब में जो प्रलय हुई उसके लिए पंजाब के राज्यपाल सिद्धार्थ शंकर राय को पंजाब के बाढ़ पीड़ित लोगों की सहायता के लिए अपील करनी पड़ी। इतनी बड़ी असफलता के बावजूद अरबों रुपये विज्ञान के नाम से बहाये जा रहे है।

१६ अक्टूबर १९८७ में इंगलैंड में एक तूफान आया था जिससे इतनी बरबादी हुई थी कि वहाँ इंशोरेंस कम्पनियों को तीन हजार करोड़ पाउण्ड के दावों को सुलझाना पड़ा। मौसम विभाग की इस असफलता के लिए सरकारी जांच बैठाई गई और जनवरी १९८८ में दी हुई रिपोर्ट में यह कहा गया कि उपग्रह और कम्प्यूटर पर बढ़ती निर्भरता के कारण मौसम विभाग ज्यादा गलती कर रहा है। हिन्दुस्तान में मौसम विभाग की इतनी बड़ी असफलता के बावजूद न इसकी चर्चा ही दिल्ली के अखबारों ने की और न सरकार ने इतनी भारी असफलता की जांच के लिए कोई आदेश ही दिए। भौतिक विज्ञान आज मनुष्य का सबसे बड़ा अन्धविश्वास बन गया है और इसका परिणाम १९९४ तक संसार को विशेषकर भारत को भुगतना ही पड़ेगा।

अगर आर्थिक समस्याओं पर ध्यान दें तो यह विदित है कि धनु का शनि भारत की आजादी की कुण्डली के द्वितीय स्थान पर दृष्टि डालकर भयावह आर्थिक स्थिति को दर्शा रहा है। पंडित नेहरू के समय, १९५९ के बाद जब शनि धनु में पहुँचा था उस समय भारत की आर्थिक स्थिति इतनी बिगड़ चुकी थी कि भारत-चीन युद्ध के समय विदेशी बाजारों से अस्त्र-शस्त्र खरीदने के लिए भारत के पास पर्याप्त पूँजी भी नहीं थी। आज ३० साल बाद जब शनि फिर उसी स्थिति में आ पहुँचा है। यह संकट उस समय से भी ज्यादा गहरा इसलिए है कि भारत आर्थिक अराजकता के कगार पर खड़ा है। वित्त आयोग के अध्यक्ष एन. के. पी. साल्वे ने अभी हाल में यह कहा कि अगर स्थिति अभी नहीं सम्भाली गई तो १९९४-९५ तक देश महा दरिद्र हो जाएगा। कारण यह कि जब अभी केन्द्रीय सरकार को ऋण ५०,००० करोड़ है और राज्य सरकारों का २०,००० करोड़ अब प्रश्न यह उठता है कि क्या यह स्थिति सम्भल सकती है? ज्योतिषीय दृष्टिकोण से भविष्य ज्यादा अंधकारमय नहीं रहेगा। जैसा कि श्री साल्वे एक अर्थशास्त्री के रूप में आंकड़ों के आधार पर बता रहे हैं। इसका कारण गत वर्ष की चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की कुण्डली और इस वर्ष ६ अप्रैल १९८९ को प्रातः ९ बजकर ३ मिनट की कुण्डली से स्पष्ट हो जाएगा। गत वर्ष की कुण्डली में दशमेश वृहस्पति का अष्टमेश शुक्र के साथ द्वितीय स्थान में युति होने के कारण अब तक भारत में १२ स्थानों में सोना, राजस्थान से मध्य प्रदेश तक हीरा और करीब १० जगह तेल और गैस के प्राकृतिक भंडार मिल चुके हैं। यह भविष्यवाणी एक प्रतिष्ठित अंग्रेजी ज्योतिष पत्रिका में पिछले साल ही दैवज्ञ द्वारा कर दी गई थी। इस वर्ष की जो कुण्डली बनती है वह इस प्रकार है



इस में एक बात विशेष है कि अष्टम में शनि मंगल से दृष्ट है जो भू-गर्भ के खनिज-पदार्थों की ओर इंगित कर रहा है। अष्टमेश वृहस्पति स्वयं शुक्र की राशि में है जिससे सोना, चांदी,हीरा, यूरेनियम आदि बहुमूल्य खनिजों की प्राप्ति के संकेत है। साथ ही यह भी याद रखना चाहिए कि आजादी की कुण्डली में सितम्बर में केतु महादशा समाप्त होकर शुक्र की महादशा शुरु होगी। शुक्र कर्क राशि में दशमेश शनि के साथ अन्य ग्रहों के साथ बैठा है। शुक्र षष्टेश होकर तृतीय में बैठा है इसलिए शुक्र महादशा में भारत के पड़ोसी राष्ट्रों से भूमि सम्बन्धी विवाद और युद्ध होंगे। शुक्र षष्टेश होकर जल तत्व राशि में बैठा है। इसलिए जलजनित संक्रामक बिमारियाँ खासकर मलेरिया आदि ज्यादा व्यापक रूप में फैलेंगी। किन्तु जब शुक्र ग्रह चन्द्रमा की राशि में स्थित हो तो बहुमूल्य पदार्थों की प्राप्ति की सूचना भी दे रहा है। पाराशर्य ज्योतिष में तृतीय स्थान उपदेश का भी होता है। कठिन परिस्थितियों से गुजर कर भारत संसार के रंगमंच पर एक उपदेशक का रूप प्राप्त करेगा।

इस प्रकार के उज्ज्वल भविष्य को सामने रखते हुए मंगल की चतुर्थ केतु और अष्टम में शनि पर पड़ी दृष्टियों का क्या प्रभाव पड़ सकता है यह ज्योतिषियों के लिए बहुत स्पष्ट है, किन्तु आम जनता इसका अर्थ नहीं समझ सकती। चतुर्थ भूमि है और अष्टम भू-गर्भ है। भूमि और भू-गर्भ दोनों में विनाश लीला दिख रही है। खासकर इसलिए कि इन दोनों स्थानों पर प्रभाव मंगल का है जो विस्फोटक ग्रह है इसलिए, इस साल विशेषकर अगस्त में पड़ने वाले ग्रहण के आसपास भारत में भूकम्प से भयावह क्षति होगी। क्या यह स्थिति परमाणु दुर्घटना द्योतक नहीं है? जब कि संसार के बड़े औद्योगिक राष्ट्र परमाणु ऊर्जा केन्द्रों को न बढ़ाने का निर्णय ले चुके है। क्या यह देश इनकी संख्या को बढ़ाकर भारी गलती नहीं कर रहा है?

इस सम्भावित दुर्घटना को समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि भारत का समस्त भू-खण्ड भूमिकंप से कम या ज्यादा पीड़ित होगा। क्योंकि वैज्ञानिकों ने अपने अध्ययन के आधार पर सम्पूर्ण भारत को ६ खण्डों में बांटा है। कम और ज्यादा भूमिकंप के आधार पर दो प्रकार के वैज्ञानिकों में एक आधार का मतभेद हो गया है। एक वे जो कहते है कि संपूर्ण भारत में कोई भी स्थान भूमिकंप के भय से मुक्त नहीं है और दूसरे वे परमाणु वैज्ञानिक जो यह कहते हैं कि परमाणु ऊर्जा केन्द्रों को भूमिकंपों से कोई भय नहीं है। किन्तु ज्योतिषीय दृष्टिकोण से अष्टमस्थ शनि पर जब मंगल की दृष्टि पड़ रही है तो भूमिकंप के साथ-साथ भारत में भू के ऊपर और भू के गर्भ में दुर्घटनाओं के बढ़ने के आसार होंगे।

दशमस्थ राहु पर शनि की दृष्टि है और दशमस्थ स्वयं मंगल से पीड़ित है। वृहस्पति जिस वर्ष भी अतिचारी होकर सवा दो नक्षत्रों से ज्यादा भ्रमण करता है तब राजनीतिक गतिविधियाँ देश के लिए शुभ नहीं होती है। वृहस्पति द्वारा मेष से लेकर मिथुन तक भ्रमण के दौरान, शताब्दी के शुरु में अंग्रेजों ने अल्प संख्यकों को विशेष मताधिकार देकर देश की विभाजन की भूमिका तैयार कर दी थी। उसके बाद जब मांटेगू और चैम्सफोर्ड सुधार आए तो इस प्रकार के पृथकीकरण को

विभाजन की भूमिका तैयार कर दी थी। उसके बाद जब मांटेगू और चैम्सफोर्ड सुधार आए तो इस प्रकार के पृथकीकरण को

पुष्टि मिली। वृहस्पति जब इसी क्षेत्र में १९२९-३० के आसपास भ्रमण कर रहा था तब सर मौहम्मद इकबाल ने भारतीय मुस्लिमों के लिए पृथक राष्ट्र की आवश्यकता पर जोर दिया था। और मुस्लिम लीग सशक्त होने लगी थी। इसके बाद वृहस्पति जब इस क्षेत्र में फिर आया तो भारत का प्रथम आम चुनाव हुआ और केन्द्रीय सरकार में भारी परिवर्तन हुए। द्वितीय बार जब आया तो पंडित नेहरू की मृत्यु हुई। उसके बाद लाल बहादुर शास्त्री और श्रीमती गांधी प्रधान मन्त्री बनी। उसके बाद फिर जब यहाँ पर आया तब श्रीमती गांधी की सरकार गिरी और जनता सरकार सत्ता में आयी। अब उसी क्षेत्र में वृहस्पति फिर भ्रमण कर रहा है। साथ-साथ शनि पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में जिसके लिए वराह मिहिराचार्य ने छत्रभग योग का उल्लेख किया है। जिसका भारतीय परिस्थितियों में सामान्य अर्थ है चुनाव होकर भारी परिवर्तन होंगे। क्योंकि पंचम स्थान पर ६ ग्रहो की दृष्टि है युवा वर्ग सशक्त होकर आश्चर्यजनकरूप से चौंका देने वाली परिस्थितियाँ पैदा करेगा।

किन्तु यह बात याद रखनी चाहिए कि मंगल की अष्टमस्थ शनि पर जो दृष्टि है वह दो दुखद घटनाओं को भी सूचित कर रही है। नवमेश होने के कारण शनि धर्म और न्याय का प्रतीक है जो पीड़ित हो रहा है। दशमेश होने के कारण सत्ताधारी पार्टी का द्योतक है। अर्थ स्पष्ट है।

संक्षेप में कहा जाए तो एकादश में चतुर्ग्रही योग होने से अर्थव्यवस्था, संचार-संबंधी कानून, भूमि-संशोधन तथा शिक्षा नीति में कुछ परिवर्तन और कुछ नये कानून इस साल बनेंगे जिनमें से भूमि संबंधी कानून विवाद के कारण होंगे। आर्थिक स्थिति को संभालने की क्षमता बढ़ेगी।

इस आधार पर अन्य राष्ट्रों की भी कुण्डली बनाई जाए तो यह स्पष्ट है कि अमेरिका में (वृश्चिक लग्न) युवा वर्ग यौन संबंधी मामलों में कुछ हिंसात्मक रूप अपनायेगा। राष्ट्रपति जार्ज बुश के ऊपर हिंसात्मक प्रहार भी हो सकता है। अमरीका अन्तर्राष्ट्रीय तनाव के कारण सख्त होकर सैनिक कार्यवाहियों में लिप्त होगा। रूस में गोर्वाचोव की स्थिति डावांडोल होती दिखाई दे रही है और रूस में (मेष लग्न) पहली बार बहु-राष्ट्रीय कंपनियाँ विदेशी पूँजी के साथ घुसपैठ करेंगी।

चीन के लिए अनेक उपलब्धियों का वर्ष जरूर होगा किन्तु किसी पड़ोसी राज्य से अनबन नहीं टलेगी। इंग्लैंड के लिए यह वर्ष दुखद प्रतीत होता है। एक तो राज परिवार में किसी प्रकार का कष्ट और दूसरा मारग्रेट थैचर की सरकार का किसी अन्तर्राष्ट्रीय विवाद में फंस कर मुसीबत में पड़ने का योग दिखता है। ऐसी स्थिति में इनकी पार्टी का विभाजन तक हो सकता है। सबसे अच्छा तो यह साल जर्मनी के लिए रहेगा। वह जापान से एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में टक्कर लेने की स्थिति में उभरेगा।

जापान का यह वर्ष भूमिकंपों से पीड़ित होने का है। भारत, जापान और अमेरिका भयंकर भूमिकंपों से पीड़ित होंगे। पाकिस्तान में बेनजीर भुट्टो की सरकार सेना के चंगुल में फंसेगी।

इसराइल और उनके पड़ोसी राष्ट्रों में भयंकर युद्ध का डर बना ही रहेगा और वहाँ से विश्व-शांति को खतरा और विभिन्न देशों के विदेशी नेताओं के सम्बन्धों में अड़चनें पैदा होकर कड़वाहट होगी।

अन्त में यह कहना उचित होगी कि जब मंगल वृष से मिथुन में पहुँचेगा(१९ अप्रैल) तब स्थिति ज्यादा भयावह हो जाएगी। जब कर्क में पहुँचेगा (६ जून) तो राहु पर मंगल शनि दोनों की दृष्टि होने के कारण भारत में अजीबोगरीब स्थिति पैदा होने लगेगी। सिंह में पहुँचने के बाद भी (२४ जुलाई) यह स्थिति और खराब होगी। कन्या में पहुँचने पर (९ सितम्बर) पीड़ा असह्य हो जाएगी।

प्रकृति मनुष्य से बदला लेने पर उतारू है। वसुन्धरा अट्टहास कर रही है और मूर्ख वैज्ञानिक और उनके समर्थक यह समझ रहे हैं कि उन्होंने प्रकृति के सब रहस्यों को अपने चर्मचक्षु से देख लिया है। यह विधि की विडम्बना मात्र है। भारत के शिक्षित वर्गों में जड़ भौतिक विज्ञान में अन्धविश्वास करने वालों की संख्या बढ़ रही है क्योंकि वे भौतिक और आध्यात्मिक पतन की ओर तेज़ी से बढ़ रहे हैं।

टेलिग्राफलेन नई दिल्ली।

विश्व रंग-मंच सन् १९८९-९०

–एस. के. केलकर

भविष्य के बारे में जानने वाले अधिकतर उत्सुक व्यक्ति सामान्यत: यह पूछते हैं कि आने वाला नया वर्ष सम्पूर्ण विश्व में क्या परिवर्तन लाएगा और विश्व में क्या गतिविधियाँ रहने की संभावना है। विभिन्न कुण्डलियों एवं ग्रह स्थितियों पर गहन विचार विमर्श के उपरान्त जिनमें प्रमुखतया वर्ष की चार प्रमुख कुण्डलियाँ, चार ग्रहण, एवं भारत वर्ष की बाकी चन्द्र कुण्डलियों से यह समझा जा सकता है कि यह वर्ष (१९८९-९०) आगे आने वाले वर्ष (१९९०-९१) की रूपरेखा का निर्धारण वर्ष होगा। ग्रहों की स्थितियाँ वर्ष का पूर्वार्द्ध अनेक प्राकृतिक प्रकोप भूकम्प, ज्वालामुखी, विस्फोट आदि से पूर्ण होगा। किन्तु हमारे राजनीतिक नेता इस ओर कोई भी निर्णायक कदम उठाने का साहस नहीं करेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध अनेक आश्चर्यजनक घटनाओं से भरा हुआ (परिपूर्ण) होगा। संक्षेप में यह सभी ग्रहस्थितियाँ वर्ष १९९० को एक नाटकीय एवं परिवर्तनशील वर्ष के रूप में प्रस्तुत करेंगे।

भारत

प्रधानमंत्री की जन्मकुण्डली

मेरी सन् १९८२ में की गई भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई कि जब राजीव गांधी ने वर्ष १९८४ में प्रधानमंत्री का कार्यभार संभाला। वर्ष १९८५-८६-८७-८८ अधिक महत्वपूर्ण नहीं रहे जैसा कि अनेक अवसरों से प्रमाणित है। वर्षपर्यन्त प्रधानमंत्री की जन्मकुण्डली उत्तरोत्तर अच्छी हो रही है, क्योंकि अशुभ ग्रहों के प्रभाव कम हो रहे हैं। गुरु दशवें एवं ग्यारहवें स्थान पर है और यह देश एवं विदेश में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ाने में सहायक है। इससे उनमें भारत के भविष्य की प्रगति के लिए ठोस आधार देने का आत्म-विश्वास बढ़ेगा। यद्यपि निश्चित रूप से फरवरी एवं अगस्त के ग्रहण उनके ग्रहों पर विपरीत प्रतिकूल प्रभाव डालेंगे। अत: उनको अपनी सुरक्षा के लिए सावधान रहना चाहिए। एवं कोई भी उपद्रव मुख्य रूप से फरवरी एवं अगस्त व सितम्बर में हो सकते हैं। इस संक्रमण काल से पार होने के बाद वह भारत का भविष्य उज्जवल बना सकते हैं।

मध्यावधि चुनाव

विपक्षीदल बहुत आशान्वित है कि भारत सरकार मध्यावधि चुनाव की तैयारी कर रही है। इसके विपरीत प्रधान मंत्री बार-बार इस प्रकार के चुनाव की संभावना से मना कर रहे हैं। प्रधानमंत्री का इस प्रकार का व्यवहार जनता में संशय पैदा कर रहा है कि वह इस भय से मध्यावधि चुनाव नहीं करा रहे हैं कि समय से पूर्व चुनाव कराने पर वर्तमान सरकार कांग्रेस (इ) को उतनी लोकप्रियता एवं बहुमत प्राप्त नहीं होगा जितना कि आज है। ज्योतिषियों के अनुसार सत्तारूढ़ दल अधिक लाभान्वित होता यदि वर्ष १९८८ में मध्यावधि चुनाव कराता। वर्ष १९८९ में शनि एवं अन्य दो धीमी गति वाले ग्रह कांग्रेस (इ) के दशम स्थान के ऊपर से संक्रमण कर रहे हैं। इस प्रकार का संक्रमण अगर चुनाव दिसम्बर १९८८ अथवा १९८९ के प्रारम्भ में होतो लोकसभा में विशाल बहुमत (२/३ बहुमत) निश्चित नहीं करता। संक्षेप में कहा जा सकता है कि चुनाव कब करायें यह सत्तारूढ़ दल को निश्चित करना है। लेकिन यह निश्चित है कि नवनिर्वाचित लोकसभा में दो तिहाई बहुमत प्राप्त करना संभव नहीं है।

जनता दल

विपक्ष में पूरी एकता की आशा करना एक स्वप्न है और वास्तविकता से परे है। इलाहाबाद उपचुनाव में भूतपूर्व वित्तमंत्री वी. पी. सिंह की सफलता से विपक्षीदल की संभावनाएँ उनके नेतृत्व में अच्छी है अत: बंगलौर में दिनांक १२ अक्टूबर १९८८ दोपहर १२ बजे उनके नेतृत्व में एक नयी पार्टी 'जनता दल' का गठन हुआ। जनता दल की जन्म कुण्डली में बलवान ग्रह की अपेक्षा निर्बल ग्रह अधिक है। अत: यह प्रतीत होता है कि जनता दल वर्तमान सत्तारूढ़ दल से सामना नहीं कर पाएगा लेकिन सत्तारूढ़ दल की कुण्डली में भी कुछ कमजोर ग्रह होने के कारण विपक्षी दल लोकसभा में वर्तमान सीटों की अपेक्षा अच्छी संख्या में सीटें प्राप्त करना संभव है।

विदेश नीति

श्रीलंका एव मालदीव द्वीप समूह में हमारी सेना की कार्यवाही को देखते हुए हम कह सकते हैं कि हमारी सुरक्षात्मक तैयारियाँ काफी अच्छी है। पाकिस्तान की नवनिर्वाचित नेता भारत के साथ अनाक्रमण संधि पर विश्वास नहीं करती। प्रधानमंत्री की चीन यात्रा शुभ लक्षण है। जार्ज-बुश पाकिस्तान की मदद कर सकते है। वर्ष १९९० भारत के लिए पेचीदगियो से पूर्ण वर्ष है जब कि गुट-निरपेक्षता की नीति को कड़ी परीक्षा के दौर से गुजरना होगा।

आर्थिक परिस्थितियाँ

आर्थिक परिस्थितियों का निर्णय प्रायः द्वितीय स्थान से किया जाता है। द्वितीय स्थान के स्वामी को द्वितीय स्थान पर रखा जाता है। इसके अतिरिक्त अधिकतर ग्रहण कुंभ राशि में होंगे और इसीलिए सरकार को व्यय पर अधिक सख्त नियंत्रण रखना होगा। कुछ दूसरे देशों द्वारा दिये गए आश्वासन पूरे नहीं हो सकेंगे। अतः अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष (आइ. एम. एफ.) या अन्य अन्तर्राष्ट्रीय वित्त संस्थाएँ नापसंद तरीके अपनाने पर दबाव डालेगी, यह नीति आगामी वर्ष के लिए भी अपनायी जायेगी।

वैज्ञानिक खोज

प्लूटो दशम स्थान पर संक्रमण कर रहा है फलस्वरूप वैज्ञानिक प्रगति अनवरत रहेगी। इस वर्ष वृहस्पति अनुकूल है अतः अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कोई भी एक भारतीय वैज्ञानिक सम्मानित होगा। अमरीकी सहायता से पाकिस्तान के प्रयत्नों के प्रति हमारे देश को विशेष चिन्ता की आवश्यकता नहीं है।

वर्षा

वर्ष १९८९ में वर्षा पूर्ण सन्तोषजनक नहीं होगी, क्योंकि शनि ग्रह अति तापसूचक धनुराशि में संक्रमण करने वाला है। अतः वर्षा का सामान्य स्तर तक होना कठिन है। सन् १९९० में वर्षा सामान्य से अधिक होगी। सन् १९८९ के मध्य में जुलाई से अगस्त २७ तक वर्षा अच्छी होगी। सितम्बर, अक्टूबर में वर्षा अनिश्चित होगी।

प्राकृतिक प्रकोप-भूकम्प

वर्ष १९८८ में उत्तर-पूर्व भारत में भूकम्प आया और इसका खतरा अभी भी बना हुआ है, हिमाचल प्रदेश, नेपाल और दिल्ली के आसपास के क्षेत्र फरवरी-मार्च और फिर अगस्त, सितम्बर में भूकम्प और दैवी प्रकोप के लक्ष्य होंगे। यह निष्कर्ष इस आधार पर निकाला गया है क्योंकि हिमाचल प्रदेश में कांगड़ा मार्च १९०५ में भूकम्प की चपेट में आया था। चौरासी वर्षों में समय का एक वृत्त पूरा होता है, अतः उसकी पुनरावृत्ति से इंकार नहीं किया जा सकता।

अंतर्राष्ट्रीय मंच

पाकिस्तान

पाकिस्तान में पूर्वके ४० वर्ष का इतिहास यह बताता है कि वहाँ पर लोकतान्त्रिक शासन मुश्किल से टिक पाया है, अधिकांश राष्ट्रीय नेता (जिन्ना को छोड़कर) या तो हटा दिये गये है या फांसी पर चढ़ा दिये गये अथवा मार दिये गये। इन बातों को ध्यान में रख कर भावी ग्रह स्थितियों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि निर्वाचित पार्टी सत्ता में केवल एक या डेढ़ वर्ष रह पाएगी, क्योंकि सितम्बर १९९० से मार्च १९९१ तक अति तापसूचक मंगलदशम भाग पर संक्रमण कर रहा है और निश्चित रूप से वर्तमान प्रशासन को किसी भी मिलिट्री नेता द्वारा अथवा सैनिक विद्रोह द्वारा किसी प्रकार से परेशान किया जा सकता है या हटाया जा सकता है। आगे भी १९९२-९३ में भी शनि ग्यारहवें स्थान में रहेगा। फलस्वरूप देश में बराबर अस्थिरता रखेगा।

अमेरिका

जार्ज-बुश के कार्यकाल के दौरान अमेरिका की कुण्डली दिसम्बर १९८९ से अप्रैल १९९० तक प्रतिकूल प्रभावित होती है। प्राकृतिक प्रकोपों के साथ-साथ राजनीतिक संकट भी उत्पन्न हो सकता है। जार्ज बुश की और संयुक्त राज्य अमेरिका की कुण्डलियों का अवलोकन करने पर यह कहा जा सकता है कि मई १९९० के बाद ही उनके उच्च पद को प्राप्त करने की सार्थकता की संभावना बनती है। एक दूसरा वाटर-ग्रेट कांड भी हो सकता है जिसके कारण उनको १९९१ या उससे पूर्व पद-त्याग करना पड़ सकता है।

सोवियत संघ

सोवियत संघ के राष्ट्रपति श्री मिखाइल गोर्बाचोव १९८९-९० में रूसियों को बहुत प्रभावित करेंगे। किन्तु संभवतः १९९१-या १९९२ में उनका कार्यकाल समाप्त हो जाए। १८ दिसम्बर १९८८ को सोवियत रिपब्लिक ऑफ आर्मीनिया में विनाशकारी भयंकर भूकम्प आया इसमें ८०,००० से भी अधिक व्यक्ति मारे गए। गत ८० वर्षों में यह सबसे भयंकर भूकम्प था। इसकी भविष्यवाणी १९८६ में ही कर दी गई थी जबकि चैरनीबाल की विनाश लीला हुई थी। अक्टूबर, नवम्बर १९८९ और सितम्बर दिसम्बर१९९० में भी इसी प्रकार के भूकम्प और परमाणु विध्वंस की संभावना बनती है।

चीन

चीन के केन्द्रीय नेतृत्व को आगामी तीन वर्षों तक बराबर खतरा बना रहेगा। अतः राजनीतिक अस्थिरता नीतियों को प्रभावित करेगी। विपक्ष सशक्त और प्रबल होगा, तथा क्षेत्रीय भावना बूमरैंग की तरह कार्य करेगी। फलस्वरूप अनेक नये व्यक्ति सरकार और (बूमरैंग की तरह) शासन पर अधिकार करेंगे। चीन के स्थापना वर्ष १९४९ के बाद यह पहला क्रान्तिकारी परिवर्तन होगा। वर्ष १९८८ के प्रारम्भ में चीन की राष्ट्रीय भूकम्प विज्ञान संस्था के अधिकारियों ने वर्ष १९८८ में भयंकर भूकम्प का समाचार प्रकाशित किया था। ज्योतिष गणना से वर्ष १९९० में प्राकृतिक विपदायें विशेष रूप से भूकम्प की संभावना है। १९८९ में कुछ हल्के भूकम्प कम्पन रिकार्ड किये जाने की संभावना है।

जापान

अधिकतर ग्रह स्थितियाँ जापान के लिए अनुकूल है। फलस्वरूप जापान का व्यापार और उद्योग-धंधे आश्चर्यजनक रूप से बढ़ेंगे विशेष रूप से मध्य-पूर्व और दक्षिण-पूर्व एशिया में। परिणामस्वरूप यह जापान को आगे आने वाले समय में अपनी सैनिक शक्ति स्थापित करने में सहायक होगा, विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहाँ से कि जापान अमेरिकी सैन्य बंदरगाहों को आगे आने वाले कुछ वर्षों में हटा देगा। आगे देश को १९९२-९३ में भयंकर भूकम्प का सामना करना पड़ेगा जिसका निश्चित समय आगे समायानुसार बताया जाएगा।

इंग्लैण्ड

गत कुछ वर्षों से भाग्य श्रीमती मार्गरेट थैचर के पक्ष में नहीं है, क्योंकि फरवरी १९८९ में शनि सूर्य के चारों ओर संक्रमण कर रहा है जो कि मार्गरेट थैचर को भयंकर झटका पहुँचाएगा और चिन्ताग्रस्त करेगा। अगर वह इस झटके को झेल जाती है जो कि कठिन है तो उनको अन्य खतरे जून तथा नवम्बर अन्त में १९८९ में हो सकते है। इस सब ग्रहस्थितियों के अनुसार वर्ष १९८९ में इंग्लैण्ड के नेतृत्व में परिवर्तन आ सकता है।

फ्रांस

मिस्टर मितरा राष्ट्रपति चुनाव में सफलता प्राप्त कर निर्वाचित हुए और वह फ्रांस में ५ वर्ष तक शासन करेंगे। किन्तु वह निम्न तीन कारणों से शान्ति एवं स्थिरता से शासन नहीं कर पायेंगे। (१) शनि का सूर्य वृत्ताकार संक्रमण, (२) वर्ष १९८९ में अनुकूल ग्रहण फल न होना (३) स्वास्थ्य में निरंतर गिरावट। अतः आगामी वर्ष में ही हम कुछ निश्चित कह सकने में समर्थ हो सकेंगे। इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि अन्तर्राष्ट्रीय-विश्व में फ्रांस की छवि धूमिल होगी।

फिलीपाइन्स

श्रीमती एक्विनो को वर्ष १९८९ के मध्य में अपनी सरकार को गिरने का खतरा है। विशेष रूप से उस समय जबकि शनि सूर्य के सम्मुख होगा तथा पुनः सन् १९९० के अन्त में जबकि शनि के सम्मुख शनि-मंगल युति होगी।

संवत् २०४६ वि० में विवाहादि मुहूर्त्त

समय शुद्धिः

शुक्र अस्त—वर्ष प्रारंभ (ता० ६ अप्रैल १९८९) से वैशाख कृष्ण ९ रविवार दिनांक ३० अप्रैल १९८९ तक और माघ कृष्ण ६ बुधवार दिनांक १७ जनवरी १९९० से माघ कृष्ण ११ सोमवार दिनांक २२ जनवरी ९० तक शुक्र अस्त रहेगा।

गुरु अस्त—ज्येष्ठ कृष्ण ९ सोमवार दिनांक २९ मई १९८९ से आषाढ़ कृष्ण ४ शुक्रवार दिनांक २३ जून १९८९ तक गुरु अस्त रहेगा। इस पचांग में गुरु-शुक्र का उदयास्त "ज्योतिर्गणित" की सूक्ष्म उन्नतांश पद्धति से लगाया जाता है। प्राचीन करण ग्रंथों की "कालांश" पद्धति स्थूल होने से ग्राह्य नहीं है। उसमें गुरु शुक्र का उदयास्त प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर नहीं होता। गुरु-शुक्र के अस्तकाल से ३ दिन पहले वृद्धत्वदोष में तथा उदय के पश्चात् ३ दिन तक बाल्यदोष में विवाहादि शुभकृत्य नहीं करने चाहिए। नीचे लिखे विवाह मुहूर्त्तों में जहां कहीं युति, वैध, और दग्धा तिथि दोषों में परिहार वाक्य मिले वे विवाह मुहूर्त्त भी लिखे गये हैं। यहां क्रान्तिसाम्य दोष स्थूल न लेकर सूक्ष्म गणितागत लिया गया है।

सपरिहार शुद्ध विवाह-मुहूर्त्त (सब देशों के लिए)

वैशाख शु. १ शनौ (६ मई) रोहिणी ।।ऽबु.गु.।।ऽनृ ऽ ।।। ल. १०।१२ मकर कुंभ ल. श. शु. दा.
वैशाख शु.२ रवौ (७ मई) रोहिणी ।।ऽबु.गु.।।ऽनृ. ऽ।।। दि.ल. ४।६ कन्या ल. मं. दा.
वैशाख शु.२ रवौ (७ मई) मृग. ऽ रा ।।।।।।।।। ल. १०।१२ मकर कुंभ ल. श. शु. दा.
वैशाख शु.३ चन्द्रे (८ मई) मृग ऽ रा ।।।।।।।।। दि. ल. ४।६ कन्या ल. मं. दा.
वैशाख शु.९ रवौ (१४ मई) उ. फा. ।ऽ।।।।। ऽ।। ल. १ स्टै. टा. २९।०३ से
वैशाख शु. १० चन्द्रे (१५ मई) उ. फा. । ऽ।।।।। ऽ।। दि. ल. ४ गोधूलि स्टे. टा. १९।३३ या मंगल ८ दोषः
वैशाख शु. ११ भौमे (१६ मई) हस्त ।।।।। ऽअ. ऽ ।।। ल. गो. मंगल ८ दोषः, रात्रौ १०।१२ मकर ल. श. दा. मीन ल. चं. शु. दान से
वैशाख शु. १२ बुधे (१७ मई) हस्त ।।।।। ऽ अ ऽ ।।। दि. ल. ४ स्टें. टा. १०।०१ तक
वैशाख शु. १५ शनौ (२० मई) अनु. ।।।। ऽसू. ऽचो.ऽ ऽ ।। ल. १०।१२ मकर ल. श. दा. मीन ल. शु. दा.

ज्येष्ठ कृ. १ रवौ (२१ मई) अनु. ।।।। ऽसू ऽ चो ऽऽ ।। दि. ल. ४।६
ज्येष्ठ कृ. ४ बुधे (२४ मई) उ. षा. ।।।। ऽ मं । ऽऽ । ऽ ल. १०।१२ मकर ल. स्टै. टा २३।३ उप.
आषाढ़ कृ. ८ चन्द्रे (२६ जून) उ.भा. ।।।।। ऽ अ । ऽ । ऽ ल. धूलिमुख सोग्रांग मं. शु. ८ दोष
आषाढ़ कृ. ८ चन्द्रे (२६ जून) रेवती ऽ श. ।।।। ऽअ. ऽ ऽ ।। ल. १।२ मेष ल. स्टें टा. २५।३२ उप
आषाढ़ कृ. ९ भौमे (२७ जून) रेवती ऽ श ।।।।। ऽऽ ।। दि. ल. ६ चं. दा. धूलिमुख सोग्रांगः मं. शु. ८ दोषः
आषाढ़ शु. ५ शनौ (८ जुलाई) उ.फा. ।।।।। ऽ नृ ।।।। ल. १।२ वृष ल. शु. दा.
आषाढ़ शु. ६ रवौ (९ जुलाई) उ. फा. ।।।।।।।।।। दि. ल. ७
आषाढ़ शु. ७ चन्द्रे (१० जुलाई) हस्त ।।।।। ऽ चो ऽऽ ।। दि. ल. ७
आषाढ़ शु. ९ बुधे (१२ जुलाई) स्वाती ।।।।। ऽ रो ऽ ।।। दि. ल. ६ गो. सोग्रा. मं. शु. ८ दोषरात्रौ १ चं. दा.

मार्गशीर्ष कृ. ७ रवौ (१९ नवं.) मघा ।।।। ऽ रा ।। ऽ ।ल६ स्टें. टा. २६।१९ बाद
मार्गशीर्ष कृ. ८ चन्द्रे (२० नवं.) मघा ।।।। ऽ रा ऽ नृ । ऽ ।। दि. ल. ११ चं. दा, धूलिमुख
मार्गशीर्ष कृ. १० बुधे (२२ नवं.) उ.फा. ।।।।। ऽ चो । ऽ ।ऽदि. ल. ११ चं. दा. स्टें टा. १३।१९ तक
मार्गशीर्ष कृ. ११ गुरौ (२३ नवं.) हस्त ।।।।।। ऽऽ ।। ल. धूलिमुख, ५
मार्गशीर्ष शु. २ गुरौ (३० नवं.) मूल ।।।।।। ऽ ।।। दि. ल. ११ रात्रौ ५।६ कन्या ल. स्टें. टा. २६।२२ तक

मार्गशीर्ष शु. ४ शनौ (२ दिसं.) उ. षा. ।। ऽ शु ।।।।।।। ल. ६ शुक्रयुति महापात समिप्यम
मार्गशीर्ष शु. ९ गुरौ (७ दिसं.) उ. भा. ।।।।।।।।। ऽ दि. ल. ११ गोधूलि दग्धादोष,
मार्गशीर्ष शु. १० शुक्रे (८ दिसं.) रेवती ऽ श ऽ ।।। ऽ नृ ऽऽ ।। गोधूलि रेखा ५ अतिआवश्यकता में।
मार्गशीर्ष शु. १५ भौमे (१२ दिसं.) मृग. । ऽ ।। ऽ सू ।। ऽ ।। ल. ६।७ तुला ल. स्टे. टा. २७।४ बाद
पौष कृ. १ बुधे (१३ दिसं.) मृग. । ऽ ।। ऽ सू ।। ऽ ।। दि. ल. ११ मं. दा.
माघ शु. ४ भौमे (३० जन.) उ.भा. ।।।।।। ऽऽ ।। ल. ६ चं. दा.
माघ शु. ५ बुधे (३१ जन.) उ. भा. ।।।।। ऽ रो ऽऽ ।।दि. ल. ११।१
माघ शु. ५ बुधे (३१ जन.) रेवती ऽ श ।।।। ऽ रो ।।।। ल. धूलिमुख सोग्रां, ६ च० दा०
माघ शु. ६ गुरौ (१ फर.) रेवती ऽ श ।।।।।।।।। दि. ल. ११।१
माघ शु. ९ रवौ (४ फर.) रोहिणी ।।।।।।। ऽऽ । दि. ल. १, गोधूलि सोग्रांगः गणितेन क्रान्ति साम्याभावः
माघ शु. ११ चन्द्रे (५ फर.) रोहिणी ।।।।। ऽ नृ । ऽऽ।दि. ल. ११ ग. क्रां. साम्याभावः
माघ शु. ११ चन्द्रे (५ फर.) मृग ।।। ऽ बु । ऽ नृ ऽ । ऽ । दि. ल. १२ स्टें. टा. १०।२० तक, ग. क्रां. साम्याभावः पादात् बुध वेधाभाव

फाल्गुन कृ. ३ चन्द्रे (१२ फर.) उ. फा. ।।।।। ऽ अ ऽ ।।।दि. ल. १ संक्रांति दिन
फाल्गुन कृ. ४ भौमे (१३ फर.) हस्त ।।।।।।। ऽ । ऽ ल. गोधूलि दग्धादोष
फाल्गुन कृ. ६ गुरौ (१५ फर.) स्वाती ऽ चं ऽ ।।। ऽ अ ।। ऽ।ल. गोधूलि ६ गणितेन क्रान्ति साम्याभावः
फाल्गुन कृ. ७ शनौ (१७ फर.) अनु. ऽ ।।।।।। ऽ १। ल. ६।७ कन्या ल. स्टें. टा. २०।४१ बाद तुला ल. शु. रा. दा.

फाल्गुन कृ. ८ रवौ (१८ फर.) अनु. ऽ शु ।।।।।। ऽ ।। दि. ल. १२, धूलिमुख रात्रौ ६
फाल्गुन कृ. १० भौमे (२० फर.) मूल ।।।।। ऽ रो ऽऽ ।। ल. धूलिमुख ६।७
फाल्गुन शु. २ भौमे (२७ फर.) उ. भा. । ऽ ।।। ऽ चो ऽ ।।।दि. ल. १ रात्रौ ६ चं. दा. महापात समिप्यम्
फाल्गुन शु. ४ बुधे (२८ फर.)रेवती ।।।।। ऽ चो ।।। ऽ दि. ल. १
फाल्गुन शु. ७ शनौ (३ मार्च) रोहिणी । ऽ ।।।।। ऽ ।। ल. गो. स्टे. टा. १८।२७ से १९।२० तक

केवल पंजाब और द्विगर्त देश के लिए शुद्ध विवाह-मुहूर्त्त

श्रावण कृ. ५ रवौ (२३ जुला.) उ. भा. ।।।।। ऽ चो । ऽ । ऽ दि. ल० ६ चं० दा. गो. १।२
श्रावण कृ. ६ चन्द्रे (२४ जुला.) रेवती ऽ श ।।।।। ऽ ।।। दि. ल. ६ स्टे. टा. १०।३० या रात्रौ १।२
श्रावण कृ. ७ भौमे (२५ जुला.) अश्विनी।।।।। ऽ रो । ऽ ।। दि. ल. ७ चं. दा. धूलिमुख मं. दा.
श्रावण कृ. ११ शुक्रे (२८ जुला.) रोहिणी ऽ रा ।।।। ऽ अ ऽऽ ।। दि. ल. ६ धूलिमुख मं. ७ दोषः
श्रावण कृ. ११ शुक्रे (२८ जुला.) मृग ।। ऽ गु ।। ऽ अ । ऽ ।। ल. १
श्रावण कृ. १२ शनौ (२९ जुला.) मृग ।। ऽ गु ।।।। ऽ ।। दि. ल. ६।७
श्रावण शु. ५ रवौ (६ अगस्त) हस्त ।।।।। ऽ अ ऽऽ ।। दि. ल. ७ धूलिमुख मं.७ दोषः रात्रौ २
श्रावण शु. ६ चन्द्रे (७ अगस्त) चित्रा । ऽ ।।।।।।। ऽ दि. ल७धूलिमुख मं. ७ दोषः रात्रौ १ चं. दा.
श्रावण शु. ६ भौमे (८ अगस्त) स्वाती ।।।।। ऽ नृ ऽऽ ।। ल. धूलिमुख मं. दोष रात्रौ १ चं. दा

श्रावण शु. ७ बुधे (९ अगस्त) स्वाती ।।।।। s नृ ssदि. ल. ६ स्टे. टा. ९।५४ या.
श्रावण शु. ८ गुरौ (१० अगस्त) अनु.।।।।। s चो s । s । ल. गोधूलि मं. ७ दो. रात्री २ चं. दा. ग. क्रा. साम्याभावः
श्रावण शु. ९ शुक्रे (११ अगस्त) अनु. ।।।।। s चो s । s ।दि. ल. ६।७ गोधूलि मं. दा. ग. क्रांति-साम्याभावः
श्रावण शु. ११ रवौ (१३ अगस्त) मूल । s ।।।। s ।।। ल. धूलिमुख मं. ७ दोषः
भाद्रपद कृ. ३ शनौ (१९ अगस्त) उ. भा. ।।।। s बृ. शु. ।।।।।ल. २ स्टें. टा. २३।५७ उप. ४ शु. दा.
भाद्रपद कृ. ४ रवौ (२० अगस्त) उ. भा. ।।।। s बृ. शु. ।।।।। दि. ल. ६ चं. दा.
भाद्रपद कृ. ८ गुरौ (२४ अगस्त) रोहिणी s स ।।।।। ss ।। दि. ल. ६ धूलिमुख सोग्रां मं. ७ दोष
भाद्रपद कृ. ९ शुक्रे (२५ अगस्त) मृग । s ।।। s रो । s । s दि. ल. ६ धूलिमुख सोग्रा मं. दा.
भाद्रपद शु. २ शनौ (२ सितं.) उ. फा. । s ।।। s चो ।।।। दि. ल. ७
भाद्रपद शु.३ रवौ (३ सितं.) हस्त s भं. । s बु ।।। s ।।। दि. ल. ७
भाद्रपद शु. ३ रवौ (३ सितं.) चित्रा ।। s शु. ।। s रो ।।।। ल. २।४ कर्क ल. शु. दा.
भाद्रपद शु. ४ चन्द्रे (४ सितं.) स्वाती ।।।।।। ss ।। ल. ४ शु. दा.
भाद्रपद शु. ५ भौमे (५ सितं.) स्वाती ।।।।।। ss ।। दि. ल. ६
भाद्रपद शु. ७ गुरौ (७ सितं.) अनु. । s ।।।। ss ।। ल. धूलिमुख सोग्रा. मं. दा.
भाद्रपद शु.९ शनौ (९ सितं.) मूल ।।।।।। s ।।। दि. ल. ६।७ गो. सोग्रा मं. दा.
भाद्रपद शु. ११ चन्द्रे (११ सितं.) उ. षा. ।।।।। s चो s ।।। दि. ल. ७ रात्री ४ स्टैं. टा. २७।३१ उप.
आश्विन शु. २ रवौ (१ अक्टू.) चित्रा ।।।।।।।।।। दि. ल. ७ रा. दा
आश्विन शु. २ चन्द्रे (२ अक्टू.) स्वाती s मं. s ।।। s चो s ।।। ल. ५ शु. दा.
आश्विन शु. ४ बुधे (४ अक्टू.) अनु. ।।।।। s रो ss ।। ल. धूलिमुख मं. दा. ५
आश्विन शु. ५ गुरौ (५ अक्टू.) अनु. ।।।।।। ss ।। दि. ल. ७ रा. दा.
आश्विन शु. ७ शनौ (७ अक्टू.) मूल ।।।।। s अ ss ।। दि. ल. ७ रा. दा.
आश्विन शु. ८ रवौ (८ अक्टू.) उ.षा. ।।।।।। s ।।। ल. धूलिमुख मं. दा. से
आश्विन शु. ९ चन्द्रे (९ अक्टू.) उ. षा. ।।।।। s नृ s ।।। दि. ल. ७ राहु दान से
आश्विन शु. ९ चन्द्रे (९ अक्टू.) श्रवण ।।।।। s नृ ss ।। ल. गोधूलि मं. ७ दा.
आश्विन शु. १० भौमे (१० अक्टू.) श्रवण ।।।।।। ss ।। दि. ल. ७ राहु दा.
कार्तिक कृ. १ रवौ (१५ अक्टू.)अश्विनी । s ।। s सू ।। s ।। दि. ल. ७ चं.दा. स्टैं टा. ७।५७ या
कार्तिक कृ. १० भौमे (२४ अक्टू.) मघा ।।।। s रा. ।। s ।। ल. धूलिमुख
कार्तिक कृ. ११ बुधे (२५ अक्टू.) उ. फा. ।।।।। s रो । s । s ल. ६ शु. दा. दग्धातिथिः
कार्तिक शु. २ भौमे (३१ अक्टू.) अनु. ।।।।।। s ।।। दि. ल. ११ स्टें. टा. १४।५८ उपरात्री ५।६
कार्तिक शु. ३ बुधे (१ नवं.) अनु. ।।।।। s चो s ।।। दि. ल. ११
कार्तिक शु. ५ शुक्रे (३ नवं.) मूल ।। s शु ।। s रो ss ।। दि. ल. ११, धूलिमुख
कार्तिक शु. ५ शनौ (४ नवं.) उ. षा. ।।।।।। ss ।। ल. ५।६
कार्तिक शु. ११ गुरौ (९ नवं.) उ. भा. । s ।।।।।।।sल. ६ चं. दा.
कार्तिक शु. १२ शुक्रे (१० नवं.) उ. भा । s ।।। s चो ।।। s दि. ल. ११ धूलिमुख मं. ७ दो.
कार्तिक शु. १२ शुक्रे (१० नवं.) रेवती s सू. श. ।।।। s चो s ।।। ल. ६ चं. दा.
कार्तिक शु. १३ शनौ (११ नवं.) रेवती s सू. श. ।।।।। s ।।। दि. ल. ११
कार्तिक शु. १३ शनौ (११ नवं.) अश्विनी ।।।।।।।।।। ल. ५
मार्गशीर्ष कृ. ३ बुधे (१५ नवं.) मृग. ।।।।। s अ ।।।। दि. ल. ११

कात्यायनोक्त नक्षत्र-चतुष्टयी के विवाह मुहूर्त्त

वैशाख शु. १२ बुधे (१७ मई) चित्रा s सू ।।।। s अ ।।।। ल. गो. मं. ८ दो रात्री १० श. दा.
आषाढ़ कृ. ९ भौमे (२७ जून) अश्विनी ।।।।।।। s ल. १२।२
आषाढ़ शु. ८ भौमे (११ जुलाई) चित्रा ।।।।।।। s ।। दि. ल. ७ गो सोग्रां मं. शु. ८ दोष रात्री १ चं. दा.
मार्ग कृ. १२ शुक्रे (२४ नवं.) चित्रा ।।।।। s रो । s ।। ल. धूलिमुख ५।६ कन्या ल. स्टें. २५।५८ उप
मार्ग कृ. १२ शनौ (२५ नवं.) चित्रा ।।।।।।। s ।। दि. ल. ११
मार्ग शु. ५ रवौ (३ दिसं.) श्रवण ।।।।। s रो । s ।। दि. ल. ११ धूलिमुख रात्री ६
मार्ग शु. ११ शनौ (९ दिसं.) अश्विनी ।।।।।।।।।। दि. ल. ११
माघ शु. ६ गुरौ (१ फर.) अश्विनी । s ।।।। ss ।। ल. धुलिमुख सोग्रां ५ महापात समिप्यम्
फाल्गुन शु. ५ गुरौ (१ मार्च) अश्विनी s श. ।।।।। ss ।। दि. ल. १२ मं. दा.

सं० २०४६ वि० के अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त

वैशाख शु. ७ शुक्रे मघा ग्रहणभम् केतुयुति
वैशाख शु. ८ शनौ मघा ग्रहण भम् केतुयुति
वैशाख शु. ११ भौमे उफा. लग्नाभाव नक्षत्रांत
वैशाख शु. १३ गुरौ स्वाती राहुवेध
वैशाख शु. १४ शुक्रे स्वाती राहुवेध
ज्येष्ठ कृ. २ चन्द्रे मूल भौमवेध
ज्येष्ठ कृ. ३ भौमे मूल भौमवेध
ज्येष्ठ कृ. ५ गुरौ उषा. मृत्युपंचक
ज्येष्ठ कृ. ९ चन्द्रे उभा. गुरुवृद्धत्वम् अग्रेगुरु अस्त
आषाढ़ कृ. ६ रवौ उभा. मृत्युपंचक
आषाढ़ कृ. १२ शुक्रे रोहिणी क्षीणचन्द्रः
आषाढ़ शु. ३ गुरौ मघा केतुयुति ग्रहणभम्
आषाढ़ शु. ४ शुक्रे मघा केतुयुति ग्रहणभम्
आषाढ़ शु. ६ रवौ हस्त परिधार्द्ध लग्नाभावः
आषाढ़ शु. ८ भौमे स्वाती लग्नाऽभावः
आषाढ़ शु. १० गुरौ स्वाती लग्नाऽभावः
मार्गशीर्ष कृ. ११ गुरौ उफा. लग्नाभाव नक्षत्रांत
मार्गशीर्ष कृ. १२ शुक्रे हस्त लग्नाभाव नक्षत्रांत
मार्गशीर्ष कृ. १२ शनौ स्वाती क्षीणचन्द्र
मार्गशीर्ष शु. ३ शुक्रे उषा. लग्नाऽभावः
मार्गशीर्ष शु. ८ बुधे उभा. लग्नाऽभावः
मार्गशीर्ष शु. ९ गुरौ रेवती व्यतिपात

मार्गशीर्ष शु. १४ चन्द्रे रोहिणी लग्नाऽभाव भद्रा
मार्गशीर्ष शु. १५ भौमे रोहिणी रेखा ५ शुक्र वेध
पौष कृ. ५ रवौ मघा धनुष्यर्कः
माघ कृ. ४ चन्द्रे उफा. मृत्युपञ्चक दोषः
माघ कृ. ५ भौम उफा. शुक्रवृद्धत्व दोषः
माघ शु. १२ भौमेमृग नक्षत्रात् वैधृति दोष
माघ शु. १५ शुक्रे मघा लग्नाऽभाव चन्द्रग्रहणम्
फाल्गुन कृ. १ शनौ मघा ग्रहण पश्चाद्दिनम्
फाल्गुन कृ. ४ भौमे उफा. लग्नाऽभाव नक्षत्रांत
फाल्गुन कृ. ५ बुधे हस्त मृत्युपंचक महापातदिन
फाल्गुन कृ. ६ शुक्रे स्वाती लग्नाऽभाव भद्रा
फाल्गुन कृ. ९ चन्द्रे मूल लग्नाऽभाव भद्रा
फाल्गुन कृ. ११ बुधे उ. षा. व्यतिपात दोष
फाल्गुन कृ. १२ गुरौ उ. षा. व्यतिपात दोषः अग्रेक्षीण चन्द्र
फाल्गुन शु १ चन्द्रे उ. भा. लग्नाऽभावः
फाल्गुन शु २ भौमे रेवती लग्नाऽभावः
फाल्गुन शु ८ रवौ रोहिणी होलाष्टक प्राः
फाल्गुन शु १५ रवौ उफा. भुजंगपात
चैत्र कृ. १ चन्द्रे उफा. भुजंगपात
चैत्र कृ. २ भौमे हस्त मृत्युपंचक नक्षत्रांत अग्रेमीन संक्रातिदोष।

पंजाब और द्विगर्त देश के अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त

आषाढ़ शु. ११ शुक्रे अनु. मृत्युपंचक
आषाढ़ शु. १२ शनौ अनु. मृत्युपंचक नक्षत्रांत

आषाढ़ शु. १३ रवौ मूल सूर्यवेध
आषाढ़ शु. १४ चन्द्रे मूल सूर्यवेध

मार्गशीर्ष कृ. २ बुधे (१५ नव.) मृग. ।।।।। ऽ अ ।।।। दि. ल. ११

आषाढ़ शु. १३ शनौ अनु. मृत्युपंचक नक्षत्रांत

आषाढ़ शु. १४ चन्द्रे मूल सूर्यवेध

श्रावण कृ. १ बुधे श्रवण केतुवेध
श्रावण कृ. २ गुरौ श्रवण केतुवेध
श्रावण कृ. २ गुरौ धनिष्ठा राहुयुति
श्रावण कृ. ३ शुक्रे धनिष्ठा राहुयुति
श्रावण कृ. ६ चन्द्रे आश्विनी लग्नाभाव
श्रावण कृ. १० गुरौ रोहिणी मृत्युपंचक भद्रा
श्रावण शु. २ गुरौ मघा ग्रहणभम् केतुयुति
श्रावण शु. ३ शुक्रे उफा. लग्नाभाव
श्रावण शु. ४ शनौ उफा. मृत्युपंचक पूर्वलग्नाऽभाव
श्रावण शु. ६ चन्द्रे हस्त लग्नाऽभाव
श्रावण शु. ६ भौमे चित्रा महापात दिन
श्रावण शु. १० शनौ मूल वैधृतिविष्कुंभ ३ घटी दोष
अग्रे लग्नाभावः
श्रावण शु. १२ चन्द्रे उषा. मृत्युपंचक
श्रावण शु. १३ भौमे उषा मृत्युपंचक
श्रावण शु. १३ भौमेश्रवण केतुवेध
श्रावण शु. १४ बुधे श्रवण केतुवेध
श्रावण शु. १४ बुधे धनिष्ठा राहुयुति
श्रावण शु. १५ गुरौ धनिष्ठा राहुयुति
भाद्रपद कृ. ४ रवौ रेवती भुजंगपात
भाद्रपद कृ. ५ चन्द्रे रेवती भुजंगपात
भाद्रपद कृ. ५ चन्द्रे अश्विनी भौमवेध
भाद्रपद कृ. ६ भौमेअश्विनी भौमवेध
भाद्रपद कृ. ८ गुरौ मृग लग्नाऽभाव
भाद्रपद शु. २ शनौ हस्त महापात दिन
भाद्रपद शु. ४ चन्द्रे चित्रा लग्नाऽभाव भद्रा
भाद्रपद शु. ६ बुधे अनु: वैधृतिदोष

भाद्रपद शु. १२ भौमे उ. षा. लग्नाऽभाव
भाद्रपद शु. १२ भौमे श्रवण केतुवेध
भाद्रपद शु. १३ बुधे धनिष्ठा राहुयुति
भाद्रपद शु. १५ शुक्रे उभा. श्राद्धपक्षारंभः
आश्विन शु. २ रवौ स्वाती वैधृतिदोष
आश्विन शु. ६ शुक्रे मूल मृत्युपंचक
आश्विन शु. १० भौमेधनिष्ठा केतुवेध
आश्विन शु. ११ बुधे धनिष्ठा केतुवेध भुजंगपात
आश्विन शु. १३ शुक्रे उभा. भौमवेध
आश्विन शु. १५ शनौ उभा. भौमवेध
आश्विन शु. १५ शनौ रेवती रेखा ५
कार्तिक कृ. ३ भौमे रोहिणी व्यतिपात
कार्तिक कृ. ४ बुधे रोहिणी लग्नऽभाव मृ० पं०
कार्तिक कृ. ४ बुधे मृग मृत्युपंचक
कार्तिक कृ. ५ गुरौ मृग मृ. पं. परिघार्द्धम
कार्तिक कृ. ९ चन्द्रे मघा भद्रालग्नाऽभाव
कार्तिक कृ. १२ गुरौ उफा. लग्नाऽभाव वैधृति
कार्तिक कृ. १२ गुरौ हस्त वैधृति
कार्तिक कृ. १३ शुक्रे हस्त वैधृति क्षीण चन्द्र
कार्तिक शु. ४ गुरौ मूल भद्रा लग्नाऽभाव
कार्तिक शु. ६ रवौ उषा. मृत्युपंचक
कार्तिक शु. ६ रवौ श्रवण मृत्युपंचक
कार्तिक शु. ७ चन्द्रे श्रवण लग्नाऽभाव भद्रा
कार्तिक शु. ७ चन्द्रे धनिष्ठा राहुयुति केतुवे
कार्तिक शु. ८ भौमे धनि राहुयुति केतुवेध
कार्तिक शु. १४ रवौ अश्विनी व्यतिपात
मार्गशीर्ष कृ. १ भौमे रोहिणी लग्नाऽभाव मृ० पं०

नक्षत्र चतुष्टयी के अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त

वैशाख शु. १३ गुरौ चित्रा व्यतिपात
ज्येष्ठ कृ. ५ गुरौ श्रवण मृत्युपंचक लग्नाऽभाव
ज्येष्ठ कृ. ६ शुक्रे श्रवण केतुवेध
ज्येष्ठ कृ. ६ शुक्रे धनिष्ठा गुरुवृद्धत्वदोष
आषाढ़ कृ. १० बुधे अश्विनी लग्नाभाव भद्रा
आषाढ़ शु. ७ चन्द्रे चित्रा भद्रा लग्नाभाव

मार्ग शु. ४ शनौ श्रवण लग्नाभाव
मार्ग शु. ५ रवौ धनिष्ठा राहुयुति
मार्ग शु. ६ चन्द्रे धनिष्ठा राहुयुति

मार्ग शु. १० शुक्रे अश्विनी लग्नाभाव भद्रा
माघ शु.५रवौ धनिष्ठा राहुयुति
माघ शु. ७ शुक्रे अश्विनी मृत्युपंचक

फाल्गुन कृ. ५ बुधे चित्रा मृत्युपचक महापातदिन
फाल्गुन ६ गुरौ चित्रा भुजंगपात
फाल्गुन शु. ४ बुधे अश्विनी भद्रा लग्नाऽभाव

चैत्र कृ. २ भौमे चित्रा सूर्यवेध
चैत्र कृ. ३ बुधे चित्रा सूर्यवेध

उपनयन मुहूर्त्त

वैशाख शु. २ रवौ रोहिणी अभिजिति
वैशाख शु. ३ चन्द्रे मृग. स्टें. ८।४० तक
वैशाख शु. १० चन्द्रे उ. फा. अभिजिति
वैशाख शु. १२ बुधे हस्त चित्रा ल. २।४
ज्येष्ठ कृ. ५ गुरौ उ. षा. अभिजिति- पादवेधात्शुक्र
वेधाभावः

आषाढ़ शु. २ बुधे पुष्य ल. ६ (याम्यायन)
माघ शु. २ रवौ धनिष्ठा अभिजिति
माघ शु. ३ चन्द्रे शतः स्टे. टा. ९।०६ तक
माघ शु. ५ बुधे उ. भा. ल. ११।१ मेष ल. चं. दा.
माघ शु. ११ चन्द्रे रोहि.मृग. ल. ११।१२ मृगे
पादाबुधत्शुक्र वेधाभावः
फाल्गुन कृ. २ रवौ पू. फा. अभिजिति
फाल्गुन कृ. ३ चन्द्रे उ. फा. अभिजिति
फाल्गुन कृ. ५ बुधे हस्त ल. १२
फाल्गुन शु. २ भौमे उ. भा. अभिजिति सामगानां
फाल्गुन शु. ५ गुरौ अश्विनी अभिजिति
चैत्र कृ. २ भौमे हस्त अभिजिति सामगानां

गृहारम्भ मुहूर्त्त

वैशाख शु. १० चन्द्रे उ. फा. अभिजिति
वैशाख शु. १२ बुधे हस्त-चित्रा ल. चि.
वैशाख शु. १५ शनौ अनु. स्टें. टा. १८।३८ उप
ज्येष्ठ कृ. ५ गुरौ उ. षा. अभिजिति पादात्शुक्र
वेधाभावः

श्रावण कृ. १ बुधे उ. षा. स्टें. टा. १२।३३ तक
पादावेधातु गुरु वेधा भावः
भाद्रपद कृ. १ शुक्रे शतभिषा अभिजिति
भाद्रपद शु. ११ चन्द्रे उषा. अभिजिति
कार्तिक शु. १२ शुक्रे उ. भा. अभिजिति
कार्तिक शु. १३ शनौ रेवती अभिजिति
मार्ग कृ. ३ बुधे मृग. लग्न ९।११
मार्ग शु. ९ गुरौ उभा. स्टें. १६।१९ उप.
पौष कृ. १ बुधे मृग स्टें. १३।५७ तक
माघ शु.११ चन्द्रेरोहिणी मृग ल. ११।१२ मृग
पादाबुधत्शुक्र वेधाऽभावः

फाल्गुन कृ. ३ चन्द्रे उफा. अभिजिति
फाल्गुन कृ. ५ बुधे हस्त ल. १२

चैत्र कृ. १ चन्द्रे उ. फा. ल. १२
चैत्र कृ. ३ बुधे चित्रा ल. १२

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त

वैशाख शु. १० चन्द्रे उफा. अभिजिति
वैशाख शु. १२ बुधे चित्रा ल. चि.
माघ शु. ६ गुरौ रेवती अभिजिति
माघ शु. ११ चन्द्रे रोहिणी-मृग. ल. ११।१२
मृगे पादात् बुध शुक्र वेधाऽभावः

जीर्ण गृह प्रवेश मुहूर्त्त

वैशाख शु. ६ गुरौ पुष्य अभिजिति
श्रावण शु. ६ चन्द्रे चित्रा अभिजिति
श्रावण शु. ७ बुधे स्वाती स्टैं. टा. ९।५४ तक
कार्तिक कृ. ७ शनौ पुष्य ल. ११ स्टैं. टा. १६।५०
उप. पादात्शुक्र वेधाऽभावः
कार्तिक शु. १२ शुक्रे उभा. ल. ११
कार्तिक शु. १३ शनौ रेवती ल. ११
मार्ग कृ.१० बुधे उफा. ल. ११ स्टैं. टा. १३।१९
तक

देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

वैशाख शु. २ रवौ रोहिणी अभिजिति
वैशाख शु. ३ चन्द्रे मृग. स्टे. ८।४० तक
वैशाख शु. ५ बुधे पुनर्वसु ल. २
वैशाख शु. ६ गुरौ पुष्य अभिजिति
वैशाख शु. १० चन्द्रे उ. फा. अभिजिति
वैशाख शु. १२ बुधे हस्त चित्रा ल. चिं.
ज्येष्ठ कृ. १ रवौ अनुराधा अभिजिति
ज्येष्ठ कृ. ५ गुरौ उ. षा. अभिजिति पादवेधात्शुक्र
वेधाभाव

ज्येष्ठ कृ. ६ शुक्रे श्रवण अभिजिति पादात् बुध वेधाऽ
भावः

आषाढ़ कृ. ८ चन्द्रे उ. भा. अभिजिति (याम्या)
आषाढ़ कृ. १० बुधे अश्विनी स्टैं. १०।२ तक
(याम्या.)

आषाढ़ शु. २ बुधे पुष्य ल. ६ (याम्या)
आषाढ़ शु. ६ रवौ उ. फा. अभिजिति (याम्या)
आषाढ़ शु. ७ चन्द्रे हस्त अभिजिति (याम्या)
आषाढ़ शु. १० गुरौ स्वाती स्टे. ८।५ तक (याम्या)

माघ शु. २ रवौ धनिष्ठा अभिजिति
माघ शु. ३ चन्द्रे शत. स्टें. ९।०६ तक
माघ शु. ५ बुधे उभा. ल. ११।१२
माघ शु. ६ गुरौ रेवती अभिजिति
माघ शु. ७ शुक्रे अश्विनी अभिजिति
माघ शु. ११ चन्द्रे रोहिणी मृग. ल. ११।१२ मृगे
पादात् बुध शुक्र वेधा भाव:
फाल्गुन कृ. ३ चन्द्रे उफा. अभिजिति
फाल्गुन कृ. ५ बुधे हस्त ल. १२
फाल्गुन कृ. ६ गुरौ चित्रा अभिजिति
फाल्गुन शु. ५ गुरौ अश्विनी अभिजिति

द्विरागमन मुहूर्त

वैशाख कृ. १३ बुधे उ. भा. रेवती
वैशाख शु. ३ चन्द्रे मृग. स्टे. ८।४० तक
वैशाख शु. ५ बुधे पुनर्वसु
वैशाख शु. ६ गुरौ पुष्य
मार्गशीर्ष कृ. ५ शुक्रे पुनर्वसु
मार्गशीर्ष कृ. १० बुधे उफा स्टें. १३।५२ तक
मार्गशीर्ष कृ. ११ गुरौ उफा. हस्त
मार्गशीर्ष कृ. १२ शुक्रे हस्त चित्रा
मार्गशीर्ष शु. ६ चन्द्रे धनिष्ठा
मार्गशीर्ष शु. ९ गुरौ उभा. स्टें. १६।१९ उप
मार्गशीर्ष शु. १० शुक्रे रेवती
पौष कृ. १ बुधे मृग स्टें. १३।५७ तक
पौष कृ. २ गुरौ पुनर्वसु स्टें. १२।११ से
फाल्गुन कृ. ५ बुधे हस्त चित्रा
फाल्गुन कृ. ६ गुरौ चित्रा स्वाती
फाल्गुन कृ. ६ शुक्रे स्वाती स्टें. ८।३४ तक
फाल्गुन कृ. १३ शुक्रे श्रवण स्टें. १७।२८ तक
फाल्गुन शु. ५ गुरौ अश्विनी
चैत्र कृ. १ चन्द्रे उफा.
चैत्र कृ. ३ बुधे चित्रा स्टें ८।२८ तक

द्विपुष्कर योग सं० २०४६ वि०

ता० मास घं. मि. से ता. मास घं. मि. तक
२७ मई ५।२९ से २७ मई २२।२१ तक
४ जून २३।०३ से ५ जून ५।२७ तक

२९ जुलाई ५।४४ से २९ जुलाई २२।४२ तक
८ अगस्त ७।३४ से ८ अगस्त १३।२१ तक
३० सितं. २९।४३ से १ अक्टू. २७।०९ तक

२५ नवं. ६।५५ से २५ नवं. ८।१५ तक
२७ जन. २४।०० से २८ जन.१९।०१ तक
६ फर. ७।११ से ६ फर. ७।३७ तक
२४ मार्च ६।२३ से २४ मार्च ८।५१ तक

त्रिपुष्कर योग (सं. २०४६ वि.)

ता. मास घं. मि. से ता. मास घं. मि. तक
२२ अप्रैल १०।४५ से २३ अप्रैल १२।२१ तक
२ मई ६।५८ से २ मई १२।३२ तक
२१ जून ५।१५ से २१ जून ५।२७ तक
२५ जून ५।४३ से २५ जून २५।३४ तक
४ जुलाई ९।३२ से ४ जुलाई १४।४५ तक
९ जुलाई १४।१४ से ९ जुलाई २३।३० तक
२७ अगस्त ८।२५ से २७ अगस्त २९।११ तक
२ सितं. ६।०४ से २ सित. १४।४५ तक
१२ सितं६।०९ से १२ सितं ८।०३ तक
२१ अक्टू ६।२९ से २१ अक्टू. ६।५५ तक
३१ अक्टू. ६।३६ से ३१ अक्टू. १४।५८ तक
५ नवं. ७।३६ से ५ नवं. २४।३४ तक
१९ दिसं. १४।११ से १९ दिसं. १६।२५ तक
२३ दिसं. २६।०७ से २४ दिसं. २८।१५ तक

३० दिसं. ७।१८ से ३० दिसं. ११।५९ तक
१७ फर. ७।०२ से १७ फर. ११।०४ तक

शेष पृष्ठ २२का

गुर्राफल–सं० २०४५ श्रावण शुक्ल ३ सोमवार दिनांक १५ अगस्त १९८८ को हिजरी सन् १४०९ के नये वर्ष की पहली तारीख आरम्भ होगी। इसका स्वामी चन्द्रमा है, अत: इस वर्ष में प्रजा सुख शान्ति रहेगी। वर्षा श्रेष्ठ होने से रुई, कपास, तिल, मेवा, फल, दूध की पैदाइश अच्छी होवे। कृषि में कुछ कमी अन्त में रहेगी। भारत को विशेषकर पश्चिमी सीमा पर सतर्क रहना पड़ेगा। अग्निभय, वायु-प्रकोप, एवं रोग पीड़ा हो। मनुष्य सुख-सम्पन्न रहें। पक्षियों में रोग व्यापे।

विंशोत्तरी मत से आय-व्यय चक्र

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आय	१४	८	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	११
व्यय	२	११	८	५	२	८	११	२	८	११	११	८

लाभ-व्यय देखने का प्रकार–आय-व्यय के दोनों अंकों को जोड़ कर एक घटावें और आठ का भाग दें, यदि शेष १।२।६।७ रहे तो उस वर्ष में लाभ अच्छा होगा। और यदि ३।४।५ या ० (शून्य) शेष रहें तो लाभ कम, खर्च अधिक होगा तथा अनेक प्रकार की चिन्ताएँ उपस्थित होंगी।

जगल्लग्न से व्यक्तिगत फल विचार–जन्मकुण्डली में लग्न बलवान हो तो लग्न से और चन्द्रमा बलवान हो तो जन्म राशि से जगल्लग्न जिस स्थान में आये वह भाव स्वस्वामी शुभ ग्रहों से युक्त दृष्ट बलवान हो तो उस वर्ष में उस भाव की वृद्धि होती है। यदि भाव पाप ग्रहों से युक्त दृष्ट हो तो उस भाव की हानि होती है। जन्म राशि और अपने वर्ष प्रवेश लग्न से यदि वर्षेश लग्न (जगल्लग्न) ८वें १२वें हो तो उस व्यक्ति के लिए वह वर्ष शुभलाभप्रद नहीं होता है।

चैत्र कृ. १ चन्द्र उफा.
चैत्र कृ. ३ बुधे चित्रा स्टें ८।२८ तक

१७ फर. ७।०२ से १७ फर. ११।०४ तक

सं० २०४६ के सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि तथा रवि पुष्य गुरु पुष्य योग

तारीखों पर से स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार लिखे हैं। इस समय में शुभ कार्यारम्भ करना सिद्धिदायक होता है।

सर्वार्थ सिद्धि योग

ता०	मास	घं० मि०	से	ता०	मास	घं० मि० तक
७	अप्रैल	सूर्योदय	से	७	अप्रैल	१७।४८ तक
१०	अप्रैल	सूर्योदय	से	११	अप्रैल	सूर्योदय तक
१३	अप्रैल	सूर्योदय	से	१४	अप्रैल	सूर्योदय तक
१९	अप्रैल	सूर्योदय	से	१९	अप्रैल	२८।३७ तक
२२	अप्रैल	सूर्योदय	से	२२	अप्रैल	१०।०४ तक
२४	अप्रैल	सूर्योदय	से	२४	अप्रैल	१४।१७ तक
२८	अप्रैल	१७।४२	से	२९	अप्रैल	१७।१४ तक
२	मई	१२।३२	से	३	मई	सूर्योदय तक
४	मई	सूर्योदय	से	४	मई	२८।३८ तक
६	मई	२३।३७	से	७	मई	सूर्योदय तक
८	मई	सूर्योदय	से	८	मई	२०।२८ तक
११	मई	सूर्योदय	से	११	मई	२१।३४ तक
१७	मई	सूर्योदय	से	१७	मई	११।१३ तक
२६	मई	सूर्योदय	से	२६	मई	२२।५९ तक
३०	मई	सूर्योदय	से	३०	मई	१८।१३ तक
१	जून	सूर्योदय	से	१	जून	१४।०० तक
३	जून	९।३९	से	४	जून	सूर्योदय तक
५	जून	सूर्योदय	से	५	जून	६।२६ तक
८	जून	सूर्योदय	से	८	जून	६।१६ तक
११	जून	१२।३४	से	१२	जून	सूर्योदय तक
१९	जून	४।३३	से	१९	जून	सूर्योदय तक
२५	जून	२५।३४	से	२६	जून	सूर्योदय तक
२७	जून	२२।४१	से	२८	जून	सूर्योदय तक
१	जुलाई	सूर्योदय	से	१	जुलाई	१६।३२ तक
७	जुलाई	१८।१८	से	८	जुलाई	सूर्योदय तक
९	जुलाई	सूर्योदय	से	१०	जुलाई	सूर्योदय तक
१६	जुलाई	१२।५६	से	१७	जुलाई	सूर्योदय तक
२३	जुलाई	७।१३	से	२३	जुलाई	२९।३७ तक
२५	जुलाई	सूर्योदय	से	२५	जुलाई	२६।३५ तक
२६	जुलाई	२५।१६	से	२७	जुलाई	सूर्योदय तक
३१	जुलाई	२२।४५	से	१	अगस्त	सूर्योदय तक
१	अगस्त	२३।२९	से	२	अगस्त	सूर्योदय तक
४	अगस्त	सूर्योदय	से	४	अगस्त	२८।४६ तक
६	अगस्त	सूर्योदय	से	७	अगस्त	सूर्योदय तक
१०	अगस्त	१८।४४	से	११	अगस्त	सूर्योदय तक
१३	अगस्त	सूर्योदय	से	१३	अगस्त	२२।४२ तक
२०	अगस्त	सूर्योदय	से	२०	अगस्त	१२।२६ तक
२२	अगस्त	सूर्योदय	से	२२	अगस्त	८।२३ तक
२३	अगस्त	६।४६	से	२४	अगस्त	सूर्योदय तक
२७	अगस्त	५।११	से	२९	अगस्त	सूर्योदय तक
२९	अगस्त	६।१६	से	३०	अगस्त	सूर्योदय तक
१	सितं०	सूर्योदय	से	१	सितं०	१२।०५ तक
३	सितं०	सूर्योदय	से	३	सितं०	१७।३८ तक
६	सितं०	२६।२७	से	७	सितं०	२८।५३ तक
१०	सितं०	सूर्योदय	से	१०	सितं०	७।५७ तक
१७	सितं०	१८।५०	से	१८	सितं०	सूर्योदय तक
१९	सितं०	१३।५१	से	२१	सितं०	सूर्योदय तक
२४	सितं०	१०।४२	से	२५	सितं०	१९।५७ तक
२६	सितं०	सूर्योदय	से	२६	सितं०	१३।४४ तक
४	अक्टू०	९।०४	से	५	अक्टू०	११।४४ तक
८	अक्टू०	१६।५६	से	९	अक्टू०	सूर्योदय तक
९	अक्टू०	१७।२०	से	१०	अक्टू०	सूर्योदय तक
१५	अक्टू०	सूर्योदय	से	१५	अक्टू०	२६।२५ तक
१७	अक्टू०	सूर्योदय	से	१७	अक्टू०	२०।४९ तक
१८	अक्टू०	सूर्योदय	से	१९	अक्टू०	सूर्योदय तक
२०	अक्टू०	१६।४०	से	२१	अक्टू०	सूर्योदय तक
२२	अक्टू०	सूर्योदय	से	२२	अक्टू०	१७।४७ तक
१	नवं०	सूर्योदय	से	१	नवं०	१७।३६ तक
५	नवं०	सूर्योदय	से	५	नवं०	२४।३४ तक
६	नवं०	सूर्योदय	से	६	नवं०	२४।५६ तक
१०	नवं०	१९।२९	से	११	नवं०	सूर्योदय तक
१२	नवं०	सूर्योदय	से	१२	नवं०	१३।४४ तक
१४	नवं०	सूर्योदय	से	१४	नवं०	७।४२ तक
१५	नवं०	सूर्योदय	से	१५	नवं०	२६।५९ तक
१६	नवं०	२५।३५	से	१७	नवं०	२४।५८ तक
२७	नवं०	२१।०८	से	२८	नवं०	सूर्योदय तक
३	दिसं०	६।१०	से	३	दिसं०	सूर्योदय तक
७	दिसं०	२८।११	से	९	दिसं०	सूर्योदय तक
११	दिसं०	१८।४३	से	१२	दिसं०	सूर्योदय तक
१३	दिसं०	सूर्योदय	से	१३	दिसं०	१३।५७ तक
१४	दिसं०	१२।११	से	१५	दिसं०	११।०२ तक
२०	दिसं०	१६।४२	से	२१	दिसं०	सूर्योदय तक
२३	दिसं०	सूर्योदय	से	२३	दिसं०	२५।३२ तक
२५	दिसं०	सूर्योदय	से	२५	दिसं०	३०।३८ तक
३०	दिसं०	११।५९	से	३१	दिसं०	सूर्योदय तक
४	जन०	१०।१९	से	६	जन०	सूर्योदय तक
८	जन०	सूर्योदय	से	९	जन०	सूर्योदय तक
११	जन०	सूर्योदय	से	१२	जन०	सूर्योदय तक
१७	जन०	सूर्योदय	से	१७	जन०	२७।४१ तक
२०	जन०	सूर्योदय	से	२०	जन०	९।३१ तक
२२	जन०	सूर्योदय	से	२२	जन०	१४।५१ तक
२६	जन०	१९।४०	से	२७	जन०	१९।३३ तक
३०	जन०	१७।०२	से	३१	जन०	सूर्योदय तक
१	फर०	सूर्योदय	से	२	फर०	१२।५२ तक
५	फर०	सूर्योदय	से	६	फर०	सूर्योदय तक
८	फर०	सूर्योदय	से	८	फर०	२९।५५ तक
१४	फर०	सूर्योदय	से	१४	फर०	१२।११ तक
२३	फर०	सूर्योदय	से	२३	फर०	२८।५२ तक
२७	फर०	सूर्योदय	से	२७	फर०	२२।५६ तक
१	मार्च	सूर्योदय	से	१	मार्च	१८।५२ तक
३	मार्च	१५।२४	से	४	मार्च	सूर्योदय तक
५	मार्च	सूर्योदय	से	५	मार्च	१३।१३ तक
८	मार्च	सूर्योदय	से	८	मार्च	१२।५२ तक
११	मार्च	१६।०३	से	१२	मार्च	सूर्योदय तक
२३	मार्च	सूर्योदय	से	२३	मार्च	१५।०० तक

अमृत सिद्धि योग

ता०	मास	घं० मि०	से	ता०	मास	घं० मि० तक
१०	अप्रैल	११।४६	से	११	अप्रैल	सूर्योदय तक
१३	अप्रैल	१२।२२	से	१४	अप्रैल	सूर्योदय तक
६	मई	२३।३७	से	७	मई	सूर्योदय तक
८	मई	सूर्योदय	से	८	मई	२०।२८ तक
११	मई	सूर्योदय	से	११	मई	२१।३४ तक
३	जून	९।३९	से	४	जून	सूर्योदय तक
५	जून	सूर्योदय	से	५	जून	६।२६ तक
८	जून	सूर्योदय	से	८	जून	६।१६ तक
२७	जून	२२।४१	से	२८	जून	सूर्योदय तक
१	जुला०	सूर्योदय	से	१	जुला०	१६।३२ तक
९	जुला०	२३।३०	से	१०	जुला०	सूर्योदय तक

सर्वार्थ सिद्धि योग (शेष)

ता०	मास	घं० मि०	से	ता०	मास	घं० मि० तक
२५	जुला०	सूर्योदय	से	२५	जुला०	२६।३५ तक
६	अगस्त	७।२६	से	७	अगस्त	सूर्योदय तक
२२	अगस्त	सूर्योदय	से	२२	अगस्त	८।२३ तक
३	सितं०	सूर्योदय	से	३	सितं०	१७।३८ तक
६	सितं०	२६।२७	से	७	सितं०	सूर्योदय तक
४	अक्टू०	९।०४	से	५	अक्टू०	सूर्योदय तक
१	नवं	सूर्योदय	से	१	नवं	१७।३६ तक
१०	नवं	१९।२९	से	११	नवं	सूर्योदय तक
८	दिसं०	सूर्योदय	से	८	दिसं०	२६।१४ तक
५	जन०	सूर्योदय	से	५	जन०	८।५९ तक
८	जन०	२५।५७	से	९	जन०	सूर्योदय तक
११	जन०	२१।२५	से	१२	जन०	सूर्योदय तक
५	फर०	८।४४	से	६	फर०	सूर्योदय तक
८	फर०	सूर्योदय	से	८	फर०	२९।५५ तक
३	मार्च	१५।२४	से	४	मार्च	सूर्योदय तक
५	मार्च	सूर्योदय	से	५	मार्च	१३।१३ तक
८	मार्च	सूर्योदय	से	८	मार्च	१२।५२ तक
११	मार्च	१६।०३	से	१२	मार्च	सूर्योदय तक

रविपुष्य एवं गुरुपुष्य योग

ता०	मास	घं० मि०	से	ता०	मास	घं० मि० तक
१३	अप्रैल	१२।२२	से	१४	अप्रैल	सूर्योदय तक
११	मई	सूर्योदय	से	११	मई	२१।३४ तक
८	जून	सूर्योदय	से	८	जून	६।१६ तक
२७	अगस्त	२९।११	से	२८	अगस्त	सूर्योदय तक
२४	सितं	१०।४२	से	२५	सितं	सूर्योदय तक
२२	अक्टू.	सूर्योदय	से	२२	अक्टू.	१७।४७ तक
११	जन.	२१।२५	से	१२	जन०	सूर्योदय तक
८	फर.	सूर्योदय	से	८	फर.	२९।५५ तक
८	मार्च	सूर्योदय	से	८	मार्च	१२।५२ तक

नोट : रविपुष्य योग के समय में तन्त्र-मन्त्र की सिद्धि एवं जड़ी-बूटी ग्रहण करना उत्तम है। गुरुपुष्य योग में व्यापारिक कार्य एवं धनलाभ के काम करना विशेष रूप से सिद्धिप्रद होता है। सभी योगों के घण्टे-मिनट भा. स्टै. टाईम में दिये हैं। सूर्योदय जहाँ लिखा है, वहाँ सूर्योदय के घं. मि. पञ्चाङ्ग से लेवें।

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्र चार संवत् २०४६ वि. सन् १९८९-९० ई.

सूर्यचार

सूर्यचार सन्. १९८९ ई०		
अप्रैल १०	रेवती	४
.. १३	अश्वि	१ मेष
.. १७	..	२
.. २०	..	३
.. २३	..	४
.. २७	भरणी	१
.. ३०	..	२
मई ४	..	३
.. ७	..	४
.. ११	कृतिका	१
.. १४	..	२ वृष
.. १८	..	३
.. २१	..	४
.. २४	रोहि.	१
.. २८	..	२
.. ३१	..	३
जून ४	..	४
.. ७	मृग	१
.. ११	..	२
.. १४	..	३ मिथु
.. १८	..	४
.. २१	आर्द्रा	१
.. २५	..	२
.. २८	..	३
जुला २	..	४
.. ५	पुन.	१
.. ९	..	२
.. १२	..	३
.. १६	..	४ कर्क
.. १९	पुष्य	१
.. २३	..	२
.. २६	..	३
.. ३०	..	४
अग २	अश्ले	१
अग ६	अश्ले	२
.. ९	..	३

.. १३	अश्ले	४
.. १६	मघा	१ सिंहे
.. २०	..	२
.. २३	..	३
.. २७	..	४
.. ३०	पू. फा.	१
सितं २	..	२
.. ६	..	३
.. ९	..	४
.. १३	उ. फा.	१
.. १६	..	२ कन्या
.. २०	..	३
.. २३	..	४
.. २६	हस्त	१
.. ३०	..	२
अक्टू ३	..	३
.. ७	..	४
.. १०	चित्रा	१
.. १३	..	२
.. १७	..	३ तुला
.. २०	..	४
.. २३	स्वाती	१
.. २७	..	२
.. ३०	..	३
नवं २	..	४
.. ६	विशा	१
.. ९	..	२
.. १२	..	३
.. १६	..	४ वृश्चि
.. १९	अनु	१
.. २२	..	२
.. २६	..	३
.. २९	..	४
दिसं २	ज्ये	१
.. ५	..	२
.. ९	..	३
.. १२	..	४

मंगलचार

.. १५	मूल	१ धनु
.. १८	..	२
.. २२	..	३
.. २५	..	४
.. २८	पू. षा.	१
सन् १९९० ई.		
जन. १	पू. षा.	२
.. ४	..	३
.. ७	..	४
.. १०	उ. षा.	१
.. १४	..	२ मकर
.. १७	..	३
.. २०	..	४
.. २३	श्रवण	१
.. २७	..	२
.. ३०	..	३
फर. २	..	४
.. ६	धनि.	१
.. ९	..	२
.. १२	..	३ कुंभ
.. १५	..	४
.. १९	शत.	१
.. २२	..	२
.. २५	..	३
मार्च १	..	४
.. ४	पू. भा.	१
.. ७	..	२
.. ११	..	३
.. १४	..	४ मीन
.. १७	उ. भा.	१
मार्च २१	उ. भा.	२
.. २४	..	३
.. २७	..	४
मंगल चार सन् १९८९		
अप्रैल ८	मृग.	१
.. १३	..	२
.. १९	..	३ मिथुन

.. २४	मृग.	४
.. २९	आर्द्रा	१
मई ५	..	२
.. १०	..	३
.. १५	..	४
.. २१	पुन.	१
.. २६	..	२
जून १	..	३
.. ६	..	४ कर्क
.. ११	पुष्य	१
.. १७	..	२
.. २२	..	३
.. २७	..	४
जुला. ३	अश्ले.	१
.. ८	..	२
.. १४	..	३
.. १९	..	४
.. २४	मघा	१ सिंह
.. ३०	..	२
अग. ४	..	३
.. ९	..	४
.. १४	पू.फा.	१
.. २०	..	२
.. २५	..	३
.. ३०	..	४
सितं. ४	उ.फा.	१
.. ९	..	२ कन्या
.. १५	..	३
.. २०	..	४
.. २५	हस्त	१
.. ३०	..	२
अक्टू. ५	..	३
.. १०	..	४
.. १५	चित्रा	१
.. २०	..	२
.. २५	..	३ तुला
.. ३०	..	[illegible]

बुधचार

नवं. ४	स्वाती	१
.. ९	..	२
.. १४	..	३
.. १९	..	४
.. २४	विशा.	१
.. २९	..	२
दिसं. ४	..	३
.. ९	..	४ वृश्चि.
.. १३	अनु	१
.. १८	..	२
.. २३	..	३
.. २८	..	४
सन् १९९० ई०		
जन. १	ज्ये.	१
.. ६	..	२
.. ११	..	३
.. १६	..	४
.. २०	मूल	१ धनु
जन. २५	मूल	२
.. ३०	..	३
फर. ३	..	४
.. ८	पू.षा.	१
.. १२	..	२
.. १७	..	३
.. २१	..	४
.. २६	उ.षा	१
मार्च ३	..	२ मकर
.. ७	..	३
.. १२	..	४
.. १६	श्रवण	१
.. २१	..	२
.. २५	..	३
बुध चार सन् १९८९		
अप्रैल ७	रेवती	४
.. ८	अश्वि.	१ मेष
.. १०	..	२
[illegible]		

.. १३	अश्वि.	४
.. १५	भरणी	१
.. १७	..	२
.. १९	..	३
.. २०	..	४
.. २२	कृतिका	१
.. २४	..	२ वृष
.. २७	..	३
.. ३०	..	४
मई ३	रोहि.	१
.. १२	वक्री	
मई २२	कृत्ति.	४
.. २८	..	३
जून	५	मार्गी
.. १३	कृत्ति.	४
.. १७	रोहि.	१
.. २१	..	२
.. २३	..	३
.. २६	"	४
.. २८	मृग.	१
.. ३०	..	२
जुला. २	..	३ मिथु
.. ४	..	४
.. ६	आर्द्रा	१
.. ८	..	२
.. ९	..	३
.. ११	..	४
.. १२	पुन.	१
.. १४	..	२
.. १५	..	३
.. १७	..	४ कर्क
.. १९	पुष्य	१
.. २०	..	२
.. २२	..	३
.. २३	..	४
.. २५	अश्ले.	१
[illegible]	..	२

जुला. २८	अश्लेषा	३
.. ३०	..	४
अग. १	मघा	१ सिंह
.. ३	..	२
.. ५	..	३
.. ७	..	४
अग. ९	पू.फा.	१
.. ११	..	२
.. १३	..	३
.. १५	..	४
.. १८	उ.फा.	१
.. २०	..	२ कन्या
.. २३	..	३
.. २६	..	४
.. २९	हस्त	१
सितं. २	..	२
.. ९	..	३
.. १२	"	वक्री
.. १३	हस्त	२
.. १९	..	१
.. २३	उ.फा.	४
.. २६	..	३
.. ३०	..	२
अक्टू. ४	"	मार्गी
.. ८	उ.फा.	३
.. ११	..	४
.. १४	हस्त	१
.. १६	..	२
.. १८	..	३
.. २१	..	४
.. २३	चित्रा	१
.. २५	..	२
.. २७	..	३ तुला
.. २९	..	४
.. ३१	स्वाती	१
नवं. २	..	२
.. ४	..	३

बुध चार		
नवं. ६	स्वाती	४
.. ८	विशा.	१
.. १०	..	२
.. १२	..	३
.. १४	..	४ वृश्चि.
.. १६	अनु	१
.. १८	..	२
.. २०	..	३
.. २२	..	४
.. २४	ज्ये.	१
.. २७	..	२
.. २९	..	३
दिसं. १	..	४
.. ३	मूल	१ धनु
.. ५	..	२
.. ७	..	३
.. १०	..	४
.. १२	पू.षा.	१
.. १४	..	२
.. १७	..	३
.. १९	..	४
.. २२	उ.षा.	१
.. २६	..	२ मकर
.. ३१		वक्री
सन् १९९० ई०		
जन. ४	उ.षा.	१ धनु
.. ७	पू.षा.	४
.. १०	..	३
.. १२	..	२
जन. १७	पू.षा.	१
.. २०	मार्गी	
.. २३	पू.षा.	२
.. २८	..	३
फर. १	..	४
.. ४	उ.षा.	१
.. ७	..	२ मकर

ग्रहों के निरयण राशि – नक्षत्रचार, संवत् २०४६ वि० सन् १९८९-९० ई०

बुधचार

फर १०	उ.षा.	३
.. १२	..	४
.. १४	श्रवण	१
.. १७	..	२
.. १९	..	३
.. २१	..	४
.. २३	धनि.	१
.. २६	..	२
.. २८	..	३ कुंभ
मार्च २	..	४
.. ४	शत.	१
.. ६	..	२
.. ८	..	३
.. ९	..	४
.. ११	पू.भा.	१
.. १३	..	२
.. १५	..	३
.. १७	..	४ मीन
.. १८	उ.भा.	१
.. २०	..	२
.. २२	..	३
.. २३	..	४
.. २५	रेवती	१

गुरु-शुक्रचार

गुरु चार सन् १९८९ ई०

अप्रैल १९	रोहि.	२
मई ४	..	३
.. १९	..	४
जून ३	मृग.	१
.. १७	..	२
जुला. २	..	३ मिथु
.. १७	..	४
अग. २	आर्द्रा	१
.. १९	..	२
सितं. ९	..	३
अक्टू. ११	..	४
.. २९	..	वक्री
नव. १५	आर्द्रा	३
दिसं. १८	..	२

सन् १९९० ई०

जन. १२		आर्द्रा १
फर. २५		मार्गी

शुक्र चार सन् १९८९

अप्रैल ९	रेवती	४
.. १२	अश्वि.	१ मेष
.. १४	..	२
.. १७	..	३
.. २०	..	४
.. २२	भरणी	१
.. २५	..	२
.. २८	..	३
.. ३०	..	४
मई ३	कृत्ति.	१
.. ६	..	२ वृष
मई ९	कृत्ति.	३
११	..	४
.. १४	रोहि.	१
.. १७	..	२
.. १९	..	३
.. २२	..	४
.. २५	मृग.	१
.. २८	..	२
.. ३०	..	३ मिथु
जून २	..	४
.. ५	आर्द्रा	१
.. ७	..	२
.. १०	..	३
.. १३	..	४
.. १६	पुन.	१
.. १८	..	२
.. २१	..	३
.. २४	..	४ कर्क
.. २७	पुष्य	१
.. २९	..	२
जुला. २	..	३
.. ५	..	४
.. ८	अश्ले.	१
.. १०	..	२
.. १३	..	३
.. १६	..	४
.. १९	मघा	१ सिंह
.. २१	..	२
.. २४	..	३
.. २७	..	४
.. ३०	पू.फा.	१
अग. १	पू.फा.	२
.. ४	..	३
.. ७	..	४
.. १०	उ.फा.	१
.. १२	..	२ कन्या
.. १५	..	३
.. १८	..	४
.. २१	हस्त	१
.. २४	..	२
.. २७	..	३
.. २९	..	४
सितं. १	चित्रा	१
.. ४	..	२
.. ७	..	३ तुला
.. १०	..	४
.. १२	स्वाती	१
.. १५	..	२
.. १८	..	३
.. २१	..	४
.. २४	विशा.	१
.. २७	..	२
.. ३०	..	३
अक्टू. ३	..	४ वृश्चि.
.. ६	अनु.	१
.. ९	..	२
.. १२	..	३
.. १५	..	४
.. १८	ज्ये	१

शुक्र शनि राहुचार केतु हर्षल-नेपच्यून चार

अक्टू. २१	..	२
.. २४	..	३
.. २७	..	४
.. ३०	मूल	१ धनु
नवं. २	..	२
.. ६	..	३
.. ९	..	४
नवं. १२	पू.षा.	१
.. १६	..	२
.. १९	..	३
.. २३	..	४
.. २७	उ.षा.	१
दिसं. १	..	२ मकर
.. ५	..	३
.. ११	..	४
.. १७	श्रवण	१

सन् १९८९

जन. ९	उ.षा.	४
.. १६	..	३
.. २१	..	२
.. २७	..	१ धनु
फर. ८	मार्गी	
.. २०	उ.षा.	२ मकर
.. २७	..	३
मार्च ४	..	४
.. ८	श्रवण	१
.. १३	..	२
.. १७	..	३
.. २०	..	४
.. २४	धनिष्ठा	१

शनि चार सन् १९८९

अप्रैल २३	वक्री	
मई ९	पू.षा.	२
जुलाई ५	..	१
सितं. ११	मार्गी	
नवं. १३	पू.षा.	२
दिसं. १५	..	३
.. २९	वक्री	

सन् १९९० ई०

जन. १३	पू.षा.	४
फर. ११	उ.षा.	१
मार्च २१	..	२ मकर

राहु चार ८९-९०

मई २१	धनिष्ठा	४
जुला. २३	..	३
सितं. २३	..	२ मकर
नवं. २५	..	१
जन. २७	श्रवण	४

केतु चार ८९-९०

मई २१	मघा	२
जुला. २३	..	१
सितं. २३	अश्ले.	४ कर्क
नवं. २५	..	३
जन. २७	..	२

हर्षलचार ८९-९०

अप्रैल ९	वक्री	
जून १५	मूल	३
सितं. १०	मार्गी	
नवं. २७	मूल	४
जन. २३	पू.षा.	१

नेपच्यून चार ८९-९०

अप्रैल १४	वक्री	
जुला. २७	पू.षा.	१
सितं. २१	मार्गी	
नवं. १४	पू.षा.	२
फर. १८	..	३

मंगल-बुध-गुरु-शुक्र-शनि के उदयास्त

सन् १९८९-९०

ग्रह	दिशा	उदयास्त	तारीख
मंगल	पश्चिम	अस्त	९-८-८९ ई०
मंगल	पूर्व	उदय	१९-११-८९ ई०
बुध	पश्चिम	उदय	१६-४-८९ ई०
बुध	पश्चिम	अस्त	१४-५-८९ ई०
बुध	पूर्व	उदय	२-६-८९ ई०
बुध	पूर्व	अस्त	७-७-८९ ई०
बुध	पश्चिम	उदय	३०-७-८९ ई०
बुध	पश्चिम	अस्त	१८-९-८९ ई०
बुध	पूर्व	उदय	२-१०-८९ ई०
बुध	पूर्व	अस्त	२२-१०-८९ ई०
बुध	पश्चिम	उदय	४-१२-८९ ई०
बुध	पश्चिम	अस्त	२-१-९० ई०
बुध	पूर्व	उदय	१५-१-९० ई०
बुध	पूर्व	अस्त	३-३-९० ई०
गुरु	पश्चिम	अस्त	३०-५-८९ ई०
गुरु	पूर्व	उदय	२३-६-८९ ई०
शुक्र	पश्चिम	उदय	३०-४-८९ ई०
शुक्र	पश्चिम	अस्त	१७-१-९० ई०
शुक्र	पूर्व	उदय	२२-१-९० ई०
शनि	पश्चिम	अस्त	२१-१२-८९ ई०
शनि	पूर्व	उदय	२३-१-९० ई०

आवश्यक निवेदन अनन्य स्नेही मित्रों से

अब मैं ८०वें वर्ष में प्रवेश कर चुका हूँ। ज्योतिष और पत्रकारिता के क्षेत्र में अहर्निश कलम घिसाते अर्धशताब्दी से अधिक समय बीत चुका, अब स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। राजकीय सेवा में भी ३० वर्ष की सेवा के बाद पेंशन मिल जाती है। मुझे तो ज्योतिष और भारतीय संस्कृति की सेवा करते ६० वर्ष हो चुके, शरीर के सभी पुर्जे (अवयव) घिस चुके हैं, ये विश्राम चाहते हैं, अतः मैंने कुछ वर्षों से ज्योतिष सम्बन्धी अन्य सब कार्य बन्द कर दिये हैं। जन्म-पत्र, वर्षफल बनवाने, देखने और प्रश्न पूछने वालों के अनेक पत्र नित्य आते हैं–उन सब से मैं क्षमा प्रार्थी हूँ। पंचांग और 'ज्योतिष्मती' का कार्य भी धीरे धीरे कम कर रहा हूँ। जो सज्जन मुझसे प्रत्यक्ष मिलना चाहें वे दस दिन पूर्व दूरभाष (टेलीफोन), जबाबी तार या जबाबी पत्र से स्वीकृति लेकर निश्चित समय पर सोलन आयें।

दूरभाष-२६९६ — निवेदक

सोलन-१७३२१२ (हिमाचल प्रदेश) — हरदेव शर्मा त्रिवेदी

कुछ सिद्धिदायक अनुभूत मन्त्र और सिद्धोषधियाँ

जो सज्जन अपने अनुभव सिद्ध गुप्त मन्त्र एवं आयुर्वेदिक औषधियां जनहितार्थ हमारे पास भेजते हैं उनको हम निरन्तर प्रकाशित करते हैं एक सज्जन ने दो अनुभूत सिद्धिप्रद मन्त्र लिख भेजे वे यहाँ प्रस्तुत हैं :

—सम्पादक

(१) ॐ नमो भगवते वासुदेवाय मोहिनी स्वरूपाय ।
सकल जगन्मोहनाय ममकार्य सिद्धि कुरु कुरु श्री भगवते नमः ॥

जप विधि : भगवान् श्री विष्णु व लक्ष्मी जी के दो चित्र सामने रखकर पूजा अर्चना करके धूप-दीप सहित पूजा नित्य कृत्य के बाद कम से कम सात दिन में या ग्यारह दिन में कम से कम २१ हजार उक्त मन्त्र का जाप करें, फिर दशांश हवन करके समाप्त करें और नित्य एक माला जप करते रहने से सब मनोरथों को सिद्ध करने वाला यह मन्त्र है।

(२) ॐ वायु पुत्रो महावीर वेगवान् मारुतात्मजः । कपीन्द्र वांछितं देहि त्वामहं शरणागतः ॐ ॥

इस मंत्र का नियम यह है कि श्री हनुमान जी का अच्छा दिन देखकर लाल वस्त्र चौकी पर श्री हनुमान जी का चित्र या मूर्ति सामने रखकर लाल रंग के वस्त्र पहन लाल रंग के ऊनी या सूती आसन पर बैठकर चन्दन धूप दीप पुष्प प्रसाद से षोडषोपचार पूजा करके कम से कम २१ हजार उक्त मन्त्र का जाप करे। दशांश हवन करे तथा जब तक जप हो तब तक धरती शयन (जमीन पर सोना) ब्रह्मचर्य पालन, एक समय सात्विक भोजन करें, यह नियम है। मन्त्र जप करते समय एकाग्रचित से इष्ट देवता का ध्यान तथा मन कामना की इच्छा शक्ति भी आवश्यक है।

सुयोग्य वर प्राप्ति के लिये अनुभवसिद्ध मंत्र प्रयोग :

यह मंत्र पाठ उन कुमारी कन्याओं के लिए प्रस्तुत है जिन को योग्य वर नहीं मिलते और मिलते भी हैं तो विवाह के बाद उन कन्याओं को हर तरह की यातनाएँ सहनी पड़ती है, इसलिए इस समस्या से पहले ही सुलझने के लिए निम्नलिखित श्री रामचरित्र मानस की चौपाइयों का पाठ करें।

विधि : सोमवार से शुभ मुहूर्त में पाठ आरम्भ करें। भगवती कात्यायनी दुर्गा की मूर्ति या चित्र ऊंचे आसन पर स्थापित करके शुद्ध वस्त्र पहन कर लाल या पीले रंग के ऊनी आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर धूप दीप चावल रोली व पुष्प से भगवती का पूजन करें, गुड़ या मिश्री का भोग लगाकर नित्य ग्यारह पाठ २१ दिन तक नियम पूर्वक करें। नित्य एकबार ही सात्विक भोजन करें, मिथ्या भाषण न करें, शिव-पार्वती की मूर्ति के समक्ष रात्रिकाल में धूप दीप से ध्यान करें। बाइसवें दिन इसका उद्यापन करा दें। ब्राह्मण के द्वारा हवन इत्यादि करावें। हर चौपाई बोलने के बाद इस संपुट को बोलें :

सुनसिय सत्य असीस हमारी । पूजिहि मन कामना तुम्हारी ॥

दोहा सोरठा छंद की इति पर बोलें। इस तरह पाठ करने से निश्चय ही कन्या को इच्छानुकूल वर मिलेगा। और दाम्पत्य जीवन सुखी बना रहेगा। यह प्रयोग सत्य है, अनुभव सिद्ध है। नीचे मानस की चौपाइयाँ दी जा रही है :

जानि कठिन शिव चाप बिसूरति । चली राखि उर श्यामलमूरति ॥
प्रभू जब जात जानकी जानी । सुख सनेह शोभा गुण खानी ॥
परम प्रेम मृदु मसि कीन्ही । चारुचित्त भीतीं लिख लीन्ही ॥
गई भवानी भवन बहोरी । बन्दि चरन बोली कर जोरी ॥
जय जय गिरवर राज किशोरी । जय महेश मुख चन्द चकोरी ॥
जय गजवदन षडानन माता । जगत जननि दामिनि दुतिमाता ॥
नहि तव आदि मध्य अवसाना । अमित प्रभाउ वेद नहि जाना ॥
भव भव विभव पराभव कारिनि । विश्व विमोहनि स्ववस विहारनि ॥
दोहा : पति देवता सुतीयमहुं, मात प्रथम तव रेख ।
महिमा अमित न सकहि कहि, सहस शारदा सेष ॥
सेवत तोहि सुलभ फल चारी । वरदायनि पुरारि पिआरी ॥
देव पूजि पद कमल तुम्हारे । सुरनर मुनि सब होइ सुखारे ॥
मोर मनोरथ जानहुँ नीके । बसहुँ सदा उर पुर सबहीके ॥
कीन्हेऊ प्रकट न कारन तेही । असकहि चरन गहे वैदेही ॥
विनय प्रेम बस भई भवानी । खसी मालमूरति मुसुकानी ॥
सादर सिय प्रसादु सिरधरऊ । बोली गौर हरखु हियभरऊ ॥
सुन सिय सत्य असीस हमारी । पूजिहि मन कामना तुम्हारी ॥
नारद वचन सदा सुचि सांचा । सो वरु मिलहि जाहि मनुरांचा ॥
छन्द : मनु जाहि राचेऊ मिलिहि सो वरु सहज सुन्दर सांवरो ।
करुणानिधान सुजान सील सनेहु जानत रावरो ।
एहि भांति गौरि असीस सुनि, सीय सहित हिय हरषित अलि ।
तुलसी भवानीहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ॥
सोरठा : जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हरखु न जाइ कहि ।
मंजुल मंगल मूल, वाम अंग फरकन लगे ॥

घोर आफत से बचने के लिए सिद्ध मंत्र

ॐ आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् । लोकाभिरामं श्री रामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॐ ॥

४१ दिन तक जप करें। स्नान नित्यकर्म के अनन्तर श्रीरामचन्द जी का मूर्ति या चित्र के सामने १० हजार मंत्र का जप करें। प्रातःकाल घी का दीपक धूप मिठाई या मिश्री या बरफी का भोग लगावें कम से कम ११ माला अवश्य करें। प्रयोग सिद्ध है।

—हीरालाल शर्मा मंजूश्री चाय बागान, पो. सोनारी (आसाम)।

घर से रूठ गये व्यक्ति को वापिस बुलाने का अनुभूत मन्त्र

जो मनुष्य घर से रूठ कर चला गया है। परदेश से आने में असमर्थ है तो नीचे लिखे मन्त्र को सिद्ध करके प्रयोग में लें। वह मनुष्य शीघ्र ही घर लौट आयेगा। प्रयोग सफल सिद्ध है।

सिद्ध करने की विधि : रवि-पुष्य योग से शुभ मुहूर्त में प्रारम्भ करें। एक माला (१०८ मंत्र) नित्य जपें अर्द्ध रात्रिकाल में तेल का दीपक तथा गुगुल की धूप दें। ११ दिन तक इसी नियम से ब्रह्मचर्य धारण करते हुए मन्त्र का जाप करें। १२वें दिन गुगुल की धूप और शुद्ध घी से दशांश हवन करें, मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। इस मन्त्र को गये हुए मनुष्य के पहने हुए किसी कपड़े के चारों कोनों पर लाल चन्दन से लाल कनेर की कलम से लिखें और वस्त्र को भारी वजन के पत्थर के नीचे दबा दें और इस मन्त्र को १०८ बार सरसों पर बोलकर नित्य सरसों के दाने इस पत्थर पर तीन वक्त डालें। यह क्रिया ११ दिन तक करें। ११ दिन के अन्दर वह व्यक्ति घर आ जायेगा, चाहे कैसे ही संकट में क्यों न हो।

यक्षण्यैः नमः	नभ चारिण्यै नमः
त्रिपुरेश्वरायै नमः	दुर्गायै नमः

पं. जगदीश प्रसाद पो. उच्चैन (भरतपुर) राजस्थान।

श्रीगणेशाम्बागुरुभ्यो नमः ।

अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने ।
समस्तजगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥१॥
विचार्य सम्यग्गशितं सुनिश्चितं नवैः प्रकारैश्च तथा पुरातनैः,
विद्वद्वरः श्रीहरदेव शर्मा सुधाकरश्चैव तथा विपश्चित् ।
पंचांगरत्नं प्रसरन्मयूखं श्रीकेतकीदृग्गणितेन युक्तम्,
लोकोपकाराय कृतप्रयत्नं प्रचक्रतु मोहविनाशदक्षम् ॥२॥
प्राप्ते नूतनवत्सरे प्रतिगृहं कुर्याद् ध्वजारोपराणम्
स्नानं मंगलमाचरेद् द्विजवरैः सार्धं सुपूजोत्सवम् ।
देवानां गुरुयोषितां च शिशवोऽलंकारवस्त्रादिभिः,
सम्पूज्यो गणकः फलं च शृणुयात्तस्माच्च लाभप्रदम् ॥३॥
तैलाभ्यंगं स्नानमादौ च कृत्वा पीयूषोत्थं पारिभद्रस्य पत्रम्,
भक्षेत्सौख्यं मानवो व्याधिनाशं विद्यायुः श्री लभ्यतो वर्षमूले ॥४॥
पारिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः सपुष्पाणि समानीय चूर्णं कृत्वा विधानतः ॥५॥
मरीचिहिंगुलवणमजमोदा सशर्करैः । तिंतिड़ीजीरकञ्चैव भक्षयेद्रोगशान्तये ॥६॥

चैत्र शुक्ल १ को नूतन संवत्सर प्रारंभ होता है । इस दिन प्रत्येक घर पर ध्वज (अपने-अपने सम्प्रदायानुसार जो ध्वज हो वह) लगावें । तोरणादि से गृह सुशोभित करें । मंगलस्नान कर देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजा कर, स्त्रियां शिशु आदि वस्त्र आभूषण आदि परिधान कर उत्सव मनावे । ज्योतिषीजी का सत्कार कर उनसे नूतन संवत्सर का फल श्रवण करें । प्रातःकाल में कटुनिम्ब के कोमल पत्र और पुष्प लावें, उसमें कालीमिर्च, हींग, नमक (सेंधा), अजवायन, जीरा और खांड मिलाकर, चूर्ण बनावें, कुछ इमली भी मिलावें और वह भक्षण करें । इस प्रयोग से वर्ष भर में रक्त विकार नहीं होता और अनेक रोगों की शान्ति होती है ।

पंचांगस्थं गणेशं द्विजगणकयुतं पूजयित्वार्थिवृन्दम्,
सन्तोष्यानकदानैः परमसुखयुतो भोजयित्वान्नमिष्टम् ॥
शृण्वन् गीतानि वाद्यानि च विविधकथास्तद्दिनं संक्रमेच्च,
क्रीडन् स्त्रीभिश्च सार्धंनिशि रहसि नरो यावदब्दं सुखी स्यात् ॥७॥

पंचांगस्थ गणेश ब्राह्मण और ज्योतिषीजी की पूजा कर याचकों को यथाशक्ति दानादि से प्रसन्न करें । मिष्ठान्न आदि भोजन करावें । गीत (गायन) वाद्य कथाश्रवण आदि कर यह सम्पूर्ण दिन आनन्द से व्यतीत करें । गृहस्थियों को विलासयुक्त आनन्द पूर्वक वर्षारम्भ दिन व्यतीत करने से सम्पूर्ण वर्ष आनन्दमय जाता है ।

अथ युगानां व्यवस्था—चतुर्युगसहस्राणि ब्रह्मणो दिनमुच्यते, तेषु चतुर्दश मनवो भवन्ति । तन्नामानि १ स्वायम्भुवः, २ स्वारोचिषः, ३ औत्तमः, ४ तामसः, ५ रैवतः, ६ चाक्षुषः, ७ वैवस्वतः, ८ सावर्णिः, ९ द[illegible]र्णिः, १० ब्रह्मसावर्णिः, ११ धर्मसावर्णिः, १२ रुद्रसावर्णिः, १३ देवसावर्णिः, १४ [illegible]सावर्णिः,। तत्रैकैकस्य मनोरेकसप्ततिमहायुगानि भवन्ति । महायुगप्रमाणं—[illegible] त्रिचत्वारिंशल्लक्षमिताब्दाः, एवं चाक्षुषपर्यन्त षण्मनवो गताः, वर्तमान वैवस्वतमनुः सप्तमः । तत्र सप्तविंशतिमहायुगानि गतानि । वर्तमानमष्टाविंशतितमं महायुगम् ।

चार युग एक हजार बार निकल जाने पर ब्रह्माजी का एक दिन होता है, इन्हीं दिनों के मान से ब्रह्मा की आयु १०० वर्ष की होती है । इस समय ब्रह्मा की आयु के ५० वर्षव्यतीत होकर ५१वे वर्ष के प्रथम दिन का उदय होकर १३ घटी ४२ पल ३ विपल ४३ प्रतिपल व्यतीत हो चुके हैं । ब्रह्माजी के एक दिन में उपर्युक्त १४ मनु होते हैं और १ मनु में ७१ महायुग होते हैं । एक महायुग के सौर मानुष वर्ष ४३ लक्ष २० हजार हैं, इस प्रकार चाक्षुष पर्यन्त ६ मनु निकल चुके और ७वाँ मनु वैवस्वत मन्वन्तर चालू है । इस मनु में २७ महायुग निकलकर २८वां महायुग चल रहा है ।

कृतयुगप्रमाणं—१७२८०००, त्रेतायुगप्र० १२९६०००, द्वापरयुगप्र० ८६४०००, कलियुगप्रमाणम् ४३२०००, तन्मध्ये गतकलिः ५०८० शेषकलिः ४२६९१० कलियुगमध्ये षट् शककर्तारः । आदौ इन्द्रप्रस्थे युधिष्ठिर शकः ३०४४ । द्वितीयोज्जयिन्यां विक्रमस्तस्य शकः १३५ । तृतीयः प्रतिष्ठाननगरे शालिवाहनस्य शकः १८००० । चतुर्थो वैतरिण्यां विजयाभिनन्दनस्तस्य शकः १०००० । पंचमो गौड़देशे धारातीर्थे नागार्जुनस्तस्य शकः ४००००० चतुर्लक्षवर्षाणि । षष्ठः करवीरपत्तने कर्णाटके कल्क्यवतारस्तस्य शकः ८२१ वर्षाणि ।

अथ सत्ययुगादीनां व्यवस्था । सत्ययुग—कार्तिक शुक्ल नवमी बुधवार को प्रथम प्रहर श्रवणनक्षत्र वृद्धियोग में सत्युग का आरम्भ हुआ । इसकी आयु १७२८००० वर्ष की थी । इसमें श्री विष्णु के मत्स्य, कच्छप, वराह और नृसिंह ये ४ अवतार हुए । श्रीमत्स्यावतार ने वेदों के चोर शंखासुर को मारकर ब्रह्मा को वेद लाकर दिये । भगवान् कच्छप ने पृथ्वी की रक्षार्थ मंदराचल को पीठ पर धारण कर एवं देव-दैत्यों द्वारा समुद्र मन्थन कराकर चौदह रत्न प्रकट किये । श्रीवराहावतार ने हिरण्याक्ष का वध करके रसातल में गई हुई पृथ्वी का उद्धार किया । श्री नृसिंहावतार ने हिरण्यकशिपु का वध करके भक्त प्रह्लाद की रक्षा की । इस युग में धर्म अपने चारों पादों में स्थिर था । गौएं कामधेनु के समान होती थीं । प्रायः स्वर्ण के पात्र और सिक्कों के स्थान में रत्नों का परस्पर व्यवहार था, इच्छित वर्षा होती थी, पृथ्वी सम्पूर्ण सस्य और रत्नों से परिपूर्णथी, ब्राह्मण चारों वेदों के ज्ञाता तथा सत्यभाषी, परद्रव्य, परस्त्री पराङ्मुख और त्यागी होते थे, शाप देने और वर प्रदान करने में भी समर्थ थे । स्त्रियां पद्मिनी और पतिव्रता होती थीं । शासक-वर्ग (राज्यवंश) न्यायपरायण थे और प्रजा को औरस पुत्रवत् समझते हुए राज्य करते थे । वैश्य लोग सत्यवक्ता, धर्मात्मा, व्यापारी और शूद्र लोग सेवाधर्म में निरत रहते थे । इस युग में पुष्कर प्रधान तीर्थ था, प्रह्लाद आदि दैत्यवंशी राजाओं की तीनों की तीनों लोकों में पहुँच थी ।

त्रेतायुग—वैशाख शुक्ला तृतीया चन्द्रवार के द्वितीय प्रहर रोहिणी नक्षत्र शोभन योग में त्रेतायुग आरम्भ हुआ। इसकी आयु १२९६००० वर्ष थी, इसमें भगवान के श्रीवामन, श्रीपरशुराम और श्रीरामचन्द्रजी ये तीन अवतार हुए। श्रीवामन ने राजा बली से तीन पैर पृथ्वी दान लेकर समग्र पृथ्वी को तीन पैर में नाप बली को पाताल का राज्य दिया। श्रीभगवान् परशुराम ने कर्तव्यविमुख एवं अत्याचारी दुष्ट राजाओं का नाश करके २१ बार रामराज्य स्थापित कर सम्पूर्ण पृथ्वी का दान कर दिया था। श्रीरामचन्द्र जी ने महाभिमानी रावण का वध करके देवताओं और ऋषियों को निर्भय किया। इस युग में धर्म तीन पाद ही रह गया था। गौएँ त्रिकाल दूध देने वाली होती थीं। प्रायः चांदी के पात्र और स्वर्ण के सिक्के का व्यवहार था, वर्षा समय पर होती थी। पृथ्वी सस्य और स्वर्ण से भरपूर थी। ब्राह्मण तीन वेदों के वक्ता और किंचिन्न्यून तपोनिष्ठ, परस्त्री परद्रव्य से पराङ्मुख होते थे, वे शाप देने में समर्थ थे, स्त्रियां चित्रिणी पतिव्रता होती थीं। इस युग में हरिश्चन्द्र, इक्ष्वाकु आदि सूर्यवंशी धर्मात्मा क्षत्रियों का राज्य था। विचित्र विमानों द्वारा वे इन्द्रलोक पर्यन्त भी जाते थे। वैश्य लोग सत्यवादी और सत्य की तुला में तौलते थे। शूद्र स्वधर्मानुसार सेवा में तत्पर रहते थे। इस युग में तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था।

द्वापर—माघ कृष्ण ३० शुक्रवार तृतीय प्रहर धनिष्ठा नक्षत्र वरियान योग में द्वापर युग का प्रारम्भ हुआ। इसकी आयु ८६४००० वर्ष थी। इसमें भगवान् श्रीकृष्ण और श्रीबलराम ये दो अवतार हुए। भगवान् श्रीकृष्ण और श्री बलराम ये दो अवतार हुए। भगवान् श्रीकृष्ण ने दैत्यराज कंसादि दुष्टों का बध किया तथा संसारार्णवमग्न जीवों के उद्धार्थ अर्जुन को लक्ष्य करके गीता - ज्ञान का उपदेश दिया। श्री बलरामजी ने दुष्टों का नाश करके धर्म का उद्धार किया। इस युग में धर्म द्विपाद ही रह गया। गौएँ दो समय घटपूर्ण दुग्ध देती थीं। प्रायः ताम्र पित्तल के पात्र और स्वर्ण तथा रौप्यमयी मुद्राओं का व्यवहार होने लगा। वर्षा समय पर हो जाती थी, पृथ्वी सस्य और रौप्यमयी थी। ब्राह्मण लोग दो वेदों के पारंगत और विशेषतया सत्यवक्ता तथा तप यज्ञ देवपूजन आदि करने वाले किंचित् लोभयुक्त वाक्यसिद्धि वाले अर्थात् वर और शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियाँ शंखिनी जाति की सुशीला धर्मयुक्ता होती थीं। इस युग में पांडु युधिष्ठिरादि धर्मपरायण चन्द्रवंशी राजा हुए, जिनका सुमेरु - पर्यन्त गमन था। प्रायः चारों वर्ण अपने वर्णाश्रम धर्म पर स्थिर थे, परस्त्री, परद्रव्य से लोग डरते थे। इस युग में तीर्थ कुरुक्षेत्र था।

कलियुग—भाद्रपद कृष्ण १३ रविवार अर्धरात्रि के समय अश्लेषा नक्षत्र व्यतिपात योग में कलियुग प्रारम्भ हुआ। इसकी आयु ४३२००० वर्ष की है। इसमें भगवान् के अवतार श्रीबुद्ध, श्रीकल्कि (निष्कलंक) हैं। जिनमें अहिंसा धर्म के उद्धारक श्री बुद्धावतार तो हो चुके, और कल्कि - अवतार अब कलियुग के ८२१ वर्ष शेष रहेंगे तब सम्भल ग्राम में विष्णुयश ब्राह्मण के घर होगा। इस अवतार द्वारा दुष्टों का नाश होकर पृथ्वी पर लुप्त धर्म की स्थापना के साथ - साथ न्यायपरायण क्षत्रिय राज्य भी स्थापित होगा। इस युग में एक पाद ही धर्म रह जायेगा। गौएं दूध कम देंगी। मृण्मय पात्र और ताम्रमय मुद्रा प्रायः चलेगी। अतिवृष्टि और अनावृष्टि से देशों में भय का संचार होगा। ब्राह्मण लोग वेदज्ञान से रहित तथा स्नान सन्ध्या तपश्चर्या से भी हीन होंगे। क्षत्रिय [illegible] देंगे। वैश्य लोग व्यापार में असत्य व्यवहार विशेष रूप से उपयोग में लाने लगेंगे। शूद्र लोग पाखंडी होकर बहुधा उच्चवर्ण वालों के उपदेष्टा होंगे। प्रजा में वर्णसंकरत्व बढ़ जायेगा। धूर्तों की पूजा होगी, अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। स्त्रियां अधिकतर हस्तिनी होंगी, व्यभिचारिणी स्त्री अपने को सती कहेंगी। पतिव्रता क्वचित् देखने में आवेंगी, पुरुष स्त्रियों के वश में होकर चलेंगे, स्त्रियों के छोटी आयु में गर्भ होने लगेगा, पिता कन्या - विक्रय करेंगे, गौ - ब्राह्मण की हत्या से भय न करेंगे। पुत्र का माता - पिता के साथ द्रव्य के कारण प्रेम रहेगा। राज्यव्यवस्था में धर्म का स्थान शून्य के बराबर होगा। धर्म - कर्म और तीर्थ पर लोगों की श्रद्धा कम होगी। इस युग में प्रधान तीर्थ गंगा होगी।

अथ कलिरूपं चोक्तं चिरन्तनैः—पिशाचवदनः क्रूरः कलिश्च कलहप्रियः। धृत्वा वामकरे शिश्नं दक्षे जिह्वां च नृत्यति। अथ कलिमाहात्म्यम्—धर्मः प्रव्रजितस्तपः प्रचलितं सत्यं च दूरगतं, पृथ्वी मन्दफला नराः कपटिनश्चित्त च शाठ्योर्जितम्। राजानो ऽर्थपराश्च रक्षणपराः पुत्राः पितुर्द्वेषिणः। साधुः सीदति दुर्जनः प्रभवति प्राप्ते कलौ दुर्युगे॥ निर्बीजा पृथिवी निरोषधिरसा नीचा महत्वं गताः, भूपाला निजधर्मकर्म रहिता विप्राः कुमार्गेगताः। भार्याभर्तृविरोधिनी पररता पुत्रापितुर्द्वेषिणः, हा! कष्टं खलु वर्तते कलियुगे धन्या मृता ये नराः॥ न देवे देवत्वं कपटपटवस्तापसजनाः, जनो मिथ्यावादी बिरलतरवृष्टिर्जलधरः। प्रसन्ना नीचानुअवनिपतयो दुष्टमतयो, जनाः शिष्टा नष्टा अहह! कलिकालो विलसति॥ कलौ गंगाया स्थितिः—पृथिवी गंगया हीना भविष्यत्यन्तिमे कलौ, तदेव विष्णुस्त्यजति मेदिनीं नरपुंगव! भगीरथ प्रति गंगावाक्यं च—यावद्धरण्यां तुलसीप्रपूज्यते।गुरुर्नभस्थो दिवि कल्पपादपः। यावत्समुद्रे बडवानलश्च वसामि तावत्तव चक्रखाते। इति। कलौ दशसहस्राणीतिवाक्यमन्तिमकलौ ज्ञेयम्।

तथा स्नान सन्ध्या तपश्चर्या से भी हीन होंगे। अधिक लोग अपने धर्म कर्म को तिलांजलि दे

प्रकाशन १०१ महलपुरा मथुरा (उ०प्र०)

* अथ सँव्वत्सर वर्ष राजादि फलम् *

अथ श्रीमन्नृपति-चक्रचूडामणि श्री विक्रमादित्यानां राज्य सिंहासनादतीताब्दानि तत् संव्वत्सरामिधः २०४६ तथा च श्रीमन्नृपति मुकुटमणि शकजाति यवन निर्बीजक शालिवाहन राज्याद् गतहायनानि तच्छकामिधः १९११, ईसवीय सन् १९८९-९०, भारतीय गणराज्य सवत्सर ४०-४१, श्रीकृष्ण संवत् ५०२५, हिजरी सन् १४०९-१०, श्रीमहावीर निर्वाण जैन सव्वत्सर २५१५-२५१६, वर्षारम्भे गुरुमानेन प्रभवादि षष्ट्यब्दानां मध्ये ब्रह्मविंशत्यां चित्रभानु नाम

चित्रभानु नाम संवत्सरस्तस्य फलम्–

चित्रार्थ वृष्टिः सस्यार्घाश्चित्रा निखिला धरा।
निराकुलाखिला लोकश्चित्र भानोश्चवत्सरे॥

चित्रभानु सव्वत्सर में वर्षा समयानुकूल न होकर विचित्र ढंग की होगी। अर्थात् कहीं कम तो कहीं अधिक वर्षा होगी। राज प्रजा में सुख शान्ति का वातावरण रहेगा। तथा पृथ्वी धन धान्य से परिपूर्ण होगी।

अन्यच्च–बुध स्वामी लोक सुखी, पूर्वे अल्पमेघः पश्चात् महती वर्षा, धान्यघृत समता, वैशाखे अन्न सम भावेन, ज्येष्ठादित्रये महान् मेघः, सर्वधान्य महर्घता, भाद्रादिमासे द्वये रोगार्तिः कार्तिके महामारी भयं, मार्गशीर्षद्वयेऽरिष्टं, माघद्वये सरोगप्रजा पर सर्वात्ररससमर्घता, वैशाख ज्येष्ठयोः रोगपीडा अन्न महर्घं क्रयाणकसर्ववस्तुमहर्घता।

अथास्मिन् वर्षे राजा गुरुः मन्त्री गुरुः, सस्येशः सूर्यः, धान्येशः शुक्रः मेघेशो बुधः, रसेशो भौमः, नीरसेशः सूर्यः, फलेशो बुधः,धनेशः शनिः दुर्गेशो बुधः, एते दशाधिकारिणः । अथैषां फलानि–

राजा गुरुस्तस्य फलम्–

गुरौ नृपे वर्षति कामदं जलं महीतले कामदुघाश्च धेनवः ॥
यजन्ति विप्रा बहवोऽग्नि होत्रिणो महोत्सवं सर्वजनेषु कुर्वते ॥१॥

राजा गुरु का फल– वर्षा समयानुकूल अच्छी होगी जिससे सभी वस्तुओं में मंदी का वातावरण बनेगा। गाय भैंस आदि पशुओं की वृद्धि होकर दूध, घी, का उत्पादन बढ़ेगा। ब्राह्मण यज्ञादि करने में तत्पर रहें ॥१॥

मंत्री गुरुस्तस्य फलम्–

विविध धान्ययुता खलु मेदिनी प्रचुर तोयघना मुदिता भवेत् ॥
नृपतयो जनपालन तत्पराः सुरगुरौ ननु मंत्रि समागते ॥२॥

मंत्री गुरु का फल–वर्षा अच्छी होने से धान्य की उत्पत्ति अच्छी होगी। वृक्षों के फल-फूल अधिक लगेंगे। यज्ञ आदि धार्मिक कार्यों की वृद्धि होगी। शासन प्रजापालन में रुचि लेगा। धान्य, फल, मेवा आदि में मंदी होगी। जनता में सुख-शान्ति बढ़ेगी ॥२॥

सस्येशः सूर्यस्तस्य फलम्–

सस्याधिनाथे तरणौ हि पूर्व धान्यं महर्घं बहवोऽपि चौराः ॥
युद्धं नृपाणां जलदा जलाढ्याः स्वल्पं च सस्यं बहुभूरुहाश्च ॥३॥

सस्येश सूर्य का फल–इस वर्ष वर्षा का अभाव रहेगा। अन्न कम उत्पन्न होगा। धान्य भाव तेज हों रोग व चोरों से जनता भयभीत रहेगी। किन्हीं दो देशों में युद्ध की सम्भावना रहेगी। कहीं-कहीं वर्षा पर्याप्त भी होगी ॥३॥

धान्येशः शुक्रस्तस्य फलम्–

भृगौ पश्चिमधान्येशे पश्चात्सद्धान्यं न पच्यते ॥
सस्यं समर्घतां याति स्वल्पं क्षीरं गवामपि ॥४॥

धान्येश शुक्र का फल–वर्षा साधारण होगी। सर्दी में पैदा होने वाले धान्यों की पैदावार कम होगी। गायों के दूध कम रहे। अन्न के भाव मंदे तथा घृतादि के भाव तेज होंगे ॥४॥

मेघेशो बुधस्तस्य फलम्–

अमृतरश्मि सुते यदि वारिपे बहुजलं तुषधान्य रसादिकम् ॥
द्विजवरा यजनोत्सुक चेतसो विविध सौख्ययुता धरणी तदा ॥५॥

मेघेश बुध का फल–वर्षा अधिक होगी। गेहूँ, चना, जौ और रस पदार्थों का उत्पादन अच्छा होगा। उत्तम द्विज यज्ञादि उत्सवों में प्रवृत्त रहेंगे। पृथ्वी पर सुख शान्ति की वृद्धि होगी। जनता की भावना शुद्ध रहेगी ॥५॥

रसेशो भौमस्तस्य फलम्–

यदि धरातनयो रसपो भवेत् न रसराशियुता जनता शुभाः ॥
नरपतिर्विष भोजन तापदो न जल दो बहुवृष्टिकरो भुवि ॥६॥

रसेशो भौम का फल–वर्षा का अभाव रहेगा। गुड़,खाड़, घी, तेल आदि पदार्थों में तेजी रहेगी। सरकार की ओर से जनता पर क्रूरता का बर्ताव होगा। खाद्य पदार्थों में मिलावट होने से प्रजा दुःखी होगी। रस पदार्थ दुर्लभ होंगे ॥६॥

नीरसेशो रविस्तस्य फलम्–

नीरसाधिपती सूर्ये ताम्रचन्दनयोरपि ॥
रत्नमाणिक्य मुक्तादेरर्घवृद्धिः प्रजायते ॥७॥

नीरसेश सूर्य का फलम्–तांबा, लाल चन्दन, हीरा, जवाहरात, माणिक्य, मोती, आदि की मूल्य में बढ़ोतरी होगी। धातु पदार्थ तेज रहेंगे ॥७॥

फलेशो बुधस्तस्य फलम्–

यदि बुधे फलपे फलमुत्तमं जलधरा जलराशि मुचस्तदा ॥
बहुतृणं कुसुमैः कमलैर्युतं जनपदा जनसौख्य मुदान्विताः ॥८॥

फलेश बुध काफल–वर्षा उत्तम होगी जिससे घास, कमल व फल-फूलों की वृद्धि होगी। जनता का समय सुख शान्ति से व्यतीत होगा। व्यापारी वर्ग अपने रोजगार में लाभान्वित होंगे ॥८॥

धनेशः शनिस्तस्य फलम्–

द्रविणपे रविजे विरलं धनं गदरता धरणीतदा सदा ॥
अधनतां वणिजां कृषिजीविनो द्विजवराः पर पीड़न मानसाः ॥९॥

धनेश शनि का फल–राजा प्रजा में आर्थिक संकट रहेगा। व्यापारिक स्थिति डावांडोल होगी, मनुष्यों के साधनों का लोप होगा। द्विजो का अनादर और धन की मितव्ययता रहे। राज्य सत्ता में शिथिलता आवे। वैश्य लोग कृषि कार्यों में लगें ॥९॥

दुर्गेशो बुधस्तस्य फलम्–

विषमं साम्यसुखं शशिजे प्रभौ भवति राष्ट्र जनेषु विशेषतः ॥
शशिसुते यदि कोटकपालको पथिषु दव्यवतां न भयं क्वचित् ॥१०॥

दुर्गेश बुध का फल–जनता को कभी कष्ट और कभी सुख होगा। चौरादि के उपद्रव अधिक होवे। मार्ग में धनवानों को भय नहीं होगा। यातायात के साधनों में लाभ होगा। शासकों को भी कभी सुख कभी दुःख होगा ॥१०॥

विशेष–राजा (राष्ट्रपति) मंत्री (प्रधान मन्त्री) सस्येश (वर्षाऋतु की फसलों का स्वामी) धान्येश (शरद ऋतु की फसलों का स्वामी) मेघेश (मेघ का स्वामी) रसेश (रस पदार्थों का स्वामी) निरसेश (धातु वस्त्रादि का स्वामी) फलेश (सम्पूर्ण फलों का स्वामी) धनेश (धन एवं कोष का स्वामी) दुर्गेश (रक्षा एवं सेनानायक)

यद्यपि इन दशाधिकारियों का फल तो सर्वत्र होता है, तथापि राजा के विशेष फल का प्रभाव काश्मीर और अफगानिस्तान में। मन्त्री का फल मालवा में। सस्येश का फल विदर्भ और पौड्रदेश में। धान्येश का फल नर्मदा नदी के तटवर्ती क्षेत्र तथा मध्यप्रदेश में। मेघेश का फल मगध देश में। रसेश का फल कोंकण और गोवा में। नीरसेश का फल उज्जैन, इन्दौर, मालवा आदि में। धनेश और दुर्गेश का फल सर्वत्र होता है।

इस वर्ष नव मेघों में 'नील' नाम का मेघ है, जिसका फल–गाय, भैंसे अच्छी दूध देने वाली होंगी। रूई, लोहा, नीलम, काले वस्त्र आदि में मन्दी आवेगी। प्रजा में सुख शान्ति का वातावरण रहेगा। वर्ष उत्तम होगी।

रोहिणी निवास–इस वर्ष रोहिणी का निवास ''सन्धि'' में है। फल–खण्डवृष्टि होगी। धान्यादि का उत्पादन सामान्य होगा। फल मध्यम है। समय का निवास वैश्य के घर में है। अन्न, तृण, शाक-सब्जी, फल-फूल का उत्पादन कम होगा। सभी वस्तुओं में तेजी होगी। समय का वाहन चातक है। वर्षा श्रेष्ठ होगी। कहीं-कहीं वर्षा से हानि होगी। शनि की दृष्टि पश्चिम में है। पश्चिम के देशों में भय, विग्रह तथा युद्धादि का भय बना रहेगा। इस वर्ष सोमवती अमावस्या दो है।

वर्षा आदि के विश्वामान–वर्षा विश्वा ५, धान्य ५, तृण ११, शीत ९, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ३, तृषा ३, निद्रा ११, आलस्य ९, उद्यम ३, शान्ति ७, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ९, फल १३, उत्साह ११, उग्रता १३, पाप ७, पुण्य ७, व्याधि १, व्याधिनाश ११, आचार ७, अनाचार ९, मृत्यु ३, जन्म ९, देशोपद्रव १३, देश स्वास्थ्य १७, चौर भय ५, चौर भयनाश १३, उद्भिज ३, जरायुज ३, अंडज ३, स्वेदज ३, सम्वत् विश्वा १०।

वर्षस्तम्भ चतुष्टय विचार–इस वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र का योग ५७ प्रतिशत है, जो आधे से कुछ अधिक है अतः वर्षा सामान्य से अच्छी होगी। कहीं-कहीं अल्प वर्षा से कृषि में हानि भी होगी। वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को

त्रेतायुग—वैशाख शुक्ला तृतीया चन्द्रवार के द्वितीय प्रहर रोहिणी नक्षत्र शोभन योग में त्रेतायुग आरम्भ हुआ। इसकी आयु १२९६००० वर्ष थी, इसमें भगवान के श्रीवामन, श्रीपरशुराम और श्रीरामचन्द्रजी ये तीन अवतार हुए। श्रीवामन ने राजा बली से तीन पैर पृथ्वी दान लेकर समग्र पृथ्वी को तीन पैर में नाप बली को पाताल का राज्य दिया। श्रीभगवान् परशुराम ने कर्तव्यविमुख एवं अत्याचारी दुष्ट राजाओं का नाश करके २१ बार रामराज्य स्थापित कर सम्पूर्ण पृथ्वी का दान कर दिया था। श्रीरामचन्द्र जी ने महाभिमानी रावण का वध करके देवताओं और ऋषियों को निर्भय किया। इस युग में धर्म तीन पाद ही रह गया था। गौएँ त्रिकाल दूध देने वाली होती थीं। प्रायः चांदी के पात्र और स्वर्ण के सिक्के का व्यवहार था, वर्षा समय पर होती थी। पृथ्वी सस्य और स्वर्ण से भरपूर थी। ब्राह्मण तीन वेदों के वक्ता और किंचिन्न्यून तपोनिष्ठ, परस्त्री परद्रव्य से पराङ्मुख होते थे, वे शाप देने में समर्थ थे, स्त्रियां चित्रिणी पतिव्रता होती थीं। इस युग में हरिश्चन्द्र, इक्ष्वाकु आदि सूर्यवंशी धर्मात्मा क्षत्रियों का राज्य था। विचित्र विमानों द्वारा वे इन्द्रलोक पर्यन्त भी जाते थे। वैश्य लोग सत्यवादी और सत्य की तुला में तौलते थे। शूद्र स्वधर्मानुसार सेवा में तत्पर रहते थे। इस युग में तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था।

द्वापर—माघ कृष्णा ३० शुक्रवार तृतीय प्रहर धनिष्ठा नक्षत्र वरियान योग में द्वापर युग का प्रारम्भ हुआ। इसकी आयु ८६४००० वर्ष थी। इसमें भगवान् श्रीकृष्ण और श्रीबलराम ये दो अवतार हुए। भगवान् श्रीकृष्ण और श्री बलराम ये दो अवतार हुए। भगवान् श्रीकृष्ण ने दैत्यराज कंसादि दुष्टों का वध किया तथा संसारार्णवमग्न जीवों के उद्धार्थ अर्जुन को लक्ष्य करके गीता - ज्ञान का उपदेश दिया। श्री बलरामजी ने दुष्टों का नाश करके धर्म का उद्धार किया। इस युग में धर्म द्विपाद ही रह गया। गौएँ दो समय घटपूर्ण दुग्ध देती थीं। प्रायः ताम्र पित्तल के पात्र और स्वर्ण तथा रौप्यमयी मुद्राओं का व्यवहार होने लगा। वर्षा समय पर हो जाती थी, पृथ्वी सस्य और रौप्यमयी थी। ब्राह्मण लोग दो वेदों के पारंगत और विशेषतया सत्यवक्ता तथा तप यज्ञ देवपूजन आदि करने वाले किंचित् लोभयुक्त वाक्यसिद्धि वाले अर्थात् वर और शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियाँ शंखिनी जाति की सुशीला धर्मयुक्ता होती थीं। इस युग में पांडु युधिष्ठिरादि धर्मपरायण चन्द्रवंशी राजा हुए, जिनका सुमेरु - पर्यन्त गमन था। प्रायः चारों वर्ण अपने वर्णाश्रम धर्म पर स्थिर थे, परस्त्री, परद्रव्य से लोग डरते थे। इस युग में तीर्थ कुरुक्षेत्र था।

कलियुग—भाद्रपद कृष्ण १३ रविवार अर्धरात्रि के समय अश्लेषा नक्षत्र व्यतिपात योग में कलियुग प्रारम्भ हुआ। इसकी आयु ४३२००० वर्ष की है। इसमें भगवान् के अवतार श्रीबुद्ध, श्रीकल्कि (निष्कलंक) हैं। जिनमें अहिंसा धर्म के उद्धारक श्री बुद्धावतार तो हो चुके, और कल्कि - अवतार अब कलियुग के ८२१ वर्ष शेष रहेंगे तब सम्भल ग्राम में विष्णुयश ब्राह्मण के घर होगा। इस अवतार द्वारा दुष्टों का नाश होकर पृथ्वी पर लुप्त धर्म की स्थापना के साथ - साथ न्यायपरायण क्षत्रिय राज्य भी स्थापित होगा। इस युग में एक पाद ही धर्म रह जायेगा। गौएं दूध कम देंगी। मृणमय पात्र और ताम्रमय मुद्रा प्रायः चलेगी। अतिवृष्टि और अनावृष्टि से देशों में भय का संचार होगा। ब्राह्मण लोग वेदज्ञान से रहित तथा स्नान सन्ध्या तपश्चर्या से भी हीन होंगे। क्षत्रिय [illegible] देंगे। वैश्य लोग व्यापार में असत्य व्यवहार विशेष रूप से उपयोग में लाने लगेंगे। शूद्र लोग पाखंडी होकर बहुधा उच्चवर्ण वालों के उपदेष्टा होंगे। प्रजा में वर्णसंकरत्व बढ़ जायेगा। धूर्तों की पूजा होगी, अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। स्त्रियां अधिकतर हस्तिनी होंगी, व्यभिचारिणी स्त्री अपने को सती कहेंगी। पतिव्रता क्वचित् देखने में आवेंगी, पुरुष स्त्रियों के वश में होकर चलेंगे, स्त्रियों के छोटी आयु में गर्भ होने लगेगा, पिता कन्या - विक्रय करेंगे, गौ - ब्राह्मण की हत्या से भय न करेंगे। पुत्र का माता - पिता के साथ द्रव्य के कारण प्रेम रहेगा। राज्यव्यवस्था में धर्म का स्थान शून्य के बराबर होगा। धर्म - कर्म और तीर्थ पर लोगों की श्रद्धा कम होगी। इस युग में प्रधान तीर्थ गंगा होगी।

अथ कलिरूपं चोक्तं चिरन्तनैः—पिशाचवदनः क्रूरः कलिश्च कलहप्रियः। धृत्वा वामकरे शिश्नं दक्षे जिह्वां च नृत्यति। अथ कलिमाहात्म्यम्—धर्मः प्रव्रजितस्तपः प्रचलितं सत्यं च दूरगतं, पृथ्वी मन्दफला नराः कपटिनश्चित्त च शाठ्योर्जितम्। राजानो ऽर्थपरा न रक्षणपराः पुत्राः पितुर्द्वेषिणः। साधुः सीदति दुर्जनः प्रभवति प्राप्ते कलौ दुर्युगे॥ निर्बीजा पृथिवी निरोषधिरसा नीचा महत्वं गताः, भूपाला निजधर्मकर्म रहिता विप्राः कुमार्गेगताः। भार्याभर्तृविरोधिनी पररता पुत्रापितृद्वेषिणः, हा! कष्टं खलु वर्तते कलियुगे धन्या मृता ये नराः॥ न देवे देवत्वं कपटपटवस्तापसजनाः, जनो मिथ्यावादी विरलतरवृष्टिर्जलधरः। प्रसन्ना नीचानामवनिपतयो दुष्टमतयो, जनाः शिष्टा नष्टा अहह! कलिकालो विलसति॥ कलौ गंगाया स्थितिः—पृथिवी गंगया हीना भविष्यत्यन्तिमे कलौ, तदेव विष्णुस्त्यजति मेदिनीं नरपुंगव! भगीरथ प्रति गंगावाक्यं च—यावद्धरण्यां तुलसीप्रपूज्यते।गुरुर्नभस्थो दिवि कल्पपादपः। यावत्समुद्रे बडवानलश्च वसामि तावत्तव चक्रखाते। इति। कलौ दशसहस्राणीतिवाक्यमन्तिमकलौ ज्ञेयम्।

* अथ सँव्वत्सर वर्ष राजादि फलम् *

अथ श्रीमन्नृपति-चक्रचूडामणि श्री विक्रमादित्यानां राज्य सिंहासनादतीताब्दानि तत् संव्वत्सरामिधः २०४६ तथा च श्रीमन्नृपति मुकुटमणि शकजाति यवन निर्बीजक शालिवाहन राज्याद् गतहायनानि तच्छकाभिधः १९११, ईसवीय सन् १९८९-९०, भारतीय गणराज्य संवत्सर ४०-४१, श्रीकृष्ण संवत् ५०२५, हिजरी सन् १४०९-१०, श्रीमहावीर निर्वाण जैन संव्वत्सर २५१५-२५१६, वर्षारम्भे गुरुमानेन प्रभवादि षष्टयब्दानां मध्ये ब्रह्मविंशत्यां चित्रभानु नाम

चित्रभानु नाम संवत्सरस्तस्य फलम्– चित्रार्घ वृष्टिः सस्यार्घैर्विचित्रा निखला धरा।
निराकुलाखिला लोकश्चित्र भानोश्चवत्सरे॥

चित्रभानु सव्वत्सर में वर्षा समयानुकूल न होकर विचित्र ढंग की होगी। अर्थात् कहीं कम तो कहीं अधिक वर्षा होगी। राज प्रजा में सुख शान्ति का वातावरण रहेगा। तथा पृथ्वी धन धान्य से परिपूर्ण होगी।

अन्यच्च–बुध स्वामी लोक सुखी, पूर्वं अल्पमेघः पश्चात् महती वर्षा, धान्यघृत समता, वैशाखे अन्नं समं भावेन, ज्येष्ठादित्रये महान् मेघः, सर्वधान्य महर्घता, भाद्रादिमासे द्वये रोगार्तिः कार्तिके महामारी भयं, मार्गशीर्षद्वयेऽरिष्टं, माघद्वये सरोगप्रजा परं सर्वान्नरससमर्घता, वैशाख ज्येष्ठयोः रोगपीडा अन्नं महर्घं त्र्याणकसर्ववस्तुमहर्घता।

अथास्मिन् वर्षे राजा गुरुः मन्त्री गुरु, सस्येशः सूर्यः, धान्येशः शुक्रः मेघेशो बुधः, रसेशो भौमः, नीरसेशः सूर्यः, फलेशो बुधः,धनेशः शनिः दुर्गेशो बुधः, एते दशाधिकारिणः । अथैषां फलानि–

राजा गुरुस्तस्य फलम्– गुरौ नृपे वर्षति कामदं जलं महीतले कामदुघाश्च धेनवः ॥
यजन्ति विप्रा बहवोऽग्नि होत्रिणो महोत्सवं सर्वजनेषुवर्तते ॥१॥

राजा गुरु का फल– वर्षा समयानुकूल अच्छी होगी जिससे सभी वस्तुओं में मंदी का वातावरण बनेगा। गाय भैंस आदि पशुओं की वृद्धि होकर दूध, घी, का उत्पादन बढ़ेगा। ब्राह्मण यज्ञादि करने में तत्पर रहें ॥१॥

मंत्री गुरुस्तस्य फलम्– विविध धान्ययुता खलु मेदिनी प्रचुर तोयघना मुदिता भवेत् ॥
नृपतयो जनपालन तत्पराः सुरगुरौ ननु मंत्रि समागते ॥२॥

मंत्री गुरु का फल–वर्षा अच्छी होने से धान्य की उत्पत्ति अच्छी होगी। वृक्षों के फल-फूल अधिक लगेंगे। यज्ञ आदि धार्मिक कार्यों की वृद्धि होगी। शासन प्रजापालन में रुचि लेगा। धान्य, फल, मेवा आदि में मंदी होगी। जनता में सुख-शान्ति बढ़ेगी ॥२॥

सस्येशः सूर्यस्तस्य फलम्– सस्याधिनाथे तरणौ हि पूर्वं धान्यंमहर्घं बहवोऽपिचौराः ॥
युद्धं नृपाणां जलदा जलाढ्याः स्वल्पं च सस्यं बहुरूढहास्य ॥३॥

सस्येश सूर्य का फल–इस वर्ष वर्षा का अभाव रहेगा। अन्न कम उत्पन्न होगा। धान्य भाव तेज हों। रोग व चोरों से जनता भयभीत रहेगी। किन्हीं दो देशों में युद्ध की सम्भावना रहेगी। कहीं-कहीं वर्षा पर्याप्त भी होगी ॥३॥

धान्येशः शुक्रस्तस्य फलम्– भृगौ पश्चिमधान्येशे पश्चात्धान्यं न पच्यते ॥
सस्यं समर्घतां याति स्वल्पं क्षीरं गवामपि ॥४॥

धान्येश शुक्र का फल–वर्षा साधारण होगी। सर्दी में पैदा होने वाले धान्यों की पैदावार कम होगी। गायों के दूध कम रहें। अन्न के भाव मंदे तथा घृतादि के भाव तेज होंगे ॥४॥

मेघेशो बुधस्तस्य फलम्– अमृतरश्मि सुते यदि वारिपे बहुजलं तुषधान्य रसादिकम् ॥
द्विजवरा यजनोत्सुक चेतसो विविध सौख्ययुता धरणी तदा ॥५॥

मेघेश बुध का फल–वर्षा अधिक होगी। गेहूँ, चना, जौ और रस पदार्थों का उत्पादन अच्छा होगा। उत्तम द्विज यज्ञादि उत्सवों में प्रवृत्त रहेंगे। पृथ्वी पर सुख शान्ति की वृद्धि होगी। जनता की भावना शुद्ध रहेगी ॥५॥

रसेशो भौमस्तस्य फलम्– यदि धरातनयोरसपोभवेत् न रसराशियुता जनता शुभाः ॥
नरपतिर्विष भोजन तापदो न जल दो बहुवृष्टिकरो भुवि ॥६॥

रसेशो भौम का फल–वर्षा का अभाव रहेगा। गुड़,खांड, घी, तेल आदि पदार्थों में तेजी रहेगी। सरकार की ओर से जनता पर क्रूरता का बर्ताव होगा। खाद्य पदार्थों में मिलावट होने से प्रजा दुःखी होगी। रस पदार्थ दुर्लभ होंगे ॥६॥

नीरसेशो रविस्तस्य फलम्– नीरसाधिपतौ सूर्ये ताम्रचन्दनयोरपि ॥
रत्नमाणिक्य मुक्तादेरर्घवृद्धिः प्रजायते ॥७॥

नीरसेश सूर्य का फलम्–तांबा, लाल चन्दन, हीरा, जवाहरात, माणिक्य, मोती, आदि की मूल्य में बढोतरी होगी। धातु पदार्थ तेज रहेंगे ॥७॥

फलेशो बुधस्तस्य फलम्– यदि बुधे फलपे फलमुत्तमं जलधरा जलराशि मुचस्तदा ॥
बहुतृणं कुसुमैः कमलैर्युतं जनपदा जनसौख्य मुदान्विताः ॥८॥

फलेश बुध काफल–वर्षा उत्तम होगी जिससे घास, कमल व फल-फूलों की वृद्धि होगी। जनता का समय सुख शान्ति से व्यतीत होगा। व्यापारी वर्ग अपने रोजगार में लाभान्वित होंगे ॥८॥

धनेशः शनिस्तस्य फलम्– द्रविणपे रविजे विरलं धनं गदरता धरणीतदा सदा ॥
अधमतां वणिजां कृषिजीविनो द्विजवराः पर पीड़न मानसाः ॥९॥

धनेश शनि का फल–राजा प्रजा में आर्थिक संकट रहेगा। व्यापारिक स्थिति डावांडोल होगी, मनुष्यों के साधनों का लोप होगा। द्विजों का अनादर और धन की मितव्ययता रहे। राज्य सत्ता में शिथिलता आवे। वैश्य लोग कृषि कार्यों में लगें ॥९॥

दुर्गेशो बुधस्तस्य फलम्– विषम् साम्यसुखं शशिजे प्रभौ भवति राष्ट्र जनेषु विशेषतः ॥
शशिसुते यदि कोटकपालके पथिषु द्रव्यवतां न भयं क्वचित् ॥१०॥

दुर्गेश बुध का फल–जनता को कभी कष्ट और कभी सुख होगा। चौरादि के उपद्रव अधिक होवें। मार्ग में धनवानों को भय नहीं होगा। यातायात के साधनों में लाभ होगा। शासकों को भी कभी सुख कभी दुःख होगा ॥१०॥

विशेष–राजा (राष्ट्रपति) मंत्री (प्रधान मन्त्री) सस्येश (वर्षाऋतु की फसलों का स्वामी) धान्येश (शरद ऋतु की फसलों का स्वामी) मेघेश (मेघ का स्वामी) रसेश (रस पदार्थों का स्वामी) निरसेश (धातु वस्त्रादि का स्वामी) फलेश (सम्पूर्ण फलों का स्वामी) धनेश (धन एवं कोष का स्वामी) दुर्गेश (रक्षा एवं सेनानायक)

यद्यपि इन दशाधिकारियों का फल तो सर्वत्र होता है, तथापि राजा के विशेष फल का प्रभाव काश्मीर और अफगानिस्तान में। मन्त्री का फल मालवा में। सस्येश का फल विदर्भ और पौड्रदेश में। धान्येश का फल नर्मदा नदी के तटवर्ती क्षेत्र तथा मध्यप्रदेश में। मेघेश का फल मगध देश में। रसेश का फल कोंकण और गोवा में। नीरसेश का फल उज्जैन, इन्दौर, मालवा आदि में। धनेश और दुर्गेश का फल सर्वत्र होता है।

इस वर्ष नव मेघों में 'नील' नाम का मेघ है, जिसका फल–गाय, भैंसे अच्छी दूध देने वाली होंगी। रूई, लोहा, नीलम, काले वस्त्र आदि में मन्दी आवेगी। प्रजा में सुख शान्ति का वातावरण रहेगा। वर्ष उत्तम होगी।

रोहिणी निवास–इस वर्ष रोहिणी का निवास ''सन्धि'' में है। फल–खण्डवृष्टि होगी। धान्यादि का उत्पादन सामान्य होगा। फल मध्यम है। समय का निवास वैश्य के घर में है। अन्न, तृण, शाक-सब्जी, फल-फूल का उत्पादन कम होगा। सभी वस्तुओं में तेजी होगी। समय का वाहन चातक है। वर्षा श्रेष्ठ होगी। कहीं-कहीं वर्षा से हानि होगी। शनि की दृष्टि पश्चिम में है। पश्चिम के देशों में भय, विग्रह तथा युद्धादि का भय बना रहेगा। इस वर्ष सोमवती अमावस्या दो है।

वर्षा आदि के विश्वामान–वर्षा विश्वा ५, धान्य ५, तृण ११, शीत ९, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ३, तृषा ३, निद्रा ११, आलस्य ९, उद्यम ३, शान्ति ७, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ९, फल १३, उत्साह ११, उग्रता १३, पाप ७, पुण्य ७, व्याधि १, व्याधिनाश ११, आचार ७, अनाचार ९, मृत्यु ३, जन्म ९, देशोपद्रव १३, देश स्वास्थ्य १७, चौर भय ५, चौर भयनाश १३, उद्भिज ३, जरायुज ३, अंडज ३, स्वेदज ३, सम्वत् विश्वा १० ।

वर्षस्तम्भ चतुष्टय विचार–इस वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र का योग ५७ प्रतिशत है, जो आधे से कुछ अधिक है अतः वर्षा सामान्य से अच्छी होगी। कहीं-कहीं अल्प वर्षा से कृषि में हानि भी होगी। वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को

भरणी नक्षत्र ४२ प्रतिशत है अतः तृण स्तम्भ साधारण है। रूई, पाट, बारदाना का उत्पादन मध्यम होगा। ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र का योग ७० प्रतिशत होने वायु वेग अधिक रहेगा। आंधी, झंझावात, चक्रवात इत्यादि का प्रकोप होगा। आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र का योग ८१ प्रतिशत श्रेष्ठ है। अन्न स्तम्भ सुदृढ़ होने से अन्न का उत्पादन अच्छा होगा। धान्यादि भावों में मन्दी आयेगी। आम जनता का जीवन स्तर ऊँचा बढ़ेगा।

गुरुचार का फल–इस वर्ष में गुरु वर्ष के आरम्भ से आषाढ़ कृष्ण १३ शनिवार दिनांक १ जुलाई ८९ तक वृष राशि में रहेगा। आषाढ़ कृष्ण १४ रविवार दिनांक २ जुलाई ८९ से वर्ष समाप्ति तक मिथुन राशि में रहेगा।

वृष राशि के गुरु का फल–धान्य का उत्पादन अच्छा होने से सुभिक्ष होगा। चांदी, दूध, घृत, तेल, रूई, आदि में तेजी होगी। अनाज आदि में साधारण तेजी रहे। जनता को कष्ट, राज विग्रह तथा चौरादि के उपद्रवों की वृद्धि होगी। कहीं वर्षा भी अल्प होगी। गेहूँ, चना, चावल, मूँग, उड़द, तिल, ज्येष्ठ तथा श्रावण में तेज हों।

मिथुन राशि के गुरु का फल–

मिथुने च गुरुर्याति तत्राब्दे दारुणं भयम् ।
कृपाणं विग्रहस्तत्र स्वल्पं तोयं भविष्यति ॥

राज्य शासन में उपद्रव एवं प्रजा में विशेष भय होगा। वर्षा की कमी रहे। पश्चिमी व उत्तरी क्षेत्रों में दुर्भिक्ष की सम्भवना हो सकेगा। चांदी, रूई, नारियल, सुपारी, अलसी, सरसों मूंगफली, तांबा, लोहा, घृत, तैल, श्वेत वस्त्र, चन्दन, कपूर, मजीठ, में तेजी रह कर पांच महीने बाद मंदी होगी। रूई में अच्छी मंदी आवे।

शनिचार का फल–इस वर्ष के आरम्भ से चैत्र कृष्ण ८ मंगलवार दिनांक २० मार्च १९९० ई० तक धनु राशि का शनि है और चैत्र कृष्ण ९ बुधवार दिनांक २१ मार्च ९० से वर्ष समाप्ति तक शनि मकर राशि में रहेगा। इस वर्ष शनि अधिकतर समय धनु राशि में ज्यादा रहेगा अतः धनु राशि का ही फल दिया जा रहा है।

धनु राशि के शनि का फल–

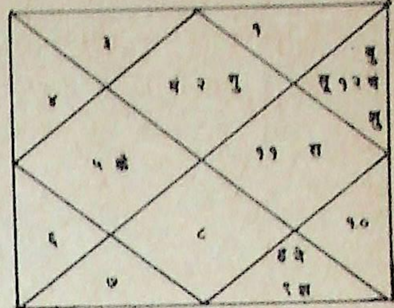
धनु राशौस्थितः सौरिर्गर्जितो ऽपि न वर्षति ।
तोयहीना धरा तत्र दुर्भिक्षं च विनिर्दिशेत ॥

समस्त धान्य व तृण, गुड़, खांड, कोयला आदि में तेजी होगी। वर्षा की कमी होने से दुर्भिक्ष की सम्भावना बनेगी। पश्चिमी क्षेत्र की जनता को अनेक प्रकार के कष्ट उठाने पड़ेंगे। भारतीय पश्चिमी सीमा पर सुरक्षा प्रबन्ध बढ़ाने होंगे।

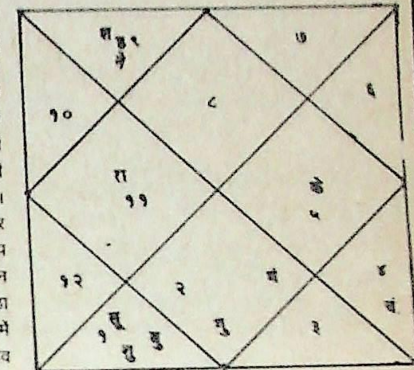
शनि की साढ़ेसाती और ढैय्या

इस वर्ष में शनि धनु राशि पर (वर्ष के समाप्ति के ६ दिन छोड़कर) विचरण करता रहेगा। अतः मकर राशि वालों को शनि की साढ़े साती सिर पर तांबे के पाद से और धनु राशि वालों को हृदय पर सोने के पाद से एवं वृश्चिक राशि वालों को पैरों पर लोहे के पाद से साढ़ेसाती चल रही है। वृष राशि वालों को सोने के पाये से और कन्या राशि वालों को चांदी के पाये से लघु कल्याणी (ढैया) चल रहा है। जिनकी जन्मकुण्डली में शनि शुभफलप्रद हो तथा दशान्तदर्शा भी शुभ चल रही हो, उनके लिए शनि का अशुभ फल कम होगा। जन्मकुण्डली में चन्द्रशनि अशुभ स्थानों में हो तो साढ़ेसाती और ढैयाचिन्ता, पीड़ा धनहानि, व्यर्थ में विघ्न, रोजगार में कमी, कलह, पशु-पीड़ा, धनखर्चा एवं हानि आदि नेष्टफलप्रद होती है। शनि के अनिष्ट फल निवारणार्थ तैल-छाया पात्र का दान, शनि मन्त्र का जप, दशांश हवन व श्रीहनुमानजी की पूजा, अभिषेक, तैलयुक्त सिन्दुर समर्पण कर, भक्तिपूर्वक शनिवार का व्रत, सप्तधान्य दान, प्रातः शनिवार को पीपल (अश्वत्थ) का पूजन करने से शनि का अनिष्ट फल निवृत्त होता है। साढ़ेसाती, ढैय्या का विचार जन्मकालिक स्पष्ट चन्द्रमा के अंशों से करना चाहिए। केवल राशि से साढ़ेसाती का विचार स्थूल है।

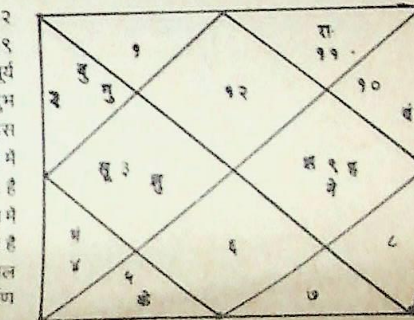
नववर्ष प्रवेश–सम्वत् २०४५ चैत्र कृष्ण ३० गुरुवार, राष्ट्रीयमिति १६, चैत्र तदानुसार ६, अप्रैल सन् १९८९ ई० को स्टै० टा०१।०३ पर वृष लग्न में चान्द्रमान से नववर्ष प्रवेश होगा। ग्रहस्थिति की कुण्डली सामने दी गयी है। वृष लग्न का फल–पश्चिम में अकाल पड़े तथा पूर्व में राजविग्रह हो। उत्तर के प्रान्तों में धान्यादि का उत्पादन अच्छा होगा। दक्षिण में सुभिक्ष का संचार होगा। लग्नेश शुक्र ग्यारहवें भाव में चतुर्ग्रही योग बनाये हुए अस्तगत है। जिसके फलस्वरूप शासन पार्टी में मनमुटाव चलेगा। सरकार के कुछ कार्य विफल होते दिखाई देंगे। विरोधी पक्ष प्रधान शासक के सामने अनेक चुनौती प्रस्तुत करेंगे। वर्ष का राजा मन्त्री गुरु लग्न विराजमान है जिससे प्रधान मन्त्री अपनी ऋतुम्भरा प्रज्ञा से निर्णय लेकर उपरोक्त समस्याओं का समाधान करेंगे।



वर्षेश लग्न (जगत् लग्न)–सम्वत् २०४६, चैत्र शुक्ल ८ गुरुवार राष्ट्रीय मिति २३ चैत्र तदनुसार १३ अप्रैल सन् १९८९ ई० को रात्रि में स्टै० टा० २१।४५ बजे वृश्चिक लग्न में भुवन-भास्कर मेष राशि में प्रवेश करेंगे। इस समय सौर मान से नव वर्ष आरम्भ होगा। तत्कालीन ग्रहस्थिति की कुंडली सामने दी गयी है। जगत् लग्न का स्वामी मंगल सप्तम् भाव में मंगल के साथ शत्रु राशि में स्थिति है। चतुर्थ व दशम भाव में राहु केतु स्थित है। विश्व की राजनीति में तनाव आयेगा। विरोधी पक्ष प्रबल होंगे। गृह क्लेश से अपने पराये होते नजर आयेंगे। पश्चिम दिशा में अशान्ति, अराजकता, प्रकृति-प्रकोप से हानि होगी। भाग्येश चन्द्रमा भाग्य भवन में होने से प्रधान शासकों को आंशिक सफलता भी प्राप्त होगी। मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी। शत्रु प्रबल होकर परास्त होंगे। कुछ बड़े राष्ट्रों में नाटकीय परिवर्तन भी होंगे। विश्वविख्यात ३ महामानव काल-कवलित होंगे।



आर्द्रा प्रवेश लग्न–सम्वत् २०४६ आषाढ़ कृष्ण २ बुधवार, राष्ट्रीयमिति ३१ ज्येष्ठ तदनुसार २१ जून १९८९ को अर्द्धरात्रि पश्चात् स्टै० टा० २४।५६ पर मीन लग्न में सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेंगे। तात्कालिक तिथि का फल अशुभ है। वार, नक्षत्र, योग, और समय का फल श्रेष्ठ है। अतः इस वर्ष में अशुभ फल ज्यादा नहीं होंगे। आर्द्रा-प्रवेश कुण्डली में चन्द्रमा जलचर राशि में तो है, परन्तु मंगलि की पूर्ण दृष्टि है अतः वर्षा अनियमित होगी। लग्नेश दशमेश गुरु तीसरे भाव में बुध के साथ है। दशम भाव में शनि-हर्शल-नेपच्यून स्थित है अतः नवीन अविष्कारों की उपलब्धि होगी। भूगर्भ, समुद्रतल से गैस व तेल के स्रोत उपलब्ध होंगे। नवीन शस्त्रास्त्र निर्माण में भारत स्वावलम्बी बनेगा।



शेष पृष्ठ १८ पर

★ अयनांश सारिणी (त) ★

ई. सन्	अ.	क.	वि.	ई. सन्	अ.	क.	वि.	ई. सन्	अ.	क.	वि.
१९००	२२	२७	३८	१९३१	२२	५३	३६	१९६२	२३	१९	३४
१९०१	२२	२८	२८	१९३२	२२	५४	२६	१९६३	२३	२०	२४
१९०२	२२	२९	१८	१९३३	२२	५५	१६	१९६४	२३	२१	१४
१९०३	२२	३०	९	१९३४	२२	५६	०७	१९६५	२३	२२	०५
१९०४	२२	३०	५९	१९३५	२२	५६	५७	१९६६	२३	२२	५५
१९०५	२२	३१	४९	१९३६	२२	५७	४७	१९६७	२३	२३	४५
१९०६	२२	३२	३९	१९३७	२२	५८	३७	१९६८	२३	२४	३५
१९०७	२२	३३	३०	१९३८	२२	५९	२८	१९६९	२३	२५	२६
१९०८	२२	३४	२०	१९३९	२३	००	१८	१९७०	२३	२६	१६
१९०९	२२	३५	१०	१९४०	२३	१	०८	१९७१	२३	२७	०५
१९१०	२२	३६	००	१९४१	२३	१	५८	१९७२	२३	२७	५६
१९११	२२	३६	५१	१९४२	२३	२	४९	१९७३	२३	२८	४७
१९१२	२२	३७	४१	१९४३	२३	३	३९	१९७४	२३	२९	३७
१९१३	२२	३८	३१	१९४४	२३	४	२९	१९७५	२३	३०	२७
१९१४	२२	३९	२२	१९४५	२३	५	१९	१९७६	२३	३१	१७
१९१५	२२	४०	१२	१९४६	२३	६	१०	१९७७	२३	३२	०८
१९१६	२२	४१	०२	१९४७	२३	७	००	१९७८	२३	३२	५८
१९१७	२२	४१	५२	१९४८	२३	७	५०	१९७९	२३	३३	४८
१९१८	२२	४२	४३	१९४९	२३	८	४१	१९८०	२३	३४	३८
१९१९	२२	४३	३३	१९५०	२३	९	३१	१९८१	२३	३५	२९
१९२०	२२	४४	२३	१९५१	२३	१०	२१	१९८२	२३	३६	१९
१९२१	२२	४५	१३	१९५२	२३	११	११	१९८३	२३	३७	०९
१९२२	२२	४६	०४	१९५३	२३	१२	०२	१९८४	२३	३७	५९
१९२३	२२	४६	५४	१९५४	२३	१२	५२	१९८५	२३	३८	५०
१९२४	२२	४७	४४	१९५५	२३	१३	४२	१९८६	२३	३९	४०
१९२५	२२	४८	३४	१९५६	२३	१४	३२	१९८७	२३	४०	४०
१९२६	२२	४९	२५	१९५७	२३	१५	२३	१९८८	२३	४१	२०
१९२७	२२	५०	१५	१९५८	२३	१६	१३	१९८९	२३	४२	११
१९२८	२२	५१	०५	१९५९	२३	१७	०३	१९९०	२३	४३	०२
१९२९	२२	५१	५५	१९६०	२३	१७	५३	१९९१	२३	४३	५२
१९३०	२२	५२	४६	१९६१	२३	१८	४४	१९९२	२३	४४	४२

★ अयनांश सारिणी (थ) ★
तारीख से अयनगति ज्ञान

मास	ता०	अयनगति विकला
जन.	१	०
	८	१
	१५	२
	२३	३
	३०	४
फर.	६	५
	१४	६
	२१	७
	२८	८
मार्च	७	९
	१५	१०
	२२	११
	२९	१२

मास	ता०	अयनगति विकला
अप्रै.	६	१३
	१३	१४
	२०	१५
	२७	१६
मई	५	१७
	१२	१८
	१९	१९
	२७	२०
जून	३	२१
	१०	२२
	१७	२३
	२५	२४
जु.	२	२५

मास	ता०	अयनगति विकला
जु.	२	२५
	९	२६
	१७	२७
	२४	२८
	३१	२९
अग.	७	३०
	१५	३१
	२२	३२
	२९	३३
सित.	६	३४
	१३	३५
	२०	३६
	२७	३७
अक्टू	५	३८
	१२	३९
	१९	४०
	२७	४१
नव.	३	४२
	१०	४३
	१७	४४
	२५	४५
दिस.	२	४६
	९	४७
	१७	४८
	२४	४९
	३१	५०

भरणी नक्षत्र ४२ प्रतिशत है अत: तृण स्तम्भ साधारण है। रूई, पाट, वारदाना का उत्पादन मध्यम होगा। ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिर नक्षत्र का योग ७० प्रतिशत होने वायु वेग अधिक रहेगा। आंधी, झंझावत, चक्रवात इत्यादि का प्रकोप होगा। आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र का योग ८१ प्रतिशत श्रेष्ठ है। अन्न स्तम्भ सुदृढ़ होने से अन्न का उत्पादन अच्छा होगा। धान्यादि भावों में मन्दी आवेगी। आम जनता का जीवन स्तर ऊँचा बढ़ेगा।

गुरुचार का फल–इस वर्ष में गुरु वर्ष के आरम्भ से आषाढ़ कृष्ण १३ शनिवार दिनांक १ जुलाई ८९ तक वृष राशि में रहेगा। आषाढ़ कृष्ण १४ रविवार दिनांक २ जुलाई ८९ से वर्ष समाप्ति तक मिथुन राशि में रहेगा।

वृष राशि के गुरु का फल–धान्य का उत्पादन अच्छा होने से सुभिक्ष होगा। चांदी, दूध, घृत, तेल, रूई, आदि में तेजी होगी। अनाज आदि में साधारण तेजी रहे। जनता को कष्ट, राज विग्रह तथा चौरादि के उपद्रवों की वृद्धि होगी। कहीं वर्षा भी अल्प होगी। गेहूँ, चना, चावल, मूँग, उड़द, तिल, ज्येष्ठ तथा श्रावण में तेज हो।

मिथुन राशि के गुरु का फल–

मिथुने च गुरुर्याति तत्राब्दे दारूणं भयम् ।
नृपाणां विग्रहस्तत्र स्वल्पं तोयं भविष्यति ॥

राज्य शासन में उपद्रव एव प्रजा में विशेष भय होगा। वर्षा की कमी रहे। पश्चिमी व उत्तरी क्षेत्रों में दुर्भिक्ष की सम्भवना हो। सोना, चांदी, रूई, नारियल, सुपारी, अलसी, सरसों, मूंगफली, तांबा, लोहा, घृत, तेल, श्वेत वस्त्र, चन्दन, कपूर, मजीठ, में तेजी रह कर पांच महीने बाद मंदी होगी। रूई में अच्छी मंदी आवे।

शनिचार का फल–इस वर्ष के आरम्भ से चैत्र कृष्ण ८ मंगलवार दिनाक २० मार्च १९९० ई० तक धनु राशि का शनि है और चैत्र कृष्ण ९ बुधवार दिनाक २१ मार्च ९० से वर्ष समाप्ति तक शनि मकर राशि में रहेगा। इस वर्ष शनि अधिकतर समय धनु राशि में ज्यादा रहेगा अत: धनु राशि का ही फल दिया जा रहा है।

धनु राशि के शनि का फल–

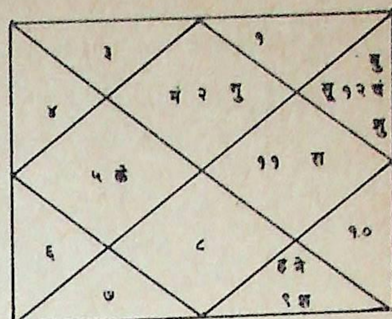
धनु राशौस्थित: सौरिर्गर्जितो ऽपि न वर्षति ।
तोयहीना धरा तत्र दुर्भिक्षं च विनिर्दिशेत ॥

समस्त धान्य व तृण, गुड़, खांड, कोयला आदि में तेजी होगी। वर्षा की कमी होने से दुर्भिक्ष की सम्भावना बनेगी। पश्चिमी क्षेत्र की जनता को अनेक प्रकार के कष्ट उठाने पड़ेंगे। भारतीय पश्चिमी सीमा पर सुरक्षा प्रबन्ध बढ़ाने होंगे।

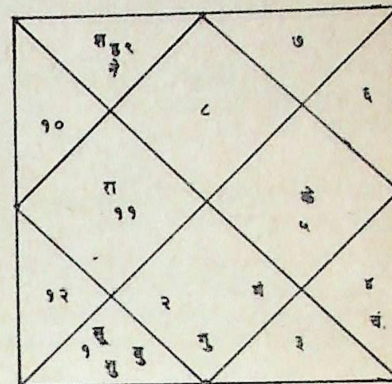
शनि की साढ़ेसाती और ढैय्या

इस वर्ष में शनि धनु राशि पर (वर्ष के समाप्ति के ६ दिन छोड़कर) विचरण करता रहेगा। अत: मकर राशि वालों को शनि की साढे साती सिर पर तांबा के पाद से और धनु राशि वालों को हृदय पर सोने के पाद से एवं वृश्चिक राशि वालों को पैरों पर लोहे के पाये से साढ़ेसाती चल रही है। वृष राशि वालों को सोने के पाये से और कन्या राशि वालों को चांदी के पाये से लघु कल्याणी (ढैया) चल रहा है। जिनकी जन्मकुण्डली में शनि शुभफलप्रद हो तथा दशान्तदर्शा भी शुभ चल रही हो, उनके लिए शनि का अशुभ फल कम होगा। जन्मकुण्डली में चन्द्रशनि अशुभ स्थानों में हो तो साढेसाती और ढैयाचिन्ता, पीड़ा धनहानि, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, कलह, पशु-पीड़ा, धनखर्चा एवं हानि आदि नेष्टफलप्रद होती है। शनि के अनिष्ट फल निवारणार्थ तैल-छाया पात्र का दान, शनि मन्त्र का जप, दशांश हवन व श्रीहनुमानजी की पूजा, अभिषेक, तैलयुक्त सिन्दुर समर्पण कर, भक्तिपूर्वक शनिवार का व्रत, सप्तधान्य दान, प्रात: शनिवार को पीपल (अश्वत्थ) का पूजन करने से शनि का अनिष्ट फल निवृत्त होता है। साढ़ेसाती, ढैय्या का विचार जन्मकालिक स्पष्ट चन्द्रमा के अंशो से करना चाहिए। केवल राशि से साढ़ेसाती का विचार स्थूल है।

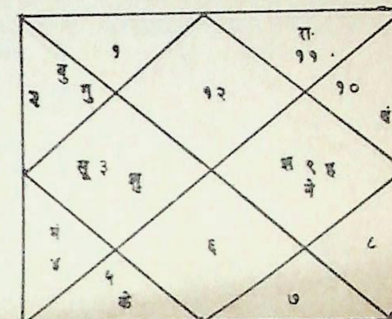
नववर्ष प्रवेश–सम्वत् २०४५ चैत्र कृष्ण ३० गुरुवार, राष्ट्रीयमिति १६ चैत्र तदानुसार ६ अप्रैल सन् १९८९ ई० को स्टै. टा० ९।०३ पर वृष लग्न में चान्द्रमान से नववर्ष प्रवेश होगा। ग्रहस्थिति की कुण्डली सामने दी गयी है। वृष लग्न का फल–पश्चिम में अकाल पड़े तथा पूर्व में राजविग्रह हो। उत्तर के प्रान्तों में धान्यादि का उत्पादन अच्छा होगा। दक्षिण में सुभिक्ष का संचार होगा। लग्नेश शुक्र ग्यारहवें भाव में चतुर्ग्रही योग बनाये हुए अस्तगत है। जिसके फलस्वरूप शासन पार्टी में मनमुटाव चलेगा। सरकार के कुछ कार्य विफल होते दिखाई देंगे। विरोधी पक्ष प्रधान शासक के सामने अनेक चुनौती प्रस्तुत करेंगे। वर्ष का राजा मन्त्री गुरु लग्न विराजमान है जिससे प्रधान मन्त्री अपनी ऋतुम्भरा प्रज्ञा से निर्णय लेकर उपरोक्त समस्याओं का समाधान करेंगे।



वर्षेश लग्न (जगत् लग्न)–सम्वत् २०४६ चैत्र शुक्ल ८ गुरुवार राष्ट्रीय मिति २३ चैत्र तदनुसार १३ अप्रैल सन् १९८९ ई० को रात्रि में स्टै० टा० २१।४५ बजे वृश्चिक लग्न में भुवन-भास्कर मेष राशि में प्रवेश करेंगे। इस समय सौर मान से नव वर्ष आरम्भ होगा। तत्कालीन ग्रहस्थिति की कुंडली सामने दी गयी है। जगत् लग्न का स्वामी मंगल सप्तम् भाव में मंगल के साथ शत्रु राशि में स्थिति है। चतुर्थ व दशम भाव में राहु केतु स्थित है। विश्व की राजनीति में तनाव आयेगा। विरोधी पक्ष प्रबल होंगे। गृह क्लेश से अपने पराये होते नजर आयेंगे। पश्चिम दिशा में अशान्ति, अराजकता, प्रकृति-प्रकोप से हानि होगी। भाग्येश चन्द्रमा भाग्य भवन में होने से प्रधान शासकों को आंशिक सफलता भी प्राप्त होगी। मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी। शत्रु प्रबल होकर परास्त होंगे। कुछ बड़े राष्ट्रों में नाटकीय परिवर्तन भी होंगे। विश्वविख्यात ३ महामानव काल-कवलित होंगे।



आर्द्रा प्रवेश लग्न–सम्वत् २०४६ आषाढ़ कृष्ण २ बुधवार, राष्ट्रीयमिति ३१ ज्येष्ठ तदनुसार २१ जून १९८९ को अर्द्धरात्रि पश्चात् स्टै० टा० २४।५६ पर मीन लग्न में सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेंगे। तात्कालिक तिथि का फल अशुभ है। वार, नक्षत्र, योग, और समय का फल श्रेष्ठ है। अत: इस वर्ष में अशुभ फल ज्यादा नहीं होंगे। आर्द्रा-प्रवेश कुण्डली में चन्द्रमा जलचर राशि में तो है, परन्तु मंगलि की पूर्ण दृष्टि है अत: वर्षा अनियमित होगी। लग्नेश दशमेश गुरु तीसरे भाव में बुध के साथ है। दशम भाव में शनि-हर्शल-नेपच्यून स्थित है अत: नवीन अविष्कारों की उपलब्धि होगी। भूगर्भ, समुद्रतल से गैस व तेल के स्रोत उपलब्ध होंगे। नवीन शस्त्रास्त्र निर्माण में भारत सवावलम्बी बनेगा।



शेष पृष्ठ १४ पर

★ अयनांश सारिणी (त) ★

ई. सन्	अ.	क.	वि.	ई. सन्	अ.	क.	वि.	ई. सन्	अ.	क.	वि.
१९००	२२	२७	३८	१९३१	२२	५३	३६	१९६२	२३	१९	३४
१९०१	२२	२८	२८	१९३२	२२	५४	२६	१९६३	२३	२०	२४
१९०२	२२	२९	१८	१९३३	२२	५५	१६	१९६४	२३	२१	१४
१९०३	२२	३०	४	१९३४	२२	५६	०७	१९६५	२३	२२	०५
१९०४	२२	३०	५८	१९३५	२२	५६	५७	१९६६	२३	२२	५५
१९०५	२२	३१	४८	१९३६	२२	५७	४७	१९६७	२३	२३	४५
१९०६	२२	३२	३९	१९३७	२२	५८	३७	१९६८	२३	२४	३५
१९०७	२२	३३	३०	१९३८	२२	५९	२८	१९६९	२३	२५	२६
१९०८	२२	३४	२०	१९३९	२३	००	१८	१९७०	२३	२६	१६
१९०९	२२	३५	१०	१९४०	२३	१	०८	१९७१	२३	२७	०५
१९१०	२२	३६	००	१९४१	२३	१	५८	१९७२	२३	२७	५६
१९११	२२	३६	५१	१९४२	२३	२	४९	१९७३	२३	२८	४७
१९१२	२२	३७	४१	१९४३	२३	३	३९	१९७४	२३	२९	३७
१९१३	२२	३८	३१	१९४४	२३	४	२९	१९७५	२३	३०	२७
१९१४	२२	३९	२२	१९४५	२३	५	१९	१९७६	२३	३१	१७
१९१५	२२	४०	१२	१९४६	२३	६	१०	१९७७	२३	३२	०८
१९१६	२२	४१	०२	१९४७	२३	७	००	१९७८	२३	३२	५८
१९१७	२२	४१	५२	१९४८	२३	७	५०	१९७९	२३	३३	४८
१९१८	२२	४२	४३	१९४९	२३	८	४१	१९८०	२३	३४	३८
१९१९	२२	४३	३३	१९५०	२३	९	३१	१९८१	२३	३५	२९
१९२०	२२	४४	२३	१९५१	२३	१०	२१	१९८२	२३	३६	१९
१९२१	२२	४५	१३	१९५२	२३	११	११	१९८३	२३	३७	०९
१९२२	२२	४६	०४	१९५३	२३	१२	०२	१९८४	२३	३७	५९
१९२३	२२	४६	५४	१९५४	२३	१२	५२	१९८५	२३	३८	५०
१९२४	२२	४७	४४	१९५५	२३	१३	४२	१९८६	२३	३९	४०
१९२५	२२	४८	३४	१९५६	२३	१४	३२	१९८७	२३	४०	४०
१९२६	२२	४९	२५	१९५७	२३	१५	२३	१९८८	२३	४१	२०
१९२७	२२	५०	१५	१९५८	२३	१६	१३	१९८९	२३	४२	११
१९२८	२२	५१	०५	१९५९	२३	१७	०३	१९९०	२३	४३	०२
१९२९	२२	५१	५५	१९६०	२३	१७	५३	१९९१	२३	४३	५२
१९३०	२२	५२	४६	१९६१	२३	१८	४४	१९९२	२३	४४	४२

★ अयनांश सारिणी (थ) ★
तारीख से अयनगति ज्ञान

मास	ता०	अयनगति विकला	मास	ता०	अयनगति विकला
जन.	१	०	अप्रै.	६	१३
	८	१		१३	१४
	१५	२		२०	१५
	२३	३		२७	१६
	३०	४	मई	५	१७
फर.	६	५		१२	१८
	१४	६		१९	१९
	२१	७		२७	२०
	२८	८	जून	३	२१
मार्च	७	९		१०	२२
	१५	१०		१७	२३
	२२	११		२५	२४
	२९	१२	जु.	२	२५

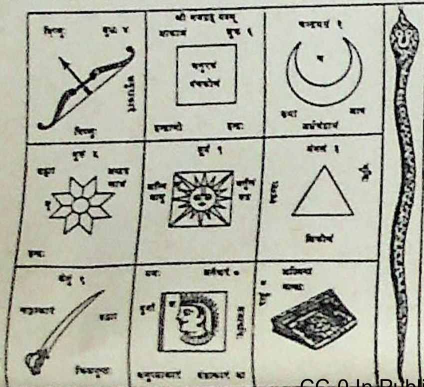
मास	ता०	अयनगति विकला
जु.	२	२५
	९	२६
	१७	२७
	२४	२८
	३१	२९
अग.	७	३०
	१५	३१
	२२	३२
	२९	३३
सित.	६	३४
	१३	३५
	२०	३६
	२७	३७
अक्टू	५	३८
	१२	३९
	१९	४०
	२७	४१
नव.	३	४२
	१०	४३
	१७	४४
	२५	४५
दिस.	२	४६
	९	४७
	१७	४८
	२४	४९
	३१	५०

चमत्कारी यंत्र और उनकी महिमा

—श्री पं.केवल आनंद जोशी

भारतीय धर्मशास्त्रों में प्राचीन काल से ही सद्‌गृहस्थों के लाभार्थ विशिष्ट प्रकार के दैवी-अनुष्ठान, तंत्र-मंत्र एवं यंत्रों का अनुसंधान और अनुशीलन करने की विशद चर्चाएं यत्र तत्र उल्लिखित हैं। वैदिक युग के आर्यावर्त काल में देवासुर संग्राम के दौरान भगवान् दत्तात्रेय (ब्रह्माजी) ने अपने वैज्ञानिक मस्तिष्क से सृष्टि के क्रम को चलाए रखने के लिए अनेक शस्त्र-शास्त्र और मंत्र-यंत्रों का सृजन किया वही मानव सहित देवता, यक्ष, किन्नर एवं ऋषि-मुनियों तथा साधक गणों की उनकी बुद्धि एवं भक्ति की शक्ति की जांच परख कर उनके युक्ति युक्त मार्गदर्शक करने हेतु कुछ प्रमुख यंत्रों का उपहार भी दिया। कालान्तर में ये यंत्र प्रकृति की उथल-पुथल में लुप्त हो गये और समयानुसार सभ्यताऐं भी युगों के प्रभाव में पनपती और नष्ट होती रही हैं। यह प्रसन्नता की बात है कि आज के युग में जब शिक्षा और विज्ञान ने यथेष्ट प्रगति कर ली है तो पुरातत्व के महत्व को समझने में भी बेहद सहायता मिली है। अतीत के गर्त में डूबी बहुत सी दुर्लभ चमत्कारी शक्तियाँ आज प्रकाश में आने लगी हैं। इन्हीं दुर्लभ प्राकृत सम्पदाओं में यंत्रों के विशिष्ट प्रभाव पर भी अनेक शताब्दियों से अनुसंधान और अनुशील हुआ जिनमें कई प्रमुख यंत्रों का रेखाकन आकार और निहित तंत्र-मंत्रों का भण्डार भी बुद्धिजीवियों के हाथ लगा है। वैसे तो कितने यंत्र भगवान् दत्तात्रेय ने बनाये इसकी निश्चित संख्या ज्ञात नहीं है, पर जो कुछ भी आज यंत्र-शास्त्र के नाम से उपलब्ध हैं उनमें से कुछ प्रधान-यंत्रों का रेखाकन और विवरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

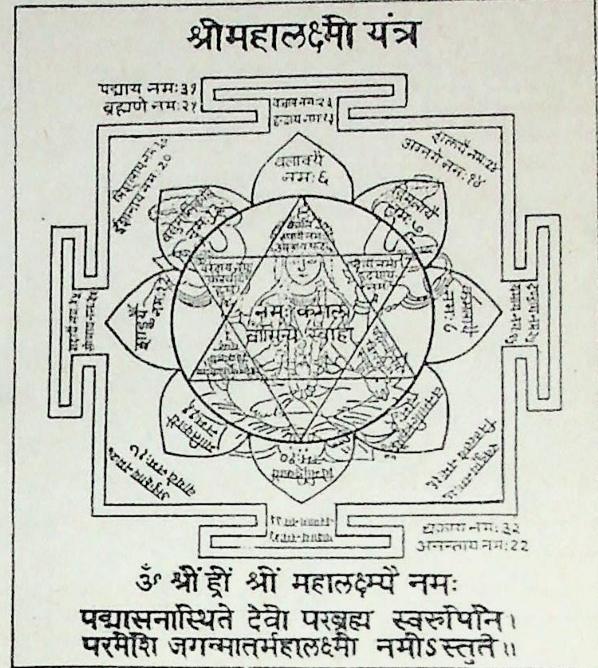
यह भी विशेष विचारणीय है यंत्र पूजन के लिए एक नियत स्थान अथवा एकान्त पूजन स्थान अवश्य होना चाहिए। उस स्थान पर सबसे पहले नवग्रह स्थापना एवं षोडशमातृकाओं का स्थान शास्त्र-सम्मत विधि से निर्माण कराना चाहिए। नवग्रह की स्थापना नवग्रह यंत्र (चित्र-१) के अनुसार दिवार अथवा काष्ठ की वेदी पर करवा कर षोडशमातृका चक्र में चारों दिशाओं का सन्धान करना चाहिए। यह क्रम नित्यावृत्ति में ग्रहण करके फिर निर्दिष्ट यंत्र की ताम्र अथवा चांदी की अथवा किसी भी अन्य शुद्ध धातु की पट्टिका में उत्कीर्ण कर यानि अच्छे शिल्पी से खुदवा कर निर्धारित रेखांकित ज्यामितीय वृत, कोण त्रिकोण चतुष्कोण षटकोण, मंत्रों आदि का शुद्ध रूपान्तर ही धातु पट्टिका पर करवा कर यथाविधि पूजन प्रक्रिया आरंभ करनी चाहिए। इन विशिष्ट यंत्रों में की श्रेणी में श्री सूर्ययंत्र, श्री यंत्र, कार्य सिद्धि यंत्र, श्री नवनाथ यंत्र, श्री कनक धारा यंत्र, श्री मंगल (भौम) यंत्र। श्री गायत्री यंत्र, श्री लक्ष्मी गणेश महायंत्र, श्री बगलामुखी यंत्र, श्री महामृत्युंजय यंत्र, एवं श्री कुबेर यंत्र एवं श्री वशीकरण (अथवा) संकल्प सिद्धि यंत्र एवं श्री दर्त यंत्र, श्री धनदा यंत्र, तथा राम रक्षा-यंत्र राजा एवं मार्कण्डेय ऋषि द्वारा निर्मित श्री महालक्ष्मी अथवा सप्तशती महायंत्रम्, श्री विष्णु यंत्र भारतीय मन्दिरों शिलालेखों में आज भी उपलब्ध है। इनमें कुछ यंत्रों का संक्षिप्त वर्णन यहाँ प्रस्तुत है। इनकी सिद्धि और सफलता साधक के श्रम पर निर्भर है परन्तु यह कहना व्यर्थ है कि यंत्रों की महिमा अवैज्ञानिक और अकारण है।



श्री महालक्ष्मी यंत्र :

श्री महालक्ष्मी यन्त्र की अधिष्ठात्री देवी कमला है, अर्थात् इस यन्त्र की पूजन करते समय श्वेत हाथियों के द्वारा स्वर्ण कलश से स्नान करती हुई कमलासन पर बैठी लक्ष्मी का ध्यान करना चाहिये। "विद्वानों" के अनुसार इस यन्त्र के नित्य दर्शन व पूजन से लक्ष्मी की प्राप्ती होती है।

इस यन्त्र की पूजा वेदोक्त न होकर पुराणोक्त है। इसमें बिन्दु षटकोण, वृत अष्टदल एवं भूपुर की संरचना की गई है। धनतेरस, दीपावली, बसन्तपंचमी, रविपुष्य, एवं इसी प्रकार के शुभ योगों में इसकी उपासना का महत्व है। स्वर्ण, रजत व ताम्र से निर्मित इस यन्त्र की उपासना से उस घर व स्थान विशेष में लक्ष्मी का स्थाई वास हो जाता है ऐसी मान्यता है।



श्री नवनाथ यंत्र :

नवनाथ यंत्र की महिमा प्राचीन काल से ही गुप्त रूप में प्रचलित है। नवनाथ ग्रंथ में इसका विस्तृत वर्णन है और पूर्ण पाठ भी उसमें उल्लिखित है। परन्तु पाठ करने से अधिक सुलभ इस यंत्र का पूजन है। यह यंत्र ताम्रपत्र पर उभरा हुआ होना चाहिए। पूजन के समय पूर्व की ओर मुख करके बैठना चाहिए। इसमें पूर्व आसन शुद्धि, शरीर शुद्धि तथा मन की शुद्धि होना आवश्यक है। एकाग्र चित्त से इस यंत्र की ओर जो भी काम करना है उसका संकल्प लेकर नवनाथ का आवाहन करना चाहिए। आवाहन मंत्र से पहले "ॐ नमः शिवाय" का ५ बार उच्चारण करना चाहिए और फिर "ॐ दं दत्तात्रेयाय नमः" जप करके नवनाथ यंत्र को अर्पण करें। उसके बाद मंत्र के बीज मंत्र, मन ही मन उच्चारण करके मूल मंत्र को॥ ११ दिन तक [illegible] फलदाई प्रभाव देना शुरू कर देता है।

4

दैवज्ञ की दृष्टि में संसार चक्र



सम्वत् २०४६ वि. (सन् १९८९-९० ई.) की ग्रह परिषद् का विचार

संसार की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, प्राकृतिक स्थिति का दिग्दर्शन

दिग्दर्शक– श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी, सोलन (हिमाचल प्रदेश)

* धनु : राशि के उत्तरार्ध का शनि, नेपच्यून हर्षल के साथ विश्व में अकल्पित रोमांचक घटनाएं प्रस्तुत करेगा।
* शनि, हर्षल, नेपच्यून कूर्मचक्र में पुच्छ भाग पर होने से पश्चिमी एशिया, यूरोप, अमेरिका, सोवियत रूस, पाकिस्तान, मिश्र, सऊदी अरब, अफगानिस्तान, यूनान, जापान, चीन में भूकम्प, जलप्लावन, विस्फोट, चक्रवात, महामारी आदि से अपूर्णीय क्षति।
* भारत में पंजाब,काश्मीर, असम, उड़ीसा, त्रिपुरा, उ. प्र., बिहार, बंगाल, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु में यत्र-तत्र न्यूनाधिक रूप से कहीं राजनैतिक साम्प्रदायिक-संघर्ष, कहीं प्रकृति-प्रकोप, भूकम्प, बाढ़, सूखा, चक्रवात, अग्निकाण्ड, बन्द घेराव, हड़ताल, हत्याकाण्ड, डकैती और यानदुर्घटनाओं की रोमांचक अविस्मरणीय घटनाएँ।
* अमेरिका, रूस, चीन, के प्रधान राष्ट्रनायकों को रोग, शत्रु व दुर्घटनाओं से आघात।
* ४ विश्वविख्यात महामानवों का देहावसान। समुद्र तटवर्ती क्षेत्रों में तूफान से भारी हानि।
* पाँच महानगरों में ऊंचे भवनों के गिरने आग लगने से जन-धन हानि।
* भरसक प्रयत्न करने पर भी कांग्रेस (इ) की प्रतिष्ठा बढ़ नहीं पायेगी। उच्चाधिकारी वर्ग, कामिनी, काञ्चन एवं पद के मोह से मुक्त नहीं होने से भ्रष्टाचार , बेकारी और अधिक संकट उत्तरोत्तर बढ़ेगा। राजनैतिक दलों में अन्तर्विद्रोह पनपेगा।
* विपक्ष की संगठन शक्ति उत्तरोत्तर बढ़ेगी। केन्द्र के लिए प्रान्तों की समस्या सिर दर्द बनेगी।
* प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी के लिए यह वर्ष अग्नि परीक्षा का है। कुछ बड़े उच्चाधिकारियों एवं पूंजीपतियों की राष्ट्रभक्ति अनावृत होगी।
* वर्षारम्भ १३ अप्रैल से १० सितम्बर ८९ तक शनि, ह. ने. के वक्रत्वकाल और वर्षान्त में २१ जनवरी से ३ मार्च १९९० तक धनु: राशि में शनि, मंगल, हर्षल, नेपच्यून की चतुर्ग्रही में अनेक अकल्पित यान दुर्घटनाएँ अग्निकाण्ड, भूकम्प आदि प्रकृति-प्रकोप से हानि।

ज्योतिष एक विज्ञान है

विगत ४५ वर्षों से मैं यह स्तम्भ लिखता आ रहा हूं। अपनी स्वल्प बुद्धि के अनुसार ज्योतिषशास्त्र का अध्ययन अनुशीलन करके देश-विदेश के सम्बन्ध में जो भविष्यवाणी की गई हैं वे अधिकांश में सत्य सिद्ध हुई है। इसी साक्षी "ज्योतिष्मती" और "श्री विश्वविजय पञ्चांग" के विज्ञ वाचक वृंद दे रहे हैं। देवज्ञ ने कभी यह अभिमान नहीं किया कि जो कुछ भविष्यवाणी वह करता है वह शत-प्रतिशत सही होती है। जहां राज्याश्रय प्राप्त एलोपैथी डाक्टरी और आयुर्वेद-विज्ञान अभी तक शत-प्रतिशत सफलता की गारंटी नहीं दे पाये, वहां निराश्रित ज्योतिष-विज्ञान की गणित-विभाग ने शत-प्रतिशत सत्यता सिद्ध कर दिखाई है। ज्योतिष गणित के द्वारा वर्षोंपूर्व सूर्य-चन्द्रग्रहणों के स्पर्श मोक्ष का जो समय निश्चित कर दिया जाता है, उसमें एक मिनट का भी अन्तर नहीं आता। यद्यपि ज्योतिषशास्त्र के फलित विभाग में अभी इतनी सूक्ष्मता नहीं बन पायी है। फलित–ज्योतिष को "दैव विद्या" कहा गया है, इसलिए राष्ट्र, समाज और व्यक्ति के संबंध में भविष्यवाणी करने वाले को "देवज्ञ" कहा जाता है। यह "दैव-विद्या" तपस्या, साधना एवं अनुभव गम्य है। आधुनिक वातावरण का एक साधनहीन देवज्ञ भी मनुष्य है, सर्वज्ञ निर्भ्रान्त नहीं, अत: उसकी बुद्धि भी भ्रान्त हो सकती है। ग्रह गति रूप दैवी संकेतों को समझने में भूल हो सकती है। उसका ज्ञान ईश्वरीय ज्ञान के समान सदा सत्य ही हो–यह नहीं कहा जा सकता। मेरा विश्वास है कि भारतीय ज्योतिष-विज्ञान का भविष्य कथन शास्त्र इस देश का अत्यन्त पुरातन विज्ञान है। इतिहास में इसके संबंध में अनेक घटनाओं का उल्लेख मिलता है। भगवान श्रीकृष्ण के जन्म के समय भविष्य बतलाने की गर्ग मुनि की कथा का उल्लेख भागवत् में मिलता है। महाभारत में भी अनेक स्थानों पर भविष्य कथन की तथाअशुभ योगों से उत्पन्न होने वाली घटनाओं की चर्चा आई है। यह विषय इतना महत्त्व का है कि इसकी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। इसका निरीक्षण-परीक्षण अवश्य होना चाहिए। और उससे प्राप्त होने वाले तथ्यों का विचार शासकीय स्तर पर भी अवश्य होना चाहिए। आजतक बिना किसी रिसर्च या शासकीय आश्रय के यह शास्त्र देश के कुछ चोटी के विद्वानों के पास सुरक्षित चला आ रहा है, और अब एक चमत्कारी विज्ञान की मान्यता पाने लगा है। आज के विज्ञान ने चाहे जितनी ही प्रगति क्यों न की हो, पर भविष्य जानने का उसके पास कोई साधन अब तक नहीं है। अत: इस भारतीय विज्ञान की ओर शासन का ध्यान अवश्य जाना चाहिए। अनेक उच्च राज्याधिकारी फलित ज्योतिष पर पूर्ण विश्वास रखते है । श्री नेहरू जी और स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने भी एकाधिकबार देवज्ञों से परामर्श लिया जिसके प्रमाण मौजूद है । किन्तु जो मंत्री निजी तौर पर दैवज्ञों के सामने नत मस्तक होते है वे ही सार्वजनिक रूप से कहते है कि "हम ज्योतिष पर आस्था नहीं रखते"। इस पर सर्व साधारण जनता को इनके इस दोहरे चरित्र पर आश्चर्य और खेद ही होगा अस्तु।

मेदिनीय अथवा राष्ट्रीय भविष्य

राष्ट्रीय भविष्य अनेक प्रकार से देखा जाता है। इस विज्ञान की अनेक शाखायें हैं, जिसके लिए जो मार्ग प्रशस्त हो जिसको जिस गुरु से जैसा ज्ञान मिला हो–निर्णय करे, यही उचित है। हमारे सामने सर्वप्रथम वराह मिहिराचार्य कृत 'वाराही संहिता' प्रमुख ग्रन्थ है। इसके अनुसार ग्रहों के परस्पर युद्ध, उदयास्त, वक्रमार्ग ग्रहों के विशेष योगप्रतियोग और विश्व में कहां पर शांति और कहां पर अशांति रहेगी–इसके निर्णयार्थ सर्वतोभद्र चक्र, कर्पूर चक्र, कूर्मचक्र, और नृपति जयचर्या के संघट्ट चक्र भी है। अतिवृष्टि, अनावृष्टि झंझावातादि के लिए सप्तनाड़ी चक्र उपयोगी है। इन्ही को आधार मानकर मैं अपनी अल्प बुद्धि और सीमित साधन से, विगत ४५ वर्षों से जो कुछ लिखता आ रहा हूं वह भी ८० प्रतिशत से अधिक सत्य सिद्ध हुआ है। यदि इस विज्ञान को राज्याश्रय प्राप्त हो और सभी शाखाओं के विशेषज्ञ अनुभवी विद्वान एकत्र होकर सामुहिक निर्णय दें, तो इसमें शत-प्रतिशत सफलता निश्चित है। नये वर्ष का फल जानने के लिए ग्रहों की राश्यंशात्मक सूक्ष्म स्थिति का पर्यवेक्षण आवश्यक है। अतः यहां प्रमुख ग्रहों की स्थिति का (वर्षारम्भ और वर्षान्त) उल्लेख किया जाता है।

नये वर्ष सं. २०४६ वि. में ग्रह स्थिति

नये वर्ष स. २०४६ वि. (७ अप्रैल १९८९ से २६ मार्च १९९० तक) प्रमुख ग्रहों की स्थिति चित्रापक्षीय निरयण मान से इस प्रकार है :-

	चैत्र शुक्ल २ दि ७ अप्रैल १९८९ ई.				चैत्र कृष्ण ३० दि. २६ मार्च १९९० ई.			
प्रमुख ग्रह	राशि	अंश	कला	मार्गी वक्री	राशि	अंश	कला	मार्गी वक्री
शनि	८	२०	१	मार्गी	९	०	२०	मार्गी
गुरु	१	१०	५३	मार्गी	२	८	२७	मार्गी
मंगल	१	२२	३६	मार्गी	९	१६	५५	मार्गी
हर्शल (यूरेनस)	८	११	३७	मार्गी	८	१५	४३	वक्री
नेपच्यून	८	१८	४०	मार्गी	८	२०	४४	मार्गी
वेंकटेश (प्लूटो)	६	२०	५८	वक्री	६	२४	३	वक्री
राहु	१०	९	०	वक्री	९	२०	१७	वक्री
केतु	४	९	०	वक्री	३	२०	१७	वक्री

शनि–वर्षारम्भ से २० मार्च १९९० तक धनु : राशि में रहेगा। २३ अप्रैल ८९ से १० सितम्बर ८९ तक वक्री। २१ दिसम्बर ८९ से २३ जनवरी ९० तक अस्त।

गुरु–वर्षारम्भ से १ जुलाई ८९ तक वृषभ राशि मे, २ जुलाई से वर्षान्त तक मिथुन राशि में, २९ अक्टूबर ८९ से २४ फरवरी ९० तक वृषभ में वक्री। ३० मई ८९ से २३ जून ८९ तक वृषभ मेंअस्त।

मंगल–वर्षारम्भ से १८ अप्रैल तक वृषभ में, १९ अप्रैल से ५ जून ८९ तक मिथुन में, ६ जून से २३ जुलाई तक कर्क में, २४ जुलाई से ८ सितम्बर ८९ तक सिंह में, ९ सितम्बर से २४ अक्टूबर तक कन्या में, २५ अक्टूबर से ८ दिसम्बर तक तुला में, ९ दिसम्बर ८९ से १९ जनवरी ९० तक वृश्चिक में, २० जनवरी से २ मार्च ९० तक धनु में, ३ मार्च ९० से वर्षान्त तक मकर में, ९ अगस्त ८९ से १९ नवम्बर तक अस्त। इस वर्ष मंगल वक्री नहीं है।

हर्शल–वर्षारम्भ से वर्षान्त तक धनु राशि में शनि के साथ ९ अप्रैल से १० सितम्बर ९० तक धनु में वक्री।

नेपच्यून–वर्षारम्भ से वर्षान्त तक धनु में शनि के साथ। १४ अप्रैल से २१ सितम्बर तक धनु मे वक्री।

वेंकटेश (प्लूटो)–वर्षारम्भ से वर्षान्त तक तुला में।

कुछ विशेष ग्रह-योग

(१) वर्ष में एक ही ग्रह गुरु का राजा व मन्त्री होना विश्व के लिए कल्याणप्रद नहीं। यहां राजा मंत्री गुरु शत्रु राशि में मंगल के साथ मंगल के ही नवांश में है, यह अधिनायकवाद एवं उग्रवाद की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करता है।

(२) दि.१९ अप्रैल से ५ जून तक मिथुन में मंगल श. ह. ने. प्रतियोग और ६ जून से २३ जुलाई ८९ तक कर्क में मंगल श. ह. ने. से षडष्टक कहीं भयंकर अग्निकाण्ड तो कहीं भूकम्प या आंधी-तूफान से हानि करेगा। तेल भण्डार में विस्फोट, खान दुर्घटना, और बड़ी यानदुर्घटना होंगी, भयंकर गर्मी पड़ेगी।

(३) गुरु वर्षारम्भ से १७ अगस्त ८९ तक अतिचारी और २३ अप्रैल से १० सितम्बर तक वक्री। २ जुलाई से गुरु मिथुन राशि में शनि से सप्तम रहेगा। इसका फल शास्त्रकारों ने रोग दुर्भिक्ष युद्धादि से विपत्ति सूचक बताया है, यथा :

> **अतिचार गते जीवे वक्री भूते शनैश्चरे।**
> **हा! हा!! भूतं जगत् सर्वं रुंडमाला महीतले॥**
> **यदा जीवयुतौ मन्दो जीवाद्वा सप्तमे स्थितः।**
> **तदा प्रजा विनश्यन्ति भूयश्चान्नपरिक्षयः॥**

(४) वैशाख मास में ५ शनिवार। ज्येष्ठ मास में ५ रविवार और वृषभ राशि में चतुर्ग्रही (सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र) आषाढ़ में ५ मंगलवार और कर्क में चतुर्ग्रही योग भी रोगोत्पात, अग्निकाण्ड सूचक है। कार्तिक में ५ रविवार और दीपावली रविवारी नेष्ट है। मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष से फाल्गुन शुक्लपक्ष तक ५ पक्षों में लगातार तिथिक्षय और शनिवारी होली तथा वर्षान्त तक मंगल-राहु का योग भयावह है।

श्री विश्वविजय पञ्चांग की भविष्यवाणियाँ

गत अनेक वर्षों से हम ''श्रीविश्वविजयपञ्चांग'' और ''ज्योतिष्मती'' पत्रिका में ग्रहगणानानुसार देश-विदेश सम्बन्धी जो भविष्यवाणी करते आ रहे है उनके सत्य-सिद्ध होने पर अनेक गुणज्ञ प्रशंसकों ने पञ्चांग व पत्रिका का हार्दिक अभिनन्दन किया है। कुछ सुप्रसिद्ध हिन्दी-अंग्रेजी पत्रकारों ने भी अपने पत्रों में इन भविष्यवाणियों के संबंध में ज्योतिर्विज्ञान की महत्ता पर लेख प्रकाशित किये है। दिल्ली के सुप्रसिद्ध हिन्दी दैनिक 'हिन्दुस्तान' ने अपने १० जुलाई ८८ की रविवासरीय अंक के पूरे रंगीन मुख पृष्ठ पर ''श्रीविश्वविजय पञ्चांग'' और 'ज्योतिष्मती' की भविष्यवाणियों से ज्योतिर्विज्ञान की महत्ता पर विशद विवेचन किया है। इसी प्रकार स्व. प्रधान मंत्री श्री नेहरुजी द्वारा संस्थापित कांग्रेस के सुप्रसिद्ध अंग्रजी पत्र 'नेशनल हेरल्ड और दिल्ली के 'पेट्रिओट' पत्र ने गत दि. २७ अगस्त ८८ के अंक में, एक वर्ष पूर्व ''श्री विश्वविजय पञ्चांग'' में प्रकाशित पाकिस्तान में जिया शासन समाप्त होने की भविष्यवाणी की सत्यता का प्रमाण अंग्रेजी में पाठकों के सामने प्रस्तुत किया वह यहां अक्षरशः उद्धृत है :

Astrological Predictions

In discussing astrological predictions about the death of General Zia, two very important predictions by two of India's very eminent astrologers with long standing may not have been noticed by many people. The first is by Mr. S.K. Kelkar who had predicted twice in the Marathi daily 'Sakal' of Puncmajor changes in Pakistan this year on the basis of Pakistan's independence horoscope of 13-14th August midnight 1947 Karachi. Mr Kelkar had made similar predictions earlier and has ax string of successful predictions to his credit.

But the most specific predition about that end of the rule of General Zia has been given by Mr Hardev Sharma Trivedi in his ''Vishwa Vijay Panchang'' (sent to the press in November, 1987) and available for purchase in the

market in January-February, 1988). In discussing world affairs, he specifically stated in Hindi "Zia shashan ka ant" which means end of the rule of Zia on the basis of Koorma Chakra, Karpur Chakra and Sanghattaa Chakra. More interestingly in the fortnight 13-27th August, 1988 he very specifically stated countries in Western Asia getting affected and he used the word 'Vigrah' which means discruption by turmoil. I have not seen such specific predictions with specific reference to Zia given by any other astrologer otherwise if one scans through the astrological predictions for 1988 most of the astrologers in India did predict major shake up and political turmoil in Pakistan but the credit for being so specific about the end of Zia's rule in the fortnight 13-27th August, 1988 goes to the 85-year-old low profile Hardev Sharma Trivedi who does not know a word of English.

प्रकृति-प्रकोप

गत कुछ वर्षों से प्रकृति-प्रकोप दैवी-उत्पात बढ़ते जा रहे है। इसकी सूचना मै इस पञ्चांग मे निरन्तर देता आ रहा हूं। और इन दैवी-प्रकोपों की शान्ति के उपाय भी लिखे है, इस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। गत सं. २०४४ वि. का विश्वव्यापी भयंकर सूखा और वर्तमान वर्ष का जल प्लावन भयंकर प्राकृतिक उत्पात या ईश्वरीय-कोप ही माना जायेगा। सोवियत रूस के भू-भाग में अभी भयंकर भूकम्प आचुका है और गत २१ अगस्त ८८ को बिहार, बंगाल, उड़ीसा, नेपाल में भूकम्प से हानि हो चुकी है। अब आने वाले वर्षों में इससे भी अधिक भयंकर भूकम्प आदि प्रकृति-प्रकोप से विनाश होने वाला है। अतः मनुष्य मात्र को राग-द्वेष, घृणा, ईर्ष्या, हिंसा आदि तामसी वृत्ति को छोड़कर "वसुधैव कुटुम्बकम्" की उदार सात्विक वृत्ति का अनुसरण करने में ही कल्याण है। आतंकवाद अपना खूनी पंजा अब पंजाब से बाहर भी फैलाने के दुष्प्रयत्न में है। इस मनुष्यकृत प्रज्ञापराध को शीघ्र समाप्त करना होगा।

विश्ववार्ता

इस समय विश्व का वातावरण दिन-प्रतिदिन भयाक्रांत होता जा रहा है। भारत भी इससे अछूता नहीं। राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियां नित्य नया मोड ले रही है। ४५ वर्ष पूर्व से इस पञ्चांग और ज्योतिष्मती पत्रिका में जो भविष्यवाणी करता आ रहा हू, उसकी सत्यता का प्रमाण अघटित घटनाएँ एवं विज्ञ पाठक स्वयं है। शासन सूत्र संचालकों को मैंने बार-बार "भारत भूलावे में न रहे" "नेताओं को नेक सलाह" शीर्षकों से सचेत किया है।

प्राचीन आचार्यों ने शनि को दुःख विनाश का सर्जक माना है। हिंसक चोर डाकू लुटेरे अपराधियों पर शनि का वर्चस्व है। मंगल को दाहक शक्ति एवं शस्त्रास्त्रकारक माना गया है, ये दोनों जब युद्ध प्रिय मेष, सिंह, वृश्चिक, धनु : राशि नवांश में योग-प्रतियोग करते है, तब विषम विस्फोटक स्थिति बनती है। इस वर्ष जब शनि का मंगल राहु हर्षल नेपच्यून प्लूटो के साथ योग-प्रतियोग होगा, तब विश्व में कहीं अग्निकाण्ड, कहीं भूकम्प या ज्वालामुखी विस्फोट एवं यान दुर्घटनाएँ अधिक होंगी। पाकिस्तान में भारत के विरुद्ध विषवमन होने से वहां यत्र-तत्र साम्प्रदायिक दंगे सम्भव होंगे। इस वर्ष शनि मूल और पू. षा. नक्षत्र और धनु: राशि में रहेगा। हर्षल, नेपच्यून भी धनु : राशि में रहेंगे। यह क्रूर संयोग अनार्य पश्चिमी राष्ट्रों में गृहकलह, महामारी, दुर्भिक्ष आदि से संहार करेगा। विश्व-युद्ध का योग नहीं है

राशि प्रभाव एवं सप्तशलाकावेध तथा कूर्मचक्रानुसार यूरोप, एशिया, अफ्रीका, अमेरिका के अनेक भागों में विध्वंसक स्थिति बनेगी। पाकिस्तान और चीन गुप्त रूप से युद्ध की तैयारी में संलग्न रहेंगे। पाकिस्तान में विघटन होगा। सिन्ध, बलौच, पखतुन स्वतन्त्रता की ओर बढ़ेंगे बंगलादेश, श्रीलंका अशांत रहेगा। भारत के इर्द-गिर्द पश्चिम की घातक घेरे बन्दी का षड्यंत्र होगा। कश्मीर, पंजाब, पश्चिमी बंगाल भी अशांत रहेंगे।

शक्तिशाली देश के एक दूसरे पर संदेह करके आत्मरक्षा के नाम पर भीषण शास्त्रास्त्रों का निर्माण जारी रखेंगे। कुछ निर्माणस्थलों में अकस्मात् भयंकर विस्फोट होगा। अमेरिका, अफ्रीका, चीन, जापान, सोवियत रूस, प्रशान्त महासागर, अटलांटिक महासागर और हिंदमहासागर द्वीपों की शांति भंग होगी। ग्रीस, बगदाद, मैसोपोटामिया, तुर्की, आस्ट्रेलिया, ईरान, ईराक, तिब्बत, कश्मीर, असम, मिश्र, इजरायल, बेल्जियम, केलीफोर्निया, लांसऐंजल्स और पूर्वोत्तरीय भारत, दक्षिणी-पश्चिमी समुद्रतटवर्ती क्षेत्र शनि के प्रभाव से विपदग्रस्त होंगे। भारत चीन सीमा विवाद यथावत् बना रहेगा। सीमा पर सेना की झड़पें होती रहेंगी। चीन, जापान में प्रकृति प्रकोप, भूकम्प से भारी विनाश होगा।

धनु: राशि में शनि का प्रभाव

गत १७ दिसम्बर ८७ को शनि ग्रह ने धनु : राशि में प्रवेश किया था। मार्च १९९० तक यह इसी राशि में रहेगा। इस बार धनु: राशि में शनि के साथ दो और महाग्रह (जो शनि कक्षा से भी बहुत ऊपर है) मिल रहे हैं। इनमें पहला ग्रह है हर्शल-यूरेनस यह एक राशि में ७ वर्ष तक रहकर ८४ वर्ष में एक भचक्र पूर्ण करता है। दूसरा महाग्रह नेपच्यून एक राशि में १२-१/४ वर्ष तक रहकर १४७ वर्ष में एक भचक्र पूर्ण करता है। इन ग्रहों की खोज लगभग २०० वर्ष पूर्व पाश्चात्य खगोल वैज्ञानिकों ने की थी। प्राचीन भारतीय संहिता ग्रंथों में इनका उल्लेख नहीं है। पाश्चात्य ज्योतिर्विदों ने अपने अनुसंधान और अनुभव के आधार पर इन्हें शनि से भी अधिक प्रभावशाली महाग्रह माने है। भूकम्प, तूफान बम विस्फोट, यान दुर्घटना अग्निकांड आदि का कारक हर्शल को माना है। अब अग्नितत्वात्मक धनु: राशि नवांश में इन तीन महाग्रहों की त्रिकुटी आगामी तीन वर्षों में विश्व में अकल्पित रोमांचक घटनायें उपस्थित करें तो आश्चर्य नहीं। इस शताब्दी में धनु: राशि में इन तीनो की युति पहले कभी नहीं हुई। भारतीय दैवज्ञों को इस महायोग पर मनोयोग से अन्वेषण अनुसंधान करना चाहिये। प्राचीन आचार्यों ने धनु: राशि में शनि का फल इस प्रकार लिखा है–

"मन्देस्थिते धन्विनि वृष्टिनाशः स्याद् भूपतीनां कलहो नचार्थम्।
पांचाल काशीकुरु कौशलस्थ नष्टाश्च काश्मीर कलिंग बंगाः"॥

भावार्थ-वृष्टिनाश (सूखा) शासनाध्यक्षों में कलह, पंजाब, काशमीर, कुरु, आंगल, हरियाणा, द्वाबा, फिरोजपुर, मंडल, कौशल, पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, उड़ीसा, बंगाल में प्रकृति प्रकोप एवं पारस्परिक संघर्ष से जन-धन का भारी विनाश होता है। नरपति जयचर्योक्ति कूर्मचक्र में इस वर्ष शनि हर्शल नेपच्यून पश्चिम दिशा में कूर्म के पुच्छ भाग में स्थित है। इसका फल यों लिखा है-

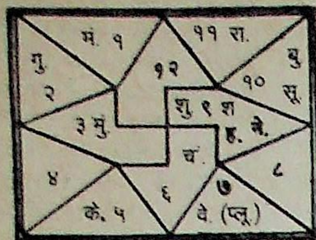
ज्येष्ठा मूलं पूर्वाषाढ़ पुच्छ मूले च संस्थिता,
पर्वतो ऽर्बुदं कच्छमवन्ती पूर्व मालवाः।
फारसी बर्बरौद्वीपौ सौराष्ट्रं सैन्धवं तथा जलस्थानानि घ्नन्ति स्त्री राज्यमवनी तले।

ज्येष्ठा मूल पूर्वाषाढ़ा में शनि हो तब अर्बुदाचल पर्वतप्रदेश, सौराष्ट्र, कच्छ, सिंध, अवन्ती मालवा प्रदेश, आसाम, फारस खाड़ी ईरान, ईराक, एवं महिला शासित राज्य प्रकृति प्रकोप, युद्ध, महामारी आदि से ध्वस्त होते है।

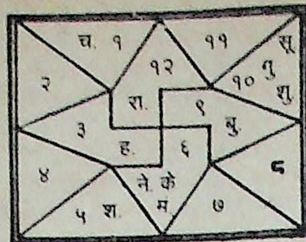
भारतीय गणतन्त्र का ४० वां वर्ष

वर्तमान सं. २०४५ वि. माघ कृष्णा ४ गुरुवार २६ जनवरी १९८९ को मीन लग्न में ४० वां वर्ष प्रवेश हो रहा है। वर्ष-लग्न की ग्रहस्थिति यह है : ———

वर्ष-लग्न



गणतन्त्र-जन्म-लग्न



भारतीय गणतन्त्र का जन्म लग्न मीन है और है और इस वर्ष का लग्न भी मीन है अतः यह वर्ष एकोदय अरिष्टप्रद द्विजन्मायोग कारक बन गया है। लग्नेश राज्येश नीच नवांश में निर्बली है। शुक्र शनि ह० ने० की दशमभाव धनुराशि में युति हो रही है। सूर्य-बुध से शनि शुक्र का द्विर्द्वादश योग बन रहा है और विक्रमी वर्ष सं. २०४६ की वर्ष प्रतिपदा का क्षय एवं वर्ष लग्न में सप्तमेश, व्ययेश मंगल, लग्न मे अष्टमेश गुरू के साथ है। नवमेश, दशमेश शनि अष्टम है। विक्रमी नववर्षारम्भ से ४५ दिन पूर्व माघ शु० १५ दिनांक २० फरवरी १९८९ को खग्रास चन्द ग्रहण मे राक्षसगण नक्षत्र मे शुक्र का अस्त हो रहा है, इन सब ग्रहयोगो से ज्ञात होता है कि सन् १९८९-९० भारत के लिए शुभाशाप्रद नही है। भ्रष्टाचार मँहगाई बेकारी दूर नहीं होगी। विश्व में अनेक अप्रत्याशित रोमाञ्चक घटनाएँ घटेंगी। प्रकृति-प्रकोप भूकम्प, अग्निकाण्ड, आंधी, तूफान, चक्रवात, अवर्षण अतिवर्षण, दुर्भिक्ष महामारी एवं मनुष्यकृत प्रज्ञापराध युद्ध विग्रहादि से विश्व में यत्र-तत्र मारी विनाश होगा। चीन, रूस, अमेरिका जापान, इंगलैण्ड, जर्मनी, फ्राँस, यूनान मिश्र तुर्की पाकिस्तान में भी अनेक दुर्घटनाएँ एवं प्रमुख शासको मे अकल्पित उलटफेर होगा। पूर्वी भारत असम, उड़ीसा, बंग, बिहार, नेपाल, गुजरात, महाराष्ट्र, आंध, तमिलनाडू मे दुःखदायी प्राकृतिक राजनैतिक घटनाएँ घटेंगी। प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी के जन्मलग्न से गणतंत्र वर्ष लग्न अष्टम और नामराशि से छठे हैं। खग्रास चन्दग्रहण जन्मराशि पर हो रहा है, यह श्री गांधी के लिए अनुकूल नही है। मार्च से अक्टूबर ८९ तक उन्हें स्वास्थ्य सुरक्षा की ओर से पूर्ण सतर्क रहना चाहिए। इन्दिरा कांग्रेस के लिए भी १९८९-९० प्रगति कारक नहीं है। केन्द्र और प्रान्तीय मन्त्रिमण्डलो में कुछ अकल्पित फेरबदल होंगे। कांग्रेस की प्रतिष्ठा उत्तरोत्तर क्षीण होगी। आज से ३० वर्ष पूर्व ४ नवम्बर १९५८ से २ फरवरी १९६१ तक शनि धनु: राशि मे रहा था, उस समय हर्शल नेपच्यून शनि के साथ नहीं थे, फिर भी १९५९ मे तिब्बत की रक्तरञ्जित क्रान्ति में दलाई लामा को भागकर भारत आना पड़ा और तिब्बत अभी तक चीन के पंजे में है। भारत मे चीनी आक्रमण, श्री नेहरू का निधन और पकिस्तानी आक्रमण भी शनि के दुष्प्रभाव मे ही चुके हैं। अब पुनः वैसी ही अनिष्टप्रद स्थिति विश्व के लिए बनने जा रही है। इस पर विज्ञोदैवज्ञो को मनोयोग से विचार करना चाहिए। धनेश, नवमेश सेनापति मंगल गणतंत्र वर्ष लग्न में बलवान है। पड़ौसी घर दूसरे १२ वें पर कूटनीतिज्ञ शनि, हर्षल, नेप्च्यूनं और वेंक्टेश की दृष्टि है, अतः पश्चिमोत्तर एवं पूर्व के तथाकथित मित्र राष्ट्रो से भारत को विशेष सतर्क रहना चाहिए।

इस वर्ष मे तथाकथित मित्र राष्ट्र भारत को विखंडित करने के षड्यंत्र मे संलग्न रहेंगे। दक्षिण पूर्वी समुद्र तट और नेपाल व पाकिस्तान के मार्ग से विदेशी माल वस्त्र सुवर्ण, मादक द्रव्य युद्धोपकरण एवं जीवनोपयोगी अनेक वस्तुये तस्करी मे अवैध रूप से भारत पहुँचाकर भारतीय उद्योग को ठप्प करने की घातक चाल चलेंगे। इससे भारतीय शासन को दूरदृष्टि से सतर्क हो जना चाहिए। पाक, चीनी सैनिक सीमा का उल्लंघन करके भारतीय क्षेत्र में अवैध सैनिक चौकियां स्थापित करते जावेंगे। उत्तर मे हिमाच्छादित क्षेत्र, साईचीन, ग्लेसियर, लेह क्षेत्र कराकोरम दर्रा, काजा-पट्टी, छुम्बी घाटी आदि स्थानों पर अवैद्य कब्जा करके स्थल सेना, वायुसेना के अनेक नये डिवीजन स्कवेड्रन शिविर स्थापित करके भारत को आतंकित करने का दुष्प्रयत्न करेंगे, उससे भारत को सतर्क रहना परमावश्यक है। मंहगाई गरीबी और भ्रष्टाचार बढेगा। कुछ क्षेत्रों में अवर्षण और कहीं असामायिक वर्षा से फसल क्षतिग्रस्त होगी। मंगल के कारण सेवा निवृत सैनिकों एवं कृषकों का नया सुदृढ संगठन बनेगा। केन्द्रस्थ शुक्र, शनि, मुंथा के कारण राजनीति में महिलायें अधिक अग्रसर होंगी। गुरू के अतिचार एवं शनि मंगल के योग-प्रतियोग व वक्रत्व काल में कृषक संगठनों एवं शिक्षण संस्थाओं में भारी असंतोष व्यापेगा। ग्रीष्मकाल में पेय जल विद्युत् संकट से अनेक नगरों का जन-जीवन त्रस्त होगा। जुलाई ८९ से गुरू शनि का प्रतियोग भारत के राजनैतिक सामाजिक साम्प्रदायिक आर्थिक क्षेत्रों के लिए अनिष्ट सूचक है। पाकिस्तान से संबन्ध कटु बनेंगे। सरकार न्यायपालिका के अधिकारोंपर अकुश लगाना चाहेगी। नेपाल ब्रह्मादेश और श्रीलंका में अशांति व्यापेगी। ३१ अगस्त ८९ को सिंह राशि में खण्डग्रास सूर्यग्रहण केवल अफ्रीका के दक्षिण-पूर्वी भाग मेडागास्कर और दक्षिणी ध्रुव प्रदेश में ही दिखाई देगा परन्तु, सिंह राशि में चतुर्ग्रही का धनु: राशिस्थ त्रिग्रही से संघट्टवेध यहाँ से आगे १ वर्ष की अवधि में दिल्ली के शासन-तन्त्र में परिवर्तन, रूस में गोर्वाच्योव की स्थिति डाँवाडोल और अमरीका के नये राष्ट्रपति को भी संकट का सामना करना पड़ेगा। भारत-पाक सम्बन्ध कटु होंगे। भारत और रूस के दो ख्याति-प्राप्त नेता पदच्युत या काल कवलित होंगे।

खाद्यान्न समस्या

अन्नं प्राणोक्तं धान्यमन्नं सर्वार्थ साधकम्। देवासुरमनुष्याश्च सर्वे धान्योपजीविनः॥ गेहूं आदि खाद्य पदार्थों की मँहगाई निरन्तर बढ़ते जाने की भविष्यवाणी में गत २३ वर्षों से इस पञ्चाङ्ग और 'ज्योतिष्मति' पत्रिका में करता आ रहा हूं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद शनैः शनैः मँहगाई बढ़ती गई और विगत १७ वर्षो से तो सुरसा के मुख की भाँति विकराल रूप में बढ़ती जा रही है। १०/११ वर्ष पूर्व गेहूं, चावल, चना, चीनी, चाँदी, सोना आदि का जो भाव था। वह दुगने तिगुने से भी अधिक हो गया। मँहगाई रोकने और गरीबी दूर करने की राजनेताओं की चुनावों घोषणायें निरर्थक सिद्ध हुई। भारत के प्राचीन महर्षियों ने अन्न की महिमा में कहा है कि राजा या राष्ट्र नायक को अपने राजकीय अन्न भंडार में तीन वर्ष तक राष्ट्र के पोषण योग्य संग्रह रखना चाहिये। सोना, चाँदी, माणिक्य आदि रत्नो की ओर न भाग कर जैसे और जिस विधि से भी हो अधिक अन्न उपजाकर अपना तथा राष्ट्र का हित करना चाहिये।

चेतावनी —अब मै पुनः पाठकों और राष्ट्रनायकों को विशेषकर कृषि एवं खाद्य मन्त्रियों को चेतावनी देता हूं कि आगामी कुछ वर्षों की ग्रहस्थिति अन्नोत्पादन के लिये विशेष-अनुकूल नहीं है। अधिकारी वर्ग करोडों की कागजी योजना चाहे भले ही बना लें, पर प्रकृति-प्रकोप के एक झोंके में वे सब टप्प हो जाती है। अतः अब इस संक्रमणकाल में भारत-भूमि का कोई भी भाग अनुपजाऊ न पड़ा रहे। कड़ा परिश्रम कर के युद्धस्थर पर जहाँ जो भी अन्न, कन्द, मूल, फल, साग, भाजी पैदा हो सकती है वे उगावें। विदेशी खाद्य के व्यामोह में पृथ्वी की उत्पादन शक्ति नष्ट न करें। अनीश्वर वादी जड़-भौतिक जगत् तथाकथित् विज्ञान में चाहे कितनी भी उन्नति कर ले परन्तु न वह प्रकृति पर विजय पा सकता है' और न मानव को वास्तविक शान्ति ही प्रदान करा सकता है। पारमार्थिक वास्तविक सुख शान्ति भगवन्निष्ठ 'सर्वभूत हितेरत' आध्यात्मिक जीवन में ही है। आने वाली अकाल की बाढ़ को न केवल शक्तिशाली धर्म निरपेक्ष सरकार ही रोक सकेगी, अपितु भारतीय जनता की प्रचण्ड धार्मिक भावना ही इसके प्रतिरोध में समर्थ होगी।

वायुमण्डल वर्षारोगोत्पातादि

इस वर्ष की ग्रहस्थिति के आधार पर प्राचीन ग्रन्थों से सार्वत्रिक वर्षादि का सामूहिक विचार यहाँ लिख रहा हूं। भौमान्तरिक्ष दिव्यनिमित्तानुसार वर्षा-वायु भिन्न प्रान्तों में विभिन्नरूपों में होती है। भारतीय वायु-शास्त्र में प्रत्येक नगर या मण्डल मे प्रतिदिन की वायुमेघ गर्जना बादल विद्युतादि की परीक्षा द्वारा वृष्टि-गर्भ लक्षण का उल्लेख है, जैसे-आषाढ़ी पूर्णिमा की वायु-परीक्षा द्वारा तद्देशीय दुर्भिक्ष सुभिक्ष का ज्ञान होता है। वैसे ही

...आदि अन्तरिक्ष निमित्त से भावी वर्षा का ज्ञान होता है।

रुकावट करेगा। ६ जुलाई में पुनर्वसु के सूर्य में खण्डवृष्टि और वायु का जोर रहेगा। १९ जुलाई से ३ अगस्त

प्रत्येक मास की प्रमुख तिथियों की वायु वर्षा मेघ-गर्जन आदि अन्तरिक्ष निमित्त से भावी वर्षा का ज्ञान होता है। इस कार्य के लिये प्रत्येक प्रान्त व मण्डल में एक वायु-वृष्टि विज्ञान केन्द्र की स्थापना हो जिसमें प्रतिदिन की वायु-वर्षा का रिकार्ड रखा जावे, उस अन्तरिक्ष दिव्य-निमित्त और ग्रह योगों का मिलान करके वर्षादि की जो भविष्य वाणी की जायेगी वह उस स्थान के लिये सत्य सिद्ध होगी। भौमान्तरिक्ष दिव्यनिमित्तों के बिना केवल ग्रह योगों से की गई-भविष्यवाणी सर्वत्र शतप्रतिशत सही हो यह निश्चित नहीं। यह बात मैं विगत ३१ वर्षों से इस पञ्चांग में निरन्तर लिखता आ रहा हूं परन्तु केन्द्रीय शासन ने राष्ट्र के लिये परमोपयोगी इस विषय पर ध्यान नहीं दिया। प्रतिवर्ष बाढ़ और सूखा से यत्र-तत्र भयंकर विनाश हो रहा है। सन्तोष की बात है कि अब दिल्ली के एक उच्चाधिकारी मेरे परम-स्नेही सन्मित्र ज्योतिर्विज्ञानानुरागी श्री के. एन. राव ने अपने कुछ बुद्धिजीवी सहयोगियों को इस ओर आकृष्ट किया है-उनके सद्प्रयत्न से राष्ट्र को लाभ होने की आशा है। सप्तनाड़ी चक्र कूर्मचक्र में ग्रह-स्थिति और **आर्द्रा** प्रवेश लग्न एवं वर्षा-कालीन ग्रह स्थिति के अनुसार नये वर्ष का भावीविचार लिख रहा हूं :

वर्षा योग– सूर्य के आर्द्रा प्रवेश से दस नक्षत्र वर्षाकारक माने गये हैं। भारत में २१ जून से मेघागमन (मानसून का प्रारंभ) माना जाता है। समुद्र तटवर्ती-दक्षिणपूर्वी भारत में मृगशीर्ष नक्षत्र में सूर्य-प्रवेश होने पर १० जून के लगभग से मानसून सक्रिय हो जाता है। वर्षा एवं कृषि उत्पादन के लिये सूर्य आर्द्रा प्रवेश लग्न का विशेष महत्व है

आर्द्रा प्रवेशे यदि भास्करस्य चन्द्रस्त्रिकोणे यदि केन्द्रगो वा ।
जलाश्रये सौम्यनिरीक्षिते च सम्पूर्ण सस्या वसुधातदास्यात्॥

इस वर्ष की आर्द्रा-प्रवेश लग्नकुण्डली पीछे पृष्ठ २२ पर वर्षलग्न जगल्लग्न कुण्डली के साथ दी है। आर्द्रा प्रवेश लग्न मीन व चन्द्रमा मकर में है। लग्न चन्द्र दोनों जलचर राशि में है, परन्तु चन्द्रमा केन्द्र त्रिकोण में नहीं है, ११वें भाव में मंगल से दृष्ट, शनि राहु की कर्तरी में है और लग्न भी शनि मंगल से दृष्ट है अत: भारत के कुछ भाग समय पर वर्षा न होने से पीड़ित होंगे और कुछ भाग अतिवृष्टि से दु:खी होंगे। आषाढ़ मास की अमावस्या सोमवारी आर्द्रा नक्षत्र में ३ जुलाई को है और २३ जून को गुरु उदय हो रहा है, यह भी सुवर्षा, सुभिक्षकारक है यथा–

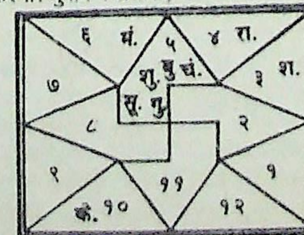
"आषाढस्याप्यमावस्या यदि सोमवती भवेत् । सुभिक्षं कुरुतेऽवश्यं नक्षत्र मृग सप्तके" ॥

२४ जून और २३ नवम्बर ८९ को शनि नेपच्यून की अंशसाम्ययुति हो रही है। पहले यहां दोनों ग्रह वक्री हैं अत: कहीं भयंकर बाढ़ और किसी बड़े बांध के टूटने से भारी विनाश होगा। समुद्री तूफान और आंधी बवंडर चक्रवात् से भी भयावह स्थिति बनेगी। इसी कालावधि में (वक्री शनि हर्षल नेपच्यून में) रेलवे वायुयान एवं बस, कार, जीप, ट्रक दुर्घटनाएँ भी अधिक होंगी। भयंकर गर्मी पड़ेगी। लू, अतिसार, उदर मस्तक एवं यौन-रोग एड्स आदि अधिक फैलेंगे, बच्चों में आत्रशोघ एवं यकृत रोग फैलेगा। शासक वर्ग में एक दूसरे के प्रति अविश्वास और घृणा की भावना बढ़ेगी। पूर्व-दक्षिण-पश्चिम में भूकम्प और कहीं खान-दुर्घटना तथा अग्निकाण्ड से हानि होगी। १९ अप्रैल को मंगल मिथुन राशि में प्रवेश करेगा और आगे अगस्त्य अस्त है। अत: "चलत्यागारके वृष्टि:" के अनुसार अप्रैल के उत्तरार्द्ध और मई के पूर्वार्द्ध में पूर्वी भारत, असम, बंगाल, भूटान, सिक्किम, बंगलादेश और नेपाल में कहीं-कहीं तेज हवा के साथ खण्ड-वृष्टि, बादल-चाल होगी। जून के प्रथम व अन्तिम सप्ताह और जुलाई के प्रथम व अन्तिम सप्ताह में दिल्ली, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-काश्मीर, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश,हरियाणा, गोवा, गुजरात, महाराष्ट्र में यत्र-तत्र न्यूनाधिक वर्षा होगी। कहीं अवर्षण और कहीं अतिवर्षण से फसल में हानि होगी।

दि. ७ से २० जून तक पूर्व-दक्षिण भारत में समुद्र किनारे के भू-भाग पर कहीं बादल चाल बूंदा-बांदी, मेघ गर्जना और कहीं भारी वर्षा होगी। ब्रह्मपुत्र में बाढ़ की संभावना है। २१ जून को सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। २४ जून ८९ को गुरु उदय हो रहा है। अत: यहाँ सार्वत्रिक वर्षा का योग बनेगा, परन्तु इस वर्ष वर्षाऋतु में मंगल-सूर्य से आगे चल रहा है। यह राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश व पश्चिम-दक्षिण भारत में कहीं वर्षा में रूकावट करेगा। ६ जुलाई में पुनर्वसु के सूर्य में खण्डवृष्टि और वायु का जोर रहेगा। १९ जुलाई से ३ अगस्त तक पुष्य के सूर्य में कहीं अतिवृष्टि कहीं अनावृष्टि का योग बनेगा। १९ जुलाई से १२ अगस्त तक सिंह राशि में शुक्र भारत के अधिकांश भाग में वर्षा में रूकावट डालेगा, धूलभरी आंधियाँ चलेंगी, फसल में हानि पहुंचेगी। १६ से ३० अगस्त तक मघा के सूर्य में कहीं खण्ड वृष्टि पूर्वदक्षिण में अतिवृष्टि। सितम्बर में पूर्व फा. उ. फा. के सूर्य में कहीं अतिवृष्टि तो कहीं अनावृष्टि से फसल को हानि होगी। अक्टूबर के उत्तरार्द्ध और नवम्बर में पूर्वार्द्ध में दक्षिण-पूर्वी भारत में वायु-वेग और खण्ड-वृष्टि। उत्तर-भारत में तापमान गिरेगा। नवम्बर के अन्तिम सप्ताह और दिसम्बर मध्य तथा १० जनवरी ९० तक पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू काश्मीर में खण्डवृष्टि और ओलापात से शीत बढ़ेगी। पर्वतीय पद्रेश में हिमपात होगा। २० जनवरी से २ मार्च तक शनि के साथ मंगल के योग से कहीं भारी वर्षा, हिमपात, ओलावृष्टि और शीतलहर चलेगी। जम्मू-काश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश के कूर्मांचल, बदरी केदार खण्ड में कहीं भयंकर हिमपात और भूस्खलन एवं पर्वत शिखरों से चट्टानों के गिरने से भारी हानि होगी। याता-यात मार्ग अवरूद्ध होंगे ।

लोकसभा के आम चुनाव

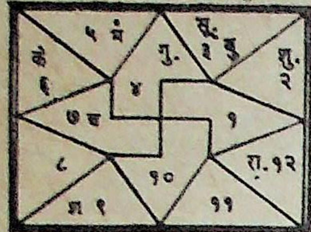
गत वर्ष १९८८ के प्रारम्भ में ही लोकसभा के मध्यावधि चुनाव होने की चर्चा जोरों पर थी, उस समय गत वर्ष के पचांग में मैंने पृष्ठ २५ पर स्पष्ट लिखा था कि **वर्षारम्भ में मध्यावधि चुनाव की सम्भावना निराधार है।** अब वर्तमान लोकसभा की अवधि १९८९ के अन्त में समाप्त हो रही है। भारत की उत्तर-भारतीय विद्वान् मकर और दक्षिण-भारतीय कन्या राशि मानते हैं। १४ नवम्बर १९८९ को शनि-धनु राशि के कन्या नवांश में प्रवेश करेगा। यहां से धनु राशि के अन्त्यार्ध २० मार्च १९९० तक लोकसभा के चुनाव हो सकेंगे। यहां तीनों ग्रह द्वि[illegible]भाव राशि नवांश में है अत: युक्त अवधि से कुछ समय आगे-पीछे चुनाव होना भी सम्भव है। यदि २० मार्च के बाद मकर के शनि में चुनाव हो तो उत्तम है। परन्तु अवधि पूर्ण हो जाने से आगे बढ़ना कठिन प्रतीत होता है। २० जनवरी से २ मार्च ९० तक मंगल धनु राशि में शनि हर्षल नेपच्यून के साथ संघर्ष उत्पात कारक है। इस चुनाव में सत्तापक्ष एवं विपक्ष में भयंकर संघर्ष होगा। करोड़ों रुपये प्रचार-साधनों में व्यय होंगे। सत्तारूढ़ कांग्रेस (इ) को भरसक जी तोड़ प्रयत्न करने पर भी दो-तिहाई बहुमत प्राप्त करना बहुत भारी पड़ेगा। निर्वाचन केन्द्रों में अवैध तरीके अपनाये जायेंगे। कुछ स्थलों पर हिंसक घटनायें होंगी। विपक्ष पूर्वापेक्षा अधिक स्थान प्राप्त करेगा। चुनाव में सत्तारूढ़ प्रधानमंत्री का जन्म-कुण्डली का विश्लेषण करना भी आवश्यक है।



प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी की जन्मकुण्डली यह है– गत १७ दिसम्बर ८७ से शनि प्रधान मंत्री के पञ्चम बुद्धि स्थान में ह. ने. के साथ आया। इसमें प्रधान मंत्री को बौद्धिक उलझन में फंसाया। ऋतम्भरा प्रज्ञा से काम न काम लेकर चाटुकारों मित्रों के चक्र में फंसाया अत: भारत राष्ट्र नई-नई समस्याओं में फँसता जा रहा है "**नेताओं को नेक सलाह**" शीर्षक से हम विगत साल वर्षों से पञ्चांग में चेतावनी देते आ रहे हैं। अब कुछ ज्योतिर्विदों ने आगामी वर्ष श्री राजीव गांधी के लिए बहुत अच्छा बताया और श्री गांधी को ही आगामी प्रधान मंत्री बनने की भविष्यवाणी की है। हम भी प्रधान मंत्री की मंगल-कामना करते है और चाहते है कि वे पुन: प्रधान मंत्री बनें। परन्तु हम भावना में बहकर चाटुकारिता पसन्द नहीं करते। वैद्य गुरु और मंत्री को अपने रोगी, शिष्य और राजा को स्पष्ट बात कहने में संकोच नहीं करना चाहिये। श्री गांधी को इस समय विंशोत्तरी महादशांतरदशा और गोचर स्थिति शुभ नहीं है। वर्ष ८९-९० में सूर्य-चन्द्रग्रहण उनके जन्म लग्न राशि पर हो रहे हैं। यह शुभ-संकेतकारक नहीं। पार्टी में पद-प्रतिष्ठा के लिये भारी यादवी-संघर्ष होगा। प्रधान मंत्री को शारीरिक मानसिक शांति पूर्णरूपेण नहीं मिल पायेगी। कदाचित् अथक भागदौड़ जोड़-तोड़ करके पुन: प्रधान मंत्री पद प्राप्त हो भी गया तो वे आगामी पांच वर्ष पूर्ण नहीं कर पायेंगे। भावी चुनाव में विश्वस्त समझे जाने वाले व्यक्ति

धोखा देंगे। पार्टी के बड़े-बड़े दिग्गज धराशायी होंगे। अतः हम तो कहेंगे कि चुनाव से कुछ दिन पूर्व प्रधान मंत्री पद त्याग कर निष्पक्ष चुनाव करायें। इससे श्री गांधी की महानता प्रकट होगी। विपक्ष के जननायक श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह को भी हम यही परामर्श देंगे कि वे या तो चुनाव में खड़े न हों और यदि खड़े हों तो जीतने पर प्रधान मंत्री पद ग्रहण न करने की घोषणा कर दें तो अपना तथा राष्ट्र का अधिक हित करेंगे। यद्यपि हम जानते हैं कि प्रधान मंत्री और श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह हमारा यह परामर्श मानेंगे नहीं, तथापि एक हितैषी दैवज्ञ के नाते यह कटु सत्य लिख दिया है।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह की जन्म कुण्डली का सर्वेक्षण करना भी आवश्यक है उनकी जन्मकुण्डली यह है—



नवमेश गुरु लग्न में उच्चराशिस्थ है और लग्नेश चन्द्रमा केन्द्र में 'गजकेशरी' योग बना रहा है यह उनके सदाचारी न्यायप्रिय भूपवन्द्य राजपुरुष बनाता है—"भाग्येशो मूर्तिवर्ती सुरपति गुरुणालोकितो भूपवन्द्यः ॥ गत १७ दिसम्बर ८७ से धनु का शनि श्री वी. पी. सिंह जन्मराशि से तीसरा और लग्न से छठा योगकारक बन गया। इस कालावधि में इनकी लोकप्रियता वृद्धिंगत हुई है। २० मार्च १९९० से आने वाले मकर के शनि और ९० के अन्त में आने वाले कर्क के गुरु में श्री राजा विश्वनाथ प्रताप सिंह की लोकप्रियता परमोत्कर्ष पर होगी। इनकी केवल जन्मकुण्डली हीं हमें प्राप्त हुई है। जन्म का प्रामाणिक समय और जन्मस्थान प्राप्त न होने से हम अधिक विस्तार में नहीं जा सके, फिर भी लग्न में उच्चस्थ गुरु और लग्नेश चन्द्मा शुक्लपक्ष का केन्द्रास्थ होने से हम दृढ़ता से कह सकते हैं कि इनका मन निर्मल है, इन्हें प्रधान मंत्री पद का लोभ विचलित नहीं करेगा। सच्चे राष्ट्रभक्त को तो भारत माता के श्रीचरणों में अपना सर्वस्व समर्पण करने भी हिचक नहीं होती; उच्च पदासीन राजनेताओं की छवि बिगाड़ने में उनके स्वार्थी तथाकथित मित्र एवं पारिवारिक जन कारण बने हैं। पंजाब के भू. पू. मुख्यमंत्री स्व. स. प्रतापसिंह कैरों की बदनामी के कारण उनके पुत्र थे, ऐसे अनेक उदाहरण हमारे सामने हैं। वर्तमान प्रधान मंत्री और मुख्यमंत्रियों के परिसर में ऐसे भ्रष्ट चाटुकार मित्र मधुमक्खियों की भांति चिपक रहे हैं। उनसे सतर्क निर्पेक्ष रहने में राष्ट्र का हित है।

वायु परीक्षा

यहां वर्षा दुर्भिक्ष सुभिक्ष उत्पातादि का विचार ग्रहयोगानुसार लिखा गया है। आषाढ़ी पूर्णिमा की वायुपरीक्षा और अन्य दिव्य अन्तरिक्ष-लक्षण जहां शुभ शकुन का संकेत देंगे, वहां अवर्षण उत्पात दुर्भिक्ष न होकर सामयिक सुवृष्टि एवं सुभिक्ष होगा। जहां आषाढ़ी पूर्णिमा को सूर्यास्त समय दक्षिण-पश्चिम या नैऋत्य कोण की वायु चलेगी वहां दुर्भिक्ष उत्पात रोगभय अधिक होंगे। विद्वान दैवज्ञों का वर्षभर के गर्भ-लक्षण शकुन विचार नोट करने चाहिये। वर्षभर के न कर सकें तो कम से कम इस वर्ष आषाढ़ी पूर्णिमा (१८ जुलाई मंगलवार) को सायंकाल ७-१० से ७-२५ तक खुले स्थान में जाकर ध्वजा पूजन पूर्वक विधिवत् वायु-परीक्षा करके अपने राष्ट्र के शुभाशुभ फल का निर्णय करें।

वाणिज्य व्यवसाय

इस वर्ष वाणिज्य व्यवसाय का अधिपति बुध धनेश पंचमेश होकर नीच राशि और शनि के नवांश में अस्त क्षीण चन्द्र और लग्नेश षष्ठेश के साथ है। वर्ष के सम्राट् और प्रधान मंत्री गुरु का लग्न में शत्रुराशिस्थ एवं मंगल के नवांश में नीचांशस्थ मंगल के साथ बैठना विश्व के वाणिज्य व्यवसाय के लिए अनुकूल नहीं है। भारत में आर्थिक संकट और विदेशी ऋण बहुत बढ़ेगा। प्राकृतिक प्रकोप पीड़ित प्रदेशों की सहायतार्थ केन्द्रीय राज्यकोष में भारी कमी आयेगी। पञ्चवर्षीय योजनाएँ अर्थाभाव के कारण पूर्ण नहीं हो पायेंगी। शेयर बाजार संकटग्रस्त होगा। तिलहन के लिये वर्ष उत्साहवर्धक नहीं है। सटोरियों को ... [illegible]

जमाखोरी एवं भ्रष्टाचार में संलग्न होने के कारण दण्डित होंगे। मंगल के कारण इस वर्ष सैनिक व्यय बहुत बढ़ेगा। कुछ अप्रत्यक्ष कर बढ़ेंगे। वर्ष में राजा मंत्री की स्थिति के कारण वर्षारम्भ के प्रथम चरण में ३० जून तक अन्नादि खाद्य-पदार्थ (गेहूं, चना, चावल गुड़, शक्कर तैलादि) में कुछ मन्दी आकर मिथुन में गुरु १ जुलाई से सभी वस्तुओं में तेजी प्रारम्भ होगी। यहां से गुरु पर शनि की दृष्टि भी है, यह दुर्भिक्ष और राजतन्त्र में विग्रहकारक माना गया है। यथा—

मिथुने च गुरुर्याति तत्राब्दे दारुणं भयम्। नृपाणां विग्रहस्तत्र स्वल्पं तोयं भविष्यति॥

इस वर्ष लकड़ी की बनी वस्तुएँ सागवान, देवदारु, शीशम का बना सामान (फर्नीचर) बहुत मंहगा होगा। पू. षा. के शनि का फल यह है—

यदा मार्तण्डतनयः पूर्वाषाढे ऽपि जायते। लोकानां चैव सर्वेषांकाष्ठे लाभश्चतुर्गुणाः॥

लोह धातु और सौंदर्य प्रसाधन विलास सामग्री तथा मादक द्रव्य मदिरा, अफीम, चरस गांजा आदि के भाव भी बढ़ेंगे। गुरु मंगल शनि की स्थिति के कारण इस वर्ष समुद्रतल एवं भू-गर्भ से तेल, गैस, कोयला तथा अन्य कुछ बहुमूल्य खनिज पदार्थों के स्रोत उपलब्ध होंगे। वैज्ञानिक अनुसंधान एवं शस्त्रास्त्र निर्माण में भारत पर्याप्त प्रगति करेगा। आर्थिक साम्प्रदायिक राजनैतिक संघर्ष उग्र होंगे। व्यापारी वर्ग राजकीय भ्रष्टाचार से दुःखी होकर कहीं-कहीं हड़तालादि आंदोलन पर उतारू होंगे। कुछ स्थानों में अराजकता का वातावरण बनेगा। वर्ष का राजा और मन्त्री गुरु होने से धर्म अध्यात्म और प्राचीन संस्कृति की ओर जनता का रुझान होने लगेगा। शनि ह. ने. गु. वे. के योग प्रतियोग में व्यापार जगत में तहलका मचेगा। खाद्यान रस पदार्थ एवं सोना-चांदी जवाहरात में अकस्मात् अकल्पित उतार-चढ़ाव आने से जिन व्यापारियों की जन्मकुण्डली में उक्त ग्रह योगकारक बलवान होंगे वे मालामाल हो जावेंगे और जिनकी कुण्डली में निर्बल होंगे वे कंगाल हो जावेंगे। अतः अपनी दशांतरदशा एवं गोचरस्थिति का विचार कर या करवाकर बड़े व्यापार में हाथ डालें। सभी वस्तुओं की तेजी मन्दी की स्थिति का पूर्ण विवरण इस पञ्चांग के अन्त में अनुभवी विद्वानों की व्यापारिक लेखों में विस्तार से दिया गया है वहां देखें।

प्रान्तीय राज्यसंघ

इस पञ्चांग में प्रतिवर्ष ग्रह-गणना के आधार पर केन्द्र एवं प्रांतों का संक्षिप्त भविष्य विवेचन यथामति विगत ४५ वर्षों से मैं करता आ रहा हूं। अब यहां इस नये वर्ष संवत् २०४६ वि. के जगल्लग्न वर्षलग्न कुण्डली और केन्द्र एवं प्रान्तों की ग्रहस्थिति कूर्मचक्र विचारादि से संक्षेप में भारत के प्रमुख प्रान्तों का भविष्य विवेचन किया जाता है। प्रान्त एवं नगरों की प्रभावराशियों पर प्रामाणिक निर्णय अभी तक सर्वसम्मत नहीं हो पाया कोई भारत की मकर राशि मानते हैं तो कुछ विद्वान् कन्या राशि मानते हैं, यही स्थिति प्रान्तों की भी है। यद्यपि अब राजतन्त्र तो है नहीं, प्रजातन्त्र में हर पांचवें वर्ष में मन्त्रिमण्डल एवं प्रधान शासक बदलते रहते हैं—उनकी प्रामाणिक जन्मकुण्डलियां उपलब्ध न होने से केवल नाम-राशि एवं सत्तारूढ़ लग्न से यथामति विचार लिखा जाता है, जिसके लिए यह नहीं कहा जा सकता है यह विचार शत-प्रतिशत् सही ही उतरेगा। तथापि गोचर स्थिति से मध्यमानेन जो प्रान्तों का भविष्य लिखा जाता है वह ७५ प्रतिशत सही बैठता है ऐसा पञ्चांग पाठकों का मत है।

काश्मीर—भू-स्वर्ग काश्मीर की प्रभाव राशि तुला मानी जाती है। आज से २४ वर्ष पूर्व सं. २०२२ वि. के 'श्री विश्वविजय पञ्चांग' में मैंने लिखा था— "काश्मीर का प्रश्न उस समय तक समाप्त नहीं होगा जब तक पाकिस्तान बना रहेगा।" विगत वर्षों में लिखी गई इस पञ्चांग की काश्मीर संबंधी भविष्यवाणियां सत्यसिद्ध हो चुकी हैं। अब इस नये वर्ष सं. २०४६ वि. में धनु राशि के शनि ह. ने. काश्मीर के लिए कठिन कसौटी के हैं। वर्तमान मुख्यमंत्री की राशि पर स्थिति यह त्रिकुटी फारुख अब्दुल्ला को चैन से नहीं बैठने देगी। काश्मीर में कांग्रेस का वर्चस्व नगण्य सा रहेगा। वर्ष के प्रथम और अन्तिम चरण में और २५ अक्टूबर से २० जनवरी ९० तक काश्मीर में राजनैतिक साम्प्रदायिक संघर्ष और प्रकृति-प्रकोप से भारी हानि होगी। मन्त्रिमण्डल बदलेगा।

पाकिस्तान से अवैध घसपैठ अधिक होगी। भारत के विरुद्ध साम्प्रदायिक विष-वमन होगा। रोमांचक राजनैतिक

पारिवारिक संकट का सामना करना पड़ेगा। यान-दुर्घटना तथा स्वास्थ्य में कुछ गड़बड़ संभव है, परन्तु गुरु

संकटग्रस्त होगा। तिलहन के लिये वर्ष उत्साहवर्धक नहीं है। ...

पाकिस्तान से अवैध घुसपैठ अधिक होगी। भारत के विरुद्ध साम्प्रदायिक विष-वमन होगा। रोमांचक राजनैतिक साम्प्रदायिक हत्या होगी। २५ अप्रैल से ११ सितम्बर तक शनि के वक्रत्व काल में ह. ने. भी वक्री है। १५ जुलाई से १० सितम्बर तक सिंह राशि के मंगल में संघट्ट चक्र में शनि मंगल का सू. के. ह. ने. के वेध से विश्व की अन्ताराष्ट्रीय स्थिति के साथ काश्मीर की स्थिति भी बिगड़ेगी। जम्मू-काश्मीर में बड़ी यान दुर्घटना और भूकम्प या हिमपात से भी हानि होगी। उच्चाधिकारी को स्वास्थ्य सुरक्षा की ओर से सतर्क रहना चाहिये। पारिवारिक आघात संभव है।आन्तरिक कलह से पाकिस्तान काश्मीर में गुप्तचर भेजकर अल्पसंख्यकों में आतंक उत्पन्न करके भारत के सामने विषम समस्या उत्पन्न करेगा। जम्मू में भी उक्त अवधि और वर्ष के अन्तिम चरण में साम्प्रदायिक तनाव से अशान्ति फैलेगी।

पंजाब, हरियाणा,हिमाचल

विभाजन से पूर्व उक्त तीनों प्रान्त पाक सहित बृहत्तर पंजाब कहा जाता था। इस पञ्चांग में इन तीनों प्रान्तों जो भविष्य विवेचन किया जाता रहा उसकी सत्यता से पाठक परिचित है। विगत ८ वर्षों से मैं इस पञ्चांग में– "भारत रक्तरंजित क्रान्ति की ओर अग्रसर होने की सूचना देता आ रहा हूं"–देखें वि. सं. २०३८ से आज तक के पुराने पञ्चांग। गत वर्ष सं. २०४५ के पञ्चांग में पृष्ठ ३० पर जो पंक्तियां लिखी वे सत्य-सिद्ध हो रही हैं। ३ वर्ष पूर्व 'ज्योतिष्मती' और इस पञ्चांग में स्पष्ट लिखा था– **"पंजाब में हिन्दुओं की हत्या और पलायन रोकने का एकमात्र मार्ग यह है कि उग्रवादियों के गढ़ पंजाब के सीमावर्ती ४ जिलों में प्रधान मन्त्री को दृढ़ता के साथ तत्काल सेना भेज देनी चाहिये, इसमें जितना बिलम्ब करेंगे उतनी हिन्दुओं के जन-धन की क्षति अधिक होगी। इस पर कोई ध्यान नहीं दिया गया इस का परिणाम यह हुआ कि गत दो वर्षों से हिन्दुओं के साथ निरपराध सिक्ख भी मारे जाने लगे। नित्य भयंकर रक्त-पात हो रहा है। यदि प्रधान मन्त्री ऋतुम्भरा प्रज्ञा से काम लेते तो पंजाब को यह दुर्दिन न देखने पड़ते। प्रधान मन्त्री को पड़ोसी देश श्रीलंका की तो चिन्ता है, जहां तमिल आतंकवादियों से सिंहलियों की जान माल की रक्षा के लिये तुरन्त भारतीय सेना के असंख्य जवान श्रीलंका भेज दिये। परन्तु पंजाब की धरती नित्य रक्तरंजित होती जा रही है। इसकी उन्हें चिन्ता नहीं। यदि अब भी प्रधान मन्त्री तुष्टिकरण की ढुलमुल नीति अपनाते रहे तो पंजाब के साथ भारी अन्याय होगा।"**

वर्षारम्भ से ११ सितम्बर ८९ तक शनि हर्षल के वक्रत्वकाल में विशेषकर कर्क सिंह के मंगल में ६ जून से आगे पंजाब में आतंकवाद और प्रकृति-प्रकोप से बहुत हानि होगी। कोई ख्याति प्राप्त नेता दुर्घटनाग्रस्त होगा। शासनतन्त्र में परिवर्तन संभव है कुछ अप्रत्याशित रोमांचक घटनायें घटेंगी। सेना को कठोर पग उठाने के लिये बाध्य होना पड़ेगा। विदेश में बैठे कुछ खालिस्तान समर्थक धनमदान्ध स्वार्थी तत्व शान्ति प्रयत्न में बाधक बनेंगे। सन् ९० के अन्त में कर्क राशि में गुरु के प्रवेश करने पर पंजाब समस्या का कुछ समाधान होना संभव है। परन्तु १० वर्ष पहले जैसी शान्ति सौहार्द संभव नहीं। आतंकवाद के कारण बड़े नगरों में उद्योग धन्धे पनप नहीं पायेंगे। राजनैतिक और धार्मिक नेताओं में वैमनस्य बढ़ेगा। २४ जुलाई से शान्ति सौहार्द का वातावरण दिखाई देने लगेगा। परन्तु यह अस्थायी होगा।

हरियाणा—गत वर्ष संवत् २०४५ वि. के वि. दि. पञ्चांग में इस प्रदेश का भविष्य विवेचन हमने पृष्ठ ३० पर यों लिखा था– "मन्त्रिमण्डल सफलतापूर्वक अपना कार्यकाल पूर्ण करेगा। मुख्यमंत्री चौधरी श्री देवीलाल की लोकप्रियता बढ़ेगी।" आजतक वह यथार्थ घटित होता जा रहा है। अब इस वर्ष नये सं. २०४६ वि. में भी यह प्रान्त कृषि-उत्पादन, पशुपालन एवं विज्ञान व शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति करेगा। मुख्यमंत्री की प्रतिष्ठा वृद्धिगत होगी। शनि मंगल के वक्रत्व काल में हरियाणा में आतंकवाद तथा प्रकृति-प्रकोप से हानि होगी। कांग्रेस पार्टी हरियाणा सरकार को गिराने का जी तोड़ प्रयत्न करेगी, पर उसमें सफलता नहीं मिलेगी। वर्ष के मध्य कन्या तुला के मंगल में मुख्यमंत्री श्री चौधरी देवीलाल को राजनैतिक आर्थिक, सामाजिक विषम समस्या या

तक काश्मीर में राजनैतिक साम्प्रदायिक संघर्ष और प्रकृति-प्रकोप से भारी हानि होगी। मन्त्रिमण्डल बदलेगा।

पारिवारिक संकट का सामना करना पड़ेगा। यान-दुर्घटना तथा स्वास्थ्य में कुछ गड़बड़ संभव है, परन्तु गुरु बलवान् होने के कारण इन सभी सामयिक परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करेंगे। दो बुद्धिजीवी ख्यातिप्राप्त नेता दुर्घटनाग्रस्त होंगे।

हिमाचल प्रदेश—देवतात्मा हिमाचल प्रदेश में इस वर्ष भी अन्य प्रदेशों की अपेक्षा राजनैतिक सामाजिक व्यावसायिक स्थिति उत्तम रहेगी। गत वर्ष के पञ्चांग में लिखा था कि– "···· मन्त्रिमण्डल गिराने का प्रयत्न होगा, परन्तु मुख्यमंत्री ऋतम्भरा प्रज्ञा से संकट पार कर जावेंगे। वृषभ के गुरु में मुख्य मंत्री का वर्चस्व बढ़ेगा। प्रकृति-प्रकोप एवं यान-दुर्घटना से हानि अधिक होगी।" तदनुसार वर्तमान वर्ष में अब तक इस प्रदेश में जो हआ और जो हो रहा है वह पाठकों के सामने है। अब इस नये वर्ष का प्रथम और अन्तिम चरण (अप्रैल से जून और जनवरी से मार्च ९० तक का समय) विशेष समस्याग्रस्त रहेगा। इस वर्ष हिमाचल अग्निकाण्ड, भू-कम्प, हिमपात, भू-स्खलनादि प्रकृति-प्रकोप और यान-दुर्घटना से पीड़ित रहेगा। विपक्ष प्रबल होगा, वर्तमान मन्त्रिमण्डल बदलेगा। वन-संरक्षण, विद्युतीकरण, कृषि एवं लघु उद्योग और शिक्षा व विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति होगी। दो ख्याति-प्राप्त महापुरुष दुर्घटनाग्रस्त होंगे।

राजस्थान— वर्तमान वर्ष सं. २०४५ वि. के पञ्चांग में पृष्ठ ३०-३१ पर जो दिग्दर्शन कराया वह घटित हो रहा है। वहां स्पष्ट लिखा है कि– ···१७ दिसम्बर ८७ से ३ फरवरी ८८ तक मीन राशि में गुरुचण्डाल योग बन रहा है, अतः इस कालावधि में राजस्थान कें कोई अकल्पित राजनैतिक या प्राकृतिक घटना घट जावे तो आश्चर्य नहीं ···वर्षभर राजनैतिक गतिरोध अन्तर्द्वन्द चलता रहेगा। मुख्यमंत्री पद सुरक्षित नहीं है।" तदनुसार धनु राशि में शनि के आते ही अकस्मात् जोशी मन्त्रिमण्डल भंग हुआ। नये माथुर मन्त्रिमण्डल में भी पार्टी का अन्तर्द्वन्द समाप्त नहीं हुआ, अपितु बढ़ा ही है और अब वर्तमान वर्ष सं. २०४५ वि. की समाप्ति के साथ ही माथुर मन्त्रिमण्डल भी समाप्त हो जावे तो आश्चर्य नहीं। अन्तर्द्वन्द भ्रष्टाचार पक्षपात एवं पदलोलुपता से कांग्रेस 'इ' की छवि धूमिल होगी। विपक्ष प्रबल होगा। असंतुष्ट कांग्रेसी केन्द्र का सिरदर्द बनेंगे। शिक्षा क्षेत्र एवं श्रमजीवी वर्ग में असंतोष बढ़ेगा। कर्क के गुरु से पहले राजस्थान में राजनैतिक स्थायित्व संभव नहीं। इस वर्ष का प्रथम और अन्तिम-चरण मुख्यमंत्री की अग्नि-परीक्षा का है। पश्चिमोत्तरीय राजस्थान प्रकृति-प्रकोप एवं विदेशी आततायियों की अवांछनीय गतिविधि से पीड़ित होगा। दो विख्यात नेता दुर्घटनाग्रस्त होंगे।

उत्तर प्रदेश— गत वर्ष के पञ्चांग में पृष्ठ ३१ पर स्पष्ट लिखा था– "··· अब धनु राशि में शनि के वक्रत्व काल में ११ अप्रैल से (२० अगस्त ८८) श्री वीरबहादुर की बहादुरी उत्तर प्रदेश से समाप्त होना संभव है।" तदनुसार इसी कालावधि में श्री वीर बहादुर को मुख्यमंत्री पद छोड़ना पड़ा। अब सं. २०४६ वि. में पुनः उन्हें पद परिवर्तन करना पड़ेगा। नये वर्ष २०४६ वि. में उत्तर प्रदेश की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, साम्प्रदायिक एवं श्रमजीवी छात्र वर्ग, कृषक वर्ग की समस्या उग्र बनती जायेगी। प्रदेश में यत्र तत्र सर्वत्र विशेषकर पूर्वोत्तरीय भाग में प्रकृति-प्रकोप, जल-विद्युत संकट, यान-दुर्घटना, बाढ़, भूकम्प, चक्रवात, तूफान, चोरी, लूटमार, हत्याकाण्ड, हड़ताल, बन्द, घेराव आदि से जन जीवन त्रस्त होगा। राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद समस्या कट्टरपन्थी अनार्य सम्प्रदाय के अड़ियल रूख से सुलझ नहीं पायेगा। एक बार यह सारे भारत में तहलका मचाकर कर्क राशि के गुरु में समाधान निकल पायेगा। न्याय व्यवस्था की स्थिति गंभीर होगी। कांग्रेस में फूट बढ़ेगी। विपक्ष प्रबल होगा। मुरादाबाद, लखनऊ, अलीगढ़, इलाहाबाद, कानपुर आदि बड़े नगरों में श. मं. ह. ने. के वक्रत्वकाल में साम्प्रदायिक उत्पात, प्रकृति-प्रकोप, अग्निकाण्ड, यान-दुर्घटना एवं अराजकता से अशान्ति फैलेगी।

मध्यप्रदेश— गत वर्ष के पञ्चांग में पृष्ठ ३१ पर इस प्रदेश के लिये स्पष्ट लिखा था— "...यह नया वर्ष सं. २०४५ वि. भी प्रदेश की राजनैतिक स्थिति के लिए सन्तोषप्रद नहीं है। ३ फरवरी से १९ जून ८८ के मध्य कभी भी वर्तमान मुख्यमंत्री की प्रदेश से छुट्टी हो सकती है। नया मन्त्रिमण्डल भी समस्याग्रस्त अन्तर्द्वन्द स्थिति में पद-प्रतिष्ठा बचाने की उधेड़बुन में प्रदेश का अधिक हित नहीं कर पायेगा। अन्त तक अपना कार्यकाल पूर्ण करना संभव नहीं।" तदनुसार गत वर्ष उक्त कालावधि में तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री मोतीलाल बोरा की प्रदेश से छुट्टी कर दी गयी और श्री अर्जुन सिंह को नया मुख्यमंत्री बनाया गया, परन्तु वे भी नहीं टिक पाये। साल के अन्दर पुनः श्री बोरा को मुख्यमंत्री पद पर बिठाया। परन्तु अब नये वर्ष सं. २०४६ में पुनः मुख्यमंत्री पद बदलेगा। कांग्रेस पार्टी में विघटन होगा, विपक्ष बलवान् बनेगा। यह प्रदेश वृषभ राशि के प्रभाव क्षेत्र में है। सं. २०४६ के अन्त २० मार्च १९९० तक शनि अष्टम् रहेगा। तब तक प्रदेश में राजनैतिक समस्या का स्थायी समाधान सम्भव नहीं। प्रकृति-प्रकोप और साम्प्रदायिक असन्तोष से भी प्रजा-पीड़ित होगी। जनजाति क्षेत्र बस्तर में विशेष हानि होगी।

दिल्ली— भारत की राजधानी दिल्ली भी वृषभ राशि के प्रभाव क्षेत्र में है, गत १७ दिसम्बर ८७ से राजधानी के अष्टम् घर में शनि ने प्रवेश किया है। ढ़ाई वर्ष के लिये ह. ने. का साथ "करेला नीम चढ़ा" की उक्ति चरितार्थ कर रहा है। गत वर्ष के पञ्चांग में पृष्ठ ३१ पर लिखी ये पंक्तियां दृष्टव्य है— "...नया वर्ष २०४५ राजधानी के लिये राजनैतिक दृष्टि से विशेष सुख-शान्ति कारक नहीं है। ...ऋतम्भरा प्रज्ञा के अभाव में अब सभी प्रान्तों और राजधानी में अशान्ति का वातावरण उभर रहा है। कांग्रेस में विघटन प्रारम्भ हो गया है। सत्तारूढ़ दल के लिये यह अग्नि परीक्षा का समय है। इसमें पारस्परिक वैमनस्य विघटन एवं पद-प्रतिष्ठा का लोभ राष्ट्र को रसातल में पहुंचा देगा। अतः स्वार्थ त्याग कर राष्ट्र रक्षार्थ एक होकर ऋतम्भरा प्रज्ञा से विचार करना परमावश्यक है।" इस वर्ष सं. २०४६ वि. आरम्भ होने के एक मास पूर्व मार्च से ६ जून '८९ तक मिथुन के मंगल में केन्द्र और प्रान्तीय मन्त्रिमण्डलों में कुछ अप्रत्याशित उलट-फेर होंगे। मई से अगस्त '८९ के अन्त तक राजधानी दिल्ली में भयंकर गर्मी पड़ेगी। २-३ बड़े अग्निकाण्ड, भयंकर यान-दुर्घटनायें, डकैती, लूटमार, अपहरण और हत्याकाण्ड होंगे जल और बिजली के संकट से भी असन्तोष उभरेगा। राजनैतिक सामाजिक धार्मिक समस्यायें उग्र होंगी। आतंकवाद राजधानी और पड़ोसी प्रान्तों को यत्र तत्र त्रस्त करेगा। दक्षिण-पूर्व के कुछ प्रान्त केन्द्र के लिये सिरदर्द बनेंगे। देश-विदेश के चार महामानवों की आकस्मिक मृत्यु के शोक में राष्ट्रध्वज झुकेगें। कुछ केन्द्रीय उच्चाधिकारियों को पारिवारिक शोक, सहन करना पड़ेगा। केन्द्र और प्रान्तों के कुछ कांग्रेसी उच्चाधिकारियों के पदत्याग, दलबदल व निधन से सत्तारूढ़ दल को आघात लगेगा।

बंगाल, बिहार, असम, उड़ीसा, अरुणाचल, मेघालय— गत वर्ष के पञ्चांग में धनु: राशि के शनि का जो फल पूर्वांचल के इन प्रदेशों के लिये लिखा था, अधिकांश वही सब फल इस नये वर्ष संवत् २०४६ वि. में भी धनु: के शनि के अन्तिम चरण में भी होगा। गत वर्ष के पञ्चांग में पृष्ठ ३२ पर लिखा है— "... बिहार के वर्तमान मुख्य मंत्री श्री दुबे के लिए धनु: का शनि प्रदेश की पद-प्रतिष्ठा के लिये अशोभनीय है। अतः उन्हें वर्षारंभ में ही पदत्याग करना पड़े तो आश्चर्य नहीं। नया मन्त्रिमण्डल भी समस्याग्रस्त रहकर अपनी अवधि पूर्ण नहीं कर पायेगा। प्रदेश राजनैतिक, सामाजिक संकट और प्रकृति-प्रकोप से पीड़ित रहेगा। ... असम, उड़ीसा, मेघालय, मणिपुर, त्रिपुरा में भी मन्त्रिमण्डलीय गतिरोध एवं पृकृति-प्रकोप से प्रगति में बाधा पड़ेगी। अरुणाचल-अक्साई-चिन पर चीन की गृद्धदृष्टि पड़ती रहेगी। ... पूर्वांचल क्षेत्र के आदिवासी, जनजातियों में विधर्मी विदेशी पादरियों की गतिविधियां बढ़ेंगी। समुद्र-तटवर्ती-क्षेत्र और ब्रह्मपुत्र-नद तटवर्ती जनपद बाढ़, तूफान, भू-कम्प से क्षतिग्रस्त होगा"।

तदनुसार उक्त प्रांतो मे अबतक जो कुछ हुआ और हो रहा है वह ...

वि. क अंत तक (२० मार्च ९० तक) शनि धनु, राशि में रहकर वही फल करेगा जो गत वर्ष में किया। नये वर्ष के प्रारंभ शनि के वक्रत्वकाल मे बिहार के मुख्यमंत्री श्री भगवत झा आजाद को पदत्याग करना पड़ेगा। नये मुख्यमंत्री प्रदेश की सुख-समृद्धि में सहायक नहीं हो पायेंगे। दक्षिणी बिहार और पश्चिम बंगाल के आदिवासी जनजाति झारखण्ड पृथक राज्य बनाने का आन्दोलन उग्र होगा। पूर्वांचल की आदिवासी जनजातियों में ईसाई पादरी धर्मान्तरण का चक्र चिन्ता का कारण बनेगा। असम में बोदो जनजातीय समस्या उग्र बनेगी। उड़ीसा, अरूणाचल, त्रिपुरा और बंगाल में मन्त्रिमण्डलीय गतिरोध उत्तरोत्तर उभरेगा, फलतः वर्षांत में कहीं राष्ट्रपति शासन लागू होगा। पूर्वान्चल प्रदेश में इस वर्ष भूकम्प, बाढ, तूफान आदि प्रकृति-प्रकोप से भी बहुत हानि होगी। बंगाल, बिहार में दो बड़ी यान-दुर्घटना और भूकम्प अथवा खान में विस्फोट अग्निकाण्ड से भारी हानि होगी।

गुजरात, महाराष्ट्र, आन्ध्र, तमिलनाडु, केरल कर्नाटक— सन् १९६० से पहले गुजरात महाराष्ट्र का शासनतन्त्र एक ही था, अब भी ग्रहस्थिति का प्रभाव दोनों पर लगभग एक सा पड़ता है। दक्षिण-भारत के यह सभी प्रान्त वृश्चिक धनु: राशि के प्रभाव क्षेत्र में आते है। अभी सं. २०४६ के अन्त तक शनि-धनु राशि में ही रहेगा। अतः जो फल गत वर्ष के पञ्चांग में पृष्ठ ३२ पर लिखा था, लगभग वही इस वर्ष भी होगा। नये वर्ष के प्रारंभ से पूर्व या प्रथम चरण में गुजरात के मुख्यमंत्री श्री अमर सिंह चौधरी को पदत्याग करना पड़े तो आश्चर्य नहीं। भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री चिमन भाई पटेल की मीन राशि से आगामी वर्ष गुरु उच्च राशि में आवेगा और बलवान् शनि ग्यारहवां रहेगा। यह १९९० में उन्हें पुनः उच्चपद पर प्रतिष्ठित कर सकता है। वर्षारंभ में महाराष्ट्र का मन्त्रिमण्डल भी बदलने की संभावना है। गुजरात, महाराष्ट्र कृषि एवं उद्योग क्षेत्र में पर्याप्त प्रगति करेगा, भूगर्भ एवं समुद्र-तल से तेल, गैस एवं मूल्यवान खनिज पदार्थों के नये स्रोत उपलब्ध होंगे। वर्ष में एक फसल अच्छी होगी। गुजरात, महाराष्ट्र, सौराष्ट्र, कच्छ, आन्ध्र, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक में यत्र तत्र राजनैतिक, सामाजिक, साम्प्रदायिक अशान्ति बढ़ेगी। बड़े नगरों में उद्योग-पति, मिल-मालिकों और श्रमिक वर्ग में असंतोष फैलेगा, मंहगाई बेकारी बढ़ने से बुद्धिजीवी छात्रवर्ग का असंतोष बहुत बढ़ने से यत्र-तत्र हड़ताल, बन्द, घेराव, उग्र पदर्शन से जनता में असन्तोष भड़केगा। राजनैतिक, साम्प्रदायिक संघर्ष और प्रकृति-प्रकोप, अग्निकाण्ड, बाढ़, भूकम्प, चक्रवात, समुद्री तूफान, महामारी आदि से भी बहुत हानि होगी। मन्त्रिमण्डलीय गतिरोध बढ़ेगा। सबसे अधिक असंतोष आन्ध्रप्रदेश में दिखाई देगा, मुख्यमंत्री श्री रामाराव के लिये यह वर्ष अग्नि-परीक्षा का है। दक्षिण-भारत में भी उग्रवाद पैर जमाने का प्रयत्न करेगा। भयंकर यान-दुर्घटना और अग्निकाण्ड से भी कहीं अपूर्णीय क्षति होगी। गुजरात, सौराष्ट्र, कच्छ की पश्चिमी सीमा पर पाकिस्तानी लुटेरे जन-धन की हांनि करेंगे। उक्त प्रान्तों के कुछ राजनयिक शनि के वक्रत्वकाल में यान-दुर्घटना या राजनैतिक संकट में फसेंगे। १९९० के बाद कर्क राशि के गुरु में इन प्रान्तों में कुछ सुख-शान्ति का वातावरण बनेगा। अन्य पड़ोसी राज्यों की गतिविधि के संबंध में संक्षेप में पहले 'विश्ववार्ता' में लिखा जा चुका है। यूरोप, रूस, अमेरिका, चीन, जापान के संबंध में इस पञ्चांग के आरम्भ में दिल्ली के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री के. एन. राव और पूना के श्री एस. के. केलकर के लेखों में विशेष विचार किया गया है, वहां देखें।

वर्तमान २०वीं शती का यह अन्तिम चरण ग्रह-गणनानुसार संसार के इतिहास में अभूतपूर्व भयंकर उलट-फेरकारक है। महामाया से प्रार्थना है कि—वे युद्धोन्मादी राष्ट्रनायकों को सदबुद्धि दें और विश्व को विनाश के गर्त में जाने से बचावें। भारत की तपोधन आध्यात्मिक महान् विभूतियां ही विश्व का कल्याण करेंगी।

"स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां न्याय्येन मार्गेणमहीं महीपाः ।
गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं, लोकास्समस्ताः सुखिनो भवन्तु ।।"

श्री दत्तजयन्ती
संवत् २०४५ विक्रमी

मंगलाकांक्षी
हरदेव शर्मा त्रिवेदी

दैनिक स्पष्ट-ग्रह

इस पचांग में यहाँ नीचे सूर्य, चन्द, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र विकला पर्यन्त और शनि, राहु, हर्षल तथा नेपच्यून कला पर्यन्त दिये गये है। ये दैनिक स्पष्ट ग्रह प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ बजकर ३० मिनट के है। इन स्पष्ट ग्रहो के प्रत्येक स्थान के तात्कालिक स्पष्ट ग्रह जानने की विधि यह है कि भारत में कहीं भी किसी दिन स्टैण्डर्ड टाईम दिन के २ बजकर ४५ मिनट पर किसी व्यक्ति का जन्म या प्रश्न है तो प्रातः घटा ५ मिनट ३० से मध्यान्होतर घं १४।४५ तक घं. ९।१५ हुये। यह घण्टात्मक धन चालन हुआ। इस चालन को २॥ से गुणा करने पर २३।७।३० घटी, पल, विपलात्मक चालन बन गया। इस चालन द्वारा दैनिक ग्रह गति को त्रैराशिक या गोमूत्रिका क्रम से गुणा करके कलादि फल को मार्गी ग्रह में जोड़ने से तथा वक्री ग्रह में घटाने से तात्कालिक स्पष्ट ग्रह होगा। राहु स्पष्ट में ६ राशि जोडने पर केतु स्पष्ट हो जाता है। अतएव यहाँ केतु को अलग नहीं लिखा है। इन दैनिक ग्रहों से गति जानने की विधि यह है कि जिस दिन की गति स्पष्ट करनी है, उस दिन के राश्यादि ग्रह अगले दिन के राश्यादि स्पष्ट ग्रह में से घटा दें, जो शेष रहे, वह उस दिन की गति होगी। यह चान्द्र वर्ष ७ अप्रैल १९८९ से प्रारम्भ होकर २६ मार्च १९९० को समाप्त हो रहा है। अतः यहाँ ७ अप्रैल से २६ मार्च ९० तक के दैनिक ग्रह स्पष्ट नीचे दिये जा रहे है।

अप्रैल सन् १९८९ ई० प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम घं० ५ मि० ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशाः २३ ।४२'।३१" मासारंभे वैंकटेश (प्लूटो) ६।२०।५८ वक्री

ता० अप्रैल	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क.	राहु रा. अं. क.	हर्षल रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	ता० अप्रैल
७	११।२३।२६।३८	००।०५।३४।२४	०१।२२।३५।४९	११।२६।०४।४६	१।१०।५२।५९	११।२३।५७।४०	८।२०।०१	१०।०९।००	८।११।३७	८।१८।४०	७
८	११।२४।२५।४०	००।२०।३७।५४	०१।२३।१२।४६	११।२८।०९।४८	१।११।०४।३५	११।२५।१२।०४	८।२०।०२	१०।०८।५६	८।११।३७	८।१८।४०	८
९	११।२५।२४।३८	०१।०५।२१।५६	०१।२३।४९।४३	००।००।१५।०४	१।११।१६।१६	११।२६।२६।२८	८।२०।०३	१०।०८।५३	८।११।३७	८।१८।४०	९
१०	११।२६।२३।३४	०१।१९।४०।०१	०१।२४।२६।४१	००।०२।२०।२१	१।११।२८।०३	११।२७।४०।५१	८।२०।०५	१०।०८।५०	८।११।३७	८।१८।४०	१०
११	११।२७।२२।२८	०२।०३।२९।०७	०१।२५।०३।३९	००।०४।२५।२४	१।११।३९।५५	११।२८।५४।११	८।२०।०६	१०।०८।४७	८।११।३७	८।१८।४१	११
१२	११।२८।२१।२१	०२।१६।४९।१३	०१।२५।४०।३८	००।०६।२९।४५	०१।११।५१।५२	००।००।०९।३१	८।२०।०७	१०।०८।४४	८।११।३७	८।१८।४१	१२
१३	११।२९।२०।११	०२।२९।४२।४६	०१।२६।१७।३७	००।०८।३३।२१	१।१२।०३।५३	००।०१।२३।५०	८।२०।०८	१०।०८।४०	८।११।३७	८।१८।४१	१३
१४	००।००।१८।५८	०३।१२।१३।४६	०१।२६।५४।३७	००।१०।३५।४५	१।१२।१५।५७	००।०२।३८।०८	८।२०।०९	१०।०८।३७	८।११।३७	८।१८।४१	१४
१५	००।०१।१७।४३	०३।२४।२६।५९	०१।२७।३१।३८	००।१२।३६।३३	१।१२।२८।०४	००।०३।५२।२४	८।२०।१०	१०।०८।३४	८।११।३७	८।१८।४१	१५
१६	००।०२।१६।२६	०४।०६।२७।२१	०१।२८।०८।३९	००।१४।३५।३०	१।१२।४०।१४	००।०५।०६।३८	८।२०।११	१०।०८।३१	८।११।३६	८।१८।४१	१६
१७	००।०३।१५।०७	०४।१८।१९।३३	०१।२८।४५।४०	००।१६।३२।११	१।१२।५२।२८	००।०६।२०।५१	८।२०।११	१०।०८।२८	८।११।३६	८।१८।४०	१७
१८	००।०४।१३।४६	०५।००।०७।४८	०१।२९।२२।४२	००।१८।२६।२७	१।१३।०४।४७	००।०७।३५।०३	८।२०।१२	१०।०८।२५	८।११।३६	८।१८।४०	१८
१९	००।०५।१२।२२	०५।११।५५।३६	०१।२९।५९।४४	००।२०।१७।४५	१।१३।१७।११	००।०८।४९।१५	८।२०।१२	१०।०८।२१	८।११।३५	८।१८।४०	१९
२०	००।०६।१०।५६	०५।२३।४५।४७	०२।००।३६।४६	००।२२।०५।५६	१।१३।२९।३९	०।१०।०३।२६	८।२०।१३	१०।०८।१८	८।११।३५	८।१८।४०	२०
२१	००।०७।०९।२९	०६।०५।४०।३२	०२।०१।१३।४८	००।२३।५०।३८	१।१३।४२।११	००।११।१७।३६	८।२०।१३	१०।०८।१५	८।११।३४	८।१८।४०	२१
२२	००।०८।०७।५९	०६।१७।४१।३०	०२।०१।५०।५०	००।२५।३१।४४	१।१३।५४।४७	००।१२।३१।४४	८।२०।१३	१०।०८।१२	८।११।३३	८।१८।४०	२२
२३	००।०९।०६।२८	०६।२९।४९।५८	०२।०२।२७।५३	००।२७।०८।५६	१।१४।०७।२७	००।१३।४५।५०	८।२०।१३	१०।०८।०९	८।११।३३	८।१८।३९	२३
२४	००।१०।०४।५५	०७।१२।०७।०५	०२।०३।०४।५६	००।२८।४२।०८	१।१४।२०।१०	००।१४।५९।५५	८।२०।१३	१०।०८।०५	८।११।३२	८।१८।३९	२४
२५	००।११।०३।२१	०७।२४।३४।०७	०२।०३।४१।५९	०१।००।११।०८	१।१४।३२।५४	००।१६।१४।०२	८।२०।१३	१०।०८।०२	८।११।३१	८।१८।३९	२५
२६	००।१२।०१।४४	०८।०७।१२।३८	०२।०४।१९।०२	०१।०१।३५।४४	१।१४।४५।३९	००।१७।२८।०७	८।२०।१३	१०।०७।५९	८।११।३०	८।१८।३८	२६
२७	००।१३।००।०६	०८।२०।०४।३५	०२।०४।५६।०५	०१।०२।५५।५०	१।१४।५८।२९	००।१८।४२।१२	८।२०।१२	१०।०७।५६	८।११।३०	८।१८।३८	२७
२८	००।१३।५८।२६	०९।०३।१२।१६	०२।०५।३३।०९	०१।०४।११।२५	१।१५।११।२१	००।१९।५६।१६	८।२०।१२	१०।०७।५३	८।११।२९	८।१८।३७	२८
२९	००।१४।५६।४५	०९।१६।३८।०८	०२।०६।१०।१३	०१।०५।२२।१३	१।१५।२४।१६	००।२१।१०।१९	८।२०।११	१०।०७।५०	८।११।२८	८।१८।३७	२९
३०	००।१५।५५।०३	१०।००।२४।२२	०२।०६।४७।१७	०१।०६।२८।२५	१।१५।३७।१६	००।२२।२४।२०	८।२०।११	१०।०७।४६	८।११।२७	८।१८।३६	३०

मई सन् १९८९ ई प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम घं० ५ मि० ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशाः २३ ।४२'।३५" मासारंभे वैंकटेश (प्लूटो) ६।२०।१२ वक्री

ता० मई	सूर्य रा अ क वि	चन्द्र रा अं क वि	मंगल रा अ क वि	बुध रा अ क वि	गुरु रा अ क वि	शुक्र रा अ क वि	शनि (वक्री) रा अं क	राहु रा अ क.	हर्षल (वक्री) रा. अ. क.	नेपच्यून (वक्री) रा अ क	ता० मई
१	०।१६।५३।१९	१०।१४।३२।१०	२।०७।२४।२२	१।०७।२९।३७	१।१५।५०।२१	०।२३।३८।१९	८।२०।१०	१०।०७।४३	८।११।२६	८।१८।३६	१
२	०।१७।५१।३३	१०।२९।०९।०६	२।०८।०१।२८	१।०८।२५।५५	१।१६।०३।३०	०।२४।५२।१७	८।२०।०९	१०।०७।४०	८।११।२५	८।१८।३५	२
३	०।१८।४९।४६	११।२३।४८।१५	२।०८।३८।३४	१।०९।१७।१९	१।१६।१६।४१	०।२६।०६।१५	८।२०।०८	१०।०७।३७	८।११।२३	८।१८।३५	३
४	०।१९।४७।५८	११।२८।४७।५८	२।०९।१५।४०	१।१०।०३।३७	१।१६।२९।५४	०।२७।२०।१३	८।२०।०७	१०।०७।३४	८।११।२२	८।१८।३४	४
५	०।२०।४६।०७	००।१३।५१।५८	२।०९।५२।४७	१।१०।४४।४८	१।१६।४३।०८	०।२८।३४।१०	८।२०।०६	१०।०७।३१	८।११।२१	८।१८।३४	५
६	०।२१।४४।१५	००।२८।५०।३९	२।१०।२९।५४	१।११।२०।५४	१।१६।५६।२४	०।२९।४८।०६	८।२०।०५	१०।०७।२७	८।११।२०	८।१८।३३	६
७	०।२२।४२।२२	०१।१३।३४।२८	२।११।०७।०१	१।११।५१।४८	१।१७।०९।४३	१।०१।०२।००	८।२०।०३	१०।०७।२४	८।११।१८	८।१८।३२	७
८	०।२३।४०।२७	०१।२७।५५।४४	२।११।४४।०९	१।१२।१७।२४	१।१७।२३।०४	१।०२।१५।५४	८।२०।०२	१०।०७।२१	८।११।१७	८।१८।३१	८
९	०।२४।३८।३०	०२।११।४९।४३	२।१२।२१।१७	१।१२।३७।५४	१।१७।३६।२७	१।०३।२९।४६	८।२०।०१	१०।०७।१८	८।११।१६	८।१८।३१	९
१०	०।२५।३६।३०	०२।२५।१४।५४	२।१२।५८।२५	२।१२।५३।०६	१।१७।४९।५२	१।०४।४३।३६	८।१९।५९	१०।०७।१५	८।११।१४	८।१८।३०	१०
११	०।२६।३४।३०	०३।०८।१२।३७	२।१३।३५।३३	१।१३।०३।१२	१।१८।०३।१९	१।०५।५७।२५	८।१९।५७	१०।०७।११	८।११।१३	८।१८।२९	११
१२	०।२७।३२।२७	०३।२०।४६।१७	२।१४।१२।४२	१।१३।०८।०५	१।१८।१६।४८	१।०७।११।१४	८।१९।५५	१०।०७।०८	८।११।११	८।१८।२८	१२
१३	०।२८।३०।२३	०४।०३।००।३८	२।१४।४९।५१	१।१३।०८।०४	१।१८।३०।१९	१।०८।२५।०२	८।१९।५४	१०।०७।०५	८।११।१०	८।१८।२७	१३
१४	०।२९।२८।१७	०४।१५।००।५९	२।१५।२७।००	१।१३।०३।१७	१।१८।४३।५१	१।०९।३८।४९	८।१९।५२	१०।०७।०२	८।११।०८	८।१८।२६	१४
१५	१।००।२६।०९	०४।२६।५२।४३	२।१६।०४।१०	१।१२।५३।४७	१।१८।५७।२५	१।१०।५२।३५	८।१९।५०	१०।०६।५९	८।११।०७	८।१८।२५	१५
१६	१।०१।२३।५९	०५।०८।४०।५४	२।१६।४१।२०	१।१२।३९।५३	१।१९।११।०१	१।१२।०६।१९	८।१९।४८	१०।०६।५६	८।११।०५	८।१८।२५	१६
१७	१।०२।२१।४८	०५।२०।२९।५९	२।१७।१८।३०	१।१२।२१।४७	१।१९।२४।३९	१।१३।२०।०३	८।१९।४५	१०।०६।५२	८।११।०३	८।१८।२४	१७
१८	१।०३।१९।३४	०६।०२।२३।४०	२।१७।५५।४०	१।१२।००।०४	१।१९।३८।१९	१।१४।३३।४६	८।१९।४३	१०।०६।४९	८।११।०१	८।१८।२३	१८
१९	१।०४।१७।२०	०६।१४।२४।५०	२।१८।३२।५१	१।११।३४।५८	१।१९।५२।००	१।१५।४७।२८	८।१९।४१	१०।०६।४६	८।११।००	८।१८।२२	१९
२०	१।०५।१५।०४	०६।२६।३५।२३	२।१९।१०।०२	१।११।०६।५५	१।२०।०५।४२	१।१७।०१।०८	८।१९।३८	१०।०६।४३	८।१०।५८	८।१८।२०	२०
२१	१।०६।१२।४७	०७।०८।५६।२८	२।१९।४७।१३	१।१०।३६।३४	१।२०।१९।२५	१।१८।१४।४६	८।१९।३६	१०।०६।४०	८।१०।५६	८।१८।१९	२१
२२	१।०७।१०।२८	०७।२१।२८।३४	२।२०।२४।२४	१।१०।०४।२२	१।२०।३३।०९	१।१९।२८।२२	८।१९।३३	१०।०६।३६	८।१०।५४	८।१८।१८	२२
२३	१।०८।०८।०८	०८।०४।११।४८	२।२१।०१।३५	१।०९।३०।५१	१।२०।४६।५४	१।२०।४१।५७	८।१९।३०	१०।०६।३३	८।१०।५२	८।१८।१७	२३
२४	१।०९।०५।४७	०८।१७।०६।१४	२।२१।३८।४६	१।०८।५६।३९	१।२१।००।४०	१।२१।५५।३२	८।१९।२८	१०।०६।३०	८।१०।५०	८।१८।१६	२४
२५	१।१०।०३।२५	०९।००।१२।०६	२।२२।१५।५७	१।०८।२२।२१	१।२१।१४।२७	१।२३।०९।०६	८।१९।२५	१०।०६।२७	८।१०।४८	८।१८।१५	२५
२६	१।११।०१।०२	०९।१३।३०।००	२।२२।५३।०९	१।०७।४८।३९	१।२१।२८।१५	१।२४।२२।४०	८।१९।२२	१०।०६।२४	८।१०।४६	८।१८।१४	२६
२७	१।११।५८।३८	०९।२७।००।५४	२।२३।३०।२१	१।०७।१५।५७	१।२१।४२।१३	१।२५।३६।१४	८।१९।१९	१०।०६।२१	८।१०।४४	८।१८।१३	२७
२८	१।१२।५६।१३	१०।१०।४५।५८	२।२४।०७।३२	१।०६।४४।५५	१।२१।५६।०२	१।२६।४९।४७	८।१९।१६	१०।०६।१७	८।१०।४२	८।१८।११	२८
२९	१।१३।५३।४७	१०।२४।४६।००	२।२४।४४।४५	१।०६।१६।०९	१।२२।०९।५२	१।२८।०३।२०	८।१९।१३	१०।०६।१४	८।१०।४०	८।१८।१०	२९
३०	१।१४।५१।२१	११।०९।००।५८	२।२५।२१।५७	१।०५।४९।५१	१।२२।२३।४३	१।२९।१६।५२	८।१९।१०	१०।०६।११	८।१०।३८	८।१८।०९	३०
३१	१।१५।४८।५२	११।२३।२९।१५	२।२५।५९।०९	१।०५।२६।३८	१।२२।३७।३४	२।००।३०।२४	८।१९।०६	१०।०६।०८	८।१०।३६	८।१८।०७	३१

जून सन् १९८९ ई० प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम घं० ५ मि० ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशः २३°।४२।४०" मासारंभे वेंकटश (प्लूटो) ६।१९।२१ वक्री

ता० जून	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध (वक्री) रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क.	राहु रा. अं. क.	हर्षल (वक्री) रा. अं. क.	नेपच्यून (वक्री) रा. अं. क.	ता० जून
१	१।१६।४६।२४	[illegible]	२।२६।३६।२२	१।०५।०६।५०	१।२२।५१।२६	२।०१।४३।५५	८।१९।०३	१०।०६।०५	८।१०।३४	८।१८।०६	१
२	१।१७।४३।५५	००।२२।४९।२३	२।२७।१३।३५	१।०४।५०।४४	१।२३।०५।१८	२।०२।५७।२६	८।१९।००	१०।०६।०१	८।१०।३२	८।१८।०५	२
३	१।१८।४१।२५	०१।०३।२८।२१	२।२७।५०।४८	१।०४।३८।३८	१।२३।१९।११	२।०४।१०।५६	८।१८।५६	१०।०५।५८	८।१०।३०	८।१८।०३	३
४	१।१९।३८।५४	०१।२१।५६।२८	२।२८।२८।०१	१।०४।३०।३७	१।२३।३३।०४	२।०५।२४।२४	८।१८।५३	१०।०५।५५	८।१०।२७	८।१८।०२	४
५	१।२०।३६।२२	०२।०६।०६।४४	२।२९।०५।१५	१।०४।२६।५५	१।२३।४६।५९	२।०६।३७।५१	८।१८।४९	१०।०५।५२	८।१०।२५	८।१८।०१	५
६	१।२१।३३।४९	०२।१९।५६।४३	२।२९।४२।२९	१।०४।२७।४३	१।२४।००।५४	२।०७।५१।१६	८।१८।४५	१०।०५।४९	८।१०।२३	८।१७।५९	६
७	१।२२।३१।१६	०३।०३।१७।२८	३।००।१९।४३	१।०४।३३।४९	१।२४।१४।५०	२।०९।०४।४०	८।१८।४२	१०।०५।४६	८।१०।२१	८।१७।५८	७
८	१।२३।२८।४१	०३।१६।१९।५७	३।००।५६।५८	१।०४।४४।३१	१।२४।२८।४५	२।१०।१८।०३	८।१८।३८	१०।०५।४२	८।१०।१८	८।१७।५६	८
९	१।२४।२६।०४	०३।२८।५०।२३	३।०१।३४।१३	१।०४।५६।४२	१।२४।४२।४०	२।११।३१।२५	८।१८।३४	१०।०५।३९	८।१०।१६	८।१७।५५	९
१०	१।२५।२३।२७	०४।११।०६।३९	३।०२।११।२९	१।०५।११।२४	१।२४।५६।३५	२।१२।४४।४५	८।१८।३०	१०।०५।३६	८।१०।१४	८।१७।५४	१०
११	१।२६।२०।४९	०४।२३।१०।४२	३।०२।४८।४५	१।०५।२८।३०	१।२५।१०।३०	२।१३।५८।०४	८।१८।२६	१०।०५।३३	८।१०।११	८।१७।५२	११
१२	१।२७।१८।१०	[illegible]	३।०३।२६।०२	१।०६।०४।५२	१।२५।२४।२४	२।१५।११।२२	८।१८।२२	१०।०५।३०	८।१०।०९	८।१७।५१	१२
१३	१।२८।१५।३०	[illegible]	३।०४।०३।१९	१।०६।३०।४८	१।२५।३८।१८	२।१६।२४।३९	८।१८।१८	१०।०५।२७	८।१०।०७	८।१७।४९	१३
१४	१।२९।१२।४८	[illegible]	३।०४।४०।३६	१।०७।१३।३६	१।२५।५२।१२	२।१७।३७।५५	८।१८।१४	१०।०५।२३	८।१०।०४	८।१७।४८	१४
१५	२।००।१०।०६	[illegible]	३।०५।१७।५४	१।०७।५४।०५	१।२६।०६।०५	२।१८।५१।१०	८।१८।१०	१०।०५।२०	८।१०।०२	८।१७।४६	१५
१६	२।०१।०७।२३	०६।२२।२८।३३	३।०५।५५।१३	१।०८।३८।२३	१।२६।१९।५९	२।२०।०४।२४	८।१८।०६	१०।०५।१७	८।०९।५९	८।१७।४५	१६
१७	२।०२।०४।४०	०७।०५।०८।१०	३।०६।३२।३२	१।०९।२६।४०	१।२६।३३।५१	२।२१।१७।३७	८।१८।०२	१०।०५।१४	८।०९।५७	८।१७।४३	१७
१८	२।०३।०१।५६	०७।१७।१८।२८	३।०७।०९।५१	१।१०।१९।०५	१।२६।४७।४२	२।२२।३०।४९	८।१७।५८	१०।०५।११	८।०९।५५	८।१७।४१	१८
१९	२।०३।५९।११	०८।००।०३।००	३।०७।४७।१०	१।११।१५।१७	१।२७।०१।३२	२।२३।४४।००	८।१७।५४	१०।०५।०७	८।०९।५२	८।१७।४०	१९
२०	२।०४।५६।२५	०८।१२।१३।२२	३।०८।२४।३०	१।१२।१५।१६	१।२७।१५।२२	२।२४।५७।१०	८।१७।४९	१०।०५।०४	८।०९।५०	८।१७।३८	२०
२१	२।०५।५३।३९	०८।२६।४७।४५	३।०९।०१।५०	१।१३।१९।०४	१।२७।२९।११	२।२६।१०।१९	८।१७।४४	१०।०५।०१	८।०९।४७	८।१७।३७	२१
२२	२।०६।५०।५३	०९।१०।१५।१२	३।०९।३९।१०	१।१४।२६।२८	१।२७।४२।५९	२।२७।२३।२७	८।१७।४१	१०।०४।५८	८।०९।४५	८।१७।३५	२२
२३	२।०७।४८।०७	०९।२३।५२।५१	३।१०।१६।३०	१।१५।३७।४०	१।२७।५६।४६	२।२८।३६।३४	८।१७।३६	१०।०४।५५	८।०९।४२	८।१७।३४	२३
२४	२।०८।४५।२०	१०।०७।३९।४४	३।१०।५३।५१	१।१६।५२।२२	१।२८।१०।३२	२।२९।४९।४०	८।१७।३२	१०।०४।५२	८।०९।४०	८।१७।३२	२४
२५	२।०९।४२।३३	१०।२१।३४।५८	३।११।३१।११	१।१८।१०।३३	१।२८।२४।१७	३।०१।०२।४५	८।१७।२८	१०।०४।४८	८।०९।३८	८।१७।३०	२५
२६	२।१०।३९।४७	११।०४।३७।५५	३।१२।०८।३२	१।१९।३२।२१	१।२८।३८।०१	३।०२।१५।४८	८।१७।२३	१०।०४।४५	८।०९।३५	८।१७।२९	२६
२७	२।११।३७।००	११।१७।४७।२९	३।१२।४५।५४	१।२०।५७।३९	१।२८।५१।४३	३।०३।२८।५०	८।१७।१९	१०।०४।४२	८।०९।३३	८।१७।२७	२७
२८	२।१२।३४।१४	००।००।४०।२४	३।१३।२३।१६	१।२२।२६।२१	१।२९।०५।२४	३।०४।४१।५१	८।१७।१५	१०।०४।३९	८।०९।३०	८।१७।२६	२८
२९	२।१३।३१।२७	००।१३।२९।०३	३।१४।००।३९	१।२३।५८।२४	१।२९।१९।०४	३।०५।५४।५१	८।१७।१०	१०।०४।३६	८।०९।२८	८।१७।२४	२९
३०	२।१४।२८।४१	००।२६।३२।०८	३।१४।३७।०२	१।२५।३३।५१	१।२९।३२।४३	३।०७।०७।५०	८।१७।०६	१०।०४।३२	८।०९।२५	८।१७।२२	३०

जुलाई सन् १९८९ ई० प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम घं० ५ मि० ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशाः २३°।४२'।४६" मासारंभे वैंकटेश (प्लूटो) ६/१८/४८ वक्री

ता० जुलाई	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क.	राहु रा. अं. क.	हर्षल (वक्री) रा. अं. क.	नेपच्यून (वक्री) रा. अं. क.	ता० जुलाई
१	२।१५।२५।५४	०१।१६।५०।३६	३।१५।१५।२६	१।२७।१२।३२	१।२९।४६।२१	३।०८।२०।४८	८।१७।०१	१०।०४।२९	८।०९।२३	८।१७।२१	१
२	२।१६।२३।०८	०२।००।५३।२९	३।१५।५२।५०	१।२८।५४।३२	१।२९।५९।५८	३।०९।३३।४५	८।१६।५७	१०।०४।२६	८।०९।२०	८।१७।१९	२
३	२।१७।२०।२२	०२।१४।४१।५०	३।१६।३०।१५	२।००।३९।३८	२।००।१३।३३	३।१०।४६।४१	८।१६।५२	१०।०४।२३	८।०९।१८	८।१७।१७	३
४	२।१८।१७।३५	०२।२८।१२।३२	३।१७।०७।४०	२।०२।२७।४८	२।००।२७।०४	३।११।५९।३६	८।१६।४८	१०।०४।२०	८।०९।१६	८।१७।१६	४
५	२।१९।१४।४९	०३।११।२३।२२	३।१७।४५।०६	२।०४।१८।५०	२।००।४०।३३	३।१३।१२।३०	८।१६।४४	१०।०४।१७	८।०९।१३	८।१७।१४	५
६	२।२०।१२।०३	०३।२४।१३।५६	३।१८।२२।३३	२।०६।१२।५४	२।००।५४।०१	३।१४।२५।२३	८।१६।३९	१०।०४।१३	८।०९।११	८।१७।१२	६
७	२।२१।०९।१६	०४।०६।४५।३०	३।१९।००।००	२।०८।०९।१४	२।०१।०७।२७	३।१५।३८।१५	८।१६।३५	१०।०४।१०	८।०९।०८	८।१७।११	७
८	२।२२।०६।२९	०४।१९।००।४३	३।१९।३७।२८	२।१०।०८।१४	२।०१।२०।५१	३।१६।५१।०५	८।१६।३०	१०।०४।०७	८।०९।०६	८।१७।०९	८
९	२।२३।०३।४१	०५।०१।०३।२०	३।२०।१४।५७	२।१२।०९।२५	२।०१।३४।१४	३।१८।०३।५३	८।१६।२६	१०।०४।०४	८।०९।०४	८।१७।०८	९
१०	२।२४।००।५४	०५।१२।५७।५०	३।२०।५२।२६	२।१४।१२।३१	२।०१।४७।३४	३।१९।१६।४०	८।१६।२२	१०।०४।०१	८।०९।०१	८।१७।०६	१०
११	२।२४।५८।०७	०५।२४।४९।०५	३।२१।२९।५६	२।१६।१७।१९	२।०२।००।५२	३।२०।२९।२५	८।१६।१७	१०।०३।५७	८।०८।५९	८।१७।०४	११
१२	२।२५।५५।२०	०६।०६।४२।०६	३।२२।०७।२७	२।१८।२३।३७	२।०२।१४।०७	३।२१।४२।०८	८।१६।१३	१०।०३।५४	८।०८।५७	८।१७।०३	१२
१३	२।२६।५२।३३	०६।१८।४१।४०	३।२२।४४।५८	२।२०।३१।०१	२।०२।२७।१९	३।२२।५४।४९	८।१६।०९	१०।०३।५१	८।०८।५५	८।१७।०१	१३
१४	२।२७।४९।४६	०७।००।५२।११	३।२३।२२।३०	२।२२।३९।१३	२।०२।४०।२९	३।२४।०७।२८	८।१६।०४	१०।०३।४८	८।०८।५२	८।१७।००	१४
१५	२।२८।४६।५९	०७।१३।१७।५५	३।२४।००।०२	२।२४।४७।५५	२।०२।५३।३६	३।२५।२०।०५	८।१६।००	१०।०३।४५	८।०८।५०	८।१६।५८	१५
१६	२।२९।४४।११	०७।२५।५९।३०	३।२४।३७।३५	२।२६।५६।४८	२।०३।०६।४१	३।२६।३२।४१	८।१५।५६	१०।०३।४२	८।०८।४८	८।१६।५६	१६
१७	३।००।४१।२५	०८।०९।००।२०	३।२५।१५।०८	२।२९।०५।३६	२।०३।१९।४४	३।२७।४५।१६	८।१५।५२	१०।०३।३८	८।०८।४६	८।१६।५५	१७
१८	३।०१।३८।३८	०८।२२।१९।४६	३।२५।५२।४२	३।०१।१४।०६	२।०३।३२।४५	३।२८।५७।५०	८।१५।४७	१०।०३।३५	८।०८।४३	८।१६।५३	१८
१९	३।०२।३५।५२	०९।०५।५६।३०	३।२६।३०।१७	३।०३।२२।०९	२।०३।४५।४४	४।००।१०।२२	८।१५।४३	१०।०३।३२	८।०८।४१	८।१६।५२	१९
२०	३।०३।३३।०७	०९।१९।४८।०५	३।२७।०७।५३	३।०५।२९।१२	२।०३।५८।४०	४।०१।२२।५२	८।१५।३९	१०।०३।२९	८।०८।३९	८।१६।५०	२०
२१	३।०४।३०।२२	१०।०३।५१।१७	३।२७।४५।३०	३।०७।३५।३०	२।०४।११।३३	४।०२।३५।२१	८।१५।३५	१०।०३।२६	८।०८।३७	८।१६।४९	२१
२२	३।०५।२७।३८	१०।१८।०२।३२	३।२८।२३।०८	३।०९।४०।३०	२।०४।२४।२३	४।०३।४७।४९	८।१५।३१	१०।०३।२३	८।०८।३५	८।१६।४७	२२
२३	३।०६।२४।५३	११।०२।१८।१५	३।२९।००।४६	३।११।४४।२३	२।०४।३७।१०	४।०५।००।१५	८।१५।२७	१०।०३।१९	८।०८।३३	८।१६।४६	२३
२४	३।०७।२२।१०	११।१६।३५।१७	३।२९।३८।२५	३।१३।४६।४७	२।०४।४९।५४	४।०६।१२।३९	८।१५।२३	१०।०३।१६	८।०८।३१	८।१६।४४	२४
२५	३।०८।१९।२८	००।००।५०।५०	४।००।१६।०४	३।१५।४७।५३	२।०५।०२।३४	४।०७।२५।०१	८।१५।१९	१०।०३।१३	८।०८।२९	८।१६।४३	२५
२६	३।०९।१६।४७	००।१५।०२।२९	४।००।५३।४४	३।१७।४७।२३	२।०५।१५।०९	४।०८।३७।२१	८।१५।१५	१०।०३।१०	८।०८।२७	८।१६।४१	२६
२७	३।१०।१४।०७	००।२९।०८।०८	४।०१।३१।२५	३।१९।४५।१७	२।०५।२७।४०	४।०९।४९।३९	८।१५।११	१०।०३।०७	८।०८।२५	८।१६।४०	२७
२८	३।११।११।२८	०१।१३।०५।४६	४।०२।०९।०७	३।२१।४१।३५	२।०५।४०।०८	४।११।०१।५५	८।१५।०८	१०।०३।०३	८।०८।२३	८।१६।३८	२८
२९	३।१२।०८।५१	०१।२६।५३।२७	४।०२।४६।५०	३।२३।३६।२३	२।०५।५२।३३	४।१२।१४।०९	८।१५।०४	१०।०३।००	८।०८।२१	८।१६।३७	२९
३०	३।१३।०६।१३	०२।१०।२९।१९	४।०३।२४।३४	३।२५।२९।२२	२।०६।०४।५५	४।१३।२६।२१	८।१५।००	१०।०२।५७	८।०८।१९	८।१६।३६	३०
३१	३।१४।०३।३७	०२।२३।५५।४५	४।०४।०२।१९	३।२७।२०।५२	२।०६।१७।१४	४।१४।३८।२९	८।१४।५७	१०।०२।५४	८।०८।१७	८।१६।३४	३१

... अयनांशाः २३°।४२'।५०" मासारंभे वैंकटेश (प्लूटो) ६।१८।४१

अगस्त सन् १९८९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम घं० ५ मि० ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशाः २३°।४२'।५०" मासारंभ वेंकटेश (प्लूटो) ६।१८।४१

ता० अगस्त	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क.	राहु रा. अं. क.	हर्षल (वक्री) रा. अं. क.	नेपच्यून (वक्री) रा. अं. क.	ता० अगस्त
१	३।१५।०१।०२	३।०६।५९।२८	४।०४।४०।०५	३।२९।१०।३४	२।०६।२९।२९	४।१५।५०।३९	८।१४।५३	१०।०२।५१	८।०८।१५	८।१६।३३	१
२	३।१५।५८।२८	३।१९।५१।५०	४।०५।१७।५२	४।००।५८।४०	२।०६।४१।४०	४।१७।०२।४५	८।१४।५०	१०।०२।४८	८।०८।१४	८।१६।३१	२
३	३।१६।५५।५५	४।०२।२८।५४	४।०५।५५।४०	४।०२।४५।१०	२।०६।५३।४६	४।१८।१४।४९	८।१४।४६	१०।०२।४५	८।०८।१२	८।१६।३०	३
४	३।१७।५३।२२	४।१४।५९।३८	४।०६।३३।२९	४।०४।२९।५८	२।०७।०५।४८	४।१९।२६।५१	८।१४।४३	१०।०२।४१	८।०८।१०	८।१६।२९	४
५	३।१८।५०।५०	४।२७।०९।४९	४।०७।११।१९	४।०६।१३।१०	२।०७।१७।४८	४।२०।३८।५१	८।१४।४०	१०।०२।३८	८।०८।०९	८।१६।२७	५
६	३।१९।४८।१९	५।०९।०२।०३	४।०७।४९।१०	४।०७।५४।४५	२।०७।२९।४१	४।२१।५०।४९	८।१४।३६	१०।०२।३५	८।०८।०७	८।१६।२६	६
७	३।२०।४५।४८	५।२०।५५।४४	४।०८।२७।०२	४।०९।३४।४३	२।०७।४१।२९	४।२३।०२।४५	८।१४।३३	१०।०२।३२	८।०८।०५	८।१६।२५	७
८	३।२१।४३।१९	६।०२।४६।४७	४।०९।०४।५५	४।११।१३।०९	२।०७।५३।१४	४।२४।१४।३९	८।१४।३०	१०।०२।२८	८।०८।०४	८।१६।२४	८
९	३।२२।४०।५०	६।१४।३९।३४	४।०९।४२।४९	४।१२।४९।५७	२।०८।०४।५५	४।२५।२६।३१	८।१४।२७	१०।०२।२५	८।०८।०२	८।१६।२२	९
१०	३।२३।३८।२३	६।२६।३८।४२	४।१०।२०।४४	४।१४।२५।०९	२।०८।१६।३१	४।२६।३८।२१	८।१४।२४	१०।०२।२२	८।०८।०१	८।१६।२१	१०
११	३।२४।३५।५६	७।०८।४८।४६	४।१०।५८।४०	४।१५।५८।४५	२।०८।२८।०३	४।२७।५०।०५	८।१४।२१	१०।०२।१९	८।०७।५९	८।१६।२०	११
१२	३।२५।३३।२९	७।२१।१४।०५	४।११।३६।३७	४।१७।३०।४४	२।०८।३९।२९	४।२९।०१।४९	८।१४।१८	१०।०२।१६	८।०७।५८	८।१६।१९	१२
१३	३।२६।३१।०४	८।०३।५८।२४	४।१२।१४।३५	४।१९।०१।०८	२।०८।५०।५१	५।००।१३।३०	८।१४।१६	१०।०२।१३	८।०७।५७	८।१६।१८	१३
१४	३।२७।२८।४०	८।१७।०४।२५	४।१२।५२।३४	४।२०।२९।५६	२।०९।०२।०८	५।०१।२५।०८	८।१४।१३	१०।०२।०९	८।०७।५५	८।१६।१६	१४
१५	३।२८।२६।१७	९।००।३३।२६	४।१३।३०।३४	४।२१।५७।०८	२।०९।१३।१८	५।०२।३६।४३	८।१४।१०	१०।०२।०६	८।०७।५४	८।१६।१५	१५
१६	३।२९।२३।५५	९।१४।२५।०३	४।१४।०८।३५	४।२३।२२।४४	२।०९।२४।२३	५।०३।४८।१५	८।१४।०८	१०।०२।०३	८।०७।५३	८।१६।१४	१६
१७	४।००।२१।३४	९।२८।३६।५२	४।१४।४६।३७	४।२४।४६।३२	२।०९।३५।२४	५।०४।५९।४४	८।१४।०६	१०।०२।००	८।०७।५२	८।१६।१३	१७
१८	४।०१।१९।१४	१०।१३।०४।४१	४।१५।२४।४०	४।२६।०८।४३	२।०९।४६।१९	५।०६।११।११	८।१४।०३	१०।०१।५७	८।०७।५०	८।१६।१२	१८
१९	४।०२।१६।५६	१०।२७।४२।५१	४।१६।०२।४४	४।२७।२९।१३	२।०९।५७।०९	५।०७।२२।३५	८।१४।०१	१०।०१।५३	८।०७।४९	८।१६।११	१९
२०	४।०३।१४।३९	११।१२।२४।५४	४।१६।४०।४९	४।२८।४७।५५	२।१०।०७।५५	५।०८।३३।५७	८।१३।५९	१०।०१।५०	८।०७।४८	८।१६।१०	२०
२१	४।०४।१२।२४	११।२७।०४।२५	४।१७।१८।५५	५।००।०४।४९	२।१०।१८।३७	५।०९।४५।१७	८।१३।५७	१०।०१।४७	८।०७।४७	८।१६।०९	२१
२२	४।०५।१०।११	००।११।३५।४७	४।१७।५७।०२	५।०१।१९।४६	२।१०।२९।१२	५।१०।५६।३४	८।१३।५५	१०।०१।४४	८।०७।४६	८।१६।०८	२२
२३	४।०६।०७।५९	००।२५।५४।४३	४।१८।३५।१०	५।०२।३३।०१	२।१०।३९।३९	५।१२।०७।४८	८।१३।५३	१०।०१।४१	८।०७।४५	८।१६।०७	२३
२४	४।०७।०५।५०	०१।०९।५८।२८	४।१९।१३।१९	५।०३।४४।०७	२।१०।५०।०१	५।१३।१८।५८	८।१३।५१	१०।०१।३८	८।०७।४५	८।१६।०६	२४
२५	४।०८।०३।४१	०१।२३।४५।४१	४।१९।५१।२९	५।०४।५३।०६	२।११।००।१६	५।१४।३०।०५	८।१३।५०	१०।०१।३४	८।०७।४४	८।१६।०६	२५
२६	४।०९।०१।३४	०२।०७।१६।१२	४।२०।२९।४०	५।०६।००।००	२।११।१०।२५	५।१५।४१।०९	८।१३।४८	१०।०१।३१	८।०७।४३	८।१६।०५	२६
२७	४।०९।५९।३०	०२।२०।३०।३६	४।२१।०७।५३	५।०७।०४।४२	२।११।२०।२८	५।१६।५२।१०	८।१३।४७	१०।०१।२८	८।०७।४२	८।१६।०४	२७
२८	४।१०।५७।२७	०३।०३।२९।५२	४।२१।४६।०७	५।०८।०६।५४	२।११।३०।२६	५।१८।०३।१०	८।१३।४५	१०।०१।२५	८।०७।४२	८।१६।०३	२८
२९	४।११।५५।२६	०३।१६।१५।१३	४।२२।२४।२२	५।०९।०६।४२	२।११।४०।१८	५।१९।१४।०७	८।१३।४४	१०।०१।२२	८।०७।४१	८।१६।०२	२९
३०	४।१२।५३।२७	०३।२८।४७।५३	४।२३।०२।३९	५।१०।०३।४५	२।११।५०।०३	५।२०।२५।००	८।१३।४३	१०।०१।१८	८।०७।४०	८।१६।०२	३०
३१	४।१३।५१।२९	०४।११।०९।०८	४।२३।४०।५८	५।१०।५८।००	२।११।५९।४२	५।२१।३५।४९	८।१३।४१	१०।०१।१५	८।०७।४०	८।१६।०१	३१

सितम्बर सन् १९८९ ई० प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम घं० ५ मि० ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रहा अयनांशाः २३°४२'५५" मासारंभे वैंकटेश (प्लूटो) ६।१९।०६

ता० सित०	सूर्य रा अं क वि	चन्द्र रा अं क वि	मंगल रा अं क वि	बुध रा अं क वि	गुरु रा अं क वि	शुक्र रा अं क वि	शनि (वक्री) रा अं क	राहु रा अं क	हर्षल (वक्री) रा अं क	नेपच्यून (वक्री) रा अं क	ता० सित०
१	४।१४।४९।३२	४।२३।२०।२०	४।२४।१९।१९	५।११।४९।२३	२।१२।०४।१४	५।२२।४६।३४	८।१३।४०	१०।०१।१२	८।०७।३९	८।१६।००	१
२	४।१५।४७।३७	५।०५।२३।०३	४।२४।५७।४२	५।१२।३७।२९	२।१२।१८।३७	५।२३।५७।११	८।१३।३९	१०।०१।०९	८।०७।३९	८।१६।००	२
३	४।१६।४५।४४	५।१७।१९।१०	४।२५।३६।०७	५।१३।२२।१७	२।१२।२७।५३	५।२५।०७।५३	८।१३।३८	१०।०१।०६	८।०७।३९	८।१५।५९	३
४	४।१७।४३।५२	५।२९।१०।५८	४।२६।१४।३३	५।१४।०३।२९	२।१२।३७।०३	५।२६।१८।२८	८।१३।३८	१०।०१।०३	८।०७।३८	८।१५।५९	४
५	४।१८।४२।०२	६।११।०१।१४	४।२६।५३।००	५।१४।४०।५४	२।१२।४६।०५	५।२७।२८।५९	८।१३।३७	१०।००।५९	८।०७।३८	८।१५।५८	५
६	४।१९।४०।१३	६।२२।५३।१८	४।२७।३१।२८	४।१५।१४।०४	२।१२।५४।५९	५।२८।३९।२६	८।१३।३६	१०।००।५६	८।०७।३८	८।१५।५८	६
७	४।२०।३८।२६	७।०४।५१।००	४।२८।०९।५७	५।१५।४४।५२	२।१३।०३।४९	५।२९।४९।४९	८।१३।३६	१०।००।५३	८।०७।३७	८।१५।५७	७
८	४।२१।३६।४१	७।१६।५८।३२	४।२८।४८।२७	५।१६।०७।०४	२।१३।१२।३१	६।०१।००।०९	८।१३।३६	१०।००।५०	८।०७।३७	८।१५।५७	८
९	४।२२।३४।५७	७।२९।२०।२१	४।२९।२६।५८	५।१६।२६।१६	२।१३।२१।०४	६।०२।१०।२५	८।१३।३५	१०।००।४७	८।०७।३७	८।१५।५६	९
१०	४।२३।३३।१५	८।१२।००।४७	५।००।०५।३०	५।१६।४०।०४	२।१३।२९।२८	६।०३।२०।३७	८।१३।३५	१०।००।४४	८।०७।३७	८।१५।५६	१०
११	४।२४।३१।३४	८।२५।०३।४६	५।००।४४।०३	५।१६।४८।२२	२।१३।३७।४६	६।०४।३०।४५	८।१३।३५	१०।००।४०	८।०७।३७	८।१५।५५	११
१२	४।२५।२९।५५	९।०८।३२।११	५।०१।२२।३७	५।१६।५०।४०	२।१३।४५।५८	६।०५।४०।४९	८।१३।३५	१०।००।३७	८।०७।३७	८।१५।५५	१२
१३	४।२६।२८।१६	९।२२।२७।२०	५।०२।०१।१३	५।१६।४६।३९	२।१३।५३।५८	६।०६।५०।५०	८।१३।३५	१०।००।३४	८।०७।३७	८।१५।५५	१३
१४	४।२७।२६।४०	१०।०६।४८।१७	५।०२।३९।५१	५।१६।३६।१५	२।१४।०१।५१	६।०८।००।४८	८।१३।३५	१०।००।३१	८।०७।३८	८।१५।५५	१४
१५	४।२८।२५।०६	१०।२१।३१।२२	५।०३।१८।३०	५।१६।१९।०३	२।१४।०९।३९	६।०९।१०।४०	८।१३।३६	१०।००।२८	८।०७।३८	८।१५।५४	१५
१६	४।२९।२३।३४	११।०६।३०।१२	५।०३।५७।११	५।१५।५४।५७	२।१४।१७।१५	६।१०।२०।२५	८।१३।३६	१०।००।२४	८।०७।३८	८।१५।५४	१६
१७	५।००।२२।०३	११।२१।३६।१५	५।०४।३५।५३	५।१५।२४।०९	२।१४।२४।४५	६।११।३०।०४	८।१३।३७	१०।००।२१	८।०७।३८	८।१५।५४	१७
१८	५।०१।२०।३४	००।०६।४०।०३	५।०५।१४।३७	५।१४।४६।२७	२।१४।३२।०९	६।१२।३९।३५	८।१३।३७	१०।००।१८	८।०७।३९	८।१५।५४	१८
१९	५।०२।१९।०८	००।२१।३२।४०	५।०५।५३।२३	५।१४।०२।१५	२।१४।३९।२१	६।१३।४९।०३	८।१३।३८	१०।००।१५	८।०७।३९	८।१५।५४	१९
२०	५।०३।१७।४४	०१।०६।०७।०४	५।०६।३२।११	५।१३।१२।०३	२।१४।४६।२१	६।१४।५८।३०	८।१३।३९	१०।००।१२	८।०७।४०	८।१५।५४	२०
२१	५।०४।१६।२२	०१।२०।१८।५२	५।०७।११।००	५।१२।१६।२७	२।१४।५३।१५	६।१६।०७।५१	८।१३।४०	१०।००।०९	८।०७।४०	८।१५।५४	२१
२२	५।०५।१५।०२	०२।०४।०६।२६	५।०७।४९।५१	५।११।१६।३०	२।१५।००।०३	६।१७।१७।०९	८।१३।४१	१०।००।०५	८।०७।४१	८।१५।५४	२२
२३	५।०६।१३।४४	०२।१७।३०।१९	५।०८।२८।४४	५।१०।१३।०९	२।१५।०६।४१	६।१८।२६।१५	८।१३।४२	१०।००।०२	८।०७।४१	८।१५।५४	२३
२४	५।०७।१२।२९	३।००।३२।४४	५।०९।०७।३९	५।०९।०७।४४	२।१५।१३।०८	६।१९।३५।२०	८।१३।४३	९।२९।५९	८।०७।४२	८।१५।५४	२४
२५	५।०८।११।१६	३।१३।१६।४२	५।०९।४६।३६	५।०८।०१।५६	२।१५।१९।२६	६।२०।४४।२०	८।१३।४४	९।२९।५६	८।०७।४३	८।१५।५४	२५
२६	५।०९।१०।०५	३।२५।४४।२९	५।१०।२५।३४	५।०६।५७।२०	२।१५।२५।३८	६।२१।५३।१४	८।१३।४६	९।२९।५३	८।०७।४४	८।१५।५४	२६
२७	५।१०।०८।५७	४।०८।०२।१३	५।११।०४।३४	५।०५।५५।३२	२।१५।३१।३५	६।२३।०२।०२	८।१३।४७	९।२९।४९	८।०७।४५	८।१५।५४	२७
२८	५।११।०७।५१	४।२०।०९।४२	५।११।४३।३५	५।०४।५८।१४	२।१५।३७।२६	६।२४।१०।५०	८।१३।४९	९।२९।४६	८।०७।४५	८।१५।५४	२८
२९	५।१२।०६।४६	५।०२।१०।१६	५।१२।२२।३७	५।०४।०७।०२	२।१५।४३।०४	६।२५।१९।२६	८।१३।५०	९।२९।४३	८।०७।४६	८।१५।५५	२९
३०	५।१३।०५।४३	५।१४।०५।५२	५।१३।०१।४०	५।०३।२३।१४	२।१५।४८।३२	६।२६।२७।५६	८।१३।५२	९।२९।४०	८।०७।४७	८।१५।५५	३०

... ई० प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम घं० ५ मि० ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रहा अयनांशाः २३°४२'५९" मासारंभे वैंकटेश (प्लूटो) ६।१९।५८

अक्टूबर सन् १९८९ ई० प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम घं० ५ मि० ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रहा अयनांश: २३।४२।१९ मासारम्भे वैंकटेश (प्लूटो) ६।१९।५८

ता० अक्टू०	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध (वक्री) रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क.	राहु रा. अं. क.	हर्षल रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	ता० अक्टू०
१	५।१४।०४।४२	५।२५।२८।१२	५।१३।४०।४५	५।०२।४८।०१	२।१५।५३।५५	६।२७।३६।१९	८।१३।५४	९।२९।३७	८।०७।४८	८।१५।५५	१
२	५।१५।०३।४४	६।०७।४८।५८	५।१४।१९।५२	५।०२।२२।१९	२।१५।५९।०१	६।२८।४४।३७	८।१३।५६	९।२९।३४	८।०७।४९	८।१५।५६	२
३	५।१६।०२।४८	६।१९।३९।५७	५।१४।५९।०१	५।०२।०६।३७	२।१६।०४।०१	६।२९।५२।४९	८।१३।५८	९।२९।३०	८।०७।५१	८।१५।५६	३
४	५।१७।०१।५३	७।०१।३३।२०	५।१५।३८।१२	५।०२।०२।३१	२।१६।०८।४९	७।०१।००।५५	८।१४।००	९।२९।२७	८।०७।५२	८।१५।५६	४
५	५।१८।०१।०१	७।१३।३९।४७	५।१६।१७।२५	५।०२।०६।४९	२।१६।१३।३१	७।०२।०८।४९	८।१४।०३	९।२९।२४	८।०७।५३	८।१५।५७	५
६	५।१९।००।१०	७।२५।३८।३२	५।१६।५६।४०	५।०२।२२।३७	२।१६।१८।०१	७।०३।१६।४३	८।१४।०५	९।२९।२१	८।०७।५४	८।१५।५७	६
७	५।१९।५९।२१	८।०७।५७।२४	५।१७।३५।५६	५।०२।४८।१९	२।१६।२२।१९	७।०४।२४।२५	८।१४।०७	९।२९।१८	८।०७।५६	८।१५।५८	७
८	५।२०।५८।३३	८।२०।३२।३२	५।१८।१५।१४	५।०३।२३।४२	२।१६।२६।२४	७।०५।३२।००	८।१४।१०	९।२९।१५	८।०७।५७	८।१५।५८	८
९	५।२१।५७।४७	९।०३।२८।१८	५।१८।५४।३९	५।०४।०७।५४	२।१६।३०।१८	७।०६।३९।२४	८।१४।१२	९।२९।११	८।०७।५८	८।१५।५९	९
१०	५।२२।५७।०३	९।१६।४८।३८	५।१९।३३।५०	५।०५।००।३०	२।१६।३४।०६	७।०७।४६।४२	८।१४।१५	९।२९।०८	८।०८।००	८।१५।५९	१०
११	५।२३।५६।२१	१०।००।३६।२६	५।२०।१३।११	५।०६।००।२४	२।१६।३७।४२	७।०८।५३।५४	८।१४।१८	९।२९।०५	८।०८।०१	८।१६।००	११
१२	५।२४।५५।४१	१०।१४।५२।४४	५।२०।५२।३४	५।०७।०७।०६	२।१६।४१।०६	७।१०।००।५४	८।१४।२१	९।२९।०२	८।०८।०३	८।१६।०१	१२
१३	५।२५।५५।०३	१०।२९।३५।४३	५।२१।३१।५९	५।०८।१९।४८	२।१६।४४।१८	६।११।०७।४२	८।१४।२४	९।२८।५९	८।०८।०५	८।१६।०२	१३
१४	५।२६।५४।२७	११।१४।४०।१५	५।२२।११।२६	५।०९।३७।४२	२।१६।४७।१८	७।१२।१४।२४	८।१४।२७	९।२८।५५	८।०८।०६	८।१६।०२	१४
१५	५।२७।५३।५२	११।२९।५७।४४	५।२२।५०।५५	५।१०।५९।५९	२।१६।५०।०५	७।१३।२०।५३	८।१४।३०	९।२८।५२	८।०८।०८	८।१६।०३	१५
१६	५।२८।५३।१९	००।१५।१७।२२	५।२३।३०।२६	५।१२।२६।१७	२।१६।५२।४७	७।१४।२७।१७	८।१४।३३	९।२८।४९	८।०८।१०	८।१६।०४	१६
१७	५।२९।५२।४९	०१।००।२७।४२	५।२४।१०।०९	५।१३।५५।४७	२।१६।५५।१७	७।१५।३३।२९	८।१४।३७	९।२८।४६	८।०८।१२	८।१६।०५	१७
१८	६।००।५२।२१	०१।१५।१८।५३	५।२४।४९।४४	५।१५।२७।५९	२।१६।५७।२९	७।१६।३९।२९	८।१४।४०	९।२८।४३	८।०८।१३	८।१६।०५	१८
१९	६।०१।५१।५५	०१।२९।४४।१०	५।२५।२९।२१	५।१७।०२।२३	२।१६।५९।३५	७ १७।४५।१७	८।१४।४३	९।२८।४०	८।०८।१५	८।१६।०६	१९
२०	६।०२।५१।३१	२।१३।४०।२२	५।२६।०८।५९	५।१८।३८।३५	२।१७।०१।२९	७।१८।५०।५९	८।१४।४७	९।२८।३६	८।०८।१७	८।१६।०७	२०
२१	६।०३।५१।१०	०२।२७।०७।३७	५।२६।४८।४१	५।२०।१६।११	२।१७।०३।११	७।१९।५६।२३	८।१४।५१	९।२८।३३	८।०८।१९	८।१६।०८	२१
२२	६।०४।५०।५२	३।१०।०८।३१	५।२७।२८।२४	५।२१।५४।५३	२।१७।०४।४१	७।२१।०१।४१	८।१४।५४	९।२८।३०	८।०८।२१	८।१६।०९	२२
२३	६।०५।५०।३५	०३।२२।४७।०४	५।२८।०८।०९	५।२३।३४।२९	२।१७।०५।५९	७।२२।०६।४१	८।१४।५८	९।२८।२७	८।०८।२३	८।१६।१०	२३
२४	६।०६।५०।२०	०४।०५।०७।५२	५।२८।४७।५६	५।२५।१४।३४	२।१७।०७।०४	७।२३।११।३४	८।१५।०२	९।२८।२४	८।०८।२६	८।१६।११	२४
२५	६।०७।५०।०७	०४।१७।१५।३५	५।२९।२७।४५	५।२६।५५।१०	२।१७।०७।५८	७।२४।१६।१०	८।१५।०६	९।२८।२०	८।०८।२८	८।१६।१२	२५
२६	६।०८।४९।५७	०४।२९।१४।२४	६।००।०७।३६	५।२८।३५।५२	२।१७।०८।४०	७।२५।२०।३४	८।१५।१०	९।२८।१७	८।०८।३०	८।१६।१३	२६
२७	६।०९।४९।४९	०५।११।०७।५४	६।००।४७।२९	६।००।१६।४६	२।१७।०९।१०	७।२६।२४।४६	८।१५।१४	९।२८।१४	८।०८।३२	८।१६।१४	२७
२८	६।१०।४९।४३	०५।२२।५८।५५	६।०१।२७।२४	६।०१।५७।३४	२।१७।०९।२८	७।२७।२८।४६	८।१५।१९	९।२८।११	८।०८।३४	८।१६।१६	२८
२९	६।११।४९।३९	०६।०४।४९।३९	६।०२।०७।२१	६।०३।३८।१६	२।१७।०९।३४	७।२८।३२।२८	८।१५।२३	९।२८।०८	८।०८।३७	८।१६।१७	२९
३०	६।१२।४९।३७	०६।१६।४९।४५	६।०२।४७।२०	६।०५।१९।५२	२।१७।०९।२८	७।२९।३५।५२	८।१५।२७	९।२८।०५	८।०८।३९	८।१६।१८	३०
३१	६।१३।४९।३७	०६।२८।३६।३२	६।०३।२७।२१	६।[illegible]।०४	२।१७।०९।१०	८।००।३९।०४	८।१५।३२	९।२८।०१	८।०८।४२	८।१६।१९	३१

नवम्बर सन् १९८९ ई० प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम घं० ५ मि० ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशाः २३°।४३'।०३" मासारंभे वेंकटेश (प्लूटो) ६।२१।०८

ता० नव०	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु (वक्री) रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क.	राहु रा. अं. क.	हर्षल रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	ता० नव०
१	६।१४।४९।३८	७।१०।३५।१८	६।०४।०७।२३	६।०८।३९।०३	२।१७।०८।३९	८।०१।४२।०३	८।१५।३६	९।२७।५८	८।०८।४४	८।१६।२१	१
२	६।१५।४९।४१	७।२२।३९।३४	६।०४।४७।२८	६।१०।१८।४५	२।१७।०७।५७	८।०२।४४।३९	८।१५।४१	९।२७।५५	८।०८।४६	८।१६।२२	२
३	६।१६।४९।४६	८।०४।५१।१८	६।०५।२७।३५	६।११।५८।०३	२।१७।०७।०३	८।०३।४६।५७	८।१५।४६	९।२७।५२	८।०८।४९	८।१६।२३	३
४	६।१७।४९।५३	८।१७।१३।०२	६।०६।०७।४४	६।१३।३७।०५	२।१७।०५।५७	८।०४।४९।०३	८।१५।५०	९।२७।४९	८।०८।५२	८।१६।२५	४
५	६।१८।५०।०२	८।२९।४७।५७	६।०६।४७।५५	६।१५।१५।३२	२।१७।०४।३८	८।०५।५०।४४	८।१५।५५	९।२७।४५	८।०८।५४	८।१६।२६	५
६	६।१९।५०।१२	९।१२।३९।४५	६।०७।२८।०८	६।१६।५३।४४	२।१७।०३।०८	८।०६।५२।०८	८।१६।००	९।२७।४२	८।०८।५७	८।१६।२७	६
७	६।२०।५०।२३	९।२५।५२।१५	६।०८।०८।२३	६।१८।३१।३२	२।१७।०१।२६	८।०७।५३।०८	८।१६।०५	९।२७।३९	८।०८।५९	८।१६।२९	७
८	६।२१।५०।३६	१०।९।२८।५५	६।०८।४८।४०	६।२०।०८।५६	२।१६।५९।३२	८।०८।५३।४४	८।१६।१०	९।२७।३६	८।०९।०२	८।१६।३०	८
९	६।२२।५०।५१	१०।२३।३९।५९	६।०९।२८।५९	६।२१।४५।५५	२।१६।५७।२६	८।०९।५४।०२	८।१६।१५	९।२७।३३	८।०९।०५	८।१६।३२	९
१०	६।२३।५१।०७	११।०८।०९।३४	६।१०।०९।२०	६।२३।२२।३८	२।१६।५५।०८	८।१०।५४।०३	८।१६।२०	९।२७।३०	८।०९।०८	८।१६।३३	१०
११	६।२४।५१।२४	११।२२।५४।४२	६।१०।४९।४२	६।२४।५८।५६	२।१६।५२।३८	८।११।५३।२६	८।१६।२६	९।२७।२६	८।०९।१०	८।१६।३५	११
१२	६।२५।५१।४२	००।०८।०४।५३	६।११।३०।०६	६।२६।३४।५५	२।१६।४९।५५	८।१२।५२।३१	८।१६।३१	९।२७।२३	८।०९।१३	८।१६।३७	१२
१३	६।२६।५२।०३	००।२३।२२।२९	६।१२।१०।३२	६।२८।१०।३१	२।१६।४७।०१	८।१३।५१।०७	८।१६।३६	९।२७।२०	८।०९।१६	८।१६।३८	१३
१४	६।२७।५२।२५	०१।०८।३६।०७	६।१२।५१।००	६।२९।४५।५५	२।१६।४३।५५	८।१४।४९।१९	८।१६।४२	९।२७।१७	८।०९।१९	८।१६।४०	१४
१५	६।२८।५२।५०	०१।२३।३४।४३	६।१३।३१।३०	७।०१।२०।५२	२।१६।४०।३७	८।१५।४७।०७	८।१६।४७	९।२७।१४	८।०९।२२	८।१६।४१	१५
१६	६।२९।५३।१६	०२।०८।९।३६	६।१४।१२।०४	७।०२।५५।४३	२।१६।३७।१३	८।१६।४४।१९	८।१६।५३	९।२७।१०	८।०९।२५	८।१६।४३	१६
१७	७।००।५३।४३	०२।२२।१५।३४	६।१४।५२।४०	७।०४।३०।०७	२।१६।३३।३१	७।१७।४१।०१	८।१६।५८	९।२७।०७	८।०९।२८	८।१६।४५	१७
१८	७।०१।५४।१२	०३।०५।५१।०७	६।१५।३३।१८	७।०६।०४।२५	२।१६।२९।४३	८।१८।३७।१३	८।१७।०४	९।२७।०४	८।०९।३१	८।१६।४६	१८
१९	७।०२।५४।४३	०३।१८।५७।४८	६।१६।१३।५८	७।०७।३८।२४	२।१६।२५।४२	८।१९।३२।५४	८।१७।०९	९।२७।०१	८।०९।३४	८।१६।४८	१९
२०	७।०३।५५।१६	०४।०१।३९।२०	६।१६।५४।३९	७।०९।१२।१२	२।१६।२१।३०	८।२०।२८।००	८।१७।१५	९।२६।५८	८।०९।३७	८।१६।५०	२०
२१	७।०४।५५।५०	०४।१४।००।३२	६।१७।३५।२२	७।१०।४५।४८	२।१६।१७।०६	८।२१।२२।३०	८।१७।२१	८।२६।५५	८।०९।४०	८।१६।५२	२१
२२	७।०५।५६।२६	०४।२६।०६।४०	६।१८।१६।०७	७।१२।१९।१२	२।१६।१२।३०	८।२२।१६।२४	८।१७।२७	९।२६।५१	८।०९।४३	८।१६।५४	२२
२३	७।०६।५७।०४	०५।०८।०२।५८	६।१८।५६।५४	७।१३।५२।३०	२।१६।०७।४८	८।२३।०९।४२	८।१७।३३	९।२६।४८	८।०९।४६	८।१६।५५	२३
२४	७।०७।५७।४४	०५।१९।५३।५२	६।१९।३७।४४	७।१५।२५।३६	२।१६।०२।५४	८।२४।०२।२४	८।१७।३९	९।२६।४५	८।०९।५०	८।१६।५७	२४
२५	७।०८।५८।२५	०६।०१।४३।३१	६।२०।१८।३६	७।१६।५८।२९	२।१५।५७।४७	८।२४।५४।१७	८।१७।४५	९।२६।४२	८।०९।५३	८।१६।५९	२५
२६	७।०९।५९।०८	०६।१३।३४।५९	६।२०।५९।३०	७।१८।३१।१७	२।१५।५२।२९	८।२५।४४।३५	८।१७।५१	९।२६।३९	८।०९।५६	८।१७।०१	२६
२७	७।१०।५९।५२	०६।२५।३०।३७	६।२१।४०।२६	७।२०।०३।५३	२।१५।४६।०५	८।२६।३६।०५	८।१७।५७	९।२६।३५	८।०९।५९	८।१७।०३	२७
२८	७।१२।००।३८	०७।०७।३१।५८	६।२२।२१।२४	७।२१।३५।२९	२।१५।४१।२९	८।२७।२५।५३	८।१८।०३	९।२६।३२	८।१०।०३	८।१७।०५	२८
२९	७।१३।०१।२५	०७।१९।४०।०७	६।२३।०२।२४	७।२३।०८।४७	२।१५।३५।४७	८।८२।१४।४७	८।१८।०९	९।२६।२९	८।१०।०६	८।१७।०७	२९
३०	७।१४।०२।१४	०८।०१।५५।५२	६।२३।४३।२६	७।२४।४१।०५	२।१५।२९।५३	८।२९।०२।५९	८।१८।१६	९।२६।२६	८।१०।०९	८।१७।०९	३०

दिसम्बर सन् १९८९ ई० प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम घं० ५ मि० ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशाः २३°।४३'।०८" मासारंभे वैंकटेश (प्लूटो) ६।२२।२०

ता० दिसं०	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अ. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु (वक्री) रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क.	राहु रा. अं. क.	हर्षल रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	ता० दिसं०
१	७।१५।०३।०२	८।१४।२०।००	६।२४।२४।३०	७।२६।१३।१०	२।१५।२३।५२	८।२९।५०।१०	८।१८।२२	९।२६।२३	८।१०।१२	८।१७।११	१
२	७।१६।०३।५३	८।२६।५३।३८	६।२५।०५।३६	७।२७।४५।१३	२।१५।१७।४०	९।००।३६।२८	८।१८।२८	९।२६।२०	८।१०।१६	८।१७।१३	२
३	७।१७।०४।४५	९।०९।३८।२०	६।२५।४६।४५	७।२९।१६।५८	२।१५।११।३२	९।०१।२१।५२	८।१८।३५	९।२६।१६	८।१०।१९	८।१७।१५	३
४	७।१८।०५।३७	९।२२।३६।१३	६।२६।२७।५६	८।००।४८।३४	२।१५।०४।५२	९।०२।०६।२२	८।१८।४२	९।२६।१३	८।१०।२३	८।१७।१७	४
५	७।१९।०६।३०	१०।०५।४९।४७	६।२७।०९।०९	८।०२।१९।५८	२।१४।५८।१६	९।०२।४९।४०	८।१८।४८	९।२६।१०	८।१०।२६	८।१७।१९	५
६	७।२०।०७।२३	१०।१९।२९।३४	६।२७।५०।२४	८।०३।५१।०९	२।१४।५१।३३	९।०३।३१।५७	८।१८।५४	९।२६।०७	८।१०।२९	८।१७।२१	६
७	७।२१।०८।१७	११।०३।१३।३६	६।२८।३१।४२	८।०५।२२।०३	२।१४।४४।४५	९।०४।१३।०९	८।१९।०१	९।२६।०४	८।१०।३३	८।१७।२३	७
८	७।२२।०९।१२	११।१७।२६।३७	६।२९।१३।०२	८।०६।५२।३३	२।१४।३७।४५	९।०४।५४।०९	८।१९।०७	९।२६।०१	८।१०।३६	८।१७।२५	८
९	७।२३।१०।०८	००।०१।५९।१७	६।२९।५४।२४	८।०८।२२।४५	२।१४।३०।४२	९।०५।३१।५१	८।१९।१४	९।२५।५७	८।१०।४०	८।१७।२७	९
१०	७।२४।११।०५	००।१६।४७।३६	७।००।३५।४८	८।०९।५२।२७	२।१४।२३।३३	९।०६।०९।२१	८।१९।२०	९।२५।५४	८।१०।४३	८।१७।२९	१०
११	७।२५।१२।०३	०१।०१।४४।५२	७।०१।१७।१४	८।११।२१।३३	२।१४।१६।१५	९।०६।४५।२७	८।१९।२७	९।२५।५१	८।१०।४७	८।१७।३१	११
१२	७।२६।१३।०२	०१।१६।४२।१९	७।०१।५८।४२	८।१२।५०।०३	२।१४।०८।५४	९।०७।२०।१५	८।१९।३४	९।२५।४८	८।१०।५०	८।१७।३४	१२
१३	७।२७।१४।०१	०२।०१।३०।३२	७।०२।४०।१२	८।१४।१७।४५	२।१४।०१।२७	९।०७।५३।३३	८।१९।४१	९।२५।४५	८।१०।५४	८।१७।३६	१३
१४	७।२८।१५।००	०२।१६।०१।०४	७।०३।२१।४४	८।१५।४४।२६	२।१३।५३।५६	९।०८।२५।२०	८।१९।४७	९।२५।४१	८।१०।५७	८।१७।३८	१४
१५	७।२९।१६।००	३।००।०७।४८	७।०४।०३।१८	८।१७।१०।०२	२।१३।४६।१४	९।०८।५५।३८	८।१९।५४	९।२५।३८	८।११।०१	८।१७।४०	१५
१६	८।००।१७।०१	०३।१३।४७।३५	७।०४।४४।५४	८।१८।३४।२०	२।१३।३८।३२	९।०९।२४।२०	८।२०।०१	९।२५।३५	८।११।०५	८।१७।४२	१६
१७	८।०१।१८।०३	०३।२७।००।०७	७।०५।२६।३२	८।१९।५७।०२	२।१३।३०।५०	९।०९।५१।२२	८।२०।०८	९।२५।३२	८।११।०८	८।१७।४४	१७
१८	८।०२।१९।०६	०४।०९।४७।३५	७।०६।०८।१२	८।२१।१७।५६	२।१३।२२।५६	९।१०।१६।३२	८।२०।१५	९।२५।२९	८।११।१२	८।१७।४७	१८
१९	८।०३।२०।१०	०४।२२।१३।४४	७।०६।४९।५४	८।२२।३६।३७	२।१३।१५।०१	९।१०।४०।०१	८।२०।२२	९।२५।२६	८।११।१५	८।१७।४९	१९
२०	८।०४।२१।१५	०५।०४।२३।२२	७।०७।३१।३९	८।२३।५२।४९	२।१३।०७।०७	९।११।०१।३७	८।२०।२८	९।२५।२२	८।११।१९	८।१७।५१	२०
२१	८।०५।२२।२१	०५।१६।२१।३९	७।०८।१३।२६	८।२५।०५।५५	२।१२।५९।०६	९।११।२१।१९	८।२०।३५	९।२५।१९	८।११।२२	८।१७।५३	२१
२२	८।०६।२३।२८	०५।२८।१३।४२	७।०८।५५।१६	८।२६।१५।३७	२।१२।५१।०१	९।११।३९।०१	८।२०।४२	९।२५।१६	८।११।२६	८।१७।५६	२२
२३	८।०७।२४।३५	०६।१०।०४।१७	७।०९।३७।०९	८।२७।२१।१३	२।१२।४२।५५	९।११।५४।३७	८।२०।४९	९।२५।१३	८।११।३०	८।१७।५८	२३
२४	८।०८।२५।४२	०६।२१।५७।३४	७।१०।१९।०४	८।२८।२२।१२	२।१२।३४।४८	९।१२।०८।१२	८।२०।५६	९।२५।१०	८।११।३३	८।१८।००	२४
२५	८।०९।२६।५०	०७।०३।२६।५९	७।११।०१।०१	८।२९।१७।४२	२।१२।२६।४२	९।१२।१९।३०	८।२१।०३	९।२५।०६	८।११।३७	८।१८।०२	२५
२६	८।१०।२७।५९	०७।१६।०५।०५	७।११।४३।००	९।००।०७।०६	२।१२।१८।३६	९।१२।२८।४२	८।२१।१०	९।२५।०३	८।११।४०	८।१८।०५	२६
२७	८।११।२९।०९	०७।२८।२३।३७	७।१२।२५।०२	९।००।४९।१८	२।१२।१०।२४	९।१२।३५।३०	८।२१।१७	९।२५।००	८।११।४४	८।१८।०७	२७
२८	८।१२।३०।१९	०८।१०।५३।३०	७।१३।०७।०६	९।०१।२३।४८	२।१२।०२।१८	९।१२।४०।००	८।२१।२४	९।२४।५७	८।११।४८	८।१८।०९	२८
२९	८।१३।३१।२९	०८।२३।३५।०६	७।१३।४९।१२	९।०१।४९।१८	२।११।५४।०५	९।१२।४२।०६	८।२१।३१	९।२४।५४	८।११।५१	८।१८।११	२९
३०	८।१४।३२।३९	०९।०६।२८।२३	७।१४।३१।२०	९।०२।०५।११	२।११।४५।५९	९।१२।४१।४७	८।२१।३८	९।२४।५१	८।११।५५	८।१८।१४	३०
३१	८।१५।३३।४९	०९।१९।३३।१६	७।१५।१३।३०	९।०२।१०।२३	२।११।३७।५३	९।१२।३८।५९	८।२१।४६	९।२४।४७	८।११।५८	८।१८।१६	३१

जनवरी सन् १९९० ई० प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम घं० ५ मि० ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशाः २३°।४३'।१३" मासारंभे वैंकटेश (प्लूटो) ६।२३।२२

ता० जन०	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध (वक्री) रा. अं. क. वि.	गुरु (वक्री) रा. अं. क. वि.	शुक्र (वक्री) रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क.	राहु रा. अं. क.	हर्षल रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	ता० जन०
१	८।१६।३४।५९	१०।०२।४९।४२	७।१५।५५।४२	९।०२।०४।३०	२।११।२९।४७	९।१२।३३।४१	८।२१।५३	९।२४।४४	८।१२।०२	८।१८।१८	१
२	८।१७।३६।०९	१०।१६।१७।५५	७।१६।३७।५६	९।०१।४६।४७	२।११।२१।४१	९।१२।२५।५३	८।२२।००	९।२४।४१	८।१२।०६	८।१८।२०	२
३	८।१८।३७।१९	१०।२९।५८।१४	७।१७।२०।०४	९।०१।१७।१६	२।११।१३।४०	९।१२।१५।३४	८।२२।०७	९।२४।३८	८।१२।०९	८।१८।२३	३
४	८।१९।३८।२८	११।१३।५०।५७	७।१८।२।२४	९।००।३५।५८	२।११।०५।४१	९।१२।०२।४०	८।२२।१४	९।२४।३५	८।१२।१३	८।१८।२५	४
५	८।२०।३९।३८	११।२७।५५।४७	७।१८।४४।४५	८।२९।४३।५२	२।१०।५७।४५	९।११।४७।२२	८।२२।२१	९।२४।३१	८।१२।१६	८।१८।२७	५
६	८।२१।४०।४७	००।१२।११।४१	७।१९।२७।०७	८।२८।४१।५०	२।१०।४९।५०	९।११।२९।३४	८।२२।२८	९।२४।२८	८।१२।२०	८।१८।२९	६
७	८।२२।४१।५५	००।२६।३६।०६	७।२०।०९।३२	८।२७।३१।५२	२।१०।४१।५९	९।११।०९।२२	८।२२।३५	९।२४।२५	८।१२।२४	८।१८।३२	७
८	८।२३।४३।०३	०१।११।०५।०९	७।२०।५१।५८	८।२६।१५।५२	२।१०।३४।१६	९।१०।४६।५२	८।२२।४२	९।२४।२२	८।१२।२७	८।१८।३४	८
९	८।२४।४४।११	०१।२५।३३।३८	७।२१।३४।२६	८।२४।५६।२८	२।१०।२६।३५	९।१०।२२।१०	८।२२।४९	९।२४।१९	८।१२।३१	८।१८।३६	९
१०	८।२५।४५।१९	०२।०९।५५।३९	७।२२।१६।५५	८।२३।२६।१०	२।१०।१८।५५	९।०९।५५।२२	८।२२।५७	९।२४।१६	८।१२।३४	८।१८।३८	१०
११	८।२६।४६।२६	०२।२४।०५।२३	७।२२।५९।२६	८।२२।१७।२२	२।१०।११।२८	९।०९।२६।३४	८।२३।०४	९।२४।१२	८।१२।३८	८।१८।४१	११
१२	८।२७।४७।३२	०३।०७।५७।५७	७।२३।४१।५९	८।२१।०२।४५	२।१०।०३।५७	९।०८।५६।०३	८।२३।११	९।२४।०९	८।१२।४१	८।१८।४३	१२
१३	८।२८।४८।३८	०३।२१।३०।०७	७।२४।२४।३४	८।१९।५३।५७	२।०९।५५।३९	९।०८।२३।५१	८।२३।१८	९।२४।०६	८।१२।४५	८।१८।४५	१३
१४	८।२९।४९।४५	०४।०४।४०।२५	७।२५।०७।११	८।१८।५२।५१	२।०९।४९।२१	९।०७।५०।२१	८।२३।२५	९।२४।०३	८।१२।४८	८।१८।४८	१४
१५	९।००।५०।५१	०४।१७।२९।१९	७।२५।४९।५१	८।१८।००।१५	२।०९।४२।१५	९।०७।१५।३९	८।२३।३२	९।२४।००	८।१२।५२	८।१८।५०	१५
१६	९।०१।५१।५६	०४।२९।५८।५२	७।२६।३२।३३	८।१७।१७।०३	२।०९।३५।१४	९।०६।४०।०३	८।२३।३९	९।२३।५६	८।१२।५५	८।१८।५२	१६
१७	९।०२।५३।०२	०५।१२।१२।२२	७।२७।१५।१७	८।१६।४३।२१	२।०९।२८।१८	९।०६।०३।४५	८।२३।४६	९।२३।५३	८।१२।५९	८।१८।५४	१७
१८	९।०३।५४।०७	०५।२४।१४।००	७।२७।५८।०३	८।१६।१९।२४	२।०९।२१।२७	९।०५।२६।५७	८।२३।५३	९।२३।५०	८।१३।०२	८।१८।५६	१८
१९	९।०४।५५।१२	०६।०६।०८।२४	७।२८।४०।५१	८।१६।०४।३३	२।०९।१४।५०	९।०४।४९।५७	८।२४।००	९।२३।४७	८।१३।०६	८।१८।५९	१९
२०	९।०५।५६।१६	०६।१८।००।२७	७।२९।२३।४२	८।१५।५८।४५	२।०९।८।१८	९।०४।१३।०३	८।२४।०७	९।२३।४४	८।१३।०९	८।१९।०१	२०
२१	९।०६।५७।२०	०६।२९।४८।४१	८।००।०६।३५	८।१६।०१।१४	२।०९।०१।४८	९।०३।३५।३२	८।२४।१४	९।२३।४०	८।१३।१२	८।१९।०३	२१
२२	९।०७।५८।२४	०७।११।५६।०३	८।००।४९।३०	८।१६।११।३२	२।०८।५५।३३	९।०३।००।३०	८।२४।२१	९।२३।३७	८।१३।१६	८।१९।०५	२२
२३	९।०८।५९।२७	०७।२४।०७।५२	८।०१।३२।२७	८।१६।२८।५६	२।०८।४९।२३	९।०२।२५।२६	८।२४।२८	९।२३।३४	८।१३।१९	८।१९।०७	२३
२४	९।१०।००।३०	०८।०६।३३।२०	८।०२।१५।२७	८।१६।५३।०२	२।०८।४३।२५	९।०१।५१।२०	८।२४।३५	९।२३।३१	८।१३।२२	८।१९।१०	२४
२५	९।११।०१।३२	०८।१९।१४।३२	८।०२।५८।३७	८।१७।२३।०५	२।०८।३७।३०	९।०१।१८।३२	८।२४।४२	९।२३।२८	८।१३।२६	८।१९।१२	२५
२६	९।१२।०२।३४	०९।०२।१२।२७	८।०३।४१।४७	८।१७।५८।३२	२।०८।३१।५०	९।००।४७।१४	८।२४।४९	९।२३।२५	८।१३।२९	८।१९।१४	२६
२७	९।१३।०३।३५	०९।१५।२६।५९	८।०४।२८।५५	८।१८।३९।०२	२।०८।२६।२०	९।००।१७।३८	८।२४।५६	९।२३।२२	८।१३।३२	८।१९।१६	२७
२८	९।१४।०४।३४	०९।२८।५६।५८	८।०५।०८।०५	८।१९।२३।५५	२।०८।२०।५५	८।२९।४९।४३	८।२५।०३	९।२३।१८	८।१३।३६	८।१९।१८	२८
२९	९।१५।०५।३२	१०।१२।४०।३२	८।०५।५१।१७	८।२०।१२।५३	२।०८।१५।४३	८।२९।२३।४९	८।२५।१०	९।२३।१५	८।१३।३९	८।१९।२०	२९
३०	९।१६।०६।३०	१०।२६।३५।०६	८।०६।३४।२५	८।२१।०५।३७	२।०८।१०।४३	८।२९।००।०७	८।२५।१७	९।२३।१२	८।१३।४२	८।१९।२२	३०

फरवरी सन् १९९० ई० प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम घं० ५ मि० ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशाः २३°।४३'।१८" मासारंभे वेंकटेश (प्लूटो) ६।२३।५८

ता० फर०	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु (वक्री) रा. अं. क. वि.	शुक्र (वक्री) रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क.	राहु रा. अं. क.	हर्षल रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	ता० फर०
१	९।१८।०८।२१	११।२४।४६।११	८।०८।००।५०	८।२३।००।३६	२।०८।०९।०६	८।२८।१९।१२	८।२५।३०	९।२३।०६	८।१३।४८	८।१९।२६	१
२	९।१९।०९।१५	००।०८।५७।३८	८।०८।४४।०४	८।२४।०२।३०	२।०७।५६।३६	८।२८।०२।१८	८।२५।३७	९।२३।०२	८।१३।५१	८।१९।२८	२
३	९।२०।१०।०८	००।२३।०९।३०	८।०९।२७।३१	८।२५।०६।५४	२।०७।५२।१२	८।२७।४७।४८	८।२५।४३	९।२२।५९	८।१३।५४	८।१९।३०	३
४	९।२१।१०।५९	०९।०७।१९।३८	८।१०।१०।५०	८।२६।१३।३६	२।०७।४८।०६	८।२७।३५।४२	८।२५।५०	९।२२।५६	८।१३।५७	८।१९।३२	४
५	९।२२।११।४९	०९।२१।२५।५०	८।१०।५४।११	८।२७।२२।२४	२।०७।४४।०६	८।२७।२६।०६	८।२५।५७	८।२२।५३	८।१४।००	८।१९।३४	५
६	९।२३।१२।३८	०२।०५।२५।४८	८।११।३७।३४	८।२८।३३।१२	२।०७।४०।१८	८।२७।१९।००	८।२६।०३	९।२२।५०	८।१४।०३	८।१९।३६	६
७	९।२४।१३।२४	०२।१९।१७।१३	८।१२।२१।००	८।२९।४५।५३	२।०७।३६।४१	८।२७।१४।१७	८।२६।१०	९।२२।४७	८।१४।०६.	८।१९।३८	७
८	९।२५।१४।०९	०३।०२।५७।४९	८।१३।०४।२८	९।०१।००।११	२।०७।३३।१७	८।२७।१२।११	८।२६।१६	९।२२।४३	८।१४।०९	८।१९।४०	८
९	९।२६।१४।५३	०३।१६।२५।२८	८।१३।४७।५८	९।०२।१६।१३	२।०७।३०।०५	८।२७।१२।२३	८।२६।२३	९।२२।४०	८।१४।१२	८।१९।४२	९
१०	९।२७।१५।३६	०३।२९।३८।२९	८।१४।३१।३०	९।०३।३३।३५	२।०७।२७।०५	८।२७।१५।०५	८।२६।२९	९।२२।३७	८।१४।१५	८।१९।४४	१०
११	९।२८।१६।२८	०४।१२।३५।५२	८।१५।१५।०५	९।०४।५२।२३	२।०७।२४।११	८।२७।२०।११	८।२६।३६	९।२२।३४	८।१४।१८	८।१९।४६	११
१२	९।२९।१६।५८	०४।२५।१६।२७	८।१५।५८।४२	९।०६।१२।३५	२।०७।२१।३५	८।२७।२७।३५	८।२६।४२	९।२२।३१	८।१४।२१	८।१९।४८	१२
१३	१०।००।१७।३७	०५।०७।४४।०१	८।१६।४२।२१	९।०७।३४।०५	२।०७।१९।०५	८।२७।३७।११	८।२६।४९	९।२२।२७	८।१४।२४	८।१९।५०	१३
१४	१०।०१।१८।१५	०५।१९।५७।१९	८।१७।२६।०२	९।०८।५६।४७	२।०७।१६।५३	८।२७।४८।५९	८।२६।५५	९।२२।२४	८।१४।२६	८।१९।५२	१४
१५	१०।०२।१८।५१	०६।०२।००।०२	८।१८।०९।४५	९।१०।२०।३५	२।०७।१४।४७	८।२८।०२।५९	८।२७।०१	९।२२।२१	८।१४।२९	८।१९।५३	१५
१६	१०।०३।१९।२६	०६।१३।५५।३७	८।१८।५३।३०	९।११।४५।३४	२।०७।१२।५२	८।२८।१९।०४	८।२७।०७	९।२२।१८	८।१४।३२	८।१९।५५	१६
१७	१०।०४।१९।५९	०६।२५।४८।११	८।१९।३७।१७	९।१३।११।४०	२।०७।११।१६	८।२८।३७।१०	८।२७।१४	९।२२।१५	८।१४।३४	८।१९।५७	१७
१८	१०।०५।२०।३३	०७।०७।४२।१५	८।२०।२१।०६	९।१४।३८।४६	२।०७।०९।४६	८।२८।५७।१६	८।२७।२०	९।२२।१२	८।१४।३७	८।१९।५९	१८
१९	१०।०६।२१।०४	०७।१९।४२।३२	८।२१।०४।५७	९।१६।०६।५८	२।०७।०८।३४	८।२९।१९।१०	८।२७।२६	९।२२।०८	८।१४।४०	८।१९।००	१९
२०	१०।०७।२१।३५	०८।०१।५३।४३	८।२१।४८।४९	९।१७।३६।१६	२।०७।०७।२८	८।२९।४२।५८	८।२७।३२	९।२२।०५	८।१४।४२	८।२०।०२	२०
२१	१०।०८।२२।०४	०८।१४।२०।०९	८।२२।३२।४३	९।१९।०६।२८	२।०७।०६।३४	९।००।०८।२८	८।२७।३८	९।२२।०२	८।१४।४५	८।२०।०४	२१
२२	१०।०९।२२।३१	०८।२७।०५।२७	८।२३।१६।३८	९।२०।३७।४६	२।०७।०५।५८	९।००।३५।४०	८।२७।४४	९।२१।५९	८।१४।४७	८।२०।०५	२२
२३	१०।१०।२२।५८	०९।१०।१२।१०	८।२४।००।३४	९।२२।०९।५७	२।०७।०५।२७	९।०१।०४।३३	८।२७।५०	९।२१।५६	८।१४।५०	८।२०।०७	२३
२४	१०।११।२३।२२	०९।२३।४१।२२	८।२४।४४।३२	९।२३।४३।०९	२।०७।०५।०९	९।०१।३४।५७	८।२७।५५	९।२१।५२	८।१४।५२	८।२०।०९	२४
२५	१०।१२।२३।४५	१०।०७।३२।१६	८।२५।२८।३२	९।२५।१७।२७	२।०७।०५।०९	९।०२।०६।५१	८।२८।०१	९।२१।४९	८।१४।५४	८।२०।१०	२५
२६	१०।१३।२४।०६	१०।२१।४२।०५	८।२६।१२।३४	९।२६।५२।३९	२।०७।०५।१५	९।०२।४०।०९	८।२८।०७	९।२१।४६	८।१४।५७	८।२०।१२	२६
२७	१०।१४।२४।२६	११।०६।०६।१७	८।२६।५६।३८	९।२८।२८।५१	२।०७।०५।३९	९।०३।१४।५१	८।२८।१२	९।२१।४३	८।१४।५९	८।२०।१३	२७
२८	१०।१५।२४।४३	११।२०।३८।५७	८।२७।४०।४४	१०।००।०६।०३	२।०७।०६।०९	९।०३।५०।५१	८।२८।१८	९।२१।४०	८।१५।०१	८।२०।१५	२८

मार्च सन् १९९० ई० प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम घं० ५ मि० ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशाः २३°।४३'।२२" मासारंभे वैंकटेश (प्लूटो) ६।२४।०३ वक्री

ता० मार्च	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क.	राहु रा. अं. क.	हर्षल रा. अं. क.	नेपच्यून रा. अं. क.	ता० मार्च
१	१०।१६।२४।५८	००।०५।१३।४३	८।२८।२४।५१	१०।०१।४४।२०	२।०७।०६।५०	९।०४।२८।०८	८।२८।२४	९।२९।३७	८।१५।०३	८।२०।१६	१
२	१०।१७।२५।१२	००।१९।१४।३९	८।२९।०८।५९	१०।०३।२३।३२	२।०७।०७।५०	९।०५।०६।३८	८।२८।२९	९।२९।३३	८।१५।०५	८।२०।१८	२
३	१०।१८।२५।२४	०१।०४।०६।५३	८।२९।५३।०९	१०।०५।०३।५०	२।०७।०८।५६	९।०५।४६।२०	८।२८।३५	९।२९।३०	८।१५।०७	८।२०।१९	३
४	१०।१९।२५।३४	०१।१८।१७।०५	९।००।३७।२०	१०।०६।४५।१४	२।०७।१०।२०	९।०६।२७।०८	८।२८।४०	९।२९।२७	८।१५।१०	८।२०।२०	४
५	१०।२०।२५।४२	०२।०२।१३।३०	९।०१।२१।३२	१०।०८।२७।३८	२।०७।११।५०	९।०७।०९।०२	८।२८।४५	९।२९।२४	८।१५।१२	८।२०।२२	५
६	१०।२१।२५।४७	०२।१५।५५।३५	९।०२।०५।४५	१०।१०।११।०२	२।०७।१३।३२	९।०७।५१।५६	८।२८।५०	९।२९।२१	८।१५।१३	८।२०।२३	६
७	१०।२२।२५।५०	०२।२९।२३।३७	९।०२।४९।५९	१०।११।५५।३७	२।०७।१५।२५	९।०८।३५।५५	८।२८।५६	९।२९।१८	८।१५।१५	८।२०।२४	७
८	१०।२३।२५।५१	०३।१२।३८।२०	९।०३।३४।१४	१०।१३।४१।१३	२।०७।१७।३७	९।०९।२०।४९	८।२९।०१	९।२९।१४	८।१५।१७	८।२०।२६	८
९	१०।२४।२५।५०	०३।२५।४०।२७	९।०४।१८।३१	१०।१५।२८।०१	२।०७।१९।५५	९।१०।०६।३७	८।२९।०६	९।२९।११	८।१५।१९	८।२०।२७	९
१०	१०।२५।२५।४८	०४।०८।३०।३७	९।०५।०२।४९	१०।१७।१५।५५	२।०७।२२।१९	९।१०।५३।१९	८।२९।११	९।२९।०८	८।१५।२१	८।२०।२८	१०
११	१०।२६।२५।४३	०४।२१।०९।२२	९।०५।४७।०९	१०।१९।०४।५२	२।०७।२५।०१	९।११।४०।५५	८।२९।१६	९।२९।०५	८।१५।२२	८।२०।२९	११
१२	१०।२७।२५।३६	०५।०३।३७।१०	९।०६।३१।३१	१०।२०।५५।०७	२।०७।२७।५५	९।१२।२९।१९	८।२९।२०	९।२९।०२	८।१५।२४	८।२०।३१	१२
१३	१०।२८।२५।२७	०५।१५।५४।३८	९।०७।१५।५५	१०।२२।४६।२५	२।०७।३०।५५	९।१३।१८।३१	८।२९।२५	९।२०।५८	८।१५।२६	८।२०।३२	१३
१४	१०।२९।२५।१६	०५।२८।०२।४६	९।०८।००।२१	१०।२४।३८।४९	२।०७।३४।१३	९।१४।०८।३१	८।२९।३०	९।२०।५५	८।१५।२७	८।२०।३३	१४
१५	११।००।२५।०३	०६।१०।०३।०४	९।०८।४४।४८	१०।२६।३२।२४	२।०७।३७।३६	९।१४।५९।१२	८।२९।३४	९।२०।५२	८।१५।२९	८।२०।३४	१५
१६	११।०१।२४।४९	०६।२१।५७।४६	९।०९।२९।१७	१०।२८।२७।००	२।०७।४१।१२	९।१५।५०।३६	८।२९।३९	९।२०।४९	८।१५।३१	८।२०।३५	१६
१७	११।०२।२४।३३	०७।०३।४९।४६	९।१०।१३।४८	११।००।२२।४८	२।०७।४४।५४	९।१६।४२।४२	८।२९।४३	९।२०।४६	८।१५।३२	८।२०।३६	१७
१८	११।०३।२४।१६	०७।१५।४२।४४	९।१०।५८।१९	११।०२।१९।३६	२।०७।४८।५४	९।१७।३५।२४	८।२९।४८	९।२०।४३	८।१५।३३	८।२०।३७	१८
१९	११।०४।२३।५६	०७।२७।४०।५६	९।११।४२।५१	११।०४।१७।२४	२।०७।५३।००	९।१८।२८।४८	८।२९।५२	९।२०।३९	८।१५।३५	८।२०।३८	१९
२०	११।०५।२३।३५	०८।०९।४९।०५	९।१२।२७।२४	११।०६।१६।०६	२।०७।५७।१८	९।१९।२२।४८	८।२९।५६	९।२०।३६	८।१५।३६	८।२०।३९	२०
२१	११।०६।२३।१२	०८।२२।१२।०६	९।१३।११।५८	११।०८।१५।४२	२।०८।०१।४८	९।२०।१७।१८	९।००।०१	९।२०।३३	८।१५।३७	८।२०।४०	२१
२२	११।०७।२२।४७	०९।०४।५४।४५	९।१३।५६।३३	११।१०।१५।४३	२।०८।०६।२९	९।२१।१२।२३	९।००।०५	९।२०।३०	८।१५।३८	८।२०।४१	२२
२३	११।०८।२२।२१	०९।१८।०९।०८	९।१४।४१।०९	११।१२।१६।४७	२।०८।११।१७	९।२२।०८।०५	९।००।०९	९।२०।२७	८।१५।४०	८।२०।४१	२३
२४	११।०९।२१।५३	१०।०१।३४।०१	९।१५।२५।४६	११।१४।१८।०५	२।०८।१६।१७	९।२३।०४।१७	९।००।१३	९।२०।२३	८।१५।४१	८।२०।४२	२४
२५	११।१०।२१।२२	१०।१५।३४।०९	९।१६।१०।२४	११।१६।१९।३५	२।०८।२१।२३	९।२४।००।५३	९।००।१६	९।२०।२०	८।१५।४२	८।२०।४३	२५
२६	११।११।२०।५०	१०।२९।५९।३४	९।१६।५५।०३	११।१८।२१।०५	२।०८।२६।४७	९।२४।५७।५९	९।००।२०	९।२०।१७	८।१५।४३	८।२०।४४	२६

ता० ७ से २१ अप्रैल सन् १९८९ ई० राष्ट्रीय मिति

श्री संवत् २०४६ शकः १९११ चैत्र शुक्ल पक्षः १

ता. ७ से २१ अप्रैल सन् १९८९ ई. राष्ट्रीय मिति १७ चैत्र से १ वैशाख तक। उत्तरायण गोल, वसन्त ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

ता. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखे हि. चैत्र	तारीखे मु. शाबान	तारीखे अं. अप्रैल	चन्द्र संचार स्टैं. टा. रा. घं. मि.
०	१	गु.	५७	४७	२९	१६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०
१७	२	गु.	४८	५५	२५	४२	अश्वि	२९	१०	१७	४८	वै०	६/२६	५७/५३	बा	१५	२७	३१	१३	६	०८	१८	३७	२५	२९	७	मेष
१८	३	श.	४१	००	२२	३१	भ	२२	४७	१५	१४	प्री	२३	०९	तै	१२	०३	३१	१७	६	०७	१८	३८	२६	२१	८	वृ. २०।४३
१९	४	र	३४	२७	१९	५३	कृ	१७	४२	१३	११	आ	१९	५३	व	९	०७	३१	२२	६	०६	१८	३८	२७	२	९	वृष
२०	५	च	२९	४२	१७	५७	रो	१४	१५	११	४६	सौ	१७	११	ब	६	४९	३१	२६	६	०४	१८	३९	२८	३	१०	मि. २३।२७
२१	६	म	२६	५५	१६	४९	मृ	१२	४२	११	०८	शो	१५	०७	तै	१६	४९	३१	३०	६	०३	१८	४०	२९	४	११	मिथुन
२२	७	बु	२६	५५	१६	३२	आ	१३	१५	११	२०	अ	१३	४५	व	१६	३२	३१	३४	६	०२	१८	४०	३०	५	१२	मिथुन
२३	८	गु	२७	४२	१७	०६	पुन	१५	५२	१२	२२	सु	१३	०२	ब	१७	०६	३१	३८	६	०१	१८	४१	वै१	६	१३	क. ६।०७
२४	९	शु	३१	०२	१८	२५	पु	२०	२०	१४	०८	धृ	१२	५६	कौ	१८	२५	३१	४२	६	००	१८	४२	२	७	१४	कर्क
२५	१०	श	३५	५२	२०	२०	आश्ले	२६	२२	१६	३२	शू	१३	१९	तै	७	१९	३१	४६	५	५९	१८	४२	३	८	१५	सिं. १६।३२
२६	११	र	४१	४७	२२	४१	म	३३	३०	१९	२२	ग	१४	०४	व	९	२८	३१	५०	५	५८	१८	४३	४	९	१६	सिंह
२७	१२	च	४८	१७	२५	१६	पू.फा	४१	१२	२२	२६	वृ	१५	०२	ब	११	५८	३१	५४	५	५७	१८	४३	५	१०	१७	कं. २९।१३
२८	१३	म	५४	५२	२७	५३	उ.फा	४९	०५	२५	३४	ध्रु	१६	०५	कौ	१४	३५	३१	५८	५	५६	१८	४४	६	११	१८	कन्या
२९	१४	बु	६०	०	—	—	ह	५६	४५	२८	३७	व्या	१७	०७	ग	१७	१०	३२	०२	५	५५	१८	४५	७	१२	१९	कन्या
३०	१४	गु	१	१५	६	२४	चि	६०	०	—	—	ह	१८	०१	व	६	२४	३२	०६	५	५४	१८	४५	८	१३	२०	तु. १८।०३
वै१	१५	शु	७	०५	८	४३	चि	३	५७	७	२८	व	१८	४५	ब	८	४३	३२	१०	५	५३	१८	४६	९	१४	२१	तुला

प्रतिपदा का क्षय है अतः नवरात्र प्रारंभ, संवत्सराम्भ ६ अप्रैल गुरुवार को ९।०३ बजे बाद A
चन्द्रदर्शन मु० १५ सिंधारा B आन्दोलन तृतिया सरहूल (बि.) रमजान मु. ९ रोजा प्रारंभ,
मृगशिर में मंगल १०।०७ अश्वि मेष में बुध २६।३७ गणगौरी पूजन, मत्स्य जयन्ती, B
भद्रा ९।०७ से १९।५३ तक, वक्री हर्षल १४।१८. A होगा, इसी दिन श्रीगौतम ज
लक्ष्मीपूजन C दुर्गा ८, मेलाश्री मनसा देवी अन्नपूर्णा पूजा, जैन आंयबिल ओली प्रारंभ, मेला वैशाखी
अश्वि मेष में शुक्र २६।२६, स्कन्द ६, मेला माईसरखाना,
भद्रा १६।३२ से २८।४३ तक,
सं० अश्वि. मेष में सूर्य २१।४५. मु. ३० पुण्यकाल १५।२१ से, वक्री नेपच्यून २९।०९ C
श्रीराम ९ व्रत सबका, नवरात्र समाप्त,
भरणी में बुध १४।१६
भद्रा ९।२८ से २२।४१ तक, बुध का उदय पश्चिम में २२।२५. कामदा ११ व्रत सबका, E
E व्यतिपात महापात १०।३१ से १४।५२ तक
मिथुन में मंगल २९।४०, भौम प्रदोष व्रत, श्रीमहावीर जयन्ती (जैन) अनंग त्रयोदशी
रोहिणी २ में गुरु १०।५५. D ओली समाप्त, चैत्री १५, राष्ट्रीय वैशाख प्रारंभ,
भद्रा ६।२४ से १९।३६ तक, सायन वृष मे सूर्य ८।१०, ग्रीष्म ऋतु प्रारंभ, सत्यव्रत,
वैशाख स्नान प्रारंभ, सिद्धाचल यात्रा, श्रीहनुमान जयन्ती (द. भारत) जैन आयबिल D

चैत्र शु ८ गुरौ प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ५८५२

(दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की है)

चैत्र शु १५ शुक्रे प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ५८६०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	०२	०१	००	०१	००	०८	१०	०४
२९	२९	२६	०८	१२	०१	२०	०८	०८
२०	४२	१७	३३	०३	२३	०८	४०	४०
११	४६	३७	२१	५३	५०	१५	२९	२९
५८	७५१	३७	१२२	१२	७८	००	०३	०३
४७	००	००	२४	०४	१८	५४	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
४ रेवती	३ पुन	१ मृग	३ अश्वि	१ रोहिणी	१ अश्वि	३ पू षा	१ शत	३ मघा

बु १ शु
११ रा
सू
१०
मं २
गु
१२
श ह ९
ने
चं ३
४
८
के
६
५
७

इस नव वर्ष का प्रारम्भ गुरुवार से हुआ है। जिसका फल श्रेष्ठ है किन्तु वर्ष प्रतिपदा का क्षय बीच-बीच में विघ्न बाधा करता रहेगा। इस वर्ष राजा और मन्त्री के दोनों पद गुरु को ही प्राप्त हुए है। जिसका फल – "जो राजा हो वर्ष का, वही बने दीवान। क्षय परजा की जानिए, आधा संवत् जान ॥" विश्व के अनेक देशों की आर्थिक व्यवस्था पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। प्रजा रोग भय, दुर्भिक्ष भय से पीड़ित होगी। मंहगाई की बढ़ोत्तरी उग्ररूप धारण करेगी। मध्य यूरोप, फ्रांस, अरब राष्ट्र और अमेरिका, पूर्वी एशिया में प्रकृति प्रकोप से हानि होगी। भारतीय राजनैतिक दलों में विरोध एवं राजप्रजा में अशान्ति व्याप्त होगी। शुक्रवार का १५ मुहूर्ती चन्द्रदर्शन एवं मेष संक्रमण के समय सूर्य के साथ बुध का होना व्यापारियों के लिए लाभप्रद है। अनाज, गेहूँ, चना, मूंग, उड़द, चावल आदि में तेजी होगी। सोना, चांदी, ताँबा आदि धातु में घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी। रूई, सूत, पाट, कपड़ा में मंदी होकर तेजी होगी।

गु २
सू
१२
मं ३
१ शु
रा ११
बु
४
१०
श
चं
ह ९
ने
५ के
७
६
८

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
००	०६	०२	००	०१	००	०८	१०	०४
०७	०५	०१	२३	१३	११	२०	०८	०८
०९	४०	१३	५०	४२	१७	१२	१५	१५
२९	३२	४८	३८	११	३६	५०	०३	०३
५८	७२०	३७	१०१	१२	७४	००	०३	०३
३०	५८	०२	०६	३६	०८	१२	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ
३ अश्वि	४ चित्रा	३ मृग	४ भरणी	२ रोहिणी	४ अश्वि	३ पू षा	१ शत	३ मघा

आकाश लक्षण–पूर्वोत्तर में वायु के साथ बादल-वर्षा होगी। दिल्ली, राजस्थान, पंजाब, उ० प्र०, हरियाणा में वायु का प्रकोप बढ़ेगा। ऋतु परिवर्तन, कहीं साधारण वर्षा, बूँदा-बाँदी होगी।

श्री संवत् २०४६ शकः १९११ वैशाख कृष्ण पक्षः २

ता. २२ अप्रैल से ५ मई सन् १९८९ ई. राष्ट्रीय मिति २ से १५ वैशाख तक। उत्तरायण गोल, ग्रीष्म ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. वैशाख	मु. रमजान	अं. अप्रैल	चन्द्र संचार स्टै. टा. रा. घं. मि.
२	१	श	१२	१२	१०	४५	स्वा	१०	३०	१०	०४	सि	१९	१५	कौ	१०	४५	३२	१४	५	५२	१८	४६	१०	१५	२२	वृ. २९।४७
३	२	र	१६	३०	१२	२८	वि	१६	१३	१२	२१	व्य	१९	३०	ग	१२	२८	३२	१७	५	५२	१८	४७	११	१६	२३	वश्चिक
४	३	च	१९	५५	१३	४९	अनु	२१	०५	१४	१७	व	१९	२८	वि	१३	४९	३२	२१	५	५१	१८	४७	१२	१७	२४	वृश्चिक
५	४	म	२२	२०	१४	४६	ज्ये.	२५	०२	१५	५१	प	१९	०७	बा	१४	४६	३२	२५	५	५०	१८	४८	१३	१८	२५	ध. १५।५१
६	५	बु	२३	३७	१५	१६	मू	२७	५२	१६	५८	शि	१८	२५	तै	१५	१६	३२	२९	५	४९	१८	४९	१४	१९	२६	धनु
७	६	गु	२३	४२	१५	१७	पू.षा	२९	३०	१७	३६	सि	१७	२०	व	१५	१७	३२	३३	५	४८	१८	४९	१५	२०	२७	म. २३।३८
८	७	शु	२२	२५	१४	४५	उ.षा	२९	४७	१७	४२	सा	१५	४८	ब	१४	४५	३२	३६	५	४७	१८	५०	१६	२१	२८	मकर
९	८	श	१९	४०	१३	३८	श्र	२८	४०	१७	१४	शु	१३	५०	कौ	१३	३८	३२	४०	५	४६	१८	५०	१७	२२	२९	कुं. २८।४३
१०	९	र	१५	३०	११	५७	ध	२६	०७	१६	१२	शु	११	२३	ग	११	५७	३२	४३	५	४५	१८	५१	१८	२३	३०	कुंभ
११	१०	च	९	५०	९	४३	श	२२	०७	१४	३६	ब्र	८/२९	२९/१०	वि	९	४३	३२	४७	५	४५	१८	५१	१९	२४	म १	कुंभ
१२	११	मं	३	०५	६	५८	पू.भा	१७	००	१२	३२	वै	२५	३०	बा	६	५८	३२	५१	५	४४	१८	५२	२०	२५	२	मी. ७।०३
००	१२	मं	५५	१०	२७	४८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००
१३	१३	बु	४६	३७	२४	२२	उ.भा	१०	५५	१०	०५	वि	२१	३६	ग	१४	०७	३२	५५	५	४३	१८	५३	२१	२६	३	मीन
१४	१४	गु	३७	४५	२०	४८	रे	४/५७	१५/२०	७/२८	२४/३८	प्री	१७	३४	वि	१०	३६	३२	५८	५	४२	१८	५३	२२	२७	४	मे. ७।२४
१५	३०	शु	२८	४७	१७	१६	भ	५०	४५	२५	५९	आ	१३	३२	च	७	०१	३३	०२	५	४१	१८	५४	२३	२८	५	मेष
–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	

कृत्तिका में बुध २२।२१ भरणी में शुक्र २१।०८, वक्री शनि २९।०७, वैशाख मास में जलदान A
भद्रा २५।११ से, A धर्म घटादि दान करना चाहिए।
भद्रा १३।४९ तक, वृष में बुध २६।३०, श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय २२।०८,
अगस्त्य अस्त २२।५७
भद्रा १५।१७ से २७।०५ तक, भरणी में सूर्य १३।४१,
आर्द्रा में मंगल २४।४७, पंचक प्रारंभ २८।४३, वैधृति महापात २५।१५ से २९।३६ तक
भद्रा २२।५४ से, शुक्र का उदय पश्चिम में १२।५७
भद्रा ९।४३ तक, वरूथिनी ११ व्रत स्मार्तों का, मई मा॰ ५ ता॰ ३१, मई दिवस,
वरूथिनी ११ व्रत वैष्णवों का, श्री वल्लभाचार्य जयन्ती,
द्वादशी का क्षय B प्रदोष व्रत,
भद्रा २४।२२ से, रोहिणी में बुध २७।३८, कृत्तिका में शुक्र १६।२७, शुक्र बाल्य समाप्त १२।५७ B
भद्रा १०।३६ तक, रोहिणी ३ में गुरू २३।४९, पंचक समाप्त ७।२४
अमावस्या पुण्य, जुमातुउल विदा

वैशाख कृ. ८ शनौ प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ५८६८ (दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं) **वैशाख कृ. ३० शुक्रे प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ५८७४**

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श.	रा.	के.
००	०९	०२	०१	०१	००	०८	१०	०४
१४	१६	०६	०५	१५	२१	२०	०७	०७
५६	३८	१०	२२	२४	१०	११	४९	४९
४५	०८	१३	१३	१६	१९	१९	३६	३६
५८	८२६	३७	६६	१३	७४	००	०३	०३
१८	१४	०४	१२	००	०१	४२	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ
भरणी १	श्रवण २	मृग. ४	कृत्तिका ३	रोहिणी २	भरणी २	पू.भा ३	शत. १	मघा ३

मं ३, बु २ गु, सू १ शु, १२, रा ११, चं १०, ४, ५ के, ६, ७, ८, ह ९ श ने

इस पक्ष के प्रारम्भ में शनि वक्री हो रहा है तथा गुरु अतिचारी चल रहा है जो चार मास तक चलते रहेंगे। इनका फल अच्छा नहीं है। राष्ट्रों में परस्पर उग्र मतभेद होंगे। भारत में भी अराजकता अनैतिकता से अशान्त बनेगी। यहाँ मंगल शनि का सम सप्तम योग चल रहा है।

मं ३, बु २ गु, सू शु १ चं, १२, रा ११, १०, ४, के ५, ६, ७, ८, ह ९ श ने

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श.	रा.	के.
००	००	०२	०१	०१	००	०८	१०	०४
२०	१३	०९	१०	१६	२८	२०	०७	०७
४६	५१	५२	४४	४३	३४	०६	३०	३०
०७	५८	४७	४८	०८	१०	००	३२	३२
५८	८९८	३७	३६	१३	७३	०१	०३	०३
१२	४१	०७	०६	१६	५६	१२	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
भरणी ३	भरणी १	आर्द्रा १	रोहि. १	रोहि. ३	कृति. १	पू.भा ३	शत. १	मघा ३

जिसके फलस्वरूप भूकम्प, यानदुर्घटना, रेल दुर्घटना, विस्फोट, दुर्घटनाऐं अधिक होंगी। अफगानिस्तान, ईरान, ईराक, ब्रह्मा, पाकिस्तान, फ्रांस, दक्षिण अफ्रीका में आन्तरिक विद्रोह बढ़ेगा। कहीं युद्ध, अराजकता उत्पात अधिक होने से जन धन की हानि होगी। वैशाख कृष्ण पक्ष प्रतिपदा की घड़ियाँ उस दिन के स्वाती नक्षत्र की घड़ियों से अधिक होने से वर्षा उत्तम तथा प्रजा में सुख शान्ति बढ़ेगी। यथा– "वैशाखे कृष्ण प्रतिपत्तिथिहीने समेऽधिके। नक्षत्रेऽल्प जलं भूमौ सुखं बहु जलं क्रमात् ॥" सोना, चांदी, रूई, गुड़, खांड, तिलहन, शेयर, किराने की वस्तु में तेजी होकर मंदी होगी

आकाश लक्षण– पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली में वायु वेग के साथ वर्षा होगी। गुजरात, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र में वायु वेग रहेगा। शुक्र का उदय पक्ष मध्य में मेघ गर्जना के साथ वर्षा कारक है।

श्री संवत् २०४६ शकः १९११ वैशाख शुक्ल पक्षः ३

ता. ६ से २० मई सन् १९८९ ई. राष्ट्रीय मिति १६ से ३० वैशाख तक। उत्तरायण गोल, ग्रीष्म ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टै. टा. घंटा मिनटों में है।

ता. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. वैशाख	तारीखें मु. रमजान	तारीखें अं. मई	चन्द संचार स्टै. टा. रा. घं. मि.
१६	१	श	२०	४२	१३	५७	कृ	४४	५२	२३	३७	सौ	९	३९	ब	१३	५७	३३	०५	५	४०	१८	५४	२४	२९	६	वृ.७।२४
१७	२	र	१३	२७	११	०२	रो	४०	१०	२१	४३	शो	६ / २६	०५ / ५८	कौ	११	०२	३३	०८	५	३९	१८	५५	२५	श १	७	वृष
१८	३	च	७	३२	८	४०	मृ	३७	०२	२०	२८	सु	२४	२१	ग	८	४०	३३	१२	५	३९	१८	५६	२६	२	८	मि.९।०५
१९	४	मं	३	२७	७	०१	आ	३५	५५	२०	००	धृ	२२	२५	वि	७	०१	३३	१५	५	३८	१८	५६	२७	३	९	मिथुन
२०	५	बु	१	२७	६	१२	पुन	३६	५२	२०	२२	शू	२१	०९	बा	६	१२	३३	१८	५	३७	१८	५७	२८	४	१०	क.१४।१७
२१	६	गु	१	३२	६	१४	पु	३९	५२	२१	३४	ग	२०	३५	तै	६	१४	३३	२१	५	३७	१८	५७	२९	५	११	कर्क
२२	७	शु	३	४५	७	०६	आश्ले	४४	५०	२३	३२	वृ	२०	३७	व	७	०६	३३	२४	५	३६	१८	५८	३०	६	१२	सि.२३।१२
२३	८	श	७	५०	८	४३	म	५१	१७	२६	०६	ध्रु	२१	०९	ब	८	४३	३३	२७	५	३५	१८	५९	३१	७	१३	सिंह
२४	९	र	१३	१२	१०	५२	पू.फा	५८	४०	२९	०३	व्या	२२	०१	कौ	१०	५२	३३	३१	५	३५	१८	५९	ज्ये १	८	१४	सिंह
२५	१०	च	१९	२७	१३	२१	उ.फा	६०	०	-	-	ह	२३	०४	ग	१३	२१	३३	३४	५	३४	१९	००	२	९	१५	क.११।५०
२६	११	मं	२५	५५	१५	५६	उ.फा	६	३०	८	१०	व	२४	०७	वि	१५	५६	३३	३७	५	३४	१९	०१	३	१०	१६	कन्या
२७	१२	बु	३२	०५	१८	२३	ह	१४	१०	११	१३	सि	२५	०३	बा	१८	२३	३३	४०	५	३३	१९	०१	४	११	१७	तु.२४।३८
२८	१३	गु	३७	३५	२०	३४	चि	२१	१७	१४	०३	व्य	२५	४४	कौ	७	३१	३३	४३	५	३२	१९	०२	५	१२	१८	तुला
२९	१४	शु	४२	०७	२२	२३	स्वा	२७	३०	१६	३२	व	२६	०८	ग	९	३१	३३	४५	५	३२	१९	०२	६	१३	१९	तुला
३०	१५	श	४५	३७	२३	४६	वि	३२	४७	१८	३८	प	२६	१३	वि	११	०८	३३	४८	५	३१	१९	०३	७	१४	२०	वृ.१२।०६
-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	

वृष मे शुक्र ९।२२, चन्द्रदर्शन मु. ३०, (विवाह मु. रोहिणी मे)
शव्वाल मु. १०, ईदुलफित्र (ईद) शिवाजी जयन्ती, श्री परशुराम जयन्ती, A
भद्रा १९।४५ से, अक्षया ३ श्री बदरी-केदारनाथ यात्रा प्रा०, श्री मातंगीजयन्ती,
भद्रा ७।०१ तक, वक्री पूषा० २ मे शनि १४।३०. A श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर जयन्ती. E
श्री जगद्गुरू आद्य शंकराचार्य जयन्ती. E (विवाह मु. मृग. मे)
कृतिका मे सूर्य ७।४७, श्री रामानुजाचार्य जयन्ती व्यतिपात महापात २५।५५ से
भद्रा ७।०६ से १९।४९ तक, वक्री बुध १७।२५, गंगासप्तमी, व्यतिपात महापात ७।८ तक
दुर्गा ८,
सं. वृष मे सूर्य १८।३९, मु.. ३० पुण्यकाल १२।१५ से, रोहिणी में शुक्र १२।२३. B
भद्रा २६।३९ से, B बुध का अस्त पश्चिम में १७।५८, (विवाह मु. उ. फा. में)
भद्रा १५।५६ तक, मोहिनी एकादशी व्रत सबका, (विवाह मु. हस्त मे)
प्रदोष व्रत, C वैशाखी १५, बुद्ध पूर्णिमा, वैशाख स्नान समाप्त, D
D यम प्रीत्यर्थ जल कुंभदान, (वि. मु. अनुराधा मे)
भद्रा २२।२३ से, रोहिणी ४ मे गुरू १९।३१, श्री नृसिंह १४ जयन्ती,
भद्रा ११।०८ तक, धनिष्ठा ४ मे राहु मघा २ मे केतु २६।५९, सत्यव्रत, कूर्मजयंती, C

वैशाख शु. ८ शनौ प्रातः स्टै. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ५८८२ (दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की है) **वैशाख शु. १५ शनौ प्रातः स्टै. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ५८८९**

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
००	०४	०२	०१	०१	०१	०८	१०	०४
२८	०३	१४	१३	१८	०८	१९	०७	०७
३०	००	४९	०८	३०	२५	५३	०५	०५
२३	३८	५१	०४	१९	०२	४१	०६	०६
५७	७२०	३७	०४	१३	७३	०१	०३	०३
५४	२१	०९	४७	३२	४७	५४	११	११
मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
कृत्तिका १	मघा १	आर्द्रा ३	रोहिणी १	रोहिणी २	रोहिणी ४	पू.षा. २	[illegible] १	[illegible] २

बु २ गु
शु सू
१ १२
रा ११
मं ३ ४
१०
च ५ के
६ ७ ८
ह श ने ९

इस मास में पाँच शनिवार का होना नेष्ट फलप्रद है। यथा–"शनिवारा-यदा पंचपाताले कम्पते फणी। ईशान देश भंगश्च वह्निदाहो महर्घता ॥" पूर्वोत्तर देश आसाम, पश्चिमी बंगाल, नेपाल, वर्मा, बंगलादेश, चीन, जापान में उपद्रव होंगे। प्रकृति-प्रकोप, भूकम्प, यानदुर्घटना, आन्दोलन से राज-प्रजा में अशान्ति होगी। ता० १४ मई से वृष राशि में चतुग्रही योग बनेगा। अतः उपरोक्त अशुभ फलों में बढ़ोतरी होगी। वैर विरोध, हिंसक आन्दोलन एवं दल विशेष में परस्पर संघर्ष होगा। पश्चिमी देशों के कुप्रभावों से विश्वव्यापी धोखेबाजी की राजनीति का जोर बढ़ेगा। प्रतिपदा शनिवार का चन्द्रदर्शन एवं पूर्णिमा शनिवार होने से सोना, चांदी, रूई, सूत, सरसों, वस्त्र आदि में तेजी होगी।

मं ३
सू
२ गु
१
१२
शु बु
४
के ५
११ रा
१०
६
च ७ ८
श
ह ने ९

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०१	०६	०२	०१	०१	०१	०८	१०	०४
०५	२६	१९	११	२०	१७	१९	०६	०६
१५	३५	१०	०६	०५	०१	३८	४२	४२
०४	२३	०२	५५	४२	०८	१६	५१	५१
५७	७४१	३७	३०	१३	७३	०२	०३	०३
४३	०५	१२	१९	४३	३८	३०	११	११
मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
कृत्तिका ३	विशा. २	आर्द्रा ४	रोहिणी १	रोहिणी ४	रोहिणी ३	पू.षा. २	शत. १	मघा ३

आकाश लक्षण – इस पक्ष में बुध का अस्त यत्र-तत्र वायु के साथ मेघ गर्जन, बिजली की चमक के साथ वर्षा करेगा। कहीं आंधी, तूफान से जन जीवन संत्रस्त होगा। गरमी बढ़ने लगेगी

श्री संवत् २०४६ शकः १९११ ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः ४

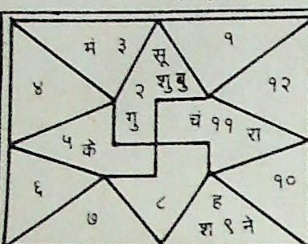
ता. २१ मई. से ३ जून सन् १९८९ ई. राष्ट्रीय मिति
३१ वैशाख से १३ ज्येष्ठ तक। उत्तरायण गोल, ग्रीष्म ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टै. टा. घंटा मिनटों में है।

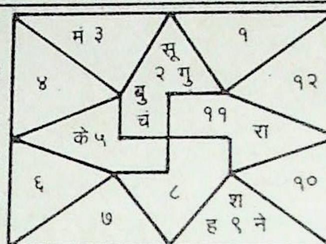
ता. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. ज्येष्ठ	तारीखें मु. शव्वाल	तारीखें अं. मई	चन्द संचार स्टै. टा. रा. घं. मि.	
३१	१	र	४८	०५	२४	४५	अनु	३७	००	२०	१९	शि	२५	५९	बा	१२	१९	३३	५०	५	३१	१९	०३	८	१५	२१	वृश्चिक	पुनर्वसु मे मंगल १३।४५. सायन मिथुन में सूर्य ७।२४. श्री नारद जयन्ती,
ज्ये१	२	च	४९	३०	२५	१८	ज्ये	४०	१५	२१	३६	सि	२५	२५	तै	१३	०४	३३	५२	५	३०	१९	०४	९	१६	२२	ध.२१।३६	वक्री कृत्तिका में बुध ८।३८. राष्ट्रीय ज्येष्ठ प्रांरभ,
२	३	म	४९	५७	२५	२९	मू	४२	३२	२२	३१	सा	२४	३३	व	१३	२६	३३	५५	५	३०	१९	०४	१०	१७	२३	धनु	भद्रा १३।२६ से २५।२९ तक. श्री श्री मां आनन्दमयी जयन्ती,
३	४	बु	४९	२५	२५	१६	पू षा	४३	५२	२३	०३	शु	२३	२३	ब	१३	२५	३३	५७	५	३०	१९	०५	११	१८	२४	म.२९।०५	रोहिणी में सूर्य २८।०५. श्री गणेश ४ व्रत चन्द्रोदय २२।३६, (विवाह मु० उ० षा० में)
४	५	गु	४८	००	२४	४१	उ षा	४४	१७	२३	१२	शु	२१	५५	कौ	१३	०२	३३	५९	५	२९	१९	०५	१२	१९	२५	मकर	मृगशिर में शुक्र ९।०३. वैधृति महापात २२।४० से २८।२५ तक
५	६	शु	४५	३५	२३	४३	श्र	४३	४५	२२	५९	ब्र	२०	०९	ग	१२	१५	३४	०१	५	२९	१९	०६	१३	२०	२६	मकर	भद्रा २३।४३ से. गुरू वृद्धत्व प्रांरभ २७।०४
६	७	श	४२	१०	२२	२१	ध	४२	१२	२२	२२	ऐ	१८	०३	वि	११	०५	३४	०४	५	२९	१९	०६	१४	२१	२७	कुं १०।४०	भद्रा ११।०५ तक. पंचक प्रांरभ १०।४०
७	८	र	३७	४५	२०	३५	श	३९	४२	२१	२२	वै	१५	३८	बा	९	३१	३४	०६	५	२९	१९	०७	१५	२२	२८	कुंभ	
८	९	च	३२	२२	१८	२५	पू भा	३६	१५	१९	५८	वि	१२	५४	तै	७	३२	३४	०८	५	२८	१९	०७	१६	२३	२९	मी.१४।१९	भद्रा २९।१२ से. गुरू का अस्त पश्चिम में २७।०४,
९	१०	म	२६	०५	१५	५४	उ.भा	३१	५२	१८	१३	प्री	९	५१	वि	१५	५४	३४	१०	५	२८	१९	०८	१७	२४	३०	मीन	भद्रा १५।५४ तक. मिथुन में शुक्र १९।३५
१०	११	बु	१९	०५	१३	०६	रे	२६	४७	१६	११	आ	६ / २७	३४ / ०५	बा	१३	०६	३४	१२	५	२८	१९	०८	१८	२५	३१	मे.१६।११	अपरा (भद्रकाली) ११ व्रत सबका, पंचक समाप्त १६।११.
११	१२	गु	११	३७	१०	०७	अश्वि	२१	२२	१४	००	शो	२३	३२	तै	१०	०७	३४	१४	५	२८	१९	०८	१९	२६	जू.१	मेष	प्रदोष व्रत, जून मा. ६ ता. ३०
१२	१३	शु	४	००	७	०४	भ	१५	४५	११	४६	अ	१९	५९	व	७	०४	३४	१५	५	२८	१९	०९	२०	२७	२	वृ.१७।१४	भद्रा ७।०४ से १७।३४ तक बुध का उदय पूर्व में ७।५१.
०	१४	शु	५६	३५	२८	०६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	चतुर्दशी का क्षय F भावुका ३०,
१३	३०	श	४९	४७	२५	२३	कृ	१०	२७	९	३९	सु	१६	३६	च	१४	४२	३४	१७	५	२८	१९	०९	२१	२८	३	वृष	मृगशिर १ में गुरू ६।५५. शनैश्चरी अमावस्या, वट सावित्री व्रत पूजन, अमावस्या पुण्य, F

ज्येष्ठ कृ. ८ रवौ प्रातः स्टै. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ५८९७ (दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं) **ज्येष्ठ कृ. ३० शनौ प्रातः स्टै. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ५९०३**

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के.
०१	१०	०२	०१	०१	०१	०८	१०	०४
१२	१०	२४	०६	२१	२६	१९	०६	०६
५६	४५	०७	४४	५६	४९	१५	१७	१७
१३	५८	३२	५५	०२	४७	५७	२४	२४
५७	८४०	३७	२८	१३	७३	०३	०३	३
३४	०२	१३	४६	५०	३३	१२	११	११
मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
रोहिणी १	श २	पुन. २	कृत्तिक ४	रोहिणी ४	मृ. २	पूषा २	धनि. ४	मघा २



इस पक्ष के प्रारंभ में ता० २३ मई को वृष राशि में गुरु-शुक्र-का युद्ध (अंश साम्य योग) नेष्ट है। जिसका फल – **"गुरु शुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्। अकाले वा भवेद्वृष्टिर्जगत्यां नात्र संशयः॥"** विश्व में कहीं युद्ध, अराजकता, प्रकृति-प्रकोप, अकाल, हड़ताल, हिंसा से प्रजा को कष्ट होगा। भारत में भी कहीं रोग भय, अग्नि काण्ड, ओला वृष्टि, बाढ़ आदि से कष्ट होगा। बड़े राष्ट्रो में विग्रह-विरोध बढ़े। ता० २९ मई को गुरु का अस्त होने से भ्रष्टाचार और व्यभिचार की अधिकता रहेगी। राजनैतिक नेता भी स्वार्थपरायण वश अनैतिक कार्यों में लिप्त होगे। रूई, चांदी, सोना, सूत, मूंगफली, सरसों, गुड़, गेहूँ में मंदी होकर तेजी होगी। ता० २ जून को बुधोदय एवं चतुर्दशी तिथि का क्षय होने से व्यापारिक वस्तुओ में भारी घटाबढ़ी चलेगी।



सू.	चं.	म.	बु	गु	शु	श.	रा.	के.
०१	०१	०२	०१	०१	०२	०८	१०	०४
१८	०७	२७	०४	२३	०४	१८	०५	०५
४१	२८	५०	३८	१९	१०	५६	५८	५८
२५	२१	४८	३८	११	५६	०८	१९	१९
५७	८६८	३७	०८	१३	७३	०३	०३	०३
२९	०७	१५	०१	५३	२८	३७	११	११
मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
उ	अ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ
रोहिणी ३	कृत्तिका ४	पुन. ३	कृत्ति. ३	रोहि. ४	मृग. ४	पूषा. २	धनि. ४	मघा २

आकाश लक्षण– इस पक्ष में दिल्ली, पंजाब, मध्यप्रदेश, उ० प्र०, हरियाणा, में गर्मी जोर पकड़ेगी। गुरु का अस्त तथा बुध का उदय वायु वेग के साथ वर्षा कारक है। उत्तरी-पूर्वी भारत में मानसून पूर्व की बरसात होगी।

दिन | स्टैण्डर्ड टाईम | तारीखें | चन्द संचार | ता. ४ से १९ जून सन् १९८९ ई. राष्ट्रीय मिति

श्री संवत् २०४६ शकः १९११ ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः ५

तॊ. ४ से १९ जून सन् १९८९ ई. राष्ट्रीय मिति १४ से २९ ज्येष्ठ तक । उत्तरायण गोल, ग्रीष्म ऋतु ।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

ता. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीख हि. (ज्येष्ठ)	तारीख मु (शव्वाल)	तारीख अं. (जून)	चन्द्र संचार स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
१४	१	र.	४३	५७	२३	०३	रो	५	५२	७	४९	धृ	१३	२९	कि	१२	०९	३४	१९	५	२८	१९	१०	२२	२९	४	मि.१९।०८	श्री गंगा दशाश्वमेध स्नानारम्भ,. A मेला हल्दीघाटी मेवाड़ (राज.)
१५	२	च.	३९	३२	२१	१६	मृ.	२	२७	६	२६	शू	१०	४६	बा	१०	०५	३४	२०	५	२७	१९	१०	२३	३०	५	मिथुन	मार्गी बुध १३।३८, आर्द्रा मे शुक्र ६।१२, चन्द्रदर्शन मु. १५.
१६	३	मं.	३६	४७	२०	१०	आ.	०	२७	५	३८	गं	८	३३	तै	८	३८	३४	२२	५	२७	१९	११	२४	जि.१	६	क.२३।३५	कर्क में मंगल १६।४७, जिल्काद मु. ११, रम्भा ३ व्रत, श्री प्रताप जयन्ती, A
१७	४	बु	३५	५७	१९	५०	पुन	०	१७	५	३४	वृ	६	५६	व	७	५४	३४	२३	५	२७	१९	११	२५	२	७	कर्क	भद्रा ७।५४ से १९।५० तक, मृगशिर में सूर्य २५।५२, श्री गुरु अर्जुन देव निधन दिवस B
१८	५	गु	३७	०७	२०	१८	पु	२	०२	६	१६	ध्रु	५	५७	ब	७	५८	३४	२५	५	२७	१९	१२	२६	३	८	कर्क	B व्यतिपात महापात ६।१५ से १२।४० तक
१९	६	शु	४०	१२	२१	३२	आश्ले.	५	४२	७	४४	व्या	५	३५	कौ	८	५०	३४	२६	५	२७	१९	१३	२७	४	९	सि.७।४४	विन्ध्यवासिनी पूजा,
२०	७	श.	४४	५०	२३	२३	म.	११	०५	९	५३	ह	५	४७	ग	१०	२३	३४	२७	५	२७	१९	१३	२८	५	१०	सिंह	भद्रा २३।२३ से,
२१	८	र.	५०	३२	२५	४०	पू.फा.	१७	४७	१२	३४	व	६	२५	वि	१२	२९	३४	२८	५	२७	१९	१४	२९	६	११	कं.१९।१९	भद्रा १२।२९ तक, पुष्य मे मंगल २५।३७, दुर्गा ८ श्री धूमावती जयन्ती, मेला क्षीर C
२२	९	चं.	५६	४२	२८	०८	उ.फा.	२५	१५	१५	३३	सि	७	२१	बा	१४	५३	३४	३०	५	२७	१९	१४	३०	७	१२	कन्या	C भवानी (काश्मीर)
२३	१०	मं.	६०	००	–	–	ह	३२	५०	१८	३५	व्य	८	२२	तै	१७	२२	३४	३१	५	२७	१९	१५	३१	८	१३	कन्या	गंगादशहरा, श्री बटुक भैरव जयन्ती
२४	१०	बु	२	४७	६	३३	चि.	४०	०२	२१	२७	व	९	१९	ग	६	३३	३४	३२	५	२६	१९	१५	आ.१	९	१४	तु.८।०१	भद्रा १९।४० से, सं. मिथुन मे सूर्य २५।१६, मु. १५ पुण्यकाल अगले दिन,
२५	११	गु	८	०७	८	४१	स्वा.	४६	१७	२३	५७	प	१०	०३	वि	८	४१	३४	३३	५	२६	१९	१६	२	१०	१५	तुला	भद्रा ८।४१ तक, पुनर्वसु में शुक्र २८।०४, व. मूल ३ में हर्षल २४।२०, D
२६	१२	शु	१२	२५	१०	२४	वि.	५१	२५	२६	००	शि	१०	२७	बा	१०	२४	३४	३४	५	२६	१९	१६	३	११	१६	वृ.१९।२९	प्रदोष व्रत, D निर्जला एकादशी व्रत सबका,
२७	१३	श.	१५	२७	११	३७	अनु	५५	१५	२७	३२	सि	१०	२८	तै	११	३७	३४	३५	५	२६	१९	१६	४	१२	१७	वृश्चिक	रोहिणी मे बुध २०।४२, मृगशिर २ मे गुरु १६।०९, वट सावित्री व्रतारंभः
२८	१४	र.	१७	०५	१२	१७	ज्ये.	५७	४५	२८	३३	सा	१०	०४	व	१२	१७	३४	३६	५	२७	१९	१६	५	१३	१८	धं.२८।३३	भद्रा १२।१७ से २४।२६ तक, सत्यव्रत,
२९	१५	चं.	१७	३०	१२	२७	मू.	५९	०७	२९	०६	शु	९	१५	ब	१२	२७	३४	३७	५	२७	१९	१७	६	१४	१९	धनु	वट सावित्री १५ दक्षिण भारत मे, ज्येष्ठी १५, कबीर जयन्ती,

ज्येष्ठ शु ८ रवौ प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ५९११

(दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं)

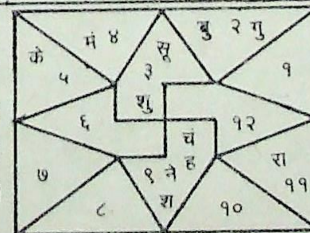
सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श.	रा.	के.
०१	०४	०३	०१	०१	०२	०८	१०	०४
२६	२३	०२	०५	२५	१३	१८	०५	०५
२०	०८	४८	३८	१०	५८	२६	३२	३२
४९	५२	४५	३०	३०	०४	१८	५३	५३
५७	७१३	३७	२७	१३	७३	०३	०३	०३
२१	२७	१७	२४	५४	१८	५४	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

शु ३ सू २ गु १ म ४ बु १२ ११ रा च ५ के ६ १० ७ ८ ह श ने ९

इस मास में कृष्णपक्ष की तिथिक्षय और शुक्ल पक्ष की तिथि वृद्धि उत्तम है। जिसका फल – **"यदा यान्ति वृद्धिं सितारव्यस्य पक्षस्तदा यान्ति वृद्धिं नृपा लोक संघा ॥"** यहाँ वक्रगत शनि का सूर्य मंगल बुध गुरु से षडष्टक योग अशुभ है अतः यहाँ मिश्रित (मिले-जुले) फल होंगे। भारत को विदेशों में सम्मान एवं बड़े राष्ट्रों द्वारा शान्ति प्रयत्न होंगे। शान्तिवादी गुटनिरपेक्ष देश संघटित होकर युद्धप्रिय राष्ट्रों के विचार विफल करेंगे। उत्तरी भारत में गर्मी का जोर रहेगा। रोग पीड़ा, अग्नि काण्ड, अराजकता से प्रजा पीड़ित होगी। जीवनोपयोगी वस्तुएँ मंहगी होगी। मिथुन संक्रान्ति बुधवार १५ मुहूर्ती होने से धान्य, चावल, गेहूँ, चना, जौ, बाजरा, मूंग, मोठ आदि तथा धातुवाना, तिलहन में भारी घटाबढ़ी होगी, रूख तेजी का रहेगा। सुदी पूर्णिमा को मूल नक्षत्र होने से आगे भाद्रपद आश्विन में वर्षा हो। यथा -- **ज्येष्ठस्य पूर्णिमायां तु मूले प्रसवते यदा । दिनषष्टिं व्यतिक्रम्य [illegible] मेघ महोदयः ॥"**

आकाश लक्षण – मध्यप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उ० प्र० में गर्मी जोरदार पड़ेगी। आंधी, लू का प्रकोप रहे। पूर्व दक्षिण में वर्षा होगी, वहाँ तापमान कम होगा।कहीं-कहीं वर्षा भी होगी।

ज्येष्ठ शु १५ चन्द्रे प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ५९१९



सू.	च.	म.	बु	गु	शु	श.	रा.	के.
०२	०८	०३	०१	०१	०२	०८	१०	०४
०३	००	०७	११	२७	२३	१७	०५	०५
५९	३०	४७	१५	०१	४४	५३	०७	०७
११	००	१०	१७	३२	००	३५	२६	२६
५७	७८२	३७	५९	१३	७३	०४	०३	०३
१४	२३	२०	५९	५०	१०	१३	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	रोहिणी	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री संवत् २०४६ शकः १९११ आषाढ़ कृष्ण पक्ष ६

ता. २० जून से ३ जुलाई सन् १९८९ ई. राष्ट्रीय मिति
३० ज्येष्ठ से १२ आषाढ़ तक। उत्तरायण गोल, ग्रीष्म ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टै. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि (आषाढ़)	मु (ज़िलहिज्ज)	अं (जून)	चन्द्र संचार स्टै. टा. रा घं मि	
३०	१	म	१६	४५	१२	०९	पू.षा	५९	३०	२९	१५	शु	८	०४	कौ	१२	०९	३४	३७	५	२७	१९	१७	७	१५	२०	धनु	श्री गुरु हरगोविन्द जन्म दिन
३१	२	बु	१५	०२	११	२८	उ.षा	५८	५७	२९	०२	ब	५/२८	३३/४६	ग	११	२८	३४	३७	५	२७	१९	१७	८	१६	२१	म. ११।१३	भद्रा २२।५९ से, आर्द्रा में सूर्य २४।५६, सायन कर्क मे सूर्य १५।२४, दक्षिणायन वर्षा ऋतु
आ१	३	गु	१२	२२	१०	२५	श्र	५७	४०	२८	३२	वै	२६	४४	वि	१०	२५	३४	३८	५	२८	१९	१७	९	१७	२२	मकर	भद्रा १०।२५ तक, **श्री गणेश ४ व्रत, चन्द्रोदय २२।०४, राष्ट्रीय आषाढ़ प्रारंभ,**
२	४	शु	९	०५	९	०६	ध	५५	४५	२७	४६	वि	२४	२९	बा-	९	०६	३४	३७	५	२८	१९	१७	१०	१८	२३	कुं १६।०९	गुरु का उदय पूर्व मे ५।४२, पंचक प्रारंभ १६।०९
३	५	श	५	०७	७	३१	श	५३	१५	२६	४६	प्री	२२	०३	तै	७	३१	३४	३७	५	२८	१९	१७	११	१९	२४	कुंभ	कर्क में शुक्र ८।५४, G पा., वैधृति महापात १२।१७, से १९।२७ तक
४	६	र	०	३७	५	४३	पू.भा	५०	१५	२५	३४	आ	१९	२६	व	५	४३	३४	३६	५	२८	१९	१७	१२	२०	२५	मी. १९।५२	भद्रा ५।४३ से १६।४४ तक,
०	७	र	५५	३७	२७	४३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	सप्तमी का क्षय
५	८	च	५०	१०	२५	३२	उ.भा	४६	५०	२४	१२	सौ	१६	४१	बा	१४	३९	३४	३५	५	२८	१९	१८	१३	२१	२६	मीन	पुष्य मे शुक्र २६।३६, गुरु बाल्य समाप्त ५।४२, (विवाह मु. उ. भा. रेवती मे)
६	९	म	४४	२०	२३	१३	रे	४३	००	२२	४१	शो	१३	४८	तै	१२	२४	३४	३४	५	२९	१९	१८	१४	२२	२७	मे. २२।४१	पंचक समाप्त २२।४१, (विवाह मु. रेवती में)
७	१०	बु	३८	२०	२०	४९	अश्वि	३९	००	२१	०५	अ	१०	४९	व	१०	०२	३४	३३	५	२९	१९	१८	१५	२३	२८	मेष	भद्रा १०।०२ से २०।४९ तक, मृगशिर मे बुध १९।२९
८	११	गु	३२	१७	१८	२४	भ	३४	५५	१९	२७	सु	७/२८	४७/४७	ब	७	३६	३४	३२	५	२९	१९	१८	१६	२४	२९	वृ. २५।०४	**योगिनी एकादशी व्रत सबका, व्यतिपात महापात १९।० से २५।३३ तक**
९	१२	शु	२६	२०	१६	०२	कृ	३१	००	१७	५४	शू	२५	५२	तै	१६	०२	३४	३१	५	३०	१९	१८	१७	२५	३०	वृष	प्रदोष व्रत,
१०	१३	श	२०	५२	१३	५१	रो	२७	३५	१६	३२	ग	२३	०९	व	१३	५१	३४	३०	५	३०	१९	१८	१८	२६	जु १	मि. २८।००	भद्रा १३।५१ से २४।५२ तक, **जुलाई मा० ७ ता० ३१,**
११	१४	र	१६	०७	११	५८	मृ	२४	५२	१५	२८	वृ	२०	४२	श	११	५८	३४	२९	५	३१	१९	१८	१९	२७	२	मिथुन	मिथुन मे बुध २०।२७, मृग ३ मिथुन में गुरु ५।३३,
१२	३०	च	१२	२५	१०	२९	आ	२३	१७	१४	५०	ध्रु	१८	३८	ना	१०	२९	३४	२८	५	३१	१९	१९	२०	२८	३	मिथुन	अश्लेषा में मंगल ११।४५, **सोमवती अमावस्या पुण्य,**
–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–		

आषाढ़ कृ. ८ चन्द्रे प्रातः स्टै. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ५९२६

(दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की है)

आषाढ़ कृ. ३० चन्द्रे प्रातः स्टै. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ५९३३

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
०२	११	०३	०१	०१	०३	०८	१०	०४
१०	०५	१२	१९	२८	०२	१७	०४	०४
३९	३७	०८	३२	३८	१५	२३	४५	४५
४७	५५	३२	२१	०१	४८	२७	११	११
५७	८४९	३७	८५	१३	७३	०४	०३	०३
१३	४४	२२	१८	४२	०२	२४	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
आर्द्रा २	उ.षा १	पुष्य ३	रोहिणी ३	मृग २	मृग ४	पू.षा २	धनि ४	मघा २

म ४ शु, बु २ गु, के ५, सू ३, १, च, ६, १२, श, ७, ने ९ ह, ११ रा, ८, १०

इस पक्ष में सोमवती अमावस्या एवं बुध-गुरु की युति भारत के लिए सानुकूल है। अनेक भारतीय दलों में एकता के प्रयास तथा प्रजापक्ष, राजपक्ष में सहानुभूति उत्पन्न होगी। पर राष्ट्रों से वरिष्ठ नेतागण भारत के दौरे पर आयेंगे। आयात-निर्यात में वृद्धि होगी। विदेशों से व्यापार बढ़ेगा एवं आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। चीन, जापान, मिश्र, अफ्रीका, अरब राष्ट्र, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, इजरायल में अशुभ फल होंगे। ता० २४ जून को शुक्र कर्क राशि पर आयेगा।जिसका फल– **"दैत्य गुरुर्यदा कर्के रसानां वै महर्घता। सर्वधान्य समर्घत्वं मेघाश्च प्रबला भुवि ॥"** समस्त रसादि पदार्थ गुड़, खांड़, शक्कर, नमक, और अलसी, सरसों, मूंगफली, तिल, तेल, रूई, पाट, वारदाना, कुष्ठा, सण, सूत, फल, फूलों में तेजी होगी। जहाँ वर्षा ठीक समय पर होगी वहाँ कृषक वर्ग को संतोष तथा पशु-पक्षी सुख का अनुभव करेंगे।

के ५, म ४ शु, सू ३ बु गु, २, १, च, ६, १२, श, ७, ह ९ ने, रा ११, ८, १०

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श.	रा.	के.
०२	०२	०३	०२	०२	०३	०८	१०	०४
१७	१४	१६	००	००	१०	१६	०४	०४
२०	४१	३०	३९	१३	४६	५२	२२	२२
२२	५०	१५	३८	३३	४१	२६	५५	५५
५७	८१०	३७	१०८	१३	७२	०४	०३	०३
१३	४२	२५	१०	३१	५५	२४	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
आर्द्रा ४	आर्द्रा ३	पुष्य ४	मृग. ३	मृग. ३	पुष्य ३	पू.षा. २	धनि. ४	मघा २

आकाश लक्षण – इस पक्ष के आरम्भ में अच्छी वर्षा होगी। राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उ० प्र०, मध्यप्रदेश, बिहार में वायु के साथ वर्षा होगी। आसाम, बंगाल, उड़ीसा, हि० प्र० में अच्छी वर्षा होगी।

ता. ४ से १८ जुलाई सन् १९८९ ई. राष्ट्रीय मिति

श्री संवत् २०४६ शकः १९११ आषाढ़ शुक्ल पक्षः ७

… से १८ जुलाई सन् १९८९ ई. राष्ट्रीय मिति १३ से २७ आषाढ़ तक। दक्षिणायन उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घंटा	मिनट	सूर्यास्त घंटा	मिनट	आषाढ़	हि. मु. जिल्का	अं. जुलाई	स्टै. टा. रा. घं. मि.	
१३	१	म	१०	०२	९	३२	पुन.	२३	०५	१४	४५	व्या	१७	०१	ब	९	३२	३४	२७	५	३१	१९	१९	२१	२९	४	क. ८।४६	चन्ददर्शन मु. ३०. A श्री जगदीश रथ यात्रा जगन्नाथपुरी (उड़ीसा)
१४	२	बु	९	०७	९	११	पु	२४	२०	१५	१६	ह	१५	५४	कौ	९	११	३४	२६	५	३२	१९	१९	२२	जि. १	५	कर्क	पुनर्वसु में सूर्य २४।२७, वक्री पूषा १ में शनिः २४।५३, जिल्हेज मु. १२. A
१५	३	गु	९	५७	९	३१	आश्ले	२७	२०	१६	२८	व	१५	२०	ग	९	३१	३४	२४	५	३२	१९	१८	२३	२	६	सिं. १६।२८	भद्रा २१।५७ से, आर्द्रा में बुध ११।०५, बुध का अस्त पूर्व में २९।३१.
१६	४	शु	१२	२७	१०	३२	म	३१	५२	१८	१८	सि	१५	१७	वि	१०	३२	३४	२३	५	३३	१९	१८	२४	३	७	सिंह	भद्रा १०।३२ तक, अश्लेषा में शुक्र २५।५१.
१७	५	श.	१६	३०	१२	०९	पू.फा	३७	५२	२०	४२	व्य	१५	४१	बा	१२	०९	३४	२१	५	३३	१९	१८	२५	४	८	क. २७।२४	(विवाह मु. उ. फा. में)
१८	६	र	२१	४०	१४	१४	उ.फा	४४	५०	२३	३०	व	१६	२६	तै	१४	१४	३४	२०	५	३४	१९	१८	२६	५	९	कन्या	कुमार षष्ठी,
१९	७	च	२७	३५	१६	३६	ह	५२	१७	२६	२९	प	१७	२३	व	१६	३६	३४	१८	५	३४	१९	१८	२७	६	१०	कन्या	भद्रा १६।३६ से B मनसापूजा प्रारंभ (बंगाल) (विवाह मु. स्वाती में)
२०	८	म	३३	३५	१९	०१	चि	५९	३५	२९	२५	शि	१८	२२	ब	१९	०१	३४	१६	५	३५	१९	१७	२८	७	११	तु. १५।५७	भद्रा ५।४९ तक, दुर्गा ८,
२१	९	बु	३९	०५	२१	१३	स्वा	६०	००	—	—	सि	१९	१२	बा	८	०९	३४	१४	५	३५	१९	१७	२९	८	१२	तुला	पुनर्वसु में बुध २३।४०, भड्डली ९, मेलाशरीफ भवानी (काश्मीर), B
२२	१०	गु	४३	३५	२३	०२	स्वा	६	१२	८	०५	सा	१९	४३	तै	१०	११	३४	१२	५	३६	१९	१७	३०	९	१३	वृ. २७।४४	वैधृति महापात ११।१६ से १७।२७ तक C चातुर्मास्य व्रत नियम प्रा.
२३	११	शु	४६	४२	२४	१७	वि	११	४२	१०	१७	शु	१९	५१	व	११	४४	३४	१०	५	३६	१९	१७	३१	१०	१४	वृश्चिक	भद्रा ११।४४ से २४।१७ तक, देवशयनी एकादशी व्रत सबका, ईदुलजुहा (बकरीद) C
२४	१२	श	४८	१७	२४	५६	अनु	१५	४५	११	५५	शु	१९	२९	ब	१२	४१	३४	०९	५	३७	१९	१६	३२	११	१५	वृश्चिक	D सत्यव्रत गुरु पूर्णिमा, व्यासपूजा, वायु परीक्षा सन्यासियों का चातुर्मास प्रारंभ,
२५	१३	र	४८	१७	२४	५६	ज्ये	१८	१७	१२	५६	ब्र	१८	३७	कौ	१३	००	३४	०७	५	३७	१९	१६	श्रा १	१२	१६	ध. १२।५६	सं. कर्क में सूर्य १२।०८ मु. १५ पुण्यकाल १८।३२ तक, प्रदोष व्रत,
२६	१४	च.	४६	४२	२४	१९	मू	१९	१५	१३	२०	ऐ	१७	१६	ग	१२	४२	३४	०५	५	३८	१९	१६	२	१३	१७	धनु	भद्रा २४।१९ से, कर्क में बुध १५।४० मृगशिर ४ में गुरु ५।५९.
२७	१५	मं	४३	५५	२३	१२	पू.षा	१८	५२	१३	११	वै	१५	२८	वि	११	४९	३४	०३	५	३८	१९	१६	३	१४	१८	म. १९।०१	भद्रा ११।४९ तक, पुष्य में बुध २९।०६, मघा सिंह में शुक्र २६।०४, आषाढ़ी १५, D

(दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं)

आषाढ़ शु. ८ भौमे प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ५९४१

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०२	०५	०३	०२	०२	०३	०८	१०	०४
२४	२४	२१	१६	०२	२०	१६	०३	०३
५८	४९	२९	१७	००	२९	१७	५६	५७
०७	०५	५६	१९	५२	२५	१३	३०	३०
५७	७१२	३७	१२६	१३	७२	०४	०३	०३
१३	०१	३१	१८	१५	४३	२४	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

म ४ शु, सू ३ गु, २, के ५, १, बु, च ६, १२, श, ७, ने ९ ह, रा ११, ८, १०

आषाढ़ शु. १५ भौमे प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ५९४८

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श.	रा.	के.
०३	०८	०३	०३	०२	०३	०८	१०	०४
०१	२२	२५	०१	०३	२८	१५	०३	०३
३८	१९	५२	१४	३२	५७	४७	३५	३५
३८	४६	४३	०६	४५	५०	१८	१४	१४
५७	८१६	३७	१२८	१२	७२	०४	०३	०३
१४	४४	३४	०३	५९	३२	१२	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

के ५, सू ४ म, ३ गु, ६, बु, २, शु, ७, १, ८, १२, १०, ह च ९ श ने, रा ११

इस मास में पाँच मंगलवार एवं चन्द्रदर्शन तथा आषाढ़ी पूर्णिमा मंगलवार की अशुभ है। पाँच मंगलवार का फल– "यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंचवासराः। रक्तेनपूरिता पृथ्वी छत्र भंगस्तदा भवेत्॥" विश्व के अनेक अशान्त क्षेत्रों में हिंसक आन्दोलन होंगे। यान दुर्घटना, विस्फोट, अनावृष्टि, अतिवृष्टि से हानि होगी। राजनैतिक परिस्थिति में उलझन पैदा होगी। अरब राष्ट्र, इजरायल, ईरान, अफगानिस्तान, में संकट उत्पन्न होगा। पूर्वी देश, चीन, जापान, वर्मा, बंगलादेश, नेपाल, असम में प्रकृति-प्रकोप, अराजकता का आतंक होगा। आषाढ़ सुदी १५ मंगलवार ता० १८ जुलाई को सूर्यास्त के समय पूर्व, उत्तर, पश्चिम, और ईशान कोण की वायु चले तो सुभिक्ष एवं सुख शान्ति रहेगी। दक्षिण एवं अग्नि, नैऋत्य, वायव्यकोण का वायु चले तो दुर्भिक्ष तथा उत्पातों से प्रजा त्रस्त रहेगी। इस पक्ष में मंगलवार रूई, अनाज, सोना, चांदी, गुड़, खांड़, में मंदी के बाद तेजी करेगा।

आकाश लक्षण– इस पक्ष में कर्क का शुक्र वायु के साथ वर्षा कारक है। दिल्ली, पंजाब, राजस्थान, मध्य भारत, हरियाणा में वायु के साथ वर्षा होगी। आसाम, बंगाल, हि० प्र० और दक्षिण भारत में श्रेष्ठ वर्षा होगी। कहीं बाढ़, भूस्खलन से हानि होगी।

श्री संवत् २०४६ शकः १९११ श्रावण कृष्ण पक्षः ८

ता. १९ जुलाई से १ अगस्त सन् १९८९ ई. राष्ट्रीय मिति २८ आषाढ़ से १० श्रावण तक। दक्षिणायन उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि (शक्का)	तारीखें मु (जिलहिज)	तारीखें अं (जुलाई)	चन्द्र संचार स्टैं. टा. रा. घं. मि.
२८	१	बु	३९	५७	२१	३८	उ.षा.	१७	१५	१२	३३	वि	१३	१८	बा	१०	२७	३४	०१	५	३९	१९	१५	४	१५	१९	मकर
२९	२	गु	३५	१०	१९	४३	श्र	१४	४५	११	३३	प्री	१०	४८	तै	८	४३	३३	५९	५	३९	१९	१५	५	१६	२०	कुं.२२।५४
३०	३	शु	२९	४५	१७	३४	ध	११	२७	१०	१५	आ	८/२९	६/१३	व	६	४०	३३	५६	५	४०	१९	१५	६	१७	२१	कुंभ
३१	४	श	२४	००	१५	१६	श.	७	४७	८	४७	शो	२६	१५	बा	१५	१६	३३	५४	५	४०	१९	१४	७	१८	२२	मी.२५।३६
श्रा१	५	र	१८	००	१२	५३	पू.भा	३/५९	५०/५०	७/२९	१३/३७	अ	२३	१५	तै	१२	५३	३३	५१	५	४१	१९	१४	८	१९	२३	मीन
२	६	चं	१२	००	१०	३०	रे	५५	५२	२८	०३	सु	२०	१६	व	१०	३०	३३	४८	५	४२	१९	१३	९	२०	२४	मे.२८।०३
३	७	मं	६	०७	८	०९	अश्वि.	५२	१२	२६	३५	धृ	१७	२१	ब	८	०९	३३	४६	५	४२	१९	१३	१०	२१	२५	मेष
४	८	बु	००	३०	५	५५	भ	४८	५२	२५	१६	शू	१४	३१	कौ	५	५५	३३	४३	५	४३	१९	१२	११	२२	२६	मेष
०	९	बु	५५	१७	२७	५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०
५	१०	गु	५०	३५	२५	४७	कृ	४६	०२	२४	०८	गं	११	५०	व	१४	५२	३३	४०	५	४३	१९	१२	१२	२३	२७	वृ.६।५९
६	११	शु	४६	३०	२४	२०	रो	४३	५०	२३	१६	वृ	९	२०	ब	१३	०६	३३	३७	५	४४	१९	११	१३	२४	२८	वृष
७	१२	श	४३	१२	२३	०१	मृ	४२	२५	२२	४२	धु	७/२९	०४/०३	कौ	११	३८	३३	३५	५	४४	१९	११	१४	२५	२९	मि.१०।५९
८	१३	र	४०	५०	२२	०५	आ	४१	५५	२२	३१	ह	२७	२२	ग	१०	३०	३३	३२	५	४५	१९	१०	१५	२६	३०	मिथुन
९	१४	चं	३९	३७	२१	३६	पुन	४२	३०	२२	४५	व	२६	०२	वि	९	४७	३३	२९	५	४५	१९	१०	१६	२७	३१	क.१६।४२
१०	३०	मं	३९	३५	२१	३६	पु	४४	१७	२३	२९	सि	२५	०६	च	९	३२	३३	२६	५	४६	१९	०९	१७	२८	अ.१	कर्क

पुष्य में सूर्य २४।१०,
पंचक प्रांरभ २२।५४,
भद्रा ६।४० से १७।३४ तक, **श्री गणेश ४ व्रत चन्द्रोदय २१।१५,**
धनि: ३ में राहु मघा १ में केतु २४।२८, सायन सिंह में सूर्य २६।१६,
मार्गी प्लूटो ९।२६, **नाग ५ मरूस्थल तथा बंगाल में, राष्ट्रीय श्रावण प्रारंभ,**
भद्रा १०।३० से २१।१९ तक, मघा सिंह में मंगल १९।१६, पंचक समाप्त २८।०३,
अश्लेषा में बुध १५।२८, व्यतिपात महापात २८।३२ से
वक्री पू. षा. १ नेपच्यून २६।०२, व्यतिपात महापात ९।३८ तक
नवमी का क्षय
भद्रा १४।५२ से २५।५७ तक,
कामदा ११ व्रत स्मार्त वैष्णवों का,
पू. फा. में शुक्र २७।२३, कामदा ११ व्रत निम्बार्कों का,
भद्रा २२।०५ से, बुध का उदय पश्चिम में २१।५१, प्रदोष व्रत,
भद्रा ९।४७ तक, **E भौमवती अमावस्या पुण्य,** अगस्त मा. ८ ता. ३१ श्री तिलक ज.,
म. सिंह में बुध १६।२९, आर्द्रा १ में गुरू २६।११, हरियाली अमावस, E

श्रावण कृ. ८ बुधे प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ५९५६

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
०३	००	०४	०३	०२	०४	०८	१०	०४
०९	१५	००	१७	०५	०८	१५	०३	०३
१६	०२	५३	४७	५५	३७	१५	०९	०९
४७	२९	४४	२३	०९	२१	११	४८	४८
५७	८४५	३७	११७	१२	७२	०३	०३	०३
२०	३९	४१	५४	३१	१८	५४	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
पुष्य २	भरणी १	मघा १	अश्ले. १	मृग. ४	मघा ३	पू.षा. १	धनि. ३	मघा १

(दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं)

मं ५ शु के
सू ४
गु ३
२
६
बु
१ च
७
१२
८
१०
ह
ने ९ श
रा ११

इस पक्ष में सूर्य बुध का मंगल गुरु शुक्र कतु से द्विर्दादश योग होने से विश्व की आर्थिक स्थिति खराब चलेगी। आर्थिक तंगी से प्रजा त्रस्त होगी। वैज्ञानिकों को अन्तरिक्ष विज्ञान में विफलता प्राप्त होगी। यहाँ गुरु शनि का प्रतियोग (समसप्तक योग) भी चालू है अतः यहाँ युद्धोन्मादी राष्ट्र शान्ति भंग करने में तत्पर होंगे। दक्षिण-पश्चिम के देशों में उग्र प्रदर्शन मतभेद हिंसाकाण्ड होंगे। राष्ट्रों में वैमनस्य बढ़ेगा। गुरुशनि के प्रतियोग का फल– **"यदा जीवयुतो मंदो जीवाद्वा सप्तमे स्थितः। तदा प्रजा विनश्यंति भूयस्त्वान्न परिक्षयः।"** पक्षारम्भ से ही शुक्र सिंह राशि में रहेगा जिसके फलस्वरूप सोना, चांदी, तांबा, गेहूँ, जौ, चना, मजीठ, लालचन्दन, व लाल मिर्च आदि लाल वस्तु व रसादि पदार्थ तथा पशुओं में तेजी होगी। वर्षा का अभाव तथा वायुवेग की अधिकता रहेगी। श्रावणबदी पञ्चमी को वर्षा होना उत्तम है। यथा– "श्रावण पहली पंचमी वर्षे करे निहाल। पवन चले तो अति बुरी पड़े हलाहल काल ॥"

श्रावण कृ. ३० भौमे प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ५९६२

मं ५ शु के
सू च ४
३ गु
२
६
बु
७
१
१२
८
ह
१०
श ९ ने
११ रा

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श:	रा.	के.
०३	०३	०४	०३	०२	०४	०८	१०	०४
१५	०६	०४	२९	०६	१५	१४	०२	०२
०१	५९	४०	१०	२९	५०	५३	५०	५०
०२	२८	०५	३४	२९	३९	०४	४३	४३
५७	७७२	३७	१०८	१२	७२	०३	०३	०३
२६	२२	४७	०६	१२	०६	३०	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
पुष्य ४	पुष्य २	मघा २	अश्ले. ४	मृग. ४	पू.फा. १	पू.षा. १	धनि. ३	मघा १

आकाश लक्षण– इस पक्ष में कहीं खण्डवृष्टि तो कहीं अतिवृष्टि होगी। कुछ प्रान्तों में समयानुकूल वर्षा होगी। वायुवेग पश्चिमी देशों में रहेगा। वर्षा भी कम होगी। सिंह राशि का शुक्र वर्षा में अवरोधक है।

श्री संवत् २०४६ शकः १९११ श्रावण शुक्ल पक्षः ९

ता.११से १७ अगस्त सन् १९८९ ई. राष्ट्रीय मिति ११ से २२ श्रावण तक । दक्षिणायन उत्तरगोल, वर्षा ऋतु ।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

ता. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. श्रावण	मु. जिल्हिज्ज	अं. अगस्त	चन्द्र संचार स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
११	१	बु	४०	५२	२२	०७	आश्ले	४७	२५	२४	४४	व्या	२४	३६	कि	९	४७	३३	२३	५	४६	१९	०८	१८	२९	२	सि २४।४४	अश्लेषा में सूर्य २२।५१, भक्त व्रत हिन्डोला प्रारंभ,
१२	२	गु	४३	३२	२३	१२	म	५१	४७	२६	३०	व	२४	३०	बा	१०	३६	३३	२०	५	४७	१९	०७	१९	३०	३	सिंह	चन्द्रदर्शन मु. ३०, सिंजारा (राज.)
१३	३	शु	४७	३०	२४	४७	पू.फा	५७	२७	२८	४६	ध	२४	४८	तै	११	५६	३३	१७	५	४७	१९	०७	२०	मु १	४	सिंह	मधुश्रवा ३, सुवर्ण गौरीव्रत, मुहर्रम मु १ हिजरी सन् १४१० प्रारंभ,
१४	४	श	५२	३०	२६	४८	उ.फा	६०	००	–	–	शि	२५	२७	व	१३	४५	३३	१४	५	४८	१९	०६	२१	२	५	कं.११।३७	भद्रा १३।४५ से २६।४८ तक, वरद ४ वैनायकी ४,
१५	५	र	५८	१७	२९	०७	उ.फा	४	०५	७	२६	सि	२६	१९	ब	१५	५६	३३	११	५	४८	१९	०५	२२	३	६	कन्या	नाग पंचमी
१६	६	च	६०	००	–	–	हस्त	११	२०	१०	२५	सा	२७	१८	कौ	१८	२०	३३	०८	५	४९	१९	०४	२३	४	७	तु २३।५१	कल्की जयंती,
१७	६	म	४	२२	७	३४	चि	१८	५०	१३	२१	शु	२८	१४	तै	७	३४	३३	०४	५	४९	१९	०३	२४	५	८	तुला	वैधृति महापात १११९ से १६।१ तक **A** पश्चिम में ७।५५, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती
१८	७	बु	१०	१०	९	५४	स्वा	२५	५७	१६	१३	शु	२८	५८	व	९	५४	३३	०१	५	५०	१९	०३	२५	६	९	तुला	भद्रा ९।५४ से २२।५९ तक, पू० फा० में बुध १३।०५, मंगल का अस्त **A**
१९	८	गु	१५	१५	११	५६	वि	३२	१५	१८	४४	ब्र	२९	२१	ब	११	५६	३२	५८	५	५०	१९	०२	२६	७	१०	वृ १२।०६	उ. फा. में शुक्र ६।०३, दुर्गाष्टमी, मेला श्री नयनादेवी व चिन्त्यपूर्णी (हिमाचल प्रदेश)
२०	९	शु	१९	०५	१३	२९	अनु	३७	३५	२०	५३	ऐ	२९	१६	कौ	१३	२९	३२	५४	५	५१	१९	०१	२७	८	११	वृश्चिक	
२१	१०	श	२१	१७	१४	२२	ज्ये	४०	३२	२२	०४	वै	२८	३८	ग	१४	२२	३२	५१	५	५१	१९	००	२८	९	१२	ध २२।०४	भद्रा २६।३३ से, कन्या में शुक्र २४।५९. **C** संस्कृत दिवस, पंचक प्रारंभ ७।४६
२२	११	र	२१	४२	१४	३३	मू	४२	०५	२२	४२	वि	२७	२६	वि	१४	३३	३२	४७	५	५२	१८	५९	२९	१०	१३	धनुषि	भद्रा १४।३३ तक, पुत्रदा ११ व्रत सबका, ताजिया (मुहर्रम)
२३	१२	च	२०	२०	१४	०१	पू.षा	४१	५२	२२	३८	प्री	२५	४०	बा	१४	०१	३२	४३	५	५३	१८	५८	३०	११	१४	म २८।२७	पू. फा. में मंगल २२।५० सोम प्रदोष व्रत, मनसा पूजा समाप्त (बंगाल)
२४	१३	म	१७	१५	१२	४७	उ.षा	४०	०२	२१	५४	आ	२३	२२	तै	१२	४७	३२	३९	५	५३	१८	५७	३१	१२	१५	मकर	भारतीय स्वतन्त्रता दिवस ४३ वाँ **B** पुण्यकाल १४।०७ से, सत्य व्रत,
२५	१४	बु	१२	३५	१०	५६	श्र	३६	४७	२०	३७	सौ	२०	३७	व	१०	५६	३२	३५	५	५४	१८	५६	भा १	१३	१६	मकर	भद्रा १०।५६ से २१।५० तक, सं. मघा सिंह में सूर्य २०।३१ मु. ३० **B**
२६	१५	गु	६	४७	८	३७	ध	३२	३०	१८	५४	शो	१७	३०	ब	८	३७	३२	३१	५	५४	१८	५६	२	१४	१७	कुं ७।४६	श्रावणी १५, रक्षाबन्धन, उपाकर्म, ऋषि तर्पण, श्री गायत्री जयन्ती, अमरनाथ यात्रा, **C**

(दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं)

श्रावण शु. ८ गुरौ प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ५९७१

सू.	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०३	०६	०४	०४	०२	०४	०८	१०	०४
२३	२६	१०	१४	०८	२६	१४	०२	०२
३८	३८	२०	२५	१६	३८	२४	२२	२२
२३	४२	४४	०९	३१	२१	०९	०६	०६
५७	७३०	३७	९३	११	७१	०२	०३	०३
३३	०४	५६	३६	३२	४४	५४	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
३ आश्ले	३ विशा	४ मघा	१ पू.फा	१ आर्द्रा	४ पू.फा	१ पू.षा	३ धनि	१ मघा

म के बु ५ शु सू
गु ३
६
४
२
चं ७
१
८
श ह ९ ने
१०
रा ११
१२

इस पक्ष में गुरुवार का चन्द्रदर्शन होने से रूई, कपास, सूत, सूतीवस्त्र, रेशमी, ऊनीवस्त्र, घृत, तेल, सरसों आदि में तेजी होगी। सोना, चांदी, गुड़, खांड़ में मंदी होगी। ता. १२ अगस्त तक तथा पूर्णिमा को सिंह राशि में चार ग्रहों का योग विश्व में वैर विरोध,हिंसा, आन्दोलन, प्रकृति-प्रकोप, से प्रजा में भय पैदा करेगा। युद्धप्रिय राष्ट्र अपने बल पर स्वार्थसिद्धि की भावना प्रबल होगी। अमेरीका, चीन, जापान, रूस, अफ्रीका, अफगानिस्तान, मिश्र, इजराइल, ईरान, ईराक में उत्पात होंगे। शुक्ल पक्ष की तिथि ६ की वृद्धि व्यापारिक वस्तुओं में मंदी कारक है। यथा– "यदा यान्ति वृद्धिसितारव्यश्च पक्षस्तदा यान्ति वृद्धिं नृपा लोक संघाः ॥" भारत में सुख-शान्ति रहेगी तथा अनाज गल्ला में मंदी तथा रूई, सूत, चांदी में घटाबढ़ी होगी।

श्रावण शु. १५ गुरौ प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ५९७८

शु ६
४
सू ५ बु
गु ३
के म
७
२
८
श ९ ह ने
रा
११
१
चं १०
१२

सू.	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०४	०९	०४	०४	०२	०५	०८	१०	०४
००	२८	१४	२४	०९	०४	१४	०१	०१
२१	३६	४६	४६	३५	५९	०५	५९	५९
३४	५२	३७	३२	२४	४४	४४	५०	५०
५७	८६७	३८	८२	१०	७१	०२	०३	०३
४०	४९	०३	११	५३	२७	१९	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
१ मघा	१ उ.षा	१ पू.फा	४ पू.फा	१ आर्द्रा	३ उ.फा	१ पू.षा	३ उ.षा	१ मघा

आकाश लक्षण– पक्षारम्भ में प्रतिकूल वर्षा होगी। हरियाणा, गुजरात, राजस्थान, म० प्र० में खण्डवृष्टि, वायुवेग तथा दक्षिण-पश्चिम वर्षा कम होगी। बंगाल, बिहार, उ० प्र०, काश्मीर, आसाम में सामान्य वर्षा होगी।

श्री संवत् २०४६ शकः १९११ भाद्रपद कृष्ण पक्षः १०

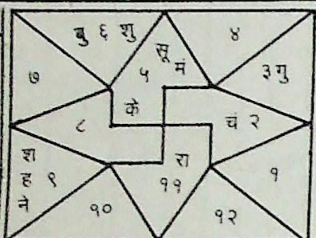
ता. १८ से ३१ अगस्त सन् १९८९ ई. राष्ट्रीय मिति २७ श्रावण से ९ भाद्रपद तक। दक्षिणायन उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टै. टा. घंटा मिनटों में है।

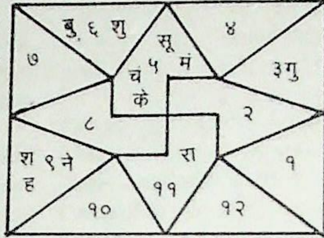
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि.	तारीखें मु.	तारीखें अं.	चन्द्र संचार स्टै. टा. रा. घ. मि.	
२७	१	शु	०	०३	५	५६	श	२७	२२	१६	५२	अ.	१४	०८	कौ	५	५६	३२	२७	५	५५	१८	५५	३	१५	१८	कुंभ	उ. फा. में बुध १४।५०,
०	२	शु	५२	४०	२६	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	द्वितीया का क्षय, A व्रत स्मार्तों का चन्द्रोदय २३।०१, आद्याकाली जयन्ती
२८	३	श	४५	०२	२३	५७	पू. भा.	२१	५०	१४	४०	सु	१०	३६	व	१३	२८	३२	२४	५	५६	१८	५४	४	१६	१९	मी. ९।१३	भद्रा १३।२८ से २३।५७ तक, आर्द्रा २ में गुरु ११।५१, कज्जली तृतीया मंगला गौरी व्रत,
२९	४	र	३७	३०	२०	५६	उ भा.	१६	१५	१२	२६	धृ	७/२७	०२/३१	ब	१०	२६	३२	२०	५	५६	१८	५३	५	१७	२०	मीन	कन्या में बुध २८।००, श्री गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय २०।५५, बहुला ४, C
३०	५	चं	३०	१७	१८	०४	रे.	१०	५२	१०	१८	ग	२४	०७	कौ	७	२९	३२	१६	५	५७	१८	५२	६	१८	२१	मे. १०।१८	हस्त में शुक्र १०।२७, रक्षा पंचमी (उड़ीसा) व्यतिपात महापात ७।४६ तक
३१	६	मं	२३	४५	१५	२७	अश्वि.	६	०५	८	२३	वृ	२१	००	व	१५	२७	३२	१२	५	५७	१८	५१	७	१९	२२	मेष	भद्रा १५।२७ से २६।१६ तक, चन्द्रषष्ठी, हल षष्ठी
भा. १	७	बु	१८	००	१३	१०	भ.	२/५८	००/५५	६/२९	४६/३२	ध्रु	१८	०८	ब	१३	१०	३२	०८	५	५८	१८	५०	८	२०	२३	वृ. १२।२८	सायन कन्या में सूर्य ९।१७, शरद् ऋतु प्रारंभ, राष्ट्रीय भाद्रपद प्रारंभ, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी A
२	८	गु	१३	१५	११	१७	रो.	५६	५२	२८	४४	व्या	१५	३७	कौ	११	१७	३२	०४	५	५९	१८	४९	९	२१	२४	वृष	श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत वैष्णवों का, चन्द्रोदय २३।५३, गोकुलाष्टमी, दुर्वाष्टमी,
३	९	शु	९	४०	९	५१	मृ	५६	०२	२८	२४	ह	१३	२८	ग	९	५१	३२	००	५	५९	१८	४८	१०	२२	२५	मि. १६।३४	भद्रा २१।१८ से, गोगानवमी, नन्द महोत्सव, C व्यतिपात महापात २७।५० से
४	१०	श	९	१२	८	५३	आ	५६	२२	२८	३३	व	११	४२	वि	८	५३	३१	५६	६	००	१८	४७	११	२३	२६	मिथुन	भद्रा ८।५३ तक,
५	११	र	६	०२	८	२५	पुन	५७	५७	२९	११	सि	१०	१९	बा	८	२५	३१	५२	६	००	१८	४५	१२	२४	२७	क. २३।०१	अजा एकादशी व्रत सबका,
६	१२	चं	६	०२	८	२६	पु	६०	००	–	–	व्य	९	२०	तै	८	२६	३१	४८	६	०१	१८	४४	१३	२५	२८	कर्क	सोम प्रदोष व्रत, वत्स द्वादशी, जैन पूर्यषण व्रतारंभ, B कैलाश यात्रा अघोरा १४,
७	१३	मं	७	१२	८	५५	पु	००	३५	६	१६	व	८	४२	व	८	५५	३१	४४	६	०२	१८	४३	१४	२६	२९	कर्क	भद्रा ८।५५ से २१।२० तक, हस्त में बुध २७।५५, अगस्त्य उदय १३।०८ B
८	१४	बु	९	३५	९	५२	आश्ले	४	२५	७	४८	प	८	२६	श	९	५२	३१	४०	६	०२	१८	४२	१५	२७	३०	सि. ७।४८	पू. फा. में सूर्य १६।२९, पिठोरी ३० अमावस्या
९	३०	गु	१२	५७	११	१४	म	९	१५	९	४५	शि	८	३०	ना	११	१४	३१	३६	६	०३	१८	४१	१६	२८	३१	सिह	लोहार्गल यात्रा, कुशोत्पाटिनी अमावस्या, अमावस्या पुण्य,

भाद्रपद कृ. ८ गुरौ प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ५९८५ (दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं) भाद्रपद कृ. ३० गुरौ प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ५९९२

सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श.	रा.	के.
०४	०१	०४	०५	०२	०५	०८	१०	०४
०७	०९	१९	०३	१०	१३	१३	०१	०१
०५	५८	१३	४४	५०	१८	५१	३७	३७
५०	२८	१९	०७	०१	५८	२५	३५	३५
५७	८२७	३८	६८	१०	७१	०१	०३	०३
५९	१३	१०	५९	१५	०७	४३	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ.	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
३ मघा	४ कृत्ति.	२ पू.फा.	३ उ.फा.	२ आर्द्रा	१ हस्त	१ पू.भा.	३ धनि.	१ मघा



इस मास का आरम्भ शुक्रवार को हुआ है और कृष्णपक्ष की द्वितीया क्षयं हुई है अतः मास के आरम्भ में शुभ फलों का संचार होगा। ता. २१ अगस्त से बुध शुक्र का योग भी उत्तम फल देने में सहायक सिद्ध होगा किन्तु वर्ष समाप्ति तक गुरु शनि का समसप्तक योग तथा यहाँ सूर्य मंगल राहु का केन्द्र योग अच्छा नहीं है, अतः मिलेजुले फल होंगे। सन्धि वार्ता एवं शान्ति चर्चा के प्रयत्न होंगे किन्तु स्थाई शान्ति स्थापित न हो सकेगी। सभी राष्ट्रों की भावना शुद्ध न होने से मतभेद बने रहेंगे। नयी सैनिक सन्धियाँ होंगी। भारत में उद्योग धन्धों व विकास कार्यों में उन्नति होकर स्वावलम्बी होने की शक्ति बढ़ेगी। सैन्य शक्ति के साहस में वृद्धि होगी। धार्मिक भावना से ही भारत अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखने में समर्थ होगा। पश्चिम दिशा के देशों में विशेष उत्पात होंगे। कन्या राशि का बुध सोना, चांदी, गुड़, खांड़, शक्कर में तेजी करेगा। रूई में मंदी होगी।



सू.	चं.	मं.	बु	गु	शु	श.	रा.	के.
०४	०४	०४	०५	०२	०५	०८	१०	०४
१३	११	२३	१०	११	२१	१३	०१	०१
५१	०९	४०	५८	५९	३५	४१	१५	१५
२९	०८	५८	००	४२	४९	२४	१९	१९
५८	७३१	३८	५१	०९	७०	०१	०३	०३
०३	१२	२१	२३	३२	४५	००	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	अ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
१ पू.फा.	४ मघा	४ पू.फा.	१ हस्त	२ आर्द्रा	४ हस्त	१ पू.भा.	३ धनि.	१ मघा

आकाश लक्षण— इस पक्ष में बुध शुक्र का योग पर्वतीय प्रदेश तथा पूर्व में अच्छी वर्षा करेगा। दक्षिण-पश्चिम में कुछ न कुछ भागों में वर्षा होती रहेगी। पक्षारंभ में वर्षा की कमी रहेगी।

श्री संवत् २०४६ शकः १९११ भाद्रपद शुक्ल पक्षः ११

ता. १ से १५ सितम्बर सन् १९८९ ई. राष्ट्रीय मिति १० से २४ भाद्रपद तक। दक्षिणायन उत्तरगोल, शरद् ऋतु।

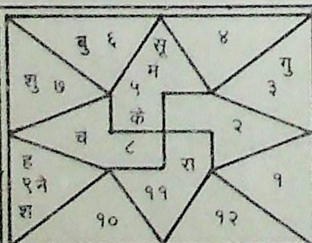
इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टै. टा. घंटा मिनटों में है।

ता. मि	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीख हि. माह	तारीख मु. मुहर्रम	तारीख अं. सित.	चन्द्र संचार स्टै. टा. रा. घं. मि.
१०	१	शु	१७	२२	१३	००	पू.फा	१५	०५	१२	०५	सि	८	५१	ब	१३	००	३१	३२	६	०३	१८	४१	१७	२९	सि. १	क १८।४५
११	२	श	२२	३७	१५	०७	उ.फा	२१	४२	१४	४५	सा	९	२९	कौ	१५	०७	३१	२७	६	०४	१८	४०	१८	स. १	२	कन्या
१२	३	र	२८	३०	१७	२८	ह	२८	५५	१७	३८	शु	१०	१९	ग	१७	२८	३१	२३	६	०४	१८	३८	१९	२	३	कन्या
१३	४	च	३४	४०	१९	५७	चि	३६	२५	२०	३९	शु	११	१६	व	६	४२	३१	१९	६	०५	१८	३७	२०	३	४	तु ७।०८
१४	५	म	४०	५०	२२	२५	स्वा	४३	५५	२३	३९	ब्र	१२	१५	ब	९	१२	३१	१५	६	०५	१८	३६	२१	४	५	तुला
१५	६	बु	४६	२७	२४	४१	वि	५०	५२	२६	२७	ऐं	१३	०८	कौ	११	३५	३१	११	६	०६	१८	३५	२२	५	६	वृ १९।४५
१६	७	गु	५१	१०	२६	३४	अनु	५६	५७	२८	५३	वै	१३	४७	ग	१३	४१	३१	०७	६	०६	१८	३४	२३	६	७	वृश्चिक
१७	८	शु	५४	३०	२७	५५	ज्ये	६०	००	–	–	वि	१४	०५	वि	१५	१९	३१	०३	६	०७	१८	३३	२४	७	८	वृश्चिक
१८	९	श	५६	०५	२८	३३	ज्ये	१	३५	६	४५	प्री	१३	५४	बा	१६	२०	३०	५८	६	०७	१८	३१	२५	८	९	ध ६।४५
१९	१०	र	५५	४५	२८	२६	मू	४	३२	७	५७	आ	१३	०९	तै	१६	३६	३०	५४	६	०८	१८	३०	२६	९	१०	धनु
२०	११	च	५३	२७	२७	३१	पू.षा	५	३७	८	२३	सौ	११	४७	व	१६	०५	३०	५०	६	०८	१८	२९	२७	१०	११	म १४।१८
२१	१२	म	४९	१७	२५	५२	उ.षा	४	४५	८	०३	शो	९	४७	ब	१४	४७	३०	४६	६	०९	१८	२८	२८	११	१२	मकर
२२	१३	बु	४३	२५	२३	३१	श्र	२/५७	२/४५	६/२९	५८/१५	अ	७/२८	११/०४	कौ	१२	४६	३०	४२	६	०९	१८	२७	२९	१२	१३	कुं १८।०७
२३	१४	गु	३६	१०	२०	३८	श	५२	०७	२७	०१	धृ	२४	३१	ग	१०	०८	३०	३८	६	१०	१८	२५	३०	१३	१४	कुंभ
२४	१५	शु	२७	५७	१७	२१	पू.भा	४५	४०	२४	२६	शू	२०	३९	वि	७	०२	३०	३४	६	१०	१८	२४	३१	१४	१५	मी १९।०५

चित्रा में शुक्र १६।५१, दक्षिण भारत में चन्द्रदर्शन मु. ४५, नक्त व्रत समाप्त, A
सफर मु. २. A सितम्बर मा. ९ ता. ३०, E गढ़वोर मेवाड़ (राज.)
हरितालिका ३, वराह जयन्ती, साम श्रावणी, G व्यतिपात महापात ७।२६ से ११।२९ तक
भद्रा ६।४२ से १९।५७ तक, उ. फा. में मंगल २१।२३, श्री गणेश जन्मोत्सव, B
ऋषि ५, जैन संवत्सरी, B कलंक ४, चन्द्रदर्शन निषेध, चन्द्रास्त २०।३६
बलदेव ६, मेला ब्रजमण्डल,. C ज्येष्ठा गौरी विसर्जन, भागवत सप्ताह प्रारंभ
भद्रा २६।३४ से, तुला में शुक्र ८।५८, मुक्ताभरण ७, ज्येष्ठा गौरी आवाहन,
भद्रा १५।१९ तक, आर्द्रा ३ में गुरू २६।३०, श्री राधाष्टमी, दुर्गाष्टमी
कन्या में मंगल २६।०५, श्री चन्द जयन्ती उदासीन सम्प्र. महोत्सव, C
मार्गी हर्षल ६।५१ D स्मार्तों का, जलझूलनी मेला श्री चार भुजानाथ, E
भद्रा १६।५ से २७।३१ तक, वक्री बुध २६।२७, मार्गी शनि १२।४३, पद्मा ११ व्रत D
स्वाती में शुक्र २५।४७ पद्मा ११ व्रत वैष्णवों का, वामन १२ जयन्ती F
उ. फा. में सूर्य १०।१९, प्रदोष व्रत पंचक प्रारम्भ १८।०७
भद्रा २०।३८ से, अनन्त १४ व्रत, F श्री भुवनेश्वरी जयंती, मेला अम्बाला पटियाला
भद्रा ७।०२ तक, सत्यव्रत, प्रोष्ठपदी १५, भागवत सप्ताह समाप्त, सन्यासी चातुर्मास समाप्त, G

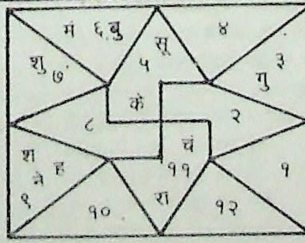
भाद्रपद शु. ८ शुक्रे प्रातः स्टै. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ६००० (दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं) **भाद्रपद शु. १५ शुक्रे प्रातः स्टै. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ६००७**

सू.	च.	म.	बु	गु	शु	श	रा.	के.
०४	०७	०४	०५	०२	०६	०८	१०	०४
२१	१६	२८	१६	१३	०१	१३	००	००
३६	५८	४८	०७	१२	००	३५	४९	४९
४१	३१	२७	०४	३१	०९	४०	५३	५३
५८	७४१	३८	१९	०८	७०	००	०३	०३
१६	५०	३१	१२	३३	१६	१८	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	च	व	व
उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



इस पक्ष में चतुर्थी सोमवार तथा चित्रा नक्षत्र का होना उत्तम फलप्रद है। कृषि उत्पादनों की वृद्धि होगी। सुभिक्ष का संचार होगा। यथा–

"भादे शुक्ले चतुर्थ्यां चेद्वारा जीवेन्दु भार्गवाः।
उत्तरा हस्तचित्राभिः सुभिक्षं निश्चयात्तदा ॥"



सू.	च.	म.	बु	गु	शु	श	रा	के.
०४	१०	०५	०५	०२	०६	०८	१०	०४
२८	२१	०३	१६	१४	०९	१३	००	००
२५	३१	१८	१९	०९	१०	३५	२७	२७
०६	२२	३०	०३	३९	४०	४५	३७	३७
५८	८९८	३८	२४	०७	६९	००	०३	०३
२८	५०	४१	०६	३६	४५	२४	११	११
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
उ.फा. १	पू.भा. १	उ.फा. ४	हस्त २	आर्द्रा ३	स्वाती १	पू.षा. १	धनि. ३	मघा १

पक्षारंभ में शनि का सूर्य मंगल केतु से त्रिकोण योग रहेगा तथा ११ सितम्बर को वक्री बुध तथा मार्गी शनि हो रहे हैं। अतः युद्धभय, रक्तक्रान्ति भय, विग्रह, प्रकति-प्रकोप आदि उत्पातों में शान्ति का संचार होगा। अशान्तिप्रद राष्ट्रों के पारस्परिक तनाव कम होकर सामान्य सम्बन्ध बनेंगे। शान्ति सहयोग स्थिरता कायम करने के नये सिरे से प्रयत्न होंगे। सभी खाद्य पदार्थों में मंदी होगी। सोना, चांदी, लोहा, तांबा, पीतल, आदि धातु पदार्थों में घटाबढ़ी चलेगी। रूई में तेजी के बाद मंदी होगी। इस पक्ष में सूर्य सेआगे मंगल होने से वर्षा में अवरोध उत्पन्न होगा। यथा– **"आगे मंगल पीछे भान। वर्षा होवे ओस समान ॥"**

आकाश लक्षण– उत्तरी भारत और आसपास के क्षेत्रों में साधारण बादल चाल के योग हैं। जिससे कृषि में हानि होगी। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उ० प्र०, राजस्थान, म० प्र० में वायुवेग रहेगा। कहीं वर्षा भी होगी।

श्री संवत् २०४६ शकः १९११ आश्विन कृष्ण पक्षः १२

ता. १६ से २९ सितम्बर सन् १९८९ ई. राष्ट्रीय मिति २५ भाद्रपद से ७ आश्विन तक। दक्षिणायन उत्तरगोल, शरद् ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

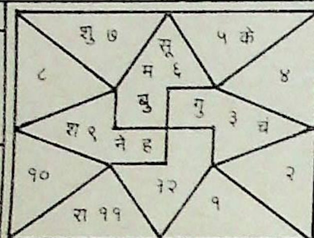
रा. ति.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीख हि	तारीख मु	तारीख अं	चन्द्र संचार स्टैं. टा. रा घ मि
२५	१	श	१९	०२	१३	४८	उ भा	३८	४०	२१	३९	गं	१६	३६	कौ	१३	४८	३०	३०	६	११	१८	२३	आ. १	१५	१६	मीन
२६	२	र	१०	००	१०	११	रे	३१	३७	१८	५०	वृ	१२	३०	ग	१०	११	३०	२५	६	११	१८	२२	२	१६	१७	मे. १८।५०
२७	३	च	१	०५	६	३८	अश्वि	२४	५७	१६	११	धु	८/२८	२९/४१	वि	६	३८	३०	२१	६	१२	१८	२१	३	१७	१८	मेष
०	४	च	५२	५२	२७	२१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०
२८	५	मं.	४५	३७	२४	२७	भ	१९	०७	१३	५१	ह	२५	१२	कौ	१३	५१	३०	१७	६	१२	१८	१९	४	१८	१९	वृ. १९।२३
२९	६	बु	३९	४०	२२	०४	कृ	१४	२७	११	५९	व	२२	१०	ग	११	११	३०	१३	६	१२	१८	१८	५	१९	२०	वृष
३०	७	गु	३५	१२	२०	१८	रो	११	१०	१०	४१	सि	१९	३७	वि	९	०६	३०	०८	६	१३	१८	१७	६	२०	२१	मि. २२।२१
३१	८	शु	३२	२७	१९	१२	मृ	९	३०	१०	०१	व्य	१७	३६	बा	७	४०	३०	०४	६	१३	१८	१६	७	२१	२२	मिथुन
आ१	९	श	३१	२२	१८	४७	आ	९	३०	१०	०२	व	१६	०८	तै	६	५४	३०	००	६	१४	१८	१४	८	२२	२३	क. २८।३२
२	१०	र	३१	५७	१९	०१	पुन	११	१०	१०	४२	प	१५	११	व	६	४९	२९	५६	६	१४	१८	१३	९	२३	२४	कर्क
३	११	च	३४	००	१९	५१	पु	१४	१५	११	५७	शि	१४	४३	ब	७	२२	२९	५१	६	१५	१८	१२	१०	२४	२५	कर्क
४	१२	म	३७	२०	२१	११	आश्ले	१८	४२	१३	४४	सि	१४	३८	कौ	८	२८	२९	४७	६	१५	१८	११	११	२५	२६	सिंह १३।४४
५	१३	बु	४१	४०	२२	५६	म	२४	१०	१५	५६	सा	१४	५३	ग	१०	०१	२९	४३	६	१६	१८	१०	१२	२६	२७	सिंह
६	१४	गु	४६	४५	२४	५९	पू फा	३०	२७	१८	२८	शु	१५	२३	वि	११	५५	२९	३९	६	१७	१८	०८	१३	२७	२८	कं. २५।०९
७	३०	शु	५२	३०	२७	१७	उ फा	३७	२०	२१	१३	शु	१६	०६	च	१४	०७	२९	३४	६	१७	१८	०७	१४	२८	२९	कन्या
–	–	–	–	–	–	–		–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	

स कन्या में सूर्य २०।२७, मु. ४५ पुण्यकाल १४।०३ से. पितृ पक्ष प्रारम्भ, पड़वा का श्राद्ध.
भद्रा २०।२३. द्वितीया का श्राद्ध, तृतिया का श्राद्ध १०।११ उप०, पचक समाप्त १८।५०
भद्रा ६।३८ तक, बुध का अस्त पश्चिम में. ११।३३. चतुर्थी का श्राद्ध, श्री गणेश ४ व्रत, A
चतुर्थी का क्षय A चन्द्रोदय २०।०९
पंचमी का श्राद्ध, B सायन तुला में सूर्य ६।५१. दक्षिण गोल में सूर्य प्रवेश C
भद्रा २२।०४ से षष्ठी का श्राद्ध C नवमी का श्राद्ध.मातृ ९, राष्ट्रीय आश्विन प्रा., D
भद्रा ९।०६ तक, मार्गी नेपच्यून १२।३६, सप्तमी का श्राद्ध, चेहल्लम यवनों का,
अष्टमी का श्राद्ध, महालक्ष्मी व्रत D सौभाग्यवती श्राद्ध
वक्री उ. फा. में बुध १०।१९ धनि० २ मकर में राहु अश्ले ४ कर्क में केतु २१।५८. B
भद्रा ६।४९ से १९।०१ तक, विशाखा में शुक्र १४।०५. दशमी का श्राद्ध,
हस्त में मंगल १३।४५. एकादशी का श्राद्ध, इन्दिरा ११ व्रत सबका,
हस्त में सूर्य २५।५१. द्वादशी और संन्यासियों का श्राद्ध.
भद्रा २२।५६ से, प्रदोष व्रत त्रयोदशी का श्राद्ध. A वैधृति महापात १५।०५ से १९।२२ तक
भद्रा ११।५५ तक, चर्तुदशी का और शस्त्रादि विष जलादि से मृतकों का श्राद्ध,
सर्वपितृ अमावस्या श्राद्ध, पितृ पक्ष मात्र, गजछाया पर्व, A

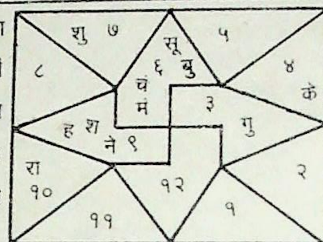
आश्विन कृ. ८ शुक्रे प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ६०१४ (दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की है) **आश्विन कृ. ३० शुक्रे प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ६०२१**

आश्विन कृ. ८:

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
०५	०२	०५	०५	०२	०६	०८	१०	०४
०५	०४	०७	११	१५	१७	१३	००	००
१५	०६	४९	१६	००	१७	४०	०५	०५
०२	२६	५१	३०	०३	०९	३९	२२	२२
५८	८०३	३८	६३	०६	६९	०१	०३	०३
४२	५३	५३	२१	३८	०६	०५	११	११
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
उ.फा ३	पु ४	उ.फा ४	हस्त १	आर्द्रा ३	स्वाती ४	पू.षा १	धनि ३	मघा १



इस पक्ष में सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शनि का केन्द्र योग तथा अमावस्या को कन्या राशि में चतुर्ग्रही योग नेष्ट फलप्रद है। अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति में तनाव बढ़ेगा। मंहगाई से जनता त्रस्त होगी। पूर्व दक्षिण में भूकम्प और प्रकृति-प्रकोप से भारी हानि होगी। जर्मनी, जापान, अमेरिका,



आश्विन कृ. ३०:

सू.	च.	म.	बु	गु	शु	श	रा	के.
०५	०५	०५	०५	०२	०६	०८	०९	०३
१२	०२	१२	०४	१५	२५	१३	२९	२९
०६	१०	२२	०७	४३	१९	५०	४३	४३
४६	१६	३७	०२	०४	२६	२६	०६	०६
५८	७१५	३९	४३	०५	६८	०१	०३	०३
५७	३६	०३	४८	२८	३०	४२	११	११
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
उ	अ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
हस्त १	उ.फा. २	हस्त १	उ.फा. ३	आर्द्रा ३	विशा. २	पू.षा. १	धनि. २	अश्ले. ४

चीन, ईराक, ईरान, मिश्र, वियतनाम में विस्फोट, विमान दुर्घटना, अपहरण से प्रजा को कष्ट होगा। मंगल कन्या राशि में है, यह सोना, चांदी, रूई, सूत, चन्दन, पाट, वारदाना, लालवस्त्र, ऊनीवस्त्र, अलसी, मिर्च में तेजी करेगा। कन्या राशि के मंगल का फल— **"कन्याराशि गते भौमे चन्दनं पट्टवस्त्रकम्। आरक्तद्यर्धवस्त्राणां प्रभवेत्तु महर्घता ॥"** कन्या संक्रान्ति ४५ मुहूर्ती शनिवार की होने से गेहूं, चना, जौ, चावल आदि धान्यादि में तेजी के बाद मंदी तथा गुड़, खांड़, शक्कर, चावल, चांदी, रूई, कपास में घटाबढ़ी चलेगी।

आकाश लक्षण— ता० १८ सितम्बर को बुध का अस्त वायुवेग के साथ हानिकारक वर्षा करेगा। आसाम, बंगाल, नेपाल, हि० प्र०, काश्मीर आदि में भी वर्षा होगी। दिल्ली, पंजाब, राजस्थान, म० प्र० में बादल वर्षा, वायुवेग के योग है।

श्री संवत् २०४६ शकः १९११ आश्विन शुक्ल पक्षः १३

ता. ३० सितम्बर से १४ अक्टूबर सन् १९८९ ई. राष्ट्रीय मिति ८ से २२ आश्विन तक। दक्षिणायन गोल, शरद् ऋतु।

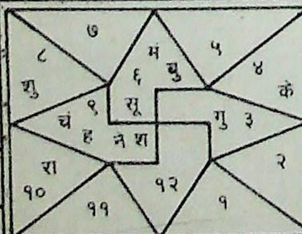
इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टै. टा. घंटा मिनटों में है।

ता. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. आश्वि	तारीखें मु. सफर	तारीखें अ. सित.	चन्द्र संचार स्टै. टा. रा. घं. मि.
८	१	श.	५८	३२	२९	४३	ह.	४४	३७	२४	०९	ब्र	१६	५६	कि	१६	२९	२९	३०	६	१८	१८	०६	१५	२९	३०	कन्या
९	२	र	६०	००	—	—	चि	५२	०७	२७	०९	ऐ	१७	५२	बा	१८	४९	२९	२६	६	१८	१८	०५	१६	३०	अ.१	तु.१३।३९
१०	२	चं	४	४७	८	१४	स्वा	५९	३७	३०	१०	वै	१८	४८	कौ	८	१४	२९	२२	६	१९	१८	०४	१७	र.१	२	तुला
११	३	मं	११	०२	१०	४४	वि	६०	००	—	—	वि	१९	४२	ग	१०	४४	२९	१७	६	१९	१८	०३	१८	२	३	वृ.२६।२१
१२	४	बु	१६	५५	१३	०६	वि	६	५०	९	०४	प्री	२०	२८	वि	१३	०६	२९	१३	६	२०	१८	०१	१९	३	४	वृश्चिक
१३	५	गु	२२	१०	१५	१२	अनु	१३	३०	११	४४	आ	२१	०१	बा	१५	१२	२९	०९	६	२०	१८	००	२०	४	५	वृश्चिक
१४	६	शु	२६	२२	१६	५४	ज्ये	१९	१२	१४	०२	सौ	२१	१३	तै	१६	५४	२९	०५	६	२१	१७	५९	२१	५	६	ध.१४।०२
१५	७	श.	२९	१५	१८	०३	मू.	२३	४०	१५	४९	शो	२०	५८	व	१८	०३	२९	०१	६	२१	१७	५८	२२	६	७	धनु
१६	८	र.	३०	२२	१८	३१	पू.षा	२६	२५	१६	५६	अ	२०	११	ब	१८	३१	२८	५६	६	२२	१७	५७	२३	७	८	म.२३।०२
१७	९	चं	२९	३५	१८	१२	उ.षा	२७	२५	१७	२०	सु	१८	४८	कौ	१८	१२	२८	५२	६	२२	१७	५६	२४	८	९	मकर
१८	१०	मं	२६	४७	१७	०६	श्र	२६	२२	१६	५६	धृ	१६	४७	ग	१७	०६	२८	४८	६	२३	१७	५५	२५	९	१०	कुं.२८।२१
१९	११	बु	२२	०२	१५	१३	ध	२३	२५	१५	४६	शू	१४	०९	वि	१५	१३	२८	४४	६	२४	१७	५४	२६	१०	११	कुम्भ
२०	१२	गु	१५	३५	१२	३८	श	१८	४७	१३	५५	ग	१०	५६	बा	१२	३८	२८	४०	६	२४	१७	५३	२७	११	१२	मी.३०।०५
२१	१३	शु	७	४०	९	२९	पू.भा	१२	४०	११	२९	वृ	७/२७	१३/९	तै	९	२९	२८	३६	६	२५	१७	५२	२८	१२	१३	मीन
०	१४	शु	५८	४०	२९	५३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०
२२	१५	श	४९	०२	२६	०२	उ.भा	५/५७	३२/५०	८/२९	३८/३३	व्या	२२	५०	वि	१५	५९	२८	३१	६	२५	१७	५०	२९	१३	१४	मेष२९।३३

शारदीय नवरात्र प्रारम्भ, घटस्थापन, मातामह श्राद्ध, श्री अग्रसेन जयन्ती,
चन्द्रदर्शन मु॰ ३०, अक्टूबर मा॰ १० ता॰ ३१.
बुध का उदय पूर्व मे ११।२८, रवि-उल-अव्वल मु ३, महात्मा गांधी जन्म दिवस,
भद्रा २३।५७ से, मार्गी बुध २९।१८ वृश्चिक में शुक्र ८।०२
भद्रा १३।०६ तक, **A** रावणदाह, पंचक प्रारम्भ २८।२१ मध्वाचार्य जय
ललिता पंचमी, **B** श्री बाल्मीकि जयन्ती, कार्तिक स्नान प्रा० **C**
अनुराधा मे शुक्र ६।४०, सरस्वती आवाहन १४।२ उप., जैन आयंबिल ऑली प्रारंभ
भद्रा १८।०३ से ३०।२२ तक, सरस्वती पूजन
श्री सरस्वती बलिदान, दुर्गा ८, महाष्टमी, मेला ज्वालामुखी भद्रकाली जयन्ती
श्री सरस्वती विसर्जन १७।२० उप.. महानवमी, शस्त्रपूजा, नवरात्र समाप्त
भद्रा २८।१५ से, चित्रा मे सूर्य १४।४८, विजयदशमी (दशहरा) **A**
भद्रा १५।१३ तक, आर्द्रा ४ गुरु २१।४४, पापांकुशा ११ व्रत सबका, भरत मिलाप, **D**
प्रदोष व्रत व्यतिपात महापात ६।५८ तक **D** व्यतिपात महापात २७।१४ से
भद्रा २९।५३ से, ईद ए मिलाद [illegible])
चतुर्दशी का क्षय **C** आकाश दीप दानं, जैन आयंबिल ओली समाप्त, पंचक समाप्त २९।३३,
भद्रा १५।५९ तक, हस्त में बुध १२।००, सत्यव्रत शरद पूर्णिमा, कोजागरी १५, **B**

आश्विन शु ८ रवौ प्रातः स्टै. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ६०३० (दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की है) **आश्विन शु १५ शनौ प्रातः स्टै. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ६०३६**

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
०४	०४	०५	०५	०२	०७	०८	०९	०३
२०	२०	१८	०३	१६	०५	१४	२९	२९
५८	३२	१५	२३	२६	३२	०९	१४	१४
३३	३२	१४	४२	२४	००	४८	३०	३०
५९	७७५	३९	४४	०३	६७	०२	०३	०३
१४	४६	१७	१२	५४	२४	३६	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
हस्त ४	पू.फा ३	हस्त ३	उ.फा ३	आर्द्रा ३	अनु १	पू.षा १	धनि १	अश्ले ४



इस मास में पाँच शनिवार विश्व में प्रकृति-प्रकोप रोग चौरादि तथा राजप्रजा में अशान्ति कारक है। किन्तु सुदी प्रतिपदा को शनिवार का होना सुभिक्ष एवं धान्यादि में मंदीकारक है। यथा– **"आश्विने प्रथमायां चेच्छुक्लायां च गते शनौ। तदा धान्यं च विक्रेयं पुरस्तस्य समर्धता॥"** प्रजा में सुख शान्ति बढ़ेगी। धान्यादि की पैदावार श्रेष्ठ होने से अन्नादि में मंदी होगी। रविवार का चन्द्रदर्शन, सुदी १४ का क्षय अतः धान्य, चावल, गेहूँ, मूंग, चना, जौ मोठ, बाजरा, ज्वार, मक्का, मटर आदि में तेजी होगी। रूई, कपास, पाट, वस्त्र में मंदा होकर तेजी होगी। यहाँ शनि का शुक्र राहु से द्विर्दादश योग आर्थिक तंगीकारक है। ता.२ अक्टूबर को बुध का उदय पूर्व में होने से सोना, चांदी, पाट, वारदाना, गुड़ में तेजी का वातावरण बनेगा।

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
०५	११	०५	०५	०२	०७	०८	०९	०३
२६	१४	२२	०९	१६	१२	१४	२८	२८
५४	४०	११	३७	४७	१४	२६	५५	५५
२७	१५	२६	४२	१८	२४	४८	२५	२५
५९	९१७	३९	८२	०२	६६	०३	०३	०३
२५	२९	२९	१७	४७	२९	११	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
चित्रा १	उ.भा ४	हस्त ४	उ.फा ४	आर्द्रा ४	अनु ३	पू.षा १	धनि १	अश्ले ४

आकाश लक्षण– इस पक्ष के प्रारम्भ में दिल्ली, पंजाब, उ० प्र०, राजस्थान, मध्य भारत, में बादल वर्षा के योग है। पूर्व-दक्षिण में यत्रतत्र न्यूनाधिक वर्षा होगी। दिन में गर्मी, रात में सर्दी पड़ने लगेगी।

श्री संवत् २०४६ शकः १९११ कार्तिक कृष्ण पक्षः १४

ता. १५ से २९ अक्टूबर सन् १९८९ ई. राष्ट्रीय तिथि २३ आश्विन से ७ कार्तिक तक। दक्षिणायन गोल, शरद् ऋतु।

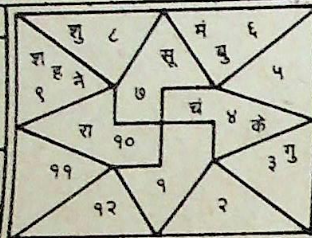
इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टै. टा. घंटा मिनटों में है।

ता. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. (आश्वि.)	तारीखें मु. (र.अ.)	तारीखें अं. (अक्टू.)	चन्द्र संचार स्टै. टा. रा. घं. मि.	
२३	१	र	३९	१०	२२	०६	अश्वि.	४९	५७	२६	२५	ह.	१८	२६	ब	१२	०४	२८	२७	६	२६	१७	४९	३०	१४	१५	मेष	चित्रा, मैं मंगल २३।१०
२४	२	च	२९	४०	१८	१८	भ.	४२	३२	२३	२७	व	१४	०५	तै	८	१०	२८	२३	६	२६	१७	४८	३१	१५	१६	वृ. २८।४७	भद्रा २८।२९ से,
२५	३	म	२०	५०	१४	४७	कृ.	३५	५५	२०	४९	सि	९/३०	५८/१३	वि	१४	४७	२८	१९	६	२७	१७	४७	का १	१६	१७	वृष	भद्रा १४।४७ तक, सं. तुला मे सूर्य ८।२४. मु. ३० पुण्यकाल १४।४८ तक, ज्येष्ठा में A
२६	४	बु	१३	१७	११	४६	रो.	३०	४२	१८	४४	व	२६	५७	बा	११	४६	२८	१५	६	२७	१७	४६	२	१७	१८	मि. ३०।०२	ईद-ए-मीलाद,
२७	५	गु	७	१५	९	२२	मृ.	२७	०७	१७	१९	प	२४	१७	तै	९	२२	२८	१०	६	२८	१७	४५	३	१८	१९	मिथुन	A शुक्र २९।४१. श्री गणेश ४ व्रत (करक-करवा चौथ) चन्द्रोदय १९।३६.
२८	६	शु	३	०७	७	४४	आ.	२५	२७	१६	४०	शि	२२	१४	व	७	४४	२८	०६	६	२९	१७	४४	४	१९	२०	मिथुन	भद्रा ७।४४ से १९।१३ तक.
२९	७	श.	१	०५	६	५५	पुन.	२५	४२	१६	५०	सि	२०	५१	ब	६	५५	२८	०२	६	२९	१७	४३	५	२०	२१	क. १०।४७	बुध का अस्त पूर्व में २७।०२, अहोई अष्टमी, B राष्ट्रीय कार्तिक प्रारम्भ, C C वैधृति महापात २६।१९ से
३०	८	र.	१	०२	६	५५	पु.	२८	१२	१७	४७	सा	२०	०६	कौ	६	५५	२७	५८	६	३०	१७	४२	६	२१	२२	कर्क	चित्रा मे बुध २६।०१.
का१	९	चं	२	५७	७	४२	आश्ले.	३२	२०	१९	२७	शु	१९	५३	ग	७	४२	२७	५४	६	३१	१७	४१	७	२२	२३	सिं. १९।२७	भद्रा २०।२१ से, स्वाती में सूर्य २५।२१. सायन वृश्चिक में सूर्य १६।०६, हेमन्त ऋतु प्रा. B
२	१०	म.	६	३२	९	०८	म.	३७	५५	२१	४१	शु	२०	०८	वि	९	०८	२७	५०	६	३१	१७	४०	८	२३	२४	सिंह	भद्रा ९।०८ तक, वैधृति महापात ६।४८ तक
३	११	बु	११	२२	११	०५	पू.फा.	४४	२७	२४	१९	ब्र	२०	४२	बा	११	०५	२७	४६	६	३२	१७	३९	९	२४	२५	सिंह	तुला में मंगल २४।५५, रमा ११ व्रत सबका,
४	१२	गु	१७	०७	१३	२३	उ.फा.	५१	४०	२७	१२	ऐ	२१	२८	तै	१३	२३	२७	४२	६	३२	१७	३८	१०	२५	२६	क. ७।०२	तुला में बुध २५।३१. गोवत्स द्वादशी, प्रदोष व्रत,
५	१३	शु	२३	१७	१५	५२	ह.	५९	०७	३०	१२	वै	२२	२२	व	१५	५२	२७	३८	६	३३	१७	३८	११	२६	२७	कन्या	भद्रा १५।५२ से २९।०९ तक, श्री धन्वन्तरी जयन्ती, यमदीप दान, धन. १३.
६	१४	श.	२९	३७	१८	२५	चि	६०	००	—	—	वि	२३	१७	श	१८	२५	२७	३५	६	३४	१७	३७	१२	२७	२८	तु. १९।४२	वक्री गुरु २९।३४. नरकहरा रूप १४, श्री हनुमज्जयन्ती, रूप १४,
७	३०	र.	३५	५७	२०	५७	चि.	६	३५	९	१२	प्री	२४	१०	च	७	४२	२७	३१	६	३४	१७	३६	१३	२८	२९	तुला	श्री महालक्ष्मी पूजन, दीपावली, कमला जयन्ती, श्री महावीर निर्वाण दिन (जैन)
—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—		

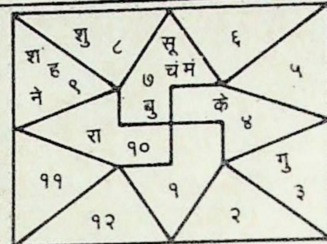
(दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं)

कार्तिक कृ. ८ रवौ प्रातः स्टै. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ६०४४

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०६	०३	०५	०५	०२	०७	०८	०९	०३
०४	१०	२७	२१	१७	२१	१४	२८	२८
५०	०८	२८	४८	०४	०१	५४	२९	२९
५२	३१	२४	५३	४१	४१	२९	५९	५९
५९	७५८	३९	९९	०१	६५	०३	०३	०३
४३	३३	४५	३६	१८	००	४८	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
चित्रा ४	पुष्य ३	चित्रा २	हस्त ४	आर्द्रा ४	ज्येष्ठा २	पू.षा. १	धनि. २	आश्ले. ४



इस पक्ष में १७ अक्टूबर को तुला-संक्रान्ति मंगलवार को लगेगी। अतः गेहूँ, जौ, चना, धनिया, नमक, मिर्च मसालों में तेजी तथा रूई, सूत, कपास, तांबा, लोहा, पीतल, जस्ता, घृत, गाय, भैस, मंदे होंगे। यहाँ से संघट्टचक्र में गुरु शनि का क्रमशः राहु केतु से बेध रहेगा। विश्व में कहीं भीषण भूकम्प, यान दुर्घटना, प्रकृति-प्रकोप से जन धन की हानि करेगा। अमावस्या रविवार की दीपमाला अशुभ है। जिसका फल— "कार्तिकस्य त्वमावस्या रविवारेण संयुता। शनि-भौमयुता वापिसर्वलोक भयावहा॥" विश्व में कहीं रोगोत्पात, अग्निकाण्ड, यानदुर्घटना आदि नेष्ट फल होंगे। कहीं मुद्रास्फीति, बेकारी और अपराध-वृद्धि, साम्प्रदायिक दंगों की समस्या उग्र बनेगी। अमवस्या को चार ग्रहों का योग भी है यह भी अशुभ फलों में वृद्धि करेगा।



कार्तिक कृ. ३० रवौ प्रातः स्टै. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ६०५१

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०६	०६	०६	०६	०२	०७	०८	०९	०३
११	०४	०२	०३	१७	२८	१५	२८	२८
४९	४९	०७	३८	०९	३२	२२	०७	०७
३९	३९	२१	१६	३४	२८	५८	४३	४३
५९	७१२	३९	९९	००	६३	०४	०३	०३
५८	०६	५९	३६	०६	२४	२४	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	अ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
स्वाती २	चित्रा ४	चित्रा ३	चित्रा ४	आर्द्रा ४	ज्येष्ठा ४	पू.षा. १	धनि. २	आश्ले. ४

आकाश लक्षण— पंजाब, मद्रास, हि० प्र०, बम्बई, आसाम आदि में कहीं बादल, वर्षा एवं खण्ड वृष्टि होगी। रात में गुलाबी सरदी पड़ेगी। पक्ष मध्य में बुध का अस्त कहीं अच्छी वर्षा करेगा।

श्री संवत् २०४६ शकः १९११ कार्तिक शुक्ल पक्षः १५

ता. ३० अक्टूबर से १३ नवम्बर सन् १९८९ ई. राष्ट्रीय मिति ८ से २२ कार्तिक तक। दक्षिणायन गोल, हेमन्त ऋतु।

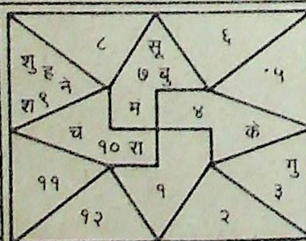
इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

																		दिन मान		स्टैण्डर्ड टाईम सूर्योदय		सूर्यास्त		तारीखें हि	मु	अ	चन्द्र संचार स्टैं टा	
ता मि	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	कार्तिक	र उ	अक्टू.	रा. घं. मि	
८	१	च	४२	००	२३	२३	स्वा	१३	५५	१२	०९	आ	२४	५८	कि	१०	११	२७	२७	६	३५	१७	३५	१४	२९	३०	तुला	स्वाती में बुध २४।५६, मू. धनु मे शुक्र १४।४०, अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, बलि पूजा,
९	२	म	४७	३७	२५	३९	वि	२०	५५	१४	५८	सौ	२५	३९	बा	१२	३२	२७	२४	६	३६	१७	३४	१५	३०	३१	वृ. ८।१६	चन्द्रदर्शन मु ३०, यम २, भैया दूज टिक्का, विश्वकर्मा जयन्ती, इंदिरा गांधी निधन दिवस
१०	३	बु	५२	४२	२७	४१	अनु	२७	३०	१७	३६	शो	२६	०९	तै	१४	४२	२७	२०	६	३६	१७	३३	१६	२.१	न.१	वृश्चिक	रवि-उल-आखिर मु. ४, नवम्बर मा. ११ ता. ३०,
११	४	गु	५७	०२	२९	२६	ज्ये	३३	२२	१९	५८	अ	२६	२६	व	१६	३६	२७	१६	६	३७	१७	३३	१७	२	२	ध. १९।५८	भद्रा १६।३६ से २९।२६ तक.
१२	५	शु	६०	००	-	-	मू	३८	२२	२१	५९	सु	२६	२५	व	१८	०९	२७	१२	६	३८	१७	३२	१८	३	३	धनु	पांडव ५, ज्ञान पंचमी,
१३	५	श	०	१७	६	४६	पू.षा	४२	१५	२३	३३	धृ	२६	०२	बा	६	४६	२७	०९	६	३९	१७	३१	१९	४	४	म. २९।४८	स्वाती मे मंगल २४।४६, A भीष्म पंचक प्रा., चातुर्मास व्रत नियम समाप्त, B
१४	६	र	२	२२	७	३६	उ.षा	४४	४७	२४	३४	शू	२५	१२	तै	७	३६	२७	०५	६	३९	१७	३०	२०	५	५	मकर	सूर्यषष्ठी, B कालिदास जयन्ती, पण्ढरपुर यात्रा (महाराष्ट्र)
१५	७	च	२	५५	७	५०	श्र	४५	४०	२४	५६	गं	२३	५०	व	७	५०	२७	०१	६	४०	१७	२९	२१	६	६	मकर	भद्रा ७।५० से १९।४१ तक, विशाखा मे सूर्य ९।२४, गोपाष्टमी E
१६	८	म	१	४०	७	२१	ध	४४	४५	२४	३५	वृ	२१	५१	ब	७	२१	२६	५७	६	४१	१७	२८	२२	७	७	कु. १२।४६	विशाखा मे बुध २७।१८, दुर्गा ८, आमला ९, कुष्माण्ड ९, पंचक प्रारम्भ १२।४६.
०	९	म	५८	४२	३०	१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	नवमी का क्षय E व्यतिपात महापात २२।२७ से २७।१० तक
१७	१०	बु	५३	५२	२८	१५	श	४२	०२	२३	३१	ध्रु	१९	२४	तै	१७	१७	२६	५३	६	४२	१७	२८	२३	८	८	कुंभ	C भीष्म पंचक समाप्त, कार्तिक स्नान समाप्त, श्री गुरुनानक जयन्ती, D
१८	११	गु	४७	२२	२५	४०	पू.भा	३७	४०	२१	४७	व्या	१६	२०	व	१५	०२	२६	५०	६	४३	१७	२७	२४	९	९	मी. १६।१३	भद्रा १५।०२ से २५।४० तक, प्रबोधिनी ११ व्रत स्मार्त वैष्णवों का, तुलसी विवाह, A
१९	१२	शु	३९	३०	२२	३२	उ.भा	३१	५२	१९	२९	ह	१२	४६	व	१२	१०	२६	४६	६	४४	१७	२६	२५	१०	१०	मीन	प्रबोधिनी ११ व्रत निम्बार्कों का, D श्री निम्बार्काचार्य जं.,
२०	१३	श	३०	३७	१८	५९	रे	२५	००	१६	४४	व	८/२८	४९/३५	कौ	८	४८	२६	४३	६	४४	१७	२६	२६	११	११	मे. १६।४४	शनि प्रदोष व्रत, पंचक समाप्त १६।४४, विद्यापति ज. वैकुण्ठ १४,
२१	१४	र	२१	०७	१५	१२	अश्वि	१७	२७	१३	४४	व्य	२४	१३	व	१५	१२	२६	४०	६	४५	१७	२५	२७	१२	१२	मेष	भद्रा १५।१२ से २५।१६ तक, पू.षा. मे शुक्र १६।४५, सत्यव्रत,
२२	१५	च	११	२७	११	२१	भ	९	४२	१०	३९	व	१९	५३	ब	११	२१	२६	३६	६	४६	१७	२४	२८	१३	१३	वृ. १५।५५	पू.षा. २ मे शनि २२।४६, कार्तिकी १५, मेला पुष्कर-राजगढ़गंगा, रेणुका तीर्थ, C

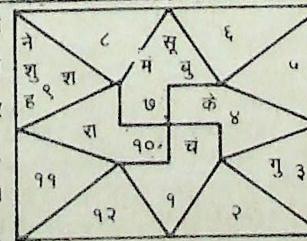
कार्तिक शु. ८ भौमे प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ६०६०

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
०६	०९	०६	०६	०२	०८	०८	०९	०३
२०	२५	०८	१८	१७	०७	१६	२७	२७
५०	५२	०८	३१	०१	५३	०५	३९	३९
२३	१५	२३	३२	२६	०८	०२	०६	०६
६०	८१६	४०	९७	०१	६०	०५	०३	०३
१३	४०	१७	२४	५४	३६	००	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
१	१	१	४	४	३	१	२	४
विशाखा	धनिष्ठा	स्वाती	स्वाती	आर्द्रा	मूल	पू.षा	धनिष्ठा	आश्लेषा

(दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं)



इस पक्ष में धनु राशि में शुक्र आने से चतुर्ग्रही योग बनेगा तथा द्वितीया मंगलवार का चन्द्रदर्शन अशुभ है। अतः राष्ट्रों में परस्पर संघर्ष, सैन्य शक्ति का प्रदर्शन, सीमा विवाद, उग्र आन्दोलन से जनमानस विचलित होंगे। अमेरिका, चीन, जापान, रूस, अफ्रीका, वियतनाम, मिश्र, इजरायल, ईरान, ईराक मे उत्पात होंगे। किन्तु यहाँ गुरुवक्री है,जिसका फल– "गुरौ वक्रे सुभिक्षं च।" अतः विश्व के अनेक भागों में होने वाले उत्पातों में कुछ शान्ति होगी। भारत गुट निरपेक्ष सम्मेलन व देशों में प्रमुख भूमिका अदा करने में सक्षम होगा। विदेशों से व्यापारिक समझौते होंगे।पक्षारम्भ में अनाज, गल्ला, दालवाना, रूई,चांदी, सोना, पाट, वारदाना,तिलहन में घटाबढ़ी से तेजी की चाल निकलेगी। धनु राशि के शुक्र का फल– **यदा च धनराशिस्थो दैत्याचार्यः प्रवर्तते। महर्घं च विजानीयात्सर्वसस्यं विनश्यति ॥"**



कार्तिक शु. १५ चन्द्रे प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ६०६६

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
०६	००	०६	०६	०२	०८	०८	०९	०३
२६	२३	१२	२८	१६	१३	१६	२७	२७
५२	२२	१०	१०	४७	५१	३६	२०	२०
०३	२९	३२	३१	०१	०७	०७	०१	०१
६०	९१३	४०	९५	०३	५८	०५	०३	०३
२२	३८	२८	२४	०६	१२	२४	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
३	४	२	३	४	१	१	२	४
विशाखा	भरणी	स्वाती	विशाखा	आर्द्रा	पू.षा	पू.षा	धनिष्ठा	आश्लेषा

आकाश लक्षण– आकाश निर्मल रहेगा, दिन मे गरमी से ऋतु-विपर्यय दिखाई देगा। पक्षान्त में पूर्वोत्तरीय भारत में वायुवेग के साथ-साथ वर्षा की बौछार होगी। दक्षिण में समुद्री तूफान सम्भव है।

श्री संवत् २०४६ शकः १९११ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षः १६

ता. १४ से २८ नवम्बर सन् १९८९ ई. राष्ट्रीय मिति २३ कार्तिक से ७ मार्गशीर्ष तक । दक्षिणायन गोल, हेमन्त ऋतु.

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें कार्तिक	तारीखें मु. रबी.	तारीखें अं. नव.	चन्द्र संचार स्टै. टा. रा. घ. मि.
२३	१	म	२	१०	७	३९	[illegible]	२/५५	१७/४५	७/२९	४२/०५	प	१५	४३	कौ	७	३९	२६	३३	६	४७	१७	२४	२९	१४	१४	वृष
०	२	मं	५३	४२	२८	१६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०
२४	३	बु	४६	३५	२५	२५	मू	५०	३०	२६	५९	शि	११	५४	व	१४	४६	२६	३०	६	४७	१७	२३	३०	१५	१५	मि. १६।०२
२५	४	गु	४१	०५	२३	१४	आ	४६	३७	२५	३५	सि	८/२९	३२/४६	ब	१२	१३	२६	२७	६	४८	१७	२३	मा. १	१६	१६	मिथुन
२६	५	शु	३७	३५	२१	५१	पुन	४५	२२	२४	५८	शु	२७	४०	कौ	१०	२६	२६	२४	६	४९	१७	२२	२	१७	१७	क. १९।०७
२७	६	श	३६	१७	२१	२१	पु	४५	५७	२५	१३	शु	२६	१५	ग	९	२९	२६	२१	६	५०	१७	२२	३	१८	१८	कर्क
२८	७	र	३७	१२	२१	४४	आश्ले	४८	४०	२६	१९	ब	२५	३१	वि	९	२६	२६	१९	६	५१	१७	२२	४	१९	१९	सिं २६।१९
२९	८	च	४०	१०	२२	५५	म	५३	१५	२८	०९	ऐ	२५	२२	बा	१०	१४	२६	१६	६	५१	१७	२१	५	२०	२०	सिंह
३०	९	मं	४४	४२	२४	४५	पू.फा	५९	२०	३०	३६	वै	२५	४२	तै	११	४६	२६	१३	६	५२	१७	२१	६	२१	२१	सिंह
मा. १	१०	बु	५०	२७	२७	०४	उ.फा	६०	००	—	—	वि	२६	२३	व	१३	५२	२६	११	६	५३	१७	२०	७	२२	२२	कं. १३।१९
२	११	गु	५६	५०	२९	३८	उ.फा	६	२०	९	२६	प्री	२७	१५	ब	१६	२०	२६	०८	६	५४	१७	२०	८	२३	२३	कन्या
३	१२	शु	६०	००	—	—	ह	१३	५२	१२	२७	आ	२८	११	कौ	१८	५७	२६	०५	६	५४	१७	२०	९	२४	२४	तु. २५।५८
४	१२	श	३	२०	८	१५	चि	२१	२७	१५	३०	सौ	२९	०३	तै	८	१५	२६	०३	६	५५	१७	१९	१०	२५	२५	तुला
५	१३	र	९	३७	१०	४७	स्वा	२८	४२	१८	२५	शो	२९	४७	व	१०	४७	२६	००	६	५६	१७	१९	११	२६	२६	तुला
६	१४	च	१५	२५	१३	०७	वि	३५	२७	२१	०८	अ	३०	१९	श	१३	०७	२५	५८	६	५७	१७	१९	१२	२७	२७	वृ. १४।२७
७	३०	मं	२०	३२	१५	११	अनु	४१	३०	२३	३४	सु	३०	३९	ना	१५	११	२५	५५	६	५८	१७	१९	१३	२८	२८	वृश्चिक

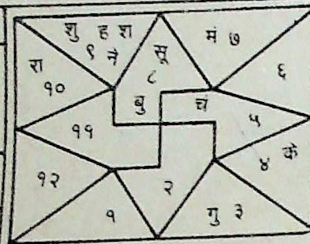
इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टै. टा. घंटा मिनटों में है।

वृश्चिक में बुध ९।०३. पू. षा. २ में नेपच्यून ८।१५. जन्मदिन श्री जवाहरलाल नेहरू A
द्वितीया का क्षय. A (बाल दिवस)
भद्रा १४।४६ से २५।२५ तक, वक्री आर्द्रा ३ में गुरु ९।५१
सं. वृश्चिक में सूर्य ८।१०, मु. १५ पुण्यकाल १४।३४ तक, अनुराधा में बुध ११।४०. B
लाला लाजपतराय निधन दिवस. B श्री गणेश ४ व्रत चन्द्रोदय, २०।२४.
भद्रा २१।२१ से. वैधृति महापात १८।१२ से २३।३३ तक
भद्रा ९।२६ तक, अनुराधा में सूर्य १५।३१. मंगल का उदय पूर्व में २८।४५ (विवाह मु. मघा में)
काल भैरवाष्टमी, (विवाह मु. मघा में)

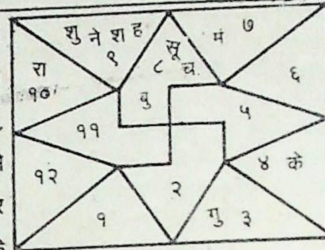
भद्रा १३।५२ से २७।०४ तक, सायन धनु में सूर्य १३।३६. राष्ट्रीय मार्गशीर्ष प्रारम्भ,
उत्पन्ना ११ व्रत स्मार्त वैष्णवों का, (विवाह मु. हस्त में)
विशाखा में मंगल १८।३५, ज्येष्ठा में बुध २४।४४ उत्पन्ना ११ व्रत निम्बार्कों का,
धनिष्ठा १ में राहु अश्लेषा ३ में केतु १९।२८ शनि प्रदोष व्रत,
भद्रा १०।४७ से २३।५९ तक, सन्त ज्ञानेश्वर पुण्यतिथि,
उ.षा. में शुक्र ७।२३. मूल ४ में हर्षल १०।२०. मेला पुरमण्डल देविका स्नान (काश्मीर) C
भौमवती अमावस्या, अमावस्या पुण्य, C श्री बाला जयन्ती

मार्गशीर्ष कृ. ८ चन्द्रे प्रातः स्टै. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ६०७३ (दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं) **मार्गशीर्ष कृ. ३० भौमे प्रातः स्टै. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ६०८१**

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
०७	०४	०६	०७	०२	०८	०८	०९	०३
०३	०१	१६	०९	१६	२०	१७	२६	२६
५५	३९	५४	१२	२१	२८	१५	५७	५७
१६	२०	३९	१२	३०	००	१८	४५	४५
६०	७४१	४०	९३	०४	५४	०५	०३	०३
३४	१२	४३	३६	२६	३०	४८	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
अनु १	मघा १	स्वाती ४	अनु २	आर्द्रा ३	पू.षा ३	पू.षा २	धनि २	अश्ले ४



इस मास में पाँच मंगलवार तथा संघट्टचक्र में सूर्य बुध का मंगल गुरु से वेध अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति को खराब करेगा। कहीं खूनी क्रान्ति, यान दुर्घटना, चोरी, डकैती, आतंकवाद से प्रजा को कष्ट होगा। युद्धोन्मत राष्ट्रों में परस्पर वैमनस्य का कुचक्र चलेगा। पश्चिमी देशों के



सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
०७	०७	०६	०७	०२	०८	०८	०९	०३
१२	०७	२२	२१	१५	२७	१८	२६	२६
००	३१	२१	३५	४१	२५	०३	३२	३२
३८	५८	२४	२९	२९	५३	११	१९	१९
६०	७२८	४१	९३	०५	४८	०६	०३	०३
४७	०९	००	१८	४२	५४	१२	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
अनु ३	अनु २	विशा १	ज्येष्ठा २	आर्द्रा ३	उ.षा १	पू.षा २	धनि १	अश्ले ३

कुप्रभावों से विश्वव्यापी, धोखाबाजी की राजनीति का जोर बढ़ेगा। सच्चे समाजवाद की प्राप्ति के लिए कुछ देशों की आत्मा विद्रोह कर उठेगी। यहाँ धनु राशि में चार ग्रहो का योग चल रहा है जिसका फल-- "एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पञ्च खेचराः। प्लावयन्ति महीं सर्वांरुधिरेण जलेन वा ॥" वृश्चिक संक्रान्ति १५ मुहूर्ती होने से धान्य, जौ, गेहूँ, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा, मसूर, अरहर में मंदी के बाद तेजी की चाल निकलेगी। रूई, सूत, कपास, तिल, तेल, सरसों, लोहा, गुड़, खांड, शक्कर में तेजी होगी।

आकाश लक्षण-- पंजाब, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, उ० प्र०, महाराष्ट्र, गुजरात में संक्रान्ति के आसपास यत्र तत्र बादलचाल, वर्षा, बूंदा-बाँदी होगी। हिमाचल-प्रदेश, काश्मीर, असम, उड़ीसा, त्रिपुरा में वर्षा तथा हिमपात का योग है। शीत प्रकोप बढ़ने लगेगा।

श्री संवत् २०४६ शकः १९११ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षः १७

ता. २९ नवम्बर से १२ दिसम्बर सन् १९८९ ई. राष्ट्रीय मिति ८ से २१ मार्गशीर्ष तक। दक्षिणायन गोल, हेमन्त ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टै. टा. घंटा मिनटों में है।

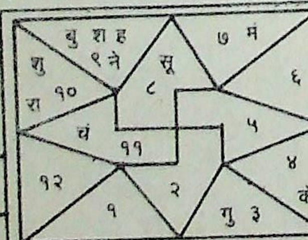
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि मार्ग	तारीखें मु र.आ.	तारीखें अं नव	चन्द संचार स्टै. टा. रा. घं. मि.
८	१	बु	२४	५७	१६	५७	ज्ये.	४६	५२	२५	४३	धृ	३०	४४	ब	१६	५७	२५	५३	६	५८	१७	१९	१४	२९	२९	घ २५।४३
९	२	गु	२८	३०	१८	२३	मू.	५१	२७	२७	३४	शू.	३०	३५	कौ	१८	२३	२५	५१	६	५९	१७	१९	१५	३०	३०	धनु
१०	३	शु	३१	१२	१९	२९	पू.षा	५५	०७	२९	०३	ग	३०	०९	ग	१९	२९	२५	४९	७	००	१७	१९	१६	ज १	दि. १	धनु
११	४	श.	३२	५७	२०	१२	उ.षा	५७	५२	३०	१०	वृ	२९	२४	व	७	५४	२५	४७	७	०१	१७	१९	१७	२	२	म. ११।२०
१२	५	र.	३३	४०	२०	२९	श्र.	५९	३०	३०	४९	ध्रु	२८	१८	ब	८	२४	२५	४५	७	०१	१७	१९	१८	३	३	मकर
१३	६	च.	३३	०५	२०	१६	ध	५९	५२	३०	५९	व्या	२६	४८	कौ	८	२७	२५	४४	७	०२	१७	१९	१९	४	४	कुं. १८।५४
१४	७	मं	३१	१०	१९	३१	श.	५८	५२	३०	३६	ह	२४	५३	ग	७	५८	२५	४२	७	०३	१७	२०	२०	५	५	कुंभ
१५	८	बु	२७	५०	१८	१२	पू.भा	५६	५५	२९	४०	व	२२	३०	ब	१८	१२	२५	४०	७	०४	१७	२०	२१	६	६	मी. २३।५४
१६	९	गु	२३	०७	१६	१९	उ.भा.	५२	४७	२८	११	सि	१९	४१	कौ	१६	१९	२५	३९	७	०४	१७	२०	२२	७	७	मीन
१७	१०	शु	१७	०२	१३	५४	रे	४७	५२	२६	१४	व्य	१६	२७	ग	१३	५४	२५	३७	७	०५	१७	२०	२३	८	८	मे. २६।१४
१८	११	श.	९	५२	११	०३	अश्वि	४२	००	२३	५४	व	१२	५२	वि	११	०३	२५	३६	७	०६	१७	२०	२४	९	९	मेष
१९	१२	र.	१	५७	७	५३	भ.	३५	३७	२१	२१	प	९ / २९	०२ / ०४	बा	७	५३	२५	३४	७	०६	१७	२०	२५	१०	१०	वृ. २६।४१
०	१३	र.	५३	३७	२८	३३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०
२०	१४	च	४५	१०	२५	११	कृ	२९	००	१८	४३	सि	२५	०५	ग	१४	५१	२५	३३	७	०७	१७	२१	२६	११	११	वृष
२१	१५	म	३७	१०	२२	००	रो	२२	३७	१६	११	सा	२१	१४	वि	११	३४	२५	३२	७	०८	१७	२१	२७	१२	१२	मि. २७।०४

चन्द्रदर्शन मु. ३०. (विवाह मु. मूल मे)
मकर में शुक्र १०।३६. जमादि-उल-अव्वल मु. ५, दिसम्बर मा. १२ ता. ३१.
भद्रा ७।५४ से २०।१२ तक. ज्येष्ठा मे सूर्य १९।४५. (विवाह मु. उ. षा. मे) E
मूल धनु में बुध १६।४७. **श्री गुरु तेग बहादुर बलिदान दिवस,**
बुध का उदय पश्चिम मे १८।५५. पंचक प्रारम्भ १८।५४. **चंपा षष्ठी, स्कन्ध षष्ठी,**
भद्रा १९।३१ से ३०।५६ तक. **E व्यतिपात महापात १८।१६ से २४।३९ तक**
दुर्गाष्टमी
(विवाह मु. उ. भा. मे)
भद्रा २४।३२ से. पंचक समाप्त २६।१४.
भद्रा ११।०३ तक. वृश्चिक मे मंगल ८।४५. **मोक्षदा ११ व्रत सबका, गीता जयन्ती**
प्रदोष व्रत,
त्रयोदशी का क्षय
भद्रा २५।११ से. **श्री त्रिपुर भैरव जयन्ती, D मार्गशीर्ष १५.** (विवाह मु. मृग मे)
भद्रा ११।३४. पू. षा. मे बुध १३।२४. **सत्यव्रत, श्रीदत्त जयन्ती, अन्नपूर्णा जयन्ती D**

मार्गशीर्ष शु. ८ बुधे प्रातः स्टै. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ६०८९

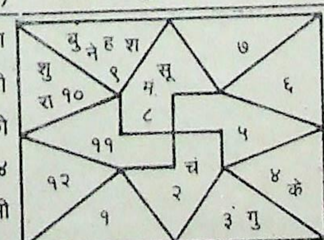
सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
०७	१०	०६	०८	०२	०९	०८	०९	०३
२०	१९	२७	०३	१४	०३	१८	२६	२६
०७	२१	५०	५१	५१	३१	५४	०६	०६
२३	३४	२४	०९	३३	५७	०३	५३	५३
६०	८३२	४१	९०	०६	४१	०६	[illegible]	०३
५४	०२	१८	५४	४८	१२	३६	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
ज्येष्ठा २	शत ४	विशाखा ३	मूल २	आर्द्रा ३	उ.षा. ३	पू.षा. २	धनि. १	आश्ले. ३

(दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं)



इस पक्ष में चतुर्ग्रही योग से सूर्य-शुक्र, राहु का द्विर्दादश योग है अतः विश्व के अनेक देशों की आर्थिक स्थिति डाँवाडोल होगी। भ्रष्टाचार को सरकार रोकने में असफल होगी। ता. ४ दिसम्बर को बुध का पश्चिम में उदय भी उत्पातकारी है। फल–"नोत्पात परित्यक्त **कदाचिदपि चन्द्रजौ व्रजत्युदयम्॥**" पूँजीवादी राष्ट्रों का प्रभाव बढ़ेगा। धान्यादि सभी वस्तुओं में भारी घटाबढ़ी होगी। जिससे व्यापारी वर्ग हैरान होंगे। मार्ग शीर्ष सुदी एकादशी को शनिवार होने से अनावृष्टि, ओलावृष्टि, प्रजा में रोग पीड़ा तथा राज का छत्र भंग होता है। यथा–"**मार्गशुक्ल एकादश्यां शनिवारो यदा भवेत्। जलशोषं प्रजानाशं छत्र भंग विनिर्दिशेत्॥**" ता० ९ दिसम्बर से वृश्चिक का मंगल आने से सोना, चांदी, लोहा, पीतल, कांसी, रूई में तेजी करेगा। शासन की नीति दोषपूर्ण होगी तथा प्रजा में रोग पीड़ा बढ़ेगी।

मार्गशीर्ष शु. १५ भौमे प्रातः स्टै. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ६०९५



सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
०७	०१	०७	०८	०२	०९	०८	०९	०३
२६	१६	०१	१२	१४	०७	१९	२५	२५
१३	४२	५८	५०	०८	२०	३३	४७	४७
०२	१९	४२	०३	५७	१५	५१	४८	४८
६०	८८८	४१	८७	०७	३३	०६	०३	०३
५९	१३	३०	४२	३०	१८	४२	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
ज्येष्ठा ३	रोहिणी ३	विशाखा ४	मूल ४	आर्द्रा ३	उ.षा. ४	पू.षा. २	धनि. १	आश्ले. ३

आकाशलक्षण–पूर्वोत्तरीय भागों में आकस्मिक बादल, वर्षा, ओला, पाला पड़ेगा। पर्वतीय प्रदेशों तथा दक्षिण भारत में साधारण बूँदा-बाँदी होगी। राजस्थान, दिल्ली, उ० प्र० पंजाब में सर्दी पड़ने लगेगी।

श्री संवत् २०४६ शकः १९११ पौष कृष्ण पक्षः १८

ता. १३ से २८ दिसम्बर सन् १९८९ ई. राष्ट्रीय मिति २२ मार्गशीर्ष से ७ पौष तक। दक्षिणायन गोल, हेमन्त ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टै. टा. घंटा मिनटों में है।

ता. अं.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि.	तारीखें मु.	तारीखें अं.	चन्द्र संचार स्टै. टा. रा. घं. मि.
२२	१	बु	३०	०२	१९	०९	मृ	१७	०२	१३	५७	शु	१७	४०	बा	८	३१	२५	३०	७	०८	१७	२१	२८	१३	१३	मिथुन
२३	२	गु	२४	०७	१६	४८	आ	१२	३५	१२	११	शु	१४	३०	ग	१६	४८	२५	२९	७	०९	१७	२१	२९	१४	१४	क॰ २९।१९
२४	३	शु	१९	५५	१५	०८	पुन	९	४०	११	०२	ब्र	११	५१	वि	१५	०८	२५	२८	७	१०	१७	२२	पौ. १	१५	१५	कर्क
२५	४	श	१७	३७	१४	१३	पु	८	४०	१०	३८	ऐ	९	४८	बा	१४	१३	२५	२७	७	१०	१७	२२	२	१६	१६	कर्क
२६	५	र	१७	२५	१४	०९	आश्ले	९	४०	११	०३	वै	८	२४	तै	१४	०९	२५	२६	७	११	१७	२२	३	१७	१७	सिंह ११।०३
२७	६	च	१९	१७	१४	५५	म.	१२	३७	१२	१५	वि	७	३८	व	१४	५५	२५	२५	७	१२	१७	२३	४	१८	१८	सिंह
२८	७	म.	२३	०२	१६	२५	पू.फा	१७	२७	१४	११	प्री	७	२८	ब	१६	२५	२५	२४	७	१२	१७	२३	५	१९	१९	क॰ २०।४९
२९	८	बु	२८	१५	१८	३१	उ.फा.	२३	४२	१६	४२	आ	७	४८	कौ	१८	३१	२५	२४	७	१३	१७	२३	६	२०	२०	कन्या
३०	९	गु	३४	२५	२०	४९	ह	३०	५२	१९	३४	सौ	८	२७	तै	७	४३	२५	२३	७	१३	१७	२४	७	२१	२१	कन्या
पौ. १	१०	शु	४०	५२	२३	३५	चि.	३८	२२	२२	३५	शो	९	१८	व	१०	१७	२५	२२	७	१४	१७	२४	८	२२	२२	तु॰ ९।०५
२	११	श	४७	१२	२६	०७	स्वा	४५	४५	२५	३२	अ	१०	११	ब	१२	५२	२५	२२	७	१४	१७	२५	९	२३	२३	तुला
३	१२	र	५२	५२	२८	२४	वि.	५२	३०	२८	१५	सु	१०	५६	कौ	१५	१८	२५	२३	७	१५	१७	२६	१०	२४	२४	वृ॰ २१।३४
४	१३	च	५७	३७	३०	१८	अनु	५८	२७	३०	३८	धृ	११	२९	ग	१७	२४	२५	२४	७	१५	१७	२६	११	२५	२५	वृश्चिक
५	१४	म	६०	००	–	–	ज्ये	६०	००	–	–	शू	११	४४	वि	१९	०६	२५	२४	७	१६	१७	२७	१२	२६	२६	वृश्चिक
६	१४	बु	१	१७	७	४७	ज्ये	३	१७	८	३५	ग	११	३९	श	७	४७	२५	२५	७	१६	१७	२७	१३	२७	२७	ध॰ ८।३५
७	३०	गु	३	५२	८	५०	मू.	७	०७	१०	०८	वृ	११	१४	ना	८	५०	२५	२६	७	१७	१७	२८	१४	२८	२८	धनु

अनुराधा में मंगल २८।३०,
भद्रा २७।५३ से, वैधृति महापात २६।३० से
भद्रा १५।०८ तक, सं॰ मूल धनु में सूर्य २२।४८, मु॰ ३० पुण्यकाल १६।२४ से, A
A पू० षा० ३ में शनि २६।१२, श्री गणेश ४ व्रत चन्द्रोदय २०।१६, B
B वैधृति महापात ९।४० तक
श्रवण में शुक्र १३।४५
भद्रा १४।५५ से २७।३५ तक, वक्री आर्द्रा २ में गुरु १४।२३,

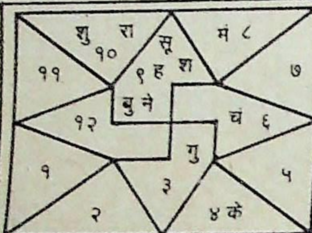
शनि का अस्त पश्चिम में ११।५५, सायन मकर में सूर्य २६।५३, उत्तरायण शिशर ऋतु प्रा॰,
भद्रा १०।१७ से २३।३५ तक, उ॰षा॰ में बुध १४।२५, राष्ट्रीय पौष प्रारम्भ, C
सफला ११ व्रत सबका, C श्री पार्श्वनाथ जयन्ती
व्यतिपात महापात १५।४८ से २४।०९ तक
भद्रा ३०।१८ से, मकर में बुध २६।०३, सोम प्रदोष व्रत, क्रिसमस डे (बड़ा दिन)
भद्रा १९।०६ तक,

पू॰ षा॰ में सूर्य २५।००, अमावस्या पुण्य,

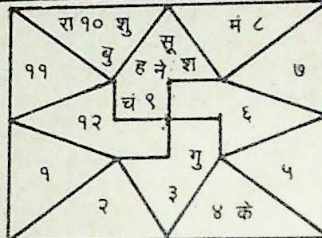
पौष कृ. ८ बुधे प्रातः स्टै. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ६१०३

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०८	०५	०७	०८	०२	०९	०८	०९	०३
०४	०४	०७	२३	१३	११	२०	२५	२५
२१	२३	३१	५२	०७	०१	२८	२२	२२
१५	२२	३९	४९	०७	३७	२५	२२	२२
६१	७१८	४१	७३	०८	१९	०६	०३	०३
०६	१७	४७	०६	००	४२	५४	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
मूल २	उ.फा. ३	अनु २	पू.षा. ४	आर्द्रा २	श्रवण १	पू.षा. ३	धनि. १	आश्ले. ३

(दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं)



इस पक्ष में ता० १६ से धनु राशि में पाँच ग्रहों का योग अशुभ है। संसार में राजनैतिक, सामाजिक तनाव बढ़ेंगे। श्रामिक वर्ग, पूँजीपति, भूस्वामी (जमींदार कृषक) और मालिक मजदूरों, छात्राध्यापकों का संघर्ष कहीं पराकाष्ठा पर पहुँचेगा। कहीं भयंकर यान या खान दुर्घटना, हत्याकांड एवं सांसर्गिक रोग, प्रकृति प्रकोप से प्रजा त्रस्त होगी। ओला वृष्टि से शीतलहर का जोर बढ़ेगा। अमेरिका चीन, जापान, रूस, अफ्रीका, मिश्र, इजरायल, ईरान, ईराक, में उत्पात होंगे। वदी अमावस्या को मूल नक्षत्र का होना धान्यादि में मंदी कारक है। यथा–"पौषस्ययधमावस्या ज्येष्ठा नक्षत्र संयुता। तदा सस्य महर्घत्वं मूल्युक्ताऽल्प मूल्यदा।।" पक्षारंभ में गेहूँ, लाल मिर्च, लाल चन्दन, तथा लाल रंग की वस्तुओं में तेजी होगी।



पौष कृ. ३० गुरौ प्रातः स्टै. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ६१११

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०८	०८	०७	०९	०२	०९	०८	०९	०३
१२	१०	१३	०१	१२	१२	२१	२४	२४
३०	५३	०७	२३	०२	४०	२४	५६	५६
१९	३०	०६	४८	१८	००	२४	५६	५६
६१	७६१	४२	२५	०८	०२	०७	०३	०३
१०	३६	०६	३०	१३	०६	००	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ
मूल ४	मूल ४	अनु ३	उ.षा. २	आर्द्रा २	श्रवण १	पू.षा. ३	धनि. १	आश्ले. ३

आकाशलक्षण–इस पक्ष में वायु वेग के साथ यत्र-तत्र न्यूनाधिक बादल-चाल, छुटपुट वर्षा सम्भव है। समुद्र तटवर्ती तथा पहाड़ी प्रदेशों में भी वर्षा होगी। सर्दी जोर पकड़ेगी। ता० २१ दिसं. को शनि का अस्त बादल-चाल, वर्षाकारक है। कहीं ओलावृष्टि भी होगी।

श्री संवत् २०४६ शकः १९११ पौष शुक्ल पक्षः १९

ता. २९ दिसम्बर ८९ से ११ जनवरी सन् १९९० ई. राष्ट्रीय मिति ८ से २१ पौष तक। उत्तरायण दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

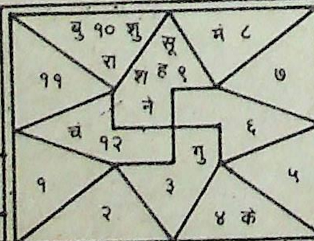
इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. (पौष)	तारीखें मु. (ज.उ.)	तारीखें अं. (दिस.)	चन्द्र संचार स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
८	१	शु	५	२२	९	२६	पू.षा.	९	५५	११	१५	घु	१०	३०	ब	९	२६	२५	२७	७	१७	१७	२८	१५	२९	२९	म.१७।२६	वक्री शुक्र १४।१८, चन्द्रदर्शन मु॰ ४५
९	२	श	५	५०	९	३८	उ.षा.	११	४२	११	५९	व्या	९	२७	कौ	९	३८	२५	२८	७	१८	१७	२९	१६	ज.१	३०	मकर	वक्री बुध २८।५६, जमादि-उल-आखिर मु. ६.
१०	३	र	५	२२	९	२७	श्र	१२	३७	१२	२१	ह	८/३०	०६/२८	ग	९	२७	२५	२९	७	१८	१७	३०	१७	२	३१	कुं.२४।२२	भद्रा २१।१३ से, पंचक प्रारम्भ २४।२२,
११	४	चं	३	५७	८	५३	ध	१२	४०	१२	२२	सि	२८	३३	वि	८	५३	२५	३१	७	१८	१७	३०	१८	३	ज.१	कुंभ	भद्रा ०८।५३ तक, ज्येष्ठा में मंगल ३०।४१, जनवरी मा. १ ता. ३१ सन्१९९० ई० प्रारम्भ,
१२	५	मं	१	४०	७	५९	श.	११	४५	१२	०१	व्य	२६	२१	बा	७	५९	२५	३२	७	१९	१७	३१	१९	४	२	मी.२९।३०	बुध का अस्त पश्चिम में २४।१२
०	६	मं	५८	३०	३०	४३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	षष्ठी का क्षय
१३	७	बु	५४	२७	२९	०६	पु.भा.	१०	०२	११	२०	व	२३	५३	ग	१७	५७	२५	३४	७	१९	१७	३२	२०	५	३	मीन	भद्रा २९।०६ से, श्री गुरु गोविन्द सिंह जन्मदिन,
१४	८	गु	४९	३७	२७	१०	उ.भा.	७	३०	१०	१९	प	२१	१०	वि	१६	१०	२५	३६	७	१९	१७	३३	२१	६	४	मीन	भद्रा १६।१० तक, वक्री धनु में बुध २२।०४, श्री दुर्गाष्टमी, शाकम्भरी नवरात्रारंभ,
१५	९	शु	४४	०५	२४	५७	रे	४	१०	८	५९	शि	१८	१२	बा	१४	०५	२५	३७	७	१९	१७	३३	२२	७	५	मे.८।५९	पंचक समाप्त ८।५९
१६	१०	श	३७	५७	२२	३१	अश्वि.	०/५५	०८/३०	७/२९	२३/३६	सि	१५	०२	तै	११	४५	२५	३९	७	२०	१७	३४	२३	८	६	मेष	वैधृति महापात २४।१० से २९।३९ तक
१७	११	र	३१	२७	१९	५५	कृ	५०	५२	२७	४१	सा	११	४४	व	९	१४	२५	४१	७	२०	१७	३५	२४	९	७	वृ.११।०७	भद्रा ९।१४ से १९।५५ तक, वक्री पू० षा० में बुध २१।५३, पुत्रदा ११ व्रत सबका,
१८	१२	चं	२४	५५	१७	१८	रो.	४६	०७	२५	४७	शु	८/२९	२२/०१	बा	१७	१८	२५	४३	७	२०	१७	३६	२५	१०	८	वृष	सोम प्रदोष व्रत,
१९	१३	मं	१८	३२	१४	४५	मृ	४१	४२	२४	०१	ब्र	२५	४८	तै	१४	४५	२५	४४	७	२०	१७	३७	२६	११	९	मि.१२।५४	वक्री उ. षा. में शुक्र २५।२१,
२०	१४	बु	१२	४५	१२	२६	आ.	३७	५७	२२	३१	ऐ	२२	४९	व	१२	२६	२५	४६	७	२०	१७	३८	२७	१२	१०	मिथुन	भद्रा १२।२६ से २३।२३ तक, उ. षा. में सूर्य २६।५८, सत्यव्रत
२१	१५	गु	७	४७	१०	२७	पुन.	३५	१२	२१	२५	वै	२०	०९	ब	१०	२७	२५	४८	७	२०	१७	३८	२८	१३	११	क.१५।४१	शाकम्भरी जयन्ती, माघ स्नान प्रारम्भ, पौषी पूर्णिमा,

(दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं)

पौष शु. ८ गुरौ प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ६११८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०८	११	०७	०९	०२	०९	०८	०९	०३
१९	१३	१८	००	११	१२	२२	२४	२४
३८	५०	०२	३५	०५	०२	१३	३४	३४
२८	५७	२४	५८	४०	४०	५८	४०	४०
६१	८४४	४२	५२	०८	१५	०७	०३	०३
१०	५०	२१	०६	००	१८	०५	११	११
मा	मा	मा	व	व	व	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ
उ.षा. २	उ.भा. ४	ज्येष्ठा १	उ.षा. २	आर्द्रा २	श्रवण १	पू.षा. ३	धनि. १	आश्ले. ३



इस मास में शुक्ल पक्ष में शुक्रवार का चन्द्रदर्शन ४५ मुहूर्त्ती है और पक्षारंभ से ही बुध-शुक्र वक्री हो रहे है। गुरू पहिले से ही वक्री चल रहा है अतः यहाँ से आगे संसार में सुख शांति की वृद्धि होगी। सुभिक्ष का संचार होगा। शान्ति सुरक्षा संगठन आदि कार्यों को प्रोत्साहन प्राप्त होगा। ता० ४ जनवरी को वक्री बुध धनु राशि पर आयेगा। जिससे धनु राशि में फिर पाँच ग्रहों का योग बनेगा। इस पंचग्रही योग से मंगल शुक्र राहु का द्विर्दादश योग भी अच्छा नहीं है। विश्व के अनेक देशों में महंगाई सुरसा के मुँह की तरह बढ़ेगी। मुद्रा का अवमूल्यन होगा। आर्थिक संकट का सामना करना पड़ेगा। अनाज, गल्ला, गेहूँ, चना, चावल, जौ, मौठ, बाजरा, ज्वार, मूंग, मक्का, तिल, मूंगफली, तेल, घृत, वनस्पति, व गुड़, खांड, काठ, कोयला, सोना, चांदी लोहा, तांबा में मंदी के बाद तेजी होगी।

रा १० शु
सू
ह श
८ मं
११
ने ९
बु
७
१२
६
चं
१
गु ३
५
२
४ के

पौष शु. १५ गुरौ प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ६१२५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०८	०२	०७	०८	०२	०९	०८	०९	०३
२६	२४	२२	२२	१०	०९	२३	२४	२४
४६	०५	५९	१७	११	२६	०३	१२	१२
२६	२३	२६	२२	२८	३४	४०	२४	२४
६१	८३२	४२	७४	०७	३०	०७	०३	०३
०६	३४	३३	३७	३१	३१	०५	११	११
मा	मा	मा	व	व	व	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ
उ.षा. १	कृ. २	ज्येष्ठा २	पू.षा. ३	आर्द्रा २	उ.षा. ४	पू.षा. ३	धनि. १	आश्ले. ३

आकाश लक्षण—इस पक्ष में बादल, वर्षा, हिमपात के योग है। पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश गुजरात में भी वर्षा होगी। आसाम, बंगाल, नेपाल, उ० प्र० हिमाचल-प्रदेश में वर्षा, शीतवायु का जोर होगा।

श्री संवत् २०४६ शकः १९११ माघ कृष्ण पक्षः २०

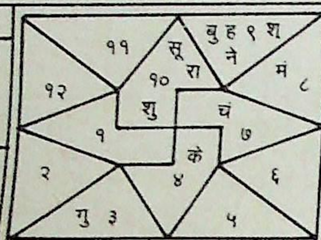
ता. १२ से २६ जनवरी सन् १९९० ई. राष्ट्रीय मिति २२ पौष से ६ माघ तक। उत्तरायण दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टै. टा. घंटा मिनटों में है।

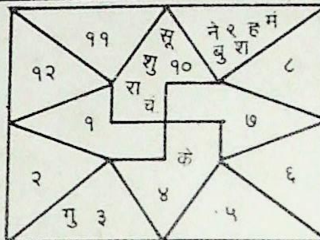
रा. ति	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि	तारीखें मु	तारीखें अ	चन्द्र संचार स्टै. टा. रा. घं. मि.	
२२	१	शु	४	०२	८	५७	पु	३३	४५	२०	५०	वि	१७	५४	कौ	८	५७	२५	५०	७	२०	१७	३९	२९	१४	१२	कर्क	वक्री आर्दा १ में गुरु १६।५७.
२३	२	श	१	४७	८	०२	आश्ले	३३	५७	२०	५४	प्री	१६	०९	ग	८	०२	२५	५३	७	१९	१७	४०	३०	१५	१३	सि. २०।५४	भद्रा १९।५० से. पू.षा. ४ में शनि १२।४६. लोहड़ी महोत्सव पंजाब प्रान्त में
२४	३	र	१	१२	७	४८	म	३५	४७	२१	३८	आ	१४	५७	वि	७	४८	२५	५५	७	१९	१७	४१	मा. १	१६	१४	सिंह	भद्रा ७।४८ तक, सं. मकर में सूर्य ९।३२. मु. ३० पुण्यकाल दिन भर, शुक्र वृद्धत्व प्रारम्भ A
२५	४	चं	२	२७	८	१८	पू.फा	३९	२२	२३	०४	सौ	१४	१८	बा	८	१८	२५	५७	७	१९	१७	४२	२	१७	१५	क. २९।३५	बुध का उदय पूर्व में ७।४०,
२६	५	म	५	२५	९	२९	उ.फा	४४	३०	२५	०७	शो	१४	१०	तै	९	२९	२५	५९	७	१९	१७	४३	३	१८	१६	कन्या	A १३।१८, श्री गणेश ४ व्रत, चन्द्रोदय २१।०१, गंगासागर यात्रा, पोंगल दक्षिण भारत,
२७	६	बु	९	५७	११	१७	ह	५०	५७	२७	४१	अ	१४	२९	व	११	१७	२६	०२	७	१८	१७	४३	४	१९	१७	कन्या	भद्रा ११।१७ से २४।२२ तक, शुक्र का अस्त पश्चिम में १३।१८,
२८	७	गु	१५	३७	१३	३३	चि	५८	०७	३०	३३	सु	१५	०७	ब	१३	३३	२६	०४	७	१८	१७	४४	५	२०	१८	तु. १७।०७	स्वामी विवेकानन्द जयन्ती
२९	८	शु	२१	५२	१६	०३	स्वा	६०	००	–	–	धृ	१५	५६	कौ	१६	०३	२६	०६	७	१८	१७	४५	६	२१	१९	तुला	व्यतिपात महापात २५।५५ से — B श्री सुभाषचन्द्र बोस नेताजी जयन्ती
३०	९	श	२८	१२	१८	३५	स्वा	५	३२	०९	३१	शू	१६	४५	ग	१८	३५	२६	०९	७	१८	१७	४६	७	२२	२०	वृ. २९।३८	मू. धनु में मंगल २५।४९, मार्गी बुध १०।०६, सायन कुंभ में सूर्य १३।३३. C
मा. १	१०	र	३३	४७	२०	५३	वि	१२	३५	१२	२०	ग	१७	२५	व	७	४६	२६	१२	७	१८	१७	४७	८	२३	२१	वृश्चिक	भद्रा ७।४६ से २०।५३ तक, राष्ट्रीय माघ प्रारम्भ, C व्यतिपात महापात ८।०० तक
२	११	च	३८	४५	२२	४७	अनु	१८	५५	१४	५१	वृ	१७	४८	ब	९	५४	२६	१५	७	१७	१७	४८	९	२४	२२	वृश्चिक	शुक्र का उदय पूर्व में २०।४३, षट्तिला ११ व्रत सबका,
३	१२	म	४२	१२	२४	१०	ज्ये	२४	००	१६	५३	धु	१७	४९	कौ	११	३३	२६	१७	७	१७	१७	४८	१०	२५	२३	ध. १६।५३	श्रवण में सूर्य २९।१८, शनि का उदय पूर्व में १८।१७, पू. षा. १ में हर्षल १२।१९ B
४	१३	बु	४४	१२	२४	५८	मू	२७	४२	१८	२२	व्या	१७	२४	ग	१२	३९	२६	२०	७	१७	१७	४९	११	२६	२४	धनु	भद्रा २४।५८ से, प्रदोष व्रत, मेरु त्रयोदशी जैन,
५	१४	गु	४४	४५	२५	११	पू.षा	३०	०२	१९	१८	ह	१६	३२	वि	१३	०९	२६	२३	७	१७	१७	५०	१२	२७	२५	म. २५।२४	भद्रा १३।०९ तक, शुक्र बाल्य समाप्त २०।४३
६	३०	शु	४३	५५	२४	५०	उ.षा	३१	००	१९	४०	व	१५	१३	च	१३	०४	२६	२६	७	१६	१७	५१	१३	२८	२६	मकर	मौनी अमावस्या, मेला प्रयागराज, भारतीय गणराज्य दिवस,
–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	

माघ कृ. ८ शुक्रे प्रातः स्टै. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ६१३३ (दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं) माघ कृ. ३० शुक्रे प्रातः स्टै. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ६१४०

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
०९	०६	०७	०८	०२	०९	०८	०९	०३
०४	०६	२८	१६	०९	०४	२४	२३	२३
५५	०८	४०	०४	१४	४९	००	४६	४६
१२	२४	५१	३३	५१	५७	१५	५८	५८
६१	७१२	४२	०५	०६	३६	०७	०३	०३
०४	०३	५१	४८	३६	५४	००	११	११
मा	मा	मा	व	व	व	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ	अ
उ.षा ३	चित्रा ४	ज्येष्ठा ४	पू.षा १	आर्द्रा १	उ.षा ३	पू.षा ४	धनि १	अश्ले ३



इस मास में पाँच शुक्रवार उत्तम तथा संघट्टचक्र में सूर्य-शुक्र राहु का बुध-शनि-हर्शल-नेपच्यून से वेध अच्छा नहीं है। अतः यहाँ मिश्रित फल होंगे। कहीं प्रकृति प्रकोप, हिमपात, ओलावृष्टि, रोग विग्रहादि से हानि होगी। शीतलहर का प्रकोप भारी जोर से रहेगा। भारत में ओलावृष्टि से तथा कहीं-कहीं भारी वर्षा से कृषि को नुकसान होगा। पश्चिमी देश, अरब-राष्ट्र, इजरायल, मिश्र, सीरिया, फ्रांस, वियतनाम, पाकिस्तान, ईरान, में उत्पात अधिक होंगे। मकर का सूर्य गुड़, खांड, शक्कर, तेल, अलसी, सरसों, मक्का, ज्वार, बाजरा, अरहर, में तेजी तथा चांदी, नमक, मिर्च, जीरा में मंदी के बाद तेजी करेगा। ति० ९ को धनु राशि में मंगल प्रवेश करेगा। जिसका फल–**"धनु राशि गते भौमे मूलदव्यतृणानि च। काष्ठं च घृत कार्पासं महर्ध च चतुष्पदाम्॥"** यहाँ से शनि मंगल का योग भी युद्धोत्पातकारक है। यह योग आने वाले डेढ़ मास तक रहेगा। जिसमें अकल्पित उलटफेर होने की संभावना होगी।



सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
०९	०९	०८	०८	०२	०९	०८	०९	०३
१२	०२	०३	१७	०८	००	२४	२३	२३
०२	१२	४१	५८	३१	४७	४९	२४	२४
३४	२७	४७	३२	५०	१४	०२	४२	४२
६१	७९४	४३	४०	०५	२९	०६	०३	०३
०१	३२	०८	३०	३०	३६	५४	११	११
मा	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
श्रवण १	उ.षा २	मूल २	पू.षा २	आर्द्रा १	उ.षा २	पू.षा ४	धनि १	अश्ले ३

आकाश लक्षण–इस पक्ष में पर्वतीय प्रदेशों में वर्षा व हिमपात के योग हैं। संक्रांति के आस पास ... उ० प्र०, राजस्थान, गुजरात, बंगाल, आसाम में शीतलहर

आकाश लक्षण–इस पक्ष में पर्वतीय प्रदेशों में वर्षा व हिमपात के योग हैं। संक्रांति के आस पास [illegible] राजस्थान, गुजरात, बंगाल, आसाम में शीतलहर

श्री संवत् २०४६ शकः १९११ माघ शुक्ल पक्षः २१

ता. २७ जनवरी से ९ फरवरी सन् १९९० ई. राष्ट्रीय मिति ७ से २० माघ तक। उत्तरायण दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

ता. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैण्डर्ड टाईम सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. माघ	मु. ज.आ.	अं. जन.	चन्द्र संचार स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
७	१	श.	४१	५०	२४	००	श्र	३०	४२	१९	३३	सि	१३	३०	कि	१२	२८	२६	२९	७	१६	१७	५२	१४	२९	२७	मकर	व. धनु में शुक्र २०।४०, श्रवण ४ में राहु अश्लेषा २ में केतु १७।०४.
८	२	र.	३८	४२	२२	४५	ध.	२९	२२	१९	०१	व्य	११	२७	बा	११	२५	२६	३२	७	१६	१७	५२	१५	३०	२८	कुं.७।१७	चन्द्रदर्शन मु. ३०, पंचक प्रारम्भ ७।१७ लाला लाजपतराय जयन्ती
९	३	च.	३४	५०	२१	११	शत.	२७	१५	१८	०९	व	०९/३०	०६/३५	तै	१०	००	२६	३५	७	१५	१७	५३	१६	२१	२९	कुंभ	रज्जब मु. ७,
१०	४	मं.	३०	१७	१९	२२	पू.भा.	२४	२७	१७	०२	शि	२७	४५	व	८	१८	२६	३९	७	१५	१७	५४	१७	२	३०	मी.११।१९	भद्रा ८।१८ से १९।२२ तक, तिल ४, महात्मा गांधी निधन दिवस, (विवाह मु. उ.भा. में)
११	५	बु.	२५	१७	१७	२२	उ.भा.	२१	१५	१५	४५	सि	२४	५३	बा	१७	२२	२६	४२	७	१५	१७	५५	१८	३	३१	मीन	**वसन्त पंचमी, श्री ५, श्री सरस्वती जयन्ती,** (विवाह मु रेवती में)
१२	६	गु.	२०	०५	१५	१६	रे.	१७	४५	१४	२०	सा	२१	५६	तै	१५	१६	२६	४५	७	१४	१७	५६	१९	४	फ. १	मे.४।२०	पंचक समाप्त १४।२०, फरवरी मा. २ ता० २८, वैधृति महापात २६।०५ से ३०।४४ तक
१३	७	शु.	१४	४२	१३	०७	अश्वि.	१४	०५	१२	५२	शु	१८	५८	व	१३	०७	२६	४९	७	१४	१७	५७	२०	५	२	मेष	भद्रा १३।०७ से २४।०२ तक, **रथ सप्तमी**
१४	८	श.	९	२२	१०	५८	भ.	१०	३०	११	२५	शु	१६	०१	ब	१०	५८	२६	५२	७	१३	१७	५८	२१	६	३	वृ.१७।०४	**दुर्गा ८, भीष्म ८, A श्रीरामचरण महाप्रभु ज. रामस्नेही सम्प्रदाय,**
१५	९	र.	४	१२	८	५३	कृ.	७	०२	१०	०१	ब्र	१३	०८	कौ	८	५३	२६	५६	७	१२	१७	५९	२२	७	४	वृष	उ.षा. में बुध १४।४३, (विवाह मु. रोहिणी में)
०	१०	र.	५९	१५	३०	५४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	दशमी का क्षय **B माघ स्नान समाप्त, खग्रास चन्द्रग्रहण**
१६	११	च.	५४	४२	२९	०५	रो.	३	५०	८	४४	ऐ	१०	२०	व	१७	५८	२६	५९	७	१२	१७	५९	२३	८	५	मि.२०।१०	भद्रा १७।५८ से २९।०५ तक, **जया ११ व्रत स्मार्तों का,**
१७	१२	मं.	५०	४५	२७	२९	मृग	०१/५८	०५/५२	०७/३०	३७/४४	वै	७/२९	४०/१२	ब	१६	१५	२७	०३	७	११	१८	००	२४	९	६	मिथुन	धनिष्ठा में सूर्य ८।२४, **जया ११ व्रत वैष्णवों का, भीष्म १२,**
१८	१३	बु.	४७	३२	२६	११	पुन.	५७	२५	३०	०८	प्री	२६	५८	कौ	१४	४८	२७	०६	७	१०	१८	०१	२५	१०	७	क.२४।१७	मकर में बुध १०।०४, **प्रदोष व्रत, मेला जैसलमेर (राजस्थान) ३ दिन का,**
१९	१४	गु.	४५	१२	२५	१५	पु.	५६	५२	२९	५५	आ	२५	०१	ग	१३	४०	२७	१०	७	१०	१८	०२	२६	११	८	कर्क	भद्रा २५।१५ से, पू.षा. में मंगल १४।०४, मार्गी शुक्र १४।५०, **रथ यात्रा जैन पर्व, A**
२०	१५	शु.	४४	०२	२४	४६	आश्ले.	५७	३०	३०	०९	सौ	२३	२६	वि	१२	५७	२७	१४	७	०९	१८	०३	२७	१२	९	सि.३०।०९	भद्रा १२।५७ तक, **सत्यव्रत माघी १५ श्री ललिता जयन्ती, श्री रविदास जयन्ती, B**
–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–		

माघ शु. ८ शनौ प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ६१४८

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०९	००	०८	०८	०२	०८	०८	०९	०३
२०	२३	०९	२५	०७	२७	२५	२२	२२
१०	०९	२७	०६	५२	४७	४३	५९	५९
०८	३०	३१	५४	१२	४८	३०	१६	१६
६०	८५०	४३	६६	०४	१२	०६	०३	०३
५९	०८	१९	४२	०६	०६	३६	११	११
मा	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
श्रवण ४	भरणी ३	मूल ३	पू.षा ४	आर्द्रा १	उ.षा १	पू.षा ४	श्रवण ४	अश्लेषा २

(दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं)

११ सू. ९ बु ने शु ह मं श
१२ १० रा ८
१ च ७
२ के ४ ६
गु ३ ५

इस पक्ष के आरम्भ से धनु राशि में छः ग्रहों का योग नेष्ट है **"षड्वै ग्रहाः घ्नंति समस्त भूपान्।"** यह षड्ग्रही योग जन्य अशुभफल ७ फरवरी तक अल्पकालीन रहेगा। पश्चिमी देश इससे अधिक प्रभावित होंगे। शासकों में मनमुटाव होगा। आणुविक प्रतिस्पर्धा अधिक होने से हानिकारक सिद्ध होगी। चीन, जापान, अमेरिका, रूस, पाकिस्तान, आदि देशों के मंत्रिमंडलों में भारी बदलाव होगा। भारत में भी औद्योगिक क्षेत्रों में असन्तोष व्यापेगा। रविवार का चन्द्रदर्शन और सुदी दशमी का क्षय है, अतः धान्य, चावल, मूंग, गेहूँ, चना, जौ, मौठ, बाजरा, ज्वार, मक्का, अरहर, मटर में तेजी होगी। पाट, वारदाना, सूत, सन, रेशम, वस्त्र, मंदा होकर तेज होगा। पूर्णिमा शुक्रवार को चन्द्रग्रहण कर्क राशि तथा आश्लेषा नक्षत्र में होगा। गेहूँ, जौ, चावल, धान्य, गुड़, तेल, घृत, दूध, दही, आदि में तेजी होगी। व्यापारिक वस्तुओं के संग्रह से दो मास में लाभ होगा। कर्क राशि के चन्द्रग्रहण का फल–**"कर्कटे ग्रहणेपीड़ा गर्इभानां च जायते। आभीरर्वबराणां च पीड़ा च महतीमता।"**

माघ शु. १५ शुक्रे प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ६१५४

११ सू. बु रा ९ ह मं नेशु श
१२ १० ८
१ ७
२ च ४ ६
गु ३ के ५

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०९	०३	०८	०९	०२	०८	०८	०९	०३
२६	१६	१३	०२	०७	२७	२६	२२	२२
१४	२५	४७	१६	३०	१२	२२	४०	४०
५३	२८	५८	१३	०५	२३	५९	१२	१२
६०	७९३	४३	७७	०३	०२	०६	०३	०३
४३	०१	३२	२२	००	४२	३०	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
धनि. १	पुष्य ४	पू.षा १	उ.षा २	आर्द्रा १	उ.षा १	पू.षा ४	श्रवण ४	अश्लेषा २

आकाश लक्षण–पूर्वी प्रदेश, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, म० प्र०, गुजरात में शुष्क वायु वेग से सर्दी पड़ेगी। पहाड़ों पर हिमपात होगा तथा दूषित वायु से कृषि में हानि होगी। पक्षान्त में बादल, वर्षा होगी।

श्री संवत् २०४६ शकः १९११ फाल्गुन कृष्ण पक्षः २२

ता. १० से २५ फरवरी सन् १९९० ई. राष्ट्रीय मिति २१ माघ से ६ फाल्गुन तक। उत्तरायण दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टै. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. ति.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	पल	स्टैण्डर्ड टाइम सूर्योदय घंटा	मिनट	सूर्यास्त घंटा	मिनट	तारीखें हि (माघ)	मु (रजब)	अ (फर)	चन्द्र संचार स्टै. टा. रा. घं. मि.
२१	१	श.	४४	०५	२४	४६	म	५९	२०	३०	५२	शो	२२	१३	बा	१२	४२	२७	१८	७	८	१८	०४	२८	१३	१०	सिंह
२२	२	र.	४५	३०	२५	१९	पू.फा	६०	००	—	—	अ	२१	२५	तै	१२	५८	२७	२२	७	०७	१८	०४	२९	१४	११	सिंह
२३	३	चं.	४८	२०	२६	२६	पू.फा	२	३२	८	०७	सु	२१	०४	व	१३	४८	२७	२६	७	०६	१८	०५	फा.१	१५	१२	क. १४।३४
२४	४	मं.	५२	३०	२८	०५	उ.फा	७	०२	९	५४	धृ	२१	०७	ब	१५	१२	२७	३०	७	०५	१८	०६	२	१६	१३	कन्या
२५	५	बु	५७	४२	३०	१०	ह	१२	४५	१२	११	शू	२१	३१	कौ	१७	०५	२७	३४	७	०५	१८	०७	३	१७	१४	तु. २५।३१
२६	६	गु	६०	००	—	—	चि	१९	२७	१४	५१	ग	२२	१२	ग	१९	२०	२७	३८	७	०४	१८	०७	४	१८	१५	तुला
२७	६	शु	३	४७	८	३४	स्वा	२६	४५	१७	४५	वृ	२३	०१	व	८	३४	२७	४२	७	०३	१८	०८	५	१९	१६	तुला
२८	७	श.	१०	०५	११	०४	वि	३४	०७	२०	४१	ध्रु	२३	५०	ब	११	०४	२७	४६	७	०२	१८	०९	६	२०	१७	वृ. १३।५७
२९	८	र.	१६	०७	१३	२८	अनु	४१	०२	२३	२६	व्या	२४	२९	कौ	१३	२८	२७	५०	७	०१	१८	१०	७	२१	१८	वृश्चिक
३०	९	चं.	२१	१५	१५	३०	ज्ये	४६	५७	२५	४७	ह	२४	४९	ग	१५	३०	२७	५४	७	००	१८	१०	८	२२	१९	ध. २५।४७
फा.१	१०	मं	२५	०७	१७	०२	मू	५१	२७	२७	३४	व	२४	४२	वि	१७	०२	२७	५८	६	५९	१८	११	९	२३	२०	धनु
२	११	बु	२७	२०	१७	५४	पू.षा	५४	२०	२८	४२	सि	२४	०५	बा	१७	५४	२८	०२	६	५८	१८	१२	१०	२४	२१	धनु
३	१२	गु	२७	४२	१८	०२	उ.षा	५५	२५	२९	०७	व्य	२२	५३	तै	१८	०२	२८	०६	६	५७	१८	१२	११	२५	२२	म. १०।४८
४	१३	शु.	२६	२०	१७	२८	श्र	५४	५०	२८	५२	व	२१	०९	व	१७	२८	२८	१०	६	५६	१८	१३	१२	२६	२३	मकर
५	१४	श.	२३	१५	१६	१३	ध	५२	४२	२८	००	प	१८	५३	श	१६	१३	२८	१४	६	५५	१८	१३	१३	२७	२४	कुं. १६।२६
६	३०	र	१८	४५	१४	२४	श	४९	२०	२६	३८	शि	१६	१२	ना	१४	२४	२८	१९	६	५४	१८	१४	१४	२८	२५	कुंभ

२२ — उ.षा. १ में शनि २०।५६.

२३ — भद्रा १३।४८ से २६।२६ तक. सं०कुम्भमें सूर्य २२।३२. मु. ४५ पुण्यकाल १६।०८ से.

२४ — **श्री गणेश ४ व्रत चन्द्रोदय २१।३३.** (विवाह मु. हस्त में)

२५ — श्रवण में बुध २३।३६. व्यतिपात महापात १९।२० से २४।३ तक

२६ — (विवाह मु. स्वाती में)

२७ — भद्रा ८।३४ से २१।४९ तक.

२८ — (विवाह मु. अनु. में) C **श्रीसीताष्टमी, हलाष्टमी,** (वि. मु. अनु. में)

२९ — सायन मीन में सूर्य २७।४५. वसंत ऋतु प्रारम्भ. पू०षा० ३ में नेपच्यून २४।२० C

३० — भद्रा २८।२१ से. शतभिषा में सूर्य १३।००. वक्री प्लूटो १२।०१. **श्री रामदास नवमी,**

फा.१ — भद्रा १७।०२ तक. मकर में शुक्र २१।३२. **राष्ट्रीय फाल्गुन प्रारम्भ,** (वि. मु. मूल में)

२ — **विजया ११ व्रत सबका,**

३ — **प्रदोष व्रत** F महानिशीथकाल २४।२५ से २५।१५ तक

४ — भद्रा १७।२८ से २८।५५ तक. धनिष्ठा में बुध २३।३२. **श्री महाशिवरात्रि व्रत स्मार्तों का,**

५ — मार्गी गुरु २४।४६. पंचक प्रारम्भ १६।२६. **श्री महाशिवरात्रि व्रत वैष्णवों का, मेलाशिव रात्रि का**

६ — अमावस्या पुण्य.

फाल्गुन कृ. ८ रवौ प्रातः स्टै. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ६१६३ (दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं) **फाल्गुन कृ. ३० रवौ प्रातः स्टै. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ६१७०**

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	०७	०८	०९	०२	०८	०८	०९	०३
०५	०७	२०	१४	०७	२८	२७	२२	२२
२०	४२	२१	३८	०९	५७	१९	११	११
३३	१५	०६	४६	४६	१६	४०	३५	३५
६०	७२०	४३	८८	०१	२१	०६	०३	०३
३१	१७	५१	१२	१२	५४	०६	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
४ धनि	२ अनु	३ मू	२ श्रवण	१ आर्द्रा	१ उ.षा	१ उ.षा	४ श्रवण	४ आश्लेषा

कुण्डली (फाल्गुन कृ. ८): १२ सू; बु १० रा; ह ने ९ शु श मं; १; ११; चं; ८; २; गु ३; ५; ७; ४ के; ६

इस मास में पांच शनिवार पांच रविवार का होना अशुभ है। फल—"**शनिवारा यदा पंच जायन्ते रविपंचकम्। महार्घं जायते धान्यं रोग शोका कुलामही॥**" पक्ष पूवार्ध में धन राशि में पांच ग्रहों का योग भी है। संसार में रोगात्पात, चिन्ता, भय, व्याप्त होगा। प्रजातान्त्रिक देशों में मतभेद होंगे। कई राज्यो के मंत्रिमंडल में उलटफेर होंगे। अमेरिका, चीन, जापान, रूस आदि के राष्ट्रीय सम्बन्धों में तनाव होगा। पूर्वोत्तर देशों में विशेष उपद्रव होंगे। कहीं भयप्रद याने दुर्घटना होगी। अनाज, गल्ला, गेहूँ चना, रूई, सूत, तेल, घी, गुड़, खांड, अलसी, मूँगफली, तिल, उड़द, मूंग में मंदी होकर तेजी होगी। ता० २० फरवरी को मकर राशि में शुक्र प्रवेश करेगा। जिसका

कुण्डली (फाल्गुन कृ. ३०): १२; सू; १० रा शु; चं; बु; श ने; ह मं ९; १; ११; २; ८; गु ३; ५; ७; ४ के; ६

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	१०	०८	०९	०२	०९	०८	०९	०३
१२	०७	२५	२५	०७	०२	२८	२१	२१
२३	३२	२८	१७	०५	०६	०१	४९	४९
४५	१६	३२	२७	०९	५१	०९	१९	१९
६०	८४९	४४	९५	००	२६	०५	०३	०३
२१	४९	०२	१२	०६	४२	४०	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
२ शत.	१ शत	४ पू.षा	१ धनिष्ठा	१ आर्द्रा	२ उ.षा	१ उ.षा	४ श्रवण	२ आश्लेषा

फल—"**मकरे च यदा शुक्रः सर्वसस्य विनाशकृत्। जायतेऽत्र महर्घाणि नात्र कार्याविचारणा॥**"

आकाश लक्षण—राजस्थान, मध्य प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उ० प्र०, हिमाचल प्रदेश में साधारण बादल वर्षा के योग है। पक्षान्त में पर्वतीय प्रदेशों में वर्षा, ओला, पाला पड़ने की सम्भावना है। दक्षिण में दि[न] में गर्मी बढ़ने लगेगी।

श्री संवत् २०४६ शकः १९११ फाल्गुन शुक्ल पक्षः २३

ता. २६ फरवरी से ११ मार्च सन् १९९० ई. राष्ट्रीय मिति ७ से २० फाल्गुन तक। उत्तरायण दक्षिणगोल, वसन्त ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टै. टा. घंटा मिनटों में है।

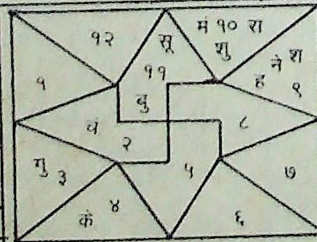
																		दिन मान		स्टैण्डर्ड टाईम सूर्योदय		सूर्यास्त		तारीखें हि	मु	अ	चन्द्र संचार स्टै. टा
रा मि	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	फाल्गुन	रजब	मार्च	रा घ मि
७	१	च	१३	१०	१२	०९	पू भा	४५	००	२४	५३	सि	१३	०९	ब	१२	०९	२७	२३	६	५३	१८	१५	१५	२९	२६	मी. १९।१९
८	२	म	६	४७	९	३५	उ भा	४०	१०	२२	५६	सा	०९ / ३०	५१ / २५	कौ	९	३५	२८	२७	६	५२	१८	१५	१६	शा १	२७	मीन
०	३	म	५९	५५	३०	५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०
९	४	बु	५३	००	२८	०३	रे	३५	०२	२०	५२	शु	२६	५७	व	१७	२६	२८	३१	६	५१	१८	१६	१७	२	२८	मे. २०।५२
१०	५	गु	४६	१५	२५	२०	अश्वि	३०	०५	१८	५२	ब्र	२३	३३	ब	१४	४१	२८	३५	६	५०	१८	१६	१८	३	मा १	मेष
११	६	शु	४०	००	२२	४९	भ	२५	२७	१७	००	ऐ	२०	१७	कौ	१२	०३	२८	४०	६	४९	१८	१७	१९	४	२	वृ. २२।३६
१२	७	श	३४	२७	२०	३५	कृ	२१	३०	१५	२४	वै	१७	१५	ग	९	४०	२८	४४	६	४८	१८	१७	२०	५	३	वृष
१३	८	र	२९	४५	१८	४१	रो	१८	२२	१४	०८	वि	१४	२८	वि	७	३५	२८	४८	६	४७	१८	१८	२१	६	४	मि. २५।४०
१४	९	च	२५	५७	१७	०९	मृ	१६	०७	१३	१३	प्री	१२	००	कौ	१७	०९	२८	५३	६	४६	१८	१९	२२	७	५	मिथुन
१५	१०	मं	२३	१०	१६	०१	आ	१४	५२	१२	४२	आ	९	५१	ग	१६	०१	२८	५७	६	४५	१८	२०	२३	८	६	क. ३०।३७
१६	११	बु	२१	२५	१५	१८	पुन	१४	३७	१२	३५	सौ	०८ / ३०	०१ / ३०	वि	१५	१८	२९	०१	६	४४	१८	२०	२४	९	७	कर्क
१७	१२	गु	२०	४०	१४	५९	पु	१५	२२	१२	५२	अ	२९	१८	बा	१४	५९	२९	०६	६	४३	१८	२१	२५	१०	८	कर्क
१८	१३	शु	२०	५७	१५	०५	आश्ले	१७	०५	१३	३२	सु	२८	२६	तै	१५	०५	२९	१०	६	४२	१८	२२	२६	११	९	सि. १३।३२
१९	१४	श	२२	१५	१५	३४	म	१९	५०	१४	३६	धृ	२७	५२	व	१५	३४	२९	१४	६	४०	१८	२३	२७	१२	१०	सिंह
२०	१५	र	२४	३२	१६	२८	पू फा	२३	३०	१६	०३	शू	२७	३७	ब	१६	२८	२९	१९	६	३९	१८	२३	२८	१३	११	क. २२।३१
-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	

उ.षा. मे मंगल २०।२७. चन्द्रदर्शन मु. ३०, श्री कार्ष्णि गोपाल ज. रमणरेती A
कुंभ मे बुध २८।००, शाबान मु० ८ रामकृष्ण परमहंस जयन्ती (वि. मु. उ. भा. में) B
तृतीया का क्षय   B वैधृति महापात २१।५२ से २५।४२ तक
भद्रा १७।२६ से २८।०३ तक, पंचक समाप्त २०।५२.   A महायज्ञ महोत्सव
मार्च मा० ३ ता० ३१.
C प्रारम्भ, दुर्गाष्टमी, होलाष्टक प्रारम्भ,
भद्रा २०।३५ से, शतभिषा में बुध २८।६१. बुध का अस्त पूर्व में १८।०३. (विवाह मु० रोहिणी में)
भद्रा ७।३५ तक, पू.भा. में सूर्य १९।१५. मकर मे मंगल ९।१३. अष्टान्हिक जैन व्रत C
D महोत्सव प्रारम्भ मेला खाटू श्याम जी (राज.) दो दिन का,
भुद्रा २७।३७ से.
भद्रा १५।१८ तक, आमला ११ व्रत सबका, रामस्नेही सम्प्रदाय, शाहपुरा का फुलडोल D
श्रवण मे शुक्र २६।०२, प्रदोष व्रत,
E हुताशनी १५, सत्यव्रत,
भद्रा १५।३४ से २७।५८ तक होलिका दहन सायं गोधूलि वेला में, दारुणरात्रि E
पू.भा. में बुध १७।३०, अष्टान्हिक जैन व्रत समाप्त, चैतन्य महाप्रभू जयन्ती, धुलेंडी,

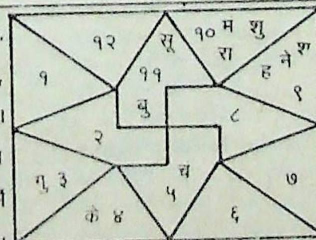
(दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं)

फाल्गुन शु. ८ रवौ प्रातः स्टै. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ६१७७

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	०१	०९	१०	०२	०९	०८	०९	०३
१९	१८	००	०६	०७	०६	२८	२१	२१
२५	१७	३७	४५	१०	२७	३९	२७	२७
३४	०५	२०	१४	२०	०८	५०	०४	०४
६०	८३६	४४	१०२	०१	४१	०५	०३	०३
०८	२५	१२	२४	३०	५४	१८	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
४ शत	३ रोहिणी	२ उ षा	१ शत	१ आर्द्रा	३ उ षा	१ उ षा	४ श्रवण	२ आश्लेषा



इस पक्ष में सोमवार का चन्द्रदर्शन सोना, चांदी, रूई, सूत, वस्त्र, रंग, धान्य, जौ, गेहूँ, चना, मूग, मोठ, में घटाबढ़ी से तेजी करेगा। ता० १ मार्च को मंगल शनि का अंश साम्ययोग होगा। जिसके फलस्वरूप विश्व में अकल्पित, उलटफेर की सम्भावना बने।



फाल्गुन शु. १५ रवौ प्रातः स्टै. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ६१८४

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	०४	०९	१०	०२	०९	०८	०९	०३
२६	२१	०५	१९	०७	११	२९	२१	२१
२५	०९	४७	०४	२५	४०	१५	०४	०४
४३	२२	०९	५२	०१	५५	३१	४८	४८
५९	७४७	४४	११०	०२	४८	०४	०३	०३
५३	४८	२२	१५	५४	२४	५४	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
१ पू भा	३ पू फा	३ उ षा	४ शत	१ आर्द्रा	१ श्रवण	१ उ षा	४ श्रवण	२ आश्लेषा

युद्धप्रिय देश शान्ति भंग करेंगे। रोगोत्पात, यान दुर्घटना, अराजकता साम्प्रदायिक उपद्रव एवं युद्धभय व्याप्त हो। आर्थिक तंगी एवं पारस्परिक वैर-विरोध से प्रजा को कष्ट होगा। शनि मंगल योग का फल—"**युद्धदौ शनि माहेयौ॥**" ता० ४ मार्च को मकर राशि में मंगल चले जाने से शनिमंगल का द्विर्दादश योग तथा गुरु से षड़ष्टक योग बनेगा। यह भी विश्व मेंशान्ति नहीं बनने देगा। ति० १४ को होलिका दहन अर्धरात्रि पश्चात् तक भद्रा होने से साय भद्रा मुख को छोड़कर गोधूलिवेला में करना श्रेष्ठ है। प्रमाण—"**पर दिने प्रदोष स्पर्शा भावे पूर्वदिने यदि निशीथात्प्राक् भद्रासमाप्तिस्तदा भद्राव सानोत्तर मेव होलिका दीपनम्। निशीथोत्तरं भद्रासमाप्ती भद्रामुखंत्यक्त्वा भद्रायामेव प्रदोषे भद्रामुख व्याप्ते भद्रोत्तरं प्रदोषोत्तरं वा॥**" (**धर्मसिन्धु**) इसलिए इसवर्ष ता०१० मार्च को सायं गोधूलिवेला में होलिकादहन होगा।

अकाश लक्षण—इस पक्ष के मध्य में पंजाब, दिल्ली, उ० प्र०, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, म० प्र०, गुजरात, हरियाणा में बादल वर्षा के योग है। पूर्वी वायु के साथ आकाश में बादल भर जायेंगे और बूँदा बाँदी अथवा कुछ भागों में वर्षा भी होगी।

श्री संवत् २०४६ शकः १९११ चैत्र कृष्ण पक्षः २४

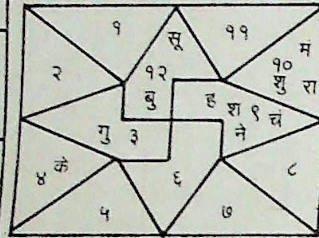
ता. १२ से २६ मार्च सन् १९९० ई. राष्ट्रीय मिति २१ फाल्गुन से ५ चैत्र तक। उत्तरायण दक्षिणगोल, वसन्त ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

ता.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. फाल्गुन	मु. शाबान	अ. मार्च	चन्द्र संचार स्टैं. टा. रा. घ. मि.	
२१	१	च.	२७	५२	१७	४७	उ.फा.	२८	१०	१७	५४	गं	२७	४०	कौ	१७	४७	२९	२३	६	३८	१८	२४	२९	१४	१२	कन्या	होला १, वसंतोत्सव, मेला फूलडोल शाहपुरा व आनन्द पुर साहब (पंजाब) शबरात महोत्[सव]
२२	२	मं	३२	१०	१९	२९	ह	३३	४७	२०	०८	वृ	२८	०१	ग	१९	२९	२९	२७	६	३७	१८	२४	३०	१५	१३	कन्या	श्री संततुकाराम जयन्ती, B यवनों का व्यतिपात महापात ९।०७ से १३।१५ तक
२३	३	बु	३७	२०	२१	३२	चि	४०	१५	२२	४२	ध्रु	२८	३७	व	८	२८	२९	३१	६	३६	१८	२५	चै.१	१६	१४	तु.९।२५	भद्रा ८।२८ से २१।३२ तक, सं. मीन में सूर्य १९।२७, मु. ३० पुण्यकाल १३।०३ से.
२४	४	गु	४३	१२	२३	५२	स्वा	४७	२०	२५	३१	व्या	२९	२४	ब	१०	४०	२९	३५	६	३५	१८	२५	२	१७	१५	तुला	श्री गणेश ४ व्रत चन्द्रोदय २२।०८,
२५	५	शु	४९	३०	२६	२१	वि	५४	५०	२८	२९	ह	३०	१७	कौ	१३	०६	२९	४०	६	३३	१८	२६	३	१८	१६	वृ.२१।४५	श्रवण मे मंगल २२।०४, मीन में बुध २४।४७, रंग पंचमी
२६	६	श.	५५	४०	२८	४८	अनु	६०	००	—	—	व	—	—	ग	१५	३६	२९	४४	६	३२	१८	२६	४	१९	१७	वृश्चिक	भद्रा २८।४८ से उ. भा. में सूर्य २७।४७, एक नाथ षष्ठी,
२७	७	र	६०	००	—	—	अनु	२	१२	७	२४	व	७	०८	वि	१७	५८	२९	४८	६	३१	१८	२७	५	२०	१८	वृश्चिक	भद्रा १७।५८ तक, उ.भा. में बुध १७।४८ शीतला ७
२८	७	च	१	२०	७	०२	ज्ये	९	००	१०	०६	सि	७	४७	ब	७	०२	२९	५३	६	३०	१८	२७	६	२१	१९	ध.१०।०६	श्री शीतला अष्टमी, जैन वर्षी तपारम्भ A महाविषुव दिन,
२९	८	मं	५	५२	८	५०	मू	१४	४०	१२	२१	व्य	८	०७	कौ	८	५०	२९	५७	६	२९	१८	२८	७	२२	२०	धनु	उ. षा. २ मकर में शनि २६।०४ सायन मेष में सूर्य २६।५१, उत्तरगोल में सूर्य प्रवेश. A
३०	९	बु	८	४२	१०	०१	पू.षा	१८	५०	१४	००	व	७	५९	ग	१०	०१	३०	०१	६	२८	१८	२८	८	२३	२१	म.२०।१४	भद्रा २२।२० से.
चै.१	१०	गु	१०	००	१०	२६	उ.षा	२१	१०	१४	५४	प	७ / २९	१७ / ५७	वि	१०	२६	३०	०६	६	२६	१८	२८	९	२४	२२	मकर	भद्रा १०।२६ तक, राष्ट्रीय चैत्र प्रारंभ शाक सं. १९१२ प्रारंभ,
२	११	शु	९	०५	१०	०३	श्र.	२१	२७	१५	००	सि	२७	५८	बा	१०	०३	३०	१०	६	२५	१८	२९	१०	२५	२३	कु.२६।४०	पंचक प्रारंभ २६।४०, पापमोचनी ११ व्रत सबका,
३	१२	श.	६	१०	८	५१	ध	१९	५०	१४	१९	सा	२५	२३	तै	८	५१	३०	१५	६	२३	१८	२९	११	२६	२४	कुंभ	धनिष्ठा में शुक्र १२।१०, शनि प्रदोष व्रत,
४	१३	र	१	२२	६	५५	श.	१६	२५	१२	५६	शु	२२	१६	व	६	५५	३०	१९	६	२२	१८	२९	१२	२७	२५	मी.२९।३१	भद्रा ६।५५ से १७।४२ तक, रेवती में बुध ९।३२, चैत्री १४, मेला पृथूदक C
०	१४	र.	५४	५७	२८	२१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	चतुर्दशी का क्षय C पिहोवा (हरियाणा) वारूणी पर्व D
५	३०	च	४७	२२	२५	१८	पू.भा.	११	३०	१०	५७	शु	१८	५४	च	४	५३	३०	२४	६	२१	१८	३०	१३	२८	२६	मीन	सोमवती अमावस्या पुण्य, चान्द्र सम्वत्सर समाप्त, B वैधृति महापात १९।१० से २३।१५

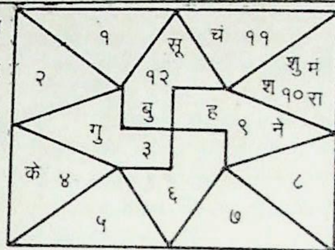
चैत्र कृ. ८ भौमे प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ६१९३ (दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं)

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
११	०८	०९	११	०२	०९	०८	०९	०३
०५	०९	१२	०६	०७	१९	२९	२०	२०
२३	४९	२७	१६	५७	२२	५६	३६	३६
३५	०५	२४	०६	१८	४८	२४	११	११
५९	७४३	४४	११९	०४	४५	०४	०३	०३
३७	०१	३४	३६	३०	३०	१२	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
१ उ.भा.	३ मूल	१ श्रवण	१ उ.भा.	१ आर्द्रा	३ श्रवण	१ उ.षा.	४ श्रवण	२ आश्ले.



इस पक्ष में सूर्य बुध से मंगल शुक्र राहू से त्रिरेकादश योग एवं सोमवती अमावस्या उत्तम है। जिससे विश्व में शांति का वातावरण बनेगा। सभी राष्ट्रों के सामान्य राजनैतिक सम्बन्धों में सुधार होगा। ति० ८ को मकर राशि में शनि प्रवेश करेगा। जिसका फल—"**मकरे च यदा सौरिर्दुर्भिक्षं तत्र दारूणम्। कामार्ताश्च विनश्यन्ति ह्यन्यदेशे शुभं भवेत्॥**" सोना, चांदी, तांबा, रुई, कपास, सूत, समस्त अनाजों में तेजी होगी। जनता में रोगपीड़ा की वृद्धि होगी। दुर्भिक्ष भय तथा कामीपुरूषों का नाश होगा। यहाँ से मकर राशि में मं. शु. श. रा. का योग भी बनेगा। यह विश्व में कहीं हिंसक आन्दोलन, प्रकृति प्रकोप, अराजकता से भय व्याप्त होगा। युद्धप्रिय राष्ट्रों में अपने बल पर स्वार्थ सिद्धि की भावना बनी रहेगी। चतुदर्शी तिथि का क्षय धान्यादि एवं व्यापारिक वस्तुओं में मंदी कारक है। कृष्णापक्ष की अष्टमी व चतुदर्शी के दिन उत्तर की हवा के साथ बादल चाल हो तो आगे आने वाला वर्ष शु[भ] फलदायक होता है।

चैत्र कृ. ३० चन्द्रे प्रातः स्टैं. टा. ५।३० केतकी अहर्गणः ६१९[९]



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	१०	०९	११	०२	०९	०९	०९	०
११	२९	१६	१८	०८	२४	००	२०	२
२०	५९	५५	२१	२६	५७	२०	१७	१
५०	३४	०३	०५	४७	५९	१७	०७	०
५९	८८५	४४	१२१	०५	५७	०३	०३	०
२६	४४	४१	११	२३	३५	३५	११	१
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	[illegible]
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	[illegible]
३ उ.भा.	३ पू.भा.	३ श्रवण	१ रेवती	१ आर्द्रा	१ धनि.	२ उ.षा.	४ श्रवण	[illegible]

आकाश लक्षण—पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उ० प्र०, राजस्थान, म० प्र० में दिन में गरमी और रात्रि में गुलाबी ठंड पड़ेगी। वायुवेग बढ़ेगा। पर्वतीय प्रदेशों में वायुवेग के साथ बूंदा बाँदी भी होगी।

स्मार्त्त वैष्णव विचार

पंचाङ्ग में एकादशी व्रत प्रायः स्मार्त्त वैष्णव भेद से दो दिन अलग - अलग होते हैं, स्मार्त्तव्रत पहले दिन और वैष्णवों का दूसरे दिन लिखते हैं। इनका निर्णय धर्म - शास्त्रीय व्यवस्था से पंचाङ्गों में लिखा जाता है। यदि ५४ घटी से एक पल भी दशमी अधिक हो तो वैष्णव सम्प्रदाय का व्रत एकादशी को न होकर द्वादशी में होता है। निम्बार्क सम्प्रदाय वाले कपाल वेध मानते हैं। स्मार्त्त लोग जिस समय अर्द्धरात्रि के समय अष्टमी हो उसी दिन श्रीकृष्ण - जन्माष्टमी का व्रत करते हैं और वैष्णव सम्प्रदाय वाले उदय व्यापिनी अष्टमी मानते हैं।

स्मार्त्त कौन और वैष्णव कौन ?—साधारण जन यह नहीं समझ पाते कि वे स्मार्त्त हैं या वैष्णव ! उन्हें स्मरण रखना चाहिए कि श्रुति- स्मृति को मानने वाले सभी आस्तिक जन स्मार्त्त हैं। वैसे तो द्विज- मात्र (ब्राह्मण- क्षत्रिय- वैश्य) जो गायत्री की उपासना करते हैं और वेद पुराण धर्मशास्त्र स्मृति को मानने वाले पंचदेवोपासक सभी स्मार्त्त हैं। ''श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः।'' (मनुः) जो लोग यह समझते है कि मांस मदिरा प्याज लहसुन से दूर रहने वाले राम- कृष्ण- विष्णु के उपासक सब वैष्णव हैं, यह उनका भ्रम है। जिन लोगों ने वैष्णव गुरु से तप्त मुद्रा द्वारा अपनी भुजा पर शंख चक्र अंकित करवाये हैं वे, या जिन्होंने किसी वैष्णव सम्प्रदाय के धर्माचार्य से विधिपूर्वक दीक्षा लेकर कण्ठी और तुलसी की माला धारण की हुई है वे ही वैष्णव कहला सकते हैं, उनको और विधवा स्त्रियों को दूसरे दिन वैष्णव व्रत करने का अधिकार है, अन्य को नहीं।

दैनिक—लग्नसारिणी देखने की विधि

इस पंचांग में दी हुई यह दैनिक लग्नसारिणी दिल्ली के अक्षांश रेखांश पर है। इसका समय ऊपर दिए हुए लग्न का समाप्तिकाल रेलवे- स्टैण्डर्ड- टाइम में घण्टा- मिनट के रूप में लिखा गया है। जिस लग्न के नीचे समाप्तिकाल है वह आगे के लग्न का प्रारम्भ काल समझें। ता० ३ अप्रैल, १९८५ ई० को सारिणी में मीन लग्न के नीचे घण्टे ६ मिनट ४२ लिखें हैं, अतः मीन लग्न प्रातः ६ बजकर ४२ मिनट पर समाप्त हुआ। इसमें लिखें हुए घण्टा- मिनट अर्धरात्रोत्तर क्रमशः अर्धरात्रि- पर्यन्त २४ घण्टे में लिखे हैं। जैसे रात्रि के १२ बजकर १५ मिनट की जगह घण्टा मि० १५ लिखे हुए मिलेंगे, ऐसे ही मध्यान्ह के पश्चात् एक बजे की जगह १३ दो की जगह १४ आदि क्रमशः समझें।

लग्नसारिणी—परिवर्तन उदाहरण

किसी को इस लग्न सारिणी से अन्य स्थान का लग्न- समाप्ति- काल लाना होतो जिस तारीख को जो लग्न लाना हो उस तारीख का वह लग्न- समाप्ति काल का घण्टा- मिनट लिखें, पश्चात्—पंचांग- परिवर्तन में जिस नगर का लग्न परिवर्तन करना हो उस नगर के आगे या नगर के समीपके नगर के आगे लिखे हुए देशान्तर मिनट लेवें वह देशान्तर मिनट ऋण(−) होतो ऊपर के (इस पंचांग के) लग्न समाप्ति- काल में मिलावें, देशान्तर मिनट धन (+) होतो ऋण करें तो वह देशान्तर संस्कृत स्थानीय रेलवे टाइम का लग्न- समाप्ति- काल होगा फिर जिस स्थान का लग्न समाप्ति- काल लाना है—उसके अक्षांश और क्रान्ति से चरान्तर कोष्ठक से चरान्तर साधन करें वह चरान्तर धन आया हो तो उपर्युक्त देशान्तर संस्कृत लग्न समाप्तिकाल में मिलादें, ऋण आया हो तो घण्टा देवें, तो वह स्थानीय रेलवे टाइम से स्पष्ट लग्न का समाप्ति- काल होगा। उदाहरण ता० ३ अप्रैल १९८५ को मीन लग्न समाप्तिकाल ६ घण्टा ४२ मिनट है, इसी लग्न क मथुरा में समाप्ति- काल लाना है। पंचांग परिवर्तन में अक्षांशादि- सारिणी में दिल्ली से मथुरा में समाप्तिकाल लाना है। पंचांग पंचांग परिवर्तन में अक्षांशादि- सारिणी में दिल्ली से मथुरा का देशान्तर मिनट २ है, वहां यह मिनट धन होने से ६ घण्टा ४२ मिनट, में घटाये तो ६ घण्टा ४० मिनट, यह मथुरा का देशान्तर संस्कृत मीनलग्न का समाप्ति - काल हुआ। इस दिन ३ अप्रैल को सूर्य की क्रांति+उत्तर ५ अंश ७ क० है और मथुरा के अक्षांश २७।२८ हैं इन क्रांति और अक्षांश से चरान्तर लिया तो वह ० शून्य आया, अतः उपर्युक्त देशान्तर संस्कृत लग्न समाप्तिकाल घण्टा ६ मिनट ४० यही मथुरा का मीन लग्न समाप्तिकाल हुआ। इसी प्रकार सर्वत्र समझें। दिल्ली के समीपवर्ती नगर या ग्राम के लिए संस्कार नहीं किया जाय तो भी कोई हानि नहीं, परन्तु दूरस्थ नगरों के लिए ऊपर दिए उदाहरण में बताई प्रक्रिया के अनुसार लग्न - समाप्तिकाल ला करके उपयोग करने से वह सूक्ष्म लग्न होगा।

नवांश का प्रारम्भ और अन्त लाने का उदाहरण

ऊपर कहे अनुसार जिस लग्न में नवांश - समय लाना हो उस लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्ति - काल साधन करें, पश्चात् समाप्तिकाल में से प्रारम्भ समय ही न करें, शेष घ० मि० रहेंगे, घण्टा को ६० से गुणाकर मिनट मिला देवें, यह कुल लग्नमान के मिनट होंगे, उन मिनटों में ९ का भाग देवें, लब्ध १ नवांश के मिनट प्राप्त होंगे शेषको ६० से गुणा कर फिर ९ का भाग देने पर सैकण्ड आयेंगे, यह मिनट और सैकण्ड एक नवांश का मान होने से जो नवांश लेना हो उससे गत नवांश तक की संख्या से एक नवांश के मान को गुणा कर जो मिनट हों वह मिनट लग्न प्रारम्भ काल में मिलाने से नवांश प्रारम्भ समय आयेगा और इस नवांश प्रारम्भ समय में एक नवांश का मान मिला देने पर नवांश समाप्ति - काल आयेगा। मेष, सिंह, धनु लग्नमें नवांश का प्रारम्भ मेष से होगा। वृष, कन्या, मकर लग्नमें नवांश का मकर से मिथुन, तुला, कुम्भ लग्नमें नवांश का प्रारम्भ तुला से तथा कर्क, वृश्चिक, मीन लग्न में नवांश का प्रारम्भ कर्क से होगा। उदाहरणार्थ (—) उपर्युक्त मथुरा का आया हुआ मेषारम्भ समय घंटा ६ मिनट ४० तथा अन्त घंटा ८ मिनट १७ अन्तमें प्रारम्भ घटाया तो घंटा १ मि० ३७ इसके मिनट किये तो मिनट ९७ हुए इसमें ९ का भाग देने पर मिनट १० से ४७ यह एक नवांश का मान प्राप्त हुआ। हमको मेष लग्न में वृश्चिक नवांश का प्रारम्भ तथा अन्त समय लेना है तो मेषादि से ७ नवांश मुक्त हुए, अतः एक नवांश के मानको (मि० १० से० ४७ को) ७ से गुणा किया तो घंटा १ मि० १५ से २९ आये, यह घण्टादि मेष लग्न के प्रारम्भ समय घंटा ६ मि० ४० में छोड़ दिये तो वृश्चिक नवांश का प्रारम्भ समय घं० ७ मिनट ५५ से० २९ हुआ, इसी में एक नवांश का मान मि० १० से० ४७ जोड़ें तो घण्टा ८ मि० ६ से० १६ हुआ वह वृश्चिक नवांश का समाप्ति - काल हुआ। इसी प्रकार सर्वत्र जानें। विवाह, यज्ञोपवीत, गृह प्रवेशादि में लग्न तथा नवांश इस प्रकार से सूक्ष्म साधन करने से मुहूर्त योग्य समय में होता है और फल भी जो मिलना चाहिए वह मिलता है। ज्योतिर्विदों को चाहिए कि नवांश - सूक्ष्म से सूक्ष्म साधन करके विवाह आदि का समय निश्चित करें।

अप्रेल की दैनिक लग्न सारणी स्टेण्डर्ड रेल्वे टाइम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
१	६।५०	८।२३	१०।२२	१२।३५	१४।५४	१७।११	१९।२९	२१।४९	२४। ७	२।११	३।५४	५।२२
२	६।४६	८।२०	१०।१८	१२।३१	१४।५०	१७। ७	१९।२५	२१।४५	२४। ३	२। ७	३।५०	५।१८
३	६।४२	८।१७	१०।१४	१२।२७	१४।४६	१७। ३	१९।२१	२१।४१	२३।५९	२। ३	३।४६	५।१४
४	६।३८	८।१३	१०।१०	१२।२३	१४।४२	१६।५९	१९।१७	२१।३७	२३।५५	१।५९	३।४२	५।१०
५	६।३५	८।१०	१०। ६	१२।१९	१४।३८	१६।५५	१९।१३	२१।३३	२३।५१	१।५५	३।३८	५। ६
६	६।३१	८। ६	१०। २	१२।१५	१४।३४	१६।५१	१९। ९	२१।२९	२३।४७	१।५१	३।३४	५। २
७	६।२७	८। २	९।५७	१२।११	१४।३०	१६।४७	१९। ५	२१।२५	२३।४३	१।४७	३।३०	४।५७
८	६।२२	७।५८	९।५३	१२। ६	१४।२५	१६।४३	१९। ०	२१।२०	२३।३८	१।४२	३।२५	४।५३
९	६।१८	७।५४	९।४९	१२। २	१४।२१	१६।३९	१८।५६	२१।१६	२३।३४	१।३८	३।२१	४।४९
१०	६।१४	७।५०	९।४५	११।५८	१४।१७	१६।३५	१८।५२	२१।१२	२३।३०	१।३४	३।१७	४।४५
११	६।१०	७।४६	९।४१	११।५४	१४।१३	१६।३१	१८।४८	२१। ८	२३।२६	१।३०	३।१३	४।४२
१२	६। ६	७।४३	९।३७	११।५०	१४।१०	१६।२७	१८।४५	२१। ४	२३।२३	१।२७	३।१०	४।३८
१३	६। ३	७।३९	९।३४	११।४७	१४। ६	१६।२४	१८।४१	२१। ०	२३।१९	१।२३	३। ६	४।३४
१४	५।५९	७।३५	९।३०	११।४३	१४। २	१६।२०	१८।३७	२०।५६	२३।१५	१।१९	३। २	४।३०
१५	५।५५	७।३२	९।२७	११।४०	१३।५९	१६।१७	१८।३४	२०।५३	२३।१२	१।१६	२।५९	४।२६
१६	५।५२	७।२८	९।२३	११।३६	१३।५५	१६।१३	१८।३०	२०।४९	२३। ८	१।१२	२।५५	४।२३
१७	५।४८	७।२४	९।१९	११।३२	१३।५१	१६। ९	१८।२६	२०।४५	२३। ४	१। ८	२।५१	४।१९
१८	५।४४	७।२०	९।१५	११।२८	१३।४७	१६। ५	१८।२२	२०।४१	२३। ०	१। ४	२।४७	४।१५
१९	५।४०	७।१६	९।११	११।२४	१३।४३	१६। १	१८।१८	२०।३७	२२।५६	१। ०	२।४३	४।११
२०	५।३६	७।१२	९। ७	११।२०	१३।३९	१५।५७	१८।१४	२०।३३	२२।५२	०।५६	२।३९	४। ७
२१	५।३२	७। ७	९। ३	११।१६	१३।३५	१५।५३	१८।१०	२०।२९	२२।४८	०।५२	२।३५	४। ३
२२	५।२७	७। ३	८।५८	११।११	१३।३०	१५।४८	१८। ५	२०।२४	२२।४३	०।४७	२।३०	३।५८
२३	५।२३	६।५९	८।५४	११। ७	१३।२६	१५।४४	१८। १	२०।२०	२२।३९	०।४३	२।२६	३।५४
२४	५।१९	६।५५	८।५०	११। ३	१३।२२	१५।४०	१७।५७	२०।१६	२२।३५	०।३९	२।२२	३।५०
२५	५।१५	६।५१	८।४६	१०।५९	१३।१८	१५।३६	१७।५३	२०।१२	२२।३१	०।३५	२।१८	३।४६
२६	५।११	६।४७	८।४२	१०।५५	१३।१४	१५।३२	१७।४९	२०। ८	२२।२७	०।३१	२।१४	३।४२
२७	५। ६	६।४३	८।३७	१०।५०	१३।१०	१५।२८	१७।४५	२०। ४	२२।२२	०।२६	२। ९	३।३७
२८	५। २	६।३८	८।३३	१०।४६	१३। ६	१५।२४	१७।४१	२०। ०	२२।१८	०।२२	२। ५	३।३३
२९	४।५८	६।३४	८।२९	१०।४२	१३। २	१५।२०	१७।३७	१९।५६	२२।१४	०।१८	२। १	३।२९
३०	४।५५	६।३१	८।२६	१०।३९	१२।५९	१५।१७	१७।३४	१९।५३	२२।११	०।१५	१।५८	३।२६

मई की दैनिक लग्न सारणी स्टेण्डर्ड रेल्वे टाइम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१	६।२६	८।२१	१०।३३	१२।५३	१५।११	१७।२८	१९।४८	२२। ६	०। ९	१।५३	३।२२	४।४६
२	६।२२	८।१७	१०।२९	१२।४९	१५। ७	१७।२४	१९।४४	२२। २	०। ५	१।४९	३।१८	४।४२
३	६।१८	८।१३	१०।२५	१२।४५	१५। ३	१७।२०	१९।४०	२१।५८	०। १	१।४५	३।१४	४।३८
४	६।१५	८।१०	१०।२२	१२।४१	१५। ०	१७।१७	१९।३७	२१।५५	२३।५८	१।४२	३।११	४।३५
५	६।११	८। ६	१०।१८	१२।३७	१४।५६	१७।१३	१९।३३	२१।५१	२३।५४	१।३७	३। ७	४।३१
६	६। ७	८। २	१०।१४	१२।३३	१४।५२	१७। ९	१९।२९	२१।४७	२३।५०	१।३४	३। ३	४।२७
७	६। ३	७।५७	१०।१०	१२।२९	१४।४८	१७। ५	१९।२५	२१।४३	२३।४५	१।३०	२।५९	४।२३
८	५।५८	७।५४	१०। ६	१२।२५	१४।४४	१७। १	१९।२१	२१।३९	२३।४२	१।२६	२।५५	४।१९
९	५।५४	७।५०	१०। २	१२।२१	१४।४०	१६।५७	१९।१७	२१।३५	२३।३७	१।२२	२।५१	४।१४
१०	५।५०	७।४६	९।५७	१२।१७	१४।३६	१६।५३	१९।१३	२१।३१	२३।३४	१।१८	२।४७	४।१०
११	५।४५	७।४१	९।५३	१२।१३	१४।३१	१६।४८	१९। ८	२१।२६	२३।२९	१।१३	२।४२	४। ५
१२	५।४१	७।३७	९।४९	१२। ९	१४।२७	१६।४४	१९। ४	२१।२२	२३।२५	१। ९	२।३८	४। १
१३	५।३८	७।३४	९।४६	१२। ५	१४।२४	१६।४१	१९। १	२१।१९	२३।२२	१। ६	२।३५	३।५०
१४	५।३४	७।३०	९।४२	१२। १	१४।२०	१६।३७	१८।५७	२१।१५	२३।१८	१। २	२।३१	३।५४
१५	५।३१	७।२६	९।३७	११।५७	१४।१६	१६।३३	१८।५३	२१।११	२३।१४	०।५७	२।२७	३।५१
१६	५।२७	७।२३	९।३५	११।५४	१४।१३	१६।३०	१८।५०	२१। ८	२३।११	०।५५	२।२४	३।४८
१७	५।२५	७।२०	९।३२	११।५०	१४।१०	१६।२७	१८।४७	२१। ५	२३। ८	०।५२	२।२१	३।४५
१८	५।२१	७।१६	९।२८	११।४६	१४। ६	१६।२३	१८।४३	२१। १	२३। ४	०।४८	२।१७	३।४१
१९	५।१७	७।१३	९।२५	११।४३	१४। ३	१६।२०	१८।४०	२०।५८	२३। १	०।४५	२।१४	३।३८
२०	५।१४	७। ९	९।२१	११।४०	१३।५९	१६।१६	१८।३६	२०।५४	२२।५७	०।४१	२।१०	३।३४
२१	५।१०	७। ५	९।१७	११।३६	१३।५५	१६।१२	१८।३२	२०।५०	२२।५३	०।३७	२। ६	३।३०
२२	५। ६	७। १	९।१३	११।३३	१३।५१	१६। ८	१८।२८	२०।४६	२२।४९	०।३३	२। २	३।२५
२३	५। २	६।५७	९। ९	११।२९	१३।४७	१६। ४	१८।२४	२०।४२	२२।४५	०।२९	१।५८	३।२२
२४	४।५८	६।५३	९। ५	११।२५	१३।४३	१६। ०	१८।२०	२०।३८	२२।४१	०।२५	१।५४	३।१८
२५	४।५४	६।४९	९। १	११।२१	१३।३९	१५।५६	१८।१६	२०।३४	२२।३७	०।२१	१।५०	३।१४
२६	४।५०	६।४५	८।५७	११।१७	१३।३५	१५।५२	१८।१२	२०।३०	२२।३३	०।१७	१।४६	३।१०
२७	४।४६	६।४१	८।५३	११।१२	१३।३१	१५।४८	१८। ८	२०।२६	२२।२९	०।१३	१।४२	३। ६
२८	४।४२	६।३७	८।४९	११। ८	१३।२७	१५।४४	१८। ४	२०।२२	२२।२५	०। ९	१।३८	३। २
२९	४।३८	६।३३	८।४५	११। ३	१३।२३	१५।४०	१८। ०	२०।१७	२२।२१	०। ५	१।३४	२।५८
३०	४।३४	६।२९	८।४१	१०।५९	१३।१९	१५।३६	१७।५६	२०।१४	२२।१७	०। १	१।३०	२।५४
३१	४।२९	६।२४	८।३६	१०।५६	१३।१४	१५।३१	१७।५१	२०। ९	२२।१२	२३।५६	१।२५	२।४९

जून की दैनिक लग्न सारणी स्टेण्डर्ड रेल्वे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	६।१९	८।३१	१०।५१	१३। ९	१५।२६	१७।४६	२०। ४	२२। ८	२३।५२	१।२०	२।४५	४।२१
२	६।१५	८।२८	१०।४७	१३। ५	१५।२२	१७।४२	२०। ०	२२। ३	२३।४७	१।१५	२।४०	४।१६
३	६।११	८।२४	१०।४३	१३। १	१५।१८	१७।३८	१९।५६	२१।५९	२३।४३	१।११	२।३६	४।१२
४	६। ७	८।२०	१०।३९	१२।५७	१५।१४	१७।३४	१९।५२	२१।५५	२३।३९	१। ७	२।३२	४। ८
५	६। ३	८।१६	१०।३५	१२।५३	१५।१०	१७।३०	१९।४८	२१।५१	२३।३५	१। ३	२।२८	४। ४
६	५।५९	८।१२	१०।३१	१२।४९	१५। ६	१७।२६	१९।४४	२१।४७	२३।३१	०।५९	२।२४	४। ०
७	५।५५	८। ८	१०।२७	१२।४५	१५। २	१७।२२	१९।४०	२१।४३	२३।२७	०।५५	२।२०	३।५६
८	५।५२	८। ५	१०।२४	१२।४२	१४।५९	१७।१९	१९।३७	२१।४०	२३।२४	०।५२	२।१७	३।५३
९	५।४८	८। १	१०।२०	१२।३८	१४।५५	१७।१५	१९।३३	२१।३६	२३।२०	०।४८	२।१३	३।४९
१०	५।४४	७।५७	१०।१६	१२।३४	१४।५१	१७।११	१९।२९	२१।३२	२३।१६	०।४४	२। ९	३।४५
११	५।४०	७।५३	१०।१२	१२।३०	१४।४७	१७। ७	१९।२५	२१।२८	२३।१२	०।४०	२। ५	३।४१
१२	५।३६	७।४९	१०। ८	१२।२६	१४।४३	१७। ३	१९।२१	२१।२४	२३। ८	०।३६	२। १	३।३७
१३	५।३२	७।४५	१०। ४	१२।२२	१४।३९	१६।५९	१९।१७	२१।२०	२३। ४	०।३२	१।५७	३।३३
१४	५।२९	७।४२	१०। १	१२।१९	१४।३६	१६।५६	१९।१४	२१।१७	२३। १	०।२९	१।५४	३।३०
१५	५।२५	७।३८	९।५७	१२।१५	१४।३२	१६।५२	१९।१०	२१।१३	२२।५७	०।२५	१।५०	३।२६
१६	५।२१	७।३४	९।५३	१२।११	१४।२८	१६।४८	१९। ६	२१। ९	२२।५३	०।२१	१।४६	३।२२
१७	५।१७	७।३०	९।४९	१२। ७	१४।२४	१६।४४	१९। २	२१। ५	२२।४९	०।१७	१।४२	३।१८
१८	५।१३	७।२६	९।४५	१२। ३	१४।२१	१६।४०	१८।५८	२१। १	२२।४५	०।१३	१।३८	३।१४
१९	५।१०	७।२३	९।४२	१२। ०	१४।१८	१६।३७	१८।५५	२०।५७	२२।४२	०।१०	१।३५	३।११
२०	५। ६	७।१९	९।३८	११।५६	१४।१४	१६।३३	१८।५१	२०।५४	२२।३८	०। ६	१।३१	३। ७
२१	५। २	७।१५	९।३४	११।५२	१४।१०	१६।२९	१८।४७	२०।५०	२२।३४	०। २	१।२७	३। ३
२२	४।५८	७।११	९।३०	११।४८	१४। ६	१६।२५	१८।४३	२०।४६	२२।३०	२३।५८	१।२३	२।५९
२३	४।५४	७। ७	९।२६	११।४४	१४। २	१६।२१	१८।३९	२०।४२	२२।२६	२३।५४	१।१९	२।५५
२४	४।५०	७। ३	९।२२	११।४०	१३।५८	१६।१७	१८।३५	२०।३८	२२।२२	२३।५०	१।१५	२।५१
२५	४।४७	७। ०	९।१९	११।३७	१३।५५	१६।१४	१८।३२	२०।३५	२२।१९	२३।४७	१।१२	२।४८
२६	४।४३	६।५६	९।१५	११।३३	१३।५१	१६।१०	१८।२८	२०।३१	२२।१५	२३।४३	१। ८	२।४४
२७	४।३९	६।५२	९।११	११।२९	१३।४७	१६। ६	१८।२४	२०।२७	२२।११	२३।३९	१। ४	२।४०
२८	४।३५	६।४८	९। ७	११।२५	१३।४३	१६। २	१८।२०	२०।२३	२२। ७	२३।३५	१। ०	२।३६
२९	४।३१	६।४४	९। ३	११।२१	१३।३९	१५।५८	१८।१६	२०।१९	२२। ३	२३।३१	०।५५	२।३२
३०	४।२७	६।४०	८।५९	११।१७	१३।३५	१५।५४	१८।१२	२०।१५	२१।५९	२३।२७	०।५२	२।२८

जुलाई की दैनिक लग्न सारणी स्टेण्डर्ड रेल्वे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ
१	६।३६	८।५६	११।१३	१३।३१	१५।५१	१८। ८	२०।१२	२१।५५	२३।२४	०।४९	२।२४	४।१९
२	६।३२	८।५२	११। ९	१३।२७	१५।४७	१८। ४	२०। ८	२१।५१	२३।२०	०।४५	२।२०	४।१५
३	६।२८	८।४८	११। ५	१३।२३	१५।४३	१८। ०	२०। ४	२१।४७	२३।१६	०।४१	२।१६	४।११
४	६।२४	८।४४	११। १	१३।१९	१५।३९	१७।५६	२०। १	२१।४३	२३।१२	०।३७	२।१२	४। ७
५	६।२०	८।४०	१०।५७	१३।१५	१५।३५	१७।५२	१९।५७	२१।३९	२३। ८	०।३३	२। ८	४। ३
६	६।१६	८।३६	१०।५३	१३।११	१५।३१	१७।४८	१९।५३	२१।३५	२३। ४	०।२९	२। ४	३।५९
७	६।१२	८।३२	१०।४९	१३। ७	१५।२७	१७।४४	१९।४९	२१।३१	२३। ०	०।२५	२। ०	३।५५
८	६। ८	८।२८	१०।४५	१३। ३	१५।२३	१७।४०	१९।४५	२१।२७	२२।५६	०।२१	१।५६	३।५१
९	६। ४	८।२४	१०।४१	१२।५९	१५।१९	१७।३६	१९।४१	२१।२३	२२।५२	०।१७	१।५२	३।४७
१०	६। ०	८।२०	१०।३७	१२।५५	१५।१५	१७।३२	१९।३७	२१।१९	२२।४८	०।१३	१।४८	३।४३
११	५।५७	८।१७	१०।३४	१२।५२	१५।१२	१७।२९	१९।३४	२१।१६	२२।४५	०।१०	१।४५	३।४०
१२	५।५३	८।१३	१०।३०	१२।४८	१५। ८	१७।२५	१९।३०	२१।११	२२।४१	०। ६	१।४१	३।३६
१३	५।४९	८। ९	१०।२६	१२।४४	१५। ४	१७।२१	१९।२६	२१। ८	२२।३७	०। २	१।३७	३।३२
१४	५।४५	८। ५	१०।२२	१२।४०	१५। ०	१७।१७	१९।२२	२१। ४	२२।३३	२३।५८	१।३३	३।२८
१५	५।४१	८। १	१०।१८	१२।३६	१४।५६	१७।१३	१९।१८	२१। ०	२२।२९	२३।५४	१।२९	३।२४
१६	५।३७	७।५७	१०।१४	१२।३२	१४।५२	१७। ९	१९।१४	२०।५६	२२।२५	२३।५०	१।२५	३।२०
१७	५।३३	७।५३	१०।१०	१२।२८	१४।४८	१७। ५	१९।१०	२०।५१	२२।२१	२३।४६	१।२१	३।१६
१८	५।२९	७।४९	१०। ६	१२।२४	१४।४४	१७। १	१९। ६	२०।४८	२२।१७	२३।४२	१।१७	३।१२
१९	५।२५	७।४५	१०। २	१२।२०	१४।४०	१६।५७	१९। २	२०।४४	२२।१३	२३।३८	१।१३	३। ८
२०	५।२१	७।४१	९।५८	१२।१६	१४।३६	१६।५३	१८।५८	२०।४०	२२। ९	२३।३४	१। ९	३। ४
२१	५।१७	७।३७	९।५४	१२।१२	१४।३२	१६।४९	१८।५४	२०।३६	२२। ५	२३।३०	१। ५	३। ०
२२	५।१३	७।३३	९।५०	१२। ८	१४।२८	१६।४५	१८।५०	२०।३२	२२। १	२३।२६	१। १	२।५४
२३	५।१०	७।३०	९।४७	१२। ५	१४।२५	१६।४२	१८।४७	२०।२९	२१।५८	२३।२३	०।५८	२।५१
२४	५। ६	७।२६	९।४४	१२। १	१४।२१	१६।३८	१८।४३	२०।२५	२१।५४	२३।१९	०।५४	२।४७
२५	५। २	७।२२	९।४०	११।५७	१४।१७	१६।३४	१८।३९	२०।२१	२१।५०	२३।१५	०।५०	२।४३
२६	४।५८	७।१८	९।३६	११।५३	१४।१३	१६।३०	१८।३५	२०।१७	२१।४६	२३।११	०।४६	२।३९
२७	४।५४	७।१४	९।३२	११।४९	१४। ९	१६।२६	१८।३१	२०।१३	२१।४२	२३। ७	०।४२	२।३५
२८	४।५०	७।१०	९।२८	११।४५	१४। ५	१६।२२	१८।२७	२०। ९	२१।३८	२३। ३	०।३८	२।३१
२९	४।४६	७। ६	९।२४	११।४१	१४। १	१६।१८	१८।२३	२०। ५	२१।३४	२२।५९	०।३४	२।२७
३०	४।४२	७। २	९।२०	११।३७	१३।५७	१६।१४	१८।१९	२०। १	२१।३०	२२।५५	०।३०	२।२३
३१	४।३९	६।५९	९।१७	११।३४	१३।५४	१६।११	१८।१६	१९।५८	२१।२७	२२।५२	०।२७	२।२०

अगस्त की दैनिक लग्नसारणी स्टेण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन
१	६।५५	९।१३	११।३१	१३।५०	१६। ८	१८।११	१९।५५	२१।२३	२२।४८	०।२४	२।१८	४।३१
२	६।५१	९। ९	११।२७	१३।४६	१६। ४	१८। ७	१९।५१	२१।१९	२२।४४	०।२०	२।१४	४।२७
३	६।४७	९। ५	११।२३	१३।४२	१६। ०	१८। ३	१९।४७	२१।१५	२२।४०	०।१६	२।१०	४।२३
४	६।४३	९। १	११।१९	१३।३७	१५।५६	१७।५९	१९।४३	२१।११	२२।३६	०।१२	२। ६	४।१९
५	६।३९	८।५७	११।१५	१३।३४	१५।५२	१७।५५	१९।३९	२१। ७	२२।३२	०। ८	२। २	४।१५
६	६।३५	८।५३	११।११	१३।३०	१५।४८	१७।५१	१९।३५	२१। ३	२२।२८	०। ४	१।५८	४।११
७	६।३१	८।४९	११। ७	१३।२६	१५।४४	१७।४७	१९।३१	२०।५९	२२।२४	०। ०	१।५४	४। ७
८	६।२८	८।४६	११। ४	१३।२३	१५।४१	१७।४४	१९।२८	२०।५६	२२।२१	२३।५७	१।५१	४। ४
९	६।२४	८।४२	११। ०	१३।१९	१५।३७	१७।४०	१९।२४	२०।५२	२२।१७	२३।५३	१।४७	४। ०
१०	६।२०	८।३८	१०।५६	१३।१५	१५।३३	१७।३६	१९।२०	२०।४८	२२।१३	२३।४९	१।४३	३।५६
११	६।१६	८।३४	१०।५२	१३।११	१५।२९	१७।३२	१९।१६	२०।४४	२२। ९	२३।४५	१।३९	३।५२
१२	६।१२	८।३०	१०।४८	१३। ७	१५।२५	१७।२८	१९।१२	२०।४०	२२। ५	२३।४१	१।३५	३।४८
१३	६। ८	८।२६	१०।४४	१३। ३	१५।२१	१७।२४	१९। ८	२०।३६	२२। १	२३।३७	१।३१	३।४४
१४	६। ४	८।२२	१०।४०	१२।५९	१५।१७	१७।२०	१९। ४	२०।३२	२१।५७	२३।३३	१।२७	३।४०
१५	६। ०	८।१८	१०।३६	१२।५५	१५।१३	१७।१६	१९। ०	२०।२८	२१।५३	२३।२९	१।२३	३।३६
१६	५।५५	८।१३	१०।३१	१२।५०	१५। ८	१७।११	१८।५५	२०।२३	२१।४८	२३।२४	१।१८	३।३२
१७	५।५१	८। ९	१०।२७	१२।४६	१५। ४	१७। ७	१८।५१	२०।१९	२१।४४	२३।२०	१।१४	३।२७
१८	५।४७	८। ५	१०।२३	१२।४२	१५। ०	१७। ३	१८।४७	२०।१५	२१।४०	२३।१६	१।१०	३।२३
१९	५।४३	८। १	१०।१९	१२।३८	१४।५६	१६।५९	१८।४३	२०।११	२१।३६	२३।१२	१। ६	३।१९
२०	५।३९	७।५७	१०।१५	१२।३४	१४।५२	१६।५५	१८।३९	२०। ७	२१।३२	२३। ८	१। २	३।१५
२१	५।३५	७।५३	१०।११	१२।३०	१४।४८	१६।५१	१८।३५	२०। ३	२१।२८	२३। ४	०।५८	३।११
२२	५।३१	७।४९	१०। ७	१२।२६	१४।४४	१६।४७	१८।३१	१९।५९	२१।२४	२३। ०	०।५४	३। ७
२३	५।२७	७।४५	१०। ३	१२।२२	१४।४०	१६।४३	१८।२७	१९।५५	२१।२०	२२।५६	०।५०	३। ३
२४	५।२३	७।४१	९।५९	१२।१८	१४।३६	१६।३९	१८।२३	१९।५१	२१।१६	२२।५२	०।४६	२।५९
२५	५।१९	७।३७	९।५५	१२।१४	१४।३२	१६।३५	१८।१९	१९।४७	२१।१२	२२।४८	०।४२	२।५५
२६	५।१६	७।३४	९।५२	१२।११	१४।२९	१६।३२	१८।१६	१९।४४	२१। ९	२२।४५	०।३९	२।५२
२७	५।१२	७।३०	९।४८	१२। ७	१४।२५	१६।२८	१८।१२	१९।४०	२१। ५	२२।४१	०।३५	२।४८
२८	५। ८	७।२६	९।४४	१२। ३	१४।२१	१६।२४	१८। ८	१९।३६	२१। १	२२।३७	०।३१	२।४४
२९	५। ४	७।२२	९।४०	११।५९	१४।१७	१६।२०	१८। ४	१९।३२	२०।५७	२२।३३	०।२७	२।४०
३०	५। १	७।१९	९।३७	११।५६	१४।१४	१६।१७	१८। १	१९।२९	२०।५४	२२।३०	०।२४	२।३७
३१	४।५८	७।१६	९।३४	११।५३	१४।११	१६।१४	१७।५८	१९।२६	२०।५१	२२।२७	०।२१	२।३४

सितम्बर की दैनिक लग्नसारणी स्टेण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क
१	७।१२	९।३०	११।५०	१४। ७	१६।११	१७।५४	१९।२३	२०।४८	२२।२३	०।१८	२।३०	४।५०
२	७। ८	९।२६	११।४६	१४। ३	१६। ७	१७।५०	१९।१९	२०।४४	२२।१९	०।१४	२।२६	४।४६
३	७। ४	९।२२	११।४२	१३।५९	१६। ३	१७।४६	१९।१५	२०।४०	२२।१५	०।१०	२।२२	४।४२
४	७। ०	९।१८	११।३८	१३।५५	१५।५९	१७।४२	१९।११	२०।३६	२२।११	०। ६	२।१८	४।३८
५	६।५६	९।१४	११।३४	१३।५१	१५।५५	१७।३८	१९। ७	२०।३२	२२। ७	०। २	२।१४	४।३४
६	६।५२	९।१०	११।३०	१३।४७	१५।५१	१७।३४	१९। ३	२०।२८	२२। ३	२३।५८	२।१०	४।३०
७	६।४८	९। ६	११।२६	१३।४३	१५।४७	१७।३०	१८।५९	२०।२४	२१।५९	२३।५४	२। ६	४।२६
८	६।४४	९। २	११।२२	१३।३९	१५।४३	१७।२६	१८।५५	२०।२०	२१।५५	२३।५०	२। २	४।२२
९	६।४०	८।५८	११।१८	१३।३५	१५।३९	१७।२२	१८।५१	२०।१६	२१।५१	२३।४६	१।५८	४।१८
१०	६।३६	८।५४	११।१४	१३।३१	१५।३५	१७।१८	१८।४७	२०।१२	२१।४७	२३।४२	१।५४	४।१४
११	६।३२	८।५०	११।१०	१३।२७	१५।३१	१७।१४	१८।४३	२०। ८	२१।४३	२३।३७	१।५०	४।१०
१२	६।२८	८।४६	११। ६	१३।२३	१५।२७	१७।१०	१८।३९	२०। ४	२१।३९	२३।३४	१।४६	४। ६
१३	६।२४	८।४२	११। २	१३।१९	१५।२३	१७। ६	१८।३५	२०। ०	२१।३५	२३।३०	१।४२	४। २
१४	६।२०	८।३८	१०।५८	१३।१५	१५।१९	१७। २	१८।३१	१९।५६	२१।३१	२३।२६	१।३८	३।५८
१५	६।१६	८।३४	१०।५४	१३।११	१५।१५	१६।५८	१८।२७	१९।५२	२१।२७	२३।२२	१।३४	३।५४
१६	६।११	८।२९	१०।४९	१३। ६	१५।१०	१६।५३	१८।२२	१९।४७	२१।२२	२३।१७	१।२९	३।५०
१७	६। ७	८।२५	१०।४५	१३। २	१५। ६	१६।४९	१८।१८	१९।४३	२१।१८	२३।१३	१।२५	३।४६
१८	६। ३	८।२१	१०।४१	१२।५८	१५। २	१६।४५	१८।१४	१९।३९	२१।१४	२३। ९	१।२१	३।४१
१९	५।५९	८।१७	१०।३७	१२।५४	१४।५८	१६।४१	१८।१०	१९।३५	२१।१०	२३। ५	१।१७	३।३७
२०	५।५५	८।१३	१०।३३	१२।५०	१४।५४	१६।३७	१८। ४	१९।३१	२१। ६	२३। १	१।१३	३।३३
२१	५।५१	८। ९	१०।२९	१२।४६	१४।५०	१६।३३	१८। ०	१९।२७	२१। २	२२।५७	१। ९	३।२९
२२	५।४७	८। ५	१०।२५	१२।४२	१४।४६	१६।२९	१७।५६	१९।२३	२०।५८	२२।५३	१। ५	३।२५
२३	५।४३	८। १	१०।२१	१२।३८	१४।४२	१६।२५	१७।५२	१९।१९	२०।५४	२२।४९	१। १	३।२१
२४	५।३९	७।५७	१०।१७	१२।३४	१४।३८	१६।२१	१७।४८	१९।१५	२०।५०	२२।४५	०।५७	३।१७
२५	५।३५	७।५३	१०।१३	१२।३०	१४।३४	१६।१७	१७।४४	१९।११	२०।४६	२२।४१	०।५३	३।१३
२६	५।३१	७।४९	१०। ९	१२।२६	१४।३०	१६।१३	१७।४०	१९। ७	२०।४२	२२।३७	०।४९	३। ९
२७	५।२७	७।४५	१०। ५	१२।२२	१४।२६	१६। ९	१७।३६	१९। ३	२०।३८	२२।३३	०।४५	३। ५
२८	५।२३	७।४१	१०। १	१२।१८	१४।२२	१६। ५	१७।३२	१८।५९	२०।३४	२२।२९	०।४१	३। १
२९	५।१९	७।३७	९।५७	१२।१४	१४।१८	१६। १	१७।२८	१८।५५	२०।३०	२२।२५	०।३७	२।५७
३०	५।१४	७।३४	९।५४	१२।११	१४।१५	१५।५८	१७।२५	१८।५२	२०।२७	२२।२२	०।३३	२।५४

अक्तूबर की दैनिक लग्नसारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह
१	७।३०	९।५०	१२। ७	१४।११	१५।५४	१७।२१	१८।४८	२०।२३	२२।१८	०।३०	२।५०	५। ८
२	७।२६	९।४६	१२। ३	१४। ७	१५।५०	१७।१७	१८।४४	२०।१९	२२।१४	०।२६	२।४६	५। ४
३	७।२२	९।४२	११।५९	१४। ३	१५।४६	१७।१३	१८।४०	२०।१५	२२।१०	०।२२	२।४२	५। ०
४	७।१८	९।३८	११।५५	१३।५९	१५।४२	१७। ९	१८।३६	२०।११	२२। ६	०।१८	२।३८	४।५६
५	७।१४	९।३४	११।५१	१३।५५	१५।३८	१७। ५	१८।३२	२०। ७	२२। २	०।१४	२।३४	४।५२
६	७।१०	९।३०	११।४७	१३।५१	१५।३४	१७। १	१८।२८	२०। ३	२१।५८	०।१०	२।३०	४।४८
७	७। ६	९।२६	११।४३	१३।४७	१५।३०	१६।५७	१८।२४	१९।५९	२१।५४	०। ६	२।२६	४।४४
८	७। २	९।२२	११।३९	१३।४३	१५।२६	१६।५३	१८।२०	१९।५५	२१।५०	०। २	२।२२	४।४०
९	६।५८	९।१८	११।३५	१३।३९	१५।२२	१६।४९	१८।१६	१९।५१	२१।४६	२३।५८	२।१८	४।३६
१०	६।५३	९।१३	११।३०	१३।३४	१५।१७	१६।४४	१८।११	१९।४६	२१।४१	२३।५३	२।१३	४।३१
११	६।४९	९। ९	११।२६	१३।३०	१५।१३	१६।४०	१८। ७	१९।४२	२१।३७	२३।४९	२। ९	४।२७
१२	६।४५	९। ५	११।२२	१३।२६	१५। ९	१६।३६	१८। ३	१९।३८	२१।३३	२३।४५	२। ५	४।२३
१३	६।४१	९। १	११।१८	१३।२२	१५। ५	१६।३२	१७।५९	१९।३४	२१।२९	२३।४१	२। १	४।१९
१४	६।३८	८।५८	११।१५	१३।१९	१५। २	१६।२९	१७।५६	१९।३१	२१।२६	२३।३८	१।५८	४।१६
१५	६।३४	८।५४	११।११	१३।१५	१४।५८	१६।२५	१७।५२	१९।२७	२१।२२	२३।३४	१।५४	४।१२
१६	६।३०	८।५०	११। ७	१३।११	१४।५४	१६।२१	१७।४८	१९।२३	२१।१८	२३।३०	१।५०	४। ८
१७	६।२५	८।४५	११। २	१३। ६	१४।४९	१६।१६	१७।४३	१९।१८	२१।१३	२३।२५	१।४५	४। ३
१८	६।२१	८।४१	१०।५८	१३। २	१४।४५	१६।१२	१७।३९	१९।१४	२१। ९	२३।२१	१।४१	३।५९
१९	६।१७	८।३७	१०।५४	१२।५८	१४।४१	१६। ८	१७।३५	१९।१०	२१। ५	२३।१७	१।३७	३।५५
२०	६।१३	८।३३	१०।५०	१२।५४	१४।३७	१६। ४	१७।३१	१९। ६	२१। १	२३।१३	१।३३	३।५१
२१	६। ९	८।२९	१०।४६	१२।५०	१४।३३	१६। ०	१७।२७	१९। २	२०।५७	२३। ९	१।२९	३।४७
२२	६। ५	८।२५	१०।४२	१२।४६	१४।२९	१५।५६	१७।२३	१८।५८	२०।५३	२३। ५	१।२५	३।४३
२३	६। १	८।२१	१०।३८	१२।४२	१४।२५	१५।५२	१७।१९	१८।५४	२०।४९	२३। १	१।२१	३।३९
२४	५।५७	८।१७	१०।३४	१२।३८	१४।२१	१५।४८	१७।१५	१८।५०	२०।४५	२२।५७	१।१७	३।३५
२५	५।५३	८।१३	१०।३०	१२।३४	१४।१७	१५।४४	१७।११	१८।४६	२०।४१	२२।५३	१।१३	३।३१
२६	५।५०	८।१०	१०।२७	१२।३१	१४।१४	१५।४१	१७। ८	१८।४३	२०।३८	२२।५०	१।१०	३।२८
२७	५।४६	८। ६	१०।२३	१२।२७	१४।१०	१५।३७	१७। ४	१८।३९	२०।३४	२२।४६	१। ६	३।२४
२८	५।४२	८। २	१०।१९	१२।२३	१४। ६	१५।३३	१७। ०	१८।३५	२०।३०	२२।४२	१। २	३।२०
२९	५।३८	७।५८	१०।१५	१२।१९	१४। २	१५।२९	१६।५६	१८।३१	२०।२६	२२।३८	०।५८	३।१
३०	५।३४	७।५४	१०।११	१२।१५	१३।५८	१५।२५	१६।५२	१८।२७	२०।२२	२२।३४	०।५४	३।१२
३१	५।३०	७।५०	१०। ७	१२।११	१३।५४	१५।२१	१६।४८	१८।२३	२०।१७	२२।३०	०।५०	३। ७

नवम्बर की दैनिक लग्नसारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	७।४५	१०। ३	१२। ७	१३।५०	१५।१९	१६।४३	१८।१९	२०।१४	२२।२६	०।४६	३। ३	५।२१
२	७।४१	९।५९	१२। ३	१३।४६	१५।१५	१६।३९	१८।१५	२०।१०	२२।२२	०।४२	२।५९	५।१७
३	७।३७	९।५५	११।५९	१३।४२	१५।११	१६।३५	१८।११	२०। ६	२२।१८	०।३८	२।५५	५।१३
४	७।३३	९।५१	११।५५	१३।३८	१५। ७	१६।३१	१८। ७	२०। २	२२।१४	०।३४	२।५१	५। ८
५	७।२९	९।४७	११।५१	१३।३४	१५। ३	१६।२७	१८। ३	१९।५८	२२।१०	०।३०	२।४७	५। ५
६	७।२५	९।४३	११।४७	१३।३०	१४।५९	१६।२३	१७।५९	१९।५४	२२। ६	०।२६	२।४३	५। १
७	७।२१	९।३९	११।४३	१३।२६	१४।५५	१६।१९	१७।५५	१९।५०	२२। २	०।२२	२।३९	४।५७
८	७।१८	९।३६	११।४०	१३।२३	१४।५२	१६।१६	१७।५२	१९।४७	२१।५९	०।१९	२।३६	४।५४
९	७।१४	९।३२	११।३६	१३।१९	१४।४८	१६।१२	१७।४८	१९।४३	२१।५५	०।१५	२।३२	४।५०
१०	७।१०	९।२८	११।३२	१३।१५	१४।४४	१६। ८	१७।४४	१९।३९	२१।५१	०।११	२।२८	४।४६
११	७। ६	९।२४	११।२८	१३।११	१४।४०	१६। ४	१७।४०	१९।३५	२१।४७	०। ७	२।२४	४।४२
१२	७। २	९।२०	११।२४	१३। ७	१४।३६	१६। ०	१७।३६	१९।३१	२१।४३	०। ३	२।२०	४।३८
१३	६।५८	९।१७	११।२०	१३। ३	१४।३२	१५।५६	१७।३२	१९।२७	२१।३९	२३।५९	२।१६	४।३४
१४	६।५४	९।१३	११।१६	१२।५९	१४।२८	१५।५२	१७।२८	१९।२३	२१।३५	२३।५५	२।१२	४।३०
१५	६।५०	९। ९	११।१२	१२।५५	१४।२४	१५।४८	१७।२४	१९।१९	२१।३१	२३।५१	२। ८	४।२६
१६	६।४७	९। ६	११। ९	१२।५२	१४।२१	१५।४५	१७।२१	१९।१६	२१।२८	२३।४८	२। ५	४।२३
१७	६।४३	९। २	११। ५	१२।४८	१४।१७	१५।४१	१७।१७	१९।१२	२१।२४	२३।४४	२। १	४।१९
१८	६।३९	८।५८	११। १	१२।४४	१४।१३	१५।३७	१७।१३	१९। ८	२१।२१	२३।४१	१।५७	४।१५
१९	६।३५	८।५४	१०।५७	१२।४०	१४। ९	१५।३३	१७। ९	१९। ४	२१।१७	२३।३७	१।५३	४।११
२०	६।३१	८।५०	१०।५३	१२।३६	१४। ५	१५।२९	१७। ५	१९। ०	२१।१३	२३।३३	१।४९	४। ७
२१	६।२७	८।४६	१०।४९	१२।३२	१४। १	१५।२५	१७। १	१८।५६	२१। ९	२३।२९	१।४५	४। ३
२२	६।२३	८।४२	१०।४५	१२।२८	१३।५७	१५।२१	१६।५७	१८।५२	२१। ५	२३।२५	१।४१	३।५९
२३	६।१९	८।३८	१०।४१	१२।२४	१३।५३	१५।१७	१६।५३	१८।४८	२१। १	२३।२१	१।३७	३।५५
२४	६।१५	८।३४	१०।३७	१२।२०	१३।४९	१५।१३	१६।४९	१८।४४	२०।५७	२३।१७	१।३३	३।५१
२५	६।११	८।३०	१०।३३	१२।१६	१३।४५	१५। ९	१६।४५	१८।४०	२०।५३	२३।१३	१।२९	३।४७
२६	६। ७	८।२६	१०।२९	१२।१२	१३।४१	१५। ५	१६।४१	१८।३६	२०।४९	२३। ९	१।२५	३।४३
२७	६। ३	८।२२	१०।२५	१२। ८	१३।३७	१५। १	१६।३७	१८।३२	२०।४५	२३। ५	१।२१	३।३९
२८	५।५९	८।१८	१०।२१	१२। ४	१३।३३	१४।५७	१६।३३	१८।२८	२०।४१	२३। १	१।१७	३।३५
२९	५।५५	८।१४	१०।१७	१२। ०	१३।२९	१४।५३	१६।२९	१८।२४	२०।३७	२२।५७	१।१३	३।३१
३०	५।५२	८।१०	१०।१४	११।५७	१३।२६	१४।५०	१६।२६	१८।२१	२०।३४	२२।५४	१।१०	३।२८

दिसम्बर की दैनिक लग्न सारणी स्टेण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्र्योत्तर घं० मि०

तारीख	वृश्चिक	धनु:	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	८। ५	१०। ९	११।५३	१३।२१	१४।४९	१६।२१	१८।१६	२०।२९	२२।४८	१। ६	३।२३	५।४३
२	८। १	१०। ५	११।४९	१३।१७	१४।४५	१६।१७	१८।१२	२०।२५	२२।४४	१। २	३।१९	५।३९
३	७।५७	१०। १	११।४५	१३।१३	१४।३८	१६।१३	१८। ८	२०।२१	२२।४०	०।५८	३।१५	५।३५
४	७।५३	९।५७	११।४१	१३। ९	१४।३४	१६। ९	१८। ४	२०।१७	२२।३६	०।५४	३।११	५।३१
५	७।४९	९।५३	११।३७	१३। ५	१४।३०	१६। ५	१८। ०	२०।१३	२२।३२	०।५०	३। ७	५।२७
६	७।४६	९।४९	११।३३	१३। १	१४।२६	१६। १	१७।५६	२०। ९	२२।२८	०।४६	३। ३	५।२३
७	७।४३	९।४६	११।३०	१२।५८	१४।२३	१५।५८	१७।५३	२०। ६	२२।२५	०।४३	३। ०	५।२०
८	७।३९	९।४३	११।२७	१२।५५	१४।२०	१५।५५	१७।५०	२०। ३	२२।२२	०।४०	२।५७	५।१७
९	७।३५	९।३९	११।२३	१२।५१	१४।१६	१५।५१	१७।४६	१९।५९	२२।१८	०।३६	२।५३	५।१३
१०	७।३१	९।३५	११।१९	१२।४७	१४।१२	१५।४७	१७।४२	१९।५५	२२।१४	०।३२	२।४९	५। ९
११	७।२७	९।३१	११।१५	१२।४३	१४। ८	१५।४३	१७।३८	१९।५१	२२।१०	०।२८	२।४५	५। ५
१२	७।२३	९।२७	११।११	१२।३९	१४। ४	१५।३९	१७।३४	१९।४७	२२। ६	०।२४	२।४१	५। १
१३	७।१९	९।२३	११। ७	१२।३५	१४। ०	१५।३५	१७।३०	१९।४३	२२। २	०।२०	२।३७	४।५७
१४	७।१५	९।१९	११। ३	१२।३१	१३।५६	१५।३१	१७।२७	१९।३९	२१।५८	०।१६	२।३३	४।५३
१५	७।१०	९।१४	१०।५८	१२।२६	१३।५१	१५।२६	१७।२१	१९।३४	२१।५३	०।११	२।२८	४।४८
१६	७। ६	९।१०	१०।५४	१२।२२	१३।४७	१५।२२	१७।१७	१९।३०	२१।४९	०। ७	२।२४	४।४४
१७	७। २	९। ६	१०।५०	१२।१८	१३।४३	१५।१८	१७।१३	१९।२६	२१।४३	०। ३	२।२०	४।४०
१८	६।५८	९। २	१०।४६	१२।१४	१३।३९	१५।१४	१७। ९	१९।२२	२१।४१	२३।५९	२।१६	४।३६
१९	६।५४	८।५८	१०।४२	१२।१०	१३।३५	१५।१०	१७। ५	१९।१८	२१।३७	२३।५५	२।१२	४।३२
२०	६।५०	८।५४	१०।३८	१२। ६	१३।३१	१५। ६	१७। १	१९।१४	२१।३३	२३।५१	२। ८	४।२८
२१	६।४६	८।५०	१०।३४	१२। २	१३।२७	१५। २	१६।५७	१९।१०	२१।२९	२३।४७	२। ४	४।२४
२२	६।४२	८।४६	१०।३०	११।५८	१३।२३	१४।५८	१६।५३	१९। ६	२१।२५	२३।४३	२। ०	४।२०
२३	६।३८	८।४२	१०।२६	११।५४	१३।१९	१४।५४	१६।४९	१९। २	२१।२१	२३।३९	१।५६	४।१६
२४	६।३५	८।३९	१०।२३	११।५१	१३।१६	१४।५१	१६।४६	१८।५९	२१।१८	२३।३६	१।५३	४।१३
२५	६।३१	८।३५	१०।१९	११।४७	१३।१२	१४।४७	१६।४२	१८।५५	२१।१४	२३।३२	१।४९	४। ९
२६	६।२८	८।३२	१०।१६	११।४४	१३। ९	१४।४४	१६।३९	१८।५२	२१।११	२३।२९	१।४६	४। ६
२७	६।२४	८।२८	१०।१२	११।४०	१३। ५	१४।४०	१६।३५	१८।४८	२१। ७	२३।२५	१।४२	४। २
२८	६।२०	८।२४	१०। ८	११।३६	१३। १	१४।३६	१६।३१	१८।४४	२१। ३	२३।२१	१।३८	३।५८
२९	६।१६	८।२०	१०। ४	११।३२	१२।५७	१४।३२	१६।२७	१८।४०	२०।५९	२३।१७	१।३४	३।५४
३०	६।१३	८।१७	१०। १	११।२९	१२।५४	१४।२९	१६।२४	१८।३७	२०।५६	२३।१४	१।३१	३।५१
३१	६। ९	८।१३	९।५७	११।२५	१२।५०	१४।२५	१६।२०	१८।३३	२०।५२	२३।१०	१।२७	३।४७

जनवरी की दैनिक लग्न सारणी स्टेण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्र्योत्तर घं० मि०

तारीख	धनु:	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
१	८। ९	९।५३	११।२१	१२।४६	१४।२२	१६।१६	१८।२९	२०।४९	२३। ६	१।२४	३।४३	[illegible]। १
२	८। ५	९।४९	११।१७	१२।४२	१४।१८	१६।१२	१८।२५	२०।४५	२३। २	१।२०	३।३९	५।५७
३	८। १	९।४५	११।१३	१२।३८	१४।१४	१६। ८	१८।२१	२०।४१	२२।५८	१।१६	३।३५	५।५३
४	७।५७	९।४१	११। ९	१२।३४	१४।१०	१६। ४	१८।१७	२०।३७	२२।५४	१।१२	३।३१	५।४९
५	७।५३	९।३७	११। ५	१२।३०	१४। ६	१६। ०	१८।१३	२०।३३	२२।५०	१। ८	३।२७	५।४५
६	७।४९	९।३३	११। १	१२।२६	१४। २	१५।५६	१८। ९	२०।२९	२२।४६	१। ४	३।२३	५।४१
७	७।४५	९।२९	१०।५७	१२।२२	१३।५८	१५।५२	१८। ५	२०।२५	२२।४२	१। ०	३।१९	५।३७
८	७।४२	९।२६	१०।५४	१२।१९	१३।५५	१५।४९	१८। २	२०।२२	२२।३९	०।५७	३।१६	५।३४
९	७।३७	९।२२	१०।५०	१२।१५	१३।५१	१५।४५	१७।५८	२०।१८	२२।३५	०।५३	३।१२	५।३०
१०	७।३४	९।१८	१०।४६	१२।११	१३।४७	१५।४१	१७।५४	२०।१४	२२।३१	०।४९	३। ८	५।२६
११	७।३१	९।१५	१०।४३	१२। ८	१३।४४	१५।३८	१७।५१	२०।११	२२।२८	०।४६	३। ५	५।२३
१२	७।२७	९।११	१०।३९	१२। ४	१३।४०	१५।३४	१७।४७	२०। ७	२२।२४	०।४२	३। १	५।१९
१३	७।२४	९। ८	१०।३६	१२। १	१३।३७	१५।३१	१७।४४	२०। ४	२२।२१	०।३९	२।५८	५।१६
१४	७।२०	९। ४	१०।३२	११।५७	१३।३३	१५।२७	१७।४०	२०। ०	२२।१७	०।३५	२।५४	५।१२
१५	७।१७	९। १	१०।२९	११।५४	१३।३०	१५।२४	१७।३७	१९।५७	२२।१४	०।३२	२।५१	५। ९
१६	७।१३	८।५७	१०।२५	११।५०	१३।२६	१५।२०	१७।३३	१९।५३	२२।१०	०।२८	२।४७	५। ५
१७	७। ९	८।५३	१०।२१	११।४६	१३।२२	१५।१६	१७।२९	१९।४९	२२। ६	०।२४	२।४३	५। १
१८	७। ४	८।४८	१०।१६	११।४१	१३।१७	१५।११	१७।२४	१९।४४	२२। १	०।१९	२।३८	४।५६
१९	७। ०	८।४४	१०।१२	११।३७	१३।१३	१५। ७	१७।२०	१९।४०	२१।५७	०।१५	२।३४	४।५२
२०	६।५६	८।४०	१०। ८	११।३३	१३। ९	१५। ३	१७।१६	१९।३६	२१।५३	०।११	२।३०	४।४८
२१	६।५२	८।३६	१०। ४	११।२९	१३। ५	१४।५९	१७।१२	१९।३२	२१।४९	०। ७	२।२६	४।४४
२२	६।४८	८।३२	१०। ०	११।२५	१३। १	१४।५५	१७। ८	१९।२८	२१।४४	०। ३	२।२२	४।४०
२३	६।४३	८।२७	९।५५	११।२०	१२।५६	१४।५०	१७। ३	१९।२३	२१।४०	२३।५८	२।१७	४।३५
२४	६।३९	८।२३	९।५१	११।१६	१२।५१	१४।४६	१६।५९	१९।१९	२१।३६	२३।५४	२।१३	४।३१
२५	६।३५	८।१९	९।४७	११।१२	१२।४८	१४।४२	१६।५५	१९।१५	२१।३२	२३।५०	२। ९	४।२७
२६	६।३१	८।१५	९।४३	११। ८	१२।४४	१४।३८	१६।५१	१९।११	२१।२८	२३।४६	२। ५	४।२३
२७	६।२७	८।११	९।३९	११। ४	१२।४०	१४।३४	१६।४७	१९। ७	२१।२४	२३।४२	२। १	४।१९
२८	६।२३	८। ७	९।३५	११। ०	१२।३६	१४।३०	१६।४३	१९। ३	२१।२०	२३।३८	१।५७	४।१५
२९	६।१९	८। ३	९।३१	१०।५६	१२।३२	१४।२६	१६।३९	१८।५९	२१।१६	२३।३४	१।५३	४।११
३०	६।१५	७।५९	९।२७	१०।५२	१२।२८	१४।२२	१६।३५	१८।५५	२१।११	२३।३०	१।४९	४। ७
३१	६।११	७।५५	९।२३	१०।४८	१२।२४	१४।१८	१६।३१	१८।५१	२१। ७	२३।२६	१।४५	४। ३

फरवरी की दैनिक लग्नसारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः
१	७।५०	९।१९	१०।४३	१२।१९	१४।१४	१६।२६	१८।४६	२१। ४	२३।२१	१।४१	३।५८	६। २
२	७।४६	९।१५	१०।३९	१२।१५	१४।१०	१६।२२	१८।४२	२१। ०	२३।१७	१।३७	३।५४	५।५८
३	७।४३	९।१२	१०।३६	१२।१२	१४। ७	१६।१९	१८।३९	२०।५७	२३।१४	१।३४	३।५१	५।५५
४	७।३९	९। ८	१०।३२	१२। ८	१४। ३	१६।१५	१८।३५	२०।५३	२३।१०	१।३०	३।४७	५।५१
५	७।३६	९। ५	१०।२९	१२। ५	१४। ०	१६।१२	१८।३२	२०।५०	२३। ७	१।२७	३।४४	५।४८
६	७।३२	९। १	१०।२५	१२। १	१३।५६	१६। ८	१८।२८	२०।४६	२३। ३	१।२३	३।४१	५।४४
७	७।२८	८।५७	१०।२१	११।५७	१३।५२	१६। ४	१८।२४	२०।४२	२२।५९	१।१९	३।३७	५।४०
८	७।२४	८।५३	१०।१७	११।५३	१३।४८	१६। ०	१८।२०	२०।३८	२२।५५	१।१५	३।३३	५।३६
९	७।२०	८।४९	१०।१३	११।४९	१३।४४	१५।५६	१८।१६	२०।३४	२२।५१	१।११	३।२९	५।३२
१०	७।१५	८।४४	१०। ८	११।४४	१३।३९	१५।५१	१८।११	२०।२९	२२।४६	१। ६	३।२४	५।२७
११	७।११	८।४०	१०। ४	११।४०	१३।३५	१५।४७	१८। ७	२०।२५	२२।४२	१। २	३।२०	५।२३
१२	७। ७	८।३६	१०। ०	११।३६	१३।३१	१५।४३	१८। ३	२०।२१	२२।३८	०।५८	३।१६	५।१९
१३	७। ३	८।३२	९।५६	११।३२	१३।२७	१५।३९	१७।५९	२०।१७	२२।३४	०।५४	३।१२	५।१५
१४	६।५९	८।२८	९।५२	११।२८	१३।२३	१५।३५	१७।५५	२०।१३	२२।३०	०।५०	३। ८	५।११
१५	६।५५	८।२४	९।४८	११।२४	१३।१९	१५।३१	१७।५१	२०। ९	२२।२६	०।४६	३। ४	५। ७
१६	६।५१	८।२०	९।४४	११।२०	१३।१५	१५।२७	१७।४७	२०। ५	२२।२२	०।४२	३। ०	५। ३
१७	६।४७	८।१६	९।४०	११।१६	१३।११	१५।२३	१७।४३	२०। १	२२।१८	०।३८	२।५६	४।५९
१८	६।४३	८।१२	९।३६	११।१२	१३। ७	१५।१९	१७।३९	१९।५७	२२।१४	०।३४	२।५२	४।५५
१९	६।३९	८। ८	९।३२	११। ८	१३। ३	१५।१५	१७।३५	१९।५३	२२।१०	०।३०	२।४८	४।५१
२०	६।३४	८। ३	९।२७	११। ३	१२।५८	१५।१०	१७।३०	१९।४८	२२। ५	०।२५	२।४३	४।४६
२१	६।३०	७।५९	९।२३	१०।५९	१२।५४	१५। ६	१७।२६	१९।४४	२२। १	०।२१	२।३९	४।४२
२२	६।२६	७।५५	९।१९	१०।५५	१२।५०	१५। २	१७।२२	१९।४०	२१।५७	०।१७	२।३५	४।३८
२३	६।२२	७।५१	९।१५	१०।५१	१२।४६	१४।५८	१७।१८	१९।३६	२१।५३	०।१३	२।३१	४।३४
२४	६।१८	७।४७	९।११	१०।४७	१२।४२	१४।५४	१७।१४	१९।३२	२१।४९	०। ९	२।२७	४।३०
२५	६।१४	७।४३	९। ७	१०।४३	१२।३८	१४।५०	१७।१०	१९।२८	२१।४५	०। ५	२।२३	४।२६
२६	६।११	७।४०	९। ४	१०।४०	१२।३५	१४।४७	१७। ७	१९।२५	२१।४२	०। २	२।२०	४।२३
२७	६। ७	७।३६	९। ०	१०।३६	१२।३१	१४।४३	१७। ३	१९।२१	२१।३८	२३।५८	२।१६	४।१९
२८	६। ३	७।३२	८।५६	१०।३२	१२।२७	१४।३९	१६।५९	१९।१७	२१।३४	२३।५४	२।१२	४।१५

यह लग्न का समाप्तिकाल है। प्रत्येक मास में दिये हुए स्टेण्डर्ड टाइम को ऊपर लिखी राशि का समाप्तिकाल ही समझें।

मार्च की दैनिक लग्नसारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर
१	७।२८	८।५३	१०।२८	१२।२३	१४।३६	१६।५५	१९।१३	२१।३०	२३।५०	२। ८	४।११	५।५५
२	७।२४	८।४९	१०।२४	१२।१९	१४।३२	१६।५१	१९। ९	२१।२६	२३।४६	२। ४	४। ७	५।५२
३	७।२०	८।४५	१०।२०	१२।१५	१४।२८	१६।४७	१९। ५	२१।२२	२३।४२	२। ०	४। ३	५।४७
४	७।१६	८।४१	१०।१६	१२।११	१४।२४	१६।४३	१९। १	२१।१८	२३।३८	१।५६	३।५९	५।४३
५	७।१३	८।३८	१०।१३	१२। ८	१४।२१	१६।४०	१८।५८	२१।१५	२३।३५	१।५३	३।५६	५।४०
६	७। ९	८।३४	१०। ९	१२। ४	१४।१७	१६।३६	१८।५४	२१।११	२३।३१	१।४९	३।५२	५।३६
७	७। ५	८।३०	१०। ५	१२। ०	१४।१३	१६।३२	१८।५०	२१। ७	२३।२७	१।४५	३।४८	५।३२
८	७। १	८।२६	१०। १	११।५६	१४। ९	१६।२८	१८।४६	२१। ३	२३।२३	१।४१	३।४४	५।२८
९	६।५७	८।२२	९।५७	११।५२	१४। ५	१६।२४	१८।४२	२०।५९	२३।१९	१।३७	३।४०	५।२४
१०	६।५२	८।१७	९।५२	११।४७	१४। ०	१६।१९	१८।३७	२०।५४	२३।१४	१।३२	३।३५	५।१९
११	६।४८	८।१३	९।४८	११।४३	१३।५६	१६।१५	१८।३३	२०।५०	२३।१०	१।२८	३।३१	५।१५
१२	६।४४	८। ९	९।४४	११।३९	१३।५२	१६।११	१८।२९	२०।४६	२३। ६	१।२४	३।२७	५।११
१३	६।४०	८। ५	९।४०	११।३५	१३।४८	१६। ७	१८।२५	२०।४२	२३। २	१।२०	३।२३	५। ७
१४	६।३६	८। १	९।३६	११।३१	१३।४४	१६। ३	१८।२१	२०।३८	२२।५८	१।१६	३।१९	५। ३
१५	६।३२	७।५७	९।३२	११।२७	१३।४०	१५।५९	१८।१७	२०।३४	२२।५४	१।१२	३।१५	४।५९
१६	६।२८	७।५३	९।२८	११।२३	१३।३६	१५।५५	१८।१३	२०।३०	२२।५०	१। ८	३।११	४।५५
१७	६।२४	७।४९	९।२४	११।१९	१३।३२	१५।५१	१८। ९	२०।२६	२२।४६	१। ४	३। ७	४।५१
१८	६।२०	७।४५	९।२०	११।१५	१३।२८	१५।४७	१८। ५	२०।२२	२२।४२	१। ०	३। ३	४।४७
१९	६।१६	७।४१	९।१६	११।११	१३।२४	१५।४३	१८। १	२०।१८	२२।३८	०।५६	२।५९	४।४३
२०	६।१२	७।३७	९।१२	११। ७	१३।२०	१५।३९	१७।५७	२०।१४	२२।३४	०।५२	२।५५	४।३९
२१	६। ८	७।३३	९। ८	११। ३	१३।१६	१५।३५	१७।५३	२०।१०	२२।३०	०।४८	२।५१	४।३५
२२	६। ४	७।२९	९। ४	१०।५९	१३।१२	१५।३१	१७।४९	२०। ६	२२।२६	०।४४	२।४७	४।३१
२३	६। ०	७।२५	९। ०	१०।५५	१३। ८	१५।२७	१७।४५	२०। २	२२।२२	०।४०	२।४३	४।२७
२४	५।५५	७।२१	८।५६	१०।५१	१३। ४	१५।२३	१७।४१	१९।५८	२२।१८	०।३६	२।३९	४।२३
२५	५।५२	७।१७	८।५२	१०।४७	१३। ०	१५।१९	१७।३७	१९।५४	२२।१४	०।३२	२।३५	४।१९
२६	५।४८	७।१३	८।४८	१०।४३	१२।५६	१५।१५	१७।३३	१९।५०	२२।१०	०।२८	२।३१	४।१५
२७	५।४४	७। ९	८।४४	१०।३९	१२।५२	१५।११	१७।२९	१९।४६	२२। ६	०।२४	२।२७	४।११
२८	५।४०	७। ५	८।४०	१०।३५	१२।४८	१५। ७	१७।२५	१९।४२	२२। २	०।२०	२।२३	४। ७
२९	५।३६	७। १	८।३६	१०।३१	१२।४४	१५। ३	१७।२१	१९।३८	२१।५८	०।१६	२।१९	४। ३
३०	५।३२	६।५७	८।३२	१०।२७	१२।४०	१४।५९	१७।१७	१९।३४	२१।५४	०।१२	२।१५	३।५९
३१	५।२८	६।५३	८।२८	१०।२३	१२।३६	१४।५५	१७।१३	१९।३०	२१।५०	०। ८	२।११	३।५५

अथ जन्म–समयादि विचार

सर्वशास्त्र- शिरोमणि ज्योतिःशास्त्र की महत्ता को सारा संसार जानता है, क्योंकि वह प्रत्यक्षफलदायक है, अतः प्राचीनकाल से लेकर आजतक इसका प्रभाव चलता आ रहा है। इसके बिना और कोई शास्त्र नहीं, जो कि तीनों काल (भूत, भविष्य, वर्तमान) की वर्ता को बतला सके और बेद के छः अंगों में से यह नेत्र स्थानीय है। जिसप्रकार सम्पूर्ण अंगों के सुन्दर तथा पुष्ट होने पर भी नेत्र बिहीन मनुष्य का जन्म व्यर्थ होता है, इसी प्रकार सम्पूर्ण शास्त्रों के पढ़ लेने पर भी ज्योतिःशास्त्र विहीन भूत, भविष्य को बतलाने में मूक सा रह जाता है। परन्तु खेद इस बात का है कि ऐसा होने पर भी आजकल फलादेश के पूरा न मिलने से लोगों की श्रद्धा बहुत घट गई है, इसमें कारण तो बहुत हैं, परन्तु दो चार यहां बतलाये जाते हैं— जब बालक का जन्म होता है उस समय गांववालों के पास कोई घड़ी आदि का सुप्रबन्ध न होने से वे लोग समय आदि को निश्चित रूप से नहीं बता सकते, यदि किसी ने सब प्रकार से अपना प्रबंध करके समय को निश्चित रूप से नोट किया भी हो तो वह घर में आने वाले पुरोहित या किसी ज्योतिःशास्त्र के अनभिज्ञ पंडित से कुण्डली बनवाकर रख लेते हैं और पंडितजी भी एक रुपये के लालच में फंसकर मनमाना लग्न बनाकर यजमान को दे देते हैं, जिसका परिणाम यह होता है कि भविष्य में उसका फल ठीक नहीं मिलता, परंतु कलंक का टीका ज्योतिःशास्त्र पर मढ़ा जाता है। क्योंकि लग्न के ठीक होने पर ही फलादेश ठीक मिल सकता है, वह फलादेश इष्ट पर निर्भर है, और वह इष्ट नोट किये हुए समय पर निर्भर है, अतः समय के नोट करने में सावधानी रखनी चाहिए और वह लग्न ठीक है कि नहीं, इसके निश्चय के लिए निम्नलिखित योगों पर विचार कर लेना चाहिएः—

तत्रादौ पितृपरोक्ष ज्ञान—बालक के जन्म के समय पिता घर में था कि नहीं ? इसका विचार इस प्रकार से करना चाहिए कि जन्मकुण्डली में लग्न को यदि चन्द्रमा नहीं देखता हो तो बालक के जन्म समय उसका पिता घर में नहीं था, ऐसा कहना। इसमें इतना विशेष है कि यदि सूर्य जन्मलग्न से अष्टम्, नवम्, एकादश तथा द्वादश स्थान में चरराशि का होकर पड़ा हो तो पिता बालक के जन्म समय दूसरे देश में था, इन्हीं स्थानों में सूर्य स्थिर राशि का हो और चन्द्रमा लग्न को न देखे तो पिता अपने देश में ही था, परन्तु घर में नहीं था। इसी प्रकार सूर्य के द्विस्वभाव राशि में होने पर मार्ग में कहें, परन्तु इन सब योगों में लग्न को चन्द्रमा न देखता हो तो ऐसा कहना। यदि चन्द्रमा देखता हो तो पिता घर में ही था ऐसा जानना चाहिए।

जन्म समय शनि लग्न में हो अथवा मंगल सातवें स्थान में पड़ा हो अथवा इसी प्रकार बुध और शुक्र में से एक तो चन्द्रमा से द्वादश स्थान में और दूसरा द्वितीय स्थान में पड़ा हो तो भी पिता के परोक्ष में बालक का जन्म जानना, परन्तु यहाँ चन्द्रमा का बुध शुक्र के बीच में होना अंशों के योग से भी जान लेना, जैसे बुध के स्पष्ट पांच अंश हों चन्द्रमा के दश अंश हों शुक्र के पन्द्रह अंश हों और तीनों एक ही राशि में बैठे हों तो भी पूर्वोक्त योग जानना चाहिए।

चिन्हज्ञानः—जिसके जन्म समय १।५।६।९ इन स्थानों में सूर्य हो उसकी भुजा में कोई चिन्ह होगा, यदि लग्न में सूर्य तथा शनि हो, दूसरे मंगल हो और [illegible]

बालक की छः अंगुलियाँ होती हैं। चिन्ह विचार करते समय इतना पहले विचार कर लेना कि योगकर्त्ता ग्रह कौन है ? उसमें यदि सूर्य हो तो शिर में, चन्द्रमा के होने से मुख में, मंगल गले में, बुध छाती में, गुरु नाभि में, शुक्र पीठ या जांघ में, शनि राहु तथा केतु इनके योग से पेट, होठ या दाँतों पर चिन्ह जानना। विशेष विचार - सातवें घर में गुरु या लग्न में राहु के साथ गुरु हो, आठवें घर पापग्रह हों या लग्न में शुक्र और आठवें पापग्रह के होने से बाँई भुजा पर चिन्ह होता है। लग्न में शुक्र और सातवें राहु होवे तो माथे में या बाएँ कान में चिन्ह होवे। लग्न से ३।६।११ इन स्थानों में मंगल या बारहवें घर में मंगल शुक्र एक साथ हों तो बाएँ बगल का और तिल का चिन्ह होवे। लग्न में मंगल हो, ५।६ स्थान में शनि हो, इसको शुक्र देखे तो गुदा (मलद्वार) या लिङ्ग के समीप तिल का चिन्ह होगा। लग्न से ५।६ स्थान में शनि हो, इसको ८ वें बुध, गुरु लब्ध में या चौथे शनि होने से पेट पर चिन्ह होता है। दसरे घर पर शक्र या तीसरे मंगल शनि हो, लग्न में आठवें सूर्य हों तो कमर में चिन्ह होगा। चौथे घर पर शुक्र राहु हो लग्न में मंगल या शनि हो तो पादमूल या बाएँ पैर पर चिन्ह होगा। बारहवें बृहस्पति दूसरे चन्द्रमा ३।६ ११वें स्थान में बुध के होने से गुदा के समीप गोलाकार चिन्ह या ब्रणादि होते हैं। छठे घर का स्वामी पापग्रह के साथ लग्न या सातवें घर में हो तो शरीर में ब्रणादि चिन्ह होते हैं। लग्न में मंगल सातवें बृहस्पति या शुक्र हो तो उसके शिर में चोट या ब्रण आदि के चिन्ह हों। लग्न में मंगल, शुक्र चन्द्रमा के साथ होने से दूसरे या छठे वर्ष शिर में चिन्ह होता है। मंगल से ब्रणादि, चन्द्र शुक्र से तिल जानना।

अन्तरिक्षजन्मज्ञान—यहाँ पर समभूमि से जो ऊँचा स्थान हो उसकी अंतरिक्ष संज्ञा जाननी। जिसके जन्म समय मिथुन, कन्या, धनुः और मीन ये लग्न हों उसका जन्म अंतरिक्ष में जानना, शेष लग्न हों तो समभूमि में जानना।

बालक का रोदनज्ञान—जन्म समय यदि मेष, मिथुन, सिंह और धनुः लग्न हों, तो बालक ने जन्म समय के बाद जल्दी ही रुदन किया था ऐसा कहना। कन्या तुला और कुम्भ ये लग्न हों तो थोड़ा शब्द किया हो, शेष लग्नों में बालक ने देरी से शब्द किया था, ऐसा जानना। परन्तु इसमें इतना विशेष है कि लग्न और चन्द्रमा में जिसकी राशि बलवान् हो उससे फल कहना।

उपसूतिका का ज्ञान—लग्न अथवा लग्नेश के साथ और इसके दूसरे बारहवें स्थान में जितने ग्रह हों, उतनी उपसूतिका कहना।

दूसरा प्रकार—लग्न और चन्द्रमा के बीच जितने ग्रह हों, उतनी ही उपसूतिका जानना। लग्न से सप्तम स्थान पर्यन्त अदृश्यार्थ और सप्तम से लग्न पर्यन्त दृश्यार्थ होता है, लग्न से लेकर यदि ग्रह अदृश्यार्थ में हों तो उपसूतिका घर के अन्दर और दृश्यार्थ में हों तो उपसूतिका बाहर जानना। उपसूतिकाओं के वर्ण, जाति, अवस्था आदि का विचार उन ग्रहों से ही कहना, परन्तु उन ग्रहों में जितने ग्रह उच्च के तथा बक्री हों उनकी संख्या को तीन से गुणा, अपने नवांश, अपनी राशि अथवा अपने द्रेष्काण में स्थित की संख्या को दुगुना और नीच राशि में स्थित और अस्त ग्रहों की संख्या को आधा करके सूतिका के पास उपसूतिकाएँ कहनी चाहिये।

शिरः पादजातज्ञान—शीर्षोदय राशि ३।५।६।७।८।११ जन्म के समय इन राशियों का नवाँश लग्न में हों तो शिर से, पृष्ठोदय राशि १।२।४।९।१० इन राशियों का नवांश जन्म समय में हो तो पैरों से और मीन का नवांश हो तो हाथ से जन्म जानना।

सूतिकागृह द्वारज्ञान—केन्द्र में स्थित ग्रह की दिशा में सूतिका गृह का द्वार जानना, यदि केन्द्र में कई ग्रह पड़े हो तो उनमें जो अधिक बली हो उसकी दिशा कहनी। यदि केन्द्र में कोई ग्रह न हो तो लग्न की दिशा में कहना।

पुरुष के शरीर में सूर्यादि—ग्रहों का अधिकार—पुरुष के शिर और मुखप्रदेश में सूर्यका अधिकार है, वक्षःस्थल और गले में चन्द्रमा का अधिकार है, पृष्ठ स्थल और उदर में मंगल का अधिकार है। हस्त और पादों में बुध का अधिकार है। कटि प्रदेश और जघन स्थान में गुरु का अधिकार है। गुप्तेन्द्रिय और वृष्णों में शुक्र का अधिकार, जानु और उरुप्रदेश में शनि का अधिकार है। जन्मसमय प्रश्नसमय और गोचर में जब-जब सूर्यादि ग्रह अनिष्ट-स्थान में जाते है तब पुरुषों के उपरोक्त अंगों को पीड़ित करते हैं।

मेषादि—राशियों का अंग—विभाग—कालपुरुष के शिर में मेषराशि का स्थान है, मुख में वृषराशि का, दोनों भुजाओं में मिथुन राशि का, हृदय में कर्कराशि का, उदर में सिंहराशि का, कमर में कन्या राशि का, बस्ति (मूत्राशय) में तुलाराशि का, गुप्तेन्द्रिय में वृश्चिकराशि का, उरु (दोनों जंघाओं) में धनुःराशि का, दोनों जानु (घुटनों) में मकर राशि का, पिण्डलियों में कुम्भराशि का और दोनों पादों में मीन राशि का स्थान है। कई एक आचार्य द्वादश भावों में भी इन अंगों की कल्पना करते हैं। जैसे प्रथम भाव में शिर, द्वितीय भाव में मुख, तृतीय भाव में भुजा, चतुर्थभाव में हृदय, पचमभाव में उदर, छठेभाव में कमर, सप्तमभाव में वस्ति, अष्टमभाव में गुप्तेन्द्रिय, नवमभाव में उरु, दशमभाव में जानु, एकादशभाव में जंघा और द्वादशभाव में पादों को जानना। उपर्युक्त मेषादि १२ राशि अथवा लग्नादि द्वादश भाव शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट होता है, अंगों का विचार करके फलादेश कहना युक्तियुक्त होता है।

अथ प्रसूतिलग्न—विचार

मेष—सूतिकागृह पुराना, द्वार पूर्व में, माता का शिर पूर्व में, वस्त्र लाल रंग के। प्रसव से पहले मीठा भोजन किया हो, प्रसव में कष्ट अधिक, भूमि में जन्म, प्रसव बाद बालक अधिक रोया। उपसूतिका १ या ३। बालक के मुख का रंग कुछ श्यामता पर हो, नेत्र भूरे, प्रकृति वात-श्लेष्म कद छोटा, शरीर दृढ़, वाणी चंचल। कष्ट वर्ष ४।११।१६।४४।५८। उपाय—गोदान, तुलादान, मृत्युजय जप इत्यादि। उपरांत आयु १०० वर्ष।

वृष—माता का शिर दक्षिण में, सूतिका घर नया, द्वार दक्षिण में, माता के सफेद वस्त्र, माता ने शुष्क शाकादि खाया हो, अधोमुख होकर पाद से प्रसव, बालक ऊँचे स्वर से रोया, उपसूतिका ३ या ४, दीपक उत्तर में, बालक का रंग गोरा, स्वरूप सुन्दर, प्रकृति रक्तपित्त। कष्टवर्ष १।२।८।३३।४४।६१। उपाय—अन्नदान, ब्राह्मण भोजन, मृत्युंजय जप। उपरान्त आयु ९० वर्ष।

मिथुन—माता का शिर पश्चिम में, मकान नया, द्वार पश्चिम में, माता के वस्त्र पीले रंग के पुराने, प्रसव से पहले भोजन नमकीन किया हो, माता के दाहिने अंग में कोई चिन्ह हो, जन्म अंतरिक्ष में (छत पर) प्रसव शिर से, रोदन शब्द दीर्घ, उपसूतिका ३ या ५, स्तनों में दूध कम उतरे, बालक के नेत्र रोगयुक्त, प्रकृति बल्गमी, स्वभाव चंचल, अग्निमन्द, बुद्धि विलक्षण, माता को पहले कुछ ज्वर आदि भी हुआ हो। कष्टवर्ष ४।१०।१४।३८।५८। उपाय—शिवार्चन, मृत्युंजय जप, होम। उपरान्त आयु ८६ वर्ष।

कर्क—माता का शिर उत्तर में, मकान नया, द्वार उत्तर में, वस्त्र पुराने सफेद या लाल, पिता क्लेश में, प्रसव कष्ट अधिक, माता ने मधुर शीतल भोजन किया हो, भूमि में जन्म, पाद से प्रसव, रोदन शब्द दीर्घ, उपसूतिका ४ या ५, बालक के वामांग में चिन्ह, बालक का शिर मोटा, आँखे चंचल, प्रकृति वात श्लेष्म, रंग गोरा, कद लम्बा, शरीर कोमल ५।२५।४०।४८।६२ वर्षों में कष्ट हो। उपाय—छायापात्र, तुलादान, मृत-संजीवनी-मंत्र का जप। उपारान्त आयु १०० वर्ष।

सिंह—माता का शिर पूर्व में, मकान नया, द्वार पूर्व को, माता के वस्त्र लाल या चित्र विचित्र, भोजन के साथ शाक और खट्टा खाया हो, भूमि पर जन्म, रोदनस्वर दीर्घ, उपसूतिका ३ या ५, बालक की पीठ पर चिन्ह, केश घने, नाक लम्बी, कद छोटा, शरीर कोमल, रंग गोरा, हठीला चंचल, क्रूर स्वभाव, प्रकृति कफ पित्त, कष्टकारक वर्ष ५।१३।२८।३६।४८। उपाय—सूर्य पूजन, आदित्य-हृदय का पाठ, अपूपान्न-दान यदि कष्टकारक वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष आयु हो।

कन्या—माता का शिर उत्तर में, प्रसव स्थान घर के दक्षिण भाग में, पिता घर से बाहर हो, माता के वस्त्र कुछ जीर्ण लाल रंग के, मिष्ठान भोजन किया, छत पर या ऊँची जगह जन्म, बालक कम रोया, उपसूतिका ४ या ५, भुजा में साधारण भूषण, बालक का रंग गोरा, गले और जांघ में चिन्ह, कष्टकारक वर्ष ४।१६।२३।३६।५५। उपाय—मुद्गान्न दान, गोदान, मृत्युंजय-जप, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

तुला—माता का शिर पश्चिम में, मकान कुछ नूतन, प्रसूतिका गृह पश्चिम भाग में, माता के वस्त्र साधारण श्वेत, प्रसव कष्ट अधिक, पिता क्लेश में, माता ने कुछ खाकर ठण्डा पानी पिया हो, घर में कुछ लड़ाई झगड़ा हुआ हो, भूमि में जन्म, रोने की आवाज धीमी, उपसूतिका ३ या ५, वहाँ एक कन्या भी हो दीपक हाथ में उठाया गया, बालक का रंग जर्दी पर, बदन में फोड़े, शरीर दुबला, ८।१५।३१।३५।६२।६४। इन वर्षों में कष्ट हो। गोदान, तन्दुल दान, नवग्रह पूजन और होम से शान्ति होगी, यदि इन कष्टकारक वर्षों से बचे तो ८५ वर्ष आयु भोगे।

वृश्चिक—माता का शिर दक्षिण या उत्तर में, मकान जीर्ण, द्वार उत्तर में, वस्त्र लाल या दग्ध, कष्ट अधिक, साधारण भोजन कुछ क्रोधयुक्त, भूमि पर जन्म, रोदन की आधी

आवाज, उपसूतिका ४ या ५, पिता क्लेश में, बालक के केश लम्बे और काले, पीठ पर चिन्ह, गले में पीड़ा, रंग गौर श्याम, प्रकृति रक्त पित्त, कष्टकारक वर्ष ११।२८।३८।५२।६२। उपाय—तुलादान, मृत्युंजय- जप और मिष्ठान भोजन, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

धनुः—माता का शिर पूर्व में, प्रसूति स्थान घर के दक्षिण भाग में, द्वार पूर्व में, मकान नया, माता के वस्त्र लाल या बसन्ती, पक्वान्न भोजन कर जल पिया हो। जन्म ऊँचे स्थान या छत पर, रोदन स्वर अतिदीर्घ, उपसूतिका १ या ५, बालक का रंग गोरा, आकृति सुन्दर, नेत्र विशाल, शिर ऊँचा, हृदय पर चिन्ह, २।१०।१८।३१।३८।४२। वें वर्षों में महाकष्ट भोग कर बचे तो ८१ वर्ष जिये। कष्टकारक वर्षारम्भ में शिवार्चन, महामृत्युंजय जप और ब्राह्मण- भोजन कराने से कल्याण हो।

मकर—माता का शिर दक्षिण में, मकान पुराना, द्वार उत्तर या दक्षिण में, प्रसूति स्थान पश्चिम भाग में, वस्त्र मैले, पुराने, शाकादि के साथ भोजन करके ठण्डा पानी पिया हो, भूमि पर जन्म, कुछ देर के बाद बालक अर्द्ध स्वर से रोया, उपसूतिका १ या ५ बालक के केश घने, नाक मोटी, मस्तक ऊँचा, रंग श्याम, कष्टकारक वर्ष ५।१३।२७।३६।५७।६२।८७। उपाय—रुद्राभिषेक, स्वर्ण दान, तैल, माषान्न दान, छायापात्र, उपरान्त आयु ९५ वर्ष।

कुम्भ—माता का शिर पश्चिम में, मकान का बहुत सा भाग जीर्ण हो, सूतिका घर दक्षिण पश्चिम में, द्वार पूर्वोत्तर में, माता के वस्त्र कुछ काले या मैले पुराने, कम्बल ओढ़ा हो, साधारण कसैला और चटपटा भोजन किया हो, पिता घर में न हो, भूमि पर जन्म होने के चिर पीछे बालक थोड़ा सा रोया, उपसूतिका ३ या ४, बालक के होठ मोटे, मस्तक लम्बा, प्रकृति गर्म, कद नाटा, नेत्र में रोग, कष्ट २।२८।३३।४८।६४। उपाय—तुलादान, महिषीदान, मृत्युंजय- जप, उपरान्त आयु ९० वर्ष।

मीन—माता का शिर उत्तर में, मकान का कुछ हिस्सा पुराना, प्रसूति गृह उत्तर भाग में, द्वार दक्षिण को, माता के वस्त्र मलिन या बसन्ती, पिता घर पर, जन्म ऊँचे स्थान में, बालक जन्म के उपरान्त देर से रोया, माता ने ठण्डा जल पिया, उपसूतिका पहले २ पीछे ३ या ५, पलंग का पाया टूटा हुआ, बालक का रंग गोरा, नाक चपटी हुई, आंखें भूरी, सिर ऊँचा बाल कपिल, प्रकृति बलगमी, कष्टकारक वर्ष १।८।१३।३६।४८ इनसे बच जाये तो ८३ वर्ष की आयु भोगे। उपाय—मोदकान्न दान, गोदान, ग्रह शान्ति, मृत्युंजय- जप कराने से कल्याण हो।

सूचना—जिस लग्न के लक्षण अधिक मिलें, वही लग्न ठीक मानना चाहिए। ऊपर लिखे लक्षण साधारण लग्न के आधार पर लिखे गये हैं अतः सम्भव है कि किसी- किसी स्थान पर इनसे भी लग्न का निश्चय न हो सके। क्योंकि बलाबल विचार से ही लग्न का पूर्ण निश्चय हो सकता है। उसके लिए कुण्डली पर से विशेष प्रसूति लग्न का विचार पहले लिखा जा चुका है।

बालारिष्ट के योग—जन्म लग्न से ६।८।१२वें स्थान में स्थित चन्द्रमा को यदि क्रूर ग्रह देखते हों तो वह बालक अल्पायु जानना। यदि पूर्वोक्त चन्द्रमा को शुभ ग्रह देखते हों तो बालक की आयु ८ वर्ष की जाननी। शनि अथवा शुभ ग्रह ६।८।१२ इन स्थानों में हों, या वक्री तथा क्रूर ग्रहों से देखे भी जाते हों, लग्न में कोई ग्रह शुभ नहीं हो तो बालक की आयु एक मास जाननी। जिसके लग्न में पांचवें स्थान में सूर्य मंगल और शनि यह तीनों पड़े हों, उस बालक की माता सहित मृत्यु जाननी, तथा भाई को भी हानि हो। जिसके दशम स्थान में शनि, छठे चन्द्रमा और सातवें स्थान में मंगल हो उस बालक की माता सहित मृत्यु जाननी। जिसके लग्न में शनि हो, चन्द्रमा आठवें हों बृहस्पति तीसरे हों उस बालक की शीघ्र ही मृत्यु जाननी। जन्म लग्न से बारहवें स्थान में कोई भी ग्रह शुभ फल करने वाला नहीं होता, परन्तु सूर्य, चन्द्रमा, शुक्र और राहु ये विशेष करके कष्टकारक जानने तथा इनकी दृष्टि भी शुभ नहीं है। जिसके जन्म लग्न बारहवें तथा छठे आठवें दूसरे ग्रह पड़े हों तथा लग्न क्रूर ग्रहों के बीच में पड़ा हो उस बालक की शीघ्र मृत्यु जाननी।

अरिष्टभंगयोग—बुध, बृहस्पति, शुक्र इनमें से एक भी यदि केन्द्र (१।४।७।१०) में हो। बलवान् होकर यदि बृहस्पति लग्न में हो। बली होकर लग्न का स्वामी यदि केन्द्र में हो। शुक्लपक्ष में रात्रि का जन्म हो तथा लग्न शुभ ग्रहो से देखा जाता हो, इसी प्रकार कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और पूर्ववत् लग्न शुभ ग्रहों से दृष्ट हो। इन पाँचों योगों में से एक भी योग पड़ जाये तो ऊपर कहे हुए अरिष्टों को भंग करने वाला योग जानना।

माता—पिता को अरिष्ट योग—हर एक बालक के लिए सूर्य से पिता का विचार और चन्द्रमा से माता का विचार करना चाहिए। अतएव जिस बालक की जन्म कुण्डली में सूर्य के साथ पापी ग्रह बैठे हों अथवा देखते हों या सूर्य पापी ग्रहों के बीच पड़ा हो तो उस बालक के जन्म समय पिता को कष्ट जानना चाहिए। इसी प्रकार सूर्य से ४।६।८ स्थान में क्रूर ग्रह हों, शुभ कोई भी न हो तो भी पिता को कष्ट जानना। इसी प्रकार यदि चन्द्रमा के साथ २।१२ स्थान में और ४।६।८ स्थान में क्रूर ग्रह हों, शुभ न हों तो माता को कष्ट जानना।

प्रसवदोष अरिष्ट का फल—चैत्र में कुतिया, वैशाख में ऊँटनी, ज्येष्ठ में बिल्ली, श्रावण में गधी व घोड़ी, भाद्रपद में गौ, कार्तिक में स्त्री, मार्गशीर्ष में हथिनी, पौष में बकरी, माघ में भैंस प्रसूत हों तो पिता या गर्भवती की ६ मास में मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट होता है। श्रावण में दिन को घोड़ी और माघ में बुधवार को भैंस प्रसूत हो तो घरधनी को महाभय अरिष्ट होवे। शान्त्यर्थप्रसूता गौ आदि का शीघ्र दान करें, घर में हवन शान्तिपाठ, पुण्याहवाचन, श्वेतसर्षपहवन कर व्याहृति मन्त्रों से आहुति दें, जिससे शान्ति हो।

त्रिखल—जन्म—फल—तीन पुत्रों के बाद कन्या हो, या तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्र हो तो त्रिखल नामक दोष होता है, इससे माता- पिता को अरिष्ट, महाभय धनहानि आदि होती है, शान्त्यर्थ त्रिखल शान्ति करें।

दन्तोत्पत्तिफल—बालक के जन्मते ही दांत निकले हुए हों तो माता- पिता को महा अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में दांत से जन्में तो अधिक अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में

दांत से जन्मे तो अधिक अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में दांत निकलें तो मातुल पक्ष को भय हो। १ मास में दांत निकलें तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनि नष्ट चतुर्थ में भाई नष्ट, पांचवें में ज्येष्ठ बन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, ७ वें में पितृसुख, ८ वें में पुष्टि, ९ वें में धनी, १० वें में सुख, ११ वें में सुख, १२ वें में धनी।

एकनक्षत्रजातफल—पिता पुत्र, माता पुत्र या कन्या, दो भ्राता इनका एक नक्षत्र में जन्म हो तो दोनों में से एक की मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट होता है। स्वर्ण दान शान्ति हवन आदि करने से अरिष्ट निवारण होता है।

गण्डमूल के नक्षत्र					
अश्विनी	अश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में जन्मा हुआ बालक, माता-पिता, कुल या अपने शरीर को नष्ट करता है। स्वयं का शरीर नष्ट नहो तो धन वैभव ऐश्वर्य हाथी, घोड़ों का स्वामी होता है। गण्डमूल में जन्मे हुए बालक का २७ दिन तक पिता मुख न देखे। प्रसूति स्नान के पश्चात् शुभ मुहूर्त में गौ, स्वर्णदान आदि शांति कर पश्चात् शुभ वेला में बालक का मुख देखे।

मूलनिवासचक्र

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चै. श्रा. का. पौ.	आषा. आ. माघ भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२। ५। ८। ११	३। ६। ९। १२	१। ४। ७। १०
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

अथ मूलाश्लेषा-पादफल

मूलपादफल		अश्लेषापादफल		समयफल	
चरण	फल	चरण	फल	समय	फल
१	पितृ-नाश	१	शांति से शुभ	दिन में	पिता को भय
२	मातृ-नाश	२	धन-नाश	सन्ध्या में	स्वशरीर भय
३	धन-नाश	३	मातृ-नाश	रात्रि	माता को भय
४	शांति से शुभ	४	पितृ-नाश		

मूलजनने वृक्षविभागः

मूले	स्तम्भे	त्वचायां	शाखायां	पत्रे	पुष्पे	फले	शिखायां	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घट्यः
मूलनाशः	वंश-नाशः	मातृ-क्लेशः	मातुल नाशः	मंत्री-पदम्	मंत्री-पदम्	विपुल-लाभः	अल्पजीवी	फलम्

अथ मूलपुरुषचक्रम्

मूर्ध्नि	मुखे	स्कंधे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जानुनि	पादे	स्थानं
५	७	४	८	३	९	२	१०	६	६	घट्यः
राजा	पि.मृ.	बली	बली	दानी	मंत्री	ज्ञानी	कामी	मतिमान्	मतिमान्	फलम्

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वोः	हस्ते	गुह्ये	जंघे	जानुनि	पादे	स्थानं
४	६	५	५	५	८	९	४	४	१०	घट्यः
पशुनाश	धननाश	धनलाभ	कुटिला	धनला.	दयावः	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना.	वैधव्यं	फलम्

अथ अश्लेषाचक्रम्

शिरसि	मुखे	नेत्रे	ग्रीवायां	स्कंधे	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुदे	पादे	स्थानं
५	७	२	४	४	८	१०	६	७	७	घट्यः
पुत्रादि	पितृना.	मातृना.	स्त्रीलाभ	गुरुभक्त	बली	आत्महा.	भ्रमः	तपस्वी	धनहा.	फलम्

अथ अश्लेषापुरुषवृक्ष चक्रम्

फले	पुष्पे	दले	शाखायां	त्वचायां	लतायां	स्कन्धे
१०	५	९	७	१३	१२	४
धनम्	धनम्	राजभयम्	हानिः	मातृहानिः	पितृहानिः	अल्पायुः

अथ अभुक्तमूलविचार—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्त की ४ घटी, अन्य किसी मत से १ घटी और मूल नक्षत्र के आदि की ४ घटी, अन्य मत से आधी घटी अभुक्त मूल होता है। इन घटियों में बालक जन्मे तो पिता ८ वर्ष पर्यन्त बालक का मुख न देखे, असमर्थ हो तो ६ मास त्याग करे। शांति हवन अभिषेक आदि से युक्त अभुक्त मूल शांति, रुद्रार्चन, महामृत्युञ्जयादि विधान कर शुभ मुहूर्त में बालक के मुख का अवलोकन करे।

अश्विनीपादफल	मघापादफल	ज्येष्ठापादफल	रेवतीपादफल
१ पिता को भय	१ माता को नेष्ट	१ बड़े भ्राता को नेष्ट	१ राज्य-सम्मान
२ सुख ऐश्वर्य	२ पितृभय	२ छोटे भ्राता को नेष्ट	२ मंत्रित्व प्राप्ति
३ मन्त्री पद	३ सुख	३ मातृ नाश	३ धन सुख की प्राप्ति
४ राज्य सम्मान	४ धन विद्या प्राप्ति	४ खुद का नाश	४ अनेक कष्ट

अथ कृष्णचतुर्दशी विभाग फलम्

१	२	३	४	५	६	विभागः
शुभम्	पितृनाश	मातृनाश	मातुलनाश	कुलहानिः	धनहानिः	फलम्

त्रयोदशी की घटियों को ६० में से घटा कर चतुर्दशी की घटियाँ युक्त कर ६ का भाग दें, जो प्रथम भाग में होगा, उसके द्विगुणित दूसरा ऐसे ही क्रम से जानें। जिस भाग में जन्म हुआ हो उसके अनुसार फल को कहें, अरिष्ट हो तो शान्ति विधान करें।

सिनीवाली-कुहूजनन फल

सिनीवालीजननफल—सिनीवाली उसे कहते है कि अमावस्या जन्म के अनन्तर कुछ घटी बाकी हों अर्थात् चन्द्र की कुछ कला दृश्यमान हो। ऐसी अमावस्या में बालक का जन्म हो तथा घर में गौ, भैंस घोड़ी आदि पशु प्रसूति हुए हों तो धन हानि, अपयश आदि भय होते है।

कुहूजननफल—कुहू कहते है चन्द्र की कला बिल्कुल नष्ट हो जाये। अर्थात् अमावस्या का अन्त समय हो, (यह सूक्ष्म केतकी गणना से ही ठीक-ठीक समय आयेगा प्राचीन गणित से नही), उस समय में बालक का जन्म या पशुजन्म हो तो अधिक अरिष्ट फल होता है, इसका शास्त्र में कहे अनुसार शान्ति-विधान अवश्य करना चाहिए।

अन्य अरिष्ट–दोषों में जन्मफल—व्यतिपात में जन्म हो तो अंगहानि, वैधृति में पितृहानि, परिघ योग में मृत्यु होती है, तथा मृत्युयोग, दग्धयोग, भद्रा, संक्रान्तिदिन, सूर्य-चन्द्र-ग्रहण, शूल योग, व्याघात, गण्ड, वज्र, क्षयतिथि, महापात (क्रांति साम्य) विश्वघस्र-पक्ष, क्षय मास आदि कुयोगों में बालक जन्मे तो अरिष्ट-शान्त्यर्थ शान्ति-विधान करना चाहिए, ताकि आयु और आरोग्य प्राप्त हो।

स्त्री–दासी–गौ–आदि पशु–यमल जन्मफलम्

त्रिविधा यमलोत्पत्तिर्जायते योषितामिह। सुतौ च सुतकन्ये वा कन्या एव तथा पुनः।
एकलिंगौ विनाशाय द्विलिंगौ मध्यमौ स्मृतौ। पित्रोर्विघ्नकरौ ज्ञेयौ तत्र शान्तिर्विधीयते॥

जन्म-स्थान विचार—जन्मलग्न और चन्द्रमा जलचर राशि में हो, अथवा पूर्णचन्द्र लग्न को पूर्णदृष्टि से देखे अथवा चन्द्रमा जलचर राशि के दशवें, चौथे और लग्न में हो तो बालक का जन्म जलके ऊपर या जल के समीप स्थान में पैदा हुआ ऐसा कहना। पूर्ण चन्द्रमा अपनी राशि कर्क में हो, बुध लग्न में हो, बृहस्पति चतुर्थ स्थान में हो अथवा लग्न में जलचरराशि हो, चन्द्रमा सातवें हों तो बालक का जन्म नौका में जहाज में अथवा पुल के ऊपर या नदी के सान्निध्य में हुआ ऐसा कहना। लग्न और चन्द्रमा से बारहवें स्थान में शनि हो, पापग्रह देखते हों तो बालक का जन्म कारागार में वा एकांत में हुआ ऐसा कहना। शनि, कर्क या वृश्चिक लग्न में हो और चन्द्रमा देखता हो तो खाई वा खात में जन्म हुआ कहना। नरराशि में शनैश्चर लग्न में हो और मंगल देखता हो तो श्मशान के समीप जन्म हुआ कहना और नरलग्नगत शनि को शुक्र चन्द्र देखते हों तो सुन्दर दर्शन योग्य रमणीक घर में बालक का जन्म कहना। बृहस्पति हो तो राजमन्दिर वा देवालय गोशाला में वा उसके समीप का जन्म कहना। बुध देखता हो तो शिल्पालय, चित्रकारी से बने हुए सुन्दर स्थान में जन्म कहना। बुद्धिमान् ज्योतिषी ग्रहों के बलाबल को देखकर फलादेश कहे।

अन्य शुभाशुभ योग—मङ्गल शनि दोनों त्रिकोण में हों और चन्द्रमा सातवें घर में हो तो जन्मा बालक माता से जुदा हो जाए तथा ऐसे योग में चन्द्रमा पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो माता से त्यागा हुआ बालक दीर्घायु और सुखी होता है। दशम स्थान में बुध गुरु हो, केन्द्र में सूर्य, तीसरे मङ्गल हो ग्यारहवें पाप ग्रह हो तो बालक को छः अंगुली है ऐसा कहना। बारहवें स्थान में चन्द्रमा मंगल हो, तो बायां नेत्र और सूर्य राहु हो तो दाहिना नेत्र बालक का दुःखित हो या नष्ट हो ऐसा कहे। मङ्गल, शनि राहु पांचवें स्थान में हो तो बायें कोख में लहसुन कहना। तीसरे स्थान में शुक्र हो, मेष वा सिंह का बृहस्पति हो, दसवें घर में सूर्य मङ्गल हो तो बालक मूक (गूंगा) होता है। कृष्णपक्ष में दिन का जन्म हो और शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो तो छठे आठवें में बैठा हुआ चन्द्र अरिष्ट निवारक और मातृवत् पालन करने वाला होता है। चन्द्र ८ वें में, मंगल सातवें में, राहु नवम स्थान में, शनि लग्न में हो, बृहस्पति तीसरे स्थान में, सूर्य पांचवें, शुक्र छठे, बुध चौथे हो तो बालक अल्पायुषी होता है। जिस बालक की जन्म कुण्डली में लग्न में बुध शुक्र न हो, केन्द्र में बृहस्पति न हो, दशम स्थान में मंगल न हो तो वह बालक जन्म लेकर क्या कर सकता है, अर्थात् उसका जन्म व्यर्थ है। यही योग जैसे केन्द्र त्रिकोण में बुध शुक्र बृहस्पति हों, दसवें स्थान में मंगल हो तो वह बालक अपने कुल में दीपक, ज्ञानवान्, दीर्घायुषी, बुद्धिमान् चतुर (किसी से ठगा नहीं जाये) ऐसा कर्त्तव्यमान्, कीर्तिमान्, सर्वमानी, राज में तथा जनसमाज में बहुमानी, अधिकारी महान् पुरुष होता है। लग्न में शनि हो छठे चन्द्रमा और सातवें मंगल हो तो उसका पिता अधिक नहीं जीये। छठे बारहवें स्थान में पापग्रह हो या चन्द्र पापग्रह युक्त हो तो माता को अरिष्ट जानना। दशम स्थान में पापग्रह हो तो पिता को अरिष्ट जाने। दशम स्थान में पापग्रह हो और दशममें मंगल शत्रुराशिका हो तो बालक का पिता शीघ्र ही मर जाये। लग्न में गुरु, दूसरे शनि, सूर्य भौम तथा बुध हो तो बालक के विवाह समय में उसका पिता मरे। जन्म कुण्डली में सातवें राहु छठे ८वें में चन्द्रमा हो शेषग्रहों की पापदृष्टि हो तो बालक की आयु बहुत अल्प होती है, ऐसा आचार्यों का मत है। शनिके घरमें सूर्य हो, सूर्य के घर में शनि हो या लग्नमें मंगल, ८वें में गुरु हो तो बालक की केवल १२ वर्ष की आयु होती है। जन्मसमय लग्नमें छठे ८वें में बुध हो और उनका लग्नेश अष्टमेश पापग्रहयुक्त या परस्पर सम्बन्धित हो तो बालक की चौथे वर्ष में मृत्यु होती है। मंगल के घर में बृहस्पति हो और ६।८ वें में चन्द्रमा हो तो बालक आठ वें वर्ष में मृत्यु को प्राप्त होता है। लग्न से दशम में राहु हो या अष्टमेश क्षीणचन्द्रमा राहु से युक्त हो तो वह बालक माता-पिता तथा स्वयं का नाश करने वाला होता है। चन्द्र राहु के साथ न हो तो वह बालक १६ वर्ष पर्यन्त जीवित रहता है। बालक की कुण्डली में तीसरे सूर्य हो तो बड़े भाई को, शनि हो तो पीठ पर छोटे भाई को और मंगल हो तो पीठ पर के भाई को हानि करता है। यह फलित विचार करते समय ज्योतिषी को चाहिए कि ठीक समय लेकर जहाँ का जन्म हो वहाँ के सूर्योदय से तथा उसी नगर की लग्नसारिणी से लग्नसाधन करे। जन्म-टाईम स्टैण्डर्ड हो तो सूर्योदय स्टैण्डर्ड टाइम का लेकर इष्ट बनावें। सूर्योदय और जन्म- [illegible]

बाल कष्टावली चक्रम्

प्रत्येक मन्त्र को २१ बार पढ़कर बलि को ७ बेर सिर पर फिरा कर उचित स्थान पर मौन से रख आवे।

किस समय कौन पूतना ग्रहण करती है	प्रमित लक्षण	मूर्तिनिर्माणार्थ द्रव्य	पूजन द्रव्य	बलि विधान व समय	स्नान पूजा मार्जन मंत्र	धूप
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	ज्वर, स्वेद मन्दस्वर, कम्पन अरुचि, अंगशोष।	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचंदन, तिलक, श्वेतपुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक ५ आटेके सतिये, कपूर, लोहबान	श्वेत भात, ५पूर्ण पोली, (सुहाली) १ पहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना।	ॐ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै वहस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥	राई, कस, कमल के फूल बिल्ली और,
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	ज्वर, हाथ पैर पकड़ना, संकोच, दांत चबाना, नेत्र खुले, नेत्र रोग भय, कृशता।	एक सेर चावलों का आटा	१० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिये १०	भात, एक सेर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय प. दिशा में चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चै ह्रांह्रीं ह्रीं हूं हूं दुष्टाग्रहा गच्छन्त्वतः स्थानाद्-रुद्राज्ञया स्वाहा।	मनुष्यके बाल निम्बपत्र, गोघृत। ,
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हृदयकूटन, खांसी, सिर झुकाना, श्वास, नेत्रमीलन, व्याकुलता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा।	एक सेर चावलों का आटा	रक्तचंदन रक्तपुष्प, श्वेत ध्वजा दीपक १०, गेहूं के आटे के सतिये १०।	एक सेर लाल भात, आध सेर पूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	सुनन्दना विधानोक्त	लहसुन, गोशृंग सांप की
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमण्डिका	मास भय, सिर झुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमीलन, अरुचि, अनिद्रा, व्याकुलता।	तिल चूर्ण एक सेर	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा ५, दीपक, मिल सकें तो अर्जुनवृक्ष के पुष्प।	भात, सेर आटेके पूड़े, आध सेर पूर्णपोली सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	सुनन्दना विधानोक्त	काचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के
पंचम दिन मास वर्ष में बिडालिका	पेटमें दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि ज्वर, शरीर में गर्मी, तेज।	एक सेर चावलों का आटा	श्वेतचंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५ श्वेतध्वजा ५, गेहूं के आटे के सतिये।	श्वेत भात, ७ पूड़ियां सायंकाल प. दिशा में वृक्ष के नीचे रखना	ॐ भगवती ह्रीं ह्रीं हूं हूं भ्रंच रक्षा कुरु कुरु बालं मुञ्च-२ अस्त्र ठः ठः चामुण्डे चण्डिके ठःठः स्वाहा	बाल, गोघृत।
षष्ठ दिन मास वर्ष में षट्कारिका	ज्वर, हृदयकूटन, हंसना, कभी २ रोना, मोह, मूर्च्छा।	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५ श्वेत ध्वजा ५।	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर	योगिनी विधानोक्त	कूठ, गुग्गल,
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीर कम्पन।	चावलों का आटा एक सेर	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५।	भात, ७ पूड़ियां सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखना।	बिडालिका विधानोक्त	राई, हाथीदांत घृत।
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप।	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्तचंदन, ५ रंग की झण्डी ५, दीपक ५।	गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग छाग मांस, मध्याह्न में चौरास्तेपर रखना।	बिडालिका विधानोक्त	
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर, खांसी, श्वास, शूल, अफारा, तृषा।	एक सेर गेहूं का आटा	चंदन, पुष्प, ५ दीपक, ५ रंग की झण्डी ५।	भात, मत्स्यमांस, पापड़ी, सुहाली उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलवनिमालाय हनहन हुं फट स्वाहा	गोशृंग, लसुन,
दशम दिन मास वर्ष में रेवती	ज्वर, हृदयकूटन, शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास।	एक सेर गेहूं का आटा	रक्त पुष्प, २५ झण्डी, २५ दीपक, २५ सतिये।	गुड़के घीभुने चावल, गोघृत, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमो भगवते वैश्वेदवाय हन हुं फट् स्वाहा।	सांप की कांचली, निम्ब
एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर, हृदकूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता।	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत पुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद झण्डी, २५ आटे के सतिये।	श्वेत भात, ७ पूड़े, सुहाली ७, सायं व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्रहास वज्र हस्ताय ज्वल २ दुष्ट ग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।	पत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई,
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	ज्वर, दांत चबाना, रोमांच, मूर्च्छा, नेत्रपीड़ा, सन्ताप।	चावलों का आटा एक सेर	१३ दीपक, १३ झण्डी १३ सतिये आटे के।	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियां ७, मत्स्य-मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय २ मर्दय २ तापय २ हुं२ हन२ दुष्टाना ह्रीं हुं फट् स्वाहा	गोघृत।

अथ नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्टलक्षण	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन				गन्धादि पदार्थ	दान वस्तु	बलिद्रव्य	होम द्रव्य	करे धारणम्	जप सं०	जपनीय वेदोक्त मंत्र
			१	२	३	४							
अश्विनी दस्रौ	वातज्वर, गात्रपीडा निद्राभय, बुद्धिभ्रम	९	९	११	१०	२०	श्वेतचन्दन कमलपुष्प घृत गुग्गुलधूप, घृतदीप, क्षीर मोदक गुडनैवेद्य ।	सुवर्ण घृतकुम्भ	गुडौदन तिल	खण्ड यव घृत	अपमार्ग मूलम्	५ सहस्र	ॐ अश्विनातेजसाचक्षुः प्राणेनसरस्वतीवीर्यम् । वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः ॥
(भरणी) (यमः)	अर्दरोग, तीव्रज्वर अनेकरोग, आलस्य	११	०	८०	४०	११	अगरगंध, करवीरपुष्प, घृतदीप, घृत गुग्गुलधूप, गुडोदन नैवेद्य ।	गोमहिषीघृत शर्करा, छायापात्र	कृषरान्न (खिचडी)	घृत मधु तिलाक्षत	अगस्त मूलम्	१० सहस्र	ॐ यमायत्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥ ॐ यमाय नमः
कृत्तिका (अग्निः)	नेत्रपीडा, अनिद्रा अतिदाह, उरुशूल	६	६	११	१६	२८	श्वेतचन्दनगंध, जुहीपुष्प, घृतदीप घृत गुग्गुलधूप, तिलमाषान्न,बडाधीकानैवेद्य	स्वर्ण, गोदान	पायसघृत मोदक	तिलयव घृत	कार्पास मूलम्	१० सहस्र	ॐ अग्निमूर्धादिवः ककुत्पतिःपृथिव्या अयम् । अपा ᳫँ रेता ᳫँ सिजिन्वति ॐ अग्नये नमः ॥
रोहिणी (ब्रह्मा)	शिरपीडा, ज्वर कुक्षिशूल, प्रलाप	७	७	९	१८	३०	श्वेतचन्दनगंध, कमलपुष्प, दशाङ्ग धूप, घृतदीप, घृतपायस, नैवेद्य ।	सप्तधान्य,कृष्णगौ दान५ कन्याभोजन	मध्वाज्यक्षौद्र शाल्यन्नक्षीर	तिलाज्य घृतयव	अपामार्ग मूलम्	५ सहस्र	ॐ ब्रह्मजज्ञानंप्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनआवःसुब्ध्या उपमाअस्यविष्ठाःसतश्चयोनिमसतश्चविवः ॐब्रह्मणेनमः
मृगशीर्ष (चन्द्रः)	त्रिदोष, महाकष्ट अर्द्धगात्र पीडा	३	९	५	७	१०	श्वेतचन्दनगंध, कमलपुष्प, दशाङ्गधूप घृतदीप,पायस अपूपमध्वोदननैवेद्य ।	दधि, तण्डुल सवत्सा गोदान	दधि शर्करा शाल्यन्न	दधि पायस	अयन्ती मूलम्	१० सहस्र	ॐइमन्देवा असपत्न ᳫँ सुवध्वं महतेक्षत्राय महतेज्यैष्ठ्यायमहतेजानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इममुष्यपुत्रममुष्यै पुत्रमस्यैविशएषवोऽमीराजासोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ᳫँ राजा ॐचन्द्रमसेनमः
आर्द्रा (शिव)	त्रिदोष, ज्वर सर्वाङ्ग पीडा,अनिद्रा	मृ तु	०	१८	०	०	श्वेतचन्दनगंध, सौरभपुष्प, दशाङ्गधूप घृतदीप, पायसोदननैवेद्य ।	श्यामवृषभदान श्यामवस्त्र	दध्योदन मध्वाज्य	घृत मधु	अश्वगंधाश्वमूलम्	१० सहस्र	ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतो त इषवे नमः । बाहुभ्यामुतते नमः । ॐ रुद्राय नमः ॥
पुनर्वसु (अदिति)	ज्वर, शिरपीडा कटिपीडा	७	७	१४	२	२१	हरिद्राकुकुमगंध, सेवन्तिकापुष्प अष्टगंध धूप, घृतदीप घृताक्तपीतशर्करान्ननैवेद्य	अश्व,स्वर्ण, कमल ५, ५ कन्याभोजन	साज्य पीततण्डुल	घृत तण्डुल	अर्कमूलम्	१० सहस्र	ॐअदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिमाता सपिता स पुत्रःविश्वेदेवा अदितिः पञ्चजनाअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॐअदि०
पुष्य (गुरु)	ज्वर, शूल, महाकष्ट	७	७	७	१०	२१	कुंकुमगंध कमलपुष्प, घृतगुग्गुल, धूप, घृतदीप, घृतपायसशर्करा नैवेद्य	सुवर्ण गौ पीत वस्त्र	समण्डक मोदक	घृत पायस	तुषार मूलम्	१० सहस्र	ॐबृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतु मज्जनेषु । यद्दीदयच्छवसऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् । ॐ बृहस्पतये नमः ॥
आश्लेषा (सर्पः)	सर्वाङ्ग पीडा, पाद पीडा, मृत्युसमकष्ट	मृ.तु.	०	०	४१	०	कुंकुमअगरगंध, अगस्तपुष्प,घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतक्षीर नैवेद्य ।	सवत्सा श्याम गौ छायापात्र	हवि दध्योदन	शर्करा घृत	पटोल मूलम्	१० सहस्र	ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु: ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ ॐ सर्पेभ्यो नमः ॥
मघा (पितरः)	शिर पीडा अर्द्ध गात्रपीडा	२०	१५	७	१७	२०	श्वेतचन्दनगंध, चम्पकपुष्प, घृत गुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतमिष्टान्न नैवेद्य ।	वस्त्र, तिल माष दान	सतिलाज्य दुग्धान्न	तिल घृत तण्डुल	भृंगराज मूलम्	१० सहस्र	ॐपितृभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधानमः पितामहेभ्यःस्वधायिभ्यः स्वधा नमः। प्रपितामहेभ्यस्स्वधायिभ्यस्स्वधा नमः अक्षन्पितरोमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्तपितरःपितरःशुन्धध्वम्। ॐ पि०
पू. फा. (भगः)	गात्र व्यथा, ज्वर, शिर पीड़ा	मृ.तु.	०	१५	०	३०	श्वेतचन्दनगंध मालतीपुष्प, घृतबिल्व धूप, घृतदीप अपुपोदनमोदक नैवेद्य ।	पित्तल यवमाषान्न स्वर्ण गौ दान	घृतौदन पायस	कङ्गनी तिलघृत	कष्टकारि मूलम्	१० सहस्र	ॐभगप्रणेतर्भगसत्यराधोभगेमांधियमुदवाददन्नः । भगप्रणोजनयगोभिरश्वैर्भगप्रनृभिर्नृवन्तःस्याम॥ ॐ भगायनमः।
उ. फा. (अर्यमा)	कुक्षिशूल, ज्वर शिरपीडा अतिकष्ट	७	७	१४	७	६०	कर्पूर, केसरगंध, अर्कपुष्प,घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायस, नैवेद्य ।	सुवस्त्र, स्वर्ण, रजत,अन्न, गौदान	घृत शर्करा शाल्यन्न	तिल घृत	पटोल मूलम्	१० सहस्र	ॐदेवावध्वर्यु इवागतरथेनसूर्यत्वचा मध्वायज्ञ ᳫँ समञ्जाथे तं प्रत्नथा यं वेनश्चित्रं देवानाम् ॥ ॐ अर्यम्णे नमः ॥
हस्त (सविता)	उरुशूल, अफारा सर्वाङ्ग पीडा प्रस्वेद	१५	१५	७	१५	०	रक्तचन्दन, केसरगंध, कमलपुष्प, घृत गुग्गुलधूप, घृतदीप, घृतपायसनैवेद्य	सुवर्ण, पयस्विनी गौ दान	मिष्टान्न पायस	दधि घृत	जाति मूलम्	५ सहस्र	ॐ विभ्राड्बृहत्पिबतु सौम्य मध्वायुर्दधयज्ञपतौ चविहुतमभृवातजूतो योअभिरक्षतित्मनाप्रजाःपुपोषपुरुधा विराजति ॐ सवित्रे नमः ।
चित्रा विश्वकर्मा	विचित्र रोग अतिकष्ट	११	११	९	९	११	केसरगंध, विचित्रवर्णपुष्प, घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, विचित्रान्नमोदकनैवेद्य	तिल गुड, विचित्र वृषभ, छायापात्र	विचित्रान्न घृत	तिलाज्य घृततण्डुल	मलय मूलम्	१० सहस्र	ॐ त्वष्टातुरीयोअद्भुतइन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम् । द्विपदाछन्द इन्द्रियमुक्षागौर्नवयोदधुः ॥ ॐ विश्वकर्मणे नमः ॥

नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्ट	कष्ट दिन	प्रत्यागत कष्टदिन	गन्धादि पदार्थ	दानवस्तु	बलिद्रव्य	होमद्रव्य	करे धारणम्	जप संख्या	जपनीय वेदोक्त मन्त्राः
स्वाति (वायु)	नानाकष्ट ज्वरपीड़ा	[illegible]	[illegible]	चन्दनगन्ध (दमनकपुष्प) अगरु गुग्गुल धूप, घृतदीपक घृतपायस नैवेद्य।	स्वर्ण, रक्तधेनु पक्वान्न	घृतपायस	तिल यव घृत	जाति मूलम्	१० सहस्र	ॐ वायो ये ते सहस्रिणो रथा सस्ते भिरागहि नियुत्वान् सोम पीतये ॥ ॐ वायवे नमः ॥
विशाखा (इन्द्राग्नि)	सर्वाङ्गपीड़ा कुक्षिशूल	१५	१५ ८ ४ [illegible]	चन्दन केसरगन्ध, कमलपुष्प, देवदारु धूप, घृतदीप घृतपायस नैवेद्य।	रक्तपीतवस्त्र कृष्ण-वृषभछायापात्र दान	सहवि चित्रान्न	आज्य पायस	गुञ्जा मूलम्	१० सहस्र	ॐ इन्द्राग्नी आगत ᳪ सुतं गीर्भिर्नभो वरेण्यम्। अस्य पातं धियेषिता ॥ ॐ इन्द्राग्निभ्यां नमः ॥
अनुराधा (मित्रः)	शिर पीड़ा तीव्रज्वर	[illegible]	१० १२ ३६ ३०	केसरगन्ध, कमलपुष्प, चन्दन धूप घृतदीप, घृतपायस, नैवेद्य।	स्वर्ण गौ छायापात्रदान	मध्वाज्य गुडमाषान्न	यव घृत	गुपुष्प मूलम्	१० सहस्र	ॐ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृत ᳪ सपर्यत दूरे दृशे देव जाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्याय ᳪ शंसत ॥ ॐ मित्रायनमः ॥
ज्येष्ठा (इन्द्रः)	पित्तरोग, कम्पन व्याकुलता	[illegible]	१६ ६ ६ ४	श्वेतचन्दनगन्ध, चम्पकादिपुष्प, कपूर-धूप, घृतदीप, चित्रान्न नैवेद्य।	स्वर्णतिल, नील वस्त्रदान	दध्योदन गुगुष्प	तिल, घृत तण्डुल	अपामार्ग मूलम्	५ सहस्र	ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ᳪ हवे हवे सुहव ᳪ शूरमिन्द्रम् ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ᳪ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः। ॥ ॐ इन्द्राय नमः ॥
मूल (राक्षसः)	मुख तथा उदररोग सन्निपात	७	[illegible]	कृष्ण अगरुगन्ध, नीलोत्पलपुष्प, घृतदीप कृष्णागरुधूप, माषमिश्रान्न नैवेद्य।	गौ, छायापात्र वस्त्र कुमारीपूजा	सहवि माषान्न	कन्दमूल घृत	मन्दार मूलम्	५ सहस्र	ॐ मातेव पुत्र पृथिवी पुरीष्यमग्नि ᳪ स्वेयोनावभारुखा। तां विश्वैर्देवैर्ऋतुभिः संविदानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु ॥ ॐ निऋतये नमः ॥
पू. षा. (जलम्)	शिरपीड़ा, कम्पन महाकष्ट	[illegible]	[illegible]	श्वेतचन्दनगन्ध कमलपुष्प घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायसान्न नैवेद्य।	स्वर्णवस्त्र तिल तन्दुल जल कुम्भ गोदान	घृतपायस मिष्टान्नहवि	तिल, घृत तण्डुल	कपास मूलम्	५ सहस्र	ॐ अपाघमप किल्विषमपकृत्यामपोरपः। अपामार्गत्वमस्मदप दुःष्वप्न्य ᳪ सुव ॥ ॐ अद्भ्यो नमः ॥
उ. षा. (विश्वेदेवा)	कटिपीड़ा उदशूल प्रलाप	[illegible]	[illegible]	श्वेतचन्दनगन्ध, कमलपुष्प घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायसान्न नैवेद्य।	आमान्न स्वर्णदान	सहवि पायस तिलान्न	तिलाज्य यव	कर्पास मूलम्	१० सहस्र	ॐ विश्वेदेवाः शृणुतेम ᳪ हवं मे ये अन्तरिक्षे य उपद्यविष्ठ। अग्निजिह्वा उतवायजत्रा आसद्यास्मिन्बर्हिषि मादयध्वम् ॥ ॥ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥
श्रवण (विष्णुः)	सर्वाङ्गपीड़ा, त्रिदोषमय, अतिसार	११	[illegible]	श्वेतचन्दनगन्ध, मालतीपुष्प, कर्पूर, [illegible]धूप, घृत दीप, [illegible] नैवेद्य।	स्वर्ण गौ छायापात्र दान	सहवि पायस	तिलाज्य यव	अपामार्ग मूलम्	१० सहस्र	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥
धनिष्ठा (वसवः)	ज्वर-कम्पन, रक्त विकार मूत्रकृच्छ्र	[illegible]	[illegible]	श्वेतचन्दनगन्ध कमलपुष्प गुग्गुल धूप, घृतदीपक, घृतपायस नैवेद्य।	द्रव्योपानत् अश्व, स्वर्ण, गौ,	पायस मोदक पूर्णतिलपिष्ठ	तिलाज्य पायस	भृङ्गराज मूलम्	१० सहस्र	ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ॥ ॐ वसुभ्यो नमः ॥
शतभिषा (वरुणः)	वातज्वर सन्निपात कष्ट	[illegible]	[illegible]	केसर अगरुगन्ध, कमलपुष्प, कर्पूर चन्दन धूप, घृतदीपक घृत[illegible] नैवेद्य।	स्वर्ण,तिलान्न पट, अश्व, छायापात्र	घृतचित्रान्न	आज्य दध्योदन	कमल मूलम्	१० सहस्र	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदन मासीद ॥ ॐ वरुणाय नमः ॥
पू. भा. अजैकपाद	वमन, व्याकुलता शरीरपीड़ा, त्रिदोष	[illegible]	[illegible]	केसरचन्दनगन्ध, [illegible] पुष्प [illegible] मिश्रितधूप, घृतदीपक, दधिपायस नैवेद्य।	स्वर्णरजत वस्त्र, श्वेत वस्त्र, छायापात्रदान	दध्योदन पायस	[illegible] शर्करा	भृङ्गराज मूलम्	१० सहस्र	ॐ उत नोऽहिर्बुध्न्य शृणोत्वज एकपात्पृथिवी समुद्रः। विश्वेदेवा ऋतावृधो हुवानास्तुता मंत्राः कविशस्ता अवन्तु ॥ ॥ ॐ अजैकपदे नमः ॥
उ. भा. अहिर्बुध्न्य	[illegible], अतिसार, शूल वातज्वर	७	[illegible]	चन्दन कर्पूरगन्ध, कमलपुष्प, बिल्व-पत्रादि धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	स्वर्णरजत, तिल कृष्णवस्त्र दान	तिल घृत मुद्ग माष	तिलाज्य यव	[illegible] मूलम्	१० सहस्र	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मामाहि ᳪ सीः। निवर्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ॥ ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः ॥
रेवती (पूषा)	[illegible] पित्तमय ज्वर उन्माद चित्तभ्रम	[illegible]	[illegible]	रक्तचन्दनगन्ध, मदारपुष्प, घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	रजतवस्त्र तैलपात्र वृषभ, छायापात्र	सहवि [illegible]	तिलाज्य तण्डुल	अश्वत्थ मूलम्	५ सहस्र	ॐ पूषन् तव व्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इहस्मसि ॥ ॐ पूष्णे नमः ॥

पक्षर्तिर्घातवारः घातनक्षत्रमेव च । **अथ} घातचक्र** {यह घातचक्र युद्ध, प्रवास, राजदर्शन और मु.का. में वर्ज्य करें
श्राद्धायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनम् ॥ विवाह व उपनयनादि में यह घातचक्र वर्ज्य नहीं है ।

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु:	मकर	कुम्भ	मीन
घातमास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घाततिथि	१।६।११	५।१०।१५	२।७।१२	२।७।१२	३।८।१३	५।१०।१५	४।९।१४	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	३।८।१३	५।१०।१५
घातवार	रविवार	शनिवार	सोमवार	बुधवार	शनिवार	शनिवार	गुरुवार	शुक्रवार	शुक्रवार	मंगलवार	गुरुवार	शुक्रवार
घातनक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शततारका	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घातयोग	विष्कंभ	शुक्ल	परिघ	व्याघात	धृति	शुक्ल	शुक्ल	व्यतिपात	वज्र	वैधृति	गंड	वज्र
घातकरण	बव	शकुनि	कौलव	नाग	बव	कौलव	तैतिल	ग र	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पाद
प्रहर	१	४	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४
पुरुष घातचन्द्रः	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु:	वृषभ	मीन	सिंह	धनु:	कुम्भ
स्त्री. घातचन्द्र	मेष	धनु:	धनु:	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धनु:	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुम्भ

नामाक्षरों से वैरवर्ग देखने का कोष्ठक । स्वकीय-वर्ग से पंचम वर्ग वैरी समझना

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेढ़ा

अवकहडाचक्र (नक्षत्र, राशि, स्वामी, वर्ण वश्य, नाड़ी, योनि, गणबोधकचक्र

नक्षत्र नाड़ी योनि गण	अश्विनी आद्या नाड़ी अश्व योनी देवगण	भरणी मध्या नाड़ी गज योनी मनुष्य गण	कृत्तिका अन्त्या नाड़ी मेष योनी राक्षस गण	रोहिणी अन्त्या नाड़ी सर्प योनी मनुष्य गण	मृगशीर्ष मध्या नाड़ी सर्प योनी देवगण	आर्द्रा आद्या नाड़ी श्वान योनी मनुष्य गण	पुनर्वसु आद्या नाड़ी मार्जार योनी देव गण	पुष्य मध्या नाड़ी मेष योनी देव गण	आश्लेषा अन्त्या नाड़ी मार्जार योनि राक्षस गण
चरणांक चरणाक्षर	१ चू, २ चे, ३ चो, ४ ला	१ ली, २ लु, ३ ले, ४ लो	१ अ, २ इ, ३ उ, ४ ए	१ ओ, २ वा, ३ वी, ४ वू	१ वे, २ वो, ३ क, ४ की	१ कू, २ घ, ३ ङ, ४ छ	१ के, २ को, ३ हा, ४ ही	१ हू, २ हे, ३ हो, ४ डा	१ डी, २ डू, ३ डे, ४ डो
राशि राश्यधिपति वर्ण वश्य	मेष मंगल क्षत्रिय वर्ण चतुष्पाद (अश्विनी–कृत्तिका १)	वृष शुक्र वैश्य वर्ण चतुष्पाद (कृत्तिका २–मृगशीर्ष २)	मिथुन बुध शूद्र वर्ण मानव (मृगशीर्ष ३–पुनर्वसु ३)	कर्क चन्द्र विप्र वर्ण जलचर (पुनर्वसु ४–आश्लेषा)					

नक्षत्र नाड़ी योनी गण	मघा अन्त्या नाड़ी मूषक योनी राक्षस गण	पूर्वाफाल्गुनी मध्या नाड़ी मूषक योनी मनुष्य गण	उत्तरा फाल्गुनी आद्या नाड़ी गो योनी मनुष्य गण	हस्त आद्या नाड़ी महिष योनी देव गण	चित्रा मध्या नाड़ी व्याघ्र योनी राक्षस गण	स्वाति अन्त्या नाड़ी महिष योनी देव गण	विशाखा अन्त्या नाड़ी व्याघ्र योनी राक्षस गण	अनुराधा मध्या नाड़ी मृग योनि देव गण	ज्येष्ठा आद्या नाड़ी मृग योनी राक्षस गण
चरणांक चरणाक्षर	१ मा, २ मी, ३ मू, ४ मे	१ मो, २ टा, ३ टी, ४ टू	१ टे, २ टो, ३ पा, ४ पी	१ पू, २ ष, ३ ण, ४ ठ	१ पे, २ पो, ३ रा, ४ री	१ रू, २ रे, ३ रो, ४ ता	१ ती, २ तू, ३ ते, ४ तो	१ ना, २ नी, ३ नू, ४ ने	१ नो, २ या, ३ यी, ४ यू
राशि राश्यधिपति वर्ण वश्य	सिंह सूर्य क्षत्रिय वर्ण वनचर	कन्या बुध वैश्य वर्ण मानव	तुला शुक्र शूद्रवर्ण मानव	वृश्चिक मंगल विप्र वर्ण कीटक					

नक्षत्र नाड़ी योनी गण	मूला आद्या नाड़ी श्वान योनि राक्षस गण	पूर्वाषाढ़ा मध्या नाड़ी वानर योनी मनुष्य गण	उत्तराषाढ़ा अन्त्या नाड़ी नकुल योनी मनुष्य गण	श्रवण अन्त्या नाड़ी वानर योनी देव गण	धनिष्ठा मध्या नाड़ी सिंह योनी राक्षस गण	शततारका आद्या नाड़ी अश्व योनी राक्षस गण	पूर्वाभाद्रपदा आद्या नाड़ी सिंह योनी मनुष्य गण	उत्तराभाद्रपदा मध्या नाड़ी गौ-योनि मनुष्य	रेवती अन्त्या नाड़ी गज योनि देव गण
चरणांक चरणाक्षर	१ ये, २ यो, ३ भा, ४ भी	१ भू, २ धा, ३ फा, ४ ढा	१ भे, २ भो, ३ जा, ४ जी	१ खी, २ खू, ३ खे, ४ खो	१ गा, २ गी, ३ गू, ४ गे	१ गो, २ सा, ३ सी, ४ सू	१ से, २ सो, ३ दा, ४ दी	१ दू, २ थ, ३ झ, ४ ञ	१ दे, २ दो, ३ चा, ४ ची
राशि राश्यधिपति वर्ण वश्य	धनु: गुरु क्षत्रिय वर्ण मानव	मकर शनि वैश्य वर्ण जलचर	कुम्भ शनि शूद्र वर्ण मानव	मीन गुरु विप्र वर्ण जलचर					

अथ पुरुषजन्मकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रहफलम्

ग्रहा:	तनु: १	धनं २	भ्रात: ३	सुखं ४	पुत्र: ५	शत्रु: ६	स्त्री ७	मृत्यु- ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ: ११	व्यय १२
सूर्य:	शूर:	धनी	सुखी	दुःखी	अपुत्र:	बली	स्त्रीजित्	अल्पायु:	सुखी	शूर:	धनी	पतित:
चन्द्र:	जड:	कुटुम्बी	क्रूर:	सुशील:	पुत्रवान्	अल्पायु:	ईर्ष्यालु:	रोगी	सुभग:	धीर:	ख्यात:	हीनांग
भौम:	व्रणी:	कुटिल:	विक्रमी	पीडित:	अपुत्र:	शत्रुजित्	स्त्रीपीडा	रोगी	पापात्मा	सुखी	धनाढ्य	पतित:
बुध:	विद्वान्	धनी	दुर्जन:	सुखी	मन्त्री	दुःशील:	धर्मज्ञ:	गुणी	पुत्रवान्	विक्रमी	धनी	जड:
गुरु:	चिरायु:	धनी	कृपण:	सुखी	प्रतापी	कामी	प्रसिद्ध:	अल्पायु:	पुत्रवान्	सुकृति:	धनी	दरिद्र:
शुक्र:	सुखी	धनी	पापी	सुखी	धीमान्	रोगी	क्रोधी	नीच:	प्रतापी	सुमति:	धनाढ्य:	खल:
शनि:	रोगी	वक्ता	विक्रमी	दुःखी	दरिद्र:	सुखी	दुःखी	नेत्ररोगी	सुखी	पराक्रमी	धनी	दुःखी
राहु:	रोगी	विरोधी	विक्रमी	दुःखी	दुर्भग:	बली	अशुचि:	गतायु:	दैन्यं	मानी	ख्यात:	पतित:
केतु:	अल्पायु:	धर्महा	शूर:	दुःखी	अपुत्र:	बली	दारहा	क्लेशी	पापी	अधर्मी	धनी	दुर्जन:

अथ स्त्रीजन्मकण्डल्यां तन्वादि भावस्थ ग्रहफलम्

ग्रहा:	तनु: १	धन: २	भ्राता ३	सुखं ४	पुत्र: ५	शत्रु: ६	पति: ७	मृत्यु: ८	धर्म: ९	कर्म १०	लाभ: ११	व्यय १२
सूर्य:	सक्रोधा	निर्धना	सुपुत्रा	सपीडा	अपुत्रा	धनाढ्या	दुःखार्त्ता	विधवा	धर्मिष्ठा	सती	सधना	सक्रोधा
चन्द्र	अल्पायु:	सधना	सुखिनी	दुर्भगा	सुपुत्रा	रोगिणी	पतिप्रि.	दुःखार्त्ता	सुखिनी	धन्या	गुणिनि	हीनांगी
भौम:	दुःखार्ता	वन्ध्या	अभ्रात.	दुःखिनी	अपुत्रा	नीरोगा	विधवा	कुलटा	दुःखिनी	कुपुत्रा	सधर्मा	दुष्टा
बुध:	सुभगा	धनाढ्या	सुखिनी	सुगृहा	सुबुद्धि:	सक्रोधा	सती	कृतघ्ना	सुधर्मा	सुधर्मा	सुलाभा	कृशांगी
गुरु:	सती	सधना	भ्रातृम०	सुखिनी	साध्वी	सापदा	सुकीर्ति	रोगिणी	पुत्राढ्या	सुभगा	सुरूपा	सद्व्यया
शुक्र:	सुखिनी	सहर्षा	धनाढ्या	सुकीर्त्ति	सुसुता	दरिद्रा	पतिप्रि.	प्रमत्ता	सुपुण्या	सुकर्मा	सुपुत्रा	सद्व्यया
शनि:	वन्ध्या	निर्धना	दक्षा	हृद्रोगा	अपुत्रा	सुगुणा	विधवा	दुःखार्त्ता	वन्ध्या	पापा	सुलाभा	मूढा
राहु:	अपुत्रा	दरिद्रा	धनाढ्या	रोगार्त्ता	अपुत्रा	धनाढ्या	दुःखार्त्ता	क्लेशिनी	वन्ध्या	कुकर्मा	सुभगा	खला
केतु:	दुःखार्ता	शोकार्त्ता	रोगाढ्या	मातृहीना	वि[illegible]वा	धनाढ्या	विधवा	सदुःखा	शोकार्त्ता	पापा	सुभगा	सरोगा

अथ सूर्यादिग्रहाणां गोचरफलम्

ग्रहा:	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य:	स्थाननाश	भय	श्री:	मानभंग	दैन्य	विजय:	मार्ग:	पीडा:	सुकृ.ना.	सिद्धि:	धनला.	द्रव्यना
चन्द्र:	धनलाभ	सन्तोष	सुख	रोग:	आनन्द.	धनला.	स्त्रीलाभ	रोग:	धर्मला.	सौख्य	धनला.	धनना.
भौम:	शत्रुभी:	धननाश	धनलाभ	शत्रुभी:	पुत्रकष्ट	धनला.	स्त्रीकष्ट	शत्रु भी:	शत्रु पी.	शोक:	धनला.	धनना.
बुध:	सुख	धनलाभ	शत्रु भी.	पशुलाभ	सुख	स्थानला.	पीडा	धनला	पीडा	सौख्यं	धनला.	धनना.
गुरु:	भयं	धनलाभ	क्लेश	धनलाभ	सुख	शोक:	राजभा.	पीडा	सौख्य	दैन्य	धनला.	पीडा.
शुक्र:	शत्रुनाश	धनलाभ	सौख्य	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रु भी	शोक:	धनला.	वस्त्रला.	दुःखं	धनला.	धनला.
शनि:	भयं	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रु भी:	पुत्रकष्ट	धनला	दोष:	पीडा	धर्मना.	दौर्मन.	धनला.	धनला.
राहु:	हानि:	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक.	श्री:	कलह	मृत्यु:	दुःखं	वैरं	सुख	शोक:
केतु:	रोग:	वैर	सुख	भय	सुख	धनला	कलह	रोग:	पापं	शोक:	कीर्ति.	शत्रु भी:

अथ वर्षकुण्डल्यांतन्वादिभावस्थ ग्रहफलम्

ग्रहा:	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य:	चिन्ता	नृपभी:	धनलाभ	हानि:	कष्टम्	शत्रु ना.	पीडा	कष्टम्	धर्मनाश:	सुख	धनलाभ	पीडा
चन्द्र:	पीडा	धनलाभ	हर्ष:	शत्रु ना.	सुखम्	पीडा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योदय	विजय:	धनलाभ	व्यय:
भौम:	प्रणा:	धननाश	जय:.	व्यसनं	दुर्मति	शत्रु ना.	स्त्रीकष्ट	पीडा	पुण्योदय	राज्यला.	धनलाभ	विरोध
बुध:	सौख्यम्	धनलाभ	सुखम्	द्रव्यला.	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मानलाभ	सुखला.	रोग:
गुरु:	सुखम्	धनलाभ	जय:	बाहु.ना.	पुत्र: प्रा	कष्टम्	सुखम्	रोग:	धर्मलाभ	राज्यला.	धनला.	शोक:
शुक्र:	मानप्रा.	धनप्राप्ति	कीर्तिला.	सुखलाभ	धनलाभ.	शत्रु भी	स्त्रीसुख	कष्टम्	धर्मोदय	मानला.	क्षेमला.	व्यय
शनि:	वातार्ति	पीडा	धनलाभ.	दुःखम्	पुत्र पीडा	जय	स्त्रीकष्ट	रोग:	भाग्याहा.	धनहानि	धनला.	चिन्ता
राहु:	शिरोर्ति	राजभी:	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाश	शत्रु ना.	रोगभी:	कष्टम्	धर्महानि	विजय:	नृलाभ	व्याधि
केतु:	चिन्ता	क्लेश:	आरोग्य	राजभी.	दुर्बुद्धि:	सुखम्	क्लेश:	पीडा	भाग्याना.	धनलाभ	लाभ:	शोक:
मुन्था	सुखम्	यशोऽर्थः	पुष्टि:	दुःखम्	सुखाप्ति:	कष्टम्	व्यसनं	दुःखम्	भाग्योदय	राज्यप्राप्ति:	लाभ:	कष्टम्

अंगस्फुरणफलम्

पुरुषों का दायां अङ्ग और स्त्रियों का बायां अङ्ग फड़कना शुभ है। इन्हीं अङ्गों में तिल, लहसुन, मस्सा हो या खुजली उठे तो भी यथोक्त फल जानना। पैरके तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओंके हाथमें तिल या खाज उठे तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक	पृथ्वीलाभ	स्कन्ध	भोगसमृद्धि	गाल	शुभाप्ति	हस्त	द्रव्य लाभ	पादोपरि	स्थानलाभ	हृदय	इष्ट सिद्धि	नाभि	स्त्री नाश	भग	पति प्राप्ति	उदर	कोष लाभ
ललाट	स्थानलाभ	भ्रू मध्य	सुख प्राप्ति	नेत्र	धनाप्ति	नेत्रोरवः	विजय	वक्ष: स्थल	विजय	कटि	प्रमोद	आंत्रक	कोशवृद्धि	कुक्षि	सुप्रीति	लिंग	स्त्री लाभ

ग्रहाः	गोचराद्यैर्दशाक्रमाद्यैर्ग्रहकृतानिष्टफलशमनार्थं प्रत्येकग्रहाणां दानपदार्थाः												जप सं०	जपनीय मन्त्राः	समय	समिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केसर	मूंगा	रक्त गौ	रक्त चन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	सू. उ.	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कपूर	श्वेत बैल	श्वेत चन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	संध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केसर	कस्तूरी	रक्त बैल	रक्त चन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरा वस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कपूर	शस्त्र	फल	९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचणे	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगन्ध	दधि	श्वेत घोड़ा	श्वेत चन्दन	१६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तेल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णगौ	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	संध्या	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तेल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल	घोड़ा	सूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्री	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारियल	कंबल	बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः	रात्री	कुशा
मुख्य	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कपूर	मिसरी	श्वेत चन्दन	हाथी दान	मुख्येशवत्	मुख्येश मन्त्र	मुख्येशकाले	

सूर्यादिग्रहपीडासु स्नानार्थमौषधानि—(यथा सिद्धौषधं रोगान्नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्। तथा स्नानविधानेन ग्रहदोषः प्रणश्यति॥)

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मनशिला	पञ्चगव्य	बिल्वछाल	गोबर	मालती पुष्प	इलायची	कालातिल	लोबान	लोबान
इलायची	गजमद	रक्त चन्दन	अक्षत	श्वेत सरसों	मनशिला	सुरमा	तिल पत्र	तिल पत्र
देवदारु	शंख	धमनी	फल	मुलहठी	मूलकमूल	लोबान	मुस्थरा	मुस्थरा
खस	सिप्पी	रक्त पुष्प	गोरोचन	मधु	केशर	धमनी	गजदन्त	गजदन्त
केशर	श्वेत चंदन	सिंगरफ	मधु	मालती		सौंफ	कस्तूरी	छागमूत्र
मुलहठी	स्फटिक	माल कगनी	मोती			मुस्थरा		
रक्तपुष्प		मौलसिरी	सुवर्ण			खिल्ला		
रक्तकनेर								

सप्त धान्य—उड़द १, मूंगी २, कणक (गेहूं) ३, छोले (चने) ४, जौ ५, धान्य (तण्डुल) ६, कगनी ७॥

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्तये सामान्यमौषधिस्नानम्

लाजवन्ती (छुईमुई) कूट, खिल्ला, कांगनी, जव सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधी, लोध इन सब औषधियों के जलसे सतीर्थोदक स्नान करनेसे सब ग्रहों की पीडा नाश होती है, तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करनेसे शान्ति होती है। गुरु के वचन, देवता ब्राह्मणोंकी वन्दना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मनकी शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञके करनेसे दुष्ट स्थानोंमें स्थित ग्रह पीडा नहीं करते (श्रीपतिः)॥

शनि विचार—गोचरे द्वादशे नेत्रे हृदये जन्मभे शनिः। द्वितीये गुल्फयोर्मध्ये दशा नाशो च विलोमतः॥ फल—नेत्रस्थे राजसन्तापो हृद् मानसीव्यथा, चरणे भ्रमण देश देश सन्तापयन्त्यनि॥ अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्—कल्याणी प्रवदन्ति वं रविसुता राशेश्चतुर्थाष्टमे, व्याधि बन्धुविरोध देशगमन क्लेश च चिन्ताधिकम्। मृत्यु चैव करोति चापि मनुज दुःखादि वह्निर्भय, लोह शस्त्र भय, सदैवमशुभ कुर्यादसौ सर्वदा॥१॥ अथ बृहत् कल्याणी (साढेसती) फलम्—राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये (२) शनिर्नाना क्लेश करोति दुर्जनभय पुत्रान्यसून्पीडयेत्। हानिः स्थानकरण विदेशगमन शोकश्च साधारणम्। रामार्चाद्धि विनाशन प्रकुरुते दुर्योष्टमे बाधवा॥२॥

अथ ग्रहाणां राशि प्रवेश समये पाद निर्णयः—किसी ग्रह का राशि प्रवेश समय में पाद देखना हो तो अपनी राशिसे जिस दिन ग्रह बदलता हो उस दिन जिस राशि में चन्द्रमा हो उस राशि तक गिने, यह संख्या २।५।९ हो तो रजतपाद, ३।७।१० में ताम्रपाद, १।६।११ में सुवर्णपाद, ४।८।१२ में लोहपाद जानना। गुरु सुवर्णपादमें, शनि लोहपादमें, मङ्गल ताम्रपाद में, शुक्र रजतपाद में शुभ होते हैं। शनिवाहन—जन्म नक्षत्र से जिस दिन शनि बदले उस दिनके नक्षत्र तक गिनकर ९ का भाग देवे, शेष क्रमशः शनिका वाहन समझें—१ गर्दभ, २ अश्व, ३ हस्ति, ४ महिष, ५ जम्बुक, ६ सिंह, ७ श्वान, ८ मयूर, ९ हंस। इसमें वाहनों के गुणानुसार फल समझें।

अथ ग्रहाणां विंशोत्तरीय महादशायामन्तर्दशाज्ञानाय चक्रमिदम्

सूर्य दशा वर्ष ६				चन्द्र दशा वर्ष १०				भौम दशा वर्ष ७			
कृ. उफा. उषा. तन्मध्येऽन्तरम्				रो. ह. श्रवण तन्मध्येऽन्तरम्				मृ. चि. ध. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व.	मा	दि	ग्रह	व.	मा	दि.
र	०	३	१८	च	०	१०	०	मं	०	४	२७
च	०	६	०	मं	०	७	०	रा	१	०	१८
मं	०	४	६	रा	१	६	०	बृ	०	११	६
रा	०	१०	२४	बृ	१	४	०	श	१	१	९
बृ	०	९	१८	श	१	७	०	बु	०	११	२७
श	०	११	१२	बु	१	५	०	के	०	४	२७
बु	०	१०	६	के	०	७	०	शु	१	२	०
के	०	४	६	शु	१	८	०	र	०	४	६
शु	१	०	०	र	०	६	०	च	०	७	०

राहु दशा वर्ष १८				गुरु दशा वर्ष १६				शनि दशा वर्ष १९			
आर्द्रा स्वा. श. तन्मध्येऽन्तरम्				पुन. वि. पूभा. तन्मध्येऽन्तरम्				पु. अनु. उभा. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा	दि.	ग्रह	व.	मा	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
रा	२	८	१२	बृ	२	१	१८	श	३	०	३
बृ	२	४	२४	श	२	६	१२	बु	२	८	९
श	२	१०	६	बु	२	३	६	के	१	१	९
बु	२	६	१८	के	०	११	६	शु	३	२	०
के	१	०	१८	शु	२	८	०	र	०	११	१२
शु	३	०	०	र	०	९	१८	च	१	७	०
र	०	१०	२४	च	१	४	०	मं	१	१	९
च	१	६	०	मं	०	११	६	रा	२	१०	६
मं	१	०	१८	रा	२	४	२४	बृ	२	६	१२

बुध दशा वर्ष १७				केतु दशा वर्ष ७				शुक्र दशा वर्ष २०			
अश्ले. ज्ये. रे. तन्मध्येऽन्तरम्				म. मू. अश्वि. तन्मध्येऽन्तरम्				पूफा. पूषा. भ. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा	दि	ग्रह	व.	मा	दि	ग्रह	व.	मा.	दि
बु	२	४	२७	के	०	४	२७	शु	३	४	०
के	०	११	२७	शु	१	२	०	र	१	०	०
शु	२	१०	०	र	०	४	६	चं	१	८	०
र	०	१०	६	चं	०	७	०	मं	१	२	०
चं	१	५	०	मं	०	४	२७	रा	३	०	०
मं	०	११	२७	रा	१	०	१८	बृ	२	८	०
रा	२	६	१८	बृ	०	११	६	श	३	२	०
बृ	२	३	६	श	१	१	९	बु	२	१०	०
श	२	८	९	बु	०	११	२७	के	१	२	०

त्रिराशिपति चक्रम्

मे	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.
सू.	शु	श	शु	गु	च.	बु
गु.	च	बु.	म.	सू.	शु.	श

वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशयः	
मं.	श.	मं.	गु.	चं.	दि.	प.
शु	श.	मं.	गु.	चं.	रा.	प.

दशा का भुक्त भोग्य—गत नक्षत्र की घटयादिको ६० में से घटाकर इष्ट घटी जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाये हुए अङ्कों में प्रवेश नक्षत्र की घटयादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणाकर पल बना लें, भयात की पलों को दशा के वर्षों से गुणा कर भभोग की पलों से भाग देवें, लब्ध अङ्क वर्ष। शेषांक को १२ से गुणें, भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध मास, फिर शेष को ३० से गुणा कर भभोग की पलोंसे भाग दें लब्ध दिन आवेंगे। यह दशा के भुक्त वर्षादि होंगे। इन्हें दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा होगी।

योगिनी दशाऽन्तर्दशाज्ञानाय चक्रमिदम्

मङ्गला १			पिङ्गला २			धान्या ३			भ्रामरी ४			भद्रिका ५			उल्का ६			सिद्धा ७			सङ्कटा ८		
अ. आर्द्रा चित्रा			भ. पुनर्वसु स्वाति			कृ. पुष्य विशा.			अश्वि. अश्ले अनु. पभा			भरे. मघा ज्ये. उ. भा.			कृ. पूफा मू. रे.			रो. उ.फा पू. षा.			मृग हस्त उ. षा.		
मा. १२		च	मा. २४		सू	मा	३६	बृ	मा	४८	म	मा	६०	बु	मा. ७२		श	मा. ८४		शु.	मा. ९६		के
म.	०	१०	पि.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि	१६	१०	सं.	२१	१०
पि.	०	२०	धा	२	०	भ्रा	४	०	भ.	६	२०	उ.	१०	०	सि	१४	०	सं.	१८	२०	म.	२	२०
धा.	१	०	भ्रा	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०	सि.	११	२०	सं.	१६	०	म.	२	१०	पि	५	१०
भ्रा	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि	९	१०	सं	१३	१०	म.	२	०	पि	४	२०	धा.	८	०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२०	म.	१	२०	पि	४	०	धा.	७	०	भ्रा	१०	२०
उ.	२	०	सि	४	२०	सं.	८	०	म.	१	१०	पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा	९	१०	भ.	१३	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	म.	१	०	पि.	२	२०	धा.	५	०	भ्रा	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
सं.	२	२०	म.	०	२०	पि.	२	०	धा.	४	०	भ्रा	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि	१८	२०

पल्लीपतने (छिपकली के गिरने पर) शुभ तिथि वार नक्षत्र—यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ लाभदायक है। तथा च. बु. गु. शु. इन वारों में भी शुभ फल होता है। अश्वि. रो मृ पु पुन उफा. ह. चि स्वा प. रे. अनु. श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक है। इनके अतिरिक्त तिथि नक्षत्र वारादि में छिपकली गिरे तो अशुभ होता है।

पल्लीपातेकर्तव्य कार्य—पल्ली (छिपकली) तथा सरट (गिरगट) स्पर्श पर वस्त्र- सहित स्नान करें। जन्म नक्षत्र, मृत्यु योग, दग्ध दिन, भद्रा आदिसे दूषित दिनको पापग्रहयुक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमामें पल्ली आदि के स्पर्श होनेसे अरिष्ट होता है। उसकी शांति के लिए जप, होम, मृत्यु-ञ्जय का जप वा तिल स्वर्णदान पंचगव्यसे स्नान तथा घृत का छायापात्रदान करना भी उत्तम है।

अथांङ्ग विभागे पल्ली (छिपकली कोढ़किरली) पतन फलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रू मध्ये	राज्य सबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	पृष्ठरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभय	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता,
जानुद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्र लाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्नभोजन
ललाटे	बंधुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
द० कर्णे	आयुर्वृद्धिः	नेत्रयोः	धनाप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रु नाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	मरणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द. मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दशांगुष्ठे	धनलाभः

छिक्का फल—छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है। गौकी छिक्का मरण करती है। मदिरा के योग से अथवा "छींक सूंघनी छलकर लीन्हीं। पीनस, सर्दी, बास फल होती॥ छींक पीठकी कुशल उबारे। बाईं कारज सबै सवारे ॥१॥ सन्मुख छींक लड़ाई भाखै, छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥२॥ ऊंची छींक कहे जय कारी, नीची छींक होये भयकारी। अपनी छींक महादुखदायी, ऐसे छींक विचारो भाई। ३॥ कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वेश्या, चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले। शयन के समय और सन्ध्यावन्दन जपादि के आरम्भ में छींक अशुभ नहीं होती।

विविध मुहूर्त्ताः

अथ स्त्रीणामाद्यरजोदर्शने शुभाशुभ विचारः

शुभ मासाः—वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुनमास और शुक्लपक्ष श्रेष्ठ है।

शुभतिथि—१।२।५।७।१०।११।१३।१५, कृष्णपक्ष में दशमी पर्यन्त मध्यम, उपरान्त नेष्ट। चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवार श्रेष्ठ। अश्विनी, रो. मृ. पुष्य, उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. अनु. श्र. श. ध. रे. नक्षत्र शुभ। पुन कृ. म. वि. मू. नक्षत्र मध्यम, अन्य अशुभ। वृ. मि. कर्क, क. तुला ध. मी. लग्न शुभयुक्त तथा शुभदृष्ट हो तो प्रथम रजोदर्शन शुभ है।

अशुभ समय—अष्टमी, द्वादशी, षष्ठी, रिक्ता, अमावस, संक्रांति, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति ग्रहण, मार्ग में, कुदेश, उत्पात का समय इन योगों में प्रथम रजोदर्शन होवे तो अनिष्ट है। इसका यथाविधि शान्तिविधान करने पर शुभ होवे।

स्नान मुहूर्त्त—ह. स्वा. मृ. अश्विनी अनु. ध. रो. उत्तरा ३. पु. शुभतिथि शुभवार में कुयोगरहित समय में, लग्नबल देख शुभनवांश में, प्रथम ऋतुमती स्नान करे।

अथ गर्भाधान मुहूर्त्त विचार—रजोदर्शन की ४ रात्रि को छोड़कर समरात्रि में, रो. मृ. ह. स्वा. अनु. श्र. ध. श. नक्षत्र तथा मेष कर्क सि. तुला. ध. म. इन लग्नों में, लग्न से ३। ६। ११ वें में पापग्रह और र. मं. गु. लग्न को देखें तथा विषमराशि नवांश में हों, पति पत्नि को चन्द्र शुभ हो, ऐसे समयमें गर्भाधान संस्कार करें। पुन. अश्वि. पुष्य चि. नक्षत्र गर्भाधान मे मध्यम माने हैं। गर्भाधान में चन्द्रबल स्त्री को विशेष होना चाहिए।

गर्भाधानानन्तर दश मासों के स्वामी—प्रथम मास का स्वामी शुक्र, द्वितीय का मंगल, तृतीय का गुरु, चतुर्थ का सूर्य, पंचम का चन्द्र, षष्ठ का शनि, सप्तम का बुध, अष्टम का गर्भ लग्नपति, नवम का चन्द्र और दशम मास का स्वामी सूर्य है। अष्टम मास में श्र. रो. पुष्य. नक्षत्र शुभ तिथिवार और अष्टम स्थान शुद्ध लग्न में गर्भरक्षार्थविष्णु-पूजन करे।

पुंसवन सीमन्त मुहूर्त्त विचार—गर्भ के द्वितीय तृतीय मास में पुंसवन करना चाहिए। छठे और आठवें मास में मासाधिपति बलवान् होने पर सीमन्त कर्म करे। पुंसवन सीमन्त में गुरु शुक्र के अस्त का दोष नहीं है। र. मं. गु. वार, मतांतरसे सो. बु. शुक्रवार, दम्पति का चन्द्रबल, ताराशुद्धि देख रो., मृ. पुष्य. पुन. हस्त मू. म. उत्तरा ३ जन्म-नक्षत्र बिना इन नक्षत्रों में तथा १।२।३।५।७।१०।११।१३ शुक्लपक्ष की तिथियों में, कृष्ण पक्ष में १० पर्यन्त शुभ, पूर्वान्हि श्रेष्ठ है। पुरुष संज्ञक लग्न तथा नवांश में लग्न से १।४। ५।८।९।१० में शुभग्रह। ३।६।११ में पापग्रह, चन्द्र १।६।८।१२ वें वर्ज्यकर अन्य स्थानों में हो ऐसे मुहूर्त में पुंसवन और सीमन्त संस्कार करना श्रेष्ठ है।

मेधाजनन संस्कार—नालछेदन से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में स्वर्ण लगाकर स्वर्णसहित अंगुली से शहद में घोघृत मिलाकर ॐ भूस्त्वयि दधामि. "ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि ... मन्त्रों से नवजात बालक को थोड़ा-थोड़ा मधु घृत बार बार चटावें, ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तनपान मुहूर्त्त—पंचम दिन अथवा भद्रा व्यतिपात वैधृति रिक्ता तिथि का त्याग कर शुभतिथि बार में पुन पुष्य. मृ. ह. श्र. रे. नक्षत्र में स्तनपान करना शुभ है।

प्रसूति स्नानमुहूर्त्त—रिक्तातिथि को छोड़कर शुभ तिथि, र. मं. गु. बार अश्विनी रो मृ. तीनों उत्तरा, ह. स्वा. अनु. रेवती नक्षत्रों में कुयोग रहित दिन में प्रसूति स्नान शुभ है।

जलपूजन मुहूर्त्त—मास के समाप्त होने पर बु. गु. चन्द्रवार, रिक्ता अमावस रहित तिथियों में मृ. पुन. पु. ह. अनु. मू. नक्षत्रों में जलपूजन श्रेष्ठ है। चैत्र, पौष, अधिकमास, गुरु शुक्र का अस्त, मास पूरा होने पर वर्ज्य करें अर्थात् एक मास तक इनका दोष नहीं।

जातकर्म नामकरण संस्कार—जातकर्म नाल छेदने के पूर्व करना योग्य है। उस समय न हो सके तो सूतक निवृत्त होने पर ब्राह्मण ११ वें, क्षत्रिय १३ वें, वैश्य १६ वें, शूद्र २१वें दिन नामकर्म पूर्वकुलाचार के अनुसार करें। सूतक समाप्ति पर ११ वें या १२ वें दिन जातकर्म नामकर्म संस्कार न हुआ हो तो भद्रा व्यतिपात वैधृति संक्रांति रहित १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में, शुभवार, अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. तीनों उत्तरा अभि. श्र. ध. श. रे. इन नक्षत्रो में लग्न नवांश बल की योजना कर विधि के अनुसार बालक के दक्षिण कर्ण में तीन बार राम कहे।

दोलारोहण (बालक को झूले में झुलाना)—जन्म दिवस से १०।१२।१६।१८।३२वें दिन रिक्ता अमावसरहित तिथि, शुक्रवार, अश्वि. रो. मृ. पुष्य. ह. चि. अनु. अभि तीनों उत्तरा रे. नक्षत्रों में शुभ होता है। सूर्य नक्षत्र से आगे ५ और पीछे ७ नक्षत्र शुभ होते हैं।

अथ निष्क्रमण मुहूर्त्त—बारहवें दिन बालक का निष्क्रमण करें। सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य और नक्षत्रों के दर्शन करावें। यह न हो तो तृतीय चतुर्थ मास में मं. श. वर्जित वारों में रिक्ता भद्रा अमावस आदि कुयोग रहित शुभ दिन में, अश्वि. रो. पुन. पुष्य. ह. अनु. स्वा. मू. श्र. ध. नक्षत्रों में शुभ है।

भूम्युपवेशन—पांचवें मास में पृथ्वी और वराह का पूजन कर रिक्ता अमा. रहित तिथि शुभवार, अश्वि. रो. मृ. पुष्य. हस्त. अनु. ज्ये. अभि. तीनों उत्तरा नक्षत्रों में, स्थिर लग्न में बालक की कमर में सूत्र बांधकर पृथ्वी पर बिठावें। मन्त्र यह है—ॐ रक्षैनं वसुधे देवि ! सदा सर्वगते शुभे ! आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये ! ॥"

बालक को पृथ्वी पर बिठाने के समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, दवात सुवर्ण, चांदी, शस्त्र, वेद की पुस्तकें, धान्य, मशीनें, छोटी मोटरें, इन्जिन आदि वस्तुएँ रखें, इनमें से जिस वस्तु को बालक पहले ग्रहण करे उसी से उसकी जीविका होती है, इसलिए आगे वही विद्या उसको पढ़ाई जावे।

12

में कन्या को भद्रा व्यतिपातादि दोष रहित १।३।५।७।१०।१३।१५ इन तिथियों में शुभ वार, अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. अभि. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा, रे. इन नक्षत्रों में, जन्मलग्न या जन्मराशि से आठवां लग्न या नवांश तथा मीन, मेष, वृश्चिक लग्न को त्याग कर दशम स्थान में पापग्रह न हो तो अन्नप्राशन कराना श्रेष्ठ है।

कर्णवेध—चतुर्मास (आषाढ़ शु० ११ से कार्तिक शु० ११ तक) चैत्र पौष जन्म मास तिथि नक्षत्र, क्षयतिथि ४।६।१४ और सम वर्षों को त्याग कर जन्म से १२ वें या १६ वें दिन अथवा ६।७।८ वें मास में या विषम वर्षों में, शुभवार अश्वि. मृ. पुन. पु. ह. चि. अनु. अभि. श्र. रे. नक्षत्रों में लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो, वृ. तु. ध. मीन लग्न और लग्न में गुरु हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ होता है।

मुण्डन चौल (चूडाकर्म) संस्कार—बालक की माता को ५ मास का गर्भ हो तो ५ वर्ष से न्यून अवस्था के बालक का चौलकर्म नहीं करना। ज्येष्ठ मास में नहीं करना, तथा चैत्र मास को छोड़ विषम वर्ष में उत्तरायण में, २।३।५।७।१०।१२।१३ तिथियों में, अश्वि. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. ज्ये. अभिजित् श्र. ध. श. रे. नक्षत्रों में। अष्टम स्थान शुद्ध होने पर चौल करना श्रेष्ठ है। तथा कुलाचारानुसार इष्टदेवता के आगे भी मुण्डन संस्कार और कर्णवेध कर दिया जाता है, यह 'यथा कुलधर्मतः' इस स्मृति के अनुसार ठीक ही है।

क्षौर करने के नियम तथा मुहूर्त्त—चौलकर्म की तिथि और नक्षत्र क्षौर (बाल कटाने) के लिए श्रेष्ठ है। रवि मंगल शनिवार, पूर्व क्षौर से ६ वां दिन, ४।८।६।१४।१५।३० तिथि, संक्रांति, रात्रि, संध्याकाल, बिना आसन, संग्राम में, यात्रा के दिन, स्नान करके शरीर में उबटन लगाने के अनन्तर, भोजन के बाद क्षौर कराना अशुभ है। परन्तु विवाह यज्ञ, मृतक कार्य, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मणाज्ञा, राजाज्ञा से किसी, समय में क्षौर बनवा सकते हैं। राजकर्मचारी तथा रूपजीवी जैसे नट, भाट, बहुरूपिये नाटक कम्पनी, फिल्म कम्पनियों में काम करने वाले प्रतिदिन क्षौर बनवा सकते हैं, उनके लिए मुहूर्त्त की आवश्यकता नहीं। ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय मंगल को, वैश्य शूद्र शनिवार को भी क्षौर बनवा सकते हैं, तथा ब्राह्मण को शाखेश के वार में भी क्षौर करवाने में हानि नहीं।

कन्या का नाक छेदन मुहूर्त्त—शुक्ल पक्ष, शुभ तिथि शुभ वार कुयोग रहित प्रथम प्रहर में कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, स्वाति, शत. इनमें नाकछेदन करना शुभ है।

कन्या को सीना पिरोना सिखाने का मुहूर्त्त—रिक्ता अमावस रहित तिथि, रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार। अश्वि. पुन. चि. अनु. ध. इन नक्षत्रों में कुयोगादि रहित शुद्ध दिन में कन्या को चन्द्र बल देख सीना कसीदा आदि का कार्य सिखाना आरम्भ करें।

अक्षरारम्भ—उत्तरायण में जन्म से ५, ७ वें वर्ष २।३।५।६।११।१२ तिथि, शुक्र वार, अश्वि. आर्द्रा, पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. अभि. श्र. रे. इनमें तथा चररहित लग्नों में गणेश विष्णु सरस्वती लक्ष्मी तथा अपने कुल देवताओं का पूजन कर अक्षरारम्भ करें।

विद्यारम्भ मुहूर्त्त—उत्तरायण, फाल्गुन मास छोड़कर २।३।५।६।१०।११।१२ तिथि तथा रवि, गुरु, शुक्रवार और अश्वि. रो. मृ. आर्द्रा. पुन. पु. आश्ले. ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. उत्तरा तीनों और रेवती नक्षत्रों में विद्यारम्भ शुभ है। र. मं. श. वार, रिक्ता तिथि, ज्ये. अश्ले. म. तीनों पूर्वा. भ. कृ. वि. आर्द्रा. उषा. श. नक्षत्र अंग्रेजी फारसी विद्यारम्भ के लिए शुभ हैं।

उपनयन संस्कार—बालक के जन्म से वा गर्भ से ब्राह्मण ८ वें, क्षत्रिय ११ वें, वैश्य १२वें वर्ष यज्ञोपवीत धारण करें। किसी कारणवश यह काल लोप हो तो ब्राह्मण १६ वें, क्षत्रिय २२ वें, और वैश्य २४वें वर्ष तक संस्कार करा सकते हैं। उत्तरायण देवशयन के पूर्व र. चं. बु. गु. शु. वार, सामवेदी को मंगलवार भी विहित हैं, शुक्लपक्ष की २।३।५।१०।११।१२ तथा कृष्ण पक्ष की २।३।५ तिथि अश्वि. रो. मृ. आर्द्रा पुष्य आश्ले. तीनों उत्तरा ह. चि. स्वा. अनु. मू. अभि. श्र. ध. शत. रे. क्रूरयुक्त तथा वेधरहित इन नक्षत्रों में उपनयन संस्कार शुभ है। बालक का गुरुबल तथा चन्द्रबल देखे। सामवेदी को भौमबल भी आवश्यक है। ज्ये० शु० २, आषाढ़ शु० १०, पौष शु० ११, माघ शु० १२, संक्रांति दिवस, रोगबाण, (८।१७।२६ रवि के गतांशाः) गुरु शुक्र के बालवृद्धास्त को छोड़कर पूर्वाह्ण में तथा अभिजित् मुहूर्त्त में यज्ञोपवीत धारण करावें। लग्नेश और च. शु. गु. ६.८ में और च.शु. १२वें. पापग्रह १।५।८ में अशुभ हैं। वृष तथा कर्क का पूर्णचन्द्र लग्न में शुभ होता है। चैत्र में मीन के सूर्य में यज्ञोपवीत संस्कार श्रेष्ठ है।

अभिजि मुहूर्त्त—नित्य मध्याह्न संधिकालकी एक घटी अर्थात् स्थानीय (लोकल) ११ बजकर ४८ से १२ बजकर १२ मिनट दुपहर तक अभिजित् मुहूर्त्त में अनेक दोष निवारण की शक्ति है, अतः कोई शुभलग्न न बनता हो तो उपनयनादि इस अभिजिमुहूर्त्त में करना शुभ है। यथा—"**अभिजित्सर्वदेशेषु मुख्यदोषविनाशकृत्। मध्यंदिन गते भानौ मुहूर्त्तोऽभिजिदाह्वयः॥ नाशयत्यखिलान्दोषान् पिनाकी त्रिपुरं यथा।**"

अथ विवाह संस्कार

विवाह संस्कार सर्वश्रेष्ठ संस्कार है, इससे मनुष्य धर्म अर्थ काम और मोक्षकी सिद्धि कर सकता है। विवाह के पश्चात् ही पुरुष पुरुषत्व को प्राप्त होता है। विवाह होने पर पूर्ण पुरुष होता है और सदाचारी सन्तान उत्पन्न करके देश, धर्म जाति सेवा के साथ देव ऋषि, पितृऋण से भी उन्मुक्त हो सकता है। इसलिए इस संस्कार को मुनियों ने श्रेष्ठ बताया है, यह संस्कार योग्य समय में होने पर ही दाम्पत्य सुख, ऐश्वर्य भोग और उत्तम प्रजोत्पादन करके मनुष्य अपने पितृऋण से मुक्त होता है। अतः विवाह-संस्कार का समय-निर्णय हमारे ऋषि-मुनियों ने अतिसूक्ष्मता से किया है। आजकल नास्तिक लोग सर्वकाल विवाह के लिए शुभ मान कर चाहे जब रजिस्टर पद्धति से कोर्ट में जाकर तथा कपोल-कल्पित नियमअनुसार विवाह करवा लेते हैं, यह सर्वथा अनुचित है। विवाह के लिए वेदों में भी पर्याप्त निर्णय है। जैसे-जैसे विज्ञान-विद्या का विकास होता रहा तैसे-तैसे इस पर सूक्ष्म विचार प्राचीन आचार्यों ने किए हैं, जो कि आधुनिक नूतन विज्ञान से भी बहुत श्रेष्ठतम माना जा रहा है। जिसका यहाँ संक्षेप में विचार लिखते हैं—

ब्रह्मचर्य के पश्चात् मनुष्य अपने विषम वर्षों में गृहस्थाश्रम में प्रवेश करें। पुरुष २५ के पूर्व तथा कन्या १६ के पूर्व विवाह न करें। कन्या के समवर्षों में शुभ मुहूर्त्त में कन्या का पिता वा पालक योग्य वर्ण के वर का निश्चय कर पहले वाग्दान करें। कन्या का वाग्दान करने से पूर्व वर-कन्या की कुण्डली का मिलान तथा गुण-मिलान अवश्य करें, ताकि नूतन दम्पती अपना जीवन सुखमय व्यतीत कर सकें। कई नास्तिकमतवादी यह

कहते है कि इतना घटित मिलान करने पर भी कहीं-कहीं वर कन्या को दुःख का सामना करना पड़ता है, तथा दाम्पत्य वियोग होता है. यह क्यों ? परन्तु घटित मिलान करते समय निम्नलिखित बातों का अवश्य ध्यान रखना चाहिए (१) क्या वर-कन्या का जन्म टाइम ठीक-ठीक है ? (२) कई वर्षों से प्राचीन गणित में अन्तर आता है अतः ऐसे गणित से बनाया जन्म पत्र ठीक-ठीक फलदायक नहीं हो सकता. इसलिए वर कन्या के जन्म पत्र शुद्ध सूक्ष्म एवं दृक्तुल्य पंचांग की गणित में ज्योतिषशास्त्र के अनुसार बने है या नहीं ? इसकी जांच उत्तम गणितज्ञ से करावे । (३) क्या ज्योतिषीजी ने बालक का जहां का जन्म है वहीं का सूर्योदय लेकर जन्म पत्र बनाया है ? (४) क्या लग्नसारिणी एवं सूर्योदय जन्म-स्थान के लेकर लग्नसाधन किया है ? आदि बातों का निर्णय कर जन्मपत्र विद्वान् गणितज्ञ से बनवाकर मिलाने पर ही वह मिलान योग्य होकर फलदायक होता है ।

विवाह के पहले कन्या का नाम बदलना—यदि कन्या और वर की जन्म कुण्डली न हो और दोनों के नाम परस्पर मिलान में शुभ न हों तो आवश्यकता में कन्या का नाम बदला जा सकता है, वर का नहीं । कन्या का नाम बदलने के लिए मेलापक-सारिणी में वर के नक्षत्र के नीचे जहाँ दोषांक का अभाव हो या दोष थोड़ा समझकर ऋण (—) का चिन्ह लिखा हो उसी खाने में ऊपर गुणसंख्या भी १८ से अधिक मिले उसी कोष्ठक के बाईं ओर जो नक्षत्र मिले उसी के आद्यक्षरानुसार सुन्दर नाम रख लेना चाहिए ।

जन्मभ जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभम् । व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निधनप्रदम् ॥

वर का प्रसिद्ध नाम तथा कन्या का जन्म नाम, कन्या का प्रसिद्ध नाम और वर का जन्म-नाम ऐसा विपरीत कदापि न लें । यह वर कन्या के लिए हानिप्रद है या दोनों का जन्म-नाम ही लें और जन्म-नाम न हो तो दोनों के प्रसिद्ध नाम लें । विशेषतः दोनों के जन्म नाम ही लेना शास्त्रोक्त और आवश्यक है । यथा—

विवाहे सर्वमाङ्गल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे । जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ॥१॥
कुर्यात्षोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते । सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥२॥
मन्त्रे पुनर्भू वरणे नामराशेः प्रधानता । कुर्यात्षोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते ॥३॥

नाम राशि विचार

देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके । नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥४॥
काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते स्वरोदये । मन्त्रे पुनर्भू वरणे नामराशेः प्रधानता ॥५॥
विवाहघटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम् । नाम भात् चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥६॥

इत्यादि विचारों से विवाह मेलन में जन्म समय से प्राप्त हुए नामराशि से ही मिलान करना चाहिये । जन्म-नाम प्राप्त न हो तो प्रसिद्ध नाम लेकर विवाह मिलायें ।

ताराबल विचार—कृष्णाष्टम्यूर्ध्वतो ग्राह्यं दशाहं तारकाबलम् । परतोऽब्जबलं ग्राह्यं सर्वमंगलकर्मसु । तारापवादः—पर्याये प्रथमे वर्ज्याःविपत्प्रत्यरिनैधनाः । द्वितीये त्वधका वर्ज्यास्तृतीये त्वखिलाः शुभाः । आद्यांशोविपदि त्याज्यः प्रत्यरौ चरमो शुभः । वधस्त्र्यंशस्त्रुतीयोऽपि त्रिधा ह्यशुभ शोभना ।

अथ शुभाशुभताराज्ञानाय चक्रम्

जन्मनक्षत्र से दिननक्षत्र तक गिने, गणनानुसार जन्मादि तारा तथा शुभादि फल समझे.								
१ १० १९	२ ११ २०	३ १२ २१	४ १३ २२	५ १४ २३	६ १५ २४	७ १६ २५	८ १७ २६	९ १८ २७
जन्म शुभ	सम्पत शुभ	विपत् अशुभ	क्षेम शुभ	प्रत्यरि अशुभ	साधक शुभ	वध अशुभ	मित्र शुभ	परममित्र शुभ

वर वरण मुहूर्त्त

पचांग-शुद्धि देख कुयोग रहित दिन में, शुभ तिथि शुभ वार, कृ.रो.पू.३ उ.३. नक्षत्रों में, चन्द्र बल देख शुभ लग्न तथा शुभ नवांश में, अपने कुल का पुरोहित या कन्या का भ्राता वर के यहाँ आकर पूर्वोत्तर या पूर्वापर दिशा में बैठ कुकुम वा केसर से वर के तिलक करे, वस्त्र यज्ञोपवीत आदि वर को देकर वर का सत्कार करें । कुलानुसार रुपया, मोहर (अशरफी) और श्रीफल वर को देकर गुड़, खजूर या बताशा वर के मुँह में देकर "मेरी बहन अमुक नाम की (भ्राता हो तो अन्य हो तो यथा उचित संबोधन दें) आपको दी है" ऐसा कहकर यह मन्त्र पढ़े—तस्मिन् कालेऽग्निसान्निध्ये स्नातः स्नाते ह्यरोगिणे ।
अव्यंगेऽपतितेऽक्लीवे पिता (दाता) तुभ्यं प्रदास्यति ॥

कन्या वरण मुहूर्त :—

पंचांग शुद्धि देख कुयोग रहित दिन में, कृ.पूर्वा. ३. स्वा.अनु.उषा. श्र.ध.वा विवाहोक्त नक्षत्रों में शुभ समय में वस्त्रालंकार सहित फल पुष्पों से कन्या वरण कर कुलानुसार आचार करें ।

विवाह निश्चय के कुछ नियम

वधू, वर की सगोत्र और वर की माता की सात पीढ़ी में से न हो । दो सगी बहनों का विवाह दो सगे भाइयों से न करें । दो सगी बहिनों का, दो सगे भाइयों का वा भाई बहिनों का एक संस्कार ६ मास में साथ ही न करें । लड़की के विवाह के पीछे लड़के का विवाह हो सकता है । पृथक् माता (सौतेली) से हुए भाई बहनों का एक संस्कार द्वार भेद, मण्डपभेद और आचार्य भेद से हो सकता है । यमल (जोड़े) भाई बहनों का एक ही मण्डप में विवाह करने में हानि नहीं । इसी प्रकार विवाह से पीछे मुण्डन, यज्ञोपवीत ६ मास तक न करें । विवाह, उपनयन, चूड़ा, सीमन्त, केशान्त से ६ मास तक लघु मंगलकार्य न करें । संवत्सर भेद से जैसे माघ, फाल्गुन में एक मंगलकार्य हो तो आगे चैत्र के बाद दूसरा मंगलकार्य कर सकते हैं, उसमें कोई दोष नहीं । ऊपर कहा हुआ ६ मास का व्यवधान तीन पीढ़ी तक के ही पुरुषों को कहा है, अन्य पीढ़ी के पुरुषों को यह बन्धन नहीं ।

मंगलकार्य के मध्य पितृकर्म (श्राद्धादि) अमंगल कार्य न करें । वाग्दान के अनन्तर वर कन्या के तीन पीढ़ी में किसी की मृत्यु हो जाय तो १ मास के बाद अथवा सूतक निवृत्त होने पर शांति करके विवाह करने में हानि नहीं । विवाह के पूर्व नांदीमुख श्राद्ध के बाद तथा विनायक स्थापन (बड़ा विनायक) हुए बाद तीन पीढ़ी तक की मृत्यु हो जाये तो वर कन्या तथा वर कन्या के माता पिता को अशौच नहीं लगता है । निश्चित समय पर विवाह कर देना चाहिए ।

वर-वधू गुणमेलापक सारिणी भाग-१

ऊर्ध्वाधरस्थान्यपि भानि पुंसां पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम् ॥ संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वं शुभं तत्स्मृतितोऽधिकं यत् ॥ १ ॥

		वर.	रा.	मे.	मे.	मे.	वृ.	वृ.	वृ.	मि.	मि.	मि.	क.	क.	क.	सिं.	सिं.	सिं.	क.	क.	क.	तु.	तु.	तु.	वृ.	वृ.	वृ.	ध.	ध.	ध.	म.	म.	उ.	कुं.	कुं.	कुं.	मी.	मी.	मी.	रा.
			भा.	१	१	।	।।।	१	।।	।।	१	।।।	।	१	१	१	१	।	।।।	१	।।	।।	१	।।।	।	१	१	१	१	।	।।।	१	।।	।।	१	।।।	।	१	१	भा.
वधू.	रा.	भा.	न.	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ	पु.	पु	पु.	आ	म.	पू.	उ.	उ.	ह.	चि	चि	स्वा	वि.	वि.	अ.	ज्ये	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	न.
१	मे.	१	अ.	२८ ३	३३ ०	२७॥	१८॥ ४	२३॥ ४-	२२॥ ४-	२५॥	१६॥ ३	१७॥ ३	२२॥ ३	३०॥	२७	२० ५+	२४ ५+	१४॥ ३५	९॥ ३६	१०॥ २३६	१२॥ ६	२२	२८ -२	२२	१८॥ -६	२४॥ ६-	१३ ३६	१२॥ ३५	२४॥ +५	२३ +५	२५	२६	२०	१९॥	१४॥ ३	१५॥ ३	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२६ ४+	अ.
२	मे.	१	भ.	३३	२८ ३	२८ ०१	१८ ०४१	२६॥ ४-	१४॥ ३४	१७॥ ३	२५॥	२५॥	३०॥	२२॥ ३	२४॥ १	१९ -१५	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१८॥ ६	३॥ १३६	१३ १३	२८	२१ १-	१८॥ -१६	१७॥ ३६	१९॥ -१६	१९॥ -१५	१७॥ ३५	२५॥ ५+	२७॥	२६	१० १३२	९॥ १३२	१९॥ -१	२३ -२	२२॥ २४+	१६॥ ३४	२५॥ ४+	भ.
३	मे.	।	कृ.	२६॥	२८ १	२८ ३	१८ ३४	१० १३४०	१६॥ ४	१९॥	१९॥ १	१९॥	२४॥	२६॥	२२॥ ३	१५॥ ३१	१९ १५	२० १५	११ १६	१४ ६	१७॥ ६	२७	१४ ३	११ ३	१६॥ ३६	१९॥ ६-	२५॥ -६	२५ ५+	१९॥ १२५	११॥ ३१५	१३॥ १३	१३॥ २३	२१	२४॥	२५॥	१८॥ १	१७॥ १४	११॥ १४	१०॥ ३४	कृ.
४	वृ.	।।।	कृ.	११ ४	११ १४	११ ३४	२८ ३	१८॥ १३	२६॥	१७ ४+	१७ १४	१७ ४+	२१	२३	१९ ३	११ ३	१ १	२२ १	२० १५	१८ ५+	२३ ५+	२२ ६-	९ ३६	१४ ३६	२१॥ ३	२४॥	३०॥	२२ ६	११ १२६	० १३६	१२ १३५	१०॥ ३१२	२४॥ ५+	२१	३०	२३ १	२० १	२७॥ १	१३ ३	कृ.
५	वृ.	१	रो.	२३॥ -४	२३॥ ४	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२८॥ ०४	२३ ४+	२२ ४+	२	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२५॥ ५+	२५॥ ५+	१८॥ -१५	१७॥ -१६	१५ ३६	८ ३१६	१४॥ ३१	२९॥	२३॥ १	१३॥ १	१९॥ ६	११ ३६२	१६ ३५२	१८ ३१	१९ -१५	२४॥ -१	२४ -१	२९	२६	२७	१९ ३	रो.
६	वृ.	।।	मृ.	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	३१	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ०४	२२॥ +	२६	१९ ३	२१	१९॥	१५॥ ३	२४॥	२३ ५+	२५॥ ५+	११॥ ३५	१०॥ ३६	२४॥ -६	१७ ६-	२३॥	२१॥ ३	२४॥	१४॥ ६	१०॥ ३६	१६॥ २६	२१॥ २५+	२६ ५+	१२ ३५	१७॥ ३	२६॥	२८	२५	१८ ३	२७	मृ.
७	मि.	।।	मृ.	२६॥	१७॥ ३	२१॥	११ +४	२६॥ ४+	१९॥ ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१८॥ -४	११॥ ४	१३॥ ४	२२॥	१८॥ ३	२५॥	३१॥	३४	२० ०३	१३ ३५	२७ +५	१९॥ ५+	१३ ६	१३ ३६	१४ ६	२३	१२ ३	२१ २+	११॥ -२६	२४ -६	१० ३६	१२ ५	२१ ५+	२२॥ ५+	२४	१७ ३	२६	मृ.
८	मि.	१	आ.	१८॥ ३	२६॥	२१॥ १	११ ३+	२४ ४+	२१॥ ४+	३४	२८ ३	२५ ३०	१२ ०३४	२०॥ ४-	१२॥ १४	२१॥ १	२७॥	२०॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १	२० -१५	२७ ५+	२० +१५	१३॥ १६	११ २६	५ १३६२	११ १३	२८	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१७ -१६	११ १५+	१२ १३५	१७ ३५	१८॥ ३	२६	२६	आ.
९	मि.	।।।	पु.	१८॥ ३	२५॥	२१॥	१९ ४+	२२ ४+	२३ ४+	३१॥	२४ ३	२८ ३	१४ -३४	२१ ५०	१५॥ -४	२१॥ +२	२५॥ २+	११॥ ३	२३॥ ३	२४॥ ३	२६॥	१९॥ ५+	२७ ५+	२१ ५+	१४॥ ६	२०॥ ६	६ ३६	१४ ३	२७	२७	२१॥ -६	२२॥ ६	१६॥ -६	१८॥ ५+	१३ ३५	१६ ३५	१७॥ ३	२६॥	२६	पु.
१०	क.	।	पु.	२१॥ ३	२८॥	२४॥	२१	२४	२५	१७॥ ४	१० ३४	१३ ३४	२८ ३	३४ ०	२८॥	१६॥ +२४	२०॥ २४	१४॥ ३४	१६॥ ३	१७॥ ३	१९॥	१९	२६॥	२०॥	११ ५+	२५ ५+	१०॥ ३५	७॥ ३६	२०॥ -६	२०॥ -६	२६	२७	२१	१२ ६	५॥ ३६	१४॥ ३४	१६ ३५	२५ ५+	२४॥ ५+	पु.
११	क.	१	पु.	२१॥	२०॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	१०॥ ३४	१८॥ ४	२४ ४	३४	२८ ३	२९ ०	१८॥ ४+	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२५॥	२५॥	११॥ ३	११ ३	२५	२०॥	१९ -५	१७ ३५	२० -५	१०॥	१२॥ २३६	२०॥ ६	२६	२७ -२	१३ ३	४ ३६	१३ ६	१७॥ ६	२६ ५+	१८ ३५	२६ ५+	पु.
१२	क.	१	आ.	२५	२३ १	२३॥ ३	१८ ३	११ ३१	११	११॥ ४	११॥ १४	१३ ४	२७॥	२८	२८ ३	१५ ०३४२	११॥ १४२	१७॥ १४	१९॥ १	१९॥	२४॥	२४	११ ३	१६ ३	१४॥ ३५	१२ -५	२५ -५	२२॥ ६	१५॥ १६	७॥ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७ ६	१८ ६	११ १६	१७॥ १४	२० १४	१२ ३५	आ.
१३	सिं.	१	म.	१४ +५	११ ११	११॥ ३१	१६॥ ३	९॥ ३१	१०॥	२०॥	२०॥ १	११॥ -२	१६॥ +२४	१८॥ ४+	१६ ३४२	२८ ३	३० ०१	२६॥ १	१४॥ १४	१४॥ ४+	१९॥ ४	२३॥	१०॥ ३	१५॥ ३	२४॥ ३	२४॥	३२	२४ +५	१९ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१७॥ ६	२३॥	२४॥	१०॥ १	१७॥ -१६	१८॥ १६	१२ ३६	म.
१४	सिं.	१	पू.	२५ ५+	१७ ३५	१९ -१५	२० १	२३॥	१५॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२५॥ -२	२२॥ +४	१६॥ ३४	१६॥ १२४	३० -१	२८ ३	३४ ०	२४ ०४	२०॥ ४+	५॥ १३४	९॥ १३	२४॥	१०॥ १	२३॥ -१	२२॥ ३	२४॥ -१	२० १५+	१७ ३५	२४ ५+	११ ६	१८॥ ६	५॥ १३६	९॥ १३	१८॥ १	२३॥	२३॥ -६	१६॥ ३६	२४॥ ६-	पू.
१५	सिं.	।	उ.	१५॥ ३१	२५ ५+	२० -१५	२ १	२६	२४॥	२७॥	१९॥ ३	१७॥ ३	१४॥ ३४	२५॥ ४+	१८॥ -१४	२६॥ -१	३४	२८ ३	१६ ३४	११ ०३४	१२॥ १४२	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३०॥	१६॥ १३	९॥ १३५	२५ ५+	२५ ५+	२० ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ १	१०॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२४॥ ६-	उ.
१६	क.	।।।	उ.	११ २३६	२१ ६	१६ ३६	२०॥ +१५	२५॥ ५+	२४ ५+	३१॥	२१॥ ३	२३॥ ३	१७॥ ३	२७॥	२०॥ १	११॥ १४	२३ ४+	१७ ३४	२८ ३	२७ ३०	२४॥ १२+	१६॥ -१२४	२५॥ ४+	१६॥ -१२४	१८ १२	२६	१२ १३	१४ १३	२९॥	२९॥	२४ ५+	२४ ५+	१५॥ +१५	१६॥ -१६	९॥ ३१६	१४॥ ३६	१७ ३	२८	२६	उ.
१७	क.	१	ह.	११ ३६	१८॥ ६	१६ ६	२०॥ ५+	२३॥ ५+	२४॥ ५+	३२	१८॥ ३	२३॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२१॥	१६ +४	२०॥ ४+	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०	२० ०४	२६॥ ४+	१८॥ ४+	२०	२६	१३॥ ३	१५ ३	२७	२८॥	२३ ५+	२४ ५+	१८ ५+	१९ -६	१०॥ ३६२	१३॥ ३६	१६ ३	२६	२६	ह.
१८	क.	।।	चि.	१२॥ ६	४॥ १३६	१८॥ ६	२३ ५+	१८॥ १५	१०॥ ३१	१८ ३	२६ १	२४॥	१९॥	११॥ ३	२५॥	२०॥ +४	६॥ १३४	१३॥ १२४	२४॥ १२	२०	२८ ३	१९ ३४	१९ ०४	२५॥ ४+	२७	११ ३	२५	२७	१३ १३	२१ १	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	१६ ३६	२४ -६	१६॥ १६	१९ १	१० १३२	१९	चि.
	रा.	भा.	न.	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ	पु.	पु.	पु.	आ	म.	पू.	उ	उ.	ह.	चि	चि	स्वा	वि.	वि.	अ.	ज्ये	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	न.

इनमें मेलापक (वर्ण वश्य आदि)की गुणसारिणी हैं. ऊपरकी पंक्तिमें वरके नक्षत्र, तिरछी पंक्तिमें कन्याके नक्षत्र लिखे हैं; उपरी भागमें गुण नीचेके महादोषोंके चिन्ह दिये हैं. चिन्होंका काम यह है एक नाडीके दोषकी जगह (३) गणमहादोष (मनुष्यराक्षस)के स्थानमें १ भकूट महादोष (षडाष्टक)में (६) (नवपंचम)में (५) (द्विर्द्वादश)में (४) वैरयोनिमें (२) लिखे हैं. और जहां थोडा दोष समझा गया वहां (-) चिन्ह हैं. जहां (स्वामी मैत्री आदिके) दोषका पूरा निर्वाह है वहां (+) ऐसा चिन्ह बतादिया है, और जिस जगह भर्ताके नक्षत्रसे पूर्व वधूका नक्षत्र है (इसकोभी महादोष) है वहां ० शून्यका चिन्ह हैं, और जहां कोईभी महादोष नहीं मिलता वहां केवलगुण ही लिखे हैं.

वर-वधू गुणमेलापक सारिणी भाग-२

			रा.	मे.	मे.	मे.	वृ	वृ.	वृ.	मि.	मि.	मि	क.	क.	क.	सिं.	सिं.	सिं.	क.	क.	क.	तु.	तु.	तु.	वृ.	वृ.	वृ.	ध.	ध.	ध.	म.	म.	म.	कुं.	कुं.	कुं.	मी	मी	मी	रा.
			भा.	१	१	।	।।।	१	।।	।।	१	।।।	।	१	१	१	१	।	।।।	१	।।	।।	१	।।।	।	१	१	१	१	।	।।।	१	।।	।	१	।।।	।	१	१	भा.
	रा.	भा.	न.	अ.	भ	कृ.	कृ.	रो	मृ	मृ.	आ	पु	पु.	पु	आ	म.	पू.	उ.	उ.	ह.	चि	चि	स्वा	वि.	वि.	अ.	ज्ये	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	न.
१९	तु.	।।	चि.	२२	१४ १३	२८	२३ ६+	१८॥ १६	१०॥ ३६	१२ ३५	२० १५	१८॥ ५+	१९	११ ३	२५	२४॥	१०॥ १३	१०॥ १२	१७॥ १२४	२० ४+	२० ३४	२८ ३	२७ ०	३३॥	२२॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१३ १३	२१ १	२३॥ ०१	२५	२३ ३	१८ ३५	२६ ५+	१८॥ १५	१२ १६	३ १३६२	१२ ६	चि.
२०	तु.	१	स्वा.	२९ २+	२८	१६ ३	११ ३६	१४ ३६	२४ -६	२६ ५+	२६ ५+	२७ ५+	२७॥	२६	१३ ३	१२॥ ३	२४	२५॥	२५॥ +४	२७॥ ४+	२१ ४+	२८	२८ ३	२० ६०	९ ३४०	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	१९ ३	२१॥ ३	२२॥ ३	२६	२१ ५+	२२ ५२+	२५ ५+	१८॥ ६	१९ ६	११ ३६	स्वा.
२१	तु.	।।।	वि.	२१	२२ १	२० ३	१५ ३६	९ १३६	१७ -६	१८॥ ५+	२० १५	२० ५+	२०॥	२०॥	१७ ३	१६॥ ३	१८॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ ४+	२६ ४+	३३॥	१९ ३	२८ ३	१६ ३४	१६ ०४	२१॥ ४	२७	२१ १	१३ १३	१५॥ १३	१५॥ ३	२९॥	२४ ५+	२६ ५+	२० १५	१३॥ १६	१२॥ १६२	४ ३६	वि.
२२	वृ.	।	वि.	१६॥ ६+	१६॥ १६	१४॥ ३६	१९॥ ३	१३॥ १३	२१॥	११ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	१८ -५	१८ ५-	१४॥ ५-	२४॥ ३	२२॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२६	२३	७ ३४	१५ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२१॥ ४+	१५॥ ४१	७॥ १३४	११ १३	११ ३	२५	२४	२५॥	१९॥ १	१९ १५	१८ १५	९॥ ३२५	अ.
२३	वृ.	१	अ.	२३॥ -६	१४॥ ३६	१८॥ -६	२३॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	१९॥ ६	२५ -५	१७ ३५	२० -५	२४॥	२०॥	२८॥	२४	२५	११ ३	६॥ ३४	२०॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ ४+	२५	२६	१२ ३	११ ३	२०	२४॥	२४ ५+	१७ ३५	२६ ५+	ज्ये.
२४	वृ.	१	ज्ये.	१० ३६	१७॥ १६	२३॥ -६	२८॥	२२॥ १	२९॥	१२ ६	२ ३१६२	४ ६३	९॥ ४३	१९ ५+	२५ ५-	३१	२३॥ १	१५॥ १३	११ १३	११ ३	२४	१९॥ ४	१४॥ ४	९ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१७ ३	१० १३	९॥ १३५	२० १५	२० ५+	मू.
२५	ध.	१	मू.	११॥ ३५	१९ १५	२५ ५+	१९॥ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	२१	१४ १३	१२ ३	७॥ ३६	१७॥ ६	२३ ६	२४ ५+	१८ १५	१९॥ १४३	१३ ३१	१३ ३	२६	२६	२१	२६	२२॥ ४+	१६॥ +२४	१६ ३४२	२८ ३	२८ ०१	१५॥ १	१३॥ .१४	१४॥ ४	१९॥ ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६॥ १३	२४॥ १	२६	पू.
२६	ध.	१	पू.	२५॥ ५+	१७॥ ३५	१९॥ -१२५	१४ १६२	१८॥ ६	१०॥ ३६	१२ [illegible]	२६	२७	२२॥ ६	१४॥ २३६	१६॥ १६	१९ -१५	१७ ३५	२५ ५+	२८॥	२७	१२ १३	१२ १३	२७	२० १	१६॥ -१४	१५॥ ३४	१७॥ -१४	२७ १+	२८ ३	३४ ०	२२ ०४	२२॥ ४	५॥ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	२९॥	२२॥ ३	३०॥	उ.
२७	ध.	।	उ.	२४ ५+	२५॥ ५+	१३॥ १३५	६ १३६	१० २३६	१६॥ २६	२५ २+	२६	२७	२२॥ ६	२२॥ ६	८॥ १६३	८॥ १४३	२४ ५+	२५ ५+	२८॥	२८॥	२० १	२० १	१९ ३	१२ १३	८॥ १३४	२३॥ ४+	१७॥ -१४	२५ -१	३५	२८ ३	१६ ३४	१५ ३४०	१३॥ १४	२२॥ १	२३॥ १	२८॥	२९॥	३०॥	२२॥ ३	उ.
२८	म.	।।।	उ.	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	१९॥ २६+	२४॥ -६	२१॥ -६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० ६	२१ ६	२४ ५+	२४ ११	१५॥ १५	२२॥ -१	२१॥ ३	१४॥ १३	१२ ३१	२७	२१ १	१४॥ १४	२४ ४	१७ ३४	२८ ३	२७ ३०	२५॥ १+	१५॥ १४+	१५॥ १४+	२१॥ ४+	२९॥	३०॥	२२॥ ३	श्र.
२९	म.	१	श्र.	२८	२७	१४॥ ३२	१२ ३४२	१७ ३५	२६ ५+	२३ -६	१९॥ -६	२१॥ -६	२८	२८ २+	१४ ३	५॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३ ५+	२४ ५+	१७ ५	२४	२१॥ ३	१४॥ ३	१२ ३	२७	२१	१४ ४	२२॥ ४	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२७- ०	१७ ०४	१७॥ ४+	२०॥ ४+	२८॥	२२॥	२३॥ ३	ध.
३०	म.	।।	ध.	२०	११ १३२	२६	२३॥ ५+	१९ १५	११ ३५	८ ३६	१६ १६	१४॥ -६	२१	१३ ३	२७	१८॥ ६	४॥ १३६	१०॥ १६	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	२९ ३	२४	२८॥	२६	१२ ३	२६	२०॥ ४	६॥ ३४१	१४॥ ४३	२५॥ १	२७	२८ ३	१७ ३४	२३ ४०	१७॥ १४	२४॥ १	९॥ १३	२२॥ २+	ध.
३१	कुं.	।।	ध.	१९॥	१०॥ १३२	२५॥	३०	२५॥ १	१७॥ ३	११ ३५	१८ १५	१७ ५+	१२ ६	४ ३६	१८ ६	२४॥	१०॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ ६+	१७ ३६	१८ ३१	२० -५	२४॥ -५	२५	११ ३	२५	२९॥	१५॥ १३	२३॥ १	१६॥ १४	१८ ४+	१८ ३४	२८ ३	३३ ०	२७॥ १	१६॥ १४	६॥ १३४	१३॥ ४२	ध.
३२	कुं.	१	श.	१४॥ ३	२०॥ १	२६॥	३१	२५ १	२६॥	२० ५+	१२ १३५	१२ ३५	६॥ ३६	१३ ६	१९ ६	२५॥	१९॥ १	१९॥ १३	१०॥ १३६	१०॥ २३६	२५ ६	२६ ५+	२१ ५+	२६ ५+	२६॥	२०	१८ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१७ १४	१७॥ ४+	२४ ४+	३३	२८ ३	२९ १३ ०	८ १३४ ०	१४॥ १४	१५॥ ४	श.
३३	कुं.	।।।	पू.	१७॥ ३	२४॥ २+	१९॥ -१	२४ -१	३०	३०	२३॥ ५+	१७ ३५	१७ ३५	११॥ ३६	१९॥ ६	१२ १६	१८॥ १	२४॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१९॥ १६	१८॥ -१५	२६ ५+	२० -१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५ १३	२९॥	२९॥	२२॥ +४	२२॥ ४+	१८॥ -१४	२७ -१	१९ १३	२८ ३	१६ ३४	२२ ०४	१९॥ ४२	पू.
३४	मी.	।	पू.	१४॥ ३४	२१॥ ४२+	१६॥ -१४	१९ १	२५	२५	२४	१७॥ ३	१७॥ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१६॥ -१६	२२॥ ६+	१४॥ ३६	१६ ३	१६ ३	१८ १+	११ १६	१८॥ ६	१२॥ १६	१९ -१५	२५ ५+	९॥ १३५	१४ १३	२८॥	२८॥	२८॥	२२॥	२४॥ १	१५॥ १४	७ १३४	१५ ३४	२८ ३	३३ ०	३०॥ २+	पू.
३५	मी.	१	उ.	२३॥ ४+	१५॥ ३४	१८॥ -१४	२१ १	२६	१८ ३	१७ ३	२५	२६॥	२६ ५	१९ ३५	२० १५	१७॥ -१६	१५ ३६	२५॥ ६+	२७	२८	९ १३२	२ १३६२	१९ ६	११॥ १६२	१८ १४२	१८ ३५	२० -१५	२३॥ -१	२१॥ ३	२९॥	२९॥	२९॥	१४॥ १३	५॥ १३४	१४॥ १४	२१ ४	३३	२८ ३	३३ ०	उ.
३६	मी.	१	रे.	२५ ४+	२३॥ ४+	१०॥ ३४	१३ ३	१७ ३	२६	२५	२४	२५	२४॥ ५	२६ ५	१३ ३५	१२ ३६	२२॥ ६+	२२॥ ६+	२४	२५	१२	१२ ६	१० ३६	४ ३६	१०॥ ३५	२६ ५+	२१ ५+	२६	२८॥	२०॥ ३	२३॥ ३	२१॥ ३	२२॥ -२	१३॥ ४२	१५॥ ४	१७॥ ४२	२९॥ २+	३३	२८ ३	रे.
			न.	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ	मृ.	आ	पु.	पु.	पु	आ	म	पू.	उ.	उ.	ह.	चि	चि	स्वा	वि.	वि.	अ.	ज्ये	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	न.

विवाह काल निर्णय

प्रथम गर्भ के ज्येष्ठ वर-कन्या का विवाह ज्येष्ठ मास में नहीं होता, इसको त्रि-ज्येष्ठ कहते हैं। वर कन्यामेंसे एक ज्येष्ठ हो तो ज्येष्ठ मास में विवाह करना मध्यम लिखा है। फिर भी आवश्यकता में कृत्तिका का सूर्य निकल जाने पर दानादि करके विवाह करने में हानि नहीं। ऐसे ही वृश्चिकके सूर्यमें कार्तिकमें भी विवाह होते हैं। इस पंचांग के प्रारंभमें देशभेदानुसार बहुत विचारपूर्वक सभी विवाह मुहूर्त दिये गये हैं।

त्रिबल शुद्धिः—

श्रेष्ठ गुरु—जन्म राशि से २।५।७।६।११ वां। पूज्य गुरु—१।३।६।१० वां।
नेष्ट गुरु—४।८।१२ वां। उच्चमित्र स्वराशि का हो तो नेष्ट गुरु भी ग्राह्य है।
श्रेष्ठ सूर्य—३।६।१०।११ वां।पूज्य सूर्य १।२।५।७।६ वां। नेष्ट सूर्य ४।८।१२ वां।
श्रेष्ठ चन्द्र—१।२।३।५।६।७।६।१०।११ वां।पूज्यचन्द्र १२ वां। नेष्टचन्द्र ४।८ वां।

उपनयनमें बालक १६वर्षसे ऊपर हो गया हो और विवाहमें कन्या १८ वर्षसे अधिक हो गई हो तो स्वराशि (धनु: मीन राशि) और उच्च (कर्कराशि) का गुरु जन्म या नाम-राशिसे चौथा १२वां हो तो द्विगुणपूजासे और अष्टम हो तो भी त्रिगुणित पूजासे विवाह और उपनयन संस्कार शुभदायक होता है, ऐसा ऋषियोंका मत है।

विवाह में स्तम्भ स्थापन विज्ञान

मण्डप में प्रथम स्तम्भ-स्थापना के लिये सूर्य ५।६।७ राशि का हो तो ईशान कोण में, ८।६।१० राशि के सूर्य में वायव्य कोण में, ११।१२।१ की संक्रांति में नैऋत्यकोण में, २।३।४ राशि के सूर्य में अग्निकोण में विवाह कार्य के लिए स्तम्भ स्थापित करें।

वधू वर तथा बटु की राशि पर से तैलादि लेपन के दिन

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु:	मकर	कुम्भ	मीन
७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

वधू वर तथा बटु की राशि से दिन तथा मौंजी दिवस के पूर्व दिन लेवें।

१- नृदूरदोष—वर के नक्षत्र से कन्या का नक्षत्र दूर होने से नृदूर दोष होता है।
२- कन्या दूर—कन्या के नक्षत्रसे वरका नक्षत्र बहुत दूर होने से 'कन्या दूर' शुभ है।
३- कन्या राक्षसगण की हो और वर मनुष्यगण का हो तथा वश्यादि ६ (वश्य, तारा, योनि, ग्रह मैत्री, कूट, नाड़ी) शुभ हो तो विवाह कल्याणप्रद होता है।
४- वर के नक्षत्र से कन्या का नक्षत्र द्वितीय (दूसरा) होने से धन और कल्याण का देने वाला होता है।
५. कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र द्वितीय (दूसरा) हो तो मृत्युदायक विवाह होता है।
६. वर कन्या की एक राशि हो और भिन्न नक्षत्र, भिन्न राशि और एक नक्षत्र हो और चरण भिन्न हों तो विवाह शुभ होता है।
७- अशुभ नवपंचम, अशुभ द्विर्द्वादश, अशुभ षडष्टक (मृत्युषडष्टक) हो और राशिकूटमैत्री हो तथा नवांशपति मित्र हो तो विवाह शुभ होता है।

न वर्गवर्णो न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा।
ताराविरुद्धे नवपंचमे वा राशीशमैत्री शुभदो विवाहे॥

नाड़िदोषश्च विप्राणां वर्णदोषस्तु भूभुजाम्। गणदोषश्च वैश्येषु योनिदोषश्च पादजाम्॥
एकनक्षत्रजातानां नाडिदोषो न विद्यते। अन्यर्क्षपतिवेधेषु विवाहे वर्जितः सदा॥
रोहिण्यार्द्रा-मृगेन्द्राग्नी-पुष्य-श्रवण-पौष्णभम्। अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाडिदोषो न विद्यते॥

मरणे पितृमात्रोश्च संग्राह्यौ नवपंचमौ।

वरस्य पंचमे कन्या कन्याया नवमे वरः। एतत्त्रिकोणकं ग्राह्यं पुत्रपौत्रसुखावहम्॥

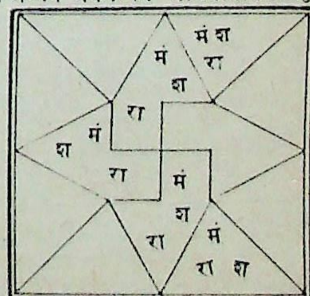
कुण्डली मिलान—वर कन्या की कुण्डली मिलान उत्तम होना आवश्यक है, क्योंकि द्रव्य, पुत्र, पति, पत्निसुख, ऐश्वर्य इत्यादि का विचार कर मिलान करने से दाम्पत्य में सुख होता है। जैसे मनुष्य भाग्यहीन हो और स्त्री भाग्यवती मिले तो मनुष्य स्त्री के भाग्य से अपना जीवन सुखमय बना सकता है। वर कन्या दोनों भाग्यवान् हों तो वह उत्तम होता है। दोनों भाग्यहीन हो तो नेष्ट होता है। ऐसे ही वर को द्विभार्या योग तथा कन्या को वैधव्य योगादि का विचार करें। वर कन्या की कुण्डली में परस्पर मारक हो तो शुभ होता है, जैसे वर की कुण्डली में द्विभार्या योग हो और कन्या की कुण्डली में पतिसुखयोग न्यून हो तो मिलान उत्तम होता है। तथा कन्या को वैधव्य योग हो और वर को विधुरयोग हो तो मिलान उत्तम होता है। इसी तत्व को ग्राह्य मानकर मंगल आदिका दोष लिखा है। विशेषतः मंगल का निर्णय भावचलित से करना चाहिए।

लग्ने तुर्ये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तृ विनाशाय भर्ता कन्या-विनाशकृत्॥

लग्न चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और व्यय स्थान में मंगल होने से कन्या पति को नष्ट करती है और वर कन्या को नष्ट करता है, इसलिए वर कन्या दोनों को मंगल होना आवश्यक है। मंगल लग्न कुण्डली से तथा चन्द्र कुण्डली से देखना चाहिए। एक के तो मंगल हो और दूसरे के मंगल न होकर मंगल के स्थान में पापग्रह (शनि राहु) हो तो मंगल का दोष नहीं होता। यथा—

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्। तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्॥

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके स्थिते।
वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौमदोषो न विद्यते॥
जामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्॥
सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽपिवाऽथवा भौमे।
वक्रिणी नीचारिगृहे वार्कस्थेपि वा न कुजदोषः॥
केन्द्रकोणे शुभाढ्ये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः।
तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा॥



इत्यादि परिहारसे भौमदोष नष्ट होता है। फिर भी वर कन्या के लग्न लग्नेश, सप्तम, सप्तमेश, अष्टम- अष्टमेश इनके योगों को देखकर सूक्ष्म रीति से परिहार योगों को विचार कर ज्योतिषी कुण्डली का मिलान करें। परन्तु यह स्मरण रहे कि कुण्डली ठीक ठीक बनी होनी

चाहिए। कन्या को अनेक कुयोगों द्वारा वैधव्ययोग जानपड़े तो शालिग्रामसे, पिप्पलवृक्ष से, अर्कवृक्ष से, वा कुम्भसे यथाविधि विवाहकर गोदान, सुवर्ण-दान, महामृत्युञ्जयादि जप करके कन्या का विवाह करने से कन्या सौभाग्य,पुत्र, धनसे युक्त होती है। इस पचांग में आगे दी गई मेलापकसारिणी से गुण मिलान करें।

जन्मोत्थं च विलोक्य बालविधवायोगं विधाय व्रतम्,
साविश्र्या उत पैप्पलं हि सुतया दद्यादिमां वा रहः।
सल्लग्नेऽच्युतमूर्तिपिप्पलघटैः कृत्वा विवाहं स्फुटम्,
दद्यात्तां चिरजीविनेऽत्र न भवेद्दोषः पुनर्भूभवः॥

विवाहांग कार्यारम्भ—पचाग शुद्धि देख विवाह दिन से पूर्व ३।६।९ दिन को छोड़ कर कन्या को चन्द्र बल देखकर विवाह के नक्षत्र मे जिस स्त्री को चन्द्रबल उत्तम हो उसके हाथ से हल्दी हाथ लगाना, दलना, पीसना, कूटना, कलशादि, स्थापना करना, घरलीपना, आंगन सफाई, भूषण घडाना, वेदी रचना, चंदोवा, बांधना, वस्त्र सिलाना गणेशादि पूजन, नादि श्राद्ध आदि करना श्रेष्ठ है।

विवाह में दश दोषों का विचार—विवाह समय निश्चित करनेके लिए ग्रन्थकारों ने २१ महादोषों को त्यागने को लिखा है, परन्तु कई दोषों का परिहार होनेसे दश दोषों का विचार करते है और इन दश में से क्रूरयुति, वेध, मृत्यु-बाण, क्रान्तिसाम्य और दग्धा ये पांच महादोष ही विवाह में सर्वत्र वर्ज्य है।

चैत्र, पोष मास को छोड़कर देशाचारानुसार मासो में रो. मृ. उतरा ३. म. ह. स्वा. अनु. मू. रेवती इन नक्षत्रों में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, बाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रांतिसाम्य (महापात) और दग्धा-तिथि ये दश दोष है। इनका विचार कर मुहूर्त करना चाहिए। हमने ये दश दोष तथा देशाचारानुसार विवाह मुहूर्त इस पंचांगमें दिये हैं। दोषों के क्रम से जहां दोष है वहां (ऽ) और जहां दोष नहीं है वहां (।) ऐसी खड़ी लकीर दी है। विवाह मुहूर्तमें वर कन्याके जन्ममास, जन्मतिथि, जन्मनक्षत्र, लग्नसे तथा राशिसे अष्टम लग्न वर्ज्य करें। लग्न तथा राशीश के शत्रु राशि का लग्न नवांश न लें। यह विवाह सूक्ष्म केरकी गणित से निश्चित करने से समय शुद्ध और वर कन्या को कल्याण कारक होता है। अन्तर वाले प्राचीन स्थूल गणितसे विवाह मुहूर्त देखने से फल में विपरीतता प्राप्त होती है और अशुभ होने की सम्भावना रहती हैं।

यात्राविवाहोत्सवजातकादौ खेटैः स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम्।
स्यात्प्रोच्यते तेन नभश्चराणां स्फुटक्रिया दृग्गणितैक्यकृद्या॥

लत्तादोष चक्र १

ग्रहा.	सूर्य	पूर्णचन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
वि.न.	१२	२२	३	७	६	५	८	९
दिशा	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम
फल	धननाश	भय	मृत्यु	भय	बन्धुनाश	कार्यहानि	कुलक्षय	मरण

उदाहरण :—सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ. फा. का हो तो सूर्य नक्षत्र से १२वां होने से यह सूर्यका लत्तादोष वाला विवाह नक्षत्र होगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहोंका लत्ता दोष भी जानें।

पातदोष चक्र २— हर्षण, वैधृति साध्य, व्यतिपात, गण्ड और शूलयोगों का अंत जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करनेसे पात दोष होता हैं।

रो.	मृ.	म.	उफा	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा	उभा	रे.	वि०न०
आर्द्रा पुनः श पूफा चि. मू.	मृ. आ. ज्ये ध म. ह.	अश्वि मृ. ज्ये पुष्य ह रे	कृ. आ. वि. पूफा उभा पूभा	भ. मृ. श. पूभा स्वा. म.	कृ. श्र. ध. पुष्य. ह. रे.	अ आ उषा पूभा पूषा पूफा	रो ज्ये ध. अश्ले. मू उभा	भ पुन. श. वि. अनु. उषा	भ. श. वि. उफा मू. पूफा	अ. म. ध. ज्ये. पूफा स्वा	सूर्याधिष्ठित नक्षत्र

३. युतिदोष :—जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह का युतिदोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युतिदोष नहीं होता; अपितु श्रेष्ठ होता है। सू.मं श. रा. के. की युति दारिद्र्य मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई हैं। शुक्रकी युति विशेष करके वर्जित हैं।

वेधदोषचक्र ४

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.	वि.न.
अभि.	उषा.	अनु.	रे.	उभा.	श.	भ.	पुन.	मृ.	ह.	उफा.	ग्र.न.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह और नीचे के नक्षत्र पर कोई ग्रह हो तो वेधदोष होता है, यह सर्वत्र विशेषरूपसे त्याज्य है।

जामित्रदोष चक्र ५

रो.	मृ.	म.	उ.	ह.	स्वा	अनु	मू.	उ.	उ.	रे.	वि
अनु	ज्ये	ध.	पू.भा	उ.भा	अश्विनी	कृ	मृ.	पुन	उ.फा	ह.	ग्र.न.

विवाह लग्न से ७ वें ग्रह होने पर जामित्रदोष होता हैं। ऊपर विवाह नक्षत्र और नीचे ग्रह नक्षत्र है, अर्थात् १४वें नक्षत्र में पापीग्रह का जामित्र दोष वर्ज्य है।

बाणज्ञानाय सुलभचक्र ६

बाण नाम	गतांशाः प्रति राशि अर्कस्य	५ कर्म वर्ज्या	वार वर्ज्या	समय-परत्वेन वर्ज्या
रोग	८।१७।२६	व्रतबन्धे	रवौ	रात्रौ-त्याज्यं
वन्हि	२।११।२०। २९	गेहगोपे	भौमे	सदैव-वर्ज्यं
नृप	४।१३।२२	नृप सेवायां	मन्दे	दिवा-त्याज्यं
चौर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे	रात्रौ-वर्ज्यम्
मृत्यु	१।१०।१९। २८	विवाहे	बुधे	संध्ययोः वर्ज्यम्

एकार्गल दोष ७—व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ शूल, वैधृति, वज्र, परिघ,

अतिगंड ये योग हों और सूर्यके नक्षत्रसे विवाहका नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गलदोष होता है।

उपग्रह दोष ८—सूर्यके नक्षत्रसे ५वें, ७वें, ८वें, १०वें, १४वें, १५वें, १८वें, १९वें २१वें, २२वें, २३वें, २४वें, २५वें नक्षत्र पर चन्द्र होतो एकार्गलदोष होता है।

क्रान्तिसाम्यदोष चक्र ९

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला
सिंह	मकर	धनुः	वृश्चिक	मीन	कुम्भ

उदाहरण—मेष के सूर्य सिंहके चन्द्रमा में वा सिंह के सूर्य मेष के चन्द्रमामें स्थूल क्रान्ति-साम्य दोष होता है, यह सर्वत्र वर्ज्य है। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य गणितसे सिद्ध होता है। इस पंचांगके विवाह मुहूर्तोंमें गणितागत सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही लिया गया है।

दग्धा तिथिदोषः १०

ध०	वृष	कर्क	क.	सिंह	म०	सूर्य
मी.	कुम्भ	मे.	मि.	वृश्चिक	तु०	राशि
२	४	६	८	१०	१२	तिथि

इन उक्त संक्रान्तियों के सौर मास में ये दग्धा तिथियां विवाह में व र्जनीय हैं।

भुजगं क्रान्तिसाम्यं च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीनं विवाहं तु कलौ पंच विवर्जयेत्। लत्तादिदोषाणां परिहारवाक्यानि—लत्तामालवके (उज्जैनप्रान्त) देशे पातश्च कुरु(कुरुक्षेत्र बांगर जांगले(फिरोजपुर भटिण्डा प्रांत) एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्। उपग्रहर्क्षं कुरुबाल्हीकेषु(आगरा प्रान्त बलखबुखारा)कलिंगवंगेषु(जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या)च पातितं भम्॥ सौराष्ट्र (काठियावाड)शाल्वे (उज्जैन प्रान्त)च लत्तितं भम्। त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे॥ युतिदोषो भवेद् गौडे (बंगाल) जामित्रस्य च यामुने (मथुरादि प्रान्त) मासदग्धा च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः॥

विशेषपरिहारः—चित्रां गते पार्तविचित्रदेशे, मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः। पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः, सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजङ्गपातः।

युतिपरिहारः—स्वर्क्षत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रर्क्षत्रगतो विधुः। युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे सदा॥ अत्यावश्यके वेधपरिहारः—पादमेव शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः (नारदः)। अतोऽन्त्यपादमादिगो द्वितीयकस्तृतीयकम्। तृतीयगो द्वितीयकं चतुर्थगस्तु चादिमम् भिनत्ति वेधकृद्ग्रहो न चान्यपादमादरात् (वशिष्ठः) अथ पापग्रहेण भुक्तभोग्याक्रान्तनक्षत्रस्य शुभेषु त्यागः—भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः। अस्यापवादः-ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरभुक्तादिकानि च भुक्त्वा चन्द्रेण मुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते। जामित्रपरिहारः (व्यवहारसमुच्चये)-स्वोच्चे सौम्यालये चन्द्रे स्ववर्गे मित्रवर्गगे। हृत्वा जामित्रकृद्दोषं करोति विपुलं सुखम्॥ मुहूर्तचिन्तामणावपि—एकार्गलोपग्रहपातलत्ता जामित्रकर्तर्युदयास्त दोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्कबलोपपन्ने लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः॥

विवाहे लग्नशुद्धिचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावेषु
च० पापा.	०	शुक्र	०	०	च० शु० लग्नेश	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श.	त्याज्याः ग्रहाः
चंद्रक्रूर	कुलिकं क्रान्ति साम्यंच				च.	मं.	चंद्र भौम	विद्धभंच गोधूलौ त्याज्याः				

सर्वथा लग्नभंगयोगाः—व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः लग्नेट् कविग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौः लग्नेट्शुभाराश्च मदे च सर्वे (अस्तेऽब्जगुरू समौ)॥ वर्गोत्तमं विनांत्यांशो विवाहे न शुभप्रदः। वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशं पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च। यदि लग्नगतस्सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः॥ पङ्ग्वन्धादिलग्नानां गौड़मालवयोरेव त्यागः। बादरायणः—मासशून्याह्वयास्तारा राशयो वधिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः॥

कर्त्तरी दोष—लग्नस्य पृष्ठाग्रयोरसाध्वोः। सा कर्त्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः। तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारी न कर्त्तरी चेति पितामहोक्तिः। "इयं कर्त्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या"। केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहारः—पापौ कर्त्तरिकारकौ रिपुगृहे नीचास्तगौ कर्त्तरी। दोषौ नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारि दोषोऽपि न॥

दोषापवादा ज्योतिर्निबंधे—दोषाश्च बहवः सन्ति गुणाः स्वल्पा कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह। अपवादान्तरम्—उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्रसंस्थे सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा। मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवांशग्रहोद्भवाः ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगः शशी॥ अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षतिथ्यर्क्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये। सर्वं ग्रहकृतारिष्टमेकोऽपि विलयं नयेत्॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम्। द्यूनं विहाय दैत्येज्य सहस्रं लक्षमंगिराः॥

स्मरण रहे कि पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सर्वत्र सप्तमरहित केन्द्र (१।४।१०) ही ग्रहण करना।

विवाहलग्ने ग्रहाणां रेखाप्रदस्थानानि

र.	चं.	मं.	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	के०	ग्रहाः	मुहूर्तगणपतौ
३ ६ ८ १	२ ३ ११	३ ६ ११	१।२ ३।४ ५।६ ९ १० ११	२।१ ३।४ ६।५ ९ १० ११	१।२ ४।५ ९ १० ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	स्थानानि	लग्नं शुभं विवाहे स्याद्दशविशोपकाधिकम्।
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विशोपकाबलम

अथ गोधूलिलग्नविचार——लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी । तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम् ॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति । लग्ने विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फल विधत्ते ॥ गोधूलि त्रिविधां वदन्ति मुनयो नारीविवाहादिके. हेमन्तेशिशिरे प्रयाति मृदुतां पिण्डीकृते भास्करे । ग्रीष्मेऽर्धास्तमिते [illegible] भानौ गते स्पष्टतां,सूर्ये चास्तमुपागते भगवति प्रावृट्शरत्कालयोः ॥

गोधूलिके त्याज्यदोषाः—कुलिकक्रान्तिमाध्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी । तदा गोधूलिकस्त्याज्यः [illegible] दूषितः ॥ अष्टमे जीवभौमौ च बुधो वा भार्गवोऽष्टमे । लग्ने षष्ठेऽष्टमे [illegible] गोधूलिनाशकः ॥ "अस्त याते गुरुदिवसे सौरे सार्के ।" अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होनेके पीछे (क्योंकि सूर्यास्त से पहले वारवेला होगी) और शनिवारको सूर्यास्तसे पहले (क्योंकि सूर्यास्त हो जानेसे कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना ।

संकीर्णचाण्डालादि जातीनां विवाहमुहूर्त्तः—कृष्णेपक्षे भानुभौमार्कजानां वारे योगे चापि धिष्ण्ये निषिद्धे । सकीर्णानां दारकर्म प्रशस्त प्रीत्यर्थायुः प्राप्तये शौनकाद्याः ।

पुर्नविवाहे सूर्यभात् शुभाशुभ ज्ञानाय चक्रम्

३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	मृत्यु	दुर्भग	श्री	उन्नति	फल

अन्यच्च—सूर्यभात् ४।११।१८।२५ सख्यकसाभिजिद्भेषु पुर्नविवाहे मृत्युः । अत्र तिथिमासवेधभगुरु[illegible]स्तादिदोषोऽपि नावलोकनीयः ॥

वधू प्रवेश मुहूर्त—जब विवाह होने पर वधू पतिके घर पहले पहल आती है वह वधूप्रवेश कहा जाता है । विवाहसे १६ दिनके भीतरके दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन, इनके उपरांत एक मास तक विषम दिनोंमें, एक वर्षके भीतर विषम मासमें और एक वर्षके उपरात ३ रे ५वें वर्षमें भी स्थिर लग्नमें वधू प्रवेश शुभ है । ५ वर्षके उपरांत जब चाहे तब शुभ मुहूर्तमें हो सकता है । १६ दिनके भीतर पूर्वोक्त दिनमें तिथ्यादि पंचांग शुद्धि चन्द्रबल गुरु शुक्रके मूढत्वका भी विचार नही करना । "व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा । [illegible] प्राप्तकालेऽपि नाचरेत् ।" रे. अश्वि. रो. मृ. श्र. ध.ह. चि. स्वा. भ. म. उत्तरा ३ पुष्य. अनु. इन नक्षत्रों और चं. बु. बृ. शु. इन वारों में, १।२। ३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथियोंमें, २।५।८।११ लग्नों में, चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधू प्रवेश शुभ है ।

प्रवेशस्य सम्प्रदायः— [illegible] प्रवेशो न दिवा प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः ।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीतिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः ॥

द्विरागमन मुहूर्त—पिताके घर से दूसरी बार पतिके घर जानेको द्विरागमन कहते है, विवाहसे एक वर्षके भीतर अथवा तीसरे वा ५वे वर्षमें वृश्चिक, कुम्भ, मेषके सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हों तब सोम, बुध, गुरु वा शुक्र वारमें, २।३।६।७ या १२वीं राशिके लग्नमें, ह [illegible] रेवती तीनों उत्तरा.रो.स्वा. पुन. पुष्य.श्र.ध.श.मू.मृ. चित्रा और अनुराधा नक्षत्रोंमें शुभ है ।

सम्मुख दक्षिण शुक्रनिषेधः—सम्मुख तथा दक्षिण शुक्र में पितृगृहसे पतिके घर जाना निषेध है । सम्मुख वा दक्षिण शुक्रमें नववधू जावे तो वन्ध्या हो, बालक को लेकर जावे तो बालककी मृत्यु हो । गर्भिणी जावे तो गर्भका सुख न हो, परन्तु रेवतीसे मृग. नक्षत्र तक चन्द्रमा रहे तब तक जाने में दोष नहीं । यथा—**रेवत्यादि मृगान्ते च यावत्तिष्ठति चन्द्रमा । तावच्छुक्रो भवेदन्धः सम्मुखे दक्षिणे शुभः ॥** अति आवश्यकतामें शुक्रकी शान्ति कर श्वेतवस्त्र, छत्र, स्वर्णदान देकर जावे । राजविग्रह, उपद्रव, दुर्भिक्ष, विवाह, देवता यात्रा आदिमें जाना हो तो सम्मुख दक्षिण शुक्रका दोष नहीं ।

विवाह के पश्चात् वधू के रहने का नियम—विवाहके पश्चात् प्रथम ज्येष्ठ महीने में वधू भर्ताके घर रहे तो पतिके ज्येष्ठ भ्राताको, आषाढ़में सासको, पौषमें ससुरको, अधिक मासमें अपने आपको हानि करती है । चैत्रमें पिताके यहां रहे तो पिताको हानि करती है । ज्येष्ठादिके अभावमें (न हो तो) उस मासका कोई दोष नहीं होता ।

प्रथम युवति स्त्रीसंगम मुहूर्त्त—पुत्र चाहने वाले रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त ४ रात्री के बाद समरात्रिमें, रो. मृ. पुष्य. ह. चि. अनु. ध. उत्तरा ३, रे. रिक्ता अमावसरहित तिथिमें, शुभ वार, रात्रिके प्रथम प्रहरको छोड़कर शुभ समय में चितको प्रसन्न कर प्रथम स्त्रीप्रसंग करे ।

नववधू को रसोई बनाने का मुहूर्त—पंचांग शुद्धि देखकर वधूको चन्द्रबल देख, रिक्ता और क्षयरहित तिथि, शुभवार कृ.रो.मृ. उत्तरा ३ पुष्य वि.ज्ये.श्र.ध.श. रेवती इन नक्षत्रोंमें २।५।८।११ लग्नोंमें, लग्न चतुर्थ अष्टम शुद्ध, सप्तम भाव बलवान् होनेपर नूतन वधूसे रसोई बनवाये ।

पतिगृहसे पितृगृह आनेका मुहूर्त—गुरु, चन्द्र, शुक्रवार, शुभतिथि, भ. आ. अश्ले. मघा, पूर्वा.ज्ये.मू. इन नक्षत्रोंके बिना अन्य नक्षत्रोंमें शुभलग्नपंचांगशुद्धि देखकर मुहूर्त निश्चित करें ।

स्त्री को वस्त्राभूषण धारण मुहूर्त—रिक्तामारहिततिथि.चं.गु.शु.बु. वारा.अश्विनी ह.चि.स्वा.अनु.ध.रे. इन नक्षत्रोंमें नवीन वस्त्र धारण और स्वर्ण रजत आदि आभूषण धारण करना शुभ है ।

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्त—आश्विन का.वै.माघ.मार्ग.फा. तथा मेष.कन्या तु. वृश्चिक.म. कुम्भके सूर्यमें १।५।७।१०।१३।१५ तिथि या जिस देवता का अनुष्ठान हो उसकी तिथि, र.शु.गुरुवार, चन्द्रवार मध्यम, पुन. पुष्य स्वा. उ.३.श्र.ध.श.रे.अ.ह.अनु.रो.मृ.वि.ज्ये. वा स्वस्वामी नक्षत्रोंमें लग्नसे ३।६।११वें पापग्रह, १।४।५।७।९।१०वेंमें शुभग्रह, चन्द्र ताराबल सहित, गुरु शुक्रके उदयमें, शुभ लग्न, मृत्यु आदि कुयोग रहित समयमें, विष्णुका स्थिरमें, शिवका चरमें,दुर्गाका द्विस्वभावलग्नमें,कूर्मचक्र शुद्धि सहित अनुष्ठान आरम्भ करें ।

व्ययाष्टशुद्धोपचये लग्नगे शुभदृग्युते । चन्द्रे त्रिषड्दशायस्थे सर्वारम्भः प्रसिद्ध्यति ॥

बावड़ी, बगीचा, तालाब, कुआं, मकानका आरम्भ और प्रतिष्ठा, व्रतारम्भ व्रतोद्यापन दान, गोदान, प्रथम उपाकर्म, वृषोत्सर्ग, चौल (मुण्डन) देवता स्थापन, दीक्षा, यज्ञोपवीत.

विवाह अपूर्व देव तीर्थ दर्शन, सन्यास, अग्न्याधान, अभिषेक, समावर्तन, चातुर्मास्ययाग, कर्णवेध, विद्यारम्भ ये कर्म गुरुके अस्त, बाल वृद्धत्व, और मलमासमें करना निषेध है।

कुयोगास्तिथिवारोत्था तिथिभोत्था भवारजाः। हूण्बंगखसेष्वेव वर्ज्यास्त्रितयजास्तथा॥

कुयोग परिहार—तिथि वारमें उत्पन्न हुए ककच (वारदग्ध) मृत्यु आदि योग हूण देश बंगाल और खसदेश (शिलांग)में ही वर्ज्य करने चाहिए, अन्य देशों में नहीं।

परिघार्द्धं पञ्चशूले षट् च गण्डातिगण्डयोः। व्याघाते नवनाड्यश्च वर्ज्या सर्वेषु कर्मसु॥

परिघयोगका अर्धयोग, शूलयोगकी ५ घटी, गण्ड और अतिगण्डकी ६ घटी, व्याघात की ९ घटी, सर्व कार्यमें वर्ज्य करें। तथा जन्ममास, जन्मतिथि जन्मनक्षत्र व्यतीपात, वैधृति, भद्रा,पितृदिन, श्राद्ध,तिथिका क्षय वृद्धिकाल, अधिकमास क्षयमास, कुलिक, प्रहरार्ध पात, महापात, (क्रान्तिसाम्य) और विष्कम्भयोगकी तीन घटी प्रारम्भकी सदा शुभ कार्य में वर्ज्य करनी चाहिए।

दुकान खोलनेका मुहूर्त—रिक्ता तिथि और मगलके अतिरिक्त अन्य वारोंमे ह.चि.रो.रे. तीनों उत्तरा पुष्य, अनु. अश्वि.अभि. नक्षत्रोंमें कुम्भ लग्नको त्यागकर अन्य लग्नोंमें, २।१०।११ भावों में शुभग्रह हों, ३।६ में पाप ग्रह हों, ८।१२वां स्थान पापरहित हो, चन्द्र शुक्र लग्नमें हो तो अत्युत्तम। कर्त्ता की दशान्तर्दशा भी शुभ होनी चाहिए।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ मुहूर्त—अश्वि. रो.मृ.पुन. उत्तरा ३. ह.चि.अनु.श्र.रे. नक्षत्र रिक्तामारहित तिथि, र.चं.बु.गु.शु. वार, चर द्विस्वभाव शुभयुत दृष्ट लग्न, केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह हो और ८।१२वें स्थानमें पापग्रह नहीं होने पर शुभ होता है।

सेवाकर्म (नौकरी) मुहूर्त—अ.मृ.चि.ह. पुष्य अनु. रे नक्षत्र, रिक्तामारहित तिथि, र. चं.बु.गु.शु. वार, शुभग्रह लग्नमें हों, १०वें या ११वें सूर्य मंगल हो तो अत्युत्तम। स्वामी और सेवककी परस्पर राशीश मैत्री हो तो सर्वश्रेष्ठ समझना।

अष्टम चन्द्रदोष परिहार:—नीचराशिगते चन्द्रे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा।
चन्द्रेऽष्टमारिरिःफस्थे दोषो नास्ति न संशयः॥

अष्टम भौमदोष परिहार:—नीचराशिगते भौमे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा।
कुजाष्टमोद्भवो दोषो किञ्चिदपि न विद्यते॥

षष्ठस्थ शुक्रदोष परिहार:—नीचराशिगते शुक्रे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा।
भृगुषट्कस्थितो दोषो नास्ति तत्र न संशयः॥

द्रव्य प्रयोग मुहूर्त—पुन. स्वा.मृग.रे.चि,अनु.वि. पुष्य,श्र.ध.श. अश्वि. एषु नक्षत्रेषु, १।४।७।१० लग्नेषु,६।५।८ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ६।५ शुभग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।

ऋण लेने के लिए वर्जित काल—मंगलवार, संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्त नक्षत्र युक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवारको धन नहीं देना चाहिए। कृ.रो. आर्द्रा. अश्ले. उ. ३. वि.ज्ये. मू. नक्षत्रोंमें भद्रा व्यतिपात और अमावसमें गया धन फिर मिलता नहीं, या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है।

ईंट का भट्ठा—में आग देने या ईंट बनाने में मंगल और शनिवार शुभ हैं।

श्री काशीनाथमते क्रय-विक्रय मुहूर्त—पुष्य. पू. भा. अनु. श्र.ह.म. स्वा,उत्तरा ३, आश्ले. रे. एषु. भेषु. सत्तिथौ चंद्र शुभ दिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रय विक्रयणं कार्यम्।

वस्तु बेचने के नक्षत्र—पू. फा.पू.षा.पू.भा.वि.कृ.अश्ले.भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये हैं। **नोट**—बेचने के नक्षत्रोंमें खरीदना और खरीदनेके नक्षत्रोंमें बेचने वालों को ९५ प्रतिशत हानि रहेगी, इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने बेचनेके नक्षत्र दिखाये गये हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापारमें तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहटके दिन भरमें १० बार बेचना, २० बार खरीदना, ऐसे व्यापारी क्या करेंगे इन नक्षत्रों को। सट्टेमें भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियोंके वाक्य कहां तक सत्य है।

नालिश अर्जी का मुहूर्त—४।९।१४ तिथि हो, म.श. वार हो। कृ.आ.पुन.अश्ले.म. ज्ये.मू.वि.पूर्वा ३नक्षत्र हो, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है। **गृहादि निर्माणमें आय विचार**—

ग्रामभात् वास्तुकर्तु नक्षत्र यावद् गणना कार्या		
स्थान	नक्षत्र	फल
मस्तके	७	धनलाभ
पृष्ठे	७	हानि नैःस्वम्
हृदये	७	सुख लाभः
पादे	७	पर्यटनम्

गृहस्वामीके हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणाकर आठ का भाग देवे जो शेष रहे वह क्रमसे ध्वजादि आय होती है। १ ध्वज, २ धूम्र. ३ सिंह. ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०) काक। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमिको अन्दर से मापना चाहिए। और देवस्थान की भूमिको बाहर से नापना चाहिए। ३२ हाथ लम्बे चौडे घरमें आयादि विचारकी आवश्यकता नहीं हैं, और न चार द्वार वाले घरमें ही। ब्रह्माणको ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय वैश्यको गजाय और शूद्रको वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीचजातिके लिए शुभ है।

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान—घरके क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई चौड़ाईके गुणन) को ८ से गुणाकर २७ का भाग दें। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जाने। इस नक्षत्रको ८ से भाग दें। शेषांक तुल्य व्यय जाने। आय कम हो तो शुभहै, अन्यथा अशुभ।

वास्तु भूमिका शुभाशुभ जानना—नई बस्तीमें गृहादि बनाना होतो भूमि पूजनपूर्वक शामको एकहाथ चौडा एकहाथ लम्बा एकहाथ गहरा गड्ढा बनाकर उसको जलसे

नन्दा भद्रा जया रिक्ता पूर्णा
1,6,11, 2,7,12, 3,8,13 4,9,14 5,10,15

भर देवें। प्रातःकाल उसको देखे, यदि जलयुक्त होतो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा—मकानकी नींवको इतना गहरा खोदें कि जल दीखने लगे, अथवा दूसरी मिट्टी जबतक निकले, अथवा साढ़ेतीन हाथ गहरी अर्थात् मनुष्यके बराबर खोदें। खोदते समय जो पत्थर निकले तो धन आयुकी वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धन नाश हो और जो हाड़ राख बाल निकलें तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा हो।

गृहारम्भमुहूर्त—वैशा.श्रा. मार्ग. माघ. फाल्गुन. और मे. वृष. कर्क. सि. तु. वृ.म.कु. सूर्यके सौर महीने गृहारम्भमें श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्णपक्षकी प्रतिपदा इन तिथियोंमें, च.बु.गु.शु.श. वारोंमें,रो.मृ. चित्रा ह.स्वा.अनु. उत्तरा ३.ध.श.रे. वेधरहित नक्षत्रोंमें, १।३।५।६।८।११।१२ लग्नोंमें, पंचबाण और भूमिशयनसे रहित दिनोंमें, लग्नसे केन्द्र त्रिकोण स्थानोंमें शुभग्रह और ३।६।११वें स्थानमें पापग्रह तथा अष्टमस्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भमें वत्सचक्र व मासादिका विचार नहीं करना।

विशेष—पुष्य. उ. ३ रो.म. आश्ले.पू. षा. इनमें से जिस पर बृहस्पति हो उस नक्षत्रमें और बृहस्पतिवारको गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो.ह.श्र. उफा. चि. इनमें से जिसपर बुध हो उस नक्षत्रमें बुधवारको गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि.आ.चि.ध.श.अश्ले. इनमेंसे जिसपर शुक्र हो उस नक्षत्रमें और शुक्रवारको गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्

सूर्य नक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।

स्थान	नक्ष,	फल
शीर्ष	३	अग्निदाह
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्ति
द:कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाश
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्—"संक्रांति मिति दिन पाचवें सप्तम नवमे जोय। दस इक्कीस चौबीसवें षट् दिन पृथ्वी सोय॥ तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५।११।७।६।२।१० एता घटिका भूमि-कर्मण्यवश्य वर्जनीयाः।" अन्यच्च-सूर्यके नक्षत्रसे ५।७।६।१२।१६।२६ इतनी संख्याके नक्षत्रोंमें पृथ्वी शयनके कारण मकानकी नीव, तड़ाग, वापी, कूपादिका खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्ये कूपविचार

मध्य	ईशान	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	उत्तर	वायव्य
अर्थहीन	सुपुष्टि	ऐश्वर्य	पुत्रनाश	स्त्रीनाशः	गृहेशनाशः	संपत्	सुखम्	शत्रुभयम्

नक्षत्रवारो तिथिसंप्रयुक्तो वेदाहतं तद्गणकेन कार्यम्। एकावशिष्टे च जलं हि नागे द्वाभ्यां च शेषं सलिलं च स्वर्गे॥ त्रिशून्य शेषे भुवि संस्थितं च, भूसंस्थिति सुष्ठु वदन्ति विज्ञाः॥

अथ चुल्लिचक्रविचार—सूर्यके नक्षत्रसे ६ नक्षत्र पीठके सुखप्रद। ४ मस्तकके मृत्युप्रद। ८ बाहुके सुन्दर सुख भोगदायक। ५ गर्भके नाशक। २ भुजाके भोगदायक। २ चरणके नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्यने कहा है, पण्डितजन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चूल्हा बनावे, तथा इन्ही शुभ नक्षत्रोंमें प्रथम अग्नि जलावे।

नूतनगृहप्रवेश मुहूर्त—माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठमासेषु शोभनः। प्रवेशो म ग्मो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग) कार्तिकमासयोः॥ (यहाँ-चान्द्रमास लेना) उत्तरा३, अनु.रो.मृ.चि.रे. इन नक्षत्रोंमें, रिक्तामारहित तिथियोंमें, चं.बु.गु.शु. इन वारोंमें, २।५।८।११ लग्नमें। अत्यावश्य के ३।६।९।१२ लग्नमें भी, लग्नसे १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभग्रह हों, ३।६।११में क्रूरग्रह हों,१,६,८,१२वें चन्द्रमा न हो, चौथा ८वां स्थान शुद्ध हो, जन्मलग्न या जन्मराशि से ८वीं राशि लग्नमें न हो, चन्द्र तारा शुभ हों और कुम्भ चक्रकी भी शुद्धिहो ऐ समय में आगे गौ कन्या जलपूर्ण पुष्पमाला युक्त कलश वेद ध्वनि मंगलगान वाद्यके साथसे दम्पतिको गृह-प्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेशका विशेष मुहूर्त—पुराने अर्थात् जीर्ण या तृण कुटीर अग्नि वर्षा इत्यादि के भयसे बनवाये हुए नए घरमें भी वै.श्रा.का. मार्ग. फा. मासमें शत. पुष्य. स्वा. और ध. नक्षत्रोंमें तथा गुरु. शुक्रके अस्तमें भी गृहप्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्

खाते राहोर्मुखात्पृष्ठेदिग्भागः शुभदो भवेत्

राहुमुख	ऐशान्यां	वायव्यां	नैऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालयारम्भे सूर्य	मी. मेष वृष	मि. कर्क सिंह	कन्या तुला वृश्चिक	धनुः मकर कुम्भ
गृहारम्भे सूर्यः	सिंह कं. तु.	वृश्चि. ध. मकर	कुम्भ मीन मेष	वृष मिथुन कर्क
जलाशयारम्भे सूर्यः	म. कुं. मी.	मे. वृष मिथुन	कर्क सिंह कन्या	तुला वृश्चिक धनुः
खातदिशा	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्याम्	नैऋत्यां

द्वारशाखाचक्रं सूर्यनक्षत्रात्

स्थान	न.	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोणे	८	उद्वसनम्
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाशः
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम् सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त—अनु.ह. तीनों उ.रो.ध.श.म.पूषा.रे.पुष्य. मृ, नक्षत्र हों या चन्द्रमा मकरके उत्तरार्ध, मीन या कर्कमें हो लग्नमें बुध या गुरु हो, शुक्र १०वें स्थानमें हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २।१०।४।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूप वापी जलचक्रम्

ईषान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्नेय ३ सुजल
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नेऋत्य ३ अमृत जल

गणनाक्रम मध्य पूर्व आग्नेयदक्षिणा-दिक्रमेण बोध्यम्

सूर्यभात्तड़ागचक्रम्

ईशान २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आग्नेय. २ जलाधिक्य
उत्तर २ अमृत जल	मध्य ५ बहुजल	दक्षिण २ जलनाश
वायव्य २ जलनाश	प. २ बहुजल	नैऋत्य २ अमृत जल

अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति । तत्फल-वारिवाहे वारि-हानिः । गणनाक्रम-पूर्व आग्नेय द.नै.प.वा. उ.ई. मध्य, वारिवाह । वाहे चामृत संज्ञकम् ।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्

ईशान अ.म.कृ. मध्यजल	पूर्व पुन.पु.अश्ले जलाभाव	आग्नेय म.पू.का.उका. सुजल २
उत्तर पूभा.उभा. रे.मिष्ठजलं	मध्य रो.मृ.आर्द्रा शीघ्रजलं	दक्षिण ह.चि.स्वा. जलाभावः
वायव्य श्र.ध.श. क्षारजलं	पश्चिम मू.पू.उषा अमृतजलं	नेऋत्य वि.अनु.ज्ये. बहुजलम

जलाशयारामप्रतिष्ठा मुहूर्त

देवतारामवाप्यादि प्रतिष्ठामुत्तरायणे,
माघादि पञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने ।
मातृभैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः,
महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने ॥

अश्वि.रो.मृ.पुन.पुष्य.ह चि.स्वा. अनु.श्र.ध. श. उत्तरा. ३. रे. एषु भेषु, कुजशनिवर्जितवारेषु, २।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ एतत्तिथौ शुक्ले, १।२।३।५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्र रो. नीचनिर्बला-स्तादि रहितकाले, कर्तुः सूर्य चन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२।५।८।११) लग्नेषु । लग्नात् १।४।७।१०।६।५।२।११ स्थानेषु शुभे, ३।६।११ सेन्दुभिः पापैः, पूर्वाह्णे देवप्रतिष्ठा कार्या ।

देवताविशेषेण लग्नम्–सिंहे सूर्यः शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः । कुम्भे वेवाश्चरे क्षुद्रा द्व्यगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः ॥ यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिने यदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः ॥

वास्तुशान्ति मुहूर्तः–श्र. ध. मृ. मू अनु. रे. ह. वि. स्वा. उत्तरा ३ पुन. पुष्य. रो. अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम् ॥

अग्नि का वास किस लोक में है—जिसदिन हवन करना हो उसदिन तिथि और वारकी संख्या जोड़कर एकऔर जोड़ना, पुनः ४ का भाग देना । यदि पूरा भाग लगजाय (०शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे तब अग्निका वास पृथ्वीपर सुखकारक होता है, शेष १ बचनेपर आकाश में प्राण हानिकारक, शेष२ बचने पर पाताल में धनहानि करता है । तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार गणना रविवार से करनी । इसके बाद आहुति-चक्र जरूर देखिये ।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्

(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू०	बु०	शु०	श०	चं०	मं०	गु०	रा०	के०	ग्रहाः
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
ष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेष—यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्यखिलव्रतेषु । दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम् ॥ महारुद्रव्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कस्य राहुणा । नित्यनैमित्तके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत् ॥ दिग्दाहेप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने । केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत् ॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ । देवखातभवने सुरा-लयेऽग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः । दुर्गभङ्गे गृहे वाऽपि विवादे शत्रुविग्रहे । शान्तिकर्मे नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत् ॥

पापग्रहमुखेहवनेकृते शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवनेऽशुभे । शान्ति विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने । आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेत्तामधोमुखीम् । गोमूत्रमधुगन्धाद्यै रचिता प्रतिमां ततः । कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते ॥

अथ ऋणी-धनी विचारः—स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत् । अष्टभिश्च हरेद् भागे योऽधिकः स ऋणी भवेत् ॥

यथा—अपने वर्ग को दूना कर दूसरे वर्ग को जोड़ना । फिर ८ का भाग देना । फिर दूसरे का वर्ग दुगुना करके अपना वर्ग जोड़ना, फिर ८ का भाग देना, जिसका शेषांक अधिक बचे वह ही कम बचत वाले का ऋणी जानना ।

भूमि का लेन-देन—गुरु, शुक्रवार, १,५,६,११,१५ तिथि, मृग. पुन. अश्ले. म. पू.-फा. वि. अनु. मूल पू. षा. उ. भा. नक्षत्र में घर-जमीन का सौदा करना शुभ है ।

हलप्रवहण मुहूर्त—मृ. रे. चि. अनु. रो. उत्तरा ३ ह. अश्वि. पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मू. म. वि, एषु. भेषु, रिक्तामावष्ठ्यष्टमीरहित सत्तिथौ शुभग्रहस्य वारे, १।५।७।१०।११ लग्नेषु, भूमिशयनभद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम् ।

हलचक्रम् सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने				
३ अशुभ	८ शुभ	९ अशुभ	८ शुभ	नक्षत्र फलम्

बीजवपने राहुचक्रम् राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
८ अशुभ	३ शुभ	१ अशुभ	३ शुभ	१ अशुभ	३ शुभ	१ अशुभ	३ शुभ	४ अशुभ

बीजवपने मुहूर्त—ह. अश्वि. पुष्य. उत्तरा. ३. चि. अनु. मू. रे. स्वा. ध. रो मृ. एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः ।

विशेषः—रवेरौद्रा(आर्द्रा)द्यपादस्थे भूमेःसजायते रजः। तस्माद्दिनत्रयंतत्तु बीजवापे परित्यजेत् ।

नवान्नभक्षण मुहूर्त—मू.रे.वि.अनु.ह.अश्वि.पुष्य.अभि.स्वा.पुन.श्र.ध.श.विषघटी रहित नक्षत्रोंमें शुभ है । नन्दा रिक्तातिथियों और पौष चैत्रको छोड़कर सू. बु. गु. शुक्रवार शुभ हैं ।

गौ आदि पशु लेने का मुहूर्त—अश्वि. पुन. पु. ह. वि. ज्ये. धनि. शत. रे. नक्षत्र में गौ लेना बेचना । अन्य पशु पुन. पूर्वा ३ ह. अनु. ज्ये. मू. धनि. रे. में लेना बेचना शुभ है । गाय लेनी हो तो उ. फा. से दिन नक्षत्र तक गिने, ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थ लाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ. २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है । वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक. फिर दो-दो के क्रम से गाय के समान फल जानो । महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौ नक्षत्र-गणना क्रम शुभाशुभफल सूर्य नक्षत्र तक गिने (नौमी चौदस चौथ चौपाया. मंगल हानि करे घर आया) ।

सूर्य नक्षत्रात् काष्ठादि (गुहारम्भादि) संस्थापनचक्रम्

६ उत्तमपाक शुभ	२ शवदहन नेष्ट	४ सर्पभय नेष्ट	४ मित्रलाभ शुभ	४ रोगभय नेष्ट	४ बन्धकर्म नेष्ट	४ सुख शुभ	नक्षत्र संख्या

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्त—मृ. रे. चि. अनु. उत्तरा. ३ रो. ह. पुष्य. अश्वि. श. मू. वि. नक्षत्रों में रिक्तामारहित शुभ तिथियों में और चं. बु. शुक्रवार हो, शुक्लपक्ष में ४।१।११।१२ लग्न में शुभ है । तृणकाष्ठादि संग्रह निषेध तृण कष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि कर्म कुम्भ, मीन के चंद्रमा में नही करना चाहिए ।

मशीनरी चालू करने का मुहूर्त—धनि., अश्वि.,हस्त-चित्रा.,अनु. पुन.पुष्य. ज्ये. एव रेवती नक्षत्र में मशीनरी चालू करनी चाहिए, इसके लिए वारों में बुधवार उत्तम है ।

औषध मुहूर्तः—ह. अ. पुष्य. अभि. मृ. रे. चि. अनु. स्वा.पुन. श्र. ध. श. मूल. जन्म-नक्षत्र को छोड़कर इन नक्षत्रों में ४।६।१४ को छोड़कर शुभ तिथियों में, भौम शनि को छोड़कर अन्य वारों में शुभ है ।

यात्रा मुहूर्त विचार

ह. म. श्र. अश्वि. मृ. पुष्य. पुन. ध. अनु. रे. नक्षत्र यात्रा में अत्युत्तम । रो. उत्तरा ३ पूर्वा ३ मू. मध्यम और भ. कृ. आर्द्रा अश्ले. म. चि. स्वा. वि. ज्ये. ये नक्षत्र यात्रामें निन्द्य है । आत्यावश्यकता में भरण्यादि नक्षत्रों में आरम्भ की क्रमशः ७।२१।१०।१४।११।४०। १४।१४।१४ घटियां यात्रामें त्याज्य करें । कृष्णपक्ष की प्रतिपदा और शुक्लपक्ष की द्वितीया तथा दिग्द्वार लग्न में यात्रा शुभ है । जन्म लग्न और जन्म राशि से अष्टम लग्न नवांश में तथा कुम्भ लग्न या कुम्भ के नवांशमें यात्रा कदापि न करें ।

चन्द्रवास

मेष, सिंह, धनुः का चन्द्र पूर्व में । वृष, कन्या, मकर का चन्द्र दक्षिण में । मिथुन, तुला, कुम्भ का चन्द्र पश्चिममें । कर्क, वृश्चिक, मीनका चन्द्र उत्तर दिशा में ।
सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः । पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ।
सर्वे दोषाः लयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे ॥

अथ योगिनीवास चक्र

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
१/९	३/११	५/१३	४/१२	६/१४	७/१५	२/१०	८/३०	तिथयः

दिक्शूलचक्र

पूर्व	पश्चिम	दक्षिण	उत्तर	दिशा
चंद्र	रवि	गुरु	बुध	वार
शनि	शुक्र	०	मंगल	वार

कालराहु चक्र

पूर्व	आ.	द.	नै०	प०	वा०	उ०	दिशा
श,	शु.	गु.	बुध	मं०	चं०	र०	वार

संमुखकालवासवर्ज्यम्

समय	शूल
प्रातःकाल	पूर्व दिशा
माध्याह्न	दक्षिण
संध्याकाल	पश्चिम
अर्धरात्रि	उत्तर

आवश्यके दिक्शूले पदार्थाः

र०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	ग्रह वा.
घृत	पय	गुड़	पुष्प	दधि	घृत	तिल	भक्ष्य
ताम्बूल	चन्दन	मृद्	तिल	दधि	यव	माषान्न	धारण

एकराशिस्थ चन्द्रघट्यात्मक निवासः

पूर्व	द०	प०	उ०	पूर्व	द०	प०	उ०	दि
१७	३२	५१	६६	८६	१०१	१३१	१३५	घ

यात्रा शुद्धि—जन्म लग्नेश, राशीश, जन्मदशेश ये अस्त हों और गुरु, शुक्र अस्त सिंहस्थ गुरु, नीचस्थ गुरु ये सब यत्न से वर्ज्य करें ।

लग्न शुद्धि—शुभग्रह १।४।५।७।९।१०वें, पापग्रह ३।६।१०।११वें श्रेष्ठ हैं । चन्द्रमा १।६।८।१२वें, लग्नेश ६।७।८।१२वें, शनि १०वें शुक्र ७ वें नेष्ट हैं ।

अथ यात्रायां दिग्दोहदचक्रम्

पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
घृत	तण्डुल	तिलोदक	सक्तुक	मत्स्य	गोधूम	दुग्ध	पायस	वस्तूनि

यात्रायां वारदोहम्

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
रसाल	पायस	कांजी	पक्वदुग्ध	दधि	पयोश्री	ति.अ.	वस्तुनि

अथ नक्षत्रशूलम्

पू०	द०	प०	उ०	दिशा
ज्ये.	पूभा.	रो.	उफा.	भानि

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशः—१। २। ३। ५। ७।१०।११।१३ तिथि । चं.बु.गु.शु.श. वार । अ. रो, मृ.पुष्य.उ. ३. ह. चित्रा. अनु. स्वा. श्र. रे.ध. श. नक्षत्र । ३।५।६।८।९।११।१२ लग्न, ४।८ शुद्ध हों १।४।७।१०।५।९ स्थानमें शुभग्रह हों. ३।६।११वें में पापग्रह हो । शुभ नवांश में प्रवेश करें ।

यात्रायां शुभशकुनानि—विप्र २, अश्व, गज, मद, फल, अन्न, दुग्ध, जौ, दधि, सर्षप, कमल, निर्मलवस्त्र, वाद्य, वैश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि,

मत्स्य, मधुलग्नी, गौरीकन्या, कार्यसिद्धि वाक्य, जलपूर्णघट, पश्चाद्रिक्तघट, एते प्रयाणसमये दृष्टाः सत्फलदा भवन्ति । अशुभशकुनानि—वन्ध्यास्त्री, चर्म, ईन्धन, संन्यासी, मार्जारयुद्ध, कुटुम्बकलि, विधवा, जातिभ्रष्ट, अंगहीन, रोदन, शत्रु, महिषयुद्ध, छिक्का, दुष्टवाणी एते प्रयाणसमये दृष्टा अशुभफलदा भवन्ति ।

सर्वार्थसिद्धि योग—शुक्लादि तिथि और नक्षत्र तथा वार की संख्या के जोड़को तीन जगह रखकर क्रमशः ७।८।३ का भाग देना । शेष प्रथम जगहमें शून्य हो तो यात्रामें क्लेश, मध्यमें शून्य हो तो धनक्षति और अन्तमें शून्य हो तो महाकष्ट होता है । सर्वत्र अंक आनेसे सौख्य जय लाभ हो ।

वर्णक्रमेण प्रस्थानविधानम्—यज्ञोपवीतक शस्त्र मधु च स्थापयेत्फलम् । विप्रादि क्रमतः स्वर्णसवंधान्याम्बरादिकम् । (सर्वे स्त्रीप्रियवस्तु वा) । गमनदिशि नगराद् बहिः गृहान्तरे वा विप्रादिभिः यज्ञोपवीतादिना प्रस्थानं कार्यम् । तच्च क्षितीशो १०, माण्डलीकः ७, सामान्यजन ५ दिनाभ्यन्तरे यात्रा कार्या । परतोऽन्यमुहूर्तस्यावश्यकता बोध्या । प्रस्थानकर्तुर्नियमाः—त्रिरात्रं वर्जयेत्क्षीरं पंचाहं क्षुरकर्म च । तदहश्चावशेषाणि सप्ताहं मैथुनं त्यजेत् ॥ १ ॥ कटुतैलगुडक्षार पक्व मांसाशनं तथा । भुक्त्वा यो यात्यसौ मोहाद् व्याधितः स निवर्तते ॥

उ (उद्वेग) च (चंचल) ला (लाभ) अ (अमृत) का (काल) शु (शुभ) रो (रोग)

इस चतुर्घटिका मुहूर्तमें ३।।। घटीकी जगह दिनमान व रात्रिमानके अष्टमांशानुसार कुछ पल न्यूनाधिक भी हो जाते हैं ।

जन्मचन्द्रप्रशंसा:—कृषि-भवन-विवाहेऽप्राशने मौञ्जिबन्धे, प्रथमयुवतिसंगारामकूपादि कृत्ये । पपटविधिअभिषेके जन्मचन्द्रः प्रशस्तः इति वदति वराहः क्षौर-यात्रां विहाय ॥ गर्भाधाने जन्मकालेऽभिषेके मौञ्जिबन्धने । पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो ताराबलः शुभः ॥

दिने चतुर्घटिका मुहूर्त								रात्री चतुर्घटिका मुहूर्त						
सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	घटी	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श
उ	अ	रो	ला	शु	च	का	३।।।	शु	च	का	उ	अ	रो	ला
च	का	उ	अ	रो	ला	शु	३।।।	अ	रो	ला	शु	च	का	उ
ला	शु	च	का	उ	अ	रो	३।।।	च	का	उ	अ	रो	ला	शु
अ	रो	ला	शु	च	का	उ	३।।।	रो	ला	शु	च	का	उ	अ
का	उ	अ	र	ला	शु	च	३।।।	का	उ	अ	रो	ला	शु	च
शु	च	का	उ	अ	रो	ला	३।।।	ला	शु	च	का	उ	अ	रो
रो	ला	शु	च	का	उ	अ	३।।।	उ	अ	रो	ला	शु	च	का
रो	अ	रो	ला	शु	चं	का	३।।।	शु	चं	का	उ	अ	रो	ला

प्रश्न-विचारः

कार्यसिद्धिज्ञानम्—लग्नपः कार्यपश्चापि लग्नगौ कार्यगो युतौ । मिथस्थौ स्वस्वगौ दृष्टौ स्वोच्चादौ चेत्सुसिद्धिदौ ॥ १ ॥ एवं योगेषु चन्द्रदृष्टौ सत्यां कार्यसिद्धिरवश्यम्भवत्यन्यथा सन्देहः ।

प्रश्नतो वर्षशुभाशुभविचारः—तिथिवारर्क्षयोगानां युतिः संवत्सरान्विता । प्रष्टुर्नामाक्षरैर्युक्ता त्रिहता शेषके फलम् ॥ १ ॥ एकेन क्लेशं, समता द्वाभ्यां, त्रितये महत्सुखम् ।

पथिकागमन विचारः—

प्रश्नाक्षरं द्विगुणितं त्रयोदश समन्वितम् । अष्टभिश्च हरेद्भागं शेषांके फलमादिशेत् ॥
एकेन गमनं भवति द्वाभ्यां मार्ग उच्यते । तृतीये चार्धमार्गे च चतुर्थे द्वारमागतः ॥
पञ्चमे पुनरावृत्ति षष्ठे व्याधि समन्वितः । सप्तमे शून्यतावृत्ति अष्टमे मरणं ध्रुवम् ॥

प्रश्नाक्षरों को द्विगुणित कर १३ जोड़ दें और ८ का भाग दें । जो शेष बचे उनका फल इस प्रकार बताए—१. आनेकी सोच रहा है । २. चल पड़ा है । ३. रास्तेमें है । ४. शीघ्र आ जाएगा । ५. ठहरके आएगा । ६. अस्वस्थ है । ७. नहीं आएगा । ८. मृत्यु या कष्टमें है ।

देशान्तर से पत्र आयेगा कि नहीं ?—प्रश्न लग्न चर राशिका हो और उससे द्वितीय तृतीय स्थानमें शुभ ग्रह युक्त अथवा दृष्ट हो तो पत्र जल्दी आयेगा, मार्गमें है । स्थिर लग्नमें विलम्बसे पत्र मिले । प्रश्न लग्नमें चन्द्र हो और शुभ ग्रह देखता हो तो पत्र आयेगा, विपरीत होतो उत्तर नहीं मिलेगा ।

पुत्र लाभ होगा कि नहीं ?—तत्कालीन तिथिकी संख्याको ४ से गुणाकर, १ जोड़ना, तदनन्तर वार तथा योगकी संख्या युक्त करके २ से भाग देना, जो लब्धि आवे उसको तीनसे गुणा करके ४से भाग देना, जो शेष बचे उससे फल कहें । १ शेष बचे तो विलम्बसे पुत्र सन्तान होगा, चिरंजीविताके लिये पार्थिव शिवपूजन करना चाहिए । शेष २ बचेतो पूर्व जन्मके पापके कारण सन्तानसुख न होगा, गया यात्रा तथा हरिवंश पुराणका नवाह्न सुनने तथा सन्तानगोपालके सवालक्ष जपसे सम्भव है कि ईश्वर कृपा करे । ३ शेष रहें तो पुत्र लाभ होगा, किसी गरीबकी कन्याको विवाह दें, या उस विवाहमें गुप्त दानसे मदद करें, ऐसा करनेसे होने वाले पुत्रका पूर्ण सुख होगा । ४।१।० शेष बचे तो सन्तान शीघ्र होगी ।

विवाह होगा कि नहीं ?—यदि लग्नसे २।३।६।७।१०।११ स्थानोंमें चन्द्रमाको बृहस्पति देखे तो विवाह हो जायेगा । यदि चन्द्रमाके साथ पापी ग्रह हो या पापी ग्रहोंकी दृष्टि हो तो विवाह नहीं होगा । यदि लग्नसे ३।५।६।७।११ स्थानमें चन्द्रमाको सूर्य, बुध बृहस्पति इनमें से कोई देखे अथवा व्ययेश सप्तममें और सप्तमेश लग्नमें हो, अथवा २।४।७ इन राशियोंमें से किसी एक राशिमें चन्द्रमा या शुक्र होतो अवश्य विवाह हो जायेगा ।

मूक प्रश्न तथा फल वर्णन—प्रश्नकर्त्ता से एक सौ आठ अंकके भीतर कोई एक अंक मुखसे कहलायें या लिखायें, उनमें १२ का भाग देकर पीछे यदि १।६।७ बचे तो देर से कार्य सिद्ध हो । यदि ८।४।१०।५ बचे तो कार्य नाश हो । ११ बचे तो सिद्धि, २ बचने से वृद्धि, ३।६।१२ (०) बचने से शीघ्र सिद्धि हो, यह फल कहें ।

रोग त्रिनाड़ी चक्र

आर्द्रा	पू. फा.	उ. फा.	अनु.	ज्ये.	ध.	श.	भ.	कृ.	आदि
पुन.	मघा	ह.	वि.	मू.	श्र.	पू. भा.	अश्वि.	रो.	मध्य
पुष्य	अश्ले	चित्रा	स्वा.	पू. षा.	उ. षा.	उ. भा	रे.	मृ.	अन्त्य

सूर्यनक्षत्र, दिननक्षत्र और जन्मनक्षत्र या नामनक्षत्र रोगत्रिनाड़ी चक्रमें एक नाड़ी पर होंतो रोगी की मृत्यु होती है। प्रतिदिन देखनेसे जिसदिन वह योग मिले उस दिन रोगी की मृत्यु जाने। यह रोग त्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा युद्धके समय भी वर्जित है।

अथ रोगोत्पत्तौ सन्तानप्रतिबन्धावौ च देवदोषज्ञानम्—तृतीय, नवम, द्वादश, षष्ठ स्थान में प्रश्न लग्नसे कोई पापग्रह हो तो विष, जल, शस्त्रसे मरे हुए किसी स्वकुलोत्पन्न व्यक्ति का दोष जानना। यह योग पापग्रहोंके साथ शुभ का संयोग होने पर नहीं होता। यदि बारहवें आठवें स्थानमें राहु हो तो प्रेतदोष, बृहस्पति के होने से पितरदोष, चन्द्रमाके होने से जलदेवीका दोष कहे। सूर्यके होनेसे देवी दोष अथवा लग्न अष्टम द्वादशमें सूर्य हो तो श्रेत्रपाल का दोष कहें। शनिके होनेसे अपने गोत्रकी देवी (सती) का दोष और बुध व्यय तथा अष्टम स्थानमें हो तो भूतदोष जानना। व्यय तथा अष्टम स्थानमें भौम हो तो शाकिनी दोष, शुक्रके होनेसे जलदेवीका दोष होता है। परंच जो मनुष्य स्वधर्मनिष्ठ नहीं हैं अथवा जो ईश्वरसे विमुख रहते हैं, पूर्वोक्त दोष उन्हीं को होते हैं। दोष सूचक ग्रह अपनी राशी तथा उच्च में हो, बलवान् हों तो उक्त दोष साध्य, यदि चन्द्र नीच तथा निर्बल हो और दोष सूचक ग्रह भी नीच शत्रु क्षेत्रमें हो तो उक्त दोष असाध्य होते हैं। बलवान् पाप ग्रह केन्द्रमें हो तो पूर्वोक्त देवता असाध्य होते हैं, यदि शुभ ग्रह केन्द्र स्थानोंमें हो तो पूर्वोक्त देवगण साध्य अर्थात् मन्त्र स्तुति पूजन आदिसे उनका दोष दूर हो जाता है।

मतान्तरेण दोषज्ञानम्—तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न प्रहर इनको जोड़ें और ८ का भाग दें। शेष ३।७ बचें तो देवता की बाधा, २।८ बचें तो पितृबाधा और ६।४ बचें तो भूत प्रेतकी बाधा जानना। "उदयाद्घटिका भिन्ना तिथिवारेण संयुता। भक्ते द्वादशभिः शेषे जीवनं मरणं वदेत् ॥१॥ राम (३), बाण (५), रसा (६), ऽष्टौ च (८), नन्द (९), रुद्राश्च (११), जीवति। एक (१), पक्ष (२), युगा (४), सप्त (७), दशा (१०) ऽर्काः (१२) नात्र जीवति।"

अथ गर्भिणीपुत्रादि ज्ञानम्—तिथिवारं च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम्। सप्तभक्ते समे शेषे कन्या च विषमे सुतः।.१॥ तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार की रविवार से और नक्षत्रकी अश्विनी से करना।

आयुनिर्णयः—जन्मलग्नेश अष्टमेश से और जन्मलग्न चंद्र से आयु का निर्णय करें। दोनों में भेद हो तो जन्मलग्न होरालग्नसे प्राप्त आयु जाने। चरे चरे, स्थिरे द्विस्वभावे दीर्घायुः। द्विस्वभावे द्विस्वभावे, चरे स्थिरे मध्यमायुः। स्थिरे स्थिरे, चरे द्विस्वभावेऽल्पायुः। १।४।५।७।६।१०।११ इन स्थानों में लग्नेश अष्टमेश तथा दशमेश हो तो दीर्घायुः होती है। २।३।४।५।८।११ इन स्थानोंमें पापग्रह हों तो मध्यमायु, इसके अतिरिक्त अल्पायु होती है। लग्नेश सूर्यका मित्र हो तो दीर्घायु, सम हो तो मध्यमायुः, शत्रु हो तो अल्पायु जाने।

अथ नष्टवस्तुज्ञानम्

तिथिवारं च नक्षत्रं प्रहरेण समन्वितम्। दिक् संख्यया हतं चैव सप्तभिर्विभजेत्तदा ॥
एकेन भूतले द्रव्यं द्वयं चेद् भांडसंस्थितम्। तृतीये जलमध्यस्थं अंतरिक्षे चतुर्थके ॥
तुषस्थं पंचमे तुस्यात्षठे गोमयमध्यगम्। सप्तमे भस्मध्यस्थमित्येतत्प्रश्नलक्षणम् ॥

अथ नष्ट वस्तुज्ञानाय चक्रं सफलम्

अन्ध	मन्द	मध्य	सुलोचन	संज्ञा
रो. पुष्य. उ. फा. वि. पूषा ध. रे.	मृ. आश्ले. ह. अनु. उषा. श. अ.	आ. म. वि. ज्ये. अभि. पूभा. भ.	पुन. पू. फा. स्वा. मू. श्र. उभा. कृ.	नक्षत्राणि
पूर्वे गतम्	दक्षिणेगतं	पश्चि. गतं	उत्तरे गतं	दिशा
शीघ्र लाभः	यत्नेन लाभः	दूरे श्रवणं	नैव प्राप्ति	फलं

पशुरन्वेषणं (सूर्यभात्)
६ भ्रमति वनेषु।
१५ ग्रामसमीपस्थः।
२२ गृहे आगतः।
२३।२४ नष्टप्राप्तिः।
२५।२६।२७ निधनमपि न श्रूयते।

जयपराजय प्रश्न—यदि तीसरे भाव से लेकर आठवें तक शुभ ग्रह अधिक बलवान् हों तो प्रतिवादी (मुद्दालह) जीतेगा। यदि नवम भाव से लेकर दूसरे भाव तक शुभ ग्रह अधिक बलवान् हों तो मुदई जीतेगा और यदि पापग्रह लग्न में बैठा हो तो प्रश्नकर्त्ता जीतेगा, परन्तु वहां पापग्रह नीच राशि में हो या अस्त हो अथवा शत्रु राशि के घरमें हो तो हार जायेगा। यदि लग्न और सप्तम स्थानमें पापग्रह तुल्य बली हो अथवा लग्नेश और सप्तमेश परस्पर मित्र हों तो सन्धि हो जायेगी। पापग्रह न्यूनाधिक बली हों तो अधिक बली ही जीतेगा, अर्थात् लग्नस्थित पापग्रह बली हो तो प्रश्नकर्त्ता की विजय और यदि सप्तमस्थ पापग्रह बलवान् हो तो शत्रु की विजय होगी। यदि लग्न सप्तमातिरिक्त स्थानमें दो पापग्रहों की परस्पर पूर्ण दृष्टि हो तो वादी प्रतिवादी दोनों शस्त्रों से घायल होते हैं। प्रश्नकालमें लग्नेश सप्तमेश परस्पर मित्र हों तो युद्ध छिड़ेगा, अन्यथा नहीं।

अक्षांशादि सारिणी

देशान्तर—दिल्ली से पूर्व + पश्चिम — अन्तर

स्टैण्डर्ड अन्तर—स्थानीय टाइम और स्टैण्डर्ड टाइम का अन्तर

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर मि. सै.	नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर मि. सै.	नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर मि. सै.	नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर मि. सै.
अंकलेश्वर	२१।३६	७२।५९	—३८। ४	—१६।५२	आर्वी	२०।५६	७८।१३	—१७। ८	+४ । ४	एरनाकुलम्	९।५९	७६।१८	—२४।४८	+३ ।३६	कालका	३०।४७	७६।५७	—२२।१२	—१ । ०
अंजार	२३। ७	७०। १	—४६।५६	—२८।४४	आद्री	२३।३२	८६।४१	+१६।४४	+३७।५६	एरंडोल	२०।५५	७५।१६	—२८।४४	—७ ।३२	कालीकट	११।१५	७५।४५	—२७। ०	—५ ।४८
अंबरनाथ	१९।१२	७३।१०	—३७।२०	—१६। ८	ओखा	२२।२८	६९। ५	—५३।४०	—३२।२८	एलोर	१६।४३	८१। ५	—५ ।४०	+१५।३२	कालीघाट	२२।३१	८८।२१	+२३।२४	+४४।३६
अंबाजी	२४।२२	७२।५६	—३८।१६	—१८। ४	अखनूर का.	३२।५४	७४।३५	—३१।४०	—१०।२८	एलिचपुर	२१।१८	७७।३३	—१९।४८	+१ ।२४	कासगंज	२७।४८	७८।३९	—१५।२४	+५ ।४८
अंबाला	३०।२३	७६।४६	—२२।५६	—१ ।४४	अनूपशहर	२८।२१	७८।२३	—१६।२८	+४ ।४४	ओरछा	२५।२१	७८।३८	—१५।२८	+५ ।४४	किशनगंज	२६। ७	८७।५८	+२१।५२	+४३। ४
अंबिकापुर	२३।१८	८३।१५	+३ । ०	+२४।१२	अलीगंज भो.	२७।२०	७९।१२	—१३।१२	+८ । ०	औरंगाबाद	१९।५६	७५।१९	—२८।४४	—७ ।३२	किशनगढ़	२७।५२	७०।३४	—४७।२८	—२६।१६
अकलकोट	१७।३२	७६।१३	—२५। ८	—३ ।५६	अलीगंज ह.	२६।१२	८४। ८	+६ ।३२	+२७।४४	औरंगा. बि.	२४।४५	८४।२५	+७ ।४०	+२८।५२	किशनगढ़ अ.	२६।३५	७४।५१	—३०।३६	—९ ।२४
अकोला	२०।४२	७७। ०	—२२। ०	—० ।४८	अमेठी	२६। ७	८१।४७	—२ ।५२	+१८।२०	कांकरोली	२५। २	७३।५४	—३४।२४	—१३।१२	किशनगढ़ ज.	२७।१०	७५।२२	—२८।३२	—७ ।२०
अगरतला	२३।४९	९१।१७	+३५। ८	+५६।२०	अगरतला त्रि.	२३।४९	९१।१७	+३५। ८	+५६।२०	कांडला	२३। १	७०।१४	—४९। ४	—२७।५२	कुंभकोणम्	१०।५८	७९।२३	—१२।२८	+८ ।४४
अचलगढ़	२४।३८	७२।४८	—३८।४८	—१७।३६	अमरोहा	२८।५४	७८।३४	—१५।४४	+५ ।२८	कडपा	१४।२८	७८।४९	—१४।४४	+६ ।२८	कुमठा	१४।२५	७४।२४	—३२।२४	—११।१२
अचलपुर	२१।१६	७७।३०	—२०। ०	+१ ।१२	आसनसोल	२३।४२	८७।२०	+१९।२०	+४०।३२	कडी	२३।१८	७२।२०	—४०।४०	—१९।२८	कुडवाड़ी	१८। ५	७५।२५	—२८।२०	—७ । ८
अजन्ता	२०।३६	७५।३६	—२७।३६	—६ ।२८	इगतपुरी	१९।४२	७३।३५	—३५।४०	—१४।२८	कदोद	२१।१३	७३।१४	—३७। ४	—१५।५२	कुचामगढ़	२३। ८	७४।२७	—३२।१२	—११। ०
अजमेर	२६।२७	७४।४०	—२१।२०	—१०। ८	इचलकरंजी	१६।४१	७४।२७	—३२।१२	—११। ०	कटक	२०।२८	८५।५८	+१३।३६	+३४।४८	कूचबिहार	२६।२०	८९।२५	+२७।४०	+४८।५२
अनन्तपुर	१४।४०	७७।३५	—१९।४०	+१ ।३२	इटारसी	२२।३७	७७।४६	—१८।५६	+२ ।१६	कटनी	२३।५०	८०।२३	—८ ।२८	+१२।४४	कृष्णा	१६।२५	७७।१९	—२०।४४	+० ।२८
अनन्तनाग	३३।४४	७५।१०	—२९।२०	—८ । ८	इटावा	२६।४७	७९। २	—१३।५२	+७ ।२०	कटोसण	२३।२८	७२।१४	—४१। ४	—१९।५२	केशरीयाजी	२४। ५	७३।४०	—३५।२०	—१४। ८
अमरेली	२१।३६	७१।१२	—४५।१२	—२४। ०	इटावा बीना	२४।१०	७८।११	—१७।१६	+३ ।५६	कण्णूर	११।५१	७५।२१	—२८।३६	—७ ।२४	कोचीन	९।५८	७६।१५	—२५। ०	—३ ।४८
अमरावती	२०।५६	७७।५१	—१८।३६	+२ ।३६	इन्द्रगढ़	२५।४४	७६।१२	—२५।१२	+४ । ०	कन्याकुमारी	८। ४	७७।३६	—१९।३६	+१ ।३६	कोटा	२५।११	७५।५०	—२६।४०	—५ ।२८
अमलनेर	२१। ३	७५। ३	—२९।४८	—८ ।३६	इन्दौर	२२।४३	७५।५३	—२६।२८	+५ ।१६	कन्नौज	२७। १	७९।५६	—१०।१६	+१०।५६	कोटायम	९। ५	७६।३२	—२३।५२	—२ ।४०
अमृतसर	३१।३८	७४।५३	—३०।२८	—६ ।१६	इलाहाबाद	२५।२८	८१।५२	—२ ।३२	+१८।४०	कपडवंज	२३। २	७३। ५	—३७।४०	—१६।२८	कोडाइकेनाल	१०।१४	७७।२८	—२०। ८	+१ । ४
अयोध्या	२६।४८	८२।१८	—१ । ४	+२० । ८	इलोरा	२०। ५	७५।१०	—२९।२०	—८ । ८	कपूरथला	३१।२२	७५।२२	—२८।३२	—७ ।२०	कोल्हापुर	१६।४२	७४।१३	—३३। ८	—११।५६
अलवर	२७।३४	७६।३८	—२३।२८	—२ ।१६	ईडर	२३।५०	७३। ०	—३८। ०	—१६।४८	करजत	१८।५५	७३।२०	—३६।४०	—१५।२२	कोन्नूर	११।२०	७६।४८	—२२।४८	—१ ।३६
अल्लेपि	९।३०	७६।२२	—२४।३२	—३ ।२०	उज्जैन	२३।११	७५।४३	—२७। ८	—५ ।५६	करमाला	१८।२४	७५।१२	—२९।१२	—८ । ०	क्वीलोन	८।५३	७६।३८	—२३।२८	—२ ।१६
अलमोड़ा	२९।३७	७९।४०	—११।२०	+६ ।५२	उपला	२१।१२	७२।५४	—३८।२४	—१७।१२	कर्नूल	१५।५०	७८। ३	—१७।४८	+३ ।२४	कच्छभुज	२३।१५	६९।४०	—५१।२०	—३० । ८
अलीबाग	१८।३९	७२।५२	—३८।२२	—१७।१०	उमरखेड़	१९।३६	७७।४१	—१९।१६	+१ ।५६	करनाल	२९।४२	७७। २	—२१।५२	—० ।४०	कांगड़ा	३२। ६	७६।१८	—२४।४८	—३ ।३६
अलीगढ़	२७।५४	७८। ५	—१७।४४	+३ ।२८	उटकमंड	११।२७	७६।४४	—२३। ४	—१ ।५२	करमसद	२२।३४	७२।५४	—३८।२४	—१७।१२	कालाबाग पा.	३२।५८	७१।३६	—४३।३६	—२२।२४
अहमदनगर	१९। ५	७४।४४	—३१। ४	—६ ।५२	उदयपुर मेवा.	२४।३५	७३।४२	—३५।१२	—१४। ०	करीमनगर	१८।२८	७९। ९	—१३।३६	+७ ।३६	काबुल अफ.	३४।२७	६९। ६	—५३।३६	—३२।२४
अहमदाबाद	२३। २	७२।३७	—३९।३२	—१८।२०	उन्नाव	२६।४८	८०।४३	—८ ।१७	+१२।५५	कलकत्ता	२२।३४	८८।२४	+२३।३६	+४४।४८	काशी	२५।२०	८३। ०	+२ । ०	+२३।१२
आंवलीघाट	२३।१७	७२।२५	—४०।२०	—१९। ८	उम्बरगाँव	२०।१२	७२।४४	—३१। ४	—१७।५२	कलोल	२३।१४	७२।२८	—४०। ८	—१८।५६	कांडी लंका	७।२०	८०।४५	—७ । ०	+१४।१२
आगरा	२७।११	७८। २	—१७।५२	+३ ।२०	उमरकोट	२२।४७	७४।५०	—३०।४०	—९ ।२८	कांचीपुरम	१२।५०	७९।४३	—११। ८	+१०। ४	कायमगंज	२७।३५	७९।२१	—१२।३६	+८ ।३६
आगाह	२२।३०	७२।५४	—३८।२४	—१७।१२	उमरेठ	२२।४२	७३। ८	—३७।२८	—१६।१६	काकीनाडा	१६।५६	८२।१३	—१ । ८	+२०। ४	किश्तवाड़	३३।१२	७५।४८	—२६।४८	—५ ।३६
आजमगढ़	२६। ५	८३।१२	+२ ।४८	+२४। ०	उल्हासनगर	१९।१३	७३। ७	—३७।३२	—१६।२०	कानपुर	२६।२७	८०।२१	—८ ।३६	+१२।३६	कुरुक्षेत्र	२९।५८	७६।४८	—२२।४८	—१ ।३६
आणंद	२२।३५	७२।५८	—३८। ८	—१६।५६	उस्मानाबाद	१८। ८	७६। ५	—२१।४०	—० ।२८	काठमांडू ने.	२७।४२	८५।१७	+११। ८	+३२।२०	कैम्बलपुर पा.	३३।४८	७२।१८	—४०।४८	—१९।३६
आदिलाबाद	१९।४०	७८।३१	—१४।५६	+५ ।१६	ऊधमपुर	३२।५५	७५। ७	—२९।३२	—८ ।२०	कानानोर	११।५२	७५।२५	—२८।२०	—७ । ८	कोलम्बो	६।५६	७९।५६	—१०।१६	+१०।४६
आदोनी	१५।३८	७७।१८	—२०।४८	+० ।२४	उडीपी	१३।२१	७४।४५	—३१। ०	—९ ।४८	कामठी	२१।१०	७९।१२	—१३।१२	+८ । ०	खंडवा	२१।५०	७६।२०	—२४।४०	—३ ।२८
आबू	२४।३७	७२।४३	—३९। ८	—१७।३६	ऊंझा	२३।४७	७२।२४	—४०।२४	—१९।१२	कारंजा	२०।२९	७७।२९	—२० । ४	+१ । ८	खंडाला	१८।४५	७३।२२	—३६।३२	—१५।२०
आमोद	२२। ०	७२।५३	—३८।२८	—१७।१६	एकलिंगजी	२४।४६	७३।४७	—३४। ८	—१३।५६	कारवार	१४।४८	७४। ८	—३३।२८	—१२।१६	खंभात	२२।१९	७२।३६	—३९।३६	—१८।२४
आरकोणम्	१३। ६	७९।४१	—११।१६	+६ ।५६	एटा कासगंज	२७।३५	७८।४१	—१५।१६	+५ ।५६	कालपी	२६। ८	७९।४५	—११। ०	+१०।१२	खंभालिया	२२।१२	६९।४०	—५१।२०	—३० । ८

रोग त्रिनाड़ी चक्र

आर्द्रा	पू. फा.	उ. फा.	अनु.	ज्ये.	ध.	श.	भ.	कृ.	आदि
पुन.	मघा	ह.	वि.	मू.	श्र.	पू. भा.	अश्वि.	रो.	मध्य
पुष्य	अश्ले	चित्रा	स्वा.	पू. षा.	उ. षा.	उ. भा	रे.	मृ.	अन्त्य

सूर्यनक्षत्र, दिननक्षत्र और जन्मनक्षत्र या नामनक्षत्र रोगत्रिनाड़ी चक्रमें एक नाड़ी पर होंतो रोगी की मृत्यु होती है। प्रतिदिन देखनेसे जिसदिन वह योग मिले उस दिन रोगी की मृत्यु जाने। यह रोग त्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा युद्धके समय भी वर्जित है।

अथ रोगोत्पत्तौ सन्तानप्रतिबन्धावौ च देवदोषज्ञानम्—तृतीय, नवम, द्वादश, षष्ठ स्थान में प्रश्न लग्नसे कोई पापग्रह हो तो विष, जल, शस्त्रसे मरे हुए किसी स्वकुलोत्पन्न व्यक्ति का दोष जानना। यह योग पापग्रहोंके साथ शुभ का संयोग होने पर नहीं होता। यदि बारहवें आठवें स्थानमें राहु हो तो प्रेतदोष, बृहस्पति के होने से पितर-दोष, चन्द्रमाके होने से जलदेवीका दोष कहे। सूर्यके होनेसे देवी दोष अथवा लग्न अष्टम द्वादशमें सूर्य हो तो क्षेत्रपाल का दोष कहें। शनिके होनेसे अपने गोत्रकी देवी (सती) का दोष और बुध व्यय तथा अष्टम स्थानमें हो तो भूतदोष जानना। व्यय तथा अष्टम स्थानमें भौम हो तो शाकिनी दोष, शुक्रके होनेसे जलदेवीका दोष होता है। परंच जो मनुष्य स्वधर्मनिष्ठ नहीं हैं अथवा जो ईश्वरसे विमुख रहते हैं, पूर्वोक्त दोष उन्हीं को होते हैं। दोष सूचक ग्रह अपनी राशी तथा उच्च में हो, बलवान् हों तो उक्त दोष साध्य, यदि चन्द्र नीच तथा निर्बल हो और दोष सूचक ग्रह भी नीच शत्रु क्षेत्रमें हो तो उक्त दोष असाध्य होते हैं। बलवान् पाप ग्रह केन्द्रमें हो तो पूर्वोक्त देवता असाध्य होते हैं, यदि शुभ ग्रह केन्द्र स्थानोंमें हो तो पूर्वोक्त देवगण साध्य अर्थात् मन्त्रस्तुति पूजन आदिसे उनका दोष दूर हो जाता है।

मतान्तरेण दोषज्ञानम्—तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न प्रहर इनको जोड़ें और ८ का भाग दें। शेष ३।७ बचें तो देवता की बाधा, २।८ बचें तो पितृबाधा और ६।४ बचें तो भूत प्रेतकी बाधा जानना। "उदयाद्घटिका त्रिघ्ना तिथिवारेण संयुता। भक्ते द्वादशभिः शेषे जीवनं मरणं वदेत् ॥१॥ राम (३), बाण (५), रसा (६), ऽष्टौ च (८), नन्द (९), रुद्र (११), जीवति। एक (१), पक्ष (२), युग (४), सप्त (७), दशा (१०) ऽर्काः (१२) नात्र जीवति।"

अथ गर्भिणीपुत्रादि ज्ञानम्—तिथिवारं च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम्। सप्तभक्ते समे शेषे कन्या च विषमे सुतः ।.१॥ तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार की रविवार से और नक्षत्रकी अश्विनी से करना।

आयुनिर्णयः—जन्मलग्नेश अष्टमेश से और जन्मलग्न चंद्र से आयु का निर्णय करें। दोनों में भेद हो तो जन्मलग्न होरालग्नसे प्राप्त आयु जाने। चरे चरे, स्थिरे द्विस्वभावे दीर्घायुः। द्विस्वभावे द्विस्वभावे, चरे स्थिरे मध्यमायुः। स्थिरे स्थिरे, चरे द्विस्वभावे-ऽल्पायुः। १।४।५।७।९।१०।११ इन स्थानों में लग्नेश अष्टमेश तथा दशमेश हो तो दीर्घायु होती है। २।३।४।५।८।११ इन स्थानोंमें पापग्रह हों तो मध्यमायु, इसके अतिरिक्त अल्पायु होती है। लग्नेश सूर्यका मित्र हो तो दीर्घायु, सम हो तो मध्यमायुः, शत्रु हो तो अल्पायु जाने।

अथ नष्टवस्तुज्ञानम्

तिथिवारं च नक्षत्रं प्रहरेण समन्वितम्। दिक् संख्यया हतं चैव सप्तभिर्विभजेत्तदा ॥
एकेन भूतले द्रव्यं द्वयं चेद् भांडसंस्थितम्। तृतीये जलमध्यस्थं अंतरिक्षे चतुर्थके ॥
तुषस्थं पंचमे तुस्यात्षठे गोमयमध्यगम्। सप्तमे भस्मध्यस्थमित्येतत्प्रश्नलक्षणम् ॥

अथ नष्ट वस्तुज्ञानाय चक्रं सफलम्

अन्ध	मन्द	मध्य	सुलोचन	संज्ञा
रो. पुष्य. उ. फा. वि. पूषा ध. रे.	मृ. आश्ले. ह. अनु. उषा. श. अ.	आ. म. चि. ज्ये. अभि. पूभा. भ.	पुन. पू. फा. स्वा. मू. श्र. उभा. कृ.	नक्षत्राणि
पूर्वे गतम्	दक्षिणेगतं	पश्चि. गतं	उत्तरे गतं	दिशा
शीघ्र लाभः	यत्नेन लाभः	दूरे श्रवणं	नैव प्राप्ति	फल

पशुरन्वेषणं (सूर्यभात्)
६ भ्रमति वनेषु।
१५ ग्रामसमीपस्थः।
२२ गृहे आगतः।
२३।२४ नष्टप्राप्तिः।
२५।२६।२७ निधनमपि न श्रूयते।

जयपराजय प्रश्न—यदि तीसरे भाव से लेकर आठवें तक शुभ ग्रह अधिक बलवान् हों तो प्रतिवादी (मुद्दालह) जीतेगा। यदि नवम भाव से लेकर दूसरे भाव तक शुभ ग्रह अधिक बलवान् हों तो मुदई जीतेगा और यदि पापग्रह लग्न में बैठा हो तो प्रश्नकर्त्ता जीतेगा, परन्तु वहां पापग्रह नीच राशि में हो या अस्त हो अथवा शत्रु राशि के घरमें हो तो हार जाएगा। यदि लग्न और सप्तम स्थानमें पापग्रह तुल्य बली हो अथवा लग्नेश और सप्तमेश परस्पर मित्र हों तो सन्धि हो जायेगी। पापग्रह न्यूनाधिक बली हों तो अधिक बली ही जीतेगा, अर्थात् लग्नस्थित पापग्रह बली हो तो प्रश्नकर्त्ता की विजय और यदि सप्तमस्थ पापग्रह बलवान् हो तो शत्रु की विजय होगी। यदि लग्न सप्तमातिरिक्त स्थानमें दो पापग्रहों की परस्पर पूर्ण दृष्टि हो तो वादी प्रतिवादी दोनों शस्त्रों से घायल होते हैं। प्रश्नकालमें लग्नेश सप्तमेश परस्पर मित्र हों तो युद्ध छिड़ेगा, अन्यथा नहीं।

अक्षांशादि सारिणी

देशान्तर—दिल्ली से पूर्व + पश्चिम — अन्तर

स्टैण्डर्ड अन्तर—स्थानीय टाइम और स्टैण्डर्ड टाइम का अन्तर

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	पूर्व रेखांश अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर मि. सै.	नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	पूर्व रेखांश अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर मि. सै.	नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	पूर्व रेखांश अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर मि. सै.	नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	पूर्व रेखांश अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर मि. सै.
अंकलेश्वर	२१।३६	७२।५९	—३८। ४	—१६।५२	आर्वी	२०।५६	७८।१३	—१७। ८	+४ । ४	एरनाकुलम्	९।५९	७६।१८	—२४।४८	+३ ।३६	कालका	३०।४७	७६।५७	—२२।१२	—१ । ०
अंजार	२३। ७	७०। १	—४६।५६	—२८।४४	आद्रा	२३।३२	८६।४१	+१६।४४	+३७।५६	एरंडोल	२०।५५	७५।१९	—२८।४४	—७ ।३२	कालीकट	११।१५	७५।४५	—२७। ०	—५ ।४८
अंबरनाथ	१९।१२	७३।१०	—३७।२०	—१६। ८	ओखा	२२।२८	६९। ५	—५३।४०	—३२।२८	एल्लोर	१६।४३	८१। ५	—५ ।४०	+१५।३२	कालीघाट	२२।३१	८८।२१	+२३।२४	+४४।३६
अंबाजी	२४।२२	७२।५६	—३८।१६	—१८। ४	अखनूर का.	३२।५४	७४।३५	—३१।४०	—१०।२८	एलिचपुर	२१।१८	७७।३३	—१९।४८	+१ ।२४	कासगंज	२७।४८	७८।३९	—१५।२४	+५ ।४८
अंबाला	३०।२३	७६।४९	—२२।५६	—१ ।४४	अनूपशहर	२८।२१	७८।२३	—१९।२८	+४ ।४४	ओरछा	२५।२१	७८।३८	—१५।२८	+५ ।४४	किशनगंज	२६। ७	८७।५८	+२१।५२	+४३। ४
अंबिकापुर	२३।१०	८३।१५	+३ । ०	+२४।१२	अलीगंज मो.	२७।२०	७९।१२	—१३।१२	+८ । ०	औरंगाबाद	१९।५६	७५।१९	—२८।४४	—७ ।३२	किशनगढ़	२७।५२	७०।३४	—४७।२८	—२६।१६
अकलकोट	१७।३२	७६।१३	—२५। ८	—३ ।५६	अलीगंज ह.	२६।१२	८४। ८	+६ ।३२	+२७।४४	औरंगा. बि.	२४।४५	८४।२५	+७ ।४०	+२८।५२	किशनगढ़ अ.	२६।३५	७४।५१	—३०।३६	—९ ।२४
अकोला	२०।४२	७७। ०	—२२। ०	—० ।४८	अमेठी	२६। ७	८१।४७	—२ ।५२	+१८।२०	कांकरोली	२५। २	७३।५४	—३४।२४	—१३।१२	किशनगढ़ अ.	२७।१०	७५।२२	—२८।३२	—७ ।२०
अगरतला	२३।४९	९१।१७	+३५। ८	+५६।२०	अगरतला त्रि.	२३।४९	९१।१७	+३५। ८	+५६।२०	कांडला	२३। १	७०।१४	—४९। ४	—२७।५२	कुंभकोणम्	१०।५८	७९।२३	—१२।२८	+८ ।४४
अचलगढ़	२४।३८	७२।४८	—३८।४८	—१७।३६	अमरोहा	२८।५४	७८।३४	—१५।४४	+५ ।२८	कडपा	१४।२८	७८।४९	—१४।४४	+६ ।२८	कुमठा	१४।२५	७४।२४	—३२।२४	—११।१२
अचलपुर	२१।१६	७७।३०	—२०। ०	+१ ।१२	आसनसोल	२३।४२	८७।२०	+१९।२०	+४०।३२	कड़ी	२३।१८	७२।२०	—४०।४०	—१९।२८	कुडुवाड़ी	१८। ५	७५।२५	—२८।२०	—७ । ८
अजन्ता	२०।३६	७५।३९	—२७।३६	—६ ।२४	इगतपुरी	१९।४२	७३।३५	—३५।४०	—१४।२८	कडोद	२१।१३	७३।१४	—३७। ४	—१५।५२	कुशलगढ़	२३। ८	७४।२७	—३२।१२	—११। ०
अजमेर	२६।२७	७४।४०	—३१।२०	—१०। ८	इचलकरंजी	१६।४१	७४।२७	—३२।१२	—११। ०	कटक	२०।२८	८५।५८	+१३।३६	+३४।४८	कूचबिहार	२६।२०	८९।२५	+२७।४०	+४८।५२
अनन्तपुर	१४।४०	७७।३५	—१९।४०	+१ ।३२	इटारसी	२२।३७	७७।४५	—१८।५६	+२ ।१६	कटनी	२३।५०	८०।२३	—८ ।२८	+१२।४४	कृष्णा	१६।२५	७७।१९	—२०।४४	+० ।२८
अनन्तनाग	३३।४८	७५।१०	—२६।२०	—८ । ८	इटावा	२६।४७	७९। २	—१३।५२	+७ ।२०	कटोसण	२३।२८	७२।१४	—४१। ४	—१९।५२	केशरीयाजी	२४। ५	७३।४०	—३५।२०	—१४। ८
अमरेली	२१।३६	७१।१२	—४५।१२	—२४। ०	इटावा बीना	२४।१०	७८।११	—१३।१६	+३ ।५६	कण्णूर	११।५१	७५।२१	—२८।३६	—७ ।२४	कोचीन	९।५८	७६।१५	—२५। ०	—३ ।४८
अमरावती	२०।५६	७७।५१	—१८।३६	+२ ।१६	इन्द्रगढ़	२५।४४	७६।१२	—२५।१२	+४ । ०	कन्याकुमारी	८। ४	७७।३६	—१९।३६	+१ ।३६	कोटा	२५।११	७५।५०	—२६।४०	—५ ।२८
अमलनेर	२१। ३	७५। ३	—२६।४८	—८ ।३६	इन्दौर	२२।४३	७५।५३	—२६।२८	+५ ।१६	कन्नौज	२७। १	७९।५६	—१०।१६	+१०।५६	कोटायम	९। ५	७६।३२	—२३।५२	—२ ।४०
अमृतसर	३१।३८	७४।५३	—३०।२८	—६ ।१६	इलाहाबाद	२५।२८	८१।५२	—२ ।३२	+१२।४०	कपड़वंज	२३। २	७३। ५	—३७।४०	—१६।२८	कोडाइकेनाल	१०।१४	७७।२८	—२०। ८	+१ । ४
अयोध्या	२६।४८	८२।१८	—१ । ४	+२०। ८	इलोरा	२०। ५	७५।१०	—२६।२०	—८ । ८	कपूरथला	३१।२२	७५।२२	—२८।३२	—७ ।२०	कोल्हापुर	१६।४२	७४।१३	—३३। ८	—११।५६
अलवर	२७।३४	७६।३८	—२३।२८	—२ ।१६	ईडर	२३।५०	७३। ०	—३८। ०	—१६।४८	करजन	१८।५५	७३।२०	—३६।४०	—१५।२२	कोन्नूर	११।२०	७६।४८	—२२।४८	—१ ।३६
अल्लेपि	९।३०	७६।२२	—२४।३२	—३ ।२०	उज्जैन	२३।११	७५।४३	—२७। ८	—५ ।५६	करमाला	१८।२४	७५।१२	—२९।१२	—८ । ०	क्वीलोन	८।५३	७६।३८	—२३।२८	—२ ।१६
अल्मोड़ा	२९।३७	७९।४०	—११।२०	+९ ।५२	उपना	२१।१२	७२।५४	—३८।२४	—१७।१२	कर्नूल	१५।५०	७८। ३	—१७।४८	+३ ।२४	कच्छभुज	२३।१५	६९।४०	—५१।२०	—३०। ८
अलीबाग	१८।३६	७२।५२	—३८।२२	—१७।१०	उमरखेड़	१९।३६	७७।४१	—१९।१६	+१ ।५६	करनाल	२९।४२	७७। २	—२१।५२	—० ।४०	कांगड़ा	३२। ६	७६।१८	—२४।४८	—३ ।३६
अलीगढ़	२७।५४	७८। ५	—१७।४८	+३ ।२८	उटकमंड	११।१७	७६।४४	—२३। ४	—१ ।५२	करमसद	२२।३४	७२।५४	—३८।२४	—१७।१२	कालाबाग पा.	३२।५८	७१।३६	—४३।३६	—२२।२४
अहमदनगर	१९। ५	७४।४८	—३१। ४	—९ ।५२	उदयपुर मेवा.	२४।३५	७३।४२	—३५।१२	—१४। ०	करीमनगर	१८।२८	७९। ६	—१३।३६	+७ ।३६	काबुल अफ.	३४।२७	६९। ६	—५३।३६	—३२।२४
अहमदाबाद	२३। २	७२।३७	—३६।३२	—१८।२०	उन्नाव	२६।४८	८०।४३	—८ ।१७	+१२।५५	कलकत्ता	२२।३५	८८।२३	+२३।३२	+४४।४४	काशी	२५।२०	८३। ०	+२ । ०	+२३।१२
आंकलीयासर	२३।१७	७२।२५	—४०।२०	—१९। ८	उम्बरगांव	२०।१२	७२।४४	—३९। ४	—१७।५२	कलोल	२३।१४	७२।२८	—४०। ८	—१८।५६	काटी लंका	७।२०	८०।४५	—७ । ०	+१४।१२
आगरा	२७।११	७८। २	—१७।५२	+३ ।२०	उमरकोट	२२।४७	७४।५०	—३०।४०	—९ ।२८	कांचीपुरम	१२।५०	७९।४३	—११। ८	+१० । ४	कायमगंज	२७।३५	७९।२१	—१२।३६	+८ ।२४
आणंद	२२।३०	७२।५४	—३८।२४	—१७।१२	उमरेठ	२२।४२	७३। ८	—३७।२८	—१६।१६	काकीनाडा	१६।५६	८२।१३	—१ । ८	+२०। ४	किश्तवाड़	३३।१२	७५।४८	—२६।४८	—५ ।३६
आजमगढ़	२६। ४	८३।१२	+२ ।४८	+२४। ०	उल्हासनगर	१९।१३	७३। ७	—३७।३२	—१६।२०	कानपुर	२६।२७	८०।२१	—८ ।३६	+१२।३६	कुरुक्षेत्र	२९।५८	७६।४८	—२२।४८	—१ ।३६
आलंद	२२।३५	७२।५८	—३८। ८	—१६।५६	उस्मानाबाद	१८। ८	७६। ५	—२१।४०	—० ।२८	काठमांडू ने.	२७।४२	८५।१७	+११। ८	+३२।२०	कैम्बलपुर पा.	३३।४८	७२।१८	—४०।४८	—१९।३६
आदिलाबाद	१९।४०	७८।३१	—१५।५६	+५ ।१६	ऊधमपुर	३२।५५	७५। ७	—२९।३२	—८ ।२०	कानानोर	११।५२	७५।२५	—२८।२०	—७ । ८	कोलम्बो	६।५६	७९।५९	—१०।२६	+१०।४६
आसींगी	१५।३४	७७।१८	—२०।४८	+० ।२४	उडीपी	१३।२१	७४।४५	—३१। ०	—९ ।४८	कामठी	२१।१०	७९।१२	—१३।१२	+८ । ०	खंडवा	२१।५०	७६।२०	—२४।४०	—३ ।२८
आबू	२४।३७	७२।४३	—३८। ८	—१७।३६	ऊंझा	२३।४७	७२।२४	—४०।२४	—१९।१२	कारंजा	२०।२९	७७।२९	—२०। ४	+१ । ८	खंडाला	१८।४५	७३।२२	—३६।३२	—१५।२०
आमोद	२२। ०	७२।५३	—३८।२८	—१७।१६	एकलिंगजी	२४।४९	७३।४३	—३५। ८	—१३।५६	कारवार	१४।४८	७४। ८	—३३।२८	—१२।१६	खंभात	२२।१९	७२।३६	—३९।३६	—१८।२४
आरकोणम्	१३। ६	७९।४१	—११।१६	+९ ।५६	एटा कासगंज	२७।३५	७८।४१	—१५।१६	+५ ।५६	कालपी	२६। ८	७९।४५	—११। ०	+१०।१२	खंभालिया	२२।१२	६९।४०	—५१।२०	—३०। ८

अक्षांशादि सारिणी

देशान्तर — दिल्ली से पूर्व + पश्चिम — अन्तर

स्टैण्डर्ड अन्तर — स्थानीय टाइम और स्टैण्डर्ड टाइम का अन्तर

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	पूर्व रेखांश अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर मि. सै.	नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	पूर्व रेखांश अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर मि. सै.	नाम नगर	उत्तर अक्षांश अं. क.	पूर्व रेखांश अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर मि. सै.	नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	पूर्व रेखांश अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर मि. सै.
खड़गपुर	२२।२०	८७।१९	+१६।१६	+४०।२८	जूनागढ़	२१।३१	७०।३६	—४७।३६	—२६।२४	पानीपत	२९।२३	७६।५८	—२२।०८	— ०।५६	मैसूर स्टेट	१२।१६	७६।४०	—२३।२०	— २। ८
खाराघोड़ा	२३।१०	७१।४२	—४३।१२	—२२। ०	झालावाड़	२४।३६	७४।०६	—३३।२४	—१२।१२	पुरणिया	२५।४६	८७।३१	+२०। ४	+४१।१६	मुंगेर	२५।२३	८६।३०	+१६। ०	+३७।१२
खुर्जा	२८।१४	७७।५१	—१८।३६	+ २।३६	झांसी	२५।३०	७८।३६	—१५।३६	+ ५।३६	पूना	१८।३०	७३।५२	—३४।३२	—१३।२०	रतलाम.	२३।१६	७५।०३	—२६।४८	— ८।३६
खेड़ब्रह्मा	२४। ३	७३। ४	—३७।४४	—१८।३२	झालरापाटन	२४।३२	७६।१२	—२५।१२	— ४। ०	पोरबन्दर	२१।३८	६९।३६	—५१।३६	—३०।२४	रत्नगिरी	१७।००	७३।१६	—३६।४४	—१५।३२
खेड़ा	२२।४५	७२।४०	—३७।२०	—१८। ८	ट्रावनकोर	९। ०	७७। ०	—२२। ०	— ०।४८	फतेहपुर	२७।०६	७७।४०	—१९।२०	+ १।५२	रांची, रामगढ़	२३।२०	८५।२०	+११।२०	+३२।३२
खेरालु	२३।५४	७२।३८	—३७।२८	—१८।१६	टोंक (राज.)	२६।११	७५।५०	—२६।४०	— ५।२८	फर्रुखाबाद	२७।०३	७९।३७	—११।३२	+ ९।४०	रामपुर उ.प्र.	२८।४७	७९।०२	—१३।५२	+ ७।२०
खैरपुर	२७।२८	६८।४७	—५४।५२	—२३।४०	डलहौजी	३२।३०	७५।५४	—२६।२४	— ५।१२	फरीदकोट	३०।४०	७४।४५	—३१।००	— ९।४२	रामेश्वर	९।१७	७९।१८	—१२।४८	+ ८।२४
गया	२४।४८	८५।०१	+१०।०४	+३१।१६	डिबाई	२८।१२	७८।१५	—१७। ०	+ ४।१२	फिरोजपुर	३०।५७	७४।३६	—३१।३६	—१०।२४	रायबरेली	२६।१४	८१।१३	— ५।०८	+१६। ४
ग्वालियर	२६।१४	७८।१०	—१७।२०	+ ३।५२	डिब्रूगढ़	२७।२९	९४।५६	+४९।४४	+७०।५६	फैज़ाबाद	२६।४७	८२।०८	—०१।२८	+१९।४४	राजमहेन्द्री	१७। ५	८१।४८	—०२।४८	+१८।२४
गाज़ीपुर	२५।३६	८३।३५	+ ४।२२	+२५।३४	डूंगरपुर राज	२३।५०	७३।४३	—३५। ८	—१३।५६	बड़ौदा	२२।१८	७३।१३	—३७।०८	—१५।५६	रायपुर-म.प्र.	२१।१५	८१।३८	—०३।२८	+१७।४४
गिद्दौर	२४।५१	८६। ७	+१४।२८	+३५।४०	तलागंग	३२।५६	७२।२८	—४०। ८	—१८।५६	बम्बई	१८।५५	७२।५०	—३८।४०	—१७।२८	रोहतक	२८।५४	७६।३८	—२३।२८	— २।१६
गिलगित	३५।५४	७४।२२	—३२।३३	—११।२१	त्रिवेन्द्रम	८।३०	७६।५७	—२२।१२	— १। ०	बरेली	२८।२२	७९।२४	—१२।२४	+ ८।४२	रोपड़-पंजाब	३०।५७	७६।३०	—२४।००	— २।४८
गुरदासपुर	३२। ३	७५।२७	—१८।१२	— ७। ०	त्रिचनापल्ली	१०।५०	७८।४२	—१५।१२	+ ६। ०	बद्रीनाथ	३०।४४	७९।३०	—१२।००	+ ९।१२	लखनऊ	२६।५१	८०।५६	— ६।२०	+१४।५२
गोरखपुर	२६।४७	८३।२४	+ ३।३६	+२४।४८	दरभंगा	२६।१०	८५।५५	+१३।४०	+३४।५२	बर्धमान	२३।१६	८७।५२	+२१।२८	+४२।४०	लुधियाना	३०।५६	७५।५२	—२६।३२	— ५।२०
गोण्डा	२७।१०	८२।५७	— २।१२	+१६। ०	द्वारका	२२।१६	६८।५७	—५४।१२	—४२। ०	बुलन्दशहर	२८।२४	७७।५१	—१८।३६	+ २।३६	शिलांग	२५।३४	९१।५४	+३७।३६	+५८।४८
गोवा	१५।२५	७३।४७	—३४।५२	—१३।४०	दार्जिलिंग	२७।०३	८८।१६	+२३। ४	+४४।१६	बीजापुर	१६।५०	७५।४२	—३७।१२	— ६। ०	शाहजहांपुर	२७।५४	७९।५७	—१०।१२	+११।००
गोहाटी	२६।११	९१।४५	+३७।००	+५८।१२	दिल्ली	२८।३८	७७।१७	—२०।५२	०। ०	बीकानेर	२८।०१	७३।१९	—३६।४४	—१५।३२	शिमला	३१।०६	७७।१०	—२१।२०	— ०। ८
चित्तौड़गढ़	२४।५४	७४।४२	—३१।१२	—१०।००	देहरादून	३०।१९	७८।०४	—१७।४४	+ ३।२८	बंगलौर	१२।५८	७७।३५	—१९।४०	+ १।३२	श्रीनगर का.	३४। ६	७४।५१	—३०।३६	— ९।२४
चित्रकूट	२५।१५	८०।२८	— ८। ८	—१३। ४	धर्मशाला	३२।१६	७६।२३	—२४।२८	— ३।१६	बांदा उ.प्र.	२५।२८	८०।१२	—०९।१२	+१२। ०	सवाईमाधोपुर	२६।००	७६।२३	—२४।२८	— ३।१६
चेरापूंजी	२५।१६	९१।४५	+३७।००	+५८।१२	धौलपुर	२६।४२	७७।५३	—१८।२८	+ २।४४	बांसवाड़ा	२३।३३	७८।२६	—१६।१६	+ ४।५६	सिकन्दराबाद	१७।२७	७८।३३	—१५।४८	+ ५।२४
चम्बा	३२।२५	७६।१०	—२५।२०	— ४। ८	धार (म.प्र.)	२२।३६	७५।१२	—२६।१२	— ८। ०	बिलासपुर हि.	३१।१६	७६।५०	—२२।४०	— ६।२८	सतारा	१७।४२	७४।००	—३४।००	—१२।४८
चण्डीगढ़	३०।४०	७६।५२	—२२।३२	— १।२०	धूलिया	२०।५८	७४।४२	—३१।१२	—१०। ०	बिलासपुर म.	२२।०५	८२।१०	— १।२०	+१६।५२	सागर म.प्र.	२३।५०	७८।४५	—१५।००	+ ६।१२
छतरपुर	२४।५५	७९।३६	—११।३६	+ ९।३६	ध्रांगध्रा	२३।००	७१।२८	—४४।०८	—२२।५६	भड़ौंच	२१।४१	७३।००	—३८।००	—१६।४८	सूरत	२१।१२	७२।५०	—३८।४०	—१७।२८
छपरा बिहार	२५।४७	८४।४४	+ ८।४४	+२६।५६	नसीराबाद	२६।१८	७४।४६	—२६।५०	—१५।३८	भटिण्डा	३०।११	७४।५७	—३०।१२	— ९। ०	सोलन	३०।५५	७७। ६	—२१।२४	— ०।१२
छिबरा मऊ	२७।१०	७९।२६	—१२। ४	+ ९। ८	नाडियाद	२२।४१	७२।५२	—३८।३२	—१७।२०	भरतपुर	२७।१५	७७।३०	—२०।००	— ८।४८	सोलापुर	१७।४०	७५।४८	—२६।४८	— ५।३६
जगन्नाथपुरी	१९।४८	८५।५०	+१३।२०	+३४।३२	नाथद्वारा	२४।५६	७३।४८	—३४।४८	—१३।२६	भुवनेश्वर	२०।२८	८५।५४	+१३।३६	+३४।४८	सोमनाथ	२१। १	७०।२६	—४८।१६	—२७। ४
जबलपुर	२३।१०	७९।५८	—१०।०८	+११। ४	नाभा	३०।२२	७६।१०	—२५।२०	— ४। ८	भोपाल	२३।१६	७७।२३	—२०।२८	+ ०।४४	सिरोही	२४।५६	७२।५१	—३८।३६	—१७।२४
जयपुर	२६।५५	७५।५०	—२६।४०	— ५।२२	नागपुर	२१।०९	७९।०६	—१३।३६	+ ७।३६	भूटान	२७।३०	९०। ०	+३०। ०	+५१।१२	हरिद्वार	२९।५८	७८।१३	—१७। ८	+ ४। ४
जलपाईगुड़ी	२६।३२	८८।४६	+२५। ४	+४६।१६	नासिक	२०।००	७३।४७	—३४।५२	—१३।४०	भुज	२३।१५	६९।४८	—५०।४८	—२९।३६	हिसार	२९।१४	७५।४४	—२७।०८	— ५।३६
जम्मू	३२।४४	७४।५४	—३०।२४	— ९।१२	नैनीताल	२९।२५	७९।२७	—१२।१२	+ ९। ०	मथुरा	२७।२८	७७।४१	—१९।१६	+ १।५६	हाथरस	२७।३६	७८।०६	—१७।३६	+ ३।३६
जसवन्त नगर	२६।५१	७८।५५	—१४।२०	+ ९।५२	नीमच	२४।२८	७४।५१	—३०।३६	— ०।२४	मद्रास	१३।०६	८०।१५	—०९।००	+१२।१२	हैदराबाद	१७।२७	७८।३०	—१६।००	+ ५।१२
जालन्धर	३१।१६	७५।३५	—२७।४०	— ९।२८	पटना	२५।३५	८५।१५	+११।००	+३२।१२	मण्डी (हि.प्र.)	३१।४३	७६।५८	—२२। ८	— ०।५६	होशियारपुर	३१।३२	७५।५५	—२६।२०	— ५। ८
जामनगर	२२।२७	७०।०५	—४६।४०	—२८।२२	पठानकोट	३२।१८	७५।४२	—३०।१२	— ६। ०	मणिपुर स्टेट	२४।२०	९३।५८	+४५।५२	+६७। ४	होशंगाबाद	२२।४६	७७।४३	—१९।०८	+ २। ४
जैसलमेर	२६।५५	७०।५४	—४६।२४	—२५।१२	पटियाला	३०।२२	७६।२५	—२४।२०	— ३। ८	मालेगांव ना.	२०।३१	७४।३०	—३२। ०	—१०।४८	हथुवा	२६।१२	८४। ५	+ ६।२०	+२७।३२
जोधपुर	२६।१८	७३।०२	—३७।५२	—१६।४०	प्रयागराज	२५।२५	८१।५३	— २।२८	+१८।४४	मुरादाबाद	२८।५०	७८।५०	—१४।४०	+ ६।३२	हरदोई	२७।२३	८०।१०	+ ६।२०	+३०।३२
जौनपुर	२५।४६	८२।४३	+ ०।५२	+२२। ४	पाटन (राज.)	१७।२२	७३।५३	—३४।२८	—१३।२६	मुजफ्फरपुर	२६।०७	८५।२३	+११।४२	+३२।५४	हाजीपुर	२५।३४	८५।११	+११।४४	+३२।५६
जींद	२९।१९	७६।२३	—२४।२८	— ३।१६	[illegible]	११।५६	७६।४८	—१०।४८	+१०।२४	मेरठ	२९।०१	७७।४४	—१९।००	+ २।१२	हजारीबाग	२४। ०	८५।२३	+११।३२	+३२।४४

पञ्चांग परिवर्तन पद्धति

इस पंचांग से अन्यान्य नगरों का पंचांग (सूर्योदय, सूर्यास्त, तिथि, नक्षत्र, योग, करण और दिनमान) बनाने का उदाहरण–

जिस नगर का सूर्योदय जानना हो उस नगरके आगे की अक्षांशादि सारिणी से देशान्तर मिनट लेवे, वह मिनट+पूर्व के हो तो इस पंचांग के सूर्योदय हीन करें और मिनट– पश्चिम के हो तो धन करें, अर्थात् जोड़े। अक्षांशादि सारिणी में देशान्तर मिनट से पहले धन+चिन्ह हों तो ऋण करें, ऋण–चिन्ह हो तो धन करें, यह इष्ट नगर का मध्यम सूर्योदय होगा, पश्चात् इष्ट दिन (तारीख) की रविक्रान्ति– सारिणी से रविक्रान्ति लेवे। रविक्रान्ति और इष्टनगर के अक्षांश इन दो उपकरणों से चरान्तर सारिणी से चरांतर मिनट लें, वह धन हों तो ऊपर से आये हुए मध्यम सूर्योदय में जोड़े, ऋण हों तो हीन करें तो वह इष्ट दिन का इष्ट नगर का स्टै. टा. से स्पष्ट सूर्योदय होगा। आये हुए चरान्तर मिनट को पांच से गुणा करें तो वह पल होंगे। ऊपर के उदाहरण में चरान्तर मिनट सूर्योदय में धन किये हों तो यह पल दिनमान में हीन करें, ऋण किये हों तो धन करें, वह अपने इष्ट दिन का इष्ट नगर का घटी पलात्मक दिनमान होगा। इस दिनमान के, घंटा मिनट बनाकर आए हुए सूर्योदय में मिला देने से सूर्यास्त होगा।

इस पंचांग में तिथ्यादि के घटी– पल दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय समय से है। इष्ट दिन और इष्ट नगर का लाया हुआ स्पष्ट सूर्योदय दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय से पहले हो तो वह जितने मिनट पहले है, उसके पल बनाकर (१ मि.=२॥ पल) वह इस पंचांग के तिथ्यादि में मिला दें, और बाद के मिनट हों तो उनके जितने पल हों–इस पंचांग के तिथ्यादि में से घटा दें, तो अपने– अपने इष्ट दिन के इष्ट नगर में स्पष्ट सूर्योदय तिथ्यादि पंचांग होगा।

उदाहरण– संवत् २०४६ भाद्रपद शुक्ल ५ मंगलवार ता० ५ सितम्बर १९८९ ई० तदानुसार राष्ट्रीय मिति १४ भाद्रपद शाके १९११ को हैदराबाद नगर का इस पञ्चांग से सूर्योदय, सूर्यास्त, दिनमान और पञ्चांग बनाना है। इस पञ्चांग में दिल्ली का सूर्योदय स्टै० टा० घं०६ मि० ०५ है। हैदराबाद दिल्ली से ५ मि० पूर्व में है (अक्षांशादि सारिणी में देखें) अतः वह ५ मि० इस पञ्चांग के सूर्योदय घं० ६ मि० ५ में घटा दिये तो घं० ६ मि० ०० हुए। यह हैदराबाद का इस पञ्चांग से मध्यम सूर्योदय हुआ। अब सितम्बर मास की दैनिक-ग्रह सूर्यक्रान्ति में देखें। ता० ५ सितम्बर को रविक्रान्तिउत्तरा– ६।५४ है। हैदराबाद के अक्षांश १७।१८ है। (अक्षांशादि सारिणी देखो) आगे चरान्तर सारिणी से १७ अक्षांश और ६ क्रान्त्यांश के कोष्टक में ६ मिनट है और ७ क्रान्त्यंश में ७ मिनट है, यहाँ क्रान्त्यंश ६।५२ होने से क्रान्त्यंश ७ से चरान्तर मिनट लेना चाहिए। अतः क्रान्त्यंश ७ में चरान्तर मिनट ७ प्राप्त हुए, यह मिनट धन आये। ऊपर के मध्यम सूर्योदय घं० ६ मि० में जोड़ दिये तो हैदराबाद में स्टै० टा० घं० ६ मि० ७ यह स्पष्ट-सूर्योदय का समय हुआ। आये हुए चरान्तर मिनट ७ को ५ से गुणा तो ३५ पल प्राप्त हुए। चरान्तर धन होने के कारण इस पञ्चांग के दिनमान ३१।१५ में ३५ पल हीन करने (विपरिणयन करने) से ३०।४० यह हैदराबाद का दिनमान हुआ। इसका घण्टा मिनट किये तो घं० १२ मि० १६ हुए। यह ऊपर आये हुए हैदराबाद के स्पष्ट सूर्योदय ६।०७ में जोड़ दिया तो घं० १८ मि० २३ यह हैदराबाद का स्टै० टा० से सूर्यास्त हुआ। यहाँ हैदराबाद का स्पष्ट सूर्योदय दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय घं० ६ मि० ५ से २ मिनट बाद में है, इसके घटी पल किये तो ० घटी ५ पल हुए। यह घटी पल दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय से हैदराबाद का स्पष्ट सूर्योदय बाद में होने से इस पञ्चांग के तिथ्यादि की घटी पलों में घटा देने से भाद्रपद शुक्ल ५ मंगलवार की पञ्चमी तिथि घट्यादि ४०।४५ स्वाती नक्षत्र ४३।५० यह हैदराबाद के स्पष्ट सूर्योदय से तिथि नक्षत्र स्पष्ट हुए। इसी प्रकार योग करण की घटी पलों में घटाकर बना लेइसी प्रक्रिया

क्रान्त्यंश	उत्तराक्षांश: चरान्तर मिनट — चरान्तर सारिणी — वह मिनट क्रान्ति दक्षिण हो तो ऋण और क्रान्ति उत्तर होतो धन																					क्रान्ति दक्षिण हो तो धन उत्तर होतो ऋण							
	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
१	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
२	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२
३	५	५	४	४	४	४	४	३	३	३	२	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२
४	६	६	६	५	५	५	५	४	४	४	३	३	३	२	२	२	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	३
५	८	८	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	४	३	३	२	२	२	१	१	०	०	०	१	२	२	२	३	४
६	१०	९	८	८	८	७	७	६	६	६	५	५	४	४	३	३	२	२	१	१	०	०	१	१	२	२	३	३	४
७	११	१०	१०	९	९	८	८	७	७	७	६	५	५	४	४	३	२	२	१	१	०	०	१	२	३	३	४	४	५
८	१२	१२	१२	११	१०	१०	९	८	८	७	७	६	६	५	५	४	३	३	२	१	०	०	१	२	३	३	४	५	६
९	१४	१४	१३	१२	१२	११	११	१०	९	८	८	७	६	६	५	४	४	३	२	१	०	०	१	२	३	४	५	६	७
१०	१५	१६	१५	१४	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	६	५	४	३	२	२	०	२	२	२	४	४	५	६	८
११	१८	१७	१६	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	५	४	३	३	२	०	१	२	३	४	५	६	७	८
१२	१९	१८	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	०	१	२	३	४	५	७	८	९
१३	२१	२०	२०	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	१२	११	१०	८	८	६	६	४	४	२	०	२	२	३	४	५	७	८	१०
१४	२२	२२	२१	२०	१८	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	९	८	६	६	५	३	२	०	१	२	३	५	६	८	९	११
१५	२४	२४	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१४	१२	११	१०	८	७	६	४	३	२	१	१	२	४	५	७	८	१०	१२
१६	२६	२५	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	१०	९	८	६	५	४	२	१	१	२	४	६	७	९	११	१३
१७	२८	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१५	१४	१२	११	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१२	१४
१८	३०	२९	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	७	६	४	३	१	१	२	४	६	८	१०	१२	१४
१९	३२	३०	२९	२८	२६	२५	२३	२२	२०	१९	१७	१६	१४	१२	११	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१४	१५
२०	३४	३२	३०	२९	२८	२६	२४	२३	२१	२०	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१३	१६
२१	३५	३४	३२	३१	२९	२७	२६	२४	२२	२१	१९	१७	१६	१४	१२	१०	८	६	५	३	१	२	३	५	८	१०	१२	१५	१७
२२	३७	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२२	२०	१८	१६	१४	१२	११	९	७	५	३	१	१	३	६	८	११	१३	१६	१८
२३	३९	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१३	१२	९	७	५	३	१	२	४	६	९	११	१४	१७	१९
२४	४२	४०	३८	३६	३४	[illegible]	३०	२९	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१४	१२	१०	८	६	४	१	१	४	६	९	१२	१४	१७	२०
	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
अक्षांश	वह मिनट क्रांति तुल्य धन वा ऋण करें																					क्रांति के विपरीत समझें							

से संसार के किसी भी नगर सूक्ष्म पञ्चांग "श्री विश्वविजय पञ्चांग" द्वारा बन सकता है। विशेष बात यह है कि "श्री विश्वविजय पञ्चांग" में तिथि नक्षत्र योग करण भद्रा चन्द्रमा ग्रहचार आदि के घण्टा मिनट दिये हैं। वह भारत में सर्वत्र समान है। यह इसकी अनुपम विशेषता है।

चरान्तर मिनट लाने का उदाहरण

जैसे ता० ५ सितम्बर ८९ को हैदराबाद का चरान्तर लाना है। तो दैनिक रविक्रान्ति सारिणी से इस दिन की रविक्रान्ति ६।५२ है और हैदराबाद के अक्षांश १७।१८ है। रविक्रान्ति ७ के तुल्य हैं चरान्तर सारिणी में खड़ी बायें हाथ की लाइन क्रान्त्यंश की है और आड़ी ऊपर की लाइन अक्षांश की है। क्रान्त्यंश ७ तथा अक्षांश १७।१८ में देखो तो अनुपात से दोनों लाइनों के सम्पात में ७ मिनट प्राप्त हुए। अब यहाँ क्रान्ति उत्तर–धन होने से चरान्तर मिनट धन हुए।

विदेशों के स्टेण्डर्ड टाइम और भारतीय स्टेण्डर्ड टाइम का अन्तर ऋण धन चिह्नानुसार भारतीय स्टेण्डर्ड टाइम में संस्कार करने पर विदेशी स्टेण्डर्ड टाइम होता है।

विदेशों के नाम	अन्तर घंटा. मि०
न्यूजीलेंड (क)	+६।०
टस्मानिया, विक्टोरिया, न्यू वेल्स ब्रोकेन हिल छोड़कर क्वीन्सलेण्ड	+४।३०
जापान कोरिया	+३।३०
दक्षिण आस्ट्रेलिया ब्रोकेनहिल प्रांत उत्तर टेरोटोरी (आस्ट्रेलिया)	+४।०
सायबेरिया, रेखांश ९७।३०से ११११३० पूर्व तक तथा चीन हांगकांग	+२।३०
सारावान (ख)	+२।०
भारत (इण्डिया)	०।०
यूरोपियन (रसिया)	—२।३०
यूगेण्डा केनिया कालोनी	—३।०
पूर्वीय यूरोप फिनलेंड (ग) तथा यूरोप कण्ट्री पूर्वीय विभाग तथा यूरोप जोन	—३।३०
पेलेस्टाइन, सीरिया, इजिप्ट, द. अफ्रिका मध्ययूरोप, नार्वे, स्वीडन, डेनमार्क, लिथुआनिया, जर्मनी, पोलेण्ड चेकोस्लोवाकिया, आस्ट्रीया, हंगरी, स्विटजरलंड, युगोस्लाविया अल्बानिया, इटली, सर्वोनिया, सिसलीमाल्टा ग्रीनवीच (घ) ब्रिटिश द्वीप	-४।३०
पश्चिमी यूरोप (ङ)	—५।३०
हालैण्ड	—५।१०
आइसलैण्ड	—६।३०
पूर्वीय ब्राजील	---८।३०
युरुगुआ	—९।०
बाउ डर न्यूफाउण्डलेण्ड (च)	—९।१
अटलांटिक केनेडा सेण्ट्रल ब्राजील	—९।०
पूर्वीय केनेडा ६८से८९रेखांशपूर्वीयU. स्टेट्स चील (छ) पेरु पश्चिमी ब्राजील	-१०।३०
मध्य केनेडा ८९से१०३ रेखांश पर मध्य U.S.A. स्टेट्स ब्रिटिश होण्डर्स (ज)	-११।३०
केनेडा (१०३ रेखांश से b.c.) हद तक स्टेट U.S.A.	-१२।३०
(पैसेफिक) ब्रिटिश कोलम्बिया, केलिफोर्निया नेवडा आरगिन, वाशिंगटन	-१३।२०

टिप्पणी (क) अक्तूबर दूसरे रविवार से मार्च तीसरे रविवार तक + घं.० ६ मि० ३० का अन्तर रहता है।

(ख) सितम्बर ता० १४ से दिसम्बर ता० १४ तक + घं० २ मि० २० का अन्तर रहता है।

(ग) जून २० से सितम्बर ता० ३० तक अन्तर घं० २ मि० ३० रहता है।

(घ) अप्रैल ता० २२ से अक्तूबर ता० ७ तक अन्तर घं० ४ मि० ३० रहता है।

(ङ) फ्रांस और बेल्जियम के लिए ता० १९ अप्रैल से ता० ४ अक्तूबर तक अन्तर घं० ४ मि० ३० रहता है।

(च) मई के पहले रविवार से अक्तूबर के पहले रविवार तक घं० ८ मि० १ का अन्तर रहता है।

(छ) सितम्बर ता० १ से ३१ मार्च तक— घं० ९ मि० ३० का अन्तर रहता है।

(ज) अक्तूबर ता० १ से फरवरी ता० १४ तक घं० ११ मि. ०का अन्तर रहता है।

इसप्रकार उपरोक्तकोष्ठकको काम में लाते समय, समयका अन्तर अवश्य ध्यान में रखकर उपयोग करें।

वेलान्तर कोष्ठक (मिनटों में)

तारीख	जन.	फर.	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अग.	सित.	अक्टू.	नव.	दिस.
१	+४	+१४	+१२	+३	—३	—३	+३	+६	०	—९	—१६	—११
२	४	१४	१२	३	३	३	४	६	०	१०	१६	११
३	४	१४	१२	२	४	२	४	६	०	१०	१६	११
४	५	१४	१२	२	४	२	४	६	—१	१०	१६	१०
५	५	१४	११	२	४	२	४	६	१	११	१६	१०
६	६	१४	११	२	४	२	४	६	१	११	१६	१०
७	६	१४	११	१	४	२	४	६	२	११	१६	९
८	७	१५	१०	१	४	१	४	६	२	१२	१६	९
९	७	१५	१०	१	४	१	४	५	२	१२	१६	८
१०	८	१५	१०	१	४	१	५	५	३	१२	१६	८
११	८	१५	१०	+१	४	१	५	५	३	१२	१६	७
१२	८	१५	१०	०	४	—१	५	५	३	१३	१६	६
१३	९	१५	९	०	४	०	५	५	४	१३	१६	६
१४	९	१४	९	०	४	०	५	५	४	१३	१६	६
१५	१०	१४	९	०	४	०	५	४	४	१४	१६	५
१६	१०	१४	८	०	४	०	६	४	५	१४	१६	५
१७	१०	१४	८	—१	४	०	६	४	५	१४	१५	४
१८	११	१४	८	१	४	०	६	४	५	१४	१५	४
१९	११	१४	७	१	४	+१	६	४	६	१४	१५	३
२०	११	१४	७	२	४	१	६	४	६	१४	१५	३
२१	१२	१४	६	२	४	१	६	३	६	१४	१४	२
२२	१२	१४	६	२	४	१	६	३	६	१५	१४	२
२३	१२	१४	६	२	४	१	६	३	७	१५	१४	१
२४	१२	१४	५	२	४	२	६	३	७	१५	१४	—१
२५	१२	१३	५	२	४	२	६	२	७	१६	१४	०
२६	१३	१३	५	२	३	२	६	२	८	१६	१३	+१
२७	१३	१३	४	३	३	२	६	२	८	१६	१३	१
२८	१३	१२	४	३	३	२	६	२	८	१६	१२	२
२९	१३	+१२	४	३	३	२	६	२	८	१६	१२	२
३०	१४		४	—३	३	+३	६	१	—९	१६	१२	३
३१	+१४		+४		—३		+६	+१		—१६	—१२	+३

स्टेण्डर्ड स्थानिक मध्यमकाल और स्पष्ट काल—स्टेण्डर्ड (रेलवे) टाइम से स्थानीय (लोकल) मध्यम टाइम और स्थानिक स्पष्ट टाइम बनाने की विधि यह है कि अक्षांशादि सारिणी पृ० ९५, ९६, ९७ में प्रत्येक नगर के स्टेण्डर्डान्तर मिनट लिखे हैं, वे मिनट ऋण हों तो स्टेण्डर्ड टाइम में घटा देने से और धन हों तो जोड़ देने से स्थानिक मध्यम काल (लोकल मीन टाइम) होगा। इस स्थानीय मध्यम टाइम में वेलांतर कोष्ठक से उस तारीख का वेलांतर लेकर ऋण हों तो जोड़ने और + धन हो तो घटाने से स्थानिक स्पष्टकाल (लोकल टाइम) का मान होगा।

समय-भेद विवरण—आजकल प्राय: सर्वसाधारण ज्योतिषियों को "समय भेद" का ज्ञान न होने के कारण किसी भी स्थान के पंचाङ्ग का सूर्योदय चाहे जिस मान का लेकर इष्ट [illegible] बना लेते हैं, यह ज्योतिषशास्त्रकी दृष्टिसे एक अपराध है। ज्योतिषियोंको चाहिए कि पहले इस भेदको भलीभांति [illegible]

... बना लिया करते है, यह भी सर्वथा अनुचित बात है।

मानका जन्म टाइम बनाकर इष्ट शोधन करना चाहिए। कई ज्योतिषी जन्म टाइम स्टेण्डर्ड [illegible] लिया करते हैं, यह भी सर्वथा अनुचित बात है। दिनमानसे इष्ट करना हो तो जन्म टाइम भी स्थानिक दिनमानका टाइम (स्पष्ट टाइम) करना पड़ता है, तदनन्तर इष्ट बनाना आवश्यक है। सरकारने अपने रेलवे आदि व्यवहारों की सुविधा के लिए एक स्थान के मध्यम टाइम को सर्वत्र मान लिया है, जिससे हिन्दुस्तान में चाहे जिस स्थान में वा राष्ट्रीय टाइम प्रचार में है और सर्वत्र एक ही समय रहा करता है। सन् १९०६ के पूर्व, भारतवर्ष में मद्रास के टाइम को स्टेण्डर्ड टाइम माना गया था, तदनन्तर ग्रीनिच नगर से पूर्व की ओर ५॥ घंटे रेखांश ८२:३० पर भारत में जहां जो स्थान है वहां का स्टेण्डर्ड टाइम माना गया है, यह स्थान बनारस से कुछ पूर्व आता है, उस स्थान से कुछ प्रसिद्ध नगरों के स्थानिक मध्यम टाइम और स्टेण्डर्ड टाइम का अन्तर दिया है, उसको स्टेण्डर्डान्तर लिखा है। नगरों से आगे जो स्टेण्डर्डान्तर मिनट है उसके ऋण धन चिन्ह हैं, जिनमें ऋण के चिन्ह हों वह नगर स्टेण्डर्ड स्थान के पश्चिम में समझें और धन चिन्ह हो तो पूर्व की ओर है ऐसा समझें।

"वर्षफल"—प्राचीन सौर वर्षमान ३६५।१५।३१।३० है। इसी वर्षमान के अनुसार सब वर्ष बनाये जाते हैं। परन्तु आधुनिक विज्ञानवेताओं ने सूक्ष्म यन्त्रों के वेध-द्वारा शुद्ध वर्षमान ३६५।१५।२२।५७ निर्धारित किया है। अर्थात् नवीन वर्षमान से प्राचीन वर्षमान ८½ पल अधिक है। इस प्रकार ८ वर्ष (७ गताब्द) में ही नवीन वर्षमान और प्राचीन वर्षमान से बनाये वर्ष के इष्ट में एक घटी का अन्तर पड़ जाता है और आगे अधिक गताब्द में अधिक अन्तर पडने से प्रायः लग्न भी बदल जाता है। पूना, बम्बई, मद्रास आदि के ज्योतिविद्या वेत्ताओं का मत है कि वर्ष का फलादेश इसी नवीन मान से बनाये गये वर्ष का ही ठीक मिलता है और कई स्थलों पर हमने भी देखा है कि इसी नवीन मान से फल घटित होता है। यहां विद्वानों के लिए हम नवीन और प्राचीन मान की दोनों वर्ष प्रवेश सारिणियां दे रहे हैं—

वर्षयोगिनीमते मुद्दादशा

मं.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

मुद्दादशा विधिः जन्म-नक्षत्र की संख्या में गत वर्ष जोड़ के २ घटा दें, ९ से भाग करने पर जो शेष बचे वह सूर्य से लेकर मुद्दा दशा होती है। योगिनी के लिए जन्म नक्षत्र संख्या में गताब्द जोड़ कर ३ और जोड़ें, ८ से शेष करें तो मंगलादि योगिनीदशा होती है।

मुद्दादशाक्रम

श.	ग्रह	मा.	दि.
१	सूर्य	०	१८
२	चन्द्र	१	०
३	मं.	०	२१
४	राहु	१	२४
५	बृह.	१	१८
६	शनि	१	२७
७	बुध	१	२१
८	केतु	०	२१
९	शुक्र	२	०

वेधसिद्ध नवीनवर्षमानानुसारेण वर्षप्रवेश सारिणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५
पल	२	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२२
पल	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०
पल	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

प्राचीन मान से वर्ष प्रवेशसारिणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

इन्द्रप्रस्थ नगरे लग्न सारणी पलभा ६।३२ वर्षादौ केतकी अयनांशा २३

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
०	४४	५१	५८	५	१३	२०	२७	३४	४२	५०	५६	७	१५	२३	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७	४६	५४	२	१०	१९	२७	३५
वृषभ	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१	४३	५२	०	८	१६	२५	३३	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	[illegible]
मिथुन	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३
कर्क	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२
सिंह	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
४	५४	६	१७	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१६	२८
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
५	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२
तुला	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
६	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५३	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१५	२६	३८	५०	१
वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
७	१३	२५	३६	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७
धनु	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०
८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	[illegible]
मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४१	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	४	१२	[illegible]
कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८
१०	२८	३७	४५	५३	१	१०	१८	२६	३३	४०	४७	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५२	[illegible]	८	[illegible]	२०	२७	३४	४१	४६	५३	[illegible]
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
११	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५३	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५७	४	११	१८	२६	३३	४०	४७	५४	४	८	१५	२२	३०	३७

दशमलग्न सारणीयम् (सर्वत्रोपयोगी)

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८
०	३४	४३	५२	२	११	२०	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
वृषभ	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३
१	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४
मिथुन	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८
२	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७
कर्क	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४
३	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	[illegible]
सिंह	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८
४	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३
५	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४
तुला	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८
६	३३	४२	५२	१	१०	१९	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
वृश्चिक	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३
७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४
धनु	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८
८	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७
मकर	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४
९	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२
कुम्भ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८
१०	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६
मीन	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३
११	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४

इष्ट सांपातिक काल से जन्म लग्न निकालने की सरल विधि

—श्री चन्द्रभान भाटिया, एम. एस. सी.

इस वर्ष से आपके प्रिय "विश्वविजय पञ्चांग" में प्रतिदिन का सांपातिक काल (Sidereal Time) दिया जा रहा है। सांपातिक काल की गणना पूर्वी रेखांश ८२°३०′ पर स्थानीय मध्यम समय (Local Mean Time) के ००.०० बजे-मध्य रात्रि के अनुसार की गयी है। इससे विश्व के किसी भी स्थान के लिए इष्ट समय के सांपातिक काल की गणना की जा सकती है। इष्ट सांपातिक काल तथा जन्म स्थान की लग्न सारणी की सहायता से जन्म लग्न सुगमता से शुद्ध तथा सूक्ष्म रूप से ज्ञात किया जा सकता है।

—सम्पादक

इष्ट सांपातिक काल की गणना

जन्म समय भारतीय मानक समय (Indian Standard Time) के अनुसार ज्ञात होता है। सबसे पहले इसे स्थानीय मध्यम समय (L.M.T.) में परिवर्तित किया जाता है।

तत्पश्चात् इष्ट दिन का सांपातिक काल पञ्चांग में दी गयी दैनिक सांपातिक काल सारणी से ज्ञात किया जाता है। यदि इष्ट दिन विगत अथवा आगामी वर्षों में से हो तो इसे पञ्चांग में दिये गये कोष्ठक (अ), (ब) तथा (स) की सहायता से ज्ञात किया जाता है।

इस सांपातिक काल की गणना पूर्वी रेखांश ८२°३०′ पर स्थानीय मध्यम समय (L.M.T.) के ००.०० बजे के अनुसार की गयी है।

इस सांपातिक काल में जन्म स्थान के लिए संस्कार किया जाता है। प्रति १° रेखांश के लिए सां. का. का संस्कार ०.६५७१ सैकैण्ड (स्थूलतः २/३ सैकैण्ड) है। यदि जन्म स्थान के रेखांश पूर्वी रेखांश ८२°३०′ से कम हों तो यह संस्कार धनात्मक तथा अधिक हों तो ऋणात्मक होगा।

अर्थात् यदि जन्म स्थान पूर्वी रेखांश ८२°३०′ से पश्चिम में हो तो यह संस्कार धनात्मक और पूर्व में हो तो ऋणात्मक होगा।

इस स्थानीय संस्कार को कोष्ठक (य) में दर्शाया गया है। इसके अनुसार इस संस्कार को करने में सुगमता होगी।

स्थानीय संस्कार से संस्कारित इस सांपातिक काल में जन्म समय के स्थानीय मध्यम समय (L.M.T.) को जोड़ा जाता है। इस योग में प्रति घण्टा १० सैकैण्ड (स्थूल रूप से) और जोड़ा जाता है। सूक्ष्म रूप से यह संस्कार प्रति घण्टा ९.८५६ सैकैण्ड है। इस संस्कार को कोष्ठक (द) में दर्शाया गया है। इसी कोष्ठक के अनुसार यह संस्कार किया जाना चाहिए।

यदि यह योग २४ घण्टे से अधिक हो तो योग में से २४ घण्टे घटा लिए जाते हैं।

इस प्रकार विश्व के किसी भी स्थान के लिए इष्ट समय का सांपातिक काल सरलता से ज्ञात किया जा सकता है।

संक्षेप में विश्व के किसी भी स्थान पर इष्ट समय के सांपातिक काल की गणना के लिए निम्न पद (Steps) हैं :

(१) जन्म के भारतीय मानक समय (I.S.T.) को स्थानीय मध्यम समय (L.M.T.) में परिवर्तित करें।

(२) इष्ट दिन के सांपातिक काल को पञ्चांग में दी गयी दैनिक सां. का. की सारणी से अथवा पञ्चांग में दिये कोष्ठक (अ), (ब) तथा (स) की सहायता से ज्ञात करें।

(३) इस सां. का. में स्थानीय संस्कार कोष्ठक (य) के अनुसार करें।

(४) इस प्रकार प्राप्त सां. का. में इष्ट समय के स्थानीय मध्यम समय (L.M.T.) का योग करें।

(५) इस योग में प्रति घण्टे १० सैकैण्ड का स्थूलतः अथवा कोष्ठक (द) की सहायता से (सूक्ष्मतः) संस्कार करें।

(६) यदि योग २४ घण्टे से अधिक हो तो योग में से २४ घण्टे घटायें।

स्थानीय मध्यम समय (Local Mean Time)

हर देश का अपना मानक समय (Standard Time) होता है। भारत में पूर्वी रेखांश ८२°३०′ के स्थानीय मध्यम समय (Local Mean Time) को ही पूरे देश का मानक समय माना गया है। इसी समय को भारतीय मानक समय (Indian Standard Time) कहते हैं। इसी समय के अनुसार देश के सब सरकारी व गैर सरकारी कार्य होते हैं।

जन्म समय भी इसी समय के अनुसार ज्ञात होता है। इष्ट सांपातिक काल ज्ञात करने के लिए सब से पहले भा. मा. स. (I.S.T.) को स्था. म. स. (L.M.T.) में बदलते हैं।

जिस स्थान के लिए स्था. म. स. (L.M.T.) ज्ञात करना हो उस स्थान के रेखांश यदि पूर्वी रेखांश ८२°३०′ से कम हो तो इसके लिए संस्कार ऋणात्मक और यदि स्थान के रेखांश पू. रेखांश ८२°३०′ से अधिक हों तो संस्कार धनात्मक होगा।

स्थानीय रेखांश व पूर्वी रेखांश ८२°३०′ के अन्तर को ४ से गुणा करने पर जितना आवे, वह मिनट व सैकैण्ड में संस्कार का मान होगा।

यह संस्कार स्टैण्डर्ड के अन्तर के नाम से जाना जाता है। इसे प्रत्येक स्थान के लिए पञ्चांग में दी गयी "अक्षांशादि सारणी" में दिया गया है।

उदाहरण : दिल्ली का स्टैण्डर्ड अन्तर कितना होगा?

दिल्ली के रेखांश : पूर्वी रेखांश ७७°-१७′ ∴ (८२° - ३०′)−(७७°-१७′) = ५° १३′

अतः स्टैण्डर्ड अन्तर = ५°-१३′ × ४ = २० मि. ५२ सैकैण्ड

दिल्ली के रेखांश ८२°-३०′ से कम होने के कारण यह संस्कार ऋणात्मक होगा।

उदाहरण : दिल्ली में १७-३० बजे भा. मा. स. (I.S.T.) का मान स्था. म. स. (L.M.T.) में कितना होगा?

दिल्ली का स्टैंडर्ड अन्तर = −२० मि. ५२ सै.

घं.	मि.	सै.	
१७	३०	०	भा. मा. स.
	२०	५२	स्टै. अन्तर
१७	९	८	स्था. म. स.

उदाहरण : १० अक्टूबर १९८९ को दिल्ली में १७-५० बजे भा. मा. स. का सांपातिक काल ज्ञात करना :

घं.	मि.	सै.	
१७	५०	०	भा. मा. स.
	२०	५२	स्टैं. अन्तर
१७	२९	८	स्था. म. स.

घं.	मि.	सै.	
१	१३	२३	१० अक्टूबर १९८९ का सां. का. दैनिक सां. का. सारणी से लिया
+		०३	दिल्ली का स्थानीय संस्कार [(८२°–३०')–(७७°–१७')=५°१३' स्था. संस्कार–५° १३'×२/३=३ सै. लगभग]
१	१३	२६	दिल्ली का ००.०० बजे स्था. म. स. का सां. का.
१७	२९	८	स्था. म. स.
	२	४८	१७ घं. का कोष्ठक (द) से संस्कार
		५	२९ मि. का कोष्ठक (द) से संस्कार
१८	४५	२७	इष्ट समय का सां. का.

उदाहरण : ४/५ जुलाई १९८९ की रात्रि को कलकत्ता में ०३-१५ बजे भा. मा. स. (I.S.T.) का सापातिक काल ज्ञात करना

कलकत्ता के पूर्वी रेखांश ८८°-२३' व स्टैं. अन्तर + २३ मि. ३२ सै.

घं.	मि.	सै.	
०३	१५	०	भा. मा. स.
+	२३	३२	स्टै. अन्तर
०३	३८	३२	स्था. म. स.

४/५ जुलाई १९८९ के लिए पञ्चांग में दी गई दैनिक सांपातिक सारिणी से ५ जुलाई १९८९ का सा. का.

घं.	मि.	सै.	
१८	५०	५७	८२°-३०' रेखांश पर ००.०० बजे का. सां. का.
–		०४	कोष्ठक (य) से पूर्वी रेखांश ८८°-२३' के लिए स्था. संस्कार
१८	५०	५३	कलकत्ता में ००.०० बजे स्था. म. स. का सां. का.
+०३	३८	३२	इष्ट समय का स्था. म. स.
+		३५	प्रति घण्टे पर १० सै. का संस्कार
२२	३०	००	इष्ट समय का सां. का.

उदाहरण : बम्बई पूर्वी रेखांश ७२° ५०' स्टैं. अन्तर – ३८ मि. ४० सै. में ४ फरवरी १९५० को २३-५० बजे भा. मा. स. का सां. का.

घं.	मि.	सै.	
२३	५०	०	भा. मा.स.
–	३८	४०	स्टै. अ.
२३	११	२०	स्था. म. स.

पञ्चांग में दिए कोष्ठक (अ), (ब) तथा (स) से ४ फरवरी १९५० के लिए देखने पर :

घं.	मि.	सै.	
६	३९	२४	कोष्ठक (अ) से १९५० का सां. का.
+२	२	१३	कोष्ठक (ब) से साधारण वर्ष के लिए फरवरी माह का सां. का.
+०	११	५०	कोष्ठक (स) से ता. ४ के लिए सां. का.
८	५३	२७	पू. रेखांश ८२°-३०' पर ४ फरवरी १९५० का ००.०० बजे का सां. का.
+०	०	६	बम्बई के लिए स्थानीय संस्कार (कोष्ठक (य) देखें।
८	५३	३३	
+२३	११	२०	इष्ट समय का स्था. म. स.
+	३	४७	२३ घं. के लिए कोष्ठक (द) से संस्कार
+		२	११ मि. के लिए कोष्ठक (द) से संस्कार
३२	०८	४२	योग २४ घंटे से अधिक होने पर
–२४			२४ घंटे घटा लिए
८	०८	४२	इष्ट समय का सां. का.

उदाहरण : ५ मई १९८९ को लंदन पश्चिमी रेखांश ००-०५'. पर १३-३० बजे G.M.T. का सां. का.

लंदन के लिए स्टैं. अन्तर=० मि. २० सै.

घं.	मि.	सै.	
१३	३०	०	G.M.T. में समय
–०	०	२०	स्टैं. अन्तर
१३	२९	४०	स्था. म. समय

पञ्चांग में दी गई दैनिक सां. का. सारिणी में ५ मई १९८९ का पूर्वी रेखांश ८२° ३०' के लिए ००-०० बजे स्था. म. स. का सां. का.

घं.	मि.	सै.	
१४	५०	२८	
–०	०	५५	लंदन के लिए स्था. संस्कार (पूर्वी रेखांश ८२°३०' व पश्चिमी रेखांश ००५' का अन्तर= ८२°३५' अतः स्था. संस्कार=८२°३५'×२/३=५५ से. लगभग)
१४	४९	३३	लंदन में ००-०० बजे स्था. म. स. का सां. का.
+१३	२९	४०	इष्ट समय का स्था. म. स.
+	२	८	१३ घंटे के लिए कोष्ठक (द) से संस्कार
+		५	२९ मि. के लिए कोष्ठक (द) से संस्कार
२८	२१	२६	
–२४			
०४	२१	२६	इष्ट समय का सां. का.

सांपातिक काल से जन्म लग्न ज्ञात करना

इस वर्ष 'विश्वविजय पञ्चांग' में दिल्ली अक्षांश २८°३८' की २४° अयनांशीय निरयन सारिणी तथा सर्वत्रोपयगी २४° अयनांशीय निरयन दशम सारिणी दी जा रही हैं।

जन्म समय का सां. का. ज्ञात होने पर इन सारणियों की सहायता से जन्म लग्न तथा–दशम भाव साधन सुगमता से किये जा सकते हैं। इनके अतिरिक्त उत्तरी अक्षांश ०° से ६०° तक की सायन अर्थात् ०° अयनांशीय लग्न सारणियाँ भी यथावत् दी जा रही हैं। इनकी सहायता से जन्म का सां. का. ज्ञात होने पर विश्व के किसी भी स्थान के लिए जन्म लग्न ज्ञात किया जा सकता है।

उदाहरण : १० अक्टूबर १९८९ को दिल्ली में १७-५० बजे भा. मा. स. के लिए जन्म लग्न ज्ञात करना।

इससे पूर्व के उदाहरण में दिल्ली में १० अक्टूबर १९८९ को १७-५० बजे भा. मा. स. का सां. का. १८ घं. ४५ मि. २१ सै. ज्ञात कर चुके हैं।

दिल्ली की लग्न सारिणी से :	रा.	अं.	क.
१८ घं. ४८ मि. का लग्न	११	२३	०
१८ घं. ४४ मि. का लग्न	११	२१	३६

अतः ४ मि. अथवा २४० सै. के लिए लग्न में अन्तर = १°२४' अथवा ८४'

हमें १८ घं. ४५ मि. २१ सै. का लग्न ज्ञात करना। यह समय १८ घं. ४४ मि. से —

घ. मि. सै.
१८ ४५ २१
−१८ ४४ ०
१ २१ अर्थात् ८१ सै. अधिक है ।

अत: ८१ सै. के लिए लग्न में अन्तर

= ८४×८१ / २४० = २८′२१″

अत: १८ घं. ४५ मि. २१ सै. के सा. का. के लिए जन्म लग्न :

रा अ क वि.क
११ | २१ | ३६ | ०
+ २८ | २१
११ | २२ | ४ | २१ होगा ।

यह लग्न सारिणी २४० अयनांशीय हैं। १० अक्टूबर १९८९ के दिन अयनांश २३०४३′१″ है जो २४० से १६′५९″ कम है

अत: अयनांश संस्कार करने के पश्चात्
११।२२।४।२१ सारिणी से लग्न
+ ०।१६।५९ अयनांश संस्कार
११।२२।२१।२० स्पष्ट लग्न होगा

इसी प्रकार दशम सारिणी से १८ घं. ४५ मि. २१ सैं. का दशमभाव साधन करेंगे।

कोष्ठक (र) में २४० अयनांशीय लग्न व दशम सारिणी के लिए विभिन्न वर्षों का संस्कार दिया गया है —

उदाहरण : बम्बई पूर्वी रेखांश ७२°५०' उत्तरी अक्षांश १८०५५′ में ४ फरवरी १९५० को २३-५० बजे भा. मा. स. की लग्न ज्ञात करनी है।

इससे पूर्व के उदाहरण में उक्त समय का सां. का. ८ घं. ८ मि. ४२ सैं. है। इस सां. का. को ८ घं. ९ मि. लगभग मानते हुए तथा १८०५५' उ. अक्षांश के स्थान पर २०० सायन लग्न सारिणी से :

८ घं. २० मि. सां. का. की सायन लग्न २१२०३७′
८ घं. ० मि सां. का. की सायन लग्न २०८०२′
२० मि. सां. का. लग्न में अन्तर ४०३५′ अथवा २७५′
९ मि. सां. का. लग्न में अन्तर २७५०×९ / २०
= १२३′४५″ = २° ३′ ४५″

अत: इष्ट सां. का. के लिए सायन लग्न :

२०८० २′
+ २० ३′ ४५″
२१०० ५′ ४५″ अर्थात्

रा. अं. क. वि क.
७ | ० | ५ | ४५

इष्ट दिन का अयनांश २३°९′ ३९″ अत: निरयन लग्न :

रा. अं. क. वि क.
७ | ० | ५ | ४५
− २३ | ९ | ३९
६ ६ ५६ ६ अयनांश होगा ।

आगामी वर्ष "विश्वविजय पञ्चांग" में अन्य प्रसिद्ध नगरों की निरयन लग्न सारणियां दी जावेंगी। इस प्रकार इष्ट समय का सांपातिक काल ज्ञात कर विश्व के किसी भी स्थान के लिए शुद्ध निरयन लग्न सुगमतापूर्वक ज्ञात किया जा सकता है।

४, तिलक नगर, मथुरा ।

कोष्ठक (य) सां. का. के स्थानीय संस्कार हेतु

पश्चिमी रेखांश अं. क.	+ अथवा −	संस्कार सैं.	पश्चिमी रेखांश अं. क.	+ अथवा −	संस्कार सैं.
८२० ३०′	+	००	२४० ५२′	+	३८
८०० ५९′	+	०१	२३० २१′	+	३९
७९० २८′	+	०२	२१० ५०′	+	४०
७७०५७′	+	०३	२०० १९′	+	४१
७६० २६′	+	०३	१८० ४८′	+	४२
७४० ५५′	+	०४	१७० १७′	+	४३
७३० २४′	+	०६	१५० ४६′	+	४४
७१० ५३′	+	०७	१४० १५′	+	४५
७०० २२′	+	०८	१२० ४४′	+	४६
६८० ५१′	+	०९	११० १३′	+	४७
६७० २०′	+	१०	९० ४२′	+	४८
६५० ४९′	+	११	८० ११′	+	४९
६४० १८′	+	१२	६० ४०′	+	५०
६२० ४७′	+	१३	५० ९′	+	५१
६१० १६′	+	१४	३० ३८′	+	५२
५९० ४५′	+	15	२० ७′	+	५३
५८० १४′	+	१६	०० ३६′	+	५४
५६० ४३′	+	१७	८४० १′	−	१
५५० १२′	+	१८	८५० ३२′	−	२
५३० ४१′	+	१९	८७० ३′	−	३
५२० १०′	+	२०	८८० ३४′	−	४
५०० ३९′	+	२१	९०० ५′	−	५
४९० ०८′	+	२२	९१० ३६′	−	६
४७० ३७′	+	२३	९३० ७′	−	७
४६० ०६′	+	२४	९४० ३८′	−	८
४४० ३५′	+	२५	९६० ९′	−	९
४३० ४′	+	२६	९७० ४०′	−	१०
४१० ३३′	+	२७	९९० ११′	−	११
४०० २′	+	२८	१०००४२′	−	१२
३८० ३१	+	२९	१०२० १३′	−	१३
३७० ०′	+	३०	१०३० ४४′	−	१४
३५० २९′	+	३१	१०५० १५′	−	१५
३३० ५८′	+	३२	१०६० ४६′	−	१६
३२० २७′	+	३३	१०८० १७′	−	१७
३०० ५६′	+	३४	१०९० ४८′	−	१८
२९० २५′	+	३५	१११० १९′	−	१९
२७० ५४′	+	३६	११२० ५०′	−	२०
२६० २३′	+	३७			

प्रत्येक वर्ष के १ जनवरी को ००.०० बजे का सांपातिक काल कोष्ठक (अ)

ई. सन्	सांपा. काल			ई. सन्	सांपा. काल			ई. सन्	सांपा. काल		
सन्	घं.	मि.	सै.	सन्	घ.	मि.	सै.	सन्	घ.	मि.	सै.
१९०१	६	३८	५३	१९३६	६	३७	०	१९७०	६.	४०	०
१९०२	६	३७	५५	१९३७	६	३९	५९	१९७१	६	३९	३
१९०३	६	३६	५८	१९३८	६	३९	२	१९७२	६	३८	६
१९०४	६	३६	१	१९३९	६	३८	४	१९७३	६	४१	५
१९०५	६	३९	०	१९४०	६	३७	७	१९७४	६	४०	८
१९०६	६	३८	२	१९४१	६	४०.	६	१९७५	६	३९	११
१९०७	६	३७	५	१९४२	६	३९	९	१९७६	६	३८	१४
१९०८	६	३६	८	१९४३	६	३८	१२	१९७७	६	४१	१३
१९०९	६	३९	७	१९४४	६	३७	१४	१९७८	६	४०	१५
१९१०	६	३८	१०	१९४५	६	४०	१४	१९७९	६	३९	१८
१९११	६	३७	१२	१९४६	६	३९	१४	१९८०	६	३८	२१
१९१२	६	३६	१४	१९४७	६	३८	१९	१९८१	६	४१	२०
१९१३	६	३९	१४	१९४८	६	३७	२२	१९८२	६	४०	२३
१९१४	६	३८	१७	१९४९	६	४०	२१	१९८३	६	३९	२५
१९१५	६	३७	२०	१९५०	६	३९	२४	१९८४	६	३८	२८
१९१६	६	३६	२३	१९५१	६	३८	२६	१९८५	६	४१	२७
१९१७	६	३९	२२	१९५२	६	३७	२९	१९८६	६	४०	३०
१९१८	६	३८	२५	१९५३	६	४०	२८	१९८७	६	३९	३३
१९१९	६	३७	२७	१९५४	६	३९	३१	१९८८	६	३८	३६
१९२०	६	३६	३०	१९५५	६	३८	३४	१९८९	६	४१	३५
१९२१	६	३९	२९	१९५६	६	३७	३७	१९९०	६	४०	३७
१९२२	६	३८	३२	१९५७	६	४०	३६	१९९१	६	३९	४०
१९२३	६	३७	३५	१९५८	६	३९	३८	१९९२	६	३८	४३
१९२४	६	३६	३८	१९५९	६	३८	४१	१९९३	६	४१	४२
१९२५	६	३९	३७	१९६०	६	३७	४४	१९९४	६	४०	४५
१९२६	६	३८	३९	१९६१	६	४०	४३	१९९५	६	३९	४७
१९२७	६	३७	४२	१९६२	६	३९	४६	१९९६	६	३८	५०
१९२८	६	३६	४५	१९६३	६	३८	४८	१९९७	६	४१	४९
१९२९	६	३९	४४	१९६४	६	३७	५१	१९९८	६	४०	५२
१९३०	६	३८	४७	१९६५	६	४०	५०	१९९९	६	३९	५५
१९३१	६	३७	४९	१९६६	६	३९	५३	२०००	६	३८	५८
१९३२	६	३६	५२	१९६७	६	३८	५६				
१९३३	६	३९	५१	१९६८	६	३७	५९				
१९३४	६	३८	५४	१९६९	६	४०	५८				
१९३५	६	३७	५७								

कोष्ठक (ब)

प्रतिमास के आरम्भ में सांपातिक काल की वृद्धि

मास	साधारण वर्ष			प्लुत वर्ष		
	घं.	मि.	सै.	घं.	मि.	सै
जनवरी	०	०	०	०	०	०
फरवरी	२	२	१३	२	२	१३
मार्च	३	५२	३७	३	५६	३३
अप्रैल	५	५४	५०	५	५८	४७
मई	७	५३	७	७	५७	३
जून	९	५५	२०	९	५९	१६
जुलाई	११	५३	३६	११	५७	३३
अगस्त	१३	५५	५०	१३	५९	४६
सितम्बर	१५	५८	३	१६	२	०
अक्टूबर	१७	५६	२०	१८	०	१६
नवम्बर	१९	५८	३३	२०	२	२९
दिसम्बर	२१	५६	५०	२२	०	४६

प्रत्येक तारीख को सांपातिक काल की वृद्धि कोष्ठक (स)

ता.	सांपातिक काल			ता.	सांपा. काल		
	घं	मि.	सै.		घं.	मि.	सै.
१	०	०	०	१६	०	५९	०८
२	०	३	५७	१७	१	३	५
३	०	७	५३	१८	१	७	१
४	०	११	५०	१९	१	१०	५७
५	०	१५	४६	२०	१	१४	५५
६	०	१९	४३	२१	१	१८	५१
७	०	२३	३९	२२	१	२२	४८
८	०	२७	३६	२३	१	२६	४४
९	०	३१	३२	२४	१	३०	४१
१०	०	३५	२९.	२५	१	३४	३७
११	०	३९	२६	२६	१	३८	३४
१२	०	४३	२२	२७	१	४२	३०
१३	०	४७	१९	२८	१	४६	२७
१४	०	५१	१५	२९	१	५०	२४
१५	०	५५	१२	३०	१	५४	२०
				३१	१	५८	[illegible]

प्रति घण्टे (मिनट या सैकैण्ड) के लिए सांपातिक काल का संस्कार कोष्ठक (ब)

घं. मि. सैं.	मि. सै. प्रसे.	सै. प्रसे. —	प्रसे. — —	घं. मि. से.	मि. से. प्रसे.	से. प्रसे. -	प्रसे. - -
१	०	९	५१	३१	५	५	३३
२	०	१९	४२	३२	५	१५	२४
३	०	२९	३४	३३	५	२५	१६
४	०	३९	२५	३४	५	३५	७
५	०	४९	१६	३५	५	४४	५९
६	०	५९	८	३६	५	५४	५०
७	१	९	०	३७	६	४	४१
८	१	१८	५१	३८	६	१४	३३
९	१	२८	४२	३९	६	२४	२४
१०	१	३८	३४	४०	६	३४	१५
११	१	४८	२५	४१	६	४४	७
१२	१	५८	१७	४२	६	५३	५८
१३	२	८	८	४३	७	३	५०
१४	२	१८	०	४४	७	१३	४१
१५	२	२७	५१	४५	७	२६	३२
१६	२	३७	४२	४६	७	३३	२४
१७	२	४७	३३	४७	७	४३	१५
१८	२	५७	२५	४८	७	५३	६
१९	३	७	१६	४९	८	२	५८
२०	३	१७	८	५०	८	१२	४९
२१	३	२६	५९	५१	८	२२	४१
२२	३	३६	५०	५२	८	३२	३२
२३	३	४६	४२	५३	८	४२	२३
२४	३	५६	३३	५४	८	५२	१५
२५	४	६	२५	५५	९	२	६
२६	४	१६	१६	५६	९	११	५८
२७	४	२६	७	५७	९	२१	४९
२८	४	३५	५९	५८	९	३१	४०
२९	४	४५	५०	५९	९	४१	३२
३०	४	५५	४२	६०	९	५१	२२

१ अप्रैल १९८९ से ३१ मार्च १९९० तक ००.०० बजे (मध्य रात्रि) की दैनिक सांपातिक काल सारणी

ता.	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	जनवरी	फरवरी	मार्च
	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
१	१२ ३६ २५	१४ ३४ ४२	१६ ३६ ५५	१८ ३५ ११	२० ३७ २५	२२ ३९ ३८	० ३७ ५५	२ ४० ८	४ ३८ २५	६ ४० ३८	८ ४२ ५१	१० ३३ १५
२	१२ ४० २२	१४ ३८ ३८	१६ ४० ५२	१८ ३९ ८	२० ४१ २२	२२ ४३ ३५	० ४१ ५१	२ ४४ ५	४ ४२ २१	६ ४४ ३४	८ ४६ ४८	१० ३७ १२
३	१२ ४४ १९	१४ ४२ ३५	१६ ४४ ४८	१८ ४३ ४	२० ४५ १८	२२ ४७ ३१	० ४५ ४८	२ ४८ १	४ ४६ १८	६ ४८ ३१	८ ५० ४४	१० ४१ ८
४	१२ ४८ १५	१४ ४६ ३१	१६ ४८ ४५	१८ ४७ १	२० ४९ १५	२२ ५१ २८	० ४९ ४५	२ ५१ ५८	४ ५० १५	६ ५२ २८	८ ५४ ४१	१० ४५ ४
५	१२ ५२ ११	१४ ५० २८	१६ ५२ ४१	१८ ५० ५७	२० ५३ ११	२२ ५५ २४	० ५३ ४१	२ ५५ ५४	४ ५४ ११	६ ५६ २४	८ ५८ ३७	१० ४९ १
६	१२ ५६ ८	१४ ५४ २५	१६ ५६ ३८	१८ ५४ ५४	२० ५७ ८	२२ ५९ २१	० ५७ ३७	२ ५९ ५१	४ ५८ ८	७ ० २१	९ २ ३४	१० ५२ ५८
७	१३ ० ४	१४ ५८ २१	१७ ० ३४	१८ ५८ ५०	२१ १ ४	२३ ३ १७	१ १ ३४	३ ३ ४७	५ २ ४	७ ४ १७	९ ६ ३०	१० ५६ ५४
८	१३ ४ १	१५ २ १७	१७ ४ ३१	१९ २ ४७	२१ ५ १	२३ ७ १४	१ ५ ३०	३ ७ ४४	५ ६ ०	७ ८ १४	९ १० २७	११ ० ५०
९	१३ ७ ५८	१५ ६ १४	१७ ८ २८	१९ ६ ४३	२१ ८ ५८	२३ ११ १०	१ ९ २७	३ ११ ४०	५ ९ ५९	७ १२ ११	९ १४ २३	११ ४ ४७
१०	१३ ११ ५४	१५ १० ११	१७ १२ २४	१९ १० ४०	२१ १२ ५४	२३ १५ ७	१ १३ २३	३ १५ ३७	५ १३ ५४	७ १६ ७	९ १८ २०	११ ८ ४४
११	१३ १५ ५१	१५ १४ ७	१७ १६ २१	१९ १४ ३७	२१ १६ ५१	२३ १९ ४	१ १७ २०	३ १९ ३४	५ १७ ५०	७ २० ४	९ २२ १६	११ १२ ४१
१२	१३ १९ ४७	१५ १८ ४	१७ २० १७	१९ १८ ३३	२१ २० ४७	२३ २३ ०	१ २१ १७	३ २३ ३०	५ २१ ४७	७ २४ ०	९ २६ १३	११ १६ ३७
१३	१३ २३ ४४	१५ २२ ०	१७ २४ १४	१९ २२ ३०	२१ २४ ४४	२३ २६ ५७	१ २५ १४	३ २७ २७	५ २५ ४४	७ २७ ५६	९ ३० १०	११ २० ३४
१४	१३ २७ ४०	१५ २५ ५७	१७ २८ १०	१९ २६ २६	२१ २८ ४०	२३ ३० ५३	१ २९ १०	३ ३१ २३	५ २९ ४०	७ ३१ ५३	९ ३४ ७	११ २४ ३०
१५	१३ ३१ ३७	१५ २९ ५४	१७ ३२ ७	१९ ३० २३	२१ ३२ ३७	२३ ३४ ५०	१ ३३ ७	३ ३५ २०	५ ३३ ३७	७ ३५ ५०	९ ३८ ३	११ २८ २७
१६	१३ ३५ ३३	१५ ३३ ५०	१७ ३६ ३	१९ ३४ १९	२१ ३६ ३३	२३ ३८ ४६	१ ३७ ३	३ ३९ १६	५ ३७ ३३	७ ३९ ४७	९ ४२ ०	११ ३२ २३
१७	१३ ३९ ३०	१५ ३७ ४७	१७ ४० ०	१९ ३८ १६	२१ ४० ३०	२३ ४२ ४३	१ ४१ ०	३ ४३ १३	५ ४१ ३०	७ ४३ ४३	९ ४५ ५६	११ ३६ २०
१८	१३ ४३ २६	१५ ४१ ४३	१७ ४३ ५६	१९ ४२ १२	२१ ४४ २६	२३ ४६ ३९	१ ४४ ५६	३ ४७ १०	५ ४५ २६	७ ४७ ४०	९ ४९ ५२	११ ४० १६
१९	१३ ४७ २३	१५ ४५ ४०	१७ ४७ ५३	१९ ४६ ९	२१ ४८ २३	२३ ५० ३६	१ ४८ ५३	३ ५१ ६	५ ४९ २३	७ ५१ ३६	९ ५३ ४९	११ ४४ १३
२०	१३ ५१ १९	१५ ४९ ३६	१७ ५१ ५०	१९ ५० ६	२१ ५२ २०	२३ ५४ ३२	१ ५२ ४९	३ ५५ ३	५ ५३ १९	७ ५५ ३३	९ ५७ ४६	११ ४८ ९
२१	१३ ५५ १६	१५ ५३ ३३	१७ ५५ ४६	१९ ५४ २	२१ ५६ १६	२३ ५८ २९	१ ५६ ४६	३ ५८ ५९	५ ५७ १६	७ ५९ २९	१० १ ४२	११ ५२ .६
२२	१३ ५९ १२	१५ ५७ २९	१७ ५९ ४३	१९ ५७ ५९	२२ ० १३	० २ २६	२ ० ४३	४ २ ५६	६ १ १३	८ ३ २६	१० ५ ३९	११ ५६ २
२३	१४ ३ ९	१६ १ २६	१८ ३ ३९	२० १ ५५	२२ ४ ९	० ६ २२	२ ४ ३९	४ ६ ५२	६ ५ ९	८ ७ २२	१० ९ ३५	११ ५९ ५९
२४	१४ ७ ६	१६ ५ २३	१८ ७ ३६	२० ५ ५२	२२ ८ ६	० १० १९	२ ८ ३६	४ १० ४८	६ ९ ६	८ ११ १९	१० १३ ३२	१२ ३ ५६
२५	१४ ११ २	१६ ९ १९	१८ ११ ३२	२० ९ ४८	२२ १२ २	० १४ १५	२ १२ ३२	४ १४ ४५	६ १३ २	८ १५ १६	१० १७ २८	१२ ७ ५२
२६	१४ १४ ५९	१६ १३ १६	१८ १५ २९	२० १३ ४५	२२ १५ ५९	० १८ १२	२ १६ २९	४ १८ ४२	६ १६ ५९	८ १९ १२	१० २१ २५	१२ ११ ४९
२७	१४ १८ ५५	१६ १७ १२	१८ १९ २५	२० १७ ४१	२२ १९ ५५	० २२ ८	२ २० २५	४ २२ ३९	६ २० ५५	८ २३ ९	१० २५ २२	१२ १५ ४५
२८	१४ २२ ५२	१६ २१ ९	१८ २३ २२	२० २१ ३८	२२ २३ ५२	० २६ ५	२ २४ २१	४ २६ ३५	६ २४ ५२	८ २७ ५	१० २९ १८	१२ १९ ४२
२९	१४ २६ ४८	१६ २५ ५	१८ २७ १८	२० २५ ३५	२२ २७ ४९	० ३० १	२ २८ १८	४ ३० ३२	६ २८ ४८	८ ३१ २	— — —	१२ २३ ३८
३०	१४ ३० ४५	१६ २९ २	१८ ३१ १५	२० २९ ३१	२२ ३१ ४५	० ३३ ५८	२ ३२ १५	४ ३४ २८	६ ३२ ४५	८ ३४ ५९	— — —	१२ २७ ३५
३१	— — —	१६ ३२ ५९	— — —	२० ३३ २८	२२ ३५ ४२	— — —	२ ३६ ११	— — —	६ ३६ ४१	८ ३८ ५५	— — —	१२ ३१ ३१

दिल्ली अक्षांश २८° १३′ अ की २४° अयनांशीय निरयण लग्न सारणी-उपकरण : सांपातिक काल

मिनट	घण्टे ० रा. अं. क.	१ रा. अं. क.	२ रा. अं. क.	३ रा. अं. क.	४ रा. अं. क.	५ रा. अं. क.	६ रा. अं. क.	७ रा. अं. क.	८ रा. अं. क.	९ रा. अं. क.	१० रा. अं. क.	११ रा. अं. क.
०	२१८१६	३ ११३	३१३५९	३२६४६	४ ९४२	४२२४८	५ ६ ०	५१९१२	६ २१८	६१५१४	६२८ १	७१०४७
४	१९ ८	२ ४	१४५०	२७३८	१०३५	२३४१	६५३	२० ४	३१०	१६ ५	२८५२	११३८
८	२० १	२५५	१५४१	२८२९	११२७	२४३३	७४५	२०५७	४ २	१६५६	६२९४३	१२२९
१२	२०५३	३४६	१६३२	३२९२०	१२१९	२५२६	८३८	२१५०	४५४	१७४८	७ ०३४	१३२१
१६	२१४५	४३८	१७२३	४ ०१२	१३११	२६१९	९३२	२२४२	५४६	१८३९	१२५	१४१२
२०	२२२३७	३ ५२९	३१८१४	४ १ ४	४१४ ४	२७१२	५१०२५	५ २३३५	६ ६३८	६१९३१	७ २१६	७१५ ४
२४	२३२९	६२०	१९ ५	१५५	१४५८	२८ ५	१११७	२४२७	७२९	२०२२	३ ७	१५५५
२८	२४२१	७११	१९५६	२४७	१५४८	२८५७	१२१०	२५२०	८२१	२११३	३५८	१६४७
३२	२५१३	८ २	२०४७	३३९	१६४०	४२९५०	१३ ३	२६१२	९१३	२२ ४	४४९	१७३९
३६	२६ ५	८५३	२१३८	४३१	१७३३	५ ०४३	१३५५	२७ ४	१० ५	२२५५	५४०	१८३१
४०	२२६५६	३ ९४४	३२२२९	४ ५२२	१८२५	५ १३५	५१४४८	५२७५६	६१०५६	६२३४६	७ ६३१	७१९२३
४४	२७४८	१०३५	२३२१	६१४	१९१८	२२८	१५४१	२८४९	११४८	२४३७	७२२	२०१५
४८	२८३९	११२६	२४१२	७ ६	२०१०	३२२	१६३४	५२९४१	१२४०	२५२८	८१४	२१ ७
५२	२२९३१	१२१७	२५ ४	७५८	२१ ३	४१५	१७२७	६ ०३३	१३३१	२६१९	९ ५	२१५९
५६	३ ०२२	३१३ ८	३२५५५	४ ८५०	४२१५६	५ ५ ७	५१८१९	६ १२५	६१४२२	६२७१०	७ ९५६	७२२५२

सांपातिक काल

मिनट	घण्टे १२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
०	७२३४४	८ ७११	८२१३४	९ ७२३	९२५ ५	१०१४५१	११ ६ ०	११२७ ९	०१६५५	१ ४३७	१२०२६	२ ४४९
४	२४३७	८ ६	२२३५	८३०	२६२१	१६१४	७२६	२८३२	१८१०	५४४	२१२५	५४४
८	२५३०	९ २	२३३५	९३७	२७३७	१७३७	८५१	११२९५४	१९२४	६५०	२२२५	६३९
१२	२६२३	९५८	२४३६	१०४५	९२८५३	१९ ०	१०१७	० ११५	२०३७	७५५	२३२४	७३४
१६	२७१६	१०५६	२५३८	११५४	१० ०१०	२०२४	१३४३	२३६	२१५०	९ ०	२४२३	८२४
२०	७२८ ९	८११५१	८२६४०	९१३ ४	१० १२७	२१४८	१११३ ८	० ३५७	०२३ ३	११० ५	१२५२१	२ ९२३
२४	२९ २	१२४८	२७४२	१४१३	२४५	२३१२	१४३४	५१७	२४१५	११ ९	२६१९	१०१७
२८	७२९५६	१३४५	२८४४	१५२४	४ ४	२४३७	१५५८	६३७	२५२६	१२१२	२७१७	११११
३२	८ ०४९	१४४३	८२९४७	१६३४	५२३	२६ २	१७२३	७५६	२६३६	१३१५	२८१५	१२ ४
३६	१४३	१५४१	९ ०५१	१७४५	६४३	२७२७	१८४८	९१४	२७४७	१४१८	१२९१२	१२५८
४०	८ २३७	८१६३९	९ १५५	९१८५७	१० ८ ३	१०२८५२	११२०१२	०१०३२	०२८५६	११५२०	२ ० ९	२१३५१
४४	३३२	१७३७	३ ०	२०१०	९२४	११ ०१७	२१३६	११५०	१ ० ६	१६२२	१ ५	१४४४
४८	४२६	१८३६	४ ५	२१२३	१०४५	१४३	२३ ०	१३ ७	११५	१७२४	२ २	१५३७
५२	५२१	१९३५	५१०	२२३६	१२ ६	३ ९	२४२३	१४२३	२२३	१८२५	२५८	१६३०
५६	८ ६१६	८२०३५	९ ६१६	९२३५०	१०१३२८	११ ४३४	११२५४६	०१५३९	१ ३३०	१९२५	२ ३५४	१७२३

सर्वत्रोपयोगी २४° अयनांशीय निरयण दशम सारणी—उपकरण : सांपातिक काल

मिनट	घण्टे ०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
०	११ ६ ०	११ २२ १७	० ८ ११	० २३ २८	१ ८ ५	१ २२ ११	२ ६ ०	२ १९ ४९	३ ३ ५५	३ १८ २२	४ ३ ४९	४ १९ ४३
४	७ ५	२३ २१	९ १३	२४ २८	९ ३	२३ ७	६ ५५	२० ४४	४ ५२	१९ ३२	४ ५२	२० ४८
८	८ ११	२४ २६	१० १६	२५ २७	१० ०	२४ २	७ ५०	२१ ४०	५ ४९	२० ३२	५ ५४	२१ ५२
१२	९ १६	२५ ३०	११ १८	२६ २७	१० ५७	२४ ५८	८ ४५	२२ ३६	६ ४७	२१ ३२	६ ५७	२२ ५७
१६	१० २२	२६ ३४	१२ १९	२७ २६	११ ५४	२५ ५३	९ ४०	२३ ३२	७ ४५	२२ ३३	८ ०	२४ २
२०	११ ११ २७	११ २७ ३८	० १३ २१	० २८ २५	१ १२ ५०	१ २६ ४९	२ १० ३५	२ २४ २८	३ ८ ४३	३ २३ ३३	४ ९ ३	४ २५ ७
२४	१२ ३२	२८ ४२	१४ २३	२९ २३	१३ ४७	२७ ४४	११ ३०	२५ २४	९ ४१	२४ ३४	१० ७	२६ १२
२८	१३ ३४	२९ ४६	१५ २४	१ ० २२	१४ ४३	२८ ३९	१२ २६	२६ २०	१० ३९	२५ ३५	११ १०	२७ १७
३२	१४ ४३	० ० ५०	१६ २५	१ २१	१५ ४०	२९ ३४	१३ २१	२७ १७	११ ३८	२६ ३६	१२ १४	२८ २३
३६	१५ ४८	१ ५३	१७ २६	२ १९	१६ ३६	२ ० ३०	१४ १६	२८ १३	१२ ३७	२७ ३७	१३ १८	४ २९ २८
४०	११ १६ ५३	० २ ५७	० १८ २७	१ ३ १७	१ १७ ३२	२ १ २५	२ १५ ११	२ २९ १०	३ १३ ३५	३ २८ ३९	४ १४ २२	५ ० ३३
४४	१७ ५८	४ ०	१९ २७	४ १५	१८ २८	२ २०	१६ ७	३ ० ६	१४ ३४	२९ ४१	१५ २६	१ ३८
४८	१९ ३	५ ३	२० २८	५ १३	१९ २४	३ १५	१७ २	१ ३	१५ ३३	४ ० ४२	१६ ३०	२ ४४
५२	२० ८	६ ६	२१ २८	६ ११	२० २०	४ १०	१७ ५८	२ ०	१६ ३३	१ ४४	१७ ३४	३ ४९
५६	११ २१ १२	० ७ ८	० २२ २८	१ ७ ८	१ २१ १६	२ ५ ५	२ १८ ५३	३ २ ५७	३ १७ ३२	४ २ ४७	४ १८ ३९	५ ४ ५५

सांपातिक काल

मिनट	घण्टे १२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
०	५ ६ ०	५ २२ १७	६ ८ ११	६ २३ २८	७ ८ ५	७ २२ ११	८ ६ ०	८ १९ ४९	९ ३ ५५	९ १८ ३२	१० ३ ४९	१० १९ ४३
४	७ ५	२३ २१	९ १३	२४ २८	९ ३	२३ ७	६ ५५	२० ४४	४ ५२	१९ ३२	४ ५२	२० ४८
८	८ ११	२४ २६	१० १६	२५ २७	१० ०	२४ २	७ ५०	२१ ४०	५ ४९	२० ३२	५ ५४	२१ ५२
१२	९ १६	२५ ३०	११ १८	२६ २७	१० ५७	२४ ५८	८ ४५	२२ ३६	६ ४७	२१ ३३	६ ५७	२२ ५७
१६	१० २२	२६ ३४	१२ १९	२७ २६	११ ५४	२५ ५३	९ ४०	२३ ३२	७ ४५	२२ ३३	८ ०	२४ २
२०	५ ११ २७	५ २७ ३८	६ १३ २१	६ २८ २५	७ १२ ५०	७ २६ ४९	८ १० ३५	८ २४ २८	९ ८ ४३	९ २३ ३३	१० ९ ३	१० २५ ७
२४	१२ ३२	२८ ४२	१४ २३	२९ २३	१३ ४७	२७ ४४	११ ३०	२५ २४	९ ४१	२४ ३४	१० ७	२६ १२
२८	१३ ३७	५ २९ ४६	१५ २४	७ ० २२	१४ ४३	२८ ३९	१२ २६	२६ २०	१० ३९	२५ ३५	११ १०	२७ १७
३२	१४ ४३	६ ० ५०	१६ २५	१ २१	१५ ४०	७ २९ ३४	१३ २१	२७ १७	११ ३८	२६ ३६	१२ १४	२८ २३
३६	१५ ४८	१ ५३	१७ २६	२ १९	१६ ३४	८ ० ३०	१४ १६	२८ १३	१२ ३७	२७ ३८	१३ १८	१० २९ २८
४०	५ १६ ५३	६ २ ५७	६ १८ २७	७ ३ १७	७ १७ ३२	८ १ २५	८ १५ ११	८ २९ १०	९ १३ ३५	९ २८ ३९	१० १४ २२	११ ० ३३
४४	१७ ५८	४ ०	१९ २७	४ १५	१८ २८	२ २०	१६ ७	९ ० ६	१४ ३४	२९ ४१	१५ २६	१ ३८
४८	१९ ३	५ ३	२० २८	५ १३	१९ २४	३ १५	१७ २	१ ३	१५ ३३	१० ० ४२	१६ ३०	२ ४४
५२	२० ८	६ ६	२१ २८	६ ११	२० २०	४ १०	१७ ५८	२ ०	१६ ३३	१ ४४	१७ ३४	३ ४९
५६	५ २१ १२	६ ७ ८	६ २२ २८	७ ७ ८	७ २१ १६	८ ५ ५	८ १८ ५३	९ २ ५७	९ १७ ३२	१० २ ४७	१० १८ ३९	११ ४ ५५

कोष्ठक २ (क) **सायन लग्न** उत्तर अक्षांश

सां.काल	० अं. क.	५ अं. क.	१० अं. क.	१५ अं. क.	२० अं. क.	२५ अं. क.	३० अं. क.	सां.काल	० अं. क.	५ अं. क.	१० अं. क.	१५ अं. क.	२० अं. क.	२५ अं. क.	३० अं. क.
०। ०	९०। ०	९२। ०	९४। १	९६। ५	९८।१५	१००।३१	१०२।५६	१२। ०	२७०। ०	२६८। १	२६५।५९	२६३।५५	२६१।४६	२५९।२९	२५७। ४
०।२०	९४।३५	९६।३४	९८।३४	१००।३७	१०२।४३	१०४।५६	१०७।१६	१२।२०	२७४।३५	२७२।३६	२७०।३४	२६८।२८	२६६।१८	२६३।५७	२६१।२७
०।४०	९९।११	१०१। ९	१०३। ७	१०५। ७	१०७।१०	१०९।१८	१११।३४	१२।४०	२७९।११	२७७।१२	२७५।१०	२७३। ४	२७०।५१	२६८।२८	२६५।५५
१। ०	१०३।४७	१०५।४४	१०७।४०	१०९।३६	१११।३६	११३।२९	११५।४९	१३। ०	२८३।४९	२८१।५१	२७९।५०	२७७।४२	२७५।२९	२७३। ५	२७०।२७
१।२०	१०८।२८	११०।२१	११२।१३	११४। ६	११६। १	११७।५९	१२०। ३	१३।२०	२८८।२८	२८६।३२	२८४।३२	२८२।२६	२८०।१२	२७७।४६	२७५। ७
१।४०	११३।१०	११५। ०	११६।४८	११८।३७	१२०।२६	१२२।१९	१२४।१६	१३।४०	२९३।१०	२९१।१६	२८९।१९	२८७।१४	२८५। ०	२८२।३५	२७९।५३
२। ०	११७।५५	११९।४१	१२१।२५	१२३। ८	१२४।५२	१२६।३९	१२८।२९	१४। ०	२९७.५५	२९६। ५	२९४।१०	२९२। ८	२८९।५५	२८७।३०	२८४।४९
२।२०	१२२।४३	१२४।२४	१२६। ३	१२७।४१	१२९।२०	१३०।५९	१३२।४२	१४।२०	३०२।४३	३००।५८	२९९। ६	२९७। ७	२९४।५८	२९२।३५	२८९।५४
२।४०	१२७।३५	१२९।११	१३०।४५	१३२।१६	१३३।४८	१३५।२१	१३६।५६	१४।४०	३०७।३५	३०५।५५	३०४। ९	३०२।१४	३००। ९	२९७।४९	२९५।१०
३। ०	१३२।३२	१३४। २	१३५।२८	१३६।५३	१३८।१८	१३९।४३	१४१।१०	१५। ०	३१२।३२	३१०।५८	३०९।१७	३०७।२८	३०५।२८	३०३।१४	३००।३९
३।२०	१३७।३३	१३८।५६	१४०।१५	१४१।३३	१४२।५०	१४४। ७	१४५।२५	१५।२०	३१७।३३	३१६। ६	३१४।३३	३१२।५१	३१०।५८	३०८।४९	३०६।२१
३।४०	१४२।३९	१४३।५४	१४५। ५	१४६।१५	१४७।२३	१४८।३२	१४९।४२	१५।४०	३२२।३९	३२१।२०	३१९।५५	३१८।२१	३१६।३६	३१४।३७	३१२।१७
४। ०	१४७।४९	१४८।५५	१४९।५८	१५०।५९	१५१।५८	१५२।५८	१५३।५९	१६। ०	३२७।४९	३२६।३९	३२५।२३	३२३।५९	३२२।२५	३२०।३७	३१८।२९
४।२०	१५३। ४	१५४। ०	१५४।५३	१५५।४५	१५६।३६	१५७।२६	१५८।१७	१६।२०	३३३। ३	३३२। ३	३३०।५८	३२९।४५	३२८।२३	३२६।४८	३२४।५५
४।४०	१५८।२२	१५९। ८	१५९।५१	१६०।३३	१६१।१४	१६१।५५	१६२।३६	१६।४०	३३८।२२	३३७।१२	३३६।३९	३३५।३६	३३४।३०	३३३।११	३३१।३६
५। ०	१६३।४३	१६४।१८	१६४।५१	१६५।२३	१६५।५४	१६६।२५	१६६।५७	१७। ०	३४३।४३	३४३। ५	३४२।२४	३४१।३८	३४०।४५	३३९।४३	३३८।२९
५।२०	१६९। ७	१६९।३१	१६९।५३	१७०।१५	१७०।३६	१७०।५६	१७१।१७	१७।२०	३४९। ७	३४८।४२	३४८।१४	३४७।४२	३४७। ६	३४६।२४	३४५।३३
५।४०	१७४।३३	१७४।४५	१७४।५६	१७५। ७	१७५।१८	१७५।२८	१७५।३९	१७।४०	३५४।३३	३५४।२०	३५४। ६	३५३।५०	३५३।३२	३५३।११	३५२।४७
६। ०	१८०। ०	१८०। ०	१८०। ०	१८०। ०	१८०। ०	१८०। ०	१८०। ०	१८। ०	०। ०	०। ०	०। ०	०। ०	०। ०	०। ०	०। ०
६।२०	१८५।२७	१८५।१५	१८५। ४	१८४।५३	१८४।४२	१८४।३२	१८४।२२	१८।२०	५।२७	५।४०	५।५४	६।१०	६।२८	६।५०	७।१६
६।४०	१९०।५३	१९०।२९	१९०। ७	१८९।४५	१८९।२४	१८९। ४	१८८।४३	१८।४०	१०।५३	११।१८	११।४६	१२।१८	१२।५४	१३।३६	१४।२७
७। ०	१९६।१७	१९५।४२	१९५। ९	१९४।३७	१९४। ६	१९३।३५	१९३। ४	१९। ०	१६।१७	१६।५५	१७।३६	१८।२२	१९।१५	२०।१७	२१।३३
७।२०	२०१।३८	२००।५२	२००। ९	१९९।२७	१९८।४६	१९८। ५	१९७।२४	१९।२०	२१।३८	२२।२८	२३।२२	२४।२२	२५।३०	२६।४९	२८।२५
७।४०	२०६।५७	२०६। ०	२०५। ७	२०४।१५	२०३।२४	२०२।३४	२०१।४३	१९।४०	२६।५७	२७।५७	२९। २	३०।१५	३१।३७	३३।१२	३५। ७
८। ०	२१२।११	२११। ५	२१०। २	२०९। १	२०८: २	२०७। २	२०६। १	२०। ०	३२।११	३३।२१	३४।३७	३६। १	३७।३५	३९।३३	४१।३१
८।२०	२१७।२१	२१६। ७	२१४।५५	२१३।४६	२१२।३७	२११।२८	२१०।१८	२०।२०	३७।२१	३८।४०	४०। ६	४१।३९	४३।२४	४५।२३	४७।४३
८।४०	२२२।२७	२२१। ४	२१९।४५	२१८।२७	२१७।११	२१५।५३	२१४।३५	२०।४०	४२।२७	४३।५३	४५।२७	४७। ९	४९। ३	५१।११	५३।३९
९। ०	२२७।२८	२२५।५८	२२४।३२	२२३। ७	२२१।४२	२२०।१७	२१८।५०	२१। ०	४७।२८	४९। २	५०।४३	५२।३२	५४।३२	५६।४७	५९।२१
९।२०	२३२।२५	२३०।४९	२२९।१६	२२७।४४	२२६।१२	२२४।४०	२२३। ४	२१।२०	५२।२५	५४। ५	५५।५१	५७।४६	५९।५१	६२।११	६४।५०
९।४०	२३७।१७	२३५।३६	२३३।५७	२३२।१९	२३०।४१	२२९। १	२२७।१८	२१।४०	५७।१७	५९। ३	६०।५४	६२।५३	६५। २	६७।२५	७०। ६
१०। ०	२४२। ६	२४०।१९	२३८।३५	२३६।५२	२३५। ८	२३३।२१	२३१।३१	२२। ०	६२। ६	६३।५५	६५।५०	६७।५३	७०। ५	७२।३०	७५।१२
१०।२०	२४६।५०	२४५। ०	२४३।१२	२४१।२३	२३९।३४	२३७।४१	२३५।४४	२२।२०	६६।५०	६८।४४	७०।४१	७२।४६	७५। ०	७७।२६	८०। ७
१०।४०	२५१।३२	२४९।३९	२४७।४७	२४५।५४	२४३।५९	२४२। १	२३९।५७	२२।४०	७१।३२	७३।२८	७५।२८	७७।३४	७९।४९	८२।१४	८४।५४
११। ०	२५६।११	२५४।१६	२५२।२०	२५०।२४	२४८।२४	२४६।२१	२४४।१२	२३। ०	७६।११	७८। ९	८०।१०	८२।१७	८४।३१	८६।५६	८९।३३
११।२०	२६०।४९	२५८।५१	२५६।५३	२५४।५३	२५२।५०	२५०।४२	२४८।२७	२३।२०	८०।४९	८२।४८	८४।५०	८६।५६	८९।१०	९१।३२	९४। ६
११।४०	२६५।२५	२६३।२६	२६१।२६	२५९।२४	२५७।१७	२५५। ५	२५२।४४	२३।४०	८५।२५	८७।२४	८९।२६	९१।३२	९३।४९	९६। ३	९८।३९

कोष्ठक २ (ख) सायन लग्न उत्तर अक्षांश

सा. का.	३५ घ क	४० घं. क.	४५ घं. क.	५० घं. क.	५५ घं. क.	६० घं. क.
०। ०	१०५।३४	१०८।२८	१११।४२	११५।२२	११९।३७	१२४।३५
०।२०	१०९।४८	११२।२४	११५।३८	११९। ५	१२३। ३	१२७।४०
०।४०	११३।५९	११६।३६	११९।३०	१२२।४५	१२६।२८	१३०।४५
१। ०	११८। ७	१२०।३६	१२३।२०	१२६।२३	१२९।५०	१३३।४९
१।२०	१२२।१४	१२४।३५	१२७। ८	१२९।५९	१३३।११	१३६।५२
१।४०	१२६।१९	१२८।३२	१३०।१५	१३३।३४	१३६।३२	१३९।५५
२। ०	१३०।२५	१३२।२८	१३४।४१	१३७। ८	१३९।५२	१४२।५८
२।२०	१३४।३०	१३६।२४	१३८।२७	१४०।४१	१४३।११	१४६। १
२।४०	१३८।३५	१४०।२०	१४२।१२	१४४।१५	१४६।३१	१४९। ५
३। ०	१४२।४१	१४४।१६	१४५।५८	१४७।४८	१४९।५१	१५२। ९
३।२०	१४६।४७	१४८।१२	१४९।४३	१५१।२२	१५३।११	१५५।१३
३।४०	१५०।५४	१५२। ९	१५३।२९	१५४।५५	१५६।३१	१५८।१८
४। ०	१५५। १	१५६। ६	१५७।१५	१५८।३०	१५९।५१	१६१।२३
४।२०	१५९।१०	१६०। ४	१६१। २	१६२। ४	१६३।१२	१६४।२८
४।४०	१६३।१९	१६४। ३	१६४।४९	१६५।३९	१६६।३३	१६७।३४
५। ०	१६७।२८	१६८। १	१६८।३६	१६९।१४	१६९।५५	१७०।४०
५।२०	१७१।३९	१७२। १	१७२।२४	१७२।४९	१७३।१६	१७३।४७
५।४०	१७५।४९	१७६। ३	१७६।१२	१७६।२५	१७६।३८	१७६।५३
६। ०	१८०। ०	१८०। ०	१८०। ०	१८०। ०	१८०। ०	१८०। ०
६।२०	१८४।११	१८४। ०	१८३।४८	१८३।३५	१८३।२२	१८३। ७
६।४०	१८८।२१	१८७।५९	१८७।३६	१८७।११	१८६।४४	१८६।१३
७। ०	१९२।३२	१९१।५९	१९१।२४	१९०।४६	१९०। ५	१८९।२०
७।२०	१९६।४१	१९५।५८	१९५।११	१९४।२१	१९३।२७	१९२।२६
७।४०	२००।५१	१९९।५६	१९८।५८	१९७।५६	१९६।४८	१९५।३२
८। ०	२०४।५९	२०३।५४	२०२।४५	२०१।३१	२००। ९	१९८।३७
८।२०	२०९। ७	२०७।५१	२०६।३१	२०५। ५	२०३।२९	२०१।४३
८।४०	२१३।१३	२११।४८	२१०।१७	२०८।३८	२०६।५०	२०४।४७
९। ०	२१७।२०	२१५।४४	२१४। ३	२१२।१२	२१०। ९	२०७।५१
९।२०	२२१।२५	२१९।४०	२१७।४८	२१५।४५	२१३।२९	२१०।५५
९।४०	२२५।३०	२२३।३६	२२१।३३	२१९।१९	२१६।४९	२१३।५९
१०। ०	२२९।३५	२२७।३२	२२५।१९	२२२।५२	२२०। ८	२१७। २
१०।२०	२३३।४१	२३१।२८	२२९। ५	२२६।२६	२२३।२८	२२०। ५
१०।४०	२३७।४६	२३५।२५	२३२।५२	२३०। १	२२६।४९	२२३। ८
११। ०	२४१।५३	२३९।२४	२३६।४०	२३३।३७	२३०।१०	२२६।११
११।२०	२४६। २	२४३।२४	२४०।३०	२३७।१५	२३३।३२	२२९।१५
११।४०	२५०।१२	२४७।२६	२४४।२२	२४०।५५	२३६।५८	२३२।२०

सा. का.	३५ घं. क.	४० घं. क.	४५ घं. क.	५० घं. क.	५५ घं. क.	६० घं. क.
१२। ०	२५४।२६	२५१।३२	२४८।१८	२४४।३८	२४०।२३	२३५।२५
१२।२०	२५८।४३	२५५।४२	२५२।१८	२४८।२४	२४३।५३	२३८।३३
१२।४०	२६३। ६	२५९।५७	२५६।२३	२५२।१६	२४७।२७	२४१।४३
१३। ०	२६७।३३	२६४।१८	२६०।३४	२५६।१४	२५१। ५	२४४।५६
१३।२०	२७२। ९	२६८।४६	२६४।५३	२६०।१९	२५४।५१	२४८।१३
१३।४०	२७६।५२	२७३।३४	२६९।२१	२[illegible]।३३	२५८।४४	२५१।३६
१४। ०	२८१।४५	२७८।१२	२७४। १	२६[illegible]।५८	२६२।४७	२५५। ६
१४।२०	२८६।४९	२८३।१३	२७८।५४	२७३।३८	२६७। ३	२५८।४५
१४।४०	२९२। ६	२८८।२८	२८४। ३	२७८।३४	२७१।३६	२६२।३६
१५। ०	२९७।३८	२९४। ०	२८९।१२	२८३।४२	२७६।२९	२६६।४३
१५।२०	३०३।२५	२९९।५१	२९५।२२	२८९।३४	२८१।४९	२७१।१२
१५।४०	३०९।३०	३०६। ३	३०१।३९	२९५।४८	२८७।४३	२७६।१२
१६। ०	३१५।५४	३१२।३९	३०८।२५	३०२।३८	२९४।२०	२८१।५३
१६।२०	३२२।३६	३१९।३९	३१५।४४	३१०।१२	३०१।२४	२८८।३६
१६।४०	३२[illegible]।३७	३२७। ४	३२३।३७	३१८।३६	३१०।४०	२९६।४८
१७। ०	३३६।५५	३३४।५३	३३२। ४	३२७।५१	३२०।५१	३०७।१६
१७।२०	३४४।२८	३४३। ३	३४१। २	३३७।४९	३३२।३७	३२०।५८
१७।४०	३५२।११	३५१।२७	३५०।२५	३४८।४७	३४५।५०	३३८।४८
१८। ०	०। ०	०। ०	०। ०	०। ०	०। ०	०। ०
१८।२०	७।४१	८।३३	९।३५	११।१३	१४।१०	२१।१२
१८।४०	१५।३२	१६।५७	१८।५८	२२। २	२७।२३	३९। २
१९। ०	२३। ५	२५। ७	२७।५६	३२। ९	३९।१०	५२।४४
१९।२०	३०।२३	३२।५७	३६।२३	४१।२५	४९।२१	६३।१२
१९।४०	३७।२४	४०।२१	४४।१६	४९।४८	५८। ६	७१।२४
२०। ०	४४। ६	४७।२१	५१।३५	५७।२२	६५।४०	७८। ७
२०।२०	५०।३०	५३।५७	५८।२१	६४।१२	७२।१७	८३।४८
२०।४०	५६।३५	६०। ९	६४।३८	७०।२६	७८।११	८८।४८
२१। ०	६२।२२	६६। ०	७०।२८	७६। ९	८३।३१	९३।१७
२१।२०	६७।५४	७१।३२	७५।५७	८१।२६	८८।२४	९७।२४
२१।४०	७३।११	७६।४७	८१। ६	८६।२२	९२।५७	१०१।१६
२२। ०	७८।१५	८१।४८	८५।५९	९१। २	९७।१३	१०४।५४
२२।२०	८३। ८	८६।३६	९०।३९	९५।२७	१०१।१६	१०८।२४
२२।४०	८७।५२	९१।१४	९५। ७	९९।४२	१०५। ९	१११।४७
२३। ०	९२।२७	९५।४२	९९।२६	१०३।४७	१०८।५५	११५। ४
२३।२०	९६।५५	१००। ३	१०३।३७	१०७।४४	११२।३३	११८।१७
२३।४०	१०१।१७	१०४।१८	१०७।४२	१११।३६	११६। ७	१२१।२७
२४। ०	१०५।३४	१०८।२८	१११।४२	११५।२२	११९।३७	१२४।३५

अनुभूत सरल औषध प्रयोग

"यस्य देशस्य यो जन्तुस्तज्जं तस्यौषधं हितम्" अर्थात् जो प्राणी जिस देश में जन्म लेता है उसके लिये उसी देश की औषध हितकारी है। भारत देश की प्राचीन धरोहर आयुर्वेद दवायें भी आजकल बहुत कठिनाई से प्राप्त होती हैं। प्राप्त हो भी जायें तो पुरानी व गुणहीन होती हैं इसके उपरान्त कीमत में भी अधिक होती हैं। ऐसी कठिनाई को दूर करने के लिये मैं कुछ सस्ते व सरलता से निर्मित होने वाले व अनेकों बार सफल अनुभूत योग दे रहा हूं जिन्हें बनाकर तथा उपयोग करके स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करें।

१. श्वास दमाः- इसबगोल की भूसी दिन में २ बार १० ग्राम तक लगातार ६ माह से लेकर १२ माह तक सेवन करते रहने सेश्वास की बीमारी ठीक होती है।

२. हिचकी (हिक्का):- हिचकी चाहे किसी भी कारण से आ रही हो तो बारीक पीस हुए सैंधा नमक की नस्य लेने से दूर हो जायेगी।

३. पेट के कीड़े:- महीन पीसा हुआ नमक ३ ग्राम प्रातः गाय की छाछ के साथ कई दिन तक पीने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

४. छाती की जलन में:—भोजन करने के बाद यदि छाती में जलन होती हो तो अजवाइन १ग्राम और बादाम की भीगी एक नग दोनों को खूब चबाकर खायें।

५. सन्धि वेदनातथा बात विकारों परः- अजवाइन के सत को आधी रत्ती से एक रत्ती की मात्रा तक खरल कर (यह एक मात्रा है) दिन में तीन बार दूध के साथ देने से पक्षाघात शूल वात प्रकोप जन्य व्याधियां तथा उच्च रक्त चाप (High Blood Pressure) आदि का शमन होता है।

६. खांसीः- काली मिर्च १० ग्राम, छोटी पीपर १० ग्राम, जवाखार ५ ग्राम, अनार दाना २० ग्राम, इन सब दवाओं का चूर्ण करके ९० ग्राम साफ गुड़ में सान कर जंगली बेर के बराबर गोली बना लेवें। जब खांसी आती हो मुंह में रख कर चूसने से खांसी व गले की खरास ठीक होती है। वैसे यह दवाई भरत्व्यादि बटी के नाम से बजार में भी मिलती है।

७. कमर दर्दः- खसखस और मिश्री मिला कर कुल २ तोले की मात्रा कई दिन तक खाने से कमर का दर्द मिट जाता है।

८. सब तरह के दर्द परः- असकन्ध को कूट कर कपड़े से छान लो, इसे मैदा जैसे महीन चूर्ण का जितना बजन हो उसका छठा भाग उत्तम गौ- धृत उसमें मिला दो और साफ कांच य चीनी के बर्तन में भरकर रख दो। इसकी मात्रा १॥ ग्राम से ३ ग्राम तक है इसे चाटकर ऊपर से मिश्री मिला गाय का दूध पीने से समस्त वात विकार, सब तरह के दर्द, वात ज्वर, प्रसूति पीड़ा, धातुरोग गठिया, पसली का दर्द, सिर दर्द और पेट के सारे रोग नष्ट करके शरीर स्वस्थ करता है।

नोटः- दूध के अभाव में गरम पानी के साथ भी ले सकते हैं।

९. पाचकः- २०० ग्राम सफेद जीरा साबूत लेकर उसमें २० ग्राम सैंधा नमक पीस कर मिला दो, फिर कागजी नीबू के रस में जीरे को (कांच या चीनी का बर्तन) २४ घंटे भिगो कर रखो फिर जीरे को निकाल कर सुखा दो ऐसा जीरा हर गृहस्थी में रखना चाहिये यह बहुत काम देता है, जब भी जी मचलाये थोड़ा सा खाले। यह जीरा बहुत पाचक है।

उपरोक्त योग मेरे स्व० पिताजी हरकचन्द जी लोढ़ा जैन आयुर्वेदाचार्य के हैं जिसका प्रयोग वे सैकड़ों रोगियों पर कर चुके थे मैं भी आज तक सफलतापूर्वक कर रहा हूँ, सर्व साधारण उपयोग कर लाभ उठावे।

नोटः यदि ऊपर लिखे प्रयोगों के विषय में किसी पाठक को कोई बात समझ में न आई हो तो मुझे नीचे लिखे पते पर पत्र डाल कर इस विषय को समझ सकते हैं।

मूलचन्द्र जैन पो० करही जिला खरगोन (मध्य प्रदेश) पिन कोड ४५१२२०

संक्षिप्त सन्ध्योपासन विधिः

(द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) मात्र के लिए प्रतिदिन सन्ध्योपासन परमावश्यक है। परन्तु, अब इस भौतिक युग में अनेक ब्राह्मण बालक भी सन्ध्योपासन से विरत होते जा रहे हैं। कई लोग समझते है कि सन्ध्या के मंत्र कठिन है, समय अधिक लगता है, तो कुछ समझते है कि बिना पूर्ण विनियोग ध्यान न्यास उपस्थान आवाहन विसर्जन और मुद्रा के सन्ध्या नहीं हो सकती। इतने झंझट के लिए उनके पास समय नहीं। किन्तु यह उनका भ्रम है। सन्ध्या केवल ५ सात मिनट में सम्पन्न हो सकती है, लम्बे ध्यान आवाहन उपस्थान मुद्रा आदिकी आवश्यकता नहीं है। हमारे परमादरणीय बन्धुवर तंत्रिक- चूड़ामणि विद्वद्वरेण्य स्व० श्री सदाशिवजी दीक्षितने गुरुपरम्परा- प्राप्त संक्षिप्त सन्ध्या- विधि अपने कुछ भक्तों को लिखवाई थी। अनेक ग्रन्थों के आलोडन के बाद उनका मत था कि यह सन्ध्या द्विज मात्र के लिए पर्याप्त थी। गायत्री मंत्र की एक माला न कर सकें वे केवल २४ या १० मंत्र जप ले, इससे उन्हें सन्ध्या न करने का प्रत्यवाय दोष नहीं लगेगा। उनकी इच्छा थी कि यह सन्ध्या पाठकों के लाभार्थ 'ज्योतिष्मती' और 'श्रीविश्व- विजय- पंचांग' में प्रकाशित हो जावे। काशी के कई पंचांगों में सन्ध्योपासन तर्पणादि विधि छपती है, परन्तु वह इतनी सरल एवं संक्षिप्त नहीं। अतः "श्रीविश्वविजय" पंचांग पाठकों के लाभार्थ यह विधि प्रकाशित करके हम अपने एक स्वर्गस्थ स्नेही सहृदय मित्र की सदिच्छाको पूर्ण कर रहे हैं।

—सम्पादक)

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोकादेवि त्वं विष्णुना धृता।

त्वं च धारय मां देवि ! पवित्रं कुरु चासनम्॥

ॐ तत्सदद्य अमुक संवत्सरे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुकवासरे अमुक-गोत्रोत्पन्न अमुक शर्माऽहं (वर्माहं गुप्तोऽहं वा) ममोपात्त- दुरित क्षयपूर्वक श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं प्रातः सन्ध्योपासन करिष्ये।

ॐ सप्तव्याहृतीनां विश्वामित्रजमदग्नि- भरद्वाज- गौतमात्रिवसिष्ठकश्यपाऋषयः गायत्र्युष्णिग् अनुष्टुप् बृहतीपंक्तित्रिष्टुप् जगत्यश्छन्दांसि अग्निर्वायव्यादित्य बृहस्पतिर्व रुणेन्द्रविश्वेदेवा देवताः मार्ज ने विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्। ॐ तत् सवितु-र्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

आपोहिष्ठेति ऋचः सिन्धुद्वीपऋषिर्गायत्री छन्दः आपो देवता मार्ज ने विनियोगः।

ॐ आपोहिष्ठा मयो भुवः। ॐ ता न ऊर्जे दधातनः। ॐ महेरणाय चक्षसे। ॐ यो वः शिवतमोरसः। ॐ तस्य भाजयतेह नः। ॐ उशतीरिवमातरः। ॐ तस्मा अरंग माम वः। ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ। ॐ आपो जन यथा च नः॥

ॐ पूर्वा सन्ध्या तु गायत्री रक्ताङ्गी रक्त- वाससा। अक्षसूत्रधरादेवी कमण्डलु-समन्विता। हंस- स्कन्धसमारूढा तथा च ब्रह्मदेवता। आया हि वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि॥ गायत्री छन्दसां मातर्ब्रह्मयोने नमोस्तु ते।

ॐ सप्तव्याहृतीनां विश्वामित्र- जमदग्निभरद्वाज- गौतमात्रिवसिष्ठकश्यपा ऋषयः- गायत्र्युष्णिग् अनुष्टुप् बृहती पंक्ति त्रिष्टुप् जगत्यश्छंदांसि अग्निवायुवादित्य-बृहस्पतिर्वरु- णेन्द्र- विश्वेदेवा देवताः प्राणायामे विनियोगः।

"ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥"

सूर्यश्चमेति मंत्रस्य ब्रह्माऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्यो देवता आचमने विनियोगः।

(अपामुपस्पर्शने विनियोगः)

ॐ सूर्यश्च मामन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम् यद्रात्र्या पापम-कार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु। यत् किञ्चिद्दुरितं मयि इदमहं मामामृतयौनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा॥

(अग्निश्च मामन्युश्च मन्युपतयश्च सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।)

ऋतञ्चसत्यञ्चेति अघमर्षण सूक्तस्य अघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववृत्तं देवता-मुपस्पर्शने विनियोगः।

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चा भीद्धात्तपसोऽध्यजायत ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रोऽर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरोऽजायत, अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिशतोवशी सूर्याचन्द्रमसौधाता यथा पूर्व मकल्पयत्, दिवञ्च पृथ्वीञ्च अन्तरिक्षमथो स्वः।

उद्वयमिति प्रस्कण्वऋषिरनुष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरं देवं देवत्रा सूर्यमगम ज्योतिरुत्तमम्।

उद्वयमिति प्रस्कण्वऋषिर्निचृद् गायत्री छन्दः सूर्योदेवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

ॐ उद्वयं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः, दृशे विश्वाय सूर्यम्।

ॐ कारस्य ब्रह्माऋषिर्दैवी गायत्री छन्दः परमात्मा देवता गायत्री- जपे विनियोगः।

"ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।"

अनेन सध्योपासनाख्येन कर्मणा श्रीपरमेश्वरः प्रीयतां न मम।

ॐ तत् सद् ब्रह्मार्पणमस्तु॥

स्तुतिः—

दुर्जनः सज्जनो भूयात्सज्जनः शान्ति माप्नुयात्।
बान्तो मुच्येत बन्धेभ्यो मुक्तश्चान्यान्विमोचयेत्॥
काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी शस्यशालिनी।
राष्ट्रोऽयं क्षोभरहितो साधकास्सन्तु निर्भया॥
शिवमस्तु सर्व जगतां हित- -
निरता भवन्तु भूतगणाः।
दोषाः प्रयान्तु शान्ति,
सर्वत्र जनाः सुखिनो भवन्तु॥
'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्- दुःख भाग भवेत्॥
'यानि कानि च पापानि जन्मान्तर- कृतानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्तु प्रदक्षिण्या पदे- पदे॥
यदक्षरं परिभ्रष्टं मात्राहीनञ्च यद् भवेत्।
पूर्णं भवतु तत् सर्व त्वत् प्रसादान्महेश्वरि॥
ॐ उत्तमे शिखरे देवी भूम्यां पर्वत- मूर्द्धनि।
ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता, गच्छ देवि यथा सुखम्॥
उत्तमे शिखरे इति वामदेवऋषिरनुष्टुप्छन्दः—
गायत्री देवता गायत्री- विसर्जने विनियोगः॥
अनेन यथाशक्ति कृतेन गायत्री- जपाख्येन- -
कर्मणा भगवान् सूर्यनारायणः प्रीयतां न मम॥

भारतीय कतिपय प्रसिद्ध नगरों के सूर्योदयास्त (भा. स्टै. टाईम)

तारीख	वाराणसी उदय	वाराणसी अस्त	बम्बई उदय	बम्बई अस्त	कलकत्ता उदय	कलकत्ता अस्त	गोहाटी उदय	गोहाटी अस्त	जयपुर उदय	जयपुर अस्त	नागपुर उदय	नागपुर अस्त	शिमला, सोलन उदय	शिमला, सोलन अस्त	मद्रास उदय	मद्रास अस्त	धर्मशाला, कांगड़ा उदय	धर्मशाला, कांगड़ा अस्त	जम्मू (कश्मीर) उदय	जम्मू (कश्मीर) अस्त
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि	घं. मि.
जन. १	६।४७	१७।१५	७।१५	१८। ६	६।२०	१६।५६	६।१४	१६।३६	७।१६	१७।४१	६।५४	१७।३९	७।२१	१७।२८	६।३५	१७।५०	७।२८	१७।२८	७।३३	१७।३४
६	६।४९	१७।१९	७।१७	१८।१२	६।२२	१७। ३	६।१४	१६।४२	७।१६	१७।४४	६।५४	१७।४३	७।२२	१७।३२	६।३७	१७।५३	७।२८	१७।३२	७।३४	१७।३७
११	६।४९	१७।२२	७।१८	१८।१५	६।२२	१७। ६	६।१४	१६।४६	७।१९	१७।४८	६।५४	१७।४६	७।२२	१७।३६	६।३८	१७।५६	७।२९	१७।३७	७।३४	१७।४१
१६	६।४९	१७।२६	७।१८	१८।१८	६।२२	१७।१०	६।१४	१६।४९	७।१९	१७।५४	६।५३	१७।४९	७।२१	१७।४१	६।३९	१७।५७	७।२८	१७।४१	७।३३	१७।४६
२१	६।४९	१७।३०	७।१८	१८।२२	६।२२	१७।१३	६।१३	१६।५३	७।१९	१७।५७	६।५३	१७।५२	७।२०	१७।४५	६।३९	१८। १	७।२६	१७।४५	७।३२	१७।५१
२६	६।४७	१७।३३	७।१८	१८।२४	६।२१	१७।१६	६।१३	१६।५७	७।१८	१८। १	६।५३	१७।५५	७।१८	१७।४९	६।३९	१८। ३	७।२४	१७।४९	७।३०	१७।५६
३१	६।४५	१७।३७	७।१७	१८।२८	६।२०	१७।२०	६।१२	१७। १	७।१६	१८। ५	६।५२	१७।५९	७।१६	१७।५४	६।३९	१८। ६	७।२२	१७।५४	७।२७	१८। ०
फर. ५	६।४३	१७।४१	७।१५	१८।३०	६।१८	१७।२३	६। ९	१७। ५	७।१३	१८। ९	६।५२	१८। २	७।१४	१७।५८	६।३८	१८। ८	७।१९	१७।५९	७।२४	१८। ५
१०	६।४०	१७।४४	७।१३	१८।३३	६।१५	१७।२६	६। २	१७। ८	७।१०	१८।१३	६।५१	१८। ५	७।११	१८। २	६।३७	१८।१०	७।१५	१८। ४	७।२०	१८।१०
१५	६।३७	१७।४८	७।११	१८।३५	६।१२	१७।२९	६। ३	१७।१२	७। ६	१८।१६	६।४८	१८। ८	७। ७	१८। ६	६।३५	१८।११	७।११	१८। ८	७।१६	१८।१४
२०	६।३३	१७।५१	७। ८	१८।३७	६। ९	१७।३२	५।५९	१७।१५	७। २	१८।१९	६।४५	१८।१०	७। २	१८।१०	६।३३	१८।१३	७। ६	१८।१२	७।११	१८।१८
२५	६।२९	१७।५४	७। ५	१८।३९	६। ५	१७।३४	५।५५	१७।१८	६।५८	१८।२२	६।४१	१८।१३	६।५६	१८।१४	६।३१	१८।१४	७। ०	१८।१६	७। ५	१८।२२
मार्च २	६।२४	१७।५६	७। १	१८।४१	६। १	१७।३७	५।५०	१७।२१	६।५४	१८।२५	६।३८	१८।१५	६।४९	१८।१८	६।२८	१८।१४	६।५३	१८।२०	७। ०	१८।२६
७	६।२०	१७।५९	६।५८	१८।४३	५।५७	१७।३९	५।४५	१७।२४	६।४९	१८।२८	६।३३	१८।१६	६।४३	१८।२१	६।२५	१८।१५	६।४७	१८।२४	६।५४	१८।२९
१२	६।१५	१८। १	६।५४	१८।४४	५।५२	१७।४१	५।४०	१७।२६	६।४४	१८।३१	६।२९	१८।१८	६।३७	१८।२५	६।२२	१८।१६	६।४०	१८।२९	६।४८	१८।३१
१७	६।१०	१८। ४	६।५०	१८।४५	५।४८	१७।४३	५।३५	१७।२९	६।३८	१८।३३	६।२५	१८।२०	६।३०	१८।२८	६।१९	१८।१६	६।३४	१८।३३	६।४२	१८।३६
२२	६। ५	१८। ६	६।४५	१८।४७	५।४३	१७।४४	५।२९	१७।३१	६।३२	१८।३६	६।२०	१८।२२	६।२४	१८।३१	६।१६	१८।१७	६।२८	१८।३६	६।३६	१८।३९
२७	५।५९	१८। ८	६।४१	१८।४८	५।३८	१७।४६	५।२४	१७।३४	६।२६	१८।३८	६।१५	१८।२३	६।१८	१८।३४	६।१२	१८।१७	६।२१	१८।३९	६।२९	१८।४२
अप्रै. १	५।५४	१८।१०	६।३७	१८।४९	५।३३	१७।४८	५।१८	१७।३६	६।२०	१८।४१	६।११	१८।२५	६।१२	१८।३८	६। ९	१८।१७	६।१५	१८।४२	६।२३	१८।४६
६	५।४९	१८।१३	६।३३	१८।५०	५।२९	१७।५०	५।१३	१७।३८	६।१५	१८।४४	६। ६	१८।२६	६। ६	१८।४१	६। ६	१८।१८	६। ८	१८।४५	६।१७	१८।५०
११	५।४३	१८।१५	६।२९	१८।५१	५।२४	१७।५२	५। ८	१७।४१	६।११	१८।४७	६। २	१८।२८	६। १	१८।४५	६। २	१८।१८	६। २	१८।४९	६।११	१८।५३
१६	५।३९	१८।१७	६।२५	१८।५३	५।२०	१७।५३	५। ३	१७।४३	६। ६	१८।४९	५।५८	१८।२९	५।५५	१८।४८	५।५९	१८।१८	५।५६	१८।५२	६। ५	१८।५६
२१	५।३४	१८।१९	६।२१	१८।५४	५।१५	१७।५५	४।५८	१७।४५	६। १	१८।५१	५।५४	१८।३१	५।४९	१८।५१	५।५७	१८।१९	५।५०	१८।५६	५।५९	१८।५९
२६	५।२९	१८।२२	६।१८	१८।५५	५।१२	१७।५७	४।५४	१७।४८	५।५६	१८।५४	५।५०	१८।३३	५।४४	१८।५४	५।५४	१८।२०	५।४५	१८।५९	५।५३	१९। ३
मई १	५।२५	१८।२४	६।१५	१८।५७	५। ८	१७।५९	४।५०	१७।५०	५।५२	१८।५७	५।४७	१८।३५	५।३९	१८।५८	५।५२	१८।२१	५।४०	१९। २	५।४८	१९। ६
६	५।२२	१८।२७	६।१२	१८।५९	५। ५	१८। २	४।४६	१७।५३	५।४८	१८।५९	५।४४	१८।३७	५।३५	१९। १	५।५०	१८।२२	५।३६	१९। ६	५।४३	१९। ९
११	५।१९	१८।२९	६।१०	१९। ०	५। २	१८। ४	४।४३	१७।५६	५।४५	१९। २	५।४१	१८।३९	५।३१	१९। ४	५।४८	१८।२३	५।३२	१९। ९	५।३९	१९।१३
१६	५।१६	१८।३२	६। ८	१९। २	५। ०	१८। ६	४।४०	१७।५९	५।४२	१९। ५	५।३९	१८।४१	५।२८	१९। ८	५।४७	१८।२४	५।२८	१९।१३	५।३६	१९।१६
२१	५।१४	१८।३५	६। ६	१९। ४	४।५८	१८। ८	४।३८	१८। १	५।३९	१९। ८	५।३७	१८।४३	५।२५	१९।११	५।४६	१८।२५	५।२५	१९।१६	५।३३	१९।१९
२६	५।१२	१८।३७	६। ५	१९। ६	४।५६	१८।११	४।३६	१८। ४	५।३७	१९।११	५।३६	१८।४५	५।२२	१९।१४	५।४५	१८।२७	५।२२	१९।२०	५।३०	१९।२३
३१	५।११	१८।३९	६। ४	१९। ८	४।५५	१८।१३	४।३५	१८। ६	५।३५	१९।१३	५।३५	१८।४७	५।२०	१९।१७	५।४५	१८।२८	५।२०	१९।२३	५।२८	१९।२६
जून ५	५।११	१८।४२	६। ४	१९।१०	४।५५	१८।१५	४।३४	१८। ८	५।३५	१९।१५	५।३५	१८।४८	५।१९	१९।१९	५।४५	१८।३०	५।१९	१९।२५	५।२७	१९।२९
१०	५।११	१८।४४	६। ४	१९।११	४।५५	१८।१७	४।३४	१८।११	५।३५	१९।१८	५।३५	१८।४९	५।१९	१९।२१	५।४५	१८।३१	५।१८	१९।२७	५।२७	१९।३२
१५	५।११	१८।४६	६। ५	१९।१३	४।५५	१८।१८	४।३४	१८।१२	५।३५	१९।२०	५।३५	१८।५१	५।२०	१९।२२	५।४६	१८।३३	५।१९	१९।२९	५।२७	१९।३४
२०	५।१२	१८।४७	६। ६	१९।१४	४।५६	१८।२०	४।३५	१८।१४	५।३६	१९।२१	५।३६	१८।५३	५।२०	१९।२४	५।४७	१८।३४	५।२०	१९।३०	५।२८	१९।३५
२५	५।१३	१८।४८	६। ७	१९।१५	४।५७	१८।२१	४।३६	१८।१५	५।३७	१९।२२	५।३७	१८।५५	५।२१	१९।२६	५।४८	१८।३५	५।२१	१९।३२	५।२९	१९।३६
३०	५।१४	१८।४९	६। ८	१९।१६	४।५८	१८।२१	४।३८	१८।१५	५।३८	१९।२२	५।३९	१८।५६	५।२२	१९।२७	५।४९	१८।३६	५।२२	१९।३४	५।३१	१९।३६

यह सूर्योदयास्त, किरण वक्री संस्कार रहित है, यही धर्म कृत्योपयोगी है, किरण वक्री भवन संस्कार युक्त सूर्योदयास्त पाश्चात्य पचांगों में लिखा जाता है।

भारतीय कतिपय प्रसिद्ध नगरों के सूर्योदयास्त (भा. स्टै. टाईम)

तारीख	वाराणसी		बम्बई		कलकत्ता		गोहाटी		जयपुर		नागपुर		शिमला, सोलन		मद्रास		धर्मशाला, कांगड़ा		जम्मू (कश्मीर)	
	उदय घं.मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं.मि	अस्त घं. मि.	उदय घं.मि	अस्त घं. मि.	उदय मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं. मि.
जुला ५	५।१६	१८।४९	६।१०	१९।१६	५। ०	१८।२२	४।३९	१८।१५	५।४०	१९।२२	५।४०	१८।५६	५।२४	१९।२६	५।५१	१८।३६	५।२४	१९।३५	५।३३	१९।३६
१०	५।१८	१८।४८	६।११	१९।१६	५। २	१८।२१	४।४१	१८।१५	५।४२	१९।२१	५।४२	१८।५६	५।२६	१९।२५	५।५२	१८।३६	५।२७	१९।३४	५।३५	१९।३५
१५	५।२०	१८।४७	६।१३	१९।१६	५। ४	१८।२१	४।४४	१८।१४	५।४५	१९।२०	५।४४	१८।५५	५।२९	१९।२३	५।५३	१८।३६	५।३०	१९।३२	५।३७	१९।३४
२०	५।२३	१८।४६	६।१५	१९।१५	५। ६	१८।१९	४।४६	१८।१२	५।४८	१९।१८	५।४६	१८।५४	५।३१	१९।२१	५।५५	१८।३६	५।३३	१९।२९	५।४०	१९।३२
२५	५।२५	१८।४४	६।१७	१९।१४	५। ८	१८।१८	४।४९	१८।१०	५।५०	१९।१६	५।४८	१८।५२	५।३४	१९।१९	५।५६	१८।३५	५।३६	१९।२६	५।४३	१९।२९
३०	५।२७	१८।४१	६।१८	१९।१२	५।१०	१८।१५	४।५१	१८। ८	५।५३	१९।१३	५।५०	१८।५०	५।३८	१९।१६	५।५७	१८।३४	५।३९	१९।२३	५।४७	१९।२६
अग. ४	५।३०	१८।३८	६।२०	१९।१०	५।१२	१८।१३	४।५३	१८। ५	५।५६	१९।१०	५।५२	१८।४८	५।४१	१९।१२	५।५८	१८।३२	५।४२	१९।१९	५।५०	१९।२२
९	५।३२	१८।३५	६।२२	१९। ७	५।१४	१८।१०	४।५६	१८। १	५।५८	१९। ६	५।५३	१८।४५	५।४४	१९। ७	५।५९	१८।३०	५।४६	१९।१५	५।५३	१९।१७
१४	५।३४	१८।३१	६।२३	१९। ४	५।१६	१८। ६	४।५८	१७।५७	६। १	१९। २	५।५५	१८।४२	५।४७	१९। २	६। ०	१८।२८	५।४९	१९।१०	५।५६	१९।१२
१९	५।३६	१८।२७	६।२४	१९। १	५।१८	१८। २	५। १	१७।५३	६। ३	१८।५७	५।५७	१८।३८	५।५०	१८।५७	६। ०	१८।२५	५।५२	१९। ४	६। ०	१९। ६
२४	५।३९	१८।२२	६।२६	१८।५७	५।२०	१७।५८	५। ३	१७।४८	६। ५	१८।५३	५।५८	१८।३४	५।५३	१८।५२	६। १	१८।२२	५।५५	१८।५८	६। ३	१९। १
२९	५।४१	१८।१७	६।२७	१८।५३	५।२१	१७।५४	५। ५	१७।४३	६। ७	१८।४८	६। ०	१८।३०	५।५६	१८।४६	६। १	१८।१९	५।५९	१८।५१	६। ६	१८।५६
सित ३	५।४३	१८।१२	६।२७	१८।४९	५।२३	१७।४९	५। ७	१७।३८	६। ९	१८।४२	६। १	१८।२५	५।५८	१८।४०	६। १	१८।१५	६। २	१८।४५	६। ९	१८।५०
८	५।४४	१८। ७	६।२८	१८।४५	५।२४	१७।४४	५। ९	१७।३३	६।१२	१८।३७	६। २	१८।२१	६। १	१८।३४	६। १	१८।१३	६। ६	१८।३८	६।१२	१८।४३
१३	५।४६	१८। २	६।२९	१८।४१	५।२६	१७।४०	५।११	१७।२७	६।१४	१८।३१	६। ३	१८।१६	६। ४	१८।२८	६। १	१८। ९	६। ९	१८।३२	६।१५	१८।३७
१८	५।४८	१७।५६	६।३०	१८।३६	५।२७	१७।३४	५।१३	१७।२२	६।१७	१८।२६	६। ५	१८।११	६। ७	१८।२२	६। १	१८। ५	६।१२	१८।२५	६।१८	१८।३०
२३	५।५०	१७।५१	६।३१	१८।३२	५।२९	१७।२९	५।१५	१७।१६	६।१८	१८।२०	६। ६	१८। ७	६।१०	१८।१५	६। १	१८। २	६।१५	१८।१९	६।२१	१८।२४
२८	५।५२	१७।४६	६।३२	१८।२७	५।३०	१७।२५	५।१७	१७।११	६।२०	१८।१४	६। ७	१८। २	६।१४	१८। ८	६। २	१७।५८	६।१८	१८।१२	६।२४	१८।१७
अक्टू ३	५।५४	१७।४०	६।३३	१८।२३	५।३२	१७।२०	५।२०	१७। ५	६।२३	१८। ९	६। ९	१७।५७	६।१७	१८। १	६। २	१७।५५	६।२२	१८। ५	६।२८	१८।११
८	५।५६	१७।३५	६।३४	१८।१९	५।३४	१७।१५	५।२२	१७। ०	६।२६	१८। ४	६।१०	१७।५३	६।२१	१७।५५	६। २	१७।५२	६।२५	१७।५८	६।३१	१८। ५
१३	५।५९	१७।३०	६।३५	१८।१५	५।३५	१७।१०	५।२४	१६।५५	६।२८	१७।५८	६।१२	१७।४८	६।२४	१७।५०	६। ३	१७।४८	६।२९	१७।५२	६।३४	१७।५९
१८	६। १	१७।२५	६।३७	१८।११	५।३७	१७। ६	५।२७	१६।५०	६।३१	१७।५३	६।१३	१७।४४	६।२८	१७।४४	६। ३	१७।४६	६।३२	१७।४६	६।३७	१७।५३
२३	६। ४	१७।२१	६।३९	१८। ८	५।४०	१७। २	५।३०	१६।४५	६।३४	१७।४९	६।१६	१७।४१	६।३१	१७।३९	६। ४	१७।४३	६।३६	१७।४१	६।४१	१७।४८
२८	६। ७	१७।१७	६।४०	१८। ५	५।४२	१६।५९	५।३३	१६।४१	६।३७	१७।४४	६।१८	१७।३७	६।३५	१७।३४	६। ५	१७।४१	६।४०	१७।३६	६।४५	१७।४३
नवं. २	६।१०	१७।१४	६।४२	१८। २	५।४५	१६।५६	५।३६	१६।३८	६।४०	१७।४०	६।२०	१७।३४	६।३९	१७।३०	६। ६	१७।३९	६।४४	१७।३२	६।४९	१७।३८
७	६।१३	१७।१०	६।४५	१८। ०	५।४८	१६।५३	५।३९	१६।३४	६।४३	१७।३७	६।२३	१७।३२	६।४४	१७।२६	६। ८	१७।३८	६।४९	१७।२९	६।५३	१७।३४
१२	६।१६	१७। ८	६।४७	१७।५८	५।५१	१६।५१	५।४३	१६।३२	६।४७	१७।३४	६।२६	१७।३०	६।४८	१७।२३	६।१०	१७।३६	६।५३	१७।२५	६।५८	१७।३०
१७	६।२०	१७। ६	६।५०	१७।५७	५।५४	१६।४९	५।४६	१६।३०	६।५१	१७।३२	६।२९	१७।२९	६।५२	१७।२०	६।१२	१७।३६	६।५७	१७।२२	७। ३	१७।२७
२२	६।२३	१७। ५	६।५३	१७।५७	५।५७	१६।४८	५।५०	१६।२९	६।५५	१७।३१	६।३२	१७।२८	६।५६	१७।१८	६।१४	१७।३६	७। २	१७।१९	७। ८	१७।२५
२७	६।२७	१७। ४	६।५६	१७।५७	६। १	१६।४८	५।५४	१६।२८	६।५९	१७।३१	६।३५	१७।२७	७। ०	१७।१७	६।१७	१७।३६	७। ६	१७।१७	७।१२	१७।२४
दिसं २	६।३१	१७। ४	६।५९	१७।५७	६। ४	१६।४८	५।५७	१६।२७	७। २	१७।३१	६।३८	१७।२८	७। ३	१७।१६	६।१९	१७।३७	७।१०	१७।१६	७।१६	१७।२४
७	६।३४	१७। ४	७। २	१७।५८	६। ७	१६।४८	६। १	१६।२८	७। ६	१७।३१	६।४१	१७।२८	७। ७	१७।१६	६।२२	१७।३८	७।१३	१७।१६	७।२०	१७।२४
१२	[illegible]	१७। ५	७। ५	१७।५९	६।१०	१६।५०	६। ४	१६।२९	७। ९	१७।३२	६।४५	१७।३०	७।११	१७।१७	६।२५	१७।४०	७।१६	१७।१७	७।२३	१७।२५
१७	६।४१	१७। ७	७। ८	१८। १	६।१३	१६।५१	६। ७	१६।३१	७।१२	१७।३४	६।४८	१७।३२	७।१४	१७।१८	६।२८	१७।४२	७।१९	१७।१८	७।२६	१७।२६
२२	६।४३	१७। ९	७।११	१८। ३	६।१६	१६।५४	६।१०	१६।३२	७।१५	१७।३६	६।५०	१७।३४	७।१७	१७।२०	६।३०	१७।४४	७।२२	१७।२०	७।२९	१७।२८
२७	६।४५	१७।१२	७।१३	१८। ६	६।१८	१६।५६	६।१२	१६।३५	७।१७	१७।३८	६।५२	१७।३६	७।१९	१७।२३	६।३२	१७।४७	७।२५	१७।२३	७।३१	१७।३१
३१	६।४७	१७।१४	७।१४	१८। ८	६।२०	१६।५८	६।१४	१६।३८	७।१९	१७।४०	६।५३	१७।३८	७।२१	१७।२७	६।३४	१७।५०	७।२७	१७।२७	७।३३	१७।३४

यह सूर्योदयास्त, किरण वक्री यवन संस्कार रहित है, यही धर्म कृत्योपयोगी है, किरण वक्री यवन संस्कार युक्त सूर्योदयास्त पाश्चात्य पंचांगों में लिखा जाता है।

हर्शल का संक्षिप्त फल—विचार

सूर्य की एक प्रदक्षिण करने में इस ग्रह को लगभग ८४ वर्ष लगते है, अर्थात् यह एक राशि में लगभग ७ वर्ष तक रहता है। यह ग्रह शनि से अत्यन्त खल बलिष्ठ तमोगुणी अशुभ ग्रह है। आकस्मिक घटना तथा रोगोत्पादक विलक्षण प्रकृति का वियोग और स्थान त्याग प्रिय है। वर्तमान समय इस जगत् में मोटर, रेलवे, तार, बिजली, टेलीफोन आदि यन्त्रों का शोध तथा नित्य प्रयोग में और वायुप्रकोप सम्बन्धी इन्फ्लूएंजा आदि रोगों से तथा सुधारप्रिय देशों में स्त्री, पति, माता, पिता, बन्धु आदि के त्याग से सिद्ध होता है कि इस ग्रह का प्रभाव जगत् के मनुष्य प्राणी पर पड़ने लगा है। इस ग्रह की कुम्भ राशि है। इसका आशय यह नहीं है कि शनि कुम्भ का स्वामी नहीं, प्रत्युत जैसे वृषभ और तुला का स्वामी शुक्र होता है, फिर भी वृषभ राशि का राहु स्वगृही माना जाता है, इसी प्रकार कुम्भ में हर्शल हो तो स्वगृही माना जाता है। यह वायुवेग-प्रिय ग्रह है। जिस पुरुष की कुण्डली में चन्द्र हर्शल से युक्त और स्त्री की कुण्डली में रवि हर्शल से युक्त हो अथवा केन्द्र तथा प्रतियोग करता हो तो ऐसे पुरुष या स्त्री को पूर्ण दाम्पत्य सुख नहीं होता। एवम् पाँचवें सातवें स्थान में हर्शल हो तो उस पुरुष और स्त्री की चित्तवृत्ति को चंचल करता है।

राशि विचार—हर्शल मिथुन, तुला और कुम्भ राशि में अत्यन्त बलवान् समझा जाता है। मेष और वृश्चिक राशि में अत्यन्त घातक फल देता है।

भाव विचार—यह ग्रह ५-९-१०-११वें स्थान में शुभ और अन्य स्थानों में अशुभ माना गया है। लग्न में हर्शल हो तो मनुष्य विलक्षण स्वभाव का होगा। किन्तु मिथुन, तुला, कुम्भ राशि का हो तो तीव्र बुद्धि और शोधक होगा। द्वितीय भाव में हो तो कौटुम्बिक सुख के लिए प्रतिकूल और अशुभ राशि का हो तो द्रव्य-हानि। तृतीय भाव में भ्रातृ सुख विघातक, सदा स्थानान्तर, यान्त्रिक वाहन से प्रवास योग। चतुर्थ भाव में आप्तवर्गों से शत्रुत्व, आयुष्य के अन्त समय में द्रव्य-हानि, भूमि-सम्बन्धी कलह। पंचम भाव में सन्तति-प्रतिबन्ध अथवा नाश, सन्तति सुख का अभाव। षष्ठ भाव में मातुलसुख का अभाव, रोग वृद्धि। सप्तम भाव में वैवाहिक जीवन दाम्पत्य सुख का नाश, परराष्ट्र सम्बन्ध। अष्टम भाव में आकस्मिक मृत्यु। नवम भाव में धार्मिक संस्था से सम्बन्ध, शास्त्रीय शोध में रुचि। दशम भाव में अधिकारी वर्ग से सम्बन्ध। ग्यारहवें भाव में कायदे कौंसिल देशी संस्था आदि से सम्बन्ध। बारहवें भाव में द्रव्य हानि, ऋण-योग, शत्रु के कारण कष्ट।

नेपच्यून का संक्षिप्त फल—विचार

सूर्य की प्रदक्षिणा करने में इस ग्रह को लगभग १६५ वर्ष का समय लगता है, अर्थात् एक राशि में लगभग १३,३/४ वर्ष तक रहता है। यह जल राशि ग्रह है। अर्थात् मीन इसकी राशि है। इसका आशय यह नहीं है कि मीन राशि का स्वामी बृहस्पति नहीं है, प्रत्युत मेष और वृश्चिक का स्वामी मंगल होते हुए भी जैसे वृश्चिक का केतु स्वराशि का समझा जाता है वैसे ही मीन का नेपच्यून स्वगृही माना जाता है। इसका अर्थ, धर्म गुरु चन्द्रमा के समान शुभ है। जल में रंग मिलने से जिस प्रकार जल का रंग बदल जाता है—उसी प्रकार नेपच्यून से जो ग्रह युक्त होगा, वैसे ही वह फल देता है। इसका प्रभाव रुधिराभिसरण में अधिक होता है। यह ग्रह १-५-९वें स्थान में सत्वप्रधान, २-४-६-८-१२वें तम प्रधान, ३-७ ०-११वें स्थान में रज प्रधान समझा जाता है। किन्तु यदि अशुभ स्थान और राशि में हो तो मनुष्य का स्वभाव पापवृत्ति की ओर होता है। इस ग्रह को ११-७-३-४-१२ इस क्रम से राशि प्रियतर हैं। शेष राशियाँ अप्रिय हैं। यह ग्रह १-३-५-९-११वें स्थान में कर्क, वृश्चिक, मीन, मिथुन, तुला राशि में स्थित हो तो ऊँचा फल मिलना निश्चित है।

भावफल—लग्न में नेपच्यून हो तो जल प्रवासी, गौरवपूर्ण, निद्रारोगी। दूसरे भाव में हो तो साम्पत्तिक-हानि, कुटुम्ब-हानि। तीसरे भाव में १-३-५-९-११वें स्थान के स्वामी शुभ योग करता हो तो प्रवास से लाभ, मानसिक उत्कर्ष। चतुर्थ भाव में माता को कष्ट, सांपत्न मातृ योग, पापग्रह से युक्त हो तो कारावास, कृषि में हानि। पंचम भाव में पंचमेश और गुरु से युक्त हो तो पुत्र सन्तति, पंचमेश और शुक्र से युक्त हो तो कन्या सन्तति, शुक्र से अशुभ योग करता हो तो व्यभिचार वृत्ति। छठे भाव में र. चं. से युक्त या दृष्ट हो तो मूत्राशय रोग, अतिसार, संग्रहणी, विश्वासघात। ७वें भाव में सुन्दर रूप और स्वभाव की स्त्री का लाभ, स्त्री राशि या स्त्री ग्रह से युक्त हो तो स्त्री से लाभ, पापग्रह से पीड़ित हो तो स्त्री कष्ट, श. मं. रा. से युक्त और दृष्ट हो तो अत्यन्त अशुभ। अष्टम भाव में शुभ ग्रह से युक्त हो तो आकस्मिक लाभ पाप ग्रह से युक्त और दृष्ट हो तो गुह्य भाग में विकार, राजदरबार में हानि। नवम् भाव में चर राशि का हो तो प्रवासी। दशम भाव में हो तो पिता को कष्ट व्यापार में हानि। ग्यारहवें भाव में हो तो मित्र, जामाता, बन्धु लाभ, आदि विचार करे। बारहवें भाव में चन्द्र से युक्त हो तो जहाज में नौकरी का योग, मंगल से युक्त हो तो अस्पताल सम्बन्धी नौकरी, शनि से युक्त हो तो गुप्त विभाग की नौकरी। यह ग्रह हर्शल से अधिक सामर्थ्यवान् है। संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया गया है। इस भाव की राशि, स्वामी, ग्रह-दृष्टि ग्रहपूर्ति आदि का शुभाशुभ विचार कर फलादेश कहना चाहिए।

मंगली योग परिहार—यदि कन्या की जन्मकुण्डली में १-४-७-१२वें घर में मंगल हो और केन्द्र त्रिकोण (१-४-५-७-९-१०) में बृहस्पति हो तो मंगलीदोष न होकर वह कन्या सुख सौभाग्य सम्पन्न रहती है। यथा—

"वाचस्पतौ नवमपंचमकेन्द्र-संस्थे, जाताऽङ्गना भवति पूर्ण-विभूतियुक्ता।
साध्वी सुपुत्रजननी सुखिनी गुणाढ्या, सप्ताष्टके यदि भवेदशुभग्रहोऽपि॥"

विदेश और द्वीपान्तरों के अक्षांशादि

नगर देश नाम	अक्षांश अं. क.	ग्रीनविच से रेखांश अं. क.	दिल्ली से देशान्तर घं. मि.
अदन (एडन बन्दर)	उ. १२।४५	पू. ४५।१०	—२।१९
अर्जेण्टाइना (द. अमे.)	द. ३६।१२	प. ६४।४५	—९।२८
आस्ट्रेलिया दक्षि०	द. ३२।०	पू. १३८।१७	+४।३६
काबुल (अफगानिस्तान)	उ. ३४।३०	पू. ६९।१७	—०।३२
कोलम्बो (सीलोन लंका)	उ. ७।११	पू. ८०।१२	+०।१३
कांगो (प. अफ्रीका)	द. ६।०	पू. १५।५०	—४।६
काहिरा (मिश्र)	उ. ३०।२	पू. ३१।१५	—३।४
क्वेटा (बिलोचिस्तान)	उ. ३०।१३	पू. ६७।१	—०।४१
ग्रीनविच (यूरोप)	उ. ५१।२०	०।०	—५।९
जेनेवा (स्विट्जर. यू०)	उ. ४६।१२	पू. ६।७	—४।४५
जेरुसलम (इजरा०)	उ. ३१।४६	पू. ३५।१४	—२।४८
ट्रांसवाल (द. अफ्रीका)	द. २५।०	पू. २९।०	—३।१३
ट्रिपोली (उ. अफ्रीका)	उ. ३२।४५	पू. १३।१५	—४।१६
टोकियो (जापान)	उ. ३५।४२	पू. १३९।४५	+४।१०
तेहरान (ईरान)	उ. ३५।४१	पू. ५१।२५	—१।४३
न्यूयार्क (अमेरिका)	उ. ४०।४३	प. ७४।०	—१०।५
नाईरोबी (पू० अफ्रीका)	द. १।२०	पू. ३६।४९	—२।४२
पेरिस (फ्रांस)	उ. ४८।५०	पू. २।२०	—५।०
पीकिंग (चीन)	उ. ३९।५५	पू. ११६।२४	+२।३७
बर्लिन (जर्मनी)	उ. ५२।३२	पू. १३।२५	—४।१५
बल्गारिया (यूरोप)	उ. ४३।१८	पू. २६।१७	—३।२४
बगदाद (इराक)	उ. ३३।१८	पू. ४४।२७	२।११
मक्का (अरब)	उ. २१।२१	पू. ४०।१२	—२।२८
मास्को (रूस)	उ. ५५।४५	पू. ३७।३०	—२।१९
माण्डले (ब्रह्मा)	उ. २२।०	पू. ९६।८	+१।१६
रोम (इटली)	उ. ४१।५५	पू. १२।२८	—४।१९
लंदन (इंग्लैंड)	उ. ५१।३०	प. ०।५	—५।९
ल्हासा (तिब्बत)	उ. २९।४०	पू. ९१।५	+०।५५
वाशिंगटन (अमेरिका)	उ. ३८।५५	प. ७७।४	—१०।१५
सिंगापुर (मलाया)	उ. १।१९	पू. १०३।४५	+१।४५
हांगकांग (चीन)	उ. २२।०	पू. ११४।११	+२।२७

रवि क्रांति

तारीख	जन० द०		फरव० द०		मार्च द०		अप्रेल उ०		मई उ०		जून उ०		जुलाई उ०		अगस्त उ०		सित० उ०		अक्टु० द०		नवम्बर द०		दिस० द०	
	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
१	२३	४	१७	१०	७	५२	४	२१	१४	५६	२१	५९	२३	९	१८	९	८	२८	२	५९	१४	१६	२१	४३
२	२२	५९	१७	१	७	२९	४	४४	१५	१४	२२	७	२३	५	१७	५४	८	७	३	२२	१४	३६	२१	५३
३	२२	५४	१६	४४	७	६	५	७	१५	३२	२२	१५	२३	१	१७	३९	७	४५	३	४६	१४	५५	२२	१
४	२२	४८	१६	२६	६	४३	५	३०	१५	४९	२२	२२	२२	५६	१७	२३	७	२३	४	९	१५	१३	२२	१०
५	२२	४२	१६	९	६	२०	५	५३	१६	७	२२	२९	२२	५१	१७	७	७	१	४	३२	१५	३२	२२	१८
६	२२	३२	१५	५०	५	५७	६	१६	१६	२४	२२	३६	२२	४५	१६	५१	६	३८	४	५५	१५	५०	२२	२६
७	२२	२८	१५	३२	५	३४	६	३८	१६	४१	२२	४२	२२	३९	१६	३४	६	१६	५	१८	१६	८	२२	३३
८	२२	२१	१५	१३	५	११	७	१	१६	५७	२२	४७	२२	३३	१६	१८	५	५४	५	४१	१६	२६	२२	४०
९	२२	१३	१४	५४	४	४७	७	२३	१७	१३	२२	५३	२२	२६	१६	१	५	३१	६	४	१६	४३	२२	४६
१०	२२	५	१४	३५	४	२४	७	४६	१७	३०	२२	५७	२२	१९	१५	४३	५	८	६	२७	१७	१	२२	५२
११	२१	५६	१४	१६	४	०	८	८	१७	४५	२३	३	२२	११	१५	२६	४	४७	६	५०	१७	१७	२२	५८
१२	२१	४६	१३	५६	३	३७	८	३०	१८	१	२३	७	२२	३	१५	९	४	२४	७	१२	१७	३४	२३	३
१३	२१	३७	१३	३६	३	१३	८	५२	१८	१६	२३	११	२१	५५	१४	५०	४	१	७	३५	१७	५०	२३	७
१४	२१	३७	१३	१६	२	५०	९	१४	१८	३०	२३	१४	२१	४६	१४	३२	३	३८	७	५७	१८	५	२३	११
१५	२१	१६	१२	५६	२	२६	९	३५	१८	४४	२३	१७	२१	३७	१४	१३	३	१५	८	२०	१८	२२	२३	१५
१६	२१	५	१२	३५	२	२	९	५७	१८	५८	२३	२०	२१	२७	१३	५५	२	५२	८	४२	१८	३७	२३	१८
१७	२०	५४	१२	१४	१	३८	१०	१८	१९	१२	२३	२२	२१	१७	१३	३६	२	२८	९	४	१८	५२	२३	२०
१८	२०	४२	११	५३	१	५	१०	३९	१९	२६	२३	२४	२१	७	१३	१६	२	४	९	२५	१९	७	२३	२३
१९	२०	३०	११	३२	०	५८	११	०	१९	३९	२३	२५	२०	५८	१२	५७	१	४	९	४७	१९	२०	२३	२४
२०	२०	१७	११	११	०	३४	११	२१	१९	५२	२३	२६	२०	४७	१२	३६	१	१८	१०	९	१९	३४	२३	२५
२१	२०	५	१०	४९	०	१०	११	४१	२०	४	२३	२७	२०	३५	१२	१८	०	५६	१०	३०	१९	४८	२३	२६
२२	१९	५१	१०	२८	उ	१४	१२	२	२०	१७	२३	२७	२०	२४	११	५८	०	३२	१०	४१	२०	१	२३	२७
२३	१९	३८	१०	६	०	३७	१२	२२	२०	२७	२३	२७	२०	१२	११	३८	०	९	११	१३	२०	१४	२३	२७
२४	१९	२४	९	४४	१	१	१२	४१	२०	४०	२३	२६	२०	०	११	१७	०	१५	११	३४	२०	२७	२३	२६
२५	१९	८	९	२२	१	२५	१३	२	२०	५१	२३	२५	१९	४७	१०	५७	०	३९	११	५६	२०	३९	२३	२५
२६	१८	५४	९	०	१	४८	१३	२१	२१	२	२३	२३	१९	३४	१०	३६	१	२	१२	१६	२०	५१	२३	२३
२७	१८	३९	८	३८	२	१२	१३	४१	२१	१२	२३	२१	१९	२०	१०	१५	१	२६	१२	३७	२१	२	२३	२१
२८	१८	२३	८	१५	२	४५	१४	३	२१	२२	२३	१९	१९	६	९	५४	१	४९	१२	५७	२१	१३	२३	१९
२९	१८	७	८	४	३	१५	१४	१९	२१	३२	२३	१६	१८	५३	९	३३	२	१२	१३	१७	२१	२४	२३	१६
३०	१७	५१	०	०	३	४२	१४	३७	२१	४१	२३	१३	१८	३८	९	१२	२	३६	१३	३७	२१	३४	२३	१२
३१	१७	३५	०	०	३	४६	०	०	२१	५०	०	०	१८	२४	८	५०	०	०	१३	५७	०	०	२३	९

तपःपूत सिद्ध महात्मा का बताया हुआ असाध्य अबुर्द रोग –

कैंसर निवारन का सिद्ध प्रयोग!

विश्व मे भारत ही एकमात्र धर्मप्रधान ऐसा विशाल देश है जहाँ अभी भी कही बीहड जंगलों, गिरि गुहाओं मे श्रद्धालु साधक सज्जनों को कभी भाग्यवशात, शिव-स्वरूप दिगम्बर महात्मा के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हो जाता है, वे महापुरुष दर्शनार्थी श्रद्धालु भक्त को लोक कल्याणार्थ कुछ सिद्ध प्रयोग (दिव्य औषधियाँ) बता देते और उस दिव्य औषधि से किसी प्रकार का द्रव्योपार्जन एवं ख्याति प्राप्ति पर प्रतिबन्ध लगा देते हैं। ऐसे महात्मा स्वयं सर्वथा लोभ मोह से निर्लेप एकान्त गुप्त रूप मे रहते है, अपना नाम धाम किसी को नही बताते। श्रद्धालु भक्त को प्रयत्न करने पर भी दुबारा उनके दर्शन नही हो पाते। ऐसे ऋषि कल्प परोपकारी महात्मा के बताये प्रसाद रूप अनुभव सिद्ध प्रयोग हम पंचांग पाठको के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। ज्योतिष्मती के एक सदाचारी परम श्रद्धालु उपासक आध्यात्मिक स्नेही लेखक पर एक सिद्ध महापुरुष ने कृपाकर दो सिद्ध प्रयोग बताये थे उन्होंने लोक कल्याणार्थ पञ्चांग मे प्रकाशनार्थ मेरे पास लिख भेजे, परन्तु अपना नाम पता न छापने का अनुरोध किया अतः उनका नाम भी यहाँ नही दे रहा हूँ।

कैंसर रोग की रामवाण दवा

सदाचार एवं देवगुरु भक्ति के लोप तथा खानपान दूषित हो जाने से भारत मे कैंसर रोग बढ़ रहा है, यह प्राण लेवा महा भयंकर व्याधि है। लाखो रुपया व्यय करने पर भी इस रोग से मुक्ति नहीं मिलती कुछ समय मे रोगी को मृत्यु का ग्रास बनना पड़ता है। महात्मा प्रदत्त इस दिव्य औषधि द्वारा - रोग से छुटकारा हो जाता है। महात्मा जी का आदेश है कि रोग ग्रस्त प्राणी को स्टील के बर्तन में भोजन दुग्ध या जलपान नही करना चाहिये। भोजन पीतल या काँसे के बर्तन में करें, जलपान ताम्र पात्र या पीतल के बर्तन मे करे। काष्ठ पत्थर व मिट्टी के पात्र तथा तुम्बी से जलपान कर सकते है। स्टील के बर्तन में कोई भी गरम पदार्थ कदापि सेवन न करें। औषधि सेवन काल मे रोगी पञ्चगव्य का सेवन करे और गाय के गोबर से लिपे स्थान मे शयन करें। किसी भी मादक तीक्ष्ण पदार्थ का सेवन न करे। साथ ही नित्य सोते उठते बैठते अपने इष्ट मन्त्र अथवा त्र्यक्षरी लघु मृत्युञ्जय या पञ्चाक्षरी महामन्त्र का जप रोगी करता रहे तो अशातीत लाभ-होगा।

दिव्य औषधि यह है–

शुक्ल पक्ष मे सोमवार को निम्ब (नीम) कीकर (बबूल) और आक(मदार) इन तीनों वृक्षों की जड खोदकर लावें और मिट्टी साफकर कपड़े से पोंछकर छिलके समेत रख लेवें। प्रत्येक वृक्ष की जड़ का वजन पाव-पाव भर (२५०ग्रा.) तीनों का तीन पाव (७५० ग्रा.) हो। जड़ो के छोटे-छोटे टुकड़े आधे पौने इंच के करके रख लेवें। फिर किसी पीतल के बड़े भगोने या देगची में ५ लीटर के लगभग कुँए का जल (यदि गंगा जल या किसी पवित्र स्रोत झरने का जल मिल जावे तो सर्वोत्तम) लेवें। स्थानीय नल या हैंड पम्प का जल न लेवें। इस जल मे उपर्युक्त तीनों वृक्षों की कटी हुई जड़ें डाल दें और बर्तन चूल्हे पर रख देवें। कण्डे या लकड़ी की मन्द-मन्द अग्नि से पकावें, जब करीब तीन पाव (७५० ग्रा.) क्वाथ बच जावें तब बर्तन को नीचे उतार लेवें। ठंडा होने पर किसी साफ बोतल मे रख लेवें।

सेवन विधि : प्रथम दिन प्रातः खाली पेट दवा बोतल का एक ढक्कन या एक छोटा चम्मच भरकर रोगी को भगवान आशुतोष धन्वन्तरि का ध्यान करके पिलावें। तत्काल दूध या चाय आदि कुछ न देवें। मुंह साफ करने के लिए चाहे तो कुल्ला कर सकते हैं पर पानी बिल्कुल न पीवें। दूसरे दिन से प्रातः खाली पेट दो-दो चम्मच या ढक्कन भरकर दवा लेते रहें। एक मास (३० दिन तक) इस दवा का नित्य नियमित सेवन करना है। प्रथम दिन दवा सेवन के बाद किसी रोगी को वमन होने लगती या जी मिचलाने लगता है, इससे डरे नहीं। १०-१५ मिनट बाद जी मिचलाना बन्द हो जावेगा। भोजन दो घण्टे बाद करना चाहिए।

परहेज : खाने पीने मे कोई प्रतिबन्ध नहीं, परन्तु हल्का एवं सुपाच्य भोजन ही करना है। दूसरे दिन से ही रोग जन्य पीड़ा (चटका चलना, दर्द) निश्चित कम होने लगेगी।

नोट : रिक्तातिथि अमावस्या शनि मंगल वार को छोड़कर रोगी का चन्द्रबल देखकर दवा प्रारम्भ करने से शीघ्र लाभ होगा और रोग समूल नष्ट हो जावेगा। यह महाव्याधि ऐसी है कि शल्य चिकित्सक की थोड़ी सी असावधानी या प्रारब्ध कर्मवश यदि एक भी सैल (रोगाणु) शरीर मे बच गया तो फिर यह रोग कुछ दिन मे बढ़ जाता है और दोबारा शल्य चिकित्सा कराने के अलावा कोई उपाय शेष नही रहता।

मधुमेह (डायविटीज) की अनुपम औषधि

इस रोग की जननी डालडा, चाय और चीनी है। आजकल तो फलों को भी कैल्सियम कार्बाइड से पकाने लगे है। मधुमेह रोगी के लिए एक बहुत ही उपयोगी दवा यह है कि रोगी को प्रातः सूर्योदय से पहले उठकर नित्य १०-१५ मिनट हरी दूब पर घूमना चाहिए तथा प्रातः सायं भोजन से पहले हाथ पांव ठण्डे पानी से धोकर ही भोजन करें। योगासनों में मयूरासन इस रोग में लाभकारी है। औषधि में गोखरु, असगन्ध, सफेद मूसली का चूर्ण सम भाग मिश्री मिलाकर रात्रि में भोजनोपरान्त दूध से लेवें। १५-२० दिन के सेवन से लाभ होना निश्चित है, अनुभूत है। चाय, चीनी, गुड़, तेल, गरम मसालों का सेवन न करें।

पति पत्नी वशीकरण मन्त्र

भारत कल्याण मंच बम्बई के महामन्त्री श्री द्वारिका प्रसाद जी पाटोदिया को भी एक सिद्ध महापुरुष ने पति-पत्नी में परस्पर वैमनस्य निवारण कर स्नेह स्थापित करने का एक अनुभव सिद्ध मन्त्र कृपा करके बताया वह जनकल्याणार्थ यहाँ प्रस्तुत है। मन्त्र यह है :–

"ॐ ह्रीं अमुकं मे वशमानय आकर्षय आकर्षय स्वाहा"॥

यह जप पुष्य नक्षत्र में प्रारम्भ करें और अमुकं के स्थान में पति या पत्नी का नाम उच्चारण करें, जैसे किसी के पति का नाम रामलाल है तो उसे अनुकूल बनाने के लिए महिला को मन्त्र का आरम्भ– **"ॐ ह्रीं रामलालं मे वशमानय आकर्षय आकर्षय स्वाहा"**। इस प्रकार जपना चाहिए। पत्नी को अनुकूल बनाना हो तो पत्नी का नाम जोड़ देवें। अपने घर के पूजागृह में शुद्धासन पर बैठ कर भगवती या अपने इष्ट देव की मूर्ति अथवा चित्र के सामने धूप-दीप प्रज्वलित कर के जप प्रारम्भ करें। सवा लक्ष जप ६ मास में पूर्ण करें। अपने आसन के नीचे उस व्यक्ति का (जिसे अनुकूल बनाना है उसका) कोई वस्त्र बनियान, कुर्ता आदि रख लेवें अवश्य कार्य सिद्ध होगा।

"महाविद्या श्री बगलामुखी के बीजमन्त्र का वैज्ञानिक विवेचन"

लै. "कापालिक"

रहस्य विद्याओं के क्षेत्र में भारत प्राचीनकाल से ही विश्वगुरु रहा है। विश्वव्यापि समस्त राष्ट्रों का सिरमौर यानि कि शिरोमणि। यह अपने मुँह मियां मिट्ठू बनने वाली बात नहीं है। विश्व के प्राचीन-अर्वाचीन मानव सभ्यता-संस्कृति के सभी प्रख्यात एवं प्रकाण्ड ऐतिहासिक विद्वानों व पुरातात्विक-पण्डितों ने परमात्मा की दिव्यवाणी हमारे धर्मग्रन्थ वेदों को एकमत से मानव सभ्यता एवं संस्कृति का आदि ग्रन्थ स्वीकार किया है जो कि रहस्य विद्याओं के भण्डार है। अनमोल खजाना है। इसमें संशय भी नहीं है। निगम यानिकि वेदों की तरह ही निगम नि:सृत आगम (निगमात् आगतेति आगम) भी रहस्य विद्या के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण विशेष स्थान रखते हैं। सार संक्षेप में यह कहना अत्युक्ति नहीं होगा कि निगम और आगम दोनों के ग्रन्थों में रहस्य विद्याओं से सम्बन्धित चमत्कारी मन्त्रों का भरपूर भण्डार भरा पड़ा है।

यहाँ पर हमारा उद्देश्य मंत्र की परिभाषा करना और उनकी शक्ति सामर्थ्य की चर्चा करना नहीं है। मंत्र के स्वरूप एवं शक्ति सामर्थ्य के विषय में तो सिर्फ भारतीय ही नहीं विश्वव्यापि साहित्य का वाङ्मय भरा पड़ा है। परन्तु पिछले वर्षों में वि० सं० २०४२ के श्रीविश्व विजय पञ्चांग में पृ० संख्या १२९-३० एवं वि० सं० २०४३ के उसी पञ्चांग की पृ० संख्या १३७-१३८-१३९ पर इस शोध पत्र के चतुर्थ विभाग (४) मन्त्रराज का स्वरूप शीर्षक के अन्तर्गत हम इसका संक्षिप्त विवरण दे ही चुके है। फिर भी बीजमन्त्र के स्वरूप के विषय में भी हम अपने तन्त्र-मन्त्र प्रेमी पाठकों को यहाँ कुछ सामान्य जानकारी करा देना उचित समझते है जो अग्रांकित है।

उदाहरण स्वरूप जिस तरह पीपल और बड़ (वट) के वृक्षों का विशालाकार उनके छोटे-छोटे बीजों में समाया रहता है, उसी तरह अण्ड में ब्रह्माण्ड एवं सूक्ष्म में विराट भाव भी सन्निहित रहता है। यह तो हम सभी जानते है कि मन्त्र शब्दों से बनते हैं और शब्द का निर्माण अक्षरों से होता है। मन्त्र एक अक्षर से लेकर अयुत अक्षरों (दस हजार) तक के होते है। मन्त्र को देवता का सूक्ष्म रूप माना जाता है। अक्षरों की संख्या को लेकर मन्त्रों का वर्गीकरण एवं उनकी संज्ञाएँ यानिकि नाम भी विभिन्न प्रकार के है। फिर भी देवता के सूक्ष्म शरीर रूपी मन्त्रों में बीजमन्त्र सबसे अधिक प्रभावशाली और शक्ति सम्पन्न होता है। एक अक्षर से बनने वाले एकाक्षरी मन्त्र को ही बीजमन्त्र कहा जाता है और उनका एकाक्षरी होना ही उन्हें विशेष शक्तिशाली बनाता है। वैज्ञानिक नियमानुसार जो जितना अधिक सूक्ष्म होता है उसका प्रभाव एवं शक्ति भी उतनी ही ज्यादा विराट होती है। जिस तरह परमाणु-विखण्डन से जितनी शक्ति पैदा होती है किसी भी स्थूल पदार्थ के विस्फोट से उतनी ज्यादा शक्ति उत्पन्न नहीं हो सकती, क्योंकि परमाणु बहुत सूक्ष्माति सूक्ष्म है। पृथ्वी तत्व का होने के कारण परमाणु को तो विखण्डित किया भी जा सकता है। परन्तु शब्द पदार्थीय परमाणु से भी बहुताधिक सूक्ष्म है एवं वे शब्द आकाशीय तन्मात्रिक होने के कारण अखण्डित तो होते ही है। उनके आकाशीय तन्मात्रिक होने के फलस्वरूप उन शब्दों की शक्ति अकल्पनीय और असीम होती है।

प्रत्येक अक्षर भी परमाणुओं की तरह अपने आप में एक सम्पूर्ण इकाई है। अतः बहुत अक्षरों के संयोग से निर्मित मन्त्रों की जगह एकाक्षरी बीजमन्त्र के जप से जो ब्रह्माण्ड व्यापि कम्पन्न होता है, उसी कम्पन्न शक्ति से बीजाक्षर की प्रकृति एवं तत्व के अनुसार जिस आकृति का निर्माण होता है वही उस बीजमन्त्र का अधि-देवता यानिकि अधिष्ठित देवता होता है। जिसकी साधना से साधक सिद्ध बनता है। भावार्थ यही है कि स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म का प्रभाव और शक्ति सामर्थ्य बहुत अधिक होता है। अतः सूक्ष्म स्वरूप वाले एकाक्षरी बीजमन्त्र की साधना ही साधक को शीघ्रातिशीघ्र सिद्धि प्रदान करती है। कारण बीजमन्त्र के जप-प्रभाव से उत्पन्न विस्फोट से साधक में जो शक्ति जागृत होती है वही देवत्व है। देवत्व से प्रगट हुई उर्ध्वगामिनी उन्नतगति ही साधक में गुरुत्व पैदा करती है। वही सिद्धि है जिससे साधक सिद्ध बनता है। अर्थात् "देवो भूत्वा देव यजेत्" वाला देवता बनता है। बीज मन्त्र में जो विशेष प्रभावोत्पादक शक्ति-सामर्थ्य होता है उसी का पाठकों को प्रामाणिक परिचय देने के लिए हमने यहाँ पर महाविद्या भगवती श्री बगलामुखी के बीजमन्त्र को मूलमन्त्र की अपेक्षा पहले चुना है जिसका प्रामाणिक वैज्ञानिक विवेचन निम्न प्रकार है।

प्रस्तुत तान्त्रिक शोध सन्दर्भ के अन्तर्गत पिछले वर्षों में मन्त्रराज के स्वरूप का निर्णय करने के लिए हमने जिन-जिन ग्रन्थों और पुस्तकों से मातेश्वरी पीताम्बरा के मन्त्रोद्धार उधृत कर उनका विश्लेषण किया है उनसे प्रस्तुत आलोच्य-विषय बगलामुखी के बीजमन्त्र से सम्बन्धित कई नाम हमारे सामने आते हैं। यथा : माया, भू-माया, स्थिर-माया, स्तब्ध-माया, बगला-बीज, रक्षा-बीज, एकाक्षरी ब्रह्मास्त्र आदि। अर्थात् उन उद्धरणों के अनुसार उपर्युक्त सभी नाम एक दूसरे के पर्यायवाची है। पीताम्बरा के उपर्युक्त सभी नामों का जिन ग्रन्थों में उपयोग हुआ है उनके नामों का विवरण क्रमानुसार इस प्रकार है –

(१) **माया-बीज** का व्यवहार सुप्रसिद्ध मेरुतन्त्र के मन्त्रोद्धार में किया गया है एवं अन्य ग्रन्थ पुरश्चर्यार्णव में भी माया बीज का ही उपयोग किया गया है। भगवान कालाग्नि रूद्र द्वारा कथित भगवती बगलामुखी सम्बन्धित एक "पीतोपनिषद्" प्रकाशित है। उसमें भी माता पीताम्बरा का मन्त्रोद्धार दिया गया है। जिसमें भी मन्त्र के आगे-पीछे दोनों स्थानों पर माया बीज का ही उल्लेख किया गया है। विश्वसारोद्धार तन्त्रान्तर्गत बगलोपासन पद्धति में भी रूद्रवधू एवं शिववधू कह कर माया बीज का ही होना बतलाया गया है। रूद्रयामल तन्त्र से संग्रहित एक मन्त्रोद्धार में जहाँ मृदबीज एवं मृत्तिका बीज का उल्लेख करके माया बीज की पुष्टि की गयी है। वे ही रूद्रयामल से उधृत दूसरे मन्त्रोद्धार में प्रारम्भ में माया बीज एवं अन्त में स्थिर-माया कहकर परस्पर विरोधाभास वाली बात कही गई है। रूद्रयामल से उधृत इन दोनों मन्त्रोद्धारों को श्रीपीताम्बरा संस्कृत-परिषद् दतिया (म० प्र०) द्वारा प्रकाशित श्री बगलामुखी रहस्यम पुस्तक की पृष्ठ संख्या २१-२२ पर प्रमाणस्वरूप देखा जा सकता है। लिखने का तात्पर्य यही है कि उपर्युक्त सभी ग्रन्थों में माया-बीज (ह्रीं) को ही बगलामुखी का बीज मन्त्र माना गया है। शिवा, शिवप्रिया, शिववल्लरी, रूद्रवधू, शिववधू, लज्जा, गिरिजा, शक्ति, ह्ल्लेखा, परा, अद्रिजा, रौद्री, भूतेशी, गिरिजा, भुवनेश्वरी, देवी, शम्भुवनिता, ईश्वरी, महामाया, पार्वती, परमेश्वरी, भुवनधात्री, गुहा आदि सभी माया बीज की ही पर्यायवाची संज्ञाएँ है जो विभिन्न ग्रन्थों में मिलती है।

(२) **पीताम्बरोपनिषद्** के मूलमन्त्रोद्धार में हमें माता-पीताम्बरा के बीजमन्त्र का दूसरा नाम "भू-माया" भी उपलब्ध होता है।

(३) **बगला बीजमन्त्र की** "स्थिर-माया" संज्ञा हमें जिन ग्रन्थों के मन्त्रोद्धारों में मिलती है उनके नाम इस प्रकार है। यथा : बगलामुखी तन्त्र, बगलोपासन, पद्धति, सांख्यायन तन्त्र, बगलामुखी पटल, श्रीउत्कटशम्बरे नागेन्द्र प्रयाण तन्त्र का विष्णु शंकर संवाद, श्रीबगलामुखी रहस्यम् के त्र्यक्षर, पञ्चाक्षर, एकादशाक्षरादि मन्त्रोद्धार, शाक्तप्रमोद, पुरश्चर्यार्णव में बगलामुखी गायत्री का मन्त्रोद्धार, बगलाहृदयम्, पीताम्बरोपनिषद्, अथर्वणरहस्यान्तर्गत अष्टोत्तरीय श्री बगलामुखीस्तवराज स्तोत्र में वर्णित मन्त्रोद्धार एवं षट्कर्म दीपिकोक्त विधानम् में भी "स्थिरमाया" नाम ही मिलता है।

(४) **ब्रह्मास्त्र कल्पविधान** एवं श्रीपीताम्बरार्चन पद्धति में स्थिर-माया की जगह स्थिर-बीज का उल्लेख उपलब्ध होता है। सांख्यायन तन्त्र में भी स्थिर-बीज शब्द आता है।

(५) **बीज मन्त्र** का एक अन्य नाम "स्तब्ध-माया" भी है। जो हमें सांख्यायन तन्त्र में तो विशेष रूप से कई जगह मिलता ही है। दतिया से प्रकाशित श्रीबगलामुखी रहस्यम् पुस्तक में संग्रहीत कई मन्त्रोद्धारों में भी "स्तब्ध-माया" एवं स्तम्भ-माया दोनों नाम प्राप्त होते है।

(६) **इस एकाक्षरी मन्त्र** का नाम बगलाबीज भी है जो सांख्यायन तन्त्र में तो कई जगह देखने में आता ही है। उसके अतिरिक्त मन्त्रमहोदधि एवं मन्त्रमहार्णव के मन्त्रोद्धारों में भी मिलता है।

(७) **बगलामुखी देवी** के इस बीजमत्र को एकाक्षरी ब्रह्मास्त्र भी कहा जाता है। सांख्यायन तन्त्र के पांचवे पटल में श्लोक संख्या ९ में सिर्फ इसका "ब्रह्मास्त्रैकाक्षरी" नाम मात्र ही मिलता है। बल्कि सांख्यायन तन्त्र के सम्पूर्ण पांचवे पटल में इस एकाक्षरी ब्रह्मास्त्र का मन्त्रोद्धार एवं मन्त्रसिद्धि करने के उपाय तथा न्यासविधि, भू-शुद्धि, भूत-शुद्धि, मातृका-न्यास, मन्त्राक्षर न्यास, जप, तर्पण, मार्जन हवन ब्राह्मण भोजनादि पुरश्चरण में आवश्यक सब कुछ विस्तार पूर्वक बतलाया गया है। साथ ही अगले षष्ठ पटल में इस ब्रह्मास्त्र के द्वारा सिद्ध होने वाले तान्त्रिक (अभिचारिक) षट्कर्म यथा : मारण, मोहन, वशीकरण, स्तम्भन, उच्चाटन, विद्वेषणादि को सिद्ध करने का सम्यक विधि-विधान भी बतलाया गया है। माता-पीताम्बरा के नाम से सुप्रसिद्ध "पीताम्बरोपनिषद्" में भी इसे ब्रह्मास्त्रस्वरूपिणी, ब्रह्मास्त्र महाविद्या आदि नामों से निरूपित किया गया है।

(८) **श्रीबगलामुखी के एकाक्षरी** बीजमन्त्र का एक नाम रक्षाबीज भी देखने को मिलता है। मन्त्रोपसहिता एवं श्रीबगलामुखी रहस्यम् में इसके प्रमाण प्राप्त होते हैं।

आइए । अब यह देख लिया जावे कि भगवती बगलामुखी से सम्बन्धित विभिन्न ग्रन्थों से उधृत विविध प्रकार के मन्त्रोद्धारों में ऊपर वर्णित बीजमन्त्र की जिन आठ संज्ञाओं का हमने उल्लेख किया है उनमें परस्पर कुछ समानता यानिकि एकरूपता है भी या नहीं? या कुछ प्रभेद है। अतः हमें उपर्युक्त सभी नामों की क्रमशः परिभाषा तो करनी पड़ेगी ही, उसके साथ-साथ उनके स्वरूप निर्माण को भी देखना पड़ेगा। तब कहीं जाकर उनमें परस्पर समानता है या फिर किसी प्रकार की भिन्नता या प्रभेद है उसका प्रामाणिक पता चलेगा।

माया बीज : भगवती पीताम्बरा के मन्त्रोद्धारों में व्यवहार किए गए एकाक्षरी मन्त्र को सर्वप्रथम "मायाबीज" की संज्ञा प्रदान की गयी है। मायाबीज के बहुत से पर्यायवाची शब्दों को ऊपर बतलाया ही जा चुका है। पहले इसका स्वरूप देखें कि यह कैसे बनता है? विभिन्न कोशों एवं ग्रन्थों में जो स्वरूप मिलते हैं वे अग्रांकित हैं

(१) भूत डामर तन्त्र में श्री भैरव विरचित बीजनिघण्टु मंत्रकोष में इसका स्वरूप निम्न प्रकार मिलता है। "**क्षतजस्थो व्योम वक्त्रस्थ—डोग्रा बिन्दुः भूषिता। अदिजा रौद्री भूतेशी बीजं प्राथमिकं प्रियम्॥**" उसी कोष में कुछ आगे एक श्लोक में—"**हंस सुग्रीव पार्वत्याः कपर्दीन्द्राय लङ्कृता**"— लिखकर इसे प्रगट किया गया है।

(२) "**बीजाभिधानम्**" नामक मन्त्र-कोष में भी उपर्युक्त भूतडामर वाले मंत्रकोष में वर्णित स्वरूप को ही अक्षरशः दो बार उधृत कर इसे प्रतिपादित किया गया है।

(३) **वरदातन्त्रान्तर्गत** मन्त्रार्थाभिधानम् शीर्षक मंत्रकोष में अलग प्रकार से इसका जो स्वरूप बतलाया गया है, वह अग्रांकित है। यथा "**हकार शिव वाची स्यात् रेफः प्रकृतिरुच्यते। महामायार्थ ई-शब्दो, नादो विश्वप्रसूः स्मृतः। दुःख हरार्थ को बिन्दुर्भुवनान्तेन पूजयेत्॥**" ॥ और अब अन्त में अथर्व वेदीय संज्ञा से संयुक्त।

(४) **श्रीदेव्यथर्वशीर्षम्**" शीर्षक गद्य-पद्यात्मक देवी महिमामण्डित स्तुति में इस माया बीज को देवी बीज बतलाते हुए जो मन्त्रोद्धार प्रस्तुत किया गया है वह दृष्टव्य है। "**वियदीकार संयुक्तं वीतिहोत्र समन्वितम्। अर्धेन्दु लसितं देव्या बीजं सर्वार्थ साधकम्**" ॥

ऊपर **संग्रहित** मायाबीज के सभी मन्त्रोद्धारों में भाषा, भाव और शब्दों की परस्पर व्याकरणगत भिन्नता अवश्य दृष्टिगोचर होती है। परन्तु प्रस्तुत सभी मन्त्रोद्धारों के विवेचन और विश्लेषण से मायाबीज का स्वरूप एक जैसा ही सामने आता है जिसमें कि सिर्फ ह+र+ईकार और अनुस्वार इन्हीं चार वर्णों का उपयोग हुआ है। बगलादेवी मूलतः स्तम्भनकारी महाविद्या है। ऊपर विवेचित मायाबीज में स्तम्भन करने वाले तत्वों का अभाव है। इसलिए मायाबीज को बगलामुखीका बीजमन्त्र स्वीकार करना न तो शास्त्रोचित ही है और न व्यवहारिक ही। महाविद्या बगला माता के जिन मंत्रों के साथ सिर्फ मायाबीज का ही संयोग किया गया है। शास्त्रीय दृष्टि से वे सब शुद्ध नहीं हैं क्योंकि मायाबीज स्तम्भनशक्ति रहित है। भूतडामर तन्त्र में "**बीजाभिधानम्**"

स्थिर-माया : अब आगे स्थिर-माया के स्वरूप पर भी विचार-विमर्श कीजिए। नामक बीजकोष वर्णित है, उस बीजकोष में "**वह्निहीनेन्दयुक्मायाा स्थिर माया प्रकीर्तिता**"—लिखकर स्थिर माया का स्वरूप बतलाया गया है। "**पुरश्चर्यार्णव**" नामक महा ग्रन्थ में भी "**वह्निहीनेन्द युग माया**" वाला स्वरूप ही मिलता है। इसका स्पष्ट भावार्थ यही होता है कि—वह्नि यानिकि अग्नि बीजाक्षर से हीन अर्थात् रहित एवं इन्द्र युक्त यानि कि इन्द्र बीजाक्षर 'ल' से युक्त माया को ही स्थिरमाया कहा जाता है। मायाबीज का विवेचन ऊपर किया ही जा चुका है। ह+र+ईकार और अनुस्वार से युक्त जो मायाबीज है उसमें से अग्नि बीजाक्षर 'र' को निकालकर उसमें इन्द्र बीजाक्षर 'ल' को जोड़ देने से उपर्युक्त ग्रन्थों के अनुसार स्थिर-माया होती है। "मन्त्र महोदधि" नामक संग्रह ग्रन्थ की दशम तरंग में भी शब्दों और भाषा के प्रभेद से ऊपर वर्णित इसी बीजमन्त्र के स्वरूप का निर्देश किया गया है। उक्तम् च "**गगनं पृथ्वी शांति बिन्दु युतम्**"—यानिकि गगनम् (ह), पृथ्वी (ल), शान्ति (ई) और बिन्दु (अनुस्वार) से निर्मित बीजमन्त्र जोकि ऊपर वर्णित स्थिरमाया कहे जाने वाले स्वरूप से पूर्णतया मिलता है। परन्तु महाविद्या बगलामुखी देवी के एकमात्र मूलभूत सांख्यायन तन्त्र के पांचवें और बत्तीसवें पटल में "स्थिरमाया" एकाक्षरी बीजमन्त्र का स्वरूप सामान्य प्रभेद से कुछ दूसरा बतलाया गया है। हाँ, ऊपर वर्णित भूतडामर पुरश्चर्यार्णव एवं मन्त्रमहोदधि वाले एक समान स्वरूपी वाले बीजमन्त्र को जिसे उन ग्रन्थों में स्थिर माया की संज्ञा प्रदान की गई है को हम सांख्यायन तन्त्र की बत्तीसवीं पटल की श्लोक संख्या १४-१५ में पाते अवश्य हैं। परन्तु वहाँ पर इसे "स्थिर माया" की संज्ञा नहीं दी गई है, इसे "स्थिरबीज" के विशेषण से विभूषित किया गया है। फलस्वरूप वहीं से उद्धृत श्लोक देखिए। यथा "**स्थिरं बीजमितीरितम्। तदुद्धारं शृणुप्राज्ञ गगनार्णं समुद्धरेत् ॥१४॥ स्थिराबीजं समुद्धृत्यरति बिन्दु विभूषितम्**" इस स्थिर बीज का स्वरूप देखिए। गगनार्णं यानिकि (ह), स्थिराबीज (ल), रति (ई) एवं बिन्दु (अनुस्वार) यानिकि इन सब से निर्मित बीजमन्त्र ऊपरवाले बीज मंत्रों जैसा ही है। प्रभेद सिर्फ इतना सा ही है कि एक समान स्वरूप वाले इस बीजमन्त्र को ऊपर वर्णित विभिन्न ग्रन्थों में जहाँ "स्थिरमाया" की संज्ञा दी गई है, वहीं सांख्यायन तंत्र में इसको "स्थिरबीज" कहकर पुकारा गया है। साथ ही वहाँ यह भी स्पष्ट कर दिया गया है कि अन्य ग्रन्थों में भिन्नमतानुसार इस स्थिर बीज को ही "स्थिरमाया" माना गया है। परन्तु यह स्थिर-बीज जिसे अन्य स्थिरमाया कहते हैं, वह अभिशापित और कीलित है। सांख्यायन तन्त्र के (३२) बत्तीसवें पटल की श्लोक संख्या १६ की पूर्वार्द्ध पंक्ति देखिए। जिसमें "इयं शप्ता महाविद्या कीलिता स्तम्भिता सुत" कह कर उपर्युक्त अभिशाप और कीलन वाली बात को स्पष्ट कर दिया है। इस विवेचन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि स्थिरमाया के नाम से प्रचलित परन्तु यथार्थ में "स्थिरबीज" वाला यह स्वरूप भी भगवती पीताम्बरा के जिन मन्त्रों के साथ लगा हुआ है, **अभिशप्त एवं कीलित** होने के कारण वह फलप्रद नहीं है और वे मन्त्र भी इस निर्बल बीज मन्त्र के प्रभाव से शक्ति विहीन निर्वीर्य हो गए हैं। कहा भी गया है कि—**उत्तमं बीज संयुक्तं मंत्र सर्वार्थ साधकम्।** निर्बीजमेव निर्वीर्य शिवस्य वचनं यथा ॥ सांख्यायन तन्त्र की ५वीं पटल की श्लोक संख्या ३-४ प्रमाणार्थ द्रष्टव्य। सांख्यायन तन्त्र की ५वीं पटल की श्लोक संख्या ३-४ प्रमाणार्थ द्रष्टव्य।

निर्बीजमेव निर्वीर्य शिवस्य वचनं यथा ॥ सांख्यायन तन्त्र की ५वीं पटल की श्लोक संख्या ३-४ प्रमाणार्थ द्रष्टव्य।

ऊपर विवेचित स्थिर-बीज और स्थिरमाया में परस्पर अन्तर यानिकि प्रभेद यही है कि "वह्नि हीनेन्द युग माया" यह मन्त्रोद्धार ही अपने आप में गलत सिद्ध होता है। यह तो ऊपर बताया ही जा चुका है कि ह+र+ई+अनुस्वार के संयोग से ही मायाबीज बनता है। यदि उपर्युक्त मतानुसार हम उसमें से वह्नि अर्थात् अग्नि बीज को अलग कर देते हैं तो क्या मायाबीज रह पायेगा? कदापि नहीं। स्थिर माया का अर्थ स्पष्ट है। स्थिर+माया=स्थिरमाया ॥ यानिकि माया बीज के साथ स्थिराक्षर 'ल' का संयोग करने से ही वह बीजमंत्र "स्थिरमाया" कहलाने का अधिकारी होगा। यदि हम उसमें से अग्नि बीज 'र' निकाल कर उसकी जगह इन्द्रबीजाक्षर 'ल' लगा भी देते हैं तो वह स्थिरमाया कैसे हो सकता है। क्योंकि मायाबीज से र निकल जाने के कारण उसकी माया संज्ञा रह ही नहीं जाती। हाँ, 'र' की जगह 'ल' का संयोग कर देने से वह स्थिरबीज तो अवश्य बन जाएगा परन्तु स्थिरमाया नहीं। इससे यह प्रभेद ज्ञात होता है कि "वह्निहीन इन्द्रयुक्त" माया को स्थिरबीज ही कहा जायेगा। "स्थिर-माया" संज्ञा की सार्थकता के लिए माया के साथ स्थिराक्षर का योग अनिवार्य है।

यथार्थ में भू-माया, स्थिर-माया, स्तब्ध-माया, स्तम्भ-माया, रक्षाबीज एवं एकाक्षरी ब्रह्मास्त्रादि सब भगवती श्रीबगलामुखी के बीजमन्त्र के ही पर्यायवाची नाम हैं। परन्तु मत-मतान्तरों को लेकर इन सब के स्वरूप में एक रूपता न रहकर जो कुछ सामान्य सी भी भिन्नता आ गई है इसी कारण से इनके प्रयोग एवं अनुष्ठानादि तात्कालिक फलप्रद एवं शीघ्र सिद्धिदायक होते नहीं देखे जाते हैं। फलस्वरूप रहस्यविद्या प्रेमी पाठकों को निराश होकर इन चमत्कारिक आशु-सिद्धिप्रद शास्त्रों की ओर आस्था एवं श्रद्धा विहीन नास्तिक भाव की उपेक्षित व शंकित दृष्टि से देखते हुए देखा जा सकता है। अतः हमारा लक्ष्य और उद्देश्य यही है कि पाठक वृन्द अपनी "नीर-क्षीर न्याय" वाली संयत बुद्धि से सत्यासत्य को पहचानें। फिर सत्य को ग्रहण कर उसके अनुसार आचरण करें एवं अपने अनुष्ठान में सफलता प्राप्त कर आगमों को सच्ची श्रद्धा और आस्था प्रदान कर अपना और दूसरों का कल्याण करें। ऊपर वर्णित माया, स्थिर-माया, स्थिरबीजादि एकाक्षरी बीजमन्त्रों में परस्पर विरोधाभास वाले तथ्य होने के कारण पाठक किसे अपनाकर उपयोग में लावें और किसे नहीं? यह दुविधावाली परिस्थिति पंचवटी में सीता के सामने प्रश्नवाचक चिन्ह के रूप में खड़ी शूर्पणखा के समान हमारे प्रिय पाठकों के सम्मुख भी पैदा हो जाती है। वे संशय में पड़ जाते हैं और यह तो शाश्वत सत्य सिद्धान्त है कि "संशयात्मा विनश्यति"। तो अब आइए। हम संशय के सागर से निकलने का प्रयत्न करें। और विभिन्न संज्ञावाले बगलाबीज मन्त्र की भिन्नता एवं विविधता में शास्त्रीय प्रमाण एवं आर्षवचनानुसार एक रूपता सिद्ध कर सत्य लक्ष्य को प्राप्त करें॥

माहाविद्या भगवती श्रीबगलामुखी से सम्बन्धित साहित्य में हमें पीताम्बरोपनिषद् शीर्षक से एक लघुउपनिषद् मिलता है। जिसमें "**भू-माया**" संज्ञा से सम्बोधित एकाक्षरी बगलाबीज का नाम एवं उसका मन्त्रोद्धार मिलता है। मन्त्रोद्धार अग्रांकित है। यथा : "शिवान्ते भूमागं बिन्दुभिन्दु खण्डमग्नि बीजम्" ॥ "**स्थिरमाया**" के नाम से निरूपित बगलाबीज मन्त्र का मन्त्रोद्धार हमें सांख्यायन तन्त्र की (३२) बत्तीसवीं पटल की श्लोक संख्या ग्यारह एवं बारह में में निम्न प्रकार से उपलब्ध होता है। यथा "**शिव बीजं वह्नि युतं रति-बिन्दु समन्वितम्। वह्नि शिवान्तराले तु भू बीजं योजयेत् सुत ॥११॥ "स्थिरमाया" त्रियं प्रोक्ता विद्यात्वेकाक्षरी शुभा। अनया विद्यया देवि। किन्न सिध्यति भूतले ॥१२॥** "एकाक्षरी ब्रह्मास्त्र" के विशेषण से विभूषित वैभवयुक्त बगलाबीज महामन्त्र के मन्त्रोद्धार का जो स्वरूप हमें सांख्यायन तन्त्र में ब्रह्मास्त्रमोहन एवं ईश्वर

सम्मकादान्तर्गत पाँचवें पटल की श्लोक संख्या ६ में प्राप्त होता है। पाठकों को जानकारी उपलब्ध कराने के उद्देश्य से उसे
हमने अविकल रूप में उधृत किया गया है जोक इस प्रकार है। यथा : "सोऽन्तरान्त समायुक्तं चतुर्थस्वर संयुतम्। रेफाक्रान्तं
बिन्दु युक्तं ब्रह्मास्त्रैकाक्षरी मनु" ॥६॥ माता पीताम्बरा के इस एकाक्षरी बीजमंत्र का एक नाम "रक्षाबीज" भी देखने को
मिलता है। मंत्रयोग संहिता में इसका जो स्वरूप बतलाया गया है, पाठकों के लाभार्थ उसे यहाँ उधृत किया गया है। यथा :
"शिव-भूमि युतं शक्ति नाद बिन्दु समन्वितम्। बीजं रक्षामयं प्रोक्तं मुनिभिर्ब्रह्मवादिभिः" ॥ श्रीबगलामुखी रहस्यम् पुस्तक में
सामान्य भाषा भेद से रक्षा बीज का जो स्वरूप प्राप्त होता है, वह भी नीचे लिख दिया गया है। यथा : –"हकारेकार पृथिवी
नाद बिन्दु समन्वितम्।" अब अन्त में "स्तब्ध-माया" जिसे "स्तम्भ-माया" भी कहा जाता है के सम्बोधन से सुशोभित
सर्वस्तम्भनकारी विद्या के स्वरूप निर्माण का जो साक्ष्य (प्रमाण) हमें सहज साध्य ही सुलभ हो गया है, उसे भी सुधी पाठकों
के ज्ञानवर्द्धनार्थ यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। जो श्रीबगला पूजा पद्धति से सम्बन्धित एक अप्रकाशित हस्तलिखित ग्रन्थ में
रहने के कारण हमारी जानकारी के अनुसार अभी तक अप्रकाशित ही रहा है। वह इस प्रकार है। यथा "पीताम्बरा महाविद्या
त्रैलोक्यस्तम्भिनीतु या। भूयुत् माया स्तब्धमाया बीजं क्षिप्रं फलप्रदा" ॥ अस्तु।

ऊपर भगवती श्रीबगलामुखी के एकाक्षरी बीजमन्त्र की भूमाया, स्थिर-माया, एकाक्षरी ब्रह्मास्त्र, रक्षाबीज एवं
स्तब्ध-मायादि संज्ञाओं से सम्बन्धित सभी मंत्रोद्धारों को उधृत किया जा चुका है। जो भाषा, व्याकरण, शब्दों को लेकर
परस्पर एक दूसरे से भिन्नता एवं विविधता लिए हुए हैं। परन्तु अब उपर्युक्त सभी मंत्रोद्धारों से बगला के एकाक्षरी बीजमन्त्र
का क्रमश: उद्धार कीजिए। तब ही पता चल सकेगा कि उपर्युक्त सबके उद्धार करने से उधृत मूलमन्त्र, स्वरूप निर्माण को
लेकर, एकरूपता को लेकर एक जैसा है कि या नहीं?

(१) **भू-माया :** हाँ तो आइए। पहले भू-माया संज्ञा वाले मंत्रोद्धार के स्वरूप का समाधान करें। "शिवान्ते भूमाग्रे बिन्दुमिन्दु
खण्डमग्नि बीजम्" शिवान्ते=शिव+अन्ते यानिकि शिव माने 'ह' उसके अन्त माने बाद में भूमाग्रे भू माने 'ल' अग्रे अर्थात्
ल के आगे बिन्दु यानिकि 'इ', इन्दु अर्थात् अनुस्वार एवं खण्ड+अग्नि बीजम् यानिकि अग्नि बीज 'र' का खण्ड भाग, 'रेफ'
अर्द्ध 'र' कार ॥ अब इन सबको संयुक्त कीजिए। शिव का ह, भू का ल, बिन्दु का ईकार, इन्दु का अनुस्वार, खण्डाग्नि का
आधार 'र' यह हुआ ह+ल+ईकार+अनुस्वार+आधार 'र' का संयुक्त स्वरूप "ह्लीं" जिसे भू-माया कहा जाता है।

(२) **स्थिरमाया : (अ)** अब पहले साख्यायन तन्त्र में उपलब्ध स्थिर माया नामवाले मंत्रोद्धार का शास्त्रीय दृष्टिकोण से
विवेचन कीजिए। **"शिव-बीज वह्नि युक्तं रति बिन्दु समन्वितम्। वह्नि शिवान्तराले तु भू बीजं योजयेत् सुत ॥** भावार्थ स्पष्ट
है। शिव बीज (ह) में वह्नि अर्थात् (र) को युक्त कर उनमें रति यानि (ई) कार और बिन्दु अर्थात् अनुस्वार को मिलाइए। फिर
वह्नि (र) एवं शिव (ह) के अन्तराल यानिकि बीच में भू बीज (ल) को योजयेत् अर्थात् उन ह-र के मध्य में ल को लगाइए।
इस प्रकार ह+र+ईकार+अनुस्वार एवं ल के संयोग से जिस एकाक्षरी बीजमन्त्र का स्वरूप सामने आता है, वह एकाक्षरी
"ह्लीं" शुभ देने वाली विद्या स्थिर माया कहलाती है।

(२) **(ब)** अखिल भारतवर्षीय तान्त्रिक सम्मेलन, काशी के तात्कालिक अध्यक्ष तन्त्रसाहित्य के उद्‌भट विद्वान एवं प्रकाण्ड
पण्डित कौलाचार्य प० श्री हरिजी दाधीच के शिष्य पं० श्री राधेश्यामजी नेवटावाले से लगभग दो दशक पूर्व भगवती श्री
पीताम्बरा जी से सम्बन्धित "बगला-दशक" शीर्षक से एक स्तोत्र मिला था हस्तलिखित। उसके तीसरे पद में "स्थिर-माया"
का जो स्वरूप बतलाया गया है वह ऊपर वाले स्वरूप से हूबहू मिलता है। पाठकों की जानकारी के लिए वह पद नीचे उधृत
किया जा रहा है। यथा **"सान्तो रान्तो यान्तःक्षि वह्नि विधुकलया शोभितं महेशि। बीजान्तः स्था त्वमेव प्रविलससि सदा सा
हि माया स्थिरेयम्" ॥** अर्थ स्पष्ट है। सान्तो=स+अन्तो यानिकि स के बाद का अक्षर ह, रान्तो=र+अन्तो अर्थात् र के अन्त का
वर्ण ल यान्तःक्षि माने ईकार, वह्नि बीजाक्षर र, विधुकलया यानिकि विधु माने चन्द्रमा व उसकी (कलया) कला अर्थात्
अर्द्धचन्द्रबिन्दु ॥ इन सब (ह+ल+ईकार+र+चन्द्रबिन्दु) वर्णों से मिलकर जो "ह्लीं" स्वरूप बनता है उसे ही "स्थिरमाया"
के नाम से जाना जाता है।

(३) **एकाक्षरी ब्रह्मास्त्र :** अब एकाक्षरी ब्रह्मास्त्र के नाम से नामित बगला देवी के ब्रह्मास्त्र को सांख्यायन तन्त्र में वर्णित
मन्त्रोद्धार से बनाने की चेष्टा कीजिए। मन्त्रोद्धार अंकित है। यथा "सो न्तरान्त समायुक्तं चतुर्थ स्वर संयुतम्। रेफाक्रा
बिन्दु युक्तं ब्रह्मास्त्रैकाक्षरी मनु" ॥६॥ अर्थात् सो अन्तरान्त, इस एक पद में दो शब्द छिपे हैं। सो अन्त+अन्त। इनका
शुद्ध अर्थ इस प्रकार स्पष्ट होता है। स के अन्त का अक्षर एवं उस अन्त के अक्षर के बाद का वर्ण। स के अन्त का अक्षर होता
है 'ह'। और उस ह के बाद का वर्ण होता है (ळ)। अतः सही भावार्थ यह हुआ कि स के अन्त के वर्ण 'ह' में उस 'ह' के बाद अक्षर ल

(ळ) का संयोग कीजिए फिर उनमें चतुर्थ स्वर यानिकि दीर्घ ईकार की मात्रा लगाइए। उन तीनों वर्णों से बने संयुक्ताक्षर को
रेफ अर्थात् अर्द्ध र कार से अक्रान्त कर उसमें बिन्दु यानिकि अनुस्वार और मिलाइए। इस तरह
ह+ल+ईकार+अर्द्धर+अनुस्वार का संयोग करने से ही "एकाक्षरी ब्रह्मास्त्र" नामक बीजमन्त्र बनता है। अब उपर्युक्त
सैद्धान्तिक पक्ष को प्रयोगात्मक विधि से कार्य में परिणित करके अर्थात् सिद्धान्त को क्रियात्मक रूप देकर भी देख लीजिए
कि "एकाक्षरी ब्रह्मास्त्र" का कैसे और क्या स्वरूप बनता है। यथा : स के अन्त का वर्ण होता है 'ह'। ह में उसके बाद का वर्ण
ल (ळ) मिलाने से हुआ 'ह्ल'। इसमें चतुर्थस्वर दीर्घ ईकार की मात्रा (ी) मिलाई तो रूप बना 'ह्ली'। इसको रेफ से आक्रान्त
किया अर्थात् इसमें अर्द्ध 'र' कार मिलाया तो इसका आकार बना "ह्ली"। इस चार वर्णों वाले संयुक्ताक्षर में जब बिन्दु अर्थात्
अनुस्वार का चिन्ह लगाया तो स्वरूप बना "ह्लीं"। बगला माता के इस बीजमंत्र को तन्त्रशास्त्र में एकाक्षरी ब्रह्मास्त्र के नाम
से जाना जाता है।

(४) **रक्षा-बीज :** माता पीताम्बरा के एकाक्षरी बीजमंत्र को ही रक्षाबीज भी कहा जाता है। मंत्रयोग संहिता में "शिव-भूमि युतं
शक्ति नाद बिन्दु समन्वितम्" एवं श्रीबगलामुखी रहस्यम् में "हकारेकार पृथिवी नाद बिन्दु समन्वितम्" इस तरह इसके दो
मन्त्रोद्धार मिलते हैं। उपर्युक्त दोनों में अन्तिम् पद "नद बिन्दु समन्वितम्" एक समान ही है। इस अन्तिम पद के नाद और
बिन्दु दोनों परस्पर पर्यायवाची शब्द हैं तन्त्र की सांकेतिक भाषा के अनुसार दोनों का अर्थ होता है अनुस्वार। नाद माने भी
अनुस्वार एवं बिन्दु माने भी वही अनुस्वार। वैसे अनुस्वार के अलावा भी इनके दूसरे सांकेतिक चिन्ह भी हैं। परन्तु यहाँ पर ये
दोनों ही अनुस्वार के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। परन्तु रक्षाबीज में ह, ल, ईकार के साथ एक अनुस्वार की ही आवश्यकता है जो
कि नाद शब्द से भी मिलता है और बिन्दु शब्द से भी। जब एक अनुस्वार की आवश्यकता है तो फिर ये दो समानार्थी शब्द
क्यों यह शंका पैदा होती है। अनुस्वार बीजमंत्र के अन्त में लगने वाला चिन्ह है। जो कि अन्तिम शब्द बिन्दु से सिद्ध हो जाता
है। तो यह नाद शब्द किसलिए है? यदि हम दोनों मंत्रोद्धारों से नाद शब्द को छोड़कर बीजमंत्र बनाते हैं तो एकसाही बीजमंत्र
बनाता है। यथा : शिव और ह कार से 'ह'। भूमि और पृथ्वी से ल। शक्ति और ईकार से दीर्घ ईकार की मात्रा एवं बिन्दु से
अनुस्वार। इन चारों वर्णों के संयोग से स्वरूप बना "ह्लीं"। यह तो स्थिर बीज है। इससे रक्षा होना सम्भवप्रद नहीं। क्योंकि
जब तक इसमें पाँचों तत्वों को स्तम्भित कर त्रैलोक्य स्तम्भन करने की शक्ति सामर्थ्य नहीं आ जाती है, यह प्राकृतिक प्रकोपों
से रक्षा करने में समर्थ नहीं हो जाता है तबतक इससे रक्षा होना सम्भव नहीं। काफी खोज और शोध के बाद ज्ञात हुआ है कि
उपर्युक्त दोनों मंत्रोद्धारों का नाद शब्द नाद नहीं दाह शब्द है जिसका बीजाक्षर र होता है। ऊपर वर्णित चारों वर्णों के साथ
रकार मिलते ही वह शुद्ध बीज "ह्लीं" हो जाता है जो रक्षा करने में समर्थ है। इस पाँच वर्णों से निर्मित बीजमंत्र में रक्षा करने
की शक्ति कैसे है और इसी का रक्षा बीज नाम क्यों सार्थक है इसका विस्तारपूर्वक वैज्ञानिक विवेचना आगे किया गया है।
परन्तु उपर्युक्त दोनों मंत्रोद्धारों का पद "नाद बिन्दु समन्वितम्" अपने आप स्वतः गलत सिद्ध होता है। क्योंकि नाद और बिन्दु
दोनों समानार्थी शब्दों का एक साथ और एक ही अर्थ में यहाँ प्रयुक्त होना इसे गलत साबित करता है? नाद की जगह अग्नि
तत्व को प्रकट करने वाला 'दाह' शब्द ही यहाँ उचित और समीचीन सिद्ध होता है।

(५) **स्तब्ध-माया :** अब अन्त में "स्तब्ध-माया" विशेषण सेविभूषित उस एकाक्षरी बगलाबीज का मंत्रोद्धार यहाँ प्रस्तुत
किया जा रहा है जो हमारी जानकारी में अभी तक अप्रकाशित है। ऊपर उधृत किये गए श्लोक में "भू-युत्माया स्तब्धमाया"
कहकर ही "स्तब्ध-माया" के स्वरूप को स्पष्ट कर दिया गया है। ऊपर हम "माया" बीज के स्वरूप को तो भली भांति समझ
चुके हैं कि यह कैसे बनता है। उस मायाबीज में मात्र भू-बीज का संयोग करने से ही स्तब्ध-माया का स्वरूप बन जाता है। माया
बीज का निर्माण ह+र+ईकार+अनुस्वार इन चारों वर्णों से होता है यह सर्वविदित है। इन चारों अक्षरों से निर्मित संयुक्ताक्षर
"ह्रीं" शब्द में भू यानि कि पृथ्वी बीज 'ल' को युक्त करने से जो शब्द बनता है वही त्रैलोक्यस्तम्भिनी महाविद्या पीताम्बरा का
बीजमंत्र स्तब्ध माया है अर्थात् "ह्लीं"। जो कि साधक को क्षिप्र यानिकि शीघ्र ही फलप्रदान करने वाला बीजमंत्र माना गया
है।

(६) **स्तम्भ-माया :** उपर्युक्त स्तब्ध माया को ही "स्तम्भ-माया" भी कहा जाता है। प्रमाणार्थ सांख्यायनतंत्र के सोलहवें पटल
की श्लोक संख्या २६वीं देखिए। जिसके श्रीगणेश में ही "मायास्तम्भन-वाण" कहकर इसका पुष्टिकरण किया गया है एवं
१वें पटल कौ अन्तिम २४वां श्लोक भी "सदा स्तम्भन विद्या" कहकर इसके "सतम्भ" शब्द की पुष्टि करता है।

ऊपर वर्णित शास्त्र सम्मत आगमीय आर्ष वचनों के प्रमाणों से यह तो आप सब ने समझ ही लिया कि भू-माया,
स्थिर-माया, एकाक्षरी ब्रह्मास्त्र, रक्षाबीज स्तब्ध या स्तम्भ-माया आदि सब एकमात्र महाविद्या बगलामुखी के बीजमंत्र के

ही पर्यायवाची शब्द है। जो कि नामरूप से परस्पर एक दूसरे से भिन्न होते हुए भी शब्दार्थ एवं भावार्थ स्वरूप में एक दूसरे से अभिन्न है। अर्थात् इनकी संज्ञा परस्पर अलग-अलग होते हुए भी उन सब के द्वारा जिस एकाक्षरी बीजमंत्र का स्वरूप बनता है वह एक समान है। एकरूपता लिए हुए है। एक जैसा ही है। इसमें तिलमात्र भी संशय नहीं है। परन्तु सर्वप्रथम मूलडामर तन्त्र, पुरश्चर्यार्णव, मंत्रमहोदधि आदि ग्रन्थों में "वह्निहीनेन्द युडमाया" स्वरूप जिसे रेफहीन स्थिरमाया बतलाया गया है उस "ह्लीं" स्वरूप और अन्त में भू-स्थिर-स्तब्ध-स्तम्भमाया रक्षाबीज, ब्रह्मास्त्रादि के नाम से सुप्रसिद्ध रेफाक्रान्त वाले "ह्लीं" इन दोनों स्वरूपों में से कौनसा स्वरूप अर्थात् बगलामाता के एकाक्षरी बीजमंत्र का कौनसा रूप शास्त्र सम्मत है, तर्कसंगत है। प्रमाणिक तौर पर शुद्ध और सही है। आइए। अब उनका तुलनात्मक दृष्टि से वैज्ञानिक विवेचन करें।

जगज्जननि महामाया पराम्बा पार्वतीजी ने देवाधिपति देव महाकालेश्वर श्री महादेवजी को कार्य एवं कारण विशेष हेतु अपने शक्ति-सामर्थ्य का ज्ञान कराने के लिए दशों दिशाओं में अपने दश दिव्यरूप प्रकट कर भगवान भोलेनाथजी का गतिपथ (मार्ग) जब अवरूद्ध कर दिया था, तभी से उन दश दिव्यस्वरूपों को दश महाविद्या के रूप में जाना जाता है। आदिशक्ति ने अपने उन दशदिव्य रूपों का इस चराचर जगत् की सृष्टि-स्थिति-संहार यानिकि संचालन करने के लिए दश विभागों की अधिष्ठात्री बना दिया और प्रत्येक को उसके नाम, गुण, कर्म के अनुसार एक-एक विभाग विशेषरूप से सौप दिया, जिसका कि वे पूर्ण उत्तरदायित्व निभा सकें। सृष्टि-स्थिति-संहार चक्र वाले जीव जगत् के निर्माण कार्य के लिए परमब्रह्म की इच्छा ज्ञान एवं क्रियाशक्ति का होना अनिवार्य है अन्यथा निर्माण कार्य सम्पादन सम्भव नहीं। इसलिए दश महाविद्याओं में से अन्यतम काली-तारा-षोडशी को क्रमानुसार परमब्रह्म की इच्छाशक्ति काली को माना गया। तारा को ज्ञानस्वरूपिणी एवं षोडशी को क्रियाशक्ति बतलाया गया। परन्तु किसी भी निर्माण कार्य को सुसम्पन्न करने के लिए शांत और स्थिर वातावरण आवश्यक होता है। प्रलयान्त में प्रचण्ड और प्रखर रूप से उद्वेलित वायु प्रवाह के कारण अस्त-व्यस्त हुआ वातावरण जब तक स्थिर नहीं हो जाता, तब तक सृष्टि सृजनकार्य में स्थायित्व आना सम्भव नहीं था। अतः निर्माण क्रिया का सम्पादन करने के हेतु प्रलयान्त में होने वाले वातक्षोभ को स्तम्भित करने का कार्यभार चतुर्थ महाविद्या बगलामुखी को सौंपा गया। भगवती पीताम्बरा ने अपनी विशेष कार्यकारी स्तम्भन शक्ति से वातक्षोभ से उद्वेलित हुए अशांत और अस्थिर वातावरण को एकदम से शान्त और स्थिर बना दिया। इसीलिए इसका सर्वस्तम्भनकरी विद्या नाम सार्थक हुआ। इसको त्रैलोक्य स्तम्भिनी विद्या भी कहा जाता है। निगम-आगम सम्मत विभिन्न आर्ष ग्रन्थों में इसके "त्रैलोक्य स्तम्भन" स्वरूप को स्पष्टतया देखा भी जा सकता है। आइए। पहले प्रामाणिक शास्त्रों में, आगम-ग्रन्थों में इसके त्रैलोक्य स्तम्भनकारी स्वरूप के सत्यासत्य की प्रत्यक्ष प्रमाणानुसार जानकारी कर ली जाए। जिससे कि आगे इसके कार्य विभाग और उसकी संचालन शक्ति का निर्णय लेने में कोई असुविधा न होवें।

भगवती बगलामुखी आगम अर्थात् तान्त्रिक वाङ्मय की सुप्रसिद्ध दश महाविद्याओं में से एक प्रधान महा-विद्या है जिसे त्रैलोक्य स्तम्भनकरी विद्या भी कहा गया है। तंत्र सिद्ध विद्या होने के कारण आइए पहले तान्त्रिक साहित्य में ही इसके त्रैलोक्य स्तम्भनकारी स्वरूप के साक्ष्यों का अनुसंधान करें। सुप्रसिद्ध रुद्रयामल तन्त्रान्तर्गत श्री बगलोपासन पद्धति में वर्णित बगलामुखी स्तोत्र के ध्यान-पद की अन्तिम पंक्ति पर ध्यान दीजिए। जिसमें– "बगलामुखी त्रिजगतां संस्तम्भिनी चिन्तये" कहकर जहाँ इसके त्रैलोक्य स्तम्भिनी स्वरूप को प्रमाणित किया गया है, वहीं पीताम्बरोपनिषद् के श्री गणेश में ही "सर्वस्तम्भनकरी सिद्धाम्" लिखकर इसके सर्वस्तम्भनकारी सामर्थ्य की सराहना की गई है एवं उसी उपनिषद् में आगे "त्रैलोक्यस्तम्भिन्या" उधृत कर इसके पूर्वरूप को प्रमाणित किया गया है। स्वतन्त्र तंत्र में वर्णित "बगलोत्पत्ति" प्रसंगान्तर्गत– "ब्रह्मास्त्र विद्या सञ्जाता त्रैलोक्य स्तम्भिनी"–श्लोकांश भी इसके त्रैलोक्यस्तम्भनकारी स्वरूप को ही सिद्ध करता है। श्रीविष्णुयामलान्तर्गत श्रीनारद-विष्णु सम्वाद में भी जहाँ "यस्य प्रपन्नात्सद्यो . . . . . रिपूणां स्तम्भनं याति" कहकर इसके उसी स्तम्भनकारी रूप का पुष्टिकरण किया गया है, वहीं श्रीपीताम्बरा सहस्त्र नाम स्तोत्रान्तर्गत श्रीविष्णु-शंकर सम्वाद में भी श्रीविष्णु के द्वारा ही इसे "महास्तम्भनकरी देवी" स्वीकार किया गया है। सांख्यायन तंत्र में "अनेन क्रम योगेन त्रैलोक्य स्तम्भनं क्षणात्" (३३।२३) वाली स्पष्ट उक्ति उपलब्ध होती ही है। साथ ही सांख्यायन तंत्र में जगत् स्तम्भनकारिणी (१५।२५), "सद्यः स्तम्भन विद्या च बगला नात्र संशय" (५।२४), "त्रैलोक्यस्तम्भने जपेत्" (३१।२७), "स्तम्भन भुवन त्रये" (१५।३) आदि ऐसे बहुत से आर्षवचन मिलते है जो इसके तीनों लोकों का स्तम्भन करने वाले स्वरूप का स्पष्ट परिचय देते है।

ब्रह्मास्त्रकल्प अन्तर्गत श्री शिव-पार्वती सम्वाद स्वरूप उधृत श्री बगला हृदयस्तोत्र में तो भगवान सदाशिवजीने देवीपार्वती को सम्बोधन करके यहाँ तक कह दिया है कि इसके स्मरण मात्र से उसी क्षण ही तीनों लोक का स्तम्भन हो जाता है। उदाहरणार्थ- प्रस्तुत है– **"स्तम्भिनीया महाविद्या सत्यं-सत्यं वरानने। तस्या स्मरण मात्रेण त्रैलोक्य स्तम्भयेत्क्षणात्"** ॥ श्रीबगलामुखी कल्पान्तर्गत वीरतन्त्र के बगला सिद्धि प्रयोग में उपलब्ध स्तोत्र के प्रारम्भ में ही "त्रैलोक्यस्तम्भिनी विद्या सर्वशत्रु वशङ्करी" वाक्य उधृत करके इसके त्रैलोक्य स्तम्भनकारी स्वरूप को प्रतिपादित कर शाश्वत सिद्ध कर दिया है।

सिर्फ तान्त्रिक वाङ्मय के आगम ग्रन्थों में ही क्यों निगम यानि कि वेदों में भी इस स्तम्भनकारी शक्ति का सांगोपांग उल्लेख हुआ है। यजुर्वेद एवं अथर्ववेद के अभिचारिक प्रकरणों के अन्तर्गत हमें इसके बहुत से प्रमाण मिलते है। यजुर्वेद की शुक्ल एवं कृष्ण संज्ञाओं से सुप्रसिद्ध दोनों शाखाओं से सम्बन्धित तैत्तरीय, काक, काठक काण्व, माध्यन्दिनी, मैत्रायणी संहिताओं में आभिचारिक कर्म विषयान्तर्गत इसके स्पष्ट साक्ष्य मौजूद है। कृष्ण यजुर्वेद की काठक संहिता के २२ वें स्थानक में अनुवाक १-२ की मंत्र संख्या ४९-५० को गौर से देखिए जो नीचे उधृत है। यथा : "विराड् दिशा विष्णु पत्न्यघोरास्येशाना सहसो या मनोता। विश्व व्यचा इषयन्ती सुभूता शिवानो अस्तु अदितिरुपस्थे। **विष्टम्भो दिवो धरुणःपृथिव्या** अस्येशाना सहसो विष्णु-पत्नी। बृहस्पतिर्मातारश्वतो **वायुस्संध्वाना वाता अभितो गृणन्तु"** ॥ (का० सं०– स्थानक–२२, अनुवाक १-२, मंत्र संख्या ४९-५०)"। ऊपर मंत्रों में आए हुए– "विष्टम्भो दिवो," "धरुणः पृथिव्या" एवं "वायुस्संध्वाना वाता" इन तीनों पदों के भावार्थों पर विचार कीजिए। विष्टम्भो दिवो यानिकि दिवः विष्टम्भः का भावार्थ हुआ जो दिवः (दिव्य) लोक का स्तम्भन करने वाली (शक्ति) है। ऊपर मंत्र में प्रयोग किया गया शब्द विष्टम्भः स्तम्भन तत्व का ही स्पष्ट निर्देश दे रहा है। वैसे विष्टम्भः शब्द का शब्दार्थ होता है प्रतिबन्ध। यह प्रतिबन्ध शब्द भी स्तम्भन भाव को ही उजागर कर स्तम्भन शक्ति का संकेत देता है। अब दूसरे वाक्य "धरुणः पृथिव्या" को देखिए। शतपथ ब्राह्मण (७-४-२-५) में "प्रतिष्ठा वै धरुणम्" कहकर उपर्युक्त वेद-वाक्य को स्पष्ट कर दिया है। जिसका भावार्थ होता है– "पृथिवी तत्व की जो प्रतिष्ठा है।" बीजकोश में पार्थिव बीज को ही "प्रतिष्ठा कला" बतलाया गया है।" "बीज स्मरेत् पार्थिवम्" कहकर बगलाबीज का ही पार्थिव बीज होना प्रतिपादित किया है। पृथिवी की प्रतिष्ठा क्या स्थिरता के बिना सम्भव है? अतः द्वितीय "धरुणः पृथिव्या" पद से भी स्तम्भनकारी स्वरूप की ही प्रत्यक्ष झलक मिलती है। तीसरा वाक्यांश है- "वायुस्संध्वाना वाता।" भावार्थ सुपरिलक्षित है। यथा : वायु रूपवाली, संध्वाना–शब्द तत्व का कारण एवं वाता यानिकि वातक्षोभ को शान्त करने वाली (शक्ति)। यह तीसरा वाक्य भी स्तम्भन शक्ति की विशेषता ही विशेष रूप से बता रहा है।

शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिनि शाखा के अध्याय ३२ की मंत्र संख्या ६ के निम्नांकित स्वरूप का भी अवलोकन कीजिए। जिसमें स्तम्भन शक्ति के स्वरूप और उसके उपयोग के विषय में बतलाया गया है। यथा : **"येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढ़ा ये न स्वः स्तम्भितं येन नाकः"** ॥ (यू०वे० ३२।६) "श्रीमद्भगवद गीता में भी योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण ने दशवें अध्याय की अन्तिम ४२वीं श्लोक संख्या में "विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत्" कहकर उस स्तम्भनकारी तत्व का ही समर्थन किया है।

अथर्व-वेद के अग्रांकित मंत्रों को भी देखिए जिनमें स्तम्भन शक्ति के सामर्थ्य की महिमा गाई गई है। यथा : **"यस्मिन् स्तब्ध्वा प्रजापतिर्लोकान्सर्वां अधारयत्"**। (अ०वे० १०-४-७-७)। अर्थात् जिससे स्तम्भित होकर प्रजापति सर्वलोकों को धारण कर रहे हैं। (२) **"यो विष्टम्भाति पृथिवीं दिवं च तस्माद देवा अधि सृष्टीः सृजन्ते"** ॥ (१३-१-९-२५)। अर्थ स्पष्ट है। जो शक्ति पृथिवी और दिव्य-लोक को रोके हुए है, देवता उनसे ही सृष्टि की रचना किया करते हैं। (३) **"तस्यै मे नव कोशा विष्टम्भा नवधा हिताः"** ॥ (१३-४-४-१०) ॥ उनके ये नौ कोश नौ प्रकार से स्थित है ॥

(४) १९वें काण्ड के चतुर्थ अनुवाक में ३२ वें सूक्त की ७वीं ऋचा (७वें मंत्र) में (क) "देव जातेन दि-विष्टम्भेन शश्वदित्" –अर्थात् देवताओं के लिए उत्पन्न हुए स्वर्गलोक के सर्वदा स्तम्भन से–एवं ९वें मंत्र में–यो जायमानः पृथिवीम् अदृहंत् यो अस्तम्भनादन्त रिक्षं दिवं च–यानिकि जिसने प्रादुर्भूत होते ही पृथिवी, अन्तरिक्ष एवं द्यौ (स्वर्ग) लोक को स्तम्भित कर दिया है आदि इन सब उपर्युक्त प्रमाणों से भी स्तम्भन शक्ति की श्रुति-स्मृति सम्मत सार्थकता ही सिद्ध होती है।

बृहदारण्यक उपनिषद् के अग्रांकित मंत्रों में जहाँ इस स्तम्भनकारी शक्ति की परिभाषा विस्तारपूर्वक समझाई गई है। यथा : –"स होता चैत द्वैतदक्षरं गार्गि। . . . . . सूर्याचन्द्रमसौ विधृतौ तिष्ठतः . . . . . द्यावा पृथिव्यौ विधृते तिष्ठतः ॥ (बृ० ४-८-८-९)।" वहीं वेदान्त के "अक्षराम्बरान्त धृते" एवं "सा च प्रशासनात्" (वे० १-३-१०।११) इन दोनों सूत्रोंमे इसी परम तत्त्व की सुन्दर मीमांसा कर महिमा गाई गई है।

आज की दुनिया में योग के पहले भोग और मुक्ति के पहले भुक्ति को प्रधानता दी जाती है। भगवान कृष्ण की

गौरवमयी गीता को गीता-गंगा व गायत्री कहकर जहाँ मोक्ष प्रदान करने वाली ब्रह्म विद्या माना गया है, वही महर्षि मेधा के
'श्री श्री देवी महात्म्य जिसे श्री दुर्गासप्तशती एवं श्रीचण्डी भी कहा जाता है को एकमत से मुक्तिदात्री स्वीकारा गया है। धर्म,
अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पुरुषार्थ में से पहले और चौथे यानिकि धर्म-मोक्ष की प्राप्ति भगवद् गीता से एवं दूसरे-तीसरे अर्थ
एवं काम (कामना) की सिद्धि दुर्गासप्तशती से होनी मानी गई है। यानिकि दोनों ही एक-दूसरे की पूरक है। पुरुषार्थ चतुष्टय
द्वारा जीवन को सफल बनाने के लिए दोनों ही सहायक हैं। इससे इनके महत्व का पता चल जाता है। अपने उपर्युक्त प्रसंग का
पुष्टिकरण दोनों ही कृतियाँ करती हैं। वैसे तो श्री श्री चण्डी में प्रथम अध्याय वाली ब्रह्मा की स्तुति, चौथे अध्यायवाली
शक्रादि की स्तुति एवं पांचवें अध्याय की देवस्तुति तथा ग्यारहवें अध्याय की नारायणी स्तुति में अपने स्तम्भनकारी तत्व
प्रचुरमात्र में हैं। परन्तु सप्तशती के ग्यारहवें अध्याय की श्लोक संख्या ४ में तो इसका प्रामाणिक विवेचन प्रस्तुत कर दिया
गया है। यथा : –**"आधार भूता जगतस्त्वमेका, मही स्वरूपेण यत स्थितासि। अपां स्वरूप स्थितया त्वयैतदाप्यायते कृत्स्न
मलङ्घ्य वीर्ये"** ॥ भगवद्गीता के १०वें अध्याय का अन्तिम ४२वा श्लोक भी इसी शक्ति तत्व की पुष्टि करता है। यथा :
–**"विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत्"** ॥ इस तरह हम देखते है कि वेद-शास्त्र, पुरान-इतिहास, तन्त्र-मन्त्रादि
ग्रन्थो के उपर्युक्त प्रामाणिक उद्धरणों द्वारा भगवती पीताम्बरा का त्रैलोक्य स्तम्भनकारी शक्ति सामर्थ्य सैद्धान्तिक रूप से
सिद्ध होता है। इसलिए इसको त्रैलोक्यस्तम्भनकरी सिद्ध महाविद्या की संज्ञा प्रदान की गई है।

दशमहाविद्याओं के अन्तर्गत काली, तारा, षोडशी के बाद बगलामुखी का क्रमसे चतुर्थ स्थान निर्धारित किया गया है।
काली को परमब्रह्म की इच्छा, तारा को ज्ञान एवं षोडशी को क्रियाशक्ति माना गया है। और तीनों को सृष्टि सृजन का
अधिकार दिया गया है। परन्तु प्रलयान्त में उत्पन्न हुए प्रचण्ड और प्रखर वेग से प्रवाहित वात क्षोभ से उद्वेलित वातावरण में
जबतक स्थिरता नहीं आती, तबतक उपर्युक्त इच्छा ज्ञान एवं क्रिया विभागों की अधिष्ठात्री तीनों महाविद्या ही अपना अपना
कार्य सम्पादन करने में असमर्थ हैं। तीनों ही निष्क्रिय हैं। तात्पर्य यह है कि तीनों ही महाशक्तियाँ सर्वस्तम्भनकरी महाविद्या
बगलामुखी पर निर्भर करती है, जबतक माता पीताम्बरा अशान्त, अस्थिर और उद्वेलित वातावरण को शान्त और स्थिर नहीं
कर देती है तबतक प्रथम तीनों महाशक्तियाँ सृजन का कुछ भी कार्य करने में असमर्थ है। इसी उद्धरण से भगवती बगलामुखी
के महत्व का पता चल जाता है कि उसकी प्रधानता कितनी है।

अब प्रश्न यह उठता है कि इसकी "त्रैलोक्यस्तम्भनी" संज्ञा सार्थक है भी या नहीं? इसकी **"यथा नाम तथा गुण"**
सार्थकता एवं सच्चाई को सिद्ध करने के लिए हमें प्रत्यक्ष सिद्ध प्रयोगात्मक प्रामाणिक प्रणाली से इसका तर्क सम्मत एवं
व्यवहार संगत वैज्ञानिक विवेचन करना पड़ेगा। आइए देखते है कि इसमें कितनी सच्चाई है। यह तो हम सभी जानते है कि
अक्षरों से निर्मित मंत्रों की शब्दशक्ति असीम होती है। कहा भी गया है कि **"शब्द ब्रह्मणि निष्णातः परंब्रह्माधि
गच्छति"**–अर्थात् शब्द ब्रह्म में निष्णात होने से ही परमब्रह्म की उपलब्धि होती है। शब्दातीत परम पद के साक्षात्कार
यानिकि परम पद पाने के लिए शब्द का आश्रय लेकर ही शब्द राज्य को भेद करना होता है। सम्पूर्ण चराचर जगत शब्द से ही
उद्भूत एवं शब्द में ही विधृत है। शास्त्र वचनों से पता चलता है कि शब्द ही विश्व सृष्टि का मूल है। शब्द राज्य के बाहर जाने
के लिए भी शब्द ही एकमात्र आलम्बन है। इसलिए जप साधना में शब्द यानि कि मंत्र को ग्रहण करके ही शब्दातीत परमब्रह्म
पद को पाया जा सकता है। इसीलिए तो गीता में योगेश्वर श्रीकृष्ण ने **"यज्ञानां जप यज्ञोऽस्मि कहकर** जप-यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ
**बतलाया है। इसी तथ्यात्मक सत्य को श्रीदुर्गासप्तशती में निम्नश्लोक द्वारा सुस्पष्ट किया गया है। यथा : "शब्दात्मिका
सुविमलर्ग्यजुषां निधानम्, उद्गीथरम्य पद पाठवतां च साम्नाम्"** ॥ "जो एक सर्वमान्य सुविदित सिद्धान्त है।

सार संक्षेप में, मंत्र-जप से उत्पन्न शब्द-शक्ति से अन्य लोकों के निवासी देवताओं का आकर्षण स्वरूप आविर्भाव
होना क्या इस शब्द शक्ति की सत्यता को सत्यसिद्ध एवं प्रमाणित नहीं करता? यह शास्त्राज्ञा साधकों को हरदम याद रखनी
चाहिए कि मंत्र में किसी भी प्रकार का कोई भी व्यतिक्रम होने से अभीष्टफल प्राप्त नहीं होता है। और अनर्थ यानिकि अनिष्ट
की सम्भावना बनी रहती है। उक्तं च –**"मन्त्रहीनो स्वरतो वर्णतो वा मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह। स वाग्वज्रो यजमानं
हिनस्ति यथेन्द्रशत्रोः स्वरतोऽपराधात्"** ॥ अर्थात् मन्त्र जप के समय उच्चारण में यदि प्रमादवश यानि कि भूल से कोई स्वर
या वर्ण छूट जाने से मन्त्र जप अशुद्ध हो जाता है तो वह अभीष्ट फल प्रदान नहीं करता है। उल्टे वह अशुद्ध उच्चारण से बना
वाणी रूपी वज्र जपकर्ता का उसी प्रकार नाश करता है जिस तरह स्वर दोष के कारण इन्द्र का शत्रु वृत्र मारा गया था। इससे
यह सिद्ध होता है कि मन्त्र जप में शुद्ध उच्चारण की प्रधानता पर इसीलिए जोर दिया गया है जिससे कि प्रयोगकर्ता क
प्रयोग सफल होवे उसे निराश न होना पड़े, यदि आवश्यक प्रयोग साधन में भूलचूक से एक स्वर या वर्ण भी इधर-उधर हो
जावे तो लाभ की जगह हानि का खतरा रहता है, एक विशेष वर्ण है जो मारण प्रयोग का प्रतिबन्धक है। मन्त्र में उसकी
उपस्थिति से मारण सफल हो ही नहीं सकता। । श्रीदुर्गासप्तशती के सम्पूर्ण सात सौ श्लोकों में सिर्फ एक ही श्लोक ऐसा है
जिसमें वह विशेष वर्ण नहीं है। उसी श्लोक विशेष से मारण प्रयोग सफलतापूर्वक किया जा सकता है अन्य से नहीं। यानि
शब्द शक्ति असीम होती है। लिखने का तात्पर्य यह है कि जिस तरह लगभग दस हजार दोहा-चौपाई-सोरठा-छंदादि वाले
श्रीरामचरित्र मानस में मात्र ५१७ चौपाइयाँ ही ऐसी है जिनमें "सीताराम" नाम वाले चार अक्षरों में से कोई भी एक स, त, र, म
नहीं है। यानिकि सम्पूर्ण मानस की मात्र ५१७ चौपाइयों को छोड़कर बाकी सब में स-त-र-म इन चारों में से कोई एक दो
अक्षर अवश्य है। उसी तरह श्रीदुर्गा सप्तशती के सम्पूर्ण सात सौ (७००) श्लोकों में से सिर्फ एक ही श्लोक ऐसा है जिसमें
वह विशेष एक वर्ण नहीं है जो मारण प्रयोग की शक्ति को निष्फल और निरर्थक बनाता है। अर्थात् श्री श्री चण्डी के एक श्लोक
में ही मारण प्रयोग सिद्ध होता है जिसमें मारण शक्ति का प्रतिरोधक वर्ण नहीं है, अन्य श्लोकों से मारण कर्म सिद्ध नहीं हो
सकता। इस एक वर्ण वाली बात को यहाँ उधृत करने का कारण यही है कि अपने आलोच्य विषय बगला एकाक्षरी बीजमन्त्र में
भी आगे ऐसा ही प्रसंग उपस्थित होने वाला है। जिसको समझने में सुधी पाठकों को इस उपर्युक्त प्रसंग से सुविधा रहेगी।
इसके महत्व का ध्यान रहेगा। अब देखना यह है कि वैज्ञानिक विवेचन से तीनों लोकों को स्तम्भित करने में इसका कौन सा
बीजमन्त्र सार्थक और कारगर सिद्ध होता है? रेफाक्रान्त या रेफ विहीन।

त्रैलोक्य अर्थात् तीनों लोकों में स्वर्ग-मृत्य (भू) और पाताल का नाम ही आता है। वैसे उपनिषदों में तो दो ही लोक माने गये है–इहलोक और परलोक। पुराणों में अपनी पृथिवी से लेकर ऊपर तक भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, सत्यम् ये सात लोक और धरती से नीचे अतल, वितल, सुतल, तलातल, रसातल, महातल और पाताल, इस तरह चौदह लोक यानिकि चौदह भुवनों का वर्णन आता है। परन्तु जब कहीं भी "त्रिलोक" शब्द का प्रसंग आता है तब स्वर्ग-मर्त्य (भू) और पाताल इन तीनों को ही प्रधानता दी जाती है। त्रैलोक्य स्तम्भिनी विद्या का अर्थ हुआ इन तीनों लोकों का जो स्तम्भन करने में समर्थ हो–वह विद्या। तीनों लोकों में क्षिति जल पावक गगन समीरा इन पञ्चतत्वों की ही प्रधानता है। अन्य शब्दों में यदि यह कहा जाए कि तीनों लोकों का अस्तित्व इन पञ्चतत्वों से ही है। ये तीनों लोक पञ्चतत्वों से ही बने हुए हैं। पञ्चतत्व ही इनका मुख्य मूलाधार है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

उदाहरणार्थ ज्ञान-विज्ञान सम्मत प्रमाण द्रष्टव्य है। यथा : क्षिति (भू) तत्व से पृथिवी यानिकि मृत्युलोक। गगन (आकाश) तत्व से स्वर्गलोक एवं जल तत्व से पाताललोक का अस्तित्व प्रमाण सिद्ध है। अब पांच तत्वों में से बाकि रहे दो तत्व-पावक (अग्नि) और समीर यानिकि वायु। यदि तीनों लोकों में इन अवशिष्ट दोनों तत्व अग्नि का तेज एवं समीर की प्राणवायु न रहे तो इन लोकों का होना न होना बराबर होगा। कारण अग्नि के तेज (ताप) एवं समीर की प्राणवायु के बिना कहीं किसी लोक में भी प्राणिमात्र का न तो प्रादुर्भाव ही हो सकता है और न उनमें कोई प्राणी रह ही सकता है। जब प्रादुर्भाव ही नहीं हो सकता तो रहने का तो प्रश्न ही नहीं उठ सकता। पञ्चतत्वों के संयोग के बिना चराचर जगत में जीव की सृष्टि होना ही असम्भव है। फिर यदि पांचों तत्वों का स्तम्भन नहीं होवे तो उनसे निर्मित तीनों लोकों का स्तम्भन होना भी सम्भवप्रद नहीं। अतः जिस बीजमन्त्र में पाञ्चोंतत्वों का स्तम्भित कर स्थिरता प्रदान करने की शक्ति होगी उसी से ही तीनों लोकों का स्तम्भन भी हो सकेगा। अन्यथा तो आकाश कुसुम तोड़ लाने वाली हास्यास्पद बात ही सिद्ध होगी। अतः जिसके बीजमन्त्र से पांचों तत्व ही स्तम्भित होकर तीनों लोकों को स्थिरता प्रदान कर सके, उसी महाशक्ति का त्रैलोक्य स्तम्भिनी महाविद्या नाम सत्य सिद्ध और सार्थक होगा। सर्वमान्य और सर्वग्राह्य होगा।

यह एक सर्वमान्य, सर्वतन्त्र स्वतन्त्र सर्वविदित, सर्वग्राह्य शास्त्र सम्मत सिद्धान्त है कि जो अण्ड में है वही पिण्ड में है और जो पिण्ड में है वही ब्रह्माण्ड में भी है। यानिकि यह चैतन्य तत्व सर्वव्यापी और सार्वभौम है। भावार्थ यह है कि जिस तरह एक सूक्ष्म बीज में विशाल वृक्ष का विराटाकार छुपा रहता है उसी तरह अण्ड के जीवाणुओं (अणुओं) से निर्मित इस शरीर रूपी देह-पिण्ड में भी सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड छुपा हुआ है। अण्ड निर्मित पिण्ड में शब्दसाधना (जप योग-जपयज्ञ) से उत्पन्न हुई असीम शब्द शक्ति के माध्यम सेसम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को नियन्त्रित किया जा सकता है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड यानिकि ऊपर से नीचे तक चराचर जगत के तीनों लोकों का कार्यकलाप वश में करके उन पर अपनी इच्छानुसार आवश्यक शासन किया जा सकता है। परन्तु आवश्यकता है कि साधक साध्य की साधना द्वारा अपने में वह अतुलनीय और असीम शक्ति-सामर्थ्य उत्पन्न करे [illegible] करे। भगवती बगलामुखी वाले रेफहीन वाले बीजमन्त्र में त्रिलोकों का निर्माण करने वाले पाञ्चो तत्वों का अभाव

है। जबकि रेफाक्रान्त यानिकि रेफ के सहित वाले बीज मन्त्र "ह्लीं" में तीनों लोकों को बनाने वाले पाञ्चों तत्व हमें मौजूद मिलते हैं।

बीजमन्त्र "ह्लीं" का सन्धि-विच्छेद करने से जो इसका स्वरूप बनता है, वह अग्रांकित है। यथा ह+अ+ल+र+ईकार+अनुस्वार। एकाक्षरी बीजमन्त्र में छः अक्षरों का संयोग है जैसा कि ऊपर वर्णन किया जा चुका है। तन्त्र-मन्त्र शास्त्रीय प्रमाणानुसार इन छःहों अक्षरों के तत्व अब पाठकों की जानकारी के लिए इनके साथ क्रम से आगे लिख रहे हैं। वर्ण 'ह' का आकाश तत्व है एवं 'अ' का वायु तत्व। 'ल' भूमितत्व का प्रतिनिधित्व करता है तो 'र' अग्नि तत्व का प्रतीक है। दीर्घ ईकार भी अग्नि तत्व से सम्बन्धित वर्ण है एवं अनुस्वार (•) को भी शास्त्र में व्योम यानिकि आकाश तत्वीय वर्ण (अक्षर) ही माना गया है। आप यह प्रश्न कर सकते हैं कि ऊपर वर्णित मूल बीज मन्त्र के वर्णों में जल तत्व से सम्बन्धित तो कोई वर्णाक्षर है ही नहीं? अतः इस बीज मन्त्र से जल तत्व से सम्बन्धित पाताल लोक का स्तम्भन कैसे हो सकता है? जल के स्तम्भन के बिना पाताल का स्तम्भन सम्भवप्रद नहीं। अतः इसकी त्रैलोक्य स्तम्भिनी संज्ञा सही कैसे हो सकती है? आपका प्रश्न यथार्थ है। जिज्ञासा सही और शंका समुचित है जिसे नकारा नहीं जा सकता। परन्तु अपनी शंका के समाधानार्थ जिज्ञासा की पूर्ति एवं प्रश्न का उत्तर पाने के लिए बीजमन्त्र के संधिविच्छेद वाले छःहों वर्णाक्षर एवं उनके तत्वों पर जरा गौर फरमाइए। जिसमें एक वर्ण भूमितत्व का (ल) है एवं दूसरा एक वर्ण (अ) है वायु तत्व का। बाकि चार में से ह और अनुस्वार ये दोनों अक्षर आकाश तत्व वाले हैं तथा अवशिष्ट र और ई दोनों ही अक्षर अग्नि तत्व से सम्बन्धित हैं। यानि कि पांचों तत्व में से चार के तो "क्षिति, पावक, गगन एवं समीरा" वाले चार वर्णाक्षर ठीक हैं। परन्तु पांचवें जल तत्व से सम्बन्धित कोई वर्ण बीजमन्त्र के अक्षरों में नहीं है। हाँ, उस जल तत्व की जगह एक अग्नि और एक आकाश इस तरह दो तत्वों से सम्बन्ध रखने वाले दो वर्ण बीजमन्त्र में अधिक अवश्य हैं।

अब जरा बीजमंत्र के एक अग्नि और एक आकाश तत्व वाले अधिक वर्णों पर ध्यान दीजिए। जल का कोई अपना आधार (स्थान) नहीं है। जल का आधार यानिकि स्थान है पृथिवी या आकाश। पवन बेग (वायु तत्व) से वह चलायमान होता है। पृथिवी पर तो जलाकार में वह रहता ही है। परन्तु सूर्य की अग्नि अर्थात् सूर्य के प्रचण्ड प्रखर प्रकाश तेज (तापमान) से वाष्प बनकर वायु बेग के माध्यम से वह पृथिवी पर समुद्र में स्थित जल पृथ्वी से आकाश में उड़कर चला जाता है एवं ऊपर आकाश में ठण्डक पाकर वाष्प से पुनः जल का रूप धारण करके वायु के संयोग से वर्षा के रूप में आकाश से वह फिर पृथ्वी पर आ जाता है। निष्कर्ष यही निकलता है कि जल का अस्तित्व होते हुए भी उसका अपना कोई आधार नहीं है। पृथिवी, वायु, अग्नि और आकाश ही उसके आधार हैं। जब पृथिवी, वायु, अग्नि और आकाश इन चारों तत्वों का स्तम्भन हो जाएगा तो उन पर आश्रित पांचवें जल तत्व का स्तम्भन भी स्वतः ही हो जाएगा। यह ऊपर बताया ही जा चुका है कि सूर्य के प्रचण्ड एवं प्रखर तेज (तापमान) से जो कि स्वयं अग्नि तत्व ही है, पृथ्वी पर से जल वाष्प बनकर वायुबेग के माध्यम से आकाश में जाकर स्तम्भित हो जाता है। यानिकि जल का आधार अर्थात् निवास स्थान तो पृथ्वी और आकाश ही है। बीजमन्त्र में दो अग्नि एवं दो आकाश तत्वीय वर्णों का मौजूद होना भी परोक्ष रूप से चारों तत्वों के साथ पांचवें जल तत्व के स्तम्भन का ही स्पष्ट संकेत प्रदान करते हैं। क्योंकि अग्नि का प्रचण्ड तेज उसे सुखाकर वाष्प बनाकर आकाश में लेजाकर उसे स्थिर कर देता है। अतः बीजमंत्र में एक वर्ण अग्नि तत्व का एव एक अक्षर आकाश तत्व का जो ज्यादा है वे दोनों ही वर्ण बीजमंत्र के जप द्वारा उत्पन्न शक्ति से पांचवें जल तत्व को स्तम्भन की ही बात बताते हैं।

अब वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी जरा विशेष विवेचन कर लीजिए। जल अपने आपमें भी स्वतः एक इकाई नहीं है। बल्कि ऑक्सीजन एवं हाईड्रोजन इन दो वायु तत्वों का समिश्रण है। (आक्सीजन गैस) को अम्लजन एवं प्राणवायु तथा (हाइड्रोजन गैस) को उद्जन एवं जलजन कहा जाता है। जल में उपर्युक्त दोनों गैस कितनी मात्रा में मौजूद है, विज्ञान में इसका एक सूत्र है। यथा : ($H_2+O=Water$)। यानिकि दो भाग हाईड्रोजन एवं एक भाग ऑक्सीजन के वैज्ञानिक समिश्रण से पानी बनता है। इससे यह स्वतः सिद्ध हो जाता है कि जल अपने आप में एक स्वतन्त्र इकाई नहीं है बल्कि जलजन् एवं अम्लजन नामक दो वाष्पों (गैसों) का अनुपात भेद से एक समिश्रण है। ऑक्सीजन जिसे प्राणवायु भी कहते हैं इस चराचर जीव जगत् की वह प्राणशक्ति है, वह अग्नि तेज है जो इस जगत् को बचाए हुए है। अर्थात् अण्ड-पिण्ड एवं ब्रह्माण्ड के अस्तित्व का मूलभूत कारण प्राणशक्ति ही है जिसे विज्ञान की भाषा में ऑक्सीजन यानिकि प्राणवायु भी कहते हैं। जल में इस जीवनदायिनी प्राणवायु का अनुपात एक तिहाई (१/३) भाग है। इस प्राणवायु (आक्सीजन) के साथ जल में दो-तिहाई (२/३) भाग है (हाइड्रोजन) का। जिसे उद्जन या जलजन गैस भी कहा जाता है। उदकजल का ही पर्यायवाची शब्द है। यह उद्जन गैस हवा से भी बहुत हल्की होती है और आकाश में हवा के स्तर से भी ऊपरी स्तर पर रहती है। सिर्फ हवा से ही क्या, यह तो प्राण वायु (ऑक्सीजन) से भी हल्की होती है। इसके ठीक विपरीत (ऑक्सीजन) इससे भारी होती है। भारी होने के कारण पृथ्वी के पास (निकट) रहती है। क्योंकि यह पृथ्वी के प्राणियों की जीवनदायिनी प्राणवायु जो है। अतः यह पृथ्वी से विशेषतौर पर प्रभावित है।

विज्ञान यानिकि विशेष ज्ञान की वैज्ञानिक भाषा में जल के एक अणु में उद्जन (हाइड्रोजन) गैस के दो परमाणु होते हैं एवं प्राणवायु (ऑक्सीजन) का एक परमाणु होता है। जो कि जल के वैज्ञानिक सूत्र (H_2+O) से सुस्पष्ट और प्रयोगसिद्ध है। हाईड्रोजन गैस से ऑक्सीजन गैस १६ गुणा अधिक भारी होती है। इसके विपरीत ऑक्सीजन से हाईड्रोजन १६ गुणा अधिक हल्की होगी ही। भारी होने के कारण ऑक्सीजन पृथ्वी के पास रहती है और हल्की होने के फलस्वरूप हाईड्रोजन ऊपर आकाश में। प्राणवायु (ऑक्सीजन) हवा से भी भारी है। अतः पृथ्वी से सम्बन्धित ही नहीं उससे पूर्णतया प्रभावित भी है। उदाहरणस्वरूप यह एक जानी मानी सर्वविदित बात है कि जब हम किसी ऊँची जगह पहाड़ादि स्थानों पर जाते हैं तो ऑक्सीजन के सिलैंडर (CYLINDER) साथ लेकर जाते हैं क्योंकि वह प्राणवायु हवा से ऊपरी स्तह पर उपलब्ध नहीं होती है। हाईड्रोजन एवं ऑक्सीजन इन दोनों में परस्पर एक और विशेषता है जिसे हम इनकी भिन्नता भी कह सकते हैं। वह यह कि हाईड्रोजन स्वयं एक जलनशील तत्व है। जबकि ऑक्सीजन स्वयं जलती नहीं है बल्कि यह जलने में सहायता करती है। इससे भी यही सिद्ध होता है कि जल में (२।३) दो-तिहाई भाग हाईड्रोजन का है जो विशेष हल्कि होने के कारण ऊपर आकाश में ही रहती है। यह स्वयं जलनशील भी है। अतः अग्नि तत्व से परिपूर्ण है। इसका उद्जन एवं जलजन नाम भी जल से इसका घनिष्ठ और निकटतम सम्बन्ध होना सिद्ध होता है। एक तो हाईड्रोजन स्वयं जलनशील तत्व है। अतः अग्नितत्व का प्रतीक है। एवं दूसरे अधिक हल्की होने के कारण यह आकाश की ऊपरी स्तह पर रहती है। अतः आकाश तत्व का भी प्रतिनिधित्व करती है। जल में इसका अनुपात भी २।३ (दो-तिहाई) है और इसका नाम भी उद्जन यानिकि जलजन है। अतः उपर्युक्त विवेचित हमारे आलोच्य विषय श्रीबगला के बीजमंत्र में एक अग्नि और एक आकाश इन दोनों तत्वों के वर्णों का अधिक होना भी वैज्ञानिक सिद्धान्तानुसार यही सिद्ध करता है कि उस एकाक्षरी बीजमंत्र में जल का प्रतिनिधित्व करने वाला तत्व भी अन्य चारों तत्वों की तरह ही प्रत्यक्ष रूप से मौजूद है। जिससे जल तत्व का स्तम्भन भी सहज साध्य है। इसमें संशय नहीं।

अतः सार संक्षेप में निष्कर्षस्वरूप यह कहा जा सकता है कि एक पृथ्वी, एक वायु एवं दो अकाशीय तथा दो अग्नि इन चार तत्वों वाले छः वर्णों से निर्मित माता पीताम्बरा वालेएकाक्षरी बीजमंत्र में जल तत्व का कोई प्रत्यक्ष बीजाक्षर नहीं होने पर भी अग्नि और आकाश तत्व वाले एक-एक अधिक यानिकि बीजमंत्र में दो अधिक वर्णों की उपस्थिति जलतत्व के स्तम्भन को प्रत्यक्ष प्रमाणित करती है। जो कि तीसरे पाताल लोक का पूर्णतया प्रत्यक्ष प्रतीक है। उपर्युक्त वैज्ञानिक विवेचन से यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि चराचर जगत के मूल-भूत कारण इन पांचों तत्वों को स्तम्भित एवं स्थिर करने की क्षमता ऊपर वर्णित रेफाक्रान्त यानिकि जिस में रेफ का संयोग है उस बीजमंत्र में अवश्यमेव मौजूद है। रेफविहीन अर्थात् जिसमें रेफ (अर्द्ध र कार) नहीं है वह बीजमंत्र पंचतत्वोंको स्तम्भित नहीं कर सकता। क्योंकि रेफ के नहीं रहने के कारण उसमें एक तत्व के वर्ण की कमी रहेगी। उसके नहीं रहने से उसमें जल तत्व का अभाव रहेगा। अतः वह कार्यसिद्धि में बाधक ही होगा। अतः पांचों तत्वों को स्तम्भित करने में समर्थ होने के कारण इस महाविद्या में स्वर्ग मृत्यु और पाताल इन तीनों लोकों को भी स्तम्भित करने की शक्ति सामर्थ्य है जिसमें दो मत नहीं है। इसीलिए बगला का त्रैलोक्य स्तम्भिनी सिद्ध विधानाम भी सार्थक और यथार्थ है।

ऊपर के वैज्ञानिक विश्लेषण से यही सिद्ध होता है कि न तो ह+र+ईकार और अनुस्वार से निर्मित "माया-बीज" में "क्षिति-जल-पावक-गगन-समीरा" संज्ञक इन पञ्चतत्वों को स्तम्भित करने की शक्ति है और न ही ह+ल+ईकार और अनुस्वार से बने "स्थिर-बीज" में ही पांचों तत्वों को स्थिरता प्रदान करने की भी सामर्थ्य है। यह तो हम सब जानते ही हैं कि पाञ्चों तत्वों के स्तम्भन के बिना पाञ्चों तत्वों से संचालित ये तीनों लोक भी स्तम्भित कदापि नहीं हो सकते हैं। और तीनों लोकों के स्तम्भन के बिना इस महाविद्या का शास्त्र सम्मत "त्रैलोक्यस्तम्भिनी सिद्ध विद्या" नाम सार्थक नहीं हो सकता। तीनों लोकों के मूलभूत कारण पञ्चतत्वों को स्तम्भित करने की शक्ति एवं सामर्थ्य मात्र "स्तम्भ-माया" में ही है, जो कि पञ्चतत्वों से सम्बन्धित अक्षरों से यथा ह+अ+ल+र ईकार के संयोग से ही बनती है। अतः उपर्युक्त छःहों वर्णों से निर्मित स्तम्भ-माया शीर्षक बीजमंत्र ही तीनों लोकों को स्तम्भित कर सकता है।

... तथा प्राकृतिक प्रकोप जैसे वात-क्षोभादि, कृत्रिम प्रकोप जैसे शत्रु प्रकोपादि यानिकि यह दैहिक

उनकी वैज्ञानिक दृष्टि बहुत उच्चकोटि की थी।

हमारे ऋषि-महर्षि तत्व दृष्टा थे। अपने तपोबल से त्रिकालज्ञ थे। उनकी वैज्ञानिक दृष्टि बहुत उच्चकोटि की थी। आज के वैज्ञानिकों का वहाँ तक पहुँचना तो दूर—वे उस विज्ञान की जिस चरम सीमा और पराकाष्ठा पर वे पहुँच गए थे। आज के वैज्ञानिकों का वहाँ तक पहुँचना तो दूर—वे उस शाश्वत सत्य की कल्पना भी नहीं कर पा रहे हैं। उन्होंने आगम-शास्त्रों में रहस्य विद्याओं का वैज्ञानिक विवेचन इतना सुस्पष्ट नहीं किया है जितना कि आज के तर्कसम्मत प्रयोग सिद्ध वाले इस वैज्ञानिक युग में आवश्यक है। इसका भी कारण था। वह श्रद्धा- भक्ति-आस्था वाले बुद्धिगम्य ज्ञान का युग था। इसीलिए उन्होंने उस रहस्यपूर्ण विषय को भी आस्था-विश्वास वाली ज्ञान संगत भाषा में ही सूत्र रूप में लिपिबद्ध कर दिया। उदाहरण और प्रमाणस्वरूप अपने इसी प्रसंग को ही देख लीजिए। प्रमाणार्थ सांख्यायन तंत्र के बत्तीसवें पटल के निम्न श्लोक देखिए। यथा **"इयं शप्ता महाविद्या कीलिता स्तम्भिता सुत। रेफयोगान्महाशैव। निःशप्ता फलदायिनी ॥१६॥ रेफयुक्तं जपेद्विद्यां फल सिद्धिर्न संशयः। रेफहीना जपेद्विद्यां कोटि जपात्र सिद्ध्यति ॥१७॥ तस्माद् रेफस्तु संयोज्यः स्थिराधः परमेश्वर। सञ्जपेद प्रयतः पुत्र। तस्य सिद्ध भविष्यति ॥१८॥** उपर्युक्त तीनों श्लोकों का भावार्थ सुस्पष्ट है। कहने का तात्पर्य यही है कि तन्त्रशास्त्रों में इस प्रकार की रहस्यपूर्ण गुप्त बात बहुत ही गुप्त रूप से बताई गई है। सांकेतिक भाषा में। वह भी गुप्त संकेतों के माध्यम से। और वह भी प्रत्येक ग्रन्थों में यानिकि हरेक जगह नहीं मिलती है। जो मुख्य विषय है उससे सम्बन्धित मूलग्रन्थ में ही वह मिल सकती है और नहीं भी। अब इसी स्थिर-माया यानिकि स्तब्ध-माया बीज की ही बात ले लीजिए यह बगलामुखी से सम्बन्धित है। अतः इसका गुप्त भेद हमें मात्र सिर्फ सांख्यायन तन्त्र में ही मिलता है कि यह बीजमन्त्र शापित और कीलित है। रेफ का संयोग करने से ही यह फलदायिनी होती है। अन्यथा करोड़ों जप करने पर भी यह महाविद्या सिद्ध नहीं हो सकती।

इससे यह सिद्ध होता है कि हमारे तत्व दृष्टा महर्षियों को यह ज्ञान तो अवश्य था कि कौनसा बीजमंत्र शुद्ध -सही और फलदायक है। अन्यथा इस तरह की पूर्णतया यथार्थ पूर्ण शुद्ध वैज्ञानिक बात वे कैसे लिख सकते थे? हाँ, वह विज्ञान का नहीं ज्ञान का युग था। इसीलिए उन्होंने उस विज्ञान सम्मत ज्ञान को भी श्रद्धा-विश्वास वाली बुद्धिगम्य सूत्राकार सांकेतिक भाषा में ही लिखा। आज के आधुनिक व वैज्ञानिक युग में आवश्यक तर्क-सम्मत प्रयोगसिद्ध प्रामाणिक परिभाषा में नहीं क्योंकि उस समय तर्क नहीं विश्वास था। शंका नहीं जिज्ञासा थी। अनास्था नहीं आस्था थी। अश्रद्धा नहीं श्रद्धा थी। अतः उस श्रद्धा भक्ति आस्था-विश्वास वाले युग में उनको ज्ञान-सम्मत सिद्धान्तों का विज्ञान संगतभाष्य करने की आवश्यकता ही महसूस नहीं हुई होगी। परन्तु आज का युग उस समय के युग से विपरीतता थी है। आज के युग में, अश्रद्धा है, अनास्था है, शंका है और है अविश्वास। सब ज्ञान की जगह विज्ञान को महत्व देते हैं। विज्ञान यानिकि विशेष ज्ञान को। बुद्धि से नहीं तर्क से बात करते हैं। विश्वास नहीं करते, प्रयोग सिद्ध प्रत्यक्ष प्रमाण मांगते हैं। अतः आज सब सिद्धान्तों के वैज्ञानिक भाष्य आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी हो गए हैं। वैसे यह एक अच्छी विचारधारा चल निकली है। इससे हमारा बुरा नहीं भला ही होगा। काल भी परतों के नीचे दबा पड़ा हुआ ज्ञान उन्नति करेगा। उस पर प्रयोगात्मक कार्य होगा। लोगों को इस प्रकार के अनुसंधान कार्य, शोध और खोज से नये आयाम मिलेंगे। नया ज्ञान मिलेगा। नया पथ, नया जीवन और नूतन जीवन प्रणाली मिलेगी। लुप्त हो रहे ज्ञान का विकास होगा। अज्ञान का नाश और विज्ञान का प्रकाश होगा। मानव सुख-समृद्धि और शांति पायेगा। संतोष से परम सुखी होगा।

ऊपर वैज्ञानिक विवेचन से यह स्पष्ट और सिद्ध हो गया है कि महाविद्या भगवती बगलामुखी के एकाक्षरी बीजमंत्र की जितनी भी संज्ञाएं बताई गई है उनमें माया-बीज और स्थिर-बीज को छोड़कर बाकि सब एक समान ही है। यथा "मायाबीज" बगला का बीज नहीं है क्योंकि उसमें स्थिरता प्रदान करने वाला अक्षर है ही नहीं। उसी तरह "स्थिरबीज" में स्थिरता लाने वाला वर्ण तो है, परन्तु उसमें तीनों लोकों के मूल कारण भूत पाँचों तत्वों को स्तम्भित करने वाले सभी तत्वों के अक्षर नहीं है। अतः उसमें तीनों लोकों को स्तम्भित करने की शक्ति नहीं है। अतः वह बगला का सही बीजमन्त्र हो ही नहीं सकता। है, स्थिरबीज और स्थिरमाया में प्रभेद यह है कि स्थिरबीज में अग्नि तत्व से सम्बन्धित रेफ (अर्द्ध र) वर्ण नहीं है। जबकि स्थिरमाया में वह मौजूद है। स्थिरबीज में रेफ का संयोग करने से ही वह स्थिरमाया बन जाता है। यानिकि मायाबीज "ह्रीं" के साथ स्थिरता वाले "ल" का संयोग होते ही वह "स्थिरमाया" बन जाता है। इस स्थिरमाया वाले स्वरूप को ही भू-माया, स्तब्ध-माया, स्तम्भ-माया, रक्षाबीज एवं एकाक्षरी ब्रह्मास्त्र भी कहा जाता है।

भू-माया, स्तब्ध-माया, स्तम्भ-माया, रक्षाबीज एवं एकाक्षरी ब्रह्मास्त्र भी कहा जाता है।

कारण यही है कि मायाबीज मन्त्र के साथ "भू" यानि पृथ्वीबीज "ल" का योग होना ही उसे भू-माया की संज्ञा प्रदान कर देती है। स्तब्ध एवं स्तम्भ शब्द भी एक प्रकार से स्थिरता के ही पर्यायवादी एवं समान भावी शब्द है। इसीलिए इस बगला बीज को स्तब्ध माया एवं स्तम्भ माया भी कहा जाता है। पांचों तत्वों से संचालित तीनों लोकों को यह अपनी स्तम्भन शक्ति से स्तम्भित करने में समर्थ तो है ही, तथा प्राकृतिक प्रकोप जैसे वात-क्षोभादि, कृत्रिम प्रकोप जैसे शत्रु प्रकोपादि यानिकि यह दैहिक दैविक, भौतिक सभी प्रकार के संतापों का स्तम्भन करने में भी समर्थ है। इसीलिए सांख्यायन तन्त्र में "रक्षणी सकलापदाम्" (प० ३१-२३) कहकर इसे सब प्रकार की आपद-विपत्तों से रक्षा करने वाली कहा गया है एवं इसके बीज को रक्षा बीज।

अन्त में एक विशेष निवेदन के साथ इस प्रकरण को यहाँ विश्राम दिया जाता है कि बहुत से लोग अभी भी गुरु परम्परा के नाम पर अन्धानुकरण करके तन्त्र भेद की दुहाई देकर मायाबीज "ह्रीं" एवं स्थिरबीज "ह्लीं" को ही बगला का शुद्ध और सही बीजमंत्र मानते हैं। और पूर्वाग्रहग्रसित रूढ़िवाद की अन्धानुकरण भावना से उनका ही प्रचार प्रसार भी करते हैं। परन्तु मेरे सम्पर्क में ऐसे कई सज्जन आये हैं जिनका इसी लकीर के फकीर वाली अन्धानुसरण भावना के कारण समय और श्रम निष्फल और बेकार सिद्ध हुआ है। फलस्वरूप उनके मन में सत्यसिद्ध चमत्कारिक शास्त्र के प्रति अश्रद्धा और अनास्था पैदा हो गई। कहने का भावार्थ यही है कि यदि कोई साधक शास्त्र-विरुद्धाचरण से किसी गलत-सलत विधि-विधान का सहारा लेकर कोई सिद्धि पा लेता है इसका यह अर्थ कदापि नहीं हो जाता है कि दूसरे लोग भी उसका अन्धानुकरण करने लग जावें। यदि गलत-सलत विधि से ही सबने सिद्धि प्राप्त करली होती तो इन आगम ग्रन्थों का निर्माण ही क्यों होता? इतने प्रकार के नाना रकम के विधि-विधान पैदा ही कैसे और क्यों होते? यदि किसी एकाध ने भूल-भाल विधान से कोई सिद्धियाँ भी ली है तो उससे उस व्यक्ति एवं उस गलत विधि-विधान की श्रेष्ठता सिद्ध नहीं होती। उसे तो उस साधक पर उसके इष्ट देवता की अहैतुकी कृपा का फल ही कहा और माना जाएगा।

अतः तन्त्र-मन्त्र प्रेमी पाठकों से प्रार्थना है कि वे किसी का अन्धानुकरण न करें। अपने बुद्धि-विवेक का उपयोग करें। इधर-उधर से उटपटांग भूल-भाल छपी पुस्तकों पर विश्वास करके ही कोई सकाम अनुष्ठानादि न करें। किसी तन्त्र-मर्मज्ञ सुयोग्य सिद्ध-साधक के सान्निध्य में ही किसी भी प्रकार का प्रयोगात्मक अनुष्ठान करें। अन्यथा उल्टे बांस बरेली को लद जावेंगे। निम्बू महंगे हो जावेंगे। लेने के देने पड़ जावेंगे। यहाँ तक कि जान के लाले भी पड़ जावें तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। अतः सतर्क और सावधान रहे, तान्त्रिक साधन में। यही हमारा अनुभवसिद्ध परामर्श और सलाह है प्रिय पाठकों को। **किमधिकम् ॥ (अगले वर्ष इसकी समापन किश्त होगी)**

"डा. गो. गिरिधारी लाल का दुःखद देहावसान"

सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री और अ. भा. ज्योतिष परिषद् के अध्यक्ष डा. गो. गिरिधारी लाल का गत दि. १ दिसम्बर ८८ को अ. भा. आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली में हृदय-गति के अवरुद्ध हो जाने से ७० वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। गोस्वामी जी कई धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारी रहे। आपके पितृव्य सुप्रसिद्ध सनातन-धर्मी नेता त्याग-मूर्ति गो. गणेशदत्त जी महाराज ने पंजाब में सर्वप्रथम 'श्रीविश्वविजय पञ्चांग' को सनातन-धर्म प्रतिनिधि-सभा पंजाब से सम्मानित किया। लाहौर पाकिस्तान में चले जाने के बाद ३ वर्ष तक 'श्रीविश्वविजय पञ्चांग' श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब नई दिल्ली से प्रकाशित करवाया। उस समय स. ध. प्र. सभा के प्रकाशन-मंत्री गो. गिरिधारी लाल जी थे। संस्कृत और ज्योतिष के विद्वान होने के नाते अनेक राजनेताओं के साथ उनके घनिष्ठ सम्बन्ध रहे। गोस्वामी जी के तीन सुयोग्य सुपुत्र हैं, आशा है ये सब अपने पिता के छोड़े धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक कार्य को पूर्ण करके–"पितरि प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्व देवताः।" के अनुसार पिता की वास्तविक प्रसन्नता प्राप्त करेंगे।

'श्री विश्वविजय पञ्चांग' और 'ज्योतिष्मती' परिवार की ओर से उस दिवंगत दिव्यात्मा को स्नेह सुमनाञ्जलि समर्पित करता हूं।

–हरदेव शर्मा त्रिवेदी

है। जबकि रेफाक्रान्त यानिकि रेफ के सहित वाले बीज मन्त्र "ह्लीं" में तीनों लोकों को बनाने वाले पाञ्चों तत्व हमें मौजूद मिलते है।

बीजमन्त्र "ह्लीं" का सन्धि-विच्छेद करने से जो इसका स्वरूप बनता है, वह अग्रांकित है। यथा ह+अ+ल+र+ईकार+अनुस्वार। एकाक्षरी बीजमन्त्र में छः अक्षरों का संयोग है जैसा कि ऊपर वर्णन किया जा चुका है। तन्त्र-मन्त्र शास्त्रीय प्रमाणानुसार इन छ हो अक्षरों के तत्व अब पाठकों की जानकारी के लिए इनके साथ क्रम से आगे लिख रहे है। वर्ण 'ह' का आकाश तत्व है एवं 'अ' का वायु तत्व। 'ल' भूमितत्व का प्रतिनिधित्व करता है तो 'र' अग्नि तत्व का प्रतीक है। दीर्घ ईकार भी अग्नि तत्व से सम्बन्धित वर्ण है एव अनुस्वार (•) को भी शास्त्र में व्योम यानिकि आकाश तत्वीय वर्ण (अक्षर) ही माना गया है। आप यह प्रश्न कर सकते है कि ऊपर वर्णित मूल बीज मन्त्र के वर्णों में जल तत्व से सम्बन्धित तो कोई वर्णाक्षर है ही नहीं? अतः इस बीज मन्त्र से जल तत्व से सम्बन्धित पाताल लोक का स्तम्भन कैसे हो सकता है? जल के स्तम्भन के बिना पाताल का स्तम्भन सम्भवप्रद नहीं। अतः इसकी त्रैलोक्य स्तम्भिनी संज्ञा सही कैसे हो सकती है? आपका प्रश्न यथार्थ है। जिज्ञासा सही और शंका समुचित है जिसे नकारा नहीं जा सकता। परन्तु अपनी शंका के समाधानार्थ जिज्ञासा की पूर्ति एवं प्रश्न का उत्तर पाने के लिए बीजमन्त्र के संधिविच्छेद वाले छ हो वर्णाक्षर एवं उनके तत्वो पर जरा गौर फरमाइए। जिसमें एक वर्ण भूमितत्व का (ल) है एव दूसरा एक वर्ण (अ) है वायु तत्व का। बाकि चार में से ह और अनुस्वार ये दोनों अक्षर आकाश तत्व वाले है तथा अवशिष्ट र और ई दोनों ही अक्षर अग्नि तत्व से सम्बन्धित है। यानि कि पांचों तत्व में से चार के तो "क्षिति, पावक, गगन एवं समीरा" वाले चार वर्णाक्षर ठीक है। परन्तु पांचवें जल तत्व से सम्बन्धित कोई वर्ण बीजमन्त्र के अक्षरों में नहीं है। हाँ, उस जल तत्व की जगह एक अग्नि और एक आकाश इस तरह दो तत्वों से सम्बन्ध रखने वाले दो वर्ण बीजमन्त्र में अधिक अवश्य है।

अब जरा बीजमंत्र के एक अग्नि और एक आकाश तत्व वाले अधिक वर्णों पर ध्यान दीजिए। जल का कोई अपना आधार (स्थान) नहीं है। जल का आधार यानिकि स्थान है पृथिवी या आकाश। पवन वेग (वायु तत्व) से वह चलायमान होता है। पृथिवी पर तो जलाकार में वह रहता ही है। परन्तु सूर्य की अग्नि अर्थात् सूर्य के प्रचण्ड प्रखर प्रकाश तेज (तापमान) से वाष्प बनकर वायु वेग के माध्यम से वह पृथिवी पर समुद्र में स्थित जल पृथ्वी से आकाश में उड़कर चला जाता है एवं ऊपर आकाश में ठण्डक पाकर वाष्प से पुनः जल का रूप धारण करके वायु के संयोग से वर्षा के रूप में आकाश से वह फिर पृथ्वी पर आ जाता है। निष्कर्ष यही निकलता है कि जल का अस्तित्व होते हुए भी उसका अपना कोई आधार नहीं है। पृथिवी, वायु, अग्नि और आकाश ही उसके आधार है। जब पृथिवी, वायु, अग्नि और आकाश इन चारो तत्वों का स्तम्भन हो जाएगा तो उन पर आश्रित पांचवें जल तत्व का स्तम्भन भी स्वतः ही हो जाएगा। यह ऊपर बताया ही जा चुका है कि सूर्य के प्रचण्ड एवं प्रखर तेज (तापमान) से जो कि स्वयं अग्नि तत्व ही है, पृथ्वी पर से जल वाष्प बनकर वायुवेग के माध्यम से आकाश में जाकर स्तम्भित हो जाता है। यानिकि जल का आधार अर्थात् निवास स्थान तो पृथ्वी और आकाश ही है। बीजमन्त्र में दो अग्नि एवं दो आकाश तत्वीय वर्णों का मौजूद होना भी परोक्ष रूप से चारों तत्वों के साथ पांचवें जल तत्व के स्तम्भन का ही स्पष्ट संकेत प्रदान करते है। क्योंकि अग्नि का प्रचण्ड तेज उसे सुखाकर वाष्प बनाकर आकाश में लेजाकर उसे स्थिर कर देता है। अतः बीजमंत्र में एक वर्ण अग्नि तत्व का एवं एक अक्षर आकाश तत्व का जो ज्यादा है वे दोनों ही वर्ण बीजमंत्र के जप द्वारा उत्पन्न शक्ति से पांचवें जल तत्व को स्तम्भन की ही बात बताते है।

अब वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी जरा विशेष विवेचन कर लीजिए। जल अपने आपमें भी स्वतः एक इकाई नहीं है। बल्कि ऑक्सीजन एवं हाईड्रोजन इन दो वायु तत्वों का समिश्रण है। (आक्सीजन गैस) को अम्लजन एवं प्राणवायु तथा (हाइड्रोजन गैस) को उद्‌जन एव जलजन कहा जाता है। जल में उपर्युक्त दोनों गैस कितनी मात्रा में मौजूद है, विज्ञान में इसका एक सूत्र है। यथा : ($H_2+O=Water$)। यानिकि दो भाग हाईड्रोजन एवं एक भाग ऑक्सीजन के वैज्ञानिक समिश्रण से पानी बनता है। इससे यह स्वतः सिद्ध हो जाता है कि जल अपने आप में एक स्वतन्त्र इकाई नहीं है बल्कि जलजन् एवं अम्लजन नामक दो वाष्पों (गैसों) का अनुपात भेद से एक संमिश्रण है। ऑक्सीजन जिसे प्राणवायु भी कहते हैं इस चराचर जीव जगत् की वह प्राणशक्ति है, यह अग्नि तेज है जो इस जगत् को बचाए हुए है। अर्थात् अण्ड-पिण्ड एवं ब्रह्माण्ड के अस्तित्व का मूलभूत कारण प्राणशक्ति ही है जिसे विज्ञान की भाषा में ऑक्सीजन यानिकि प्राणवायु भी कहते है। जल में इस जीवनदायिनी प्राणवायु का अनुपात एक तिहाई (१/३) भाग है। इस प्राणवायु (आक्सीजन) के साथ जल में दो-तिहाई (२/३) भाग है (हाइड्रोजन) का। जिसे उद्‌जन या जलजन गैस भी कहा जाता है। उदकजल का ही पर्यायवाची शब्द है। यह उद्‌जन गैस हवा से भी बहुत हल्की होती है और आकाश में हवा के स्तर से भी ऊपरी स्तर पर रहती है। सिर्फ हवा से ही क्या, यह तो प्राण वायु (ऑक्सीजन) से भी हल्की होती है। इसके ठीक विपरीत (ऑक्सीजन) इससे भारी होती है। भारी होने के कारण पृथ्वी के पास (निकट) रहती है। क्योंकि यह पृथ्वी के प्राणियों की जीवनदायिनी प्राणवायु जो है। अतः यह पृथ्वी से विशेषतौर पर प्रभावित है।

विज्ञान यानिकि विशेष ज्ञान की वैज्ञानिक भाषा में जल के एक अणु में उद्‌जन (हाइड्रोजन) गैस के दो परमाणु होते है एवं प्राणवायु (ऑक्सीजन) का एक परमाणु होता है। जो कि जल के वैज्ञानिक सूत्र (H_2+O) से सुस्पष्ट और प्रयोगसिद्ध है। हाईड्रोजन गैस से ऑक्सीजन गैस १६ गुणा अधिक भारी होती है। इसके विपरीत ऑक्सीजन से हाईड्रोजन १६ गुणा अधिक हल्की होगी ही। भारी होने के कारण ऑक्सीजन पृथ्वी के पास रहती है और हल्की होने के फलस्वरूप हाईड्रोजन ऊपर आकाश में। प्राणवायु (ऑक्सीजन) हवा से भी भारी है। अतः पृथ्वी से सम्बन्धित ही नहीं उससे पूर्णतया प्रभावित भी है। उदाहरणस्वरूप यह एक जानी मानी सर्वविदित बात है कि जब हम किसी ऊँची जगह पहाड़ादि स्थानों पर जाते है तो ऑक्सीजन के सिलैंडर (CyLiNDER) साथ लेकर जाते है क्योंकि वह प्राणवायु हवा से ऊपरी सतह पर उपलब्ध नहीं होती है। हाईड्रोजन एवं ऑक्सीजन इन दोनों में परस्पर एक और विशेषता है जिसे हम इनकी भिन्नता भी कह सकते है। वह यह कि हाईड्रोजन स्वयं एक जलनशील तत्त्व है। जबकि ऑक्सीजन स्वयं जलती नहीं है बल्कि यह जलने में सहायता करती है। इससे भी यही सिद्ध होता है कि जल में (२।३) दो-तिहाई भाग हाईड्रोजन का है जो विशेष हल्कि होने के कारण ऊपर आकाश में ही रहती है। यह स्वयं जलनशील भी है। अतः अग्नि तत्व से परिपूर्ण है। इसका उद्‌जन एवं जलजन नाम भी जल से इसका घनिष्ठ और निकटतम सम्बन्ध होना सिद्ध होता है। एक तो हाईड्रोजन स्वय जलनशील तत्व है। अतः अग्नितत्व का प्रतीक है। एवं दूसरे अधिक हल्की होने के कारण यह आकाश की ऊपरी सतह पर रहती है। अतः आकाश तत्व का भी प्रतिनिधित्व करती है। जल में इसका अनुपात भी २।३ (दो-तिहाई) है और इसका नाम भी उद्‌जन यानिकि जलजन है। अतः उपर्युक्त विवेचित हमारे आलोच्य विषय श्रीबगला के बीजमंत्र में एक अग्नि और एक आकाश इन दोनों तत्वों के वर्णों का अधिक होना भी वैज्ञानिक सिद्धान्तानुसार यही सिद्ध करता है कि उस एकाक्षरी बीजमंत्र में जल का प्रतिनिधित्व करने वाला तत्व भी अन्य चारों तत्वों की तरह ही प्रत्यक्ष रूप से मौजूद है। जिससे जल तत्व का स्तम्भन भी सहज साध्य है। इसमें संशय नहीं।

अतः सार संक्षेप में निष्कर्षस्वरूप यह कहा जा सकता है कि एक पृथ्वी, एक वायु एवं दो अकाशीय तथा दो अग्नि इन चार तत्वों वाले छः वर्णों से निर्मित माता पीताम्बरा वालेएकाक्षरी बीजमंत्र में जल तत्व का कोई प्रत्यक्ष बीजाक्षर नहीं होने पर भी अग्नि और आकाश तत्व वाले एक-एक अधिक यानिकि बीजमंत्र में दो अधिक वर्णों की उपस्थिति जलतत्व के स्तम्भन को प्रत्यक्ष प्रमाणित करती है। जो कि तीसरे पाताल लोक का पूर्णतया प्रत्यक्ष प्रतीक है। उपर्युक्त वैज्ञानिक विवेचन से यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि चराचर जगत के मूल-भूत कारण इन पांचों तत्वों को स्तम्भित एवं स्थिर करने की क्षमता ऊपर वर्णित रेफाक्रान्त यानिकि जिस में रेफ का संयोग है उस बीजमंत्र में अवश्यमेव मौजूद है। रेफविहीन अर्थात् जिसमें रेफ (अर्द्ध र कार) नहीं है वह बीजमंत्र पंचतत्वोंको स्तम्भित नहीं कर सकता। क्योंकि रेफ के नहीं रहने के कारण उसमें एक तत्व के वर्ण की कमी रहेगी। उसके नहीं रहने से उसमें जल तत्व का अभाव रहेगा। अतः वह कार्यसिद्धि में बाधक ही होगा। अतः पांचों तत्वों को स्तम्भित करने में समर्थ होने के कारण इस महाविद्या में स्वर्ग मृत्यु और पाताल इन तीनों लोकों को भी स्तम्भित करने की शक्ति सामर्थ्य है जिसमें दो मत नहीं है। इसीलिए बगला का त्रैलोक्य स्तम्भिनी सिद्ध विधानाम भी सार्थक और यथार्थ है।

ऊपर के वैज्ञानिक विश्लेषण से यही सिद्ध होता है कि न तो ह+र+ईकार और अनुस्वार से निर्मित "माया-बीज" में "क्षिति-जल-पावक-गगन-समीरा" संज्ञक इन पञ्चतत्वों को स्तम्भित करने की शक्ति है और न ही ह+ल+ईकार और अनुस्वार से बने "स्थिर-बीज" में ही पांचों तत्वों को स्थिरता प्रदान करने की भी सामर्थ्य है। यह तो हम सब जानते ही है कि पाञ्चों तत्वों के स्तम्भन के बिना पाञ्चों तत्वों से संचालित ये तीनों लोक भी स्तम्भित कदापि नहीं हो सकते है। और तीनों लोकों के स्तम्भन के बिना इस महाविद्या का शास्त्र सम्मत "त्रैलोक्यस्तम्भिनी सिद्ध विद्या" नाम सार्थक नहीं हो सकता। तीनों लोकों के मूलभूत कारण पञ्चतत्वों को स्तम्भित करने की शक्ति एवं सामर्थ्य मात्र "स्तम्भ-माया" में ही है, जो कि पञ्चतत्वों से सम्बन्धित अक्षरों से यथा ह+अ+ल+र ईकार के संयोग से ही बनती है। अतः उपर्युक्त छः हो वर्णों से निर्मित स्तम्भ-माया शीर्षक बीजमन्त्र ही तीनों लोकों को स्तम्भित कर सकता है।

हमारे ऋषि-महर्षि तत्व द्रष्टा थे। अपने तपोबल से त्रिकालज्ञ थे। उनकी वैज्ञानिक दृष्टि बहुत उच्चकोटि की थी। विज्ञान की जिस चरम सीमा और पराकाष्ठा पर वे पहुँच गए थे। आज के वैज्ञानिकों का वहाँ तक पहुँचना तो दूर—वे उस शाश्वत सत्य की कल्पना भी नहीं कर पा रहे हैं। उन्होंने आगम-शास्त्रों में रहस्य विद्याओं का वैज्ञानिक विवेचन इतना सुस्पष्ट नहीं किया है जितना कि आज के तर्कसम्मत प्रयोग सिद्ध वाले इस वैज्ञानिक युग में आवश्यक है। इसका भी कारण था। वह श्रद्धा-भक्ति-आस्था वाले बुद्धिगम्य ज्ञान का युग था। इसीलिए उन्होंने उस रहस्यपूर्ण विषय को भी आस्था-विश्वास वाली ज्ञान संगत भाषा में ही सूत्र रूप में लिपिबद्ध कर दिया। उदाहरण और प्रमाणस्वरूप अपने इसी प्रसंग को ही देख लीजिए। प्रमाणार्थ सांख्यायन तंत्र के बत्तीसवें पटल के निम्न श्लोक देखिए। यथा : **''इयं शप्ता महाविद्या कीलिता स्तम्भिता सुत। रेफयोगान्महाशैव। निःशप्ता फलदायिनी ॥१६॥ रेफयुक्तं जपेद्विद्यां फल सिद्धिर्न संशयः। रेफहीना जपेद्विद्यां कोटि जपान्न सिद्ध्यति ॥१७॥ तस्माद् रेफस्तु संयोज्यः स्थिराधः परमेश्वर। सञ्जपेद प्रयतः पुत्र। तस्य सिद्ध भविष्यति ॥१८॥** उपर्युक्त तीनों श्लोकों का भावार्थ सुस्पष्ट है। कहने का तात्पर्य यही है कि तन्त्रशास्त्रों में इस प्रकार की रहस्यपूर्ण गुप्त बात बहुत ही गुप्त रूप से बताई गई है। सांकेतिक भाषा में। वह भी गुप्त संकेतों के माध्यम से। और वह भी प्रत्येक ग्रन्थों में यानिकि हरेक जगह नहीं मिलती है। जो मुख्य विषय है उससे सम्बन्धित मूलग्रन्थ में ही वह मिल सकती है और नहीं भी। अब इसी स्थिर-माया यानिकि स्तब्ध-माया बीज की ही बात ले लीजिए। यह बगलामुखी से सम्बन्धित है। अतः इसका गुप्त भेद हमें मात्र सिर्फ सांख्यायन तन्त्र में ही मिलता है कि यह बीजमन्त्र शापित और कीलित है। रेफ का संयोग करने से ही यह फलदायिनी होती है। अन्यथा करोड़ों जप करने पर भी यह महाविद्या सिद्ध नहीं हो सकती।

इससे यह सिद्ध होता है कि हमारे तत्व द्रष्टा महर्षियों को यह ज्ञान तो अवश्य था कि कौनसा बीजमंत्र शुद्ध -सही और फलदायक है। अन्यथा इस तरह की पूर्णतया यथार्थ पूर्ण शुद्ध वैज्ञानिक बात वे कैसे लिख सकते थे? हाँ, वह विज्ञान का नहीं ज्ञान का युग था। इसीलिए उन्होंने उस विज्ञान सम्मत ज्ञान को भी श्रद्धा-विश्वास वाली बुद्धिगम्य सूत्राकार सांकेतिक भाषा में ही लिखा। आज के आधुनिक व वैज्ञानिक युग में आवश्यक तर्क-सम्मत प्रयोगसिद्ध प्रामाणिक परिभाषा में नहीं क्योंकि उस समय तर्क नहीं विश्वास था। शंका नहीं जिज्ञासा थी। अनास्था नहीं आस्था थी। अश्रद्धा नहीं श्रद्धा थी। अतः उस श्रद्धा भक्ति आस्था-विश्वास वाले युग में उनको ज्ञान-सम्मत सिद्धान्तों का विज्ञान संगतभाष्य करने की आवश्यकता ही महसूस नहीं हुई होगी। परन्तु आज का युग उस समय के युग से विपरीतार्थी है। आज के युग में, अश्रद्धा है, अनास्था है, शंका है और है अविश्वास। सब ज्ञान की जगह विज्ञान को महत्व देते हैं। विज्ञान यानिकि विशेष ज्ञान को। बुद्धि से नहीं तर्क से बात करते हैं। विश्वास नहीं करते, प्रयोग सिद्ध प्रत्यक्ष प्रमाण मांगते हैं। अतः आज सब सिद्धान्तों के वैज्ञानिक भाष्य आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी हो गए हैं। वैसे यह एक अच्छी विचारधारा चल निकली है। इससे हमारा बुरा नहीं भला ही होगा। काल भी धरती के नीचे दबा पड़ा हुआ ज्ञान उन्नति करेगा। उस पर प्रयोगात्मक कार्य होगा। लोगों को इस प्रकार के अनुसंधान कार्य, शोध और खोज से नये आयाम मिलेंगे। नया ज्ञान मिलेगा। नया पथ, नया जीवन और नूतन जीवन प्रणाली मिलेगी। लुप्त हो रहे ज्ञान का विकास होगा। अज्ञान का नाश और विज्ञान का प्रकाश होगा। मानव सुख-समृद्धि और शांति पायेगा। संतोष से परम सुखी होगा।

ऊपर वैज्ञानिक विवेचन से यह स्पष्ट और सिद्ध हो गया है कि महाविद्या भगवती बगलामुखी के एकाक्षरी बीजमंत्र की जितनी भी संज्ञाएँ बताई गई हैं उनमें माया-बीज और स्थिर-बीज को छोड़कर बाकि सब एक समान ही है। यथा "मायाबीज" बगला का बीज नहीं है क्योंकि उसमें स्थिरता प्रदान करने वाला अक्षर है ही नहीं। उसी तरह "स्थिरबीज" में स्थिरता लाने वाला वर्ण तो है, परन्तु उसमें तीनों लोकों के मूल कारण भूत पाँचों तत्वों को स्तम्भित करने वाले सभी तत्वों के अक्षर नहीं है। अतः उसमें तीनों लोकों को स्तम्भित करने की शक्ति नहीं है। अतः वह बगला का सही बीजमंत्र हो ही नहीं सकता। हाँ, स्थिरबीज और स्थिरमाया में प्रभेद यह है कि स्थिरबीज में अग्नि तत्व से सम्बन्धित रेफ (अर्द्ध र) वर्ण नहीं है। जबकि स्थिरमाया में वह मौजूद है। स्थिरबीज में रेफ का संयोग करने से ही वह स्थिरमाया बन जाता है। यानिकि मायाबीज "ह्रीं" के साथ स्थिरता वाले "ल" का संयोग होते ही वह "स्थिरमाया" बन जाता है। इस स्थिरमाया वाले स्वरूप को ही भू-माया, स्तब्ध-माया, स्तम्भ-माया, रक्षाबीज एवं एकाक्षरी ब्रह्मास्त्र भी कहा जाता है।

कारण यही है कि मायाबीज मंत्र के साथ 'भू' यानि पृथ्वीबीज 'ल' का योग होना ही उसे भू-माया की संज्ञा प्रदान कर देती है। स्तब्ध एवं स्तम्भ शब्द भी एक प्रकार से स्थिरता के ही पर्यायवाची एवं समान भावी शब्द है। इसीलिए इस बगला बीज को स्तब्ध माया एवं स्तम्भ माया भी कहा जाता है। पाँचों तत्वों से संचालित तीनों लोकों को यह अपनी स्तम्भन शक्ति से स्तम्भित करने में समर्थ तो है ही, तथा प्राकृतिक प्रकोप जैसे वात-क्षोभादि, कृत्रिम प्रकोप जैसे शत्रु प्रकोपादि यानिकि यह दैहिक दैविक, भौतिक सभी प्रकार के संतापों का स्तम्भन करने में भी समर्थ है। इसीलिए सांख्यायन तन्त्र में "रक्षणी सकलापदाम्" (प० ३१-२३) कहकर इसे सब प्रकार की आपद-विपत्ती से रक्षा करने वाली कहा गया है एवं इसके बीज को रक्षा बीज।

अन्त में एक विशेष निवेदन के साथ इस प्रकरण को यहाँ विश्राम दिया जाता है कि बहुत से लोग अभी भी गुरु परम्परा के नाम पर अन्धानुकरण करके तन्त्र भेद की दुहाई देकर मायाबीज "ह्रीं" एवं स्थिरबीज "ह्लीं" को ही बगला का शुद्ध और सही बीजमंत्र मानते हैं। और पूर्वाग्रहग्रसित रूढ़िवाद की अन्धानुकरण भावना से उनका ही प्रचार प्रसार भी करते हैं। परन्तु मेरे सम्पर्क में ऐसे कई सज्जन आये हैं जिनका इसी लकीर के फकीर वाली अन्धानुसरण भावना के कारण समय और श्रम निष्फल और बेकार सिद्ध हुआ है। फलस्वरूप उनके मन में सत्यसिद्ध चमत्कारिक शास्त्र के प्रति अश्रद्धा और अनास्था पैदा हो गई। कहने का भावार्थ यही है कि यदि कोई साधक शास्त्र-विरुद्धाचरण से किसी गलत-सलत विधि-विधान का सहारा लेकर कोई सिद्धि पा लेता है इसका यह अर्थ कदापि नहीं हो जाता है कि दूसरे लोग भी उसका अन्धानुकरण करने लग जावें। यदि गलत-सलत विधि से ही सबने सिद्धि प्राप्त करली होती तो इन आगम ग्रन्थों का निर्माण ही क्यों होता? इतने प्रकार के नाना रकम के विधि-विधान पैदा ही कैसे और क्यों होते? यदि किसी एकाध ने भूल-भाल विधान से कोई सिद्धियाँ भी ली है तो उससे उस व्यक्ति एवं उस गलत विधि-विधान की श्रेष्ठता सिद्ध नहीं होती। उसे तो उस साधक पर उसके इष्ट देवता की अहैतुकी कृपा का फल ही कहा और माना जाएगा।

अतः तन्त्र-मन्त्र प्रेमी पाठकों से प्रार्थना है कि वे किसी का अन्धानुकरण न करें। अपने बुद्धि-विवेक का उपयोग करें। इधर-उधर से उटपटांग भूल-भाल छपी पुस्तकों पर विश्वास करके ही कोई सकाम अनुष्ठानादि न करें। किसी तन्त्र-मर्मज्ञ सुयोग्य सिद्ध-साधक के सान्निध्य में ही किसी भी प्रकार का प्रयोगात्मक अनुष्ठान करें। अन्यथा उल्टे बांस बरेली को लद जावेंगे। निम्बू महंगे हो जावेंगे। लेने के देने पड़ जावेंगे। यहाँ तक कि जान के लाले भी पड़ जावें तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। अतः सतर्क और सावधान रहें, तान्त्रिक साधन में। यही हमारा अनुभवसिद्ध परामर्श और सलाह है प्रिय पाठकों को। **किमधिकम् ॥ (अगले वर्ष इसकी समापन किश्त होगी)**



"डा. गो. गिरिधारी लाल का दुःखद देहावसान"

सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री और अ. भा. ज्योतिष परिषद के अध्यक्ष डा. गो. गिरिधारी लाल का गत दि. १ दिसम्बर ८८ को अ. भा. आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली में हृदय-गति के अवरुद्ध हो जाने से ७० वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। गोस्वामी जी कई धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारी रहे। आपके पितृव्य सुप्रसिद्ध सनातन-धर्मी नेता त्याग-मूर्ति गो. गणेशदत्त जी महाराज ने पंजाब में सर्वप्रथम 'श्रीविश्वविजय पञ्चांग' को सनातन-धर्म प्रतिनिधि-सभा पंजाब से सम्मानित किया। लाहौर पाकिस्तान में चले जाने के बाद ३ वर्ष तक 'श्रीविश्वविजय पञ्चांग' श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब नई दिल्ली से प्रकाशित करवाया। उस समय स. ध. प्र. सभा के प्रकाशन-मंत्री गो. गिरिधारी लाल जी थे। संस्कृत और ज्योतिष के विद्वान होने के नाते अनेक राजनेताओं के साथ उनके घनिष्ठ सम्बन्ध रहे। गोस्वामी जी के तीन सुयोग्य सुपुत्र हैं, आशा है ये सब अपने पिता के छोड़े धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक कार्य को पूर्ण करके—"पितरि प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्व देवताः।" के अनुसार पिता की वास्तविक प्रसन्नता प्राप्त करेंगे।

'श्री विश्वविजय पञ्चांग' और 'ज्योतिष्मती' परिवार की ओर से उस दिवंगत दिव्यात्मा को स्नेह सुमनाञ्जलि समर्पित करता हूं।

—हरदेव शर्मा त्रिवेदी

पादबद्धोऽक्षर समस्तान्त्री लय समन्वितः ।
शोकार्तस्य प्रवृत्तोमे श्लोको भवतु नान्यथा ॥

ये सब शास्त्रीय प्रमाण प्रस्तुत करने का अभिप्राय सिर्फ इतना ही है कि एक तो सुधी पाठकवृन्द जो श्रीगोपाल जी की श्लोक वाली मनगढंत परिभाषा से भ्रमित हुए हैं उनके भ्रम का समूल निवारण हो जावे, दूसरे विद्वान लेखक को भी अपनी अप्रमाणिक परिभाषा की जगह शास्त्रीय सिद्धान्त का सत्य ज्ञान हो जावे, जिसके फलस्वरूप उनकी रूढिवादी बुद्धि जो क्रमशः दुराग्रही होकर हठवादी होती जा रही है वह परिष्कृत और परिमार्जित होकर विकासोन्मुखी हो सके। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि उपर्युक्त श्लोक शब्द को सही शब्दार्थ एवं प्रामाणिक भावार्थ तथा सैद्धान्तिक परिभाषा को सम्यक् भाव से जान लेने के बाद अब आप अपनी श्लोक वाली परिभाषा 'जो अपने आप में पूर्ण अर्थ रखता है वह श्लोक अपने आप में पूर्ण अर्थ तो एक गद्यांश या वाक्य भी रखता है, तो क्या वह श्लोक कहलावेगा?' 'ऋषिरुवाच' भी एक श्लोक है, श्लोक के टुकड़े भी पूर्णश्लोक कहलावेंगे, आदि में समुचित परिवर्तन परिवर्द्धन और संशोधन करलेंगे। तथा श्लोक की शुद्ध शास्त्रीय परिभाषा के अनुकूल ही फिर से 'सप्तशती नामकी सार्थकता' विषय पर ठंडे दिमाग से चिन्तन मनन करके आज सप्तशती के सात सौ श्लोकों में से एक सौ जितने जो प्रचलित पाठ में अनुपलब्ध हैं अर्थात् कम पाये जाते हैं, उनकी खोज करके सप्तशती के पूरे सात सौ श्लोक जो शाक्त जगत् के सम्मुख उपस्थापित कर इसके सप्तशती नाम की सार्थकता को सिद्ध करने की कृपा अवश्य करेंगे।

४ 'उवाच' की पुनरावृत्तियां यथोचित हैं, आपके चौथे विभाग के शीर्षक से ही आपका आशय स्पष्ट हो जाता है कि आपनेकसेराजी के द्वारा पाठ की सम्पूर्णता पर लगाए गए प्रश्नचिन्ह का अपनी पूर्वाग्रहग्रसित बुद्धि से ही समाधान करने के लिए सब कुछ लिखा है। आपने उनके द्वारा दर्शायी गयी खामियों और त्रुटियों पर विचार करने की कुछ चेष्टा ही नहीं की, श्री कसेरा जी के द्वारा ग्रन्थ संशोधन में आवश्यक आधुनिक उन्नत धारणा के तकनीकी सिद्धान्तों के प्रयोग द्वारा विवेचित एवं विश्लेषित नियमानुसार प्रस्तुत शोध पत्र को एक नास्तिक का प्रलाप समझकर ही शायद आप उसे घृणा की दृष्टि से देखने लग गए हैं, जबकि उनके लेखों और प्रयासों में लुप्त शास्त्रीय शास्त्रोद्धार करने वाली उनकी प्रतिभा और प्रयत्नों की झलक साफ दृष्टिगोचर होती है। आस्तिक भावों के दर्शन भी उनके लेख में स्पष्ट होते हैं। उनके द्वारा शास्त्रीय प्रमाणों एवं सैद्धान्तिक आधारों पर प्रस्तुत किए शोधकार्य को यदि आप अपनी रूढिवादी बुद्धि के अलावा लुप्त शास्त्रोद्धारक वृत्ति से परखने की कृपा करते तो आपको इस प्रकार की अप्रमाणिक खींचातानी वाली बातों का सहारा कदापि लेना नहीं पड़ता। देवी महात्म्य के प्रथम वक्ता मेधा ऋषि एवं श्रोता राजा सुरथ एवं समाधि वैश्य हैं, तथा द्वितीय वक्ता मुनी मार्कण्डेय एवं श्रोता प्रोष्टुकीजी वाले आपके विषय केअनुसार तो प्रथमाध्याय की संख्या ६४ से लेकर अन्तिम १३ हवें अध्याय की संख्या ५ तक का पाठ जो कि आदिवक्ता मेधा ऋषि द्वारा आदि श्रोताद्वय सुरथ और समाधि को सुनाया गया था वही यथार्थ रूप में देवी महात्म्य होना चाहिए क्योंकि प्रथमोऽध्याय की संख्या १ से ३८ तक का अंश मार्कण्डेय के द्वारा प्रोष्टूकीजी को सुनाया गया था, जो कि प्रथम कथाकार मेधाऋषि के द्वारा कथित देवी महात्म्य के अन्तर्गत नहीं आता है, उसी तरह संख्या ३९ से संख्या ६२ तक का अंश ऋषि मेधा और राजा सुरथ का वार्तालाप मात्र है, जिसे कि देवी माहात्म्य की पृष्टभूमि या भूमिका ही कहा जा सकता है देवी महात्मय नहीं। इसी तरह अन्तिम १३वें अध्याय की संख्या ६ से २९ यानि कि अध्याय के अन्तिम तक का प्रसंग भी मेधाऋषि द्वारा कथित देवी माहात्म्य नहीं माना जाना चाहिए। आगे-पीछे के इतने श्लोकों को देवी माहात्म्य से अलग कर देने पर संख्या सात सौ से कम हो जायेगी तब फिर इसकी सप्तशती संज्ञा कैसे होगी? यह आपके सोचने का विषय है।

अब रही बात 'उवाचों' की पुनरावृतियों की। जिन्हें आप विशेष घटना या बात घटने पर दृश्य या वातावरण परिवर्तन पर चरम बिन्दु आदि कह कर उन पुनरावृतियों को शास्त्रीय नियमों के अनुसार सत्य सिद्ध नहीं कर सकते। कसेराजी ने सकारण अध्यायानुसार जो प्रमाण हमारे सामने रखें हैं वे अपने आप में स्वतः सिद्ध हैं। प्रथम अध्याय की संख्या ९९ व १०२ में विषय में श्यामजी ने जो विवेचन प्रस्तुत किया है उसकी सत्यता को नकारा नहीं जा सकता। वहाँ संख्या १०२ वाले 'ऋषिरुवाच' की पुनरावृति को कथा का चरम बिन्दु कहकर कदापि स्वीकार नहीं किया जा सकता। उपर्युक्त ९९ व १०२ वाली संख्या के दोनों 'ऋषिरुवाच' को आप तो स्वीकार करते ही हैं परन्तु अस्वीकार कसेराजी भी नहीं करते। फर्क सिर्फ इतना सा है कि आप उन दोनों को वैसे ही ठीक मानते हैं जबकि श्री कसेराजी उन दोनों को सही मानते हुए उन दोनों के बीच में काल के कुठाराघात से लुप्त हुए अंश को प्रमाणस्वरूप अन्य हस्तलिखित पुस्तकों से प्रस्तुत कर लुप्तांश का उद्धार कर पाठ की सम्पूर्णता प्रदान करने का प्रयत्न करते हुए नजर आते हैं जो उचित भी है।

दूसरा उदाहरण दशवें अध्याय की संख्या ६ के श्लोक के पूर्व 'ऋषिरुवाच' होना अनिवार्य है, अन्यथा प्रसंग भ्रम में व्यवधान घटने के साथ साथ सदर्भ सहित उसका अर्थ भी संगत नहीं बैठता। कसेराजी की उक्ति यथार्थ और सैद्धान्तिक है। उस संख्या ६ के श्लोक को आपने मार्कण्डेयजी के द्वारा प्रोष्टुकीजी का कहा हुआ बतलाया है जो कि न तो युक्तिसंगत है और नहीं प्रामाणिक है। किन्तु आप को तो संख्या (७०१) सात सौ एक हो जाने का डर है अतः आप स्वीकार नहीं करते। जबकि यह 'ऋषिरुवाच' लगाना कसेराजी की मनगढ़त कल्पना नहीं है, बल्कि सप्तशती की कई प्राचीन टीकाओं में और हस्तलिखित पुस्तकों में मौजूद है। इसे अस्वीकार करना दुराग्रह और हठवादिता नहीं तो और क्या है? जबकि अधिक प्राप्त श्लोकों, अर्द्धश्लोकों और उवाचों की क्रमशः तालिका श्री कसेराजी ने विभिन्न प्रामाणिक काव्य ग्रन्थों के आधार पर ही प्रस्तुत की है, अपनी मनमानी कल्पनाओं से नहीं उसे स्वीकार करना या न करना आपकी इच्छा पर निर्भर करता है, जिसमें आप ही क्या समस्त व्यक्ति स्वतन्त्र हैं, वे माने या न मानें। परन्तु शास्त्रीय प्रमाणों को न मानना भी बुद्धिमानी नहीं कहलाता यह सार्वभौम सिद्धान्त है।

आगे के अनुच्छेद में आपने जो लिखा है कि मार्कण्डेय के बाद एक और विद्वान हुए हैं जिन्होंने सप्तशती में 'मार्कण्डेय उवाच' भी लगाए और सप्तशती की रचना की, एकदम निराधार और अशुद्ध है। सप्तशती के विषय में जब आपको ऐसी साधारण सी बात का भी ज्ञान नहीं है कि सप्तशती के तीसरे वक्ता और श्रोता कौन हैं, जिनका प्रामाणिक विवेचन श्री कसेराजी अपने लेख के उत्तरार्द्ध भागान्तर्गत परिशिष्ट में कर चुके हैं। सप्तशती विषयक आपके अपूर्ण ज्ञान की सत्यता स्वतः सिद्ध होती है। अतः आपके अनर्गल और असैद्धान्तिक प्रलाप को शायद ही कोई बुद्धिमान पाठक स्वीकार करेगा। कारण प्रत्यक्ष है। श्री कसेराजी ने मार्कण्डेय पुराण के उद्धरण सहित साफ बताया है कि देवी माहात्म्य के तीसरे वक्ता विन्ध्याचल पर्वत निवासी द्रोण नामक पक्षी के पिंगाक्ष, विबोध, सुपुत्र और सम्मुख नाम के चारों पुत्र थे जिन्होंने इस देवी माहात्म्य को सुप्रसिद्ध पुराणकार व्यासजी के सुयोग्य शिष्य जैमिनी मुनि को तीसरी बार सुनाया था, उन पक्षियों के द्वारा ही जैमिनी मुनि के प्रति कथित देवी माहात्म्य कथानक में 'मार्कण्डेय उवाच' लगाए गए, न कि किसी अन्य सप्तशतीकार के द्वारा जिसकी आपने कल्पना की है। क्यों है न यह बात प्रमाणिक और सैद्धान्तिक धारा पर आधारित। आदि वक्ता मेधाऋषि द्वारा कथित देवी माहात्म्य में किसी अन्य सप्तशतीकार ने मार्कण्डेय वाले प्रसंग को नहीं जोड़ा, बल्कि यह उन चारों पक्षियों का काम है जो पुराण प्रसिद्ध है।

अपने लेख के पहले विभाग सप्तशती नामकी सार्थकता में आपने लिखा है कि "सप्तशतीकार ने सात सौ श्लोकों के आधार पर सप्तशती नाम रखा है।" तथा फिर आपही लिखते हैं कि "मेधाऋषि ने राजा सुरथ को जो देवी माहात्म्य सुनाया था वह सात सौ श्लोकों का नहीं था, तथा मार्कण्डेय ने जो कथा लिखी वह भी ७०० श्लोकों की नहीं थी," हुई न यह विरोधाभास वाली बात। एक जगह आप एक बात सिद्ध करते हैं तथा उसी प्रसंग में आगे आप उसके विपरीत लिखकर विरोधाभास खड़ा कर देते हैं। यह पाठकों को पथभ्रष्ट करना नहीं तो और क्या है? उसी अनुच्छेद में पुनः 'वह सात सौ श्लोकों वाली श्री दुर्गासप्तशती के नाम से विख्यात हुई, वाक्य तो लिखते हैं, परन्तु सात सौ श्लोक पूरे नहीं गिना पाते हैं। श्री कसेरा भी तो सात सौ श्लोकों वाली देवी माहात्म्य यानि कि दुर्गासप्तशती के सम्पूर्ण पाठ की खोज में संलग्न हैं। न्यायानुसार तो आपको उनका सहयोग करना चाहिए, जबकि आपकी तरफ से सहयोग का तो प्रश्न नहीं उठता है, आप तो उनके अनुसंधान को आगे बढ़ने देने की अपेक्षा उल्टे टांग घसीट कर पीछे खींचने की भरसक कोशिश में लगे हुए हैं। जबकि अपने लेख के अन्त में उन शाक्त जगत् के अधिकारी विद्वानों और सिद्ध साधकों से प्रचलित अपूर्ण पाठ को सम्पूर्णता प्रदान करने के लिए सादर निवेदन सहित सहयोग की कामना के साथ समाधान की भी मांग की है। मां से सम्बन्धित इस पावन यज्ञ में पूर्वाग्रहग्रसित, रूढिवादितापूर्ण आपकी हठधर्मिता वाली समिधा को क्या कभी मां स्वीकार करेगी, जिसके माहात्म्य को आप सम्पूर्णता प्रदान करने में सहयोग देने की अपेक्षा उसे अपूर्ण ही रखना चाहते हैं।

५ अपने परिचर्चात्मक लेख के पूर्वार्द्ध भाग के अन्तिम पांचवें विभाग 'श्री दुर्गासप्तशती' एक पूर्ण रचना है, शीर्षक के अन्तर्गत आपने लिखा है कि "इस तथ्य का कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है कि सप्तशती का कुछ अंश नष्ट हो गया।" आपकी इस युक्ति के प्रत्युत्तर में सिर्फ इतना लिख देना ही पर्याप्त होगा कि 'देवी माहात्म्य' के प्रचलित सम्पूर्ण स्थल में कई स्थलों में प्रसंग क्रम में व्यवधान पड़ना, कथाक्रम में रुकावट या बाधा आनाआदि सब अपने आप में पूर्ण वैज्ञानिक प्रमाण हैं कि अमुक-अमुक जगह का कथाक्रम पूरा नहीं है। उदाहरण के तौर पर श्री कसेरा ने अपने शोधपत्र में जिन 'उवाचों' की पुनरावृतियों की ओर ध्यान आकर्षित किया है वहाँ उन्होंने यह स्पष्ट उल्लेख कर दिया है। यथा मन्त्र संख्या ९९ व १०२ के दोनों 'ऋषिरुवाच' ठीक हैं, किन्तु कालक्रम से किसी भी कारण वश इनके बीच का जो अंश लुप्त हो गया था वह आज प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों में देखने को मिलता है आदि-आदि। इस पर भी जब कि आज लुप्तांश उपलब्ध होता है तो इससे अधिक और कौन सा वैज्ञानिक प्रमाण आपको चाहिए। क्या यह आपका दुराग्रह नहीं है?

उसके आगे ही आपने लिखा है कि "विद्या का सदैव विकास होता आया है।" श्री कसेराजी भी तो अपूर्ण सप्तशती को सम्पूर्णता प्रदान कर उसका विकास ही तो करना चाहते हैं। जैसा कि ऋषिमेधा के बाद मार्कण्डेय मुनि ने और मार्कण्डेयजी के बाद तीसरे वक्ता उन पक्षीवृन्द ने किया था जिसे आप सहर्ष स्वीकार भी कर चुके हैं। कसेराजी भी अपने प्रयासों से इसे सम्पूर्ण बनाकर विकसित ही करना चाहते हैं, न कि सीमा में बाँधकर सीमित करना। जो आप चाहते हैं, आपने लिखा तो ठीक है, परन्तु कर उनका उल्टा रहे हैं यानि कि आपकी कथनी और करनी में विपरीतता है, अन्तर है, प्रभेद और फर्क है। इस भिन्नता का कारण अवश्य ही आपकी पूर्वाग्रहग्रसित, रूढ़िवादितापूर्ण भ्रमित बुद्धि है जो अपनी हठवादिता पर अकारण ही अड़ी हुई है। और दूसरों को भी भ्रम में डाल पथभ्रष्ट कर रही है।

उपर्युक्त प्रसंग में आपका यह लिखना युक्तिसंगत है कि "विद्या ब्राह्यरूप से नष्ट हो सकती है, परन्तु आन्तरिक रूप से नहीं।" इसके आगे आपका यह तर्क कि जिन्हें सप्तशती याद थी तो क्या उनमें से ऐसा भी कोई विद्वान नहीं बचा होगा जो उस विद्या (सप्तशती) की रक्षा कर सकता? आपका लिखना पूर्णरूप से प्रामाणिक और वैज्ञानिक तर्कसंगत है जो कि कसेराजी के द्वारा प्रतिपादित सप्तशती विषयक शोधपत्र का खुले शब्दों में स्पष्ट रूप से जोरदार समर्थन करता है। आपने तो कसेराजी के पक्ष में यह ठोस प्रमाण प्रस्तुत कर उनकी बात का पुष्टिकरण किया है। यदि कोई ऐसा विद्वान बचा नहीं होता जिसे सम्पूर्ण सप्तशती याद थी या उसके पास थी तो आज कसेराजी को जो अधिक पाठ मिला है वह उन्हें कैसे और कहाँ से मिलता? अवश्य ही कोई ऐसा विद्वान जिसे सम्पूर्ण सप्तशती याद थी या उसके पास थी। वह कालचक्र के कुठाराघात से किसी भी प्रकार बच गया था। जिसके फलस्वरूप ही आज श्री कसेराजी को उसका सम्पूर्ण पाठ प्राप्त हुआ है। आपकी यह वैज्ञानिक कल्पना कसेराजी के अन्वेषण कार्य का स्पष्टभावेन पुष्टिकरण करती है। फिर भी आप अपनी हठवादिता पर क्यों अड़े हुए हैं। यह समझ में नहीं आ रहा है।

जैसा अन्तिम परिच्छेद में आपने लिखा है कि अलग-अलग ग्रन्थकारों के विचार परस्पर न मिलने के कारण उनमें सहमति न होने के कारण उनकी सप्तशती प्रचलित नहीं हुई। परन्तु यह तो सर्वविदित और सर्वमान्य सिद्धान्त है कि सप्तशतीकार कोई एक ही व्यक्ति था, जिसने मार्कण्डेय पुराण के देवी माहात्म्य को 'सप्तशती' का रूप प्रदान किया था, न कि अनेक व्यक्ति थे। जब सप्तशतीकार एक ही व्यक्ति था तो अन्य किस के विचारों से सहमत होता? यह सब सिर्फ आपकी कोरी कल्पना की तथ्यहीन उड़ान मात्र है। यह तो कसेराजी अपने लेख में स्पष्ट लिख ही चुके हैं कि जिस समय मार्कण्डेय पुराण से देवीमाहात्म्य लेकर सप्तशती का संकलन और सम्पादन किया गया उस समय सप्तशतीकार को वे लुप्तअंश नहीं मिले जो किसी कारणवशात् लुप्त हो गये थे, उसी लुप्तांश रहित देवी माहात्म्य को देवी भक्त ने सप्तशती का कलेवर प्रदान किया और मार्कण्डेय पुराण में पूर्ण श्लोकों में उपलब्ध पाठ को खींचतान कर ७०० (सात सौ) की संख्या की कल्पना की एवं सप्तशती नाम दिया, आदि-आदि। परन्तु मार्कण्डेय पुराण के देवी माहात्म्य का जो अंश लुप्त हो गया था, वही तो आज उपलब्ध हुआ है, फिर उसको "अधिकस्य अधिक फलम्।" सिद्धान्तानुसार स्वीकार करने में क्या अड़चन है? क्या बाधा या आपत्ति है? इस पक्ष पर भी विचार विमर्श करना चाहिए।

श्री कसेराजी को मिले पाठ पर विचार-विमर्श करने की अभी कोई आवश्यकता नहीं है, कारण उनको क्या मिला क्या नहीं, उसकी हमें जानकारी भी नहीं है, परन्तु कसेरा ने अपने लेख में जिन सुप्राचीन सप्तशती की टीका भाष्यतन्त्र ग्रन्थ पुराणादि का उल्लेख कर उन सबसे संग्रहीत और अधिक प्राप्त श्लोक, अर्द्धश्लोक व उवाचादि की जो तालिका प्रस्तुत की है जिसमें उनका अपना कुछ भी नहीं है कम से कम उस सुप्राप्य प्राचीन सामग्री पर तो चिन्तन मनन करना ही चाहिए, कि वह कहाँ तक ठीक है। सिर्फ कसेराजी ही नहीं उनके जैसे बहुत से शक्ति-उपासक हैं, जो श्री दुर्गासप्तशती के प्रचलित पाठ को अपूर्ण ही मानते हैं। हम सबको पारस्परिक सहयोग से ऐसे प्रयत्न करने चाहिए जिससे कि सप्तशती की अपूर्णता या सम्पूर्णता को लेकर शाक्तजगत् में जो भ्रान्तियां व्याप्त हैं, शंकाएँ फैली हुई हैं उनका वैज्ञानिक शोध पद्धति के अनुसार शास्त्रीय सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से सम्पूर्णभाव से सर्वमान्य समाधान हो सके। तब ही यह समस्या हल होगी।

श्री कसेराजी के सप्तशती शोध कार्य से भी अधिक मैं व्यक्तिगत रूप से श्री श्री गोपालजी त्रिवेदी का विशेष रूप से आभारी हूँ जिनके सप्तशती अनुसंधान शीर्षक परिचर्यात्मक लेख के पूर्वार्द्ध भाग को पढ़कर उसमें वर्णित भ्रान्तियों का निराकरण करने के लिए मुझे इस लेख को प्रस्तुत करने की प्रेरणा मिली। मुझे आत्मविश्वास है कि श्री गोपालजी के उस पूर्वाग्रहग्रसित लेख को पढ़कर सुधी पाठकों के मन में जो भ्रान्तियां पैदा हुई होंगी इस लेख से उनका निवारण हो जायेगा। इससे प्रिय पाठकों का कुछ भी सही मार्गदर्शन मिला तो मेरा यह लघु प्रयास भविष्य में भी मुझे पाठकों का पथ प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित करता रहेगा। वि. सं. २०४० के इसी पञ्चाङ्ग में प्रकाशित श्री गोपालजी के परिक्रमात्मक लेख के उत्तरार्द्ध भाग का शास्त्रीय सिद्धान्तानुसार वैज्ञानिक विवेचन आगामी वर्ष इसी पञ्चाङ्ग के अनुसन्धान सदन में प्रस्तुत करूंगा।

विधिवक्ता श्यामजी एवं वैज्ञानिक गोपालजी दोनों को सिर्फ उनके लेखों के माध्यम से ही जानता हूँ। परन्तु विवेचन दोनों के लेख पढ़कर ही जैसा मुझे उचित लगा प्रस्तुत किया है। अपने भावों की अभिव्यक्ति करने के लिए मैंने स्वतन्त्रता से काम लिया है और बहुत ही संयत भाषा में लिखने का प्रयास किया है। इस पर भी अवश्यकतानुसार कुछ ऐसे शब्द जो व्यक्तिगत आक्षेप से लगे लेख में आ गये हैं। अतः कोई भी पाठक बन्धु उनका अन्यथा अर्थ नहीं लगायेंगे। यह मेरी सबसे विनम्र कामना है। मेरा उद्देश्य किसी भी भावना को ठेस पहुंचाना या अपमान करना नहीं बल्कि विषय वस्तु के शोध परक सत्यासत्य का अन्वेषण करना रहा है। इस पर भी लिखने में यदि कुछ भूल चूक हो गयी हो तो पाठकों से अग्रिम क्षमा याचना करता हूँ। क्षमा करेंगे

सम्पर्क सूत्र:— ज्योतिष अनुसंधान कार्यालय लक्ष्मणगढ़, जिला-सीकर (राजस्थान)।

हर्षल नेपच्यून प्लूटो के क्रान्ति और शर (प्रातः ५ घं० ३० मि० भा० स्टै० टा०) संवत् २०४६ वि०

तारीख	हर्षल				नेपच्यून				प्लूटो			
सन्	क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर	
१९८९-९०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०
अप्रैल १	द. २३	३५	द. ०	१५	द. २१	५७	उ. ०	५५	द. ०	४०	उ. १६	१५
अप्रैल १५	२३	३५	०	१५	२१	५७	०	५५	०	३२	१६	१८
मई १	२३	३६	०	१५	२१	५७	०	५५	०	३२	१६	१८
मई १५	२३	३७	०	१६	२१	५७	०	५६	०	२४	१६	२०
जून १	२३	३८	०	१६	२१	५८	०	५६	०	१८	१६	१८
जून १५	२३	३९	०	१६	२१	५९	०	५६	०	१४	१६	१५
जुलाई १	२३	४१	०	१६	२२	०१	०	५६	०	१४	१६	१०
जुलाई १५	२३	४२	०	१६	२२	०३	०	५६	०	१७	१६	०२
अगस्त १	२३	४२	०	१६	२२	०५	०	५६	०	२२	१५	५५
अगस्त १५	२३	४२	०	१६	२२	०७	०	५६	०	३१	१५	४५
सित. १	२३	४२	०	१६	२२	०९	०	५५	०	४२	१५	३७
सित. १५	२३	४२	०	१६	२२	११	०	५५	०	५५	१५	२८
अक्टू. १	२३	४२	०	१६	२२	१२	०	५४	१	०८	१५	२१
अक्टू. १५	२३	४२	०	१६	२२	१२	०	५३	१	२२	१५	१५
नव. १	२३	४१	०	१६	२२	१२	०	५३	१	३५	१५	१०
नव. १५	२३	४०	०	१६	२२	१०	०	५२	१	४८	१५	०८
दिस. १	२३	३९	०	१६	२२	०८	०	५२	१	५८	१५	०७
दिस. १५	२३	३७	०	१६	२२	०६	०	५१	२	०७	१५	०९
जन. १	२३	३५	०	१६	२२	०३	०	५१	२	११	१५	१२
जन. १५	२३	३३	०	१६	२२	००	०	५१	२	१५	१५	१७
फर. १	२३	३०	०	१७	२१	५७	०	५१	२	१५	१५	२३
फर. १५	२३	२८	०	१७	२१	५४	०	५१	२	१२	१५	३०
मार्च १	२३	२६	०	१७	२१	५२	०	५१	२	०७	१५	३७
मार्च १५	द. २३	२५	द. ०	१७	द. २१	५०	उ. ०	५१	द. २	००	उ. १५	४४

प्लास्टिक कवर : ६ ००

उ=उत्तर सूर्य और चन्द्रमा की क्रान्ति तथा चन्द्रशर (प्रातः ५ घं० ३० मि० भा० स्टैं० टा०) संवत् २०४६ वि० द=दक्षिण

अप्रैल सन् १९८९ ई०

ता०	सू० क्रां० अं०	सू० क्रां० क०	चं० क्रा० अं०	चं० क्रा० क०	चं० शर अं०	चं० शर क०
१	उ. ४	२७	द. २२	४९	द. २	५३
२	४	५०	१८	०७	१	४५
३	५	१३	१२	१६	द. ०	२९
४	५	३६	द. ५	३६	उ. ०	५१
५	५	५९	उ. १	३०	२	०९
६	६	२२	८	३६	३	१९
७	६	४४	१५	१०	४	१४
८	७	०७	२०	४६	४	५१
९	७	२९	२४	५७	५	०८
१०	७	५२	२७	२७	५	०५
११	८	१४	२८	०८	४	४४
१२	८	३६	२७	०८	४	०८
१३	८	५८	२४	४२	३	२०
१४	९	१९	२१	०७	२	२४
१५	९	४१	१६	४२	१	२३
१६	१०	०२	११	४३	उ. ०	१९
१७	१०	२३	६	२२	द. ०	४५
१८	१०	४५	उ. ०	५०	१	४६
१९	११	०५	द. ४	४४	२	४३
२०	११	२६	१०	०८	३	३२
२१	११	४७	१५	१२	४	१३
२२	१२	०७	१९	४४	४	४२
२३	१२	२७	२३	३०	५	००
२४	१२	४७	२६	१५	५	०३
२५	१३	०७	२७	४७	४	५३
२६	१३	२६	२७	५४	४	२८
२७	१३	४५	२६	३१	३	४९
२८	१४	०५	२४	३०	२	५७
२९	१४	२३	१९	२९	१	५५
३०	उ. १४	४२	द. १४	११	द. ०	४४

मई सन् १९८९ ई०

ता०	सू० क्रां० अं०	सू० क्रां० क०	चं० क्रा० अं०	चं० क्रा० क०	चं० शर अं०	चं० शर क०
१	उ. १५	००	द. ८	००	उ. ०	३१
२	१५	१८	१	१६	१	४६
३	१५	३६	उ. ५	४०	२	५५
४	१५	५४	१२	२२	३	५३
५	१६	११	१८	२२	४	३५
६	१६	२८	२३	१२	४	५८
७	१६	४५	२६	२८	५	००
८	१७	०१	२७	५४	४	४४
९	१७	१८	२७	३०	४	१०
१०	१७	३४	२५	२८	३	२४
११	१७	४९	२२	०९	२	२९
१२	१८	०५	१७	५३	१	२८
१३	१८	२०	१२	५९	उ. ०	२४
१४	१८	३४	७	४१	द. ०	४०
१५	१८	४९	उ. २	११	१	४१
१६	१९	०३	द. ३	२१	२	३७
१७	१९	१७	८	४६	३	२६
१८	१९	३०	१३	५५	४	०७
१९	१९	४३	१८	३५	४	३७
२०	१९	५६	२२	३३	४	५५
२१	२०	०८	२५	३५	५	००
२२	२०	२०	२७	२५	४	५०
२३	२०	३२	२७	५१	४	२५
२४	२०	४३	२६	४६	३	४७
२५	२०	५४	२४	१३	२	५६
२६	२१	०५	२०	२०	१	५५
२७	२१	१५	१५	१९	द. ०	४७
२८	२१	२५	९	२८	उ. ०	२६
२९	२१	३५	द. ३	०३	१	३८
३०	२१	४४	उ. ३	३७	२	४६
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

जून सन् १९८९ ई०

ता०	सू० क्रां० अं०	सू० क्रां० क०	चं० क्रा० अं०	चं० क्रा० क०	चं० शर अं०	चं० शर क०
१	उ. २२	०१	उ. १६	१७	उ. ४	२७
२	२२	०९	२१	२८	४	५४
३	२२	१७	२५	१८	५	०१
४	२२	२४	२७	२७	४	४८
५	२२	३१	२७	४५	४	१८
६	२२	३८	२६	१७	३	३४
७	२२	४४	२३	२१	२	३८
८	२२	५०	१९	१८	१	३६
९	२२	५५	१४	२९	उ. ०	३१
१०	२३	००	९	१३	द. ०	३४
११	२३	०४	उ. ३	४२	१	३७
१२	२३	०८	द. १	५२	२	३४
१३	२३	१२	७	२०	३	२५
१४	२३	१५	१२	३३	४	०७
१५	२३	१८	१७	२१	४	३८
१६	२३	२१	२१	३१	४	५७
१७	२३	२३	२४	५०	५	०३
१८	२३	२४	२७	०१	४	५५
१९	२३	२५	२७	५०	४	३२
२०	२३	२६	२७	०८	३	५४
२१	२३	२७	२४	५३	३	०३
२२	२३	२६	२१	१३	२	०१
२३	२३	२६	१६	२२	द. ०	५१
२४	२३	२५	१०	३८	उ. ०	२३
२५	२३	२४	द. ४	१९	१	३६
२६	२३	२२	उ. २	१५	२	४४
२७	२३	२०	८	४५	३	४३
२८	२३	१८	१४	५१	४	२८
२९	२३	१५	२०	१०	४	५७
३०	उ. २३	११	उ. २४	१९	उ. ५	०७

जुलाई सन् १९८९ ई०

सू० क्रां० अं०	सू० क्रां० क०	चं० क्रा० अं०	चं० क्रा० क०	चं० शर अं०	चं० शर क०	ता०
उ. २३	०८	उ. २६	५७	उ. ४	५८	१
२३	०३	२७	५२	४	३२	२
२२	५९	२७	००	३	५०	३
२२	५४	२४	३३	२	५५	४
२२	४९	२०	४९	१	५३	५
२२	४३	१६	११	उ. ०	४६	६
२२	३७	१०	५८	द. ०	२२	७
२२	३०	उ. ५	२६	१	२८	८
२२	२३	द. ०	११	२	२८	९
२२	१६	५	४४	३	२१	१०
२२	०८	११	०३	४	०६	११
२२	००	१५	५९	४	४०	१२
२१	५२	२०	२१	५	०२	१३
२१	४३	२३	५७	५	११	१४
२१	३४	२६	३०	५	०६	१५
२१	२४	२७	४८	४	४६	१६
२१	१४	२७	३५	४	११	१७
२१	०४	२५	४८	३	२१	१८
२०	५४	२२	२९	२	१९	१९
२०	४३	१७	५१	द. १	०८	२०
२०	३१	१२	११	उ. ०	०९	२१
२०	२०	द. ५	५०	१	२६	२२
२०	०८	उ. ०	५०	२	३८	२३
१९	५५	७	२७	३	४०	२४
१९	४३	१३	४१	४	२९	२५
१९	३०	१९	०९	५	००	२६
१९	१६	२३	३३	५	१४	२७
१९	०३	२६	३१	५	०९	२८
१८	४९	२७	५२	४	४६	२९
१८	३४	२७	३०	४	०७	३०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

उ=उत्तर — **सूर्य और चन्द्रमा की क्रान्ति तथा चन्द्र शर (प्रातः ५ घं० ३० मि० भा० स्टैं० टा०) संवत् २०४६ वि०** — द=दक्षिण

ता०	अगस्त सन् १९८९ ई०						सितम्बर सन् १९८९ ई०						अक्टूबर सन् १९८९ ई०						नवम्बर सन् १९८९ ई०						ता०
	सू० क्रां० अं०	क०	चं० क्रा अं०	क०	चं० शर अं०	क०	सू० क्रां० अं०	क०	चं० क्रां० अं०	क०	चं० शर अं०	क०	सू० क्रां० अं०	क०	चं० क्रां० अं०	क०	चं० शर अं०	क०	सू० क्रां० अं०	क०	चं० क्रां० अं०	क०	चं० शर अं०	क०	
१	उ. १८	०५	उ २२	११	उ. २	१४	उ. ८	२२	उ. ३	२१	द. १	५५	द. ३	०६	द. ११	३५	द. ४	११	द. १४	२१	द. २५	४९	द. ४	५४	१
२	१७	५०	१७	४९	उ. १	०७	८	००	द. २	१८	२	५४	३	२९	१६	२५	४	४२	१४	४०	२७	१७	४	३४	२
३	१७	३४	१२	४५	द. ०	०२	७	३८	७	४८	३	४४	३	५२	२०	३९	५	०१	१४	५९	२७	२८	४	०२	३
४	१७	१८	७	१६	१	१०	७	१६	१३	००	४	२५	४	१५	२४	०३	५	०७	१५	१८	२६	१७	३	१८	४
५	१७	०२	उ १	३७	२	१४	६	५४	१७	४३	४	५४	४	३८	२६	२७	५	००	१५	३६	२३	४५	२	२३	५
६	१६	४६	द. ४	००	३	११	६	३२	२१	४६	५	११	५	०२	२७	३९	४	३९	१५	५५	१९	५९	१	२१	६
७	१६	२९	९	२६	३	५९	६	१०	२४	५७	५	१५	५	२५	२७	३१	४	०५	१६	१२	१५	०८	द. ०	१२	७
८	१६	१३	१४	३१	४	३६	५	४७	२७	०४	५	०४	५	४७	२५	५९	३	१९	१६	३०	९	२४	उ. १	००	८
९	१५	५६	१९	०४	५	०२	५	२४	२७	५५	४	४०	६	१०	२३	०२	२	२१	१६	४७	द. ३	०२	२	१०	९
१०	१५	३८	२२	५४	५	१५	५	०२	२७	२०	४	०१	६	३३	१८	४८	१	१४	१७	०५	उ. ३	४०	३	१४	१०
११	१५	२१	२५	४८	५	१५	४	३९	२५	१५	३	०९	६	५६	१३	२६	द. ०	०१	१७	२१	१०	२०	४	०७	११
१२	१५	०३	२७	३३	४	५९	४	१६	२१	४२	२	०५	७	१८	७	११	उ. १	१५	१७	३८	१६	३१	४	४३	१२
१३	१४	४५	२७	५५	४	२९	३	५३	१६	४९	द. ०	५२	७	४१	द. ०	२३	.२	२८	१७	५४	२१	४३	४	५९	१३
१४	१४	२६	२६	४४	३	४५	३	३०	१०	५३	उ. ०	२६	८	०३	उ. ६	३५	३	३३	१८	१०	२५	२६	४	५४	१४
१५	१४	०८	२३	५९	२	४६	३	०७	४	१२	१	४५	८	२६	१३	१५	४	२३	१८	२५	२७	१८	४	२९	१५
१६	१३	४९	१९	४७	१	३७	२	४४	उ. २	४९	२	५८	८	४८	१९	०८	४	५४	१८	४१	२७	१२	३	४७	१६
१७	१३	३०	१४	२३	द. ०	१९	२	२१	९	४२	३	५९	९	१०	२३	४४	५	०४	१८	५६	२५	२०	२	५२	१७
१८	१३	११	८	०५	उ. १	०१	१	५८	१६	०१	४	४३	९	३२	२६	३८	४	५४	१९	१०	२२	०१	१	४८	१८
१९	१२	५१	द १	१८	२	१७	१	३५	२१	१९	५	०८	९	५४	२७	४१	४	२४	१९	२४	१७	४०	उ. ०	४१	१९
२०	१२	३२	उ ५	३५	३	२६	१	११	२५	११	५	११	१०	१५	२६	५४	३	४०	१९	३८	१२	४०	द. ०	२६	२०
२१	१२	१२	१२	०८	४	२०	०	४८	२७	२३	४	५६	१०	३७	२४	३३	२	४५	१९	५२	७	१७	१	३०	२१
२२	११	५२	१७	५७	४	५७	०	२५	२७	४९	४	२४	१०	५८	२०	५८	१	४३	२०	०५	उ. १	४५	२	२८	२२
२३	११	३२	२२	४२	५	१५	उ. ०	०१	२६	३५	३	३८	११	१९	१६	२९	उ. ०	३८	२०	१८	द. ३	४५	३	१९	२३
२४	११	११	२६	०२	५	१४	द. ०	२२	२३	५५	२	४२	११	४०	११	२६	द. ०	२८	२०	३०	०९	०५	४	०३	२४
२५	१०	५१	२७	४५	४	५५	०	४५	२०	०७	१	३९	१२	०१	६	०३	१	३१	२०	४२	१४	०५	४	३३	२५
२६	१०	३०	२७	४६	४	१९	१	०९	१५	३०	उ. ०	३२	१२	२२	उ. ०	३१	२	२९	२०	५५	१८	३४	४	५३	२६
२७	१०•	०९	२६	१०	३	३१	१	३२	१०	१९	द. ०	३४	१२	४२	द. ४	५९	३	२०	२१	०६	२२	२०	५	००	२७
२८	९	४८	२३	१२	२	३२	१	५६	उ. ४	५०	१	३९	१३	०२	१०	१८	४	०२	२१	१६	२५	१२	४	५४	२८
२९	९	२७	१९	०९	१	२७	२	१९	द. ०	४७	२	३८	१३	२२	१५	१३	४	३४	२१	२६	२६	५७	४	३५	२९
३०	९	०५	१४	१८	उ ०	१८	द. २	४२	द. ६	१८	द. ३	२९	१३	४२	१९	३५	४	५३	द. २१	३६	द. २७	२८	द. ४	०२	३०
३१	उ. ८	४४	उ. ८	५७	द ०	५०	–	–	–	–	–	–	द. १४	०२	द. २३	११	द. ५	००	–	–	–	–	–	–	३१

उ=उत्तर · सूर्य और चन्द्रमा की क्रान्ति तथा चन्द्रशर (प्रातः ५ घं० ३० मि० भा० स्टै० टा०) संवत् २०४६ वि० द=दक्षिण

दिसम्बर सन् १९८९ ई०

ता०	सू० अं०	क्रां० क०	चं० अं०	क्रां० क०	चं० अं०	शर क०
१	द २१	४६	द २६	२९	द ३	१८
२	२१	५५	२४	१३	२	२३
३	२२	०४	२०	४३	१	२९
४	२२	१२	१६	०९	द ०	१३
५	२२	२०	१०	४४	उ ०	५७
६	२२	२८	द ४	४३	२	०६
७	२२	३५	उ १	४०	३	०९
८	२२	४२	८	०७	४	०२
९	२२	४८	१४	१७	४	४०
१०	२२	५४	१९	४४	५	०१
११	२२	५९	२४	००	५	०२
१२	२३	०४	२६	३९	४	४२
१३	२३	०८	२७	२४	४	०३
१४	२३	१२	२६	१३	३	०९
१५	२३	१५	२३	२३	२	०५
१६	२३	१८	१९	१७	उ ०	५५
१७	२३	२१	१४	२०	द ०	१६
१८	२३	२३	८	५५	१	२४
१९	२३	२५	उ ३	१८	२	२६
२०	२३	२६	द २	१८	३	२०
२१	२३	२६	७	४४	४	०४
२२	२३	२७	१२	५०	४	३७
२३	२३	२६	१७	२८	४	५९
२४	२३	२५	२१	२६	५	०७
२५	२३	२४	२४	३३	५	०३
२६	२३	२३	२६	३७	४	४५
२७	२३	२०	२७	२५	४	१३
२८	२३	१८	२६	५०	३	२९
२९	२३	१५	२४	५१	२	३३
३०	२३	११	२१	३४	१	२९
३१	द २३	०७	द १७	०९	द ०	११

जनवरी सन् १९९० ई०

ता०	सू० अं०	क्रां० क०	चं० अं०	क्रां० क०	चं० अं०	शर क०
१	द २३	०३	द ११	५१	उ ०	५३
२	२२	५८	द ५	५५	२	०३
३	२२	५२	उ ०	२२	३	०७
४	२२	४६	६	४२	४	०२
५	२२	४०	१२	४८	४	४३
६	२२	३३	१८	१९	५	०७
७	२२	२६	२२	५०	५	१२
८	२२	१८	२५	५८	४	५७
९	२२	१०	२७	२३	४	२४
१०	२२	०२	२६	५७	३	३४
११	२१	५३	२४	४५	२	२९
१२	२१	४३	२१	०६	१	२१
१३	२१	३४	१६	२३	उ ०	०७
१४	२१	२३	११	०१	द १	०५
१५	२१	१३	उ ५	२०	२	१२
१६	२१	०२	द ०	२५	३	११
१७	२०	५०	६	०१	३	५९
१८	२०	३८	११	१८	४	३७
१९	२०	२६	१६	०८	५	०२
२०	२०	१३	२०	२०	५	१४
२१	२०	००	२३	४४	५	१३
२२	१९	४७	२६	०९	४	५८
२३	१९	३३	२७	२२	४	३०
२४	१९	१९	२७	१५	३	४८
२५	१९	०५	२५	४३	२	५५
२६	१८	५०	२२	४७	१	५१
२७	१८	३५	१८	३७	द ०	४०
२८	१८	१९	१३	२५	उ ०	३४
२९	१८	०३	७	२९	१	४८
३०	१७	४७	द १	०८	२	५७
३१	द १७	३१	उ ५	२०	उ ३	५५

फरवरी सन् १९९० ई०

ता०	सू० अं०	क्रां० क०	चं० अं०	क्रां० क०	चं० अं०	शर क०
१	द १७	१४	उ ११	३४	उ ४	४०
२	१६	५७	१७	१३	५	०८
३	१६	४०	२१	५६	५	१७
४	१६	२२	२५	२२	५	०७
५	१६	०४	२७	१३	४	३८
६	१५	४६	२७	२०	३	५३
७	१५	२७	२५	४३	२	५५
८	१५	०९	२२	३५	१	४८
९	१४	५०	१८	१६	उ ०	३५
१०	१४	३०	१३	०८	द ०	३८
११	१४	११	७	३२	१	४८
१२	१३	५१	उ १	४४	२	५१
१३	१३	३१	द ४	००	३	४४
१४	१३	११	९	२९	४	२६
१५	१२	५०	१४	३२	४	५६
१६	१२	३०	१८	५९	५	१३
१७	१२	०९	२२	४१	५	१६
१८	११	४८	२५	२६	५	०६
१९	११	२७	२७	०५	४	४२
२०	११	०५	२७	२७	४	०५
२१	१०	४४	२६	२८	३	१७
२२	१०	२२	२४	०५	२	१७
२३	१०	००	२०	२३	द १	०९
२४	९	३८	१५	३२	उ ०	०५
२५	९	१६	९	४६	१	२१
२६	८	५४	द ३	२४	२	३३
२७	८	३१	उ ३	१४	३	३६
२८	द ८	०९	उ ९	४६	उ ४	२७
२९	—	—	—	—	—	—
३०	—	—	—	—	—	—
३१	—	—	—	—	—	—

मार्च सन् १९९० ई०

सू० अं०	क्रां० क०	चं० अं०	क्रां० क०	चं० अं०	शर क०	ता०
द ७	४६	उ १५	४६	उ ५	००	१
७	२३	२०	५२	५	१३	२
७	००	२४	४०	५	०७	३
६	३७	२६	५४	४	४३	४
६	१४	२७	२४	४	०२	५
५	५१	२६	१२	३	०७	६
५	२८	२३	२९	२	०३	७
५	०४	१९	३३	उ ०	५४	८
४	४१	१४	४४	द ०	१७	९
४	१८	९	२१	१	२६	१०
३	५४	उ ३	३९	२	३०	११
३	३१	द २	०५	३	२५	१२
३	०७	७	३९	४	१०	१३
२	४३	१२	५१	४	४३	१४
२	२०	१७	३१	५	०३	१५
१	५६	२१	२८	५	१०	१६
१	३२	२४	३२	५	०३	१७
१	०९	२६	३२	४	४३	१८
०	४५	२७	२०	४	११	१९
द ०	२१	२६	५१	३	२८	२०
उ ०	०३	२५	०२	२	३३	२१
०	२६	२१	५५	१	३०	२२
०	५०	१७	३६	द ०	२१	२३
१	१४	१२	१६	उ ०	५२	२४
१	३७	द ६	१०	२	०४	२५
२	०१	उ ०	२५	३	१०	२६
२	२४	७	०७	४	०५	२७
२	४८	१३	३०	४	४४	२८
३	११	१९	०७	५	०४	२९
३	३४	२३	३०	५	०२	३०
उ ३	५८	उ २६	[illegible]	उ ४	४२	३१

उ.=उत्तर — मंगल आदि ग्रहों के क्रान्तिशर (प्रातः ५ घं० ३० मि० भा० स्टैं० टा०) संवत् २०४६ वि० — द.=दक्षिण

तारीख	मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				तारीख
	क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		
१९८९	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	१९८९
अप्रैल १०	उ २४	१७	उ १	२२	उ ९	५९	द ०	०५	उ २०	३९	द ०	३२	उ ७	१७	द १	०९	द २२	०३	उ ०	४०	१० अप्रैल
१३	२४	२६	१	२२	१२	४२	उ ०	२८	२०	४६	०	३१	८	४३	१	०४	२२	०३	०	४०	१३
१६	२४	३४	१	२२	१५	१४	१	०१	२०	५२	०	३१	१०	०८	०	५९	२२	०३	०	४०	१६
१९	२४	४०	१	२२	१७	३१	१	३२	२०	५९	०	३०	११	३१	०	५४	२२	०३	०	४०	१९
२२	२४	४४	१	२२	१९	२७	२	००	२१	०६	०	३०	१२	५१	०	४८	२२	०३	०	४०	२२
२५	२४	४७	१	२२	२१	०२	२	२१	२१	१२	०	२९	१४	०८	०	४२	२२	०३	०	४०	२५
२८	२४	४९	१	२२	२२	१३	२	३५	२१	१९	०	२९	१५	२२	०	३६	२२	०३	०	४०	२८
मई १	२४	४८	१	२२	२३	०२	२	४१	२१	२५	०	२९	१६	३३	०	२९	२२	०३	०	४०	१ मई
४	२४	४७	१	२२	२३	२९	२	३८	२१	३१	०	२८	१७	४०	०	२२	२२	०४	०	४०	४
७	२४	४३	१	२२	२३	३५	२	२४	२१	३७	०	२८	१८	४३	०	१५	२२	०४	०	४०	७
१०	२४	३८	१	२२	२३	२८	२	०१	२१	४३	०	२७	१९	४१	०	०८	२२	०४	०	४०	१०
१३	२४	३१	१	२१	२२	५८	१	२८	२१	४९	०	२७	२०	३५	द ०	०१	२२	०५	०	४०	१३
१६	२४	२३	१	२१	२२	०७	उ ०	४५	२१	५४	०	२७	२१	२३	उ ०	०७	२२	०६	०	४०	१६
१९	२४	१३	१	२१	२१	०८	द ०	०४	२२	००	०	२६	२२	०६	०	१४	२२	०७	०	४०	१९
२२	२४	०२	१	२१	२०	०२	०	५६	२२	०५	०	२६	२२	४४	०	२१	२२	०७	०	४०	२२
२५	२३	४९	१	२०	१८	४९	१	४८	२२	१०	०	२६	२३	१६	०	२८	२२	०८	०	४०	२५
२८	२३	३०	१	२०	१७	४३	२	३४	२२	१५	०	२६	२३	४२	०	३६	२२	०९	०	३९	२८
३१	२३	१८	१	२०	१६	४०	३	१३	२२	१९	०	२५	२४	०१	०	४२	२२	१०	०	३९	३१
जून १	२३	१३	१	१९	१६	३१	३	२४	२२	२१	०	२५	२४	०७	०	४५	२२	११	०	३९	१ जून
४	२२	५५	१	१९	१६	०३	३	४८	२२	२५	०	२५	२४	१८	०	५१	२२	१२	०	३९	४
७	२२	३६	१	१९	१५	५१	४	०२	२२	२९	०	२५	२४	२२	०	५८	२२	१३	०	३९	७
१०	२२	१५	१	१८	१५	५६	४	०५	२२	३३	०	२४	२४	२१	१	०४	२२	१४	०	३९	१०
१३	२१	५३	१	१८	१६	१९	४	००	२२	३७	०	२४	२४	१३	१	०९	२२	१५	०	३९	१३
१६	२१	२९	१	१७	१६	५७	३	४६	२२	४०	०	२४	२३	५८	१	१५	२२	१७	०	३८	१६
१९	२१	०४	१	१७	१७	४६	३	२५	२२	४४	०	२३	२३	३७	१	१९	२२	१८	०	३८	१९
२२	२०	३८	१	१६	१८	४४	२	५९	२२	४७	०	२३	२३	१०	१	२४	२२	१९	०	३८	२२
२५	२०	११	१	१५	१९	४६	२	२८	२२	५०	०	२३	२२	३७	१	२८	२२	२१	०	३८	२५
२८	१९	४२	१	१५	२०	५०	१	५८	२२	५२	०	२३	२१	५८	१	३१	२२	२२	०	३८	२८
जुलाई १	उ १९	१३	उ १	१४	उ २१	५०	द १	१८	उ २२	५४	द ०	२२	उ २१	१३	उ १	३४	द २२	२३	उ ०	३७	१ जुलाई

उ=उत्तर | मंगल आदि ग्रहों के क्रान्तिशर (प्रातः ५ घं० ३० मि० भा० स्टैं० टा०) संवत् २०४६ वि० | द=दक्षिण

	मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				
तारीख	क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		तारीख
१९८९	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	१९८९
जुलाई ४	उ. १८	४२	उ. १	१४	उ. २२	४२	द. ०	४१	उ. २२	५७	द. ०	२२	उ. २०	२४	उ. १	३६	द. २२	२५	उ. ०	३७	४ जुलाई
७	१८	१०	१	१३	२३	२०	द. ०	०५	२२	५९	०	२२	१९	२९	१	३७	२२	२६	०	३७	७
१०	१७	३७	१	१२	२३	४०	उ. ०	२८	२३	००	०	२२	१८	२९	१	३८	२२	२७	०	३७	१०
१३	१७	०३	१	१२	२३	३७	०	५७	२३	०२	०	२२	१७	२५	१	३८	२२	२८	०	३६	१३
१६	१६	२७	१	११	२३	१०	१	२०	२३	०३	०	२१	१६	१७	१	३८	२२	३०	०	३६	१६
१९	१५	५१	१	१०	२२	१९	१	३६	२३	०४	०	२१	१५	०५	१	३६	२२	३१	०	३६	१९
२२	१५	१४	१	०९	२१	०६	१	४५	२३	०५	०	२१	१३	४९	१	३५	२२	३२	०	३५	२२
२५	१४	३७	१	०९	१९	३६	१	४८	२३	०५	०	२१	१२	३०	१	३२	२२	३३	०	३५	२५
२८	१३	५८	१	०८	१७	५३	१	४४	२३	०६	०	२१	११	०९	१	२९	२२	३४	०	३५	२८
३१	१३	१८	१	०७	१५	५९	१	३६	२३	०६	०	२०	९	४५	१	२५	२२	३५	०	३४	३१
अगस्त १	१३	०५	१	०७	१५	२०	१	३२	२३	०६	०	२०	९	१६	१	२३	२२	३६	०	३४	१ अगस्त
४	१२	२४	१	०६	१३	१८	१	१७	२३	०६	०	२०	७	४९	१	१८	२२	३७	०	३४	४
७	११	४३	१	०५	११	१३	०	५९	२३	०६	०	२०	६	२१	१	१३	२२	३८	०	३४	७
१०	११	०१	१	०४	९	०७	०	३८	२३	०६	०	२०	४	५०	१	०६	२२	३[illegible]	०	३३	१०
१३	१०	१९	१	०३	७	०१	उ. ०	१५	२३	०६	०	२०	३	१९	१	००	२२	३९	०	३३	१३
१६	९	३५	१	०३	४	५६	द. ०	११	२३	०५	०	१९	१	४७	०	५२	२२	४०	०	३२	१६
१९	८	५२	१	०२	२	५५	०	३८	२३	०४	०	१९	उ. ०	१४	०	४४	२२	४१	०	३२	१९
२२	८	०८	१	०१	उ. ०	५८	१	०६	२३	०४	०	१९	द. १	१९	०	३५	२२	४२	०	३२	२२
२५	७	२३	१	००	द. ०	५३	१	३५	२३	०३	०	१९	२	५१	०	२६	२२	४२	०	३१	२५
२८	६	३८	०	५९	२	३७	२	०३	२३	०२	०	१९	४	२४	०	१७	२२	४३	०	३१	२८
३१	५	५२	०	५८	४	११	२	३२	२३	०१	०	१८	५	५६	०	०६	२२	४४	०	३१	३१
सित० १	५	३७	०	५७	४	४०	२	४१	२३	००	०	१८	६	२६	उ. ०	०३	२२	४४	०	३०	१ सितं०
४	४	५१	०	५६	५	५७	३	०८	२२	५५	०	१८	७	५७	द. ०	०८	२२	४४	०	३०	४
७	४	०४	०	५५	६	५८	३	३१	२२	५८	०	१८	९	२६	०	१९	२२	४५	०	३०	७
१०	३	१८	०	५४	७	३९	३	५१	२२	५७	०	१८	१०	५३	०	३०	२२	४५	०	२९	१०
१३	२	३१	०	५३	७	५३	४	०३	२२	५६	०	१८	१२	१९	०	४१	२२	४६	०	२९	१३
१६	१	४४	०	५२	७	३५	४	०६	२२	५५	०	१७	१३	४२	०	५३	२२	४६	०	२८	१६
१९	०	५६	०	५१	६	४०	३	५५	२२	५३	०	१७	१५	०३	१	०५	२२	४६	०	२८	१९
२२	उ. ०	०९	उ. ०	५०	द. ५	०९	द. ३	२८	उ. २२	५२	द. ०	१७	द. १६	२१	द. १	१७	द. २२	४६	उ. ०	२८	२२

उ=उत्तर **मंगल आदि ग्रहों के क्रान्तिशर (प्रातः ५ घं० ३० मि० भा० स्टैं० टा०) संवत् २०४६ वि** द=दक्षिण

	मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				
तारीख	क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		तारीख
१९८९	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	१९८९
सित० २५	द ०	३९	उ ०	४९	द ३	१२	द. २	४४	उ. २२	५१	द.०	१७	द. १७	३५	द.१	२८	द. २२	४७	उ. ०	२७	२५ सितं
२८	१	२६	०	४८	द १	०७	१	४७	२२	५०	०	१७	१८	४६	१	४०	२२	४७	०	२७	२८
अक्टू. १	२	१३	०	४६	उ.०	४१	द. ०	४६	२२	४९	०	१७	१९	५३	१	५२	२२	४७	०	२७	१ अक्टू.
४	३	०१	०	४५	१	५१	उ. ०	१०	२२	४८	०	१६	२०	५६	२	०३	२२	४७	०	२६	४
७	३	४८	०	४४	२	१५	०	५६	२२	४७	०	१६	२१	५५	२	१४	२२	४७	०	२६	७
१०	४	३५	०	४३	१	४३	१	२९	२२	४७	०	१६	२२	४९	२	२५	२२	४७	०	२६	१०
१३	५	२२	०	४१	उ. ०	५२	१	५०	२२	४६	०	१६	२३	३९	२	३५	२२	४७	०	२५	१३
१६	६	०९	०	४०	द ०	३७	२	००	२२	४६	०	१६	२४	२३	२	४४	२२	४६	०	२५	१६
१९	६	५५	०	३९	२	२५	२	००	२२	४५	०	१५	२५	०२	२	५४	२२	४६	०	२५	१९
२२	७	४१	०	३७	४	२४	१	५४	२२	४५	०	१५	२५	३५	३	०२	२२	४६	०	२४	२२
२५	८	२७	०	३६	६	२८	१	४३	२२	४५	०	१५	२६	०३	३	०९	२२	४५	०	२४	२५
२८	९	१२	०	३५	८	३४	१	२८	२२	४५	०	१५	२६	२५	३	१६	२२	४५	०	२४	२८
३१	९	५७	०	३३	१०	३७	१	११	२२	४६	०	१४	२६	४१	३	२२	२२	४४	०	२३	३१
नवं १	१०	१२	०	३३	११	१७	१	०४	२२	४६	०	१४	२६	४५	३	२३	२२	४४	०	२३	१ नवं.
४	१०	५६	०	३१	१३	१५	०	४५	२२	४६	०	१४	२६	५४	३	२८	२२	४३	०	२३	४
७	११	३९	०	३०	१५	०७	०	२५	२२	४७	०	१४	२६	५७	३	३१	२२	४२	०	२२	७
१०	१२	२२	०	२८	१६	५२	उ ०	०५	२२	४८	०	१३	२६	५४	३	३२	२२	४२	०	२२	१०
१३	१३	०४	०	२७	१८	२९	द. ०	१५	२२	४८	०	१३	२६	४६	३	३३	२२	४१	०	२२	१३
१६	१३	४५	०	२५	१९	५८	०	३५	२२	५०	०	१३	२६	३२	३	३१	२२	४०	०	२२	१६
१९	१४	२५	०	२४	२१	१९	०	५४	२२	५१	०	१३	२६	१४	३	२८	२२	३९	०	२१	१९
२२	१५	०५	०	२२	२२	३०	१	१२	२२	५२	०	१२	२५	५१	३	२४	२२	३७	०	२१	२२
२५	१५	४३	०	२१	२३	३०	१	२८	२२	५३	०	१२	२५	२४	३	१७	२२	३६	०	२१	२५
२८	१६	२१	०	१९	२४	२०	१	४३	२२	५५	०	१२	२५	४३	३	०८	२२	३५	०	२०	२८
दिस १	१६	५७	०	१७	२४	५९	१	५६	२२	५७	०	११	२४	१८	२	५७	२२	३४	०	२०	१ दिसं.
४	१७	३३	०	१६	२५	२६	२	०६	२२	५८	०	११	२३	४०	२	४४	२२	३२	०	२०	४
७	१८	०७	०	१४	२५	४०	२	१४	२३	००	०	१०	२३	००	२	२८	२२	३०	०	२०	७
१०	१८	३९	०	१२	२५	४२	२	१८	२३	०२	०	१०	२२	१७	२	०९	२२	२९	०	१९	१०
१३	१९	११	०	१०	२५	३०	२	१८	२३	०३	०	१०	२१	३३	१	४७	२२	२७	०	१९	१३
१६	१९	४१	०	०८	२५	०५	२	१३	२३	०५	०	०९	२०	४८	१	२३	२२	२५	०	१९	१६
१९	द २०	१०	उ ०	०७	द. २४	२७	द. २	०२	उ २३	०७	द. ०	०९	द. २०	०३	द. ०	५५	द. २२	२३	उ ०	१९	१९

उ=उत्तर मंगल आदि ग्रहों के क्रान्तिशर (प्रातः ५ घं० ३० मि० भा० स्टै० टा०) संवत् २०४६ वि० द=दक्षिण

तारीख	मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				तारीख
	क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		क्रान्ति		शर		
१९८९-९०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	१९८९-९०
दिस.२२	द. २०	३७	उ. ०	०५	द. २३	३९	द. १	४३	उ. २३	०८	द. ०	०९	द. १९	१८	द. ०	२३	द. २२	२१	उ. ०	१८	२२ दिसं.
२५	२१	०२	०	०३	२२	४३	१	१६	२३	१०	०	०८	१८	३४	उ. ०	१२	२२	१९	०	१८	२५
२८	२१	२६	उ. ०	०१	२१	४४	द. ०	३८	२३	११	०	०८	१७	५२	०	५१	२२	१७	०	१८	२८
३१	२१	४९	द. ०	०१	२०	४८	उ. ०	१०	२३	१३	०	०७	१७	१२	१	३२	२२	१५	०	१८	३१
जन. ९० १	२१	५६	०	०२	२०	३१	०	२८	२३	१३	०	०७	१६	५९	१	४७	२२	१४	०	१८	१ जन.९०
४	२२	१६	०	०४	१९	५१	१	२६	२३	१५	०	०७	१६	२३	२	३२	२२	१२	०	१७	४
७	२२	३४	०	०६	१९	२७	२	२१	२३	१६	०	०६	१५	५१	३	१८	२२	१०	०	१७	७
१०	२२	५०	०	०८	१९	१८	३	०२	२३	१७	०	०६	१५	२३	४	०४	२२	,०७	०	१७	१०
१३	२३	०४	०	१०	१९	२४	३	२२	२३	१८	०	०५	१४	५९	४	४९	२२	०५	०	१७	१३
१६	२३	१७	०	१२	१९	३९	३	२१	२३	१९	०	०५	१४	४१	५	३१	२२	०२	०	१७	१६
१९	२३	२७	०	१४	२०	०२	३	०४	२३	२०	०	०४	१४	२७	६	०८	२२	००	०	१६	१९
२२	२३	३६	०	१६	२०	२७	२	३८	२३	२१	०	०४	१४	१८	६	३८	२१	५७	०	१६	२२
२५	२३	४२	०	१८	२०	५१	२	०८	२३	२२	०	०४	१४	१४	७	००	२१	५५	०	१६	२५
२८	२३	४७	०	२१	२१	१२	१	३६	२३	२२	०	०३	१४	१४	७	१६	२१	५२	०	१६	२८
३१	२३	४९	०	२३	२१	२६	१	०५	२३	२३	०	०३	१४	१७	७	२४	२१	४९	०	१६	३१
फर. १	२३	४९	०	२४	२१	३०	०	५५	२३	२३	०	०३	१४	१९	७	२५	२१	४८	०	१६	१ फर.
४	२३	४९	०	२६	२१	३३	उ. ०	२५	२३	२४	०	०२	१४	२७	७	२४	२१	४६	०	१५	४
७	२३	४६	०	२८	२१	२७	द. ०	०३	२३	२४	०	०२	१४	३६	७	१८	२१	४३	०	१५	७
१०	२३	४१	०	३०	२१	१०	०	२८	२३	२५	०	०१	१४	४६	७	०७	२१	४०	०	१५	१०
१३	२३	३५	०	३३	२०	४२	०	५१	२३	२५	०	०१	१४	५७	६	५२	२१	३८	०	१५	१३
१६	२३	२६	०	३५	२०	०३	१	११	२३	२६	०	००	१५	०८	६	३५	२१	३५	०	१५	१६
१९	२३	१४	०	३७	१९	१३	१	२९	२३	२६	द. ०	००	१५	१८	६	१६	२१	३२	०	१४	१९
२२	२३	०१	०	४०	१८	११	१	४४	२३	२७	उ. ०	००	१५	२५	५	५५	२१	३०	०	१४	२२
२५	२२	४६	०	४२	१६	५०	१	५५	२३	२७	०	०१	१५	३१	५	३४	२१	२७	०	,१४	२५
२८	२२	२९	०	४५	१५	३२	२	०४	२३	२७	०	०१	१५	३४	५	११	२१	२५	०	१४	२८
मार्च १	२२	२२	०	४५	१५	०१	२	०६	२३	२८	०	०१	१५	३४	५	०४	२१	२४	०	१४	१ मार्च
४	२२	०२	०	४८	१३	२०	२	१०	२३	२८	०	०२	१५	३२	४	४१	२१	२१	०	१४	४
७	२१	४०	०	५०	११	२७	२	१०	२३	२८	०	०२	१५	२७	४	१८	२१	१९	०	१४	७
१०	२१	१६	०	५३	९	२३	२	०५	२३	२८	०	०२	१५	१९	३	५५	२१	१७	०	१३	१०
१३	२०	५०	०	५५	७	०८	१	५७	२३	२९	०	०३	१५	०६	३	३२	२१	१४	०	१३	१३
१६	२०	२३	०	५८	४	४२	१	४४	२३	२९	०	०३	१४	४९	३	०९	२१	१२	०	१३	१६
१९	१९	५३	१	००	द. २	०६	१	२६	२३	२९	०	०३	१४	२८	२	४७	२१	१०	०	१३	१९
२२	१९	२२	१	०३	उ. ०	३७	१	०३	२३	२९	०	०४	१४	०२	२	२६	२१	०८	०	१३	२२
२५	द. १८	४९	द. १	०५	उ. ३	२६	द. ०	३६	उ. २३	२९	उ. ०	०४	द. १३	३२	उ. २	०५	द. २१	०६	उ. ०	१२	२५

ता. १ अप्रैल १९८९ से ३१ मार्च १९९० तक

यहाँ भारत के चार प्रसिद्ध नगरों (दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई, मद्रास) का शुद्ध सूक्ष्म गणित द्वारा दैनिक चन्द्रमा का उदय और अस्तकाल भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम घंटा मिनटों में नीचे दिया जा रहा है।

अप्रैल सन् १९८९ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में—संवत् २०४६ वि.

अप्रै. ८९ ता.	दिल्ली उदय घं. मि.	दिल्ली अस्त घं. मि.	कलकत्ता उदय घं. मि.	कलकत्ता अस्त घं. मि.	बम्बई उदय घं. मि.	बम्बई अस्त घं. मि.	मद्रास उदय घं. मि.	मद्रास अस्त घं. मि.	अप्रै. ८९ ता.
१	२ ४७	१३ २५	१ ४८	१२ ५१	२ ४४	१४ ०३	२ ०२	१३ ४३	१
२	३ २९	१४ ३३	२ ३३	१३ ·५	३ ३१	१५ ०५	२ ५१	१४ ४२	२
३	४ ०७	१५ ४१	३ १४	१४ ५९	४ १४	१६ ०७	३ ३८	१५ ४१	३
४	४ ४३	१६ ४८	३ ५४	१६ ०३	४ ५६	१७ ०९	४ २३	१६ ३९	४
५	५ १८	१७ ५७	४ ३२	१७ ०७	५ ३७	१८ ११	५ ०७	१७ ३८	५
६	५ ५३	१९ ०७	५ १२	१८ १३	६ १८	१९ १४	५ ५२	१८ ३८	६
७	६ ३१	२० १८	५ ५४	१९ २१	७ ०३	२० २०	६ ३९	१९ ४०	७
८	७ १४	२१ ३०	६ ४०	२० २९	७ ५१	२१ २७	७ ३०	२० ४४	८
९	८ ०२	२२ ४०	७ ३१	२१ ३७	८ ४३	२२ ३३	८ २५	२१ ४९	९
१०	८ ५६	२३ ४५	८ २६	२२ ४१	९ ४०	२३ ३७	९ २४	२२ ५१	१०
११	९ ५५	— —	९ २६	२३ ३९	१० ४०	— —	१० २३	२३ ५०	११
१२	१० ५७	० ४२	१० २६	— —	११ ४०	० ३५	११ २३	— —	१२
१३	११ ५८	१ ३१	११ २६	० ३०	१२ ३८	१ २६	१२ १९	० ४३	१३
१४	१२ ५८	२ १२	१२ २३	१ १३	१३ ३३	२ १०	१३ १२	१ २९	१४
१५	१३ ५४	२ ४६	१३ १६	१ ५१	१४ २५	२ ५०	१४ ०२	२ ११	१५
१६	१४ ४९	३ १७	१४ ०८	२ २५	१५ १५	३ २५	१४ ४९	२ ४९	१६
१७	१५ ४१	३ ४५	१४ ५७	२ ५६	१६ ०३	३ ५७	१५ ३४	३ २४	१७
१८	१६ ३३	४ ११	१५ ४६	३ २५	१६ ५०	४ २८	१६ १८	३ ५८	१८
१९	१७ २५	४ ३८	१६ ३५	३ ५४	१७ ३७	४ ५९	१७ ०३	४ ३१	१९
२०	१८ १८	५ ०५	१७ २५	४ २४	१८ २५	५ ३१	१७ ४९	५ ०५	२०
२१	१९ १३	५ ३४	१८ १७	४ ५६	१९ १६	६ ०५	१८ ३६	५ ४१	२१
२२	२० १०	६ ०६	१९ .११	५ ३१	२० ०८	६ ४१	१९ २७	६ २१	२२
२३	२१ ०८	६ ४३	२० ०७	६ ११	२१ ०३	७ २२	२० २०	७ ०३	२३
२४	२२ ०७	७ २५	२१ ०४	६ ५५	२१ ५९	८ ०८	२१ १४	७ ५१	२४
२५	२३ ०३	८ १५	२२ ००	७ ४५	२२ ५५	८ ५९	२२ १०	८ ४३	२५
२६	२३ ५६	९. १०	२२ ५३	८ ४१	२३ ४९	९ ५५	२३ ०४	९ ३८	२६
२७	— —	१० ११	२३ ४३	९ ४०˚	— —	१० ५३	२३ ५६	१० ३६	२७
२८	० ४३	११ १४	— —	१० ४१	० ३९	११ ५३	— —	११ ५४	२८
२९	१ २६	१२ १९	० २८	११ ४३	१ २६	१२ ५४	० ४५	१२ ३१	२९
३०	२ ०४	१३ २४	१ ०९	१२ ४५	२ २९	१३ ५३	१ ३१	१३ २८	३०

मई सन् १९८९ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में—संवत् २०४६ वि.

मई ८९ ता.	दिल्ली उदय घं. मि.	दिल्ली अस्त घं. मि.	कलकत्ता उदय घं. मि.	कलकत्ता अस्त घं. मि.	बम्बई उदय घं. मि.	बम्बई अस्त घं. मि.	मद्रास उदय घं. मि.	मद्रास अस्त घं. मि.	मई ८९ ता.
१	२ ३९	१४ २९	१ ४८	१३ ४६	२ ४९	१४ ५२	२ १५	१४ २४	१
२	३ १३	१५ ३५	२ २६	१४ ४८	३ २९	१५ ५२	२ ५७	१५ २१	२
३	३ ४७	१६ ४३	३ ०४	१५ ५१	४ ०९	१६ ५३	३ ४१	१६ १८	३
४	४ २३	१७ ५२	३ ४३	१६ ५७	४ ५१	१७ ५७	४ २६	१७ १९	४
५	५ ०३	१९ ०४	४ २७	१८ ०५	५ ३७	१९ ०३	५ १५	१८ २२	५
६	५ ४८	२० १६	५ १६	१९ १४	६ २७	२० ११	६ ०८	१९ २७	६
७	६ ४०	२१ २६	६ १०	२० २२	७ २३	२१ १८	७ ०६	२० ३३	७
८	७ ३९	२२ २८	७ ०९	२१ २५	८ २४	२२ २०	८ ०७	२१ ३५	८
९	८ ४२	२३ २२	८. १२	२२ २०	९ २६	२३ १६	९ ०९	२२ ३२	९
१०	९ ४५	— —	९ १४	२३ ०८	१० २६	— —	१० ०८	२३ २३	१०
११	१० ४७	० ०७	१० १३	२३ ४९	११ ´२५	० ०५	११ ०४	—. —	११
१२	११ ४६	० ४५	११ ०९	— —	१२ १७	० ४७	११ ५६	० ०७	१२
१३	१२ ४२	१ १८	१२ ०२	० २५	१३ १०	१ २४	१२ ४४	० ४७	१३
१४	१३ ३५	१ ४७	१२ ५२	० ५७	१३ ५८	१ ५८	१३ ३०	१ २४	१४
१५	१४ २७	२ १४	१३ ४१	१ २७	१४ ४६	२ २९	१४ १५	१ ५८	१५
१६	१५ १९	२ ४०	१४ ३०	१ ५६	१५ ३३	३ ००	१४ ५९	२ ३१	१६
१७	१६ १२	३ ०७	१५ २०	२ २६	१६ २१	३ ३२	१५ ४५	३ ०५	१७
१८	१७ ०६	३ ३५	१६ ११	२ ५७	१७ १८	४ ०५	१६ ३२	३ ४१	१८
१९	१८ ०३	४ ०७	१७ ०४	३ ३१	१८ ०२	४ ४१	१७ २२	४ १९	१९
२०	१९ ०१	४ ४२	१८ ००	४ ०९	१८ ५७	५ २०	१८ १४	५ ०१	२०
२१	२० ०१	५ २३	१८ ५८	४ ५३	१९ ५३	६ ०५	१९ ०९	५ ४७	२१
२२	२० ५८	६ ११	१९ ५५	५ ४१	२० ५०	६ ५५	२० ०५	६ ३८	२२
२३	२१ ५२	७ ०५	२० ४९	६ ३६	२१ ४५	७ ५०	२१ ००	७ ३३	२३
२४	२२ ४१	८ ०५	२१ ४०	७ ३५	२२ ३६	८ ४८	२१ ५३	८ ३१	२४
२५	२३ २५	९ २८	२२ २७	८ ३६	२३ २४	९ ४८	२२ ४३	९ २९	२५
२६	— —	१० १२	२३ ०९	९ ३७	— —	१० ४८	२३ २९	१० २६	२६
२७	० ०४	११ १६	२३ ४७	१० ३७	० ०७	११ ४७	— —	११ २२	२७
२८	० ३९	१२ २०	— —	११ ३७	० ४८	१२ ४४	० १२	१२ १७	२८
२९	१ १२	१३ २३	० २४	१२ ३७	१ २६	१३ ४२	० ५४	१३ ११	२९
३०	१ ४५	१४ २७	१ ००	१३ ३७	२ ०५	१४ ४०	१ ३५	१४ ०७	३०
३१	२ १९	१५ ३४	१ ३८	१४ ४०	२ ४४	१५ ४१	२ १८	१५ ०४	३१

जून सन् १९८९ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में–संवत् २०४६ वि.

जून ८९ ता.	दिल्ली उदय घं. मि.	दिल्ली अस्त घं. मि.	कलकत्ता उदय घं. मि.	कलकत्ता अस्त घं. मि.	बम्बई उदय घं. मि.	बम्बई अस्त घं. मि.	मद्रास उदय घं. मि.	मद्रास अस्त घं. मि.	जून ८९ ता.
१	२ ५६	१६ ४३	२ १८	१५ ४५	३ २७	१६ ४४	३ ०४	१६ ०४	१
२	३ ३७	१७ ५३	३ ०३	१६ ५३	४ १४	१७ ५०	३ ५४	१७ ०७	२
३	४ २६	१९ ०४	३ ५४	१८ ०१	५ ०७	१८ ५७	४ ४९	१८ १३	३
४	५ २१	२० १०	४ ५२	१९ ०६	६ ०५	२० ०२	५ ४९	१९ १७	४
५	६ २३	२१ ०९	५ ५३	२० ०६	७ ०७	२१ ०२	६ ५१	२० १७	५
६	७ २८	२१ ५९	६ ५७	२० ५८	८ १०	२१ ५४	७ ५२	२१ १२	६
७	८ ३२	२२ ४०	७ ५९	२१ ४३	९ ११	२२ ४०	८ ५१	२२ ००	७
८	९ ३३	२३ १६	८ ५८	२२ २१	१० ०८	२३ २०	९ ४६	२२ ४२	८
९	१० ३२	२३ ४७	९ ५३	२२ ५५	११ ०१	२३ ५६	१० ३७	२३ २१	९
१०	११ २७	— —	१० ४५	२३ २७	११ ५२	— —	११ २४	२३ ५६	१०
११	१२ २०	० १५	११ ३५	२३ ५६	१२ ४०	० २९	१२ १०	— —	११
१२	१३ १२	० ४२	१२ २४	— —	१३ २७	१ ००	१२ ५५	० ३०	१२
१३	१४ ०४	१ ०८	१३ १३	० २६	१४ १४	१ ३१	१३ ४०	१ ०४	१३
१४	१४ ५८	१ ३६	१४ ०३	० ५७	१५ ०३	२ ०४	१४ २६	१ ३९	१४
१५	१५ ५३	२ ०६	१४ ५६	१ ३०	१५ ५८	२ ३८	१५ १४	२ १६	१५
१६	१६ ५१	२ ४०	१५ ५१	२ ०६	१६ ४८	३ १७	१६ ०६	२ ५६	१६
१७	१७ ५०	३ १९	१६ ४८	२ ४८	१७ ४४	४ ००	१७ ००	३ ४१	१७
१८	१८ ४९	४ ०२	१७ ४६	३ ३५	१८ ४१	४ ४८	१७ ५७	४ ३१	१८
१९	१९ ४६	४ ५७	१८ ४३	४ २८	१९ ३८	५ ४२	१८ ५३	५ २५	१९
२०	२० ३८	५ ५६	१९ ३६	५ २६	२० ३२	६ ४०	१९ ४८	६ २३	२०
२१	२१ २४	६ ६०	२० २४	६ २८	२१ २१	७ ४१	२० ३९	७ २२	२१
२२	२२ ०४	८ ०५	२१ ०८	७ ३०	२२ ०६	८ ४२	२१ २७	८ २१	२२
२३	२२ ४०	९ १०	२१ ४८	८ ३२	२२ ४८	९ ४२	२२ १२	९ १८	२३
२४	२३ १४	१० १३	२२ २५	९ ३२	२३ २७	१० ४०	२२ ५४	१० १३	२४
२५	२३ ४६	११ १६	२३ ०१	१० ३२	— —	११ ३७	२३ ३५	११ ०८	२५
२६	— —	१२ १९	२३ ३७	११ ३१	० ०५	१२ ३४	— —	१२ ०२	२६
२७	० १९	१३ २४	— —	१२ ३१	० ४३	१३ ३३	० १६	१२ ५७	२७
२८	० ५४	१४ ३०	० १६	१३ ३४	१ २४	१४ ३३	० ६०	१३ ५४	२८
२९	१ ३३	१५ ३८	० ५८	१४ ३९	२ ०८	१५ ३७	१ ४७	१४ ५५	२९
३०	२ १७	१६ ४७	१ ४५	१५ ४५	२ ५७	१६ ४२	२ ३८	१५ ५८	३०

जुलाई सन् १९८९ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में–संवत् २०४६ वि.

जुला. ८९ ता.	दिल्ली उदय घं. मि.	दिल्ली अस्त घं. मि.	कलकत्ता उदय घं. मि.	कलकत्ता अस्त घं. मि.	बम्बई उदय घं. मि.	बम्बई अस्त घं. मि.	मद्रास उदय घं. मि.	मद्रास अस्त घं. मि.	जुला. ८९ ता.
१	३ ०१	१७ ५४	२ ३८	१६ ५०	३ ५२	१७ ४६	३ ३५	१७ ०१	१
२	४ ०७	१८ ५५	३ ३७	१७ ५२	४ ५२	१८ ४७	४ ३५	१८ ०३	२
३	५ १०	१९ ४९	४ ४०	१८ ४७	५ ५४	१९ ४३	५ ३६	१८ ५९	३
४	६ १५	२० ३४	५ ४३	१९ ३५	६ ५६	२० ३२	६ ३७	१९ ५०	४
५	७ १८	२१ १२	६ ४४	२० १६	७ ५५	२१ १५	७ ३४	२० ३६	५
६	८ १९	२१ ४५	७ ४१	२० ५३	८ ५०	२१ ५२	८ २७	२१ १६	६
७	९ १६	२२ १५	८ ३५	२१ २५	९ ४२	२२ २७	९ १६	२१ ५३	७
८	१० १०	२२ ४२	९ २६	२१ ५६	१० ३२	२२ ५६	१० ०३	२२ २८	८
९	११ ०३	२३ ०९	१० १६	२२ २६	११ २०	२३ ३०	१० ४८	२३ ०२	९
१०	११ ५५	२३ ३६	११ ०५	२२ ५६	१२ ०७	— —	११ ३३	२३ ३६	१०
११	१२ ४८	— —	११ ५५	२३ २७	१२ ५६	० ०२	१२ १९	— —	११
१२	१३ ४३	० ०५	१२ ४७	— —	१३ ४६	० ३६	१३ ०६	० १२	१२
१३	१४ ३९	० ३७	१३ ४०	० ०२	१४ ३८	१ १२	१३ ५६	० ५१	१३
१४	१५ ३८	१ १४	१४ ३६	० ४१	१५ ३३	१ ५३	१४ ४९	१ ३४	१४
१५	१६ ३७	१ ५६	१५ ३४	१ २६	१६ २९	२ ३९	१५ ४५	२ २१	१५
१६	१७ ३५	२ ४६	१६ ३१	२ १७	१७ २७	३ ३०	१६ ४२	३ १४	१६
१७	१८ २९	३ ४३	१७ २६	३ १३	१८ २२	४ २७	१७ ३८	४ ११	१७
१८	१९ १८	४ ४६	१८ १८	४ १५	१९ १४	५ २८	१८ ३१	५ १०	१८
१९	२० ०१	५ ५१	१९ ०४	५ १८	२० ०२	६ ३०	१९ २२	६ १०	१९
२०	२० ४०	६ ५८	१९ ४६	६ २२	२० ४६	७ ३२	२० ०८	७ ०९	२०
२१	२१ १५	८ ०४	२० २५	७ २४	२१ २६	८ ३२	२० ५२	८ ०७	२१
२२	२१ ४८	९ ०९	२१ ०२	८ २५	२२ ०५	९ ३१	२१ ३४	९ ०२	२२
२३	२२ २१	१० १३	२१ ३८	९ २५	२२ ४४	१० २९	२२ १६	९ ५७	२३
२४	२२ ५५	११ १७	२२ १६	१० २६	२३ २३	११ २८	२२ ५९	१० ५३	२४
२५	२३ ३३	१२ २३	२२ ५७	११ २७	— —	१२ २८	२३ ४४	११ ४९	२५
२६	— —	१३ ३०	२३ ४२	१२ ३१	० ०६	१३ ३०	— —	१२ ४८	२६
२७	० १५	१४ ३७	— —	१३ ३६	० ५३	१४ ३३	० ३४	१३ ५०	२७
२८	१ ०३	१५ ४४	० ३२	१४ ४१	१ ४५	१५ ३७	१ २७	१४ ५२	२८
२९	१ ५८	१६ ४६	१ २८	१५ ४२	२ ४२	१६ ३८	२ २४	१५ ५३	२९
३०	२ ५८	१७ ४१	२ २८	१६ ३९	३ ४२	१७ ३४	३ २४	१६ ५०	३०
३१	४ ०१	१८ २९	३ ३०	१७ २९	४ ४३	१८ २५	४ २५	१७ ४३	३१

अगस्त सन् १९८९ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में—संवत् २०४६ वि.

अग. ८९ ता.	दिल्ली उदय घं. मि.	दिल्ली अस्त घं. मि.	कलकत्ता उदय घं. मि.	कलकत्ता अस्त घं. मि.	बम्बई उदय घं. मि.	बम्बई अस्त घं. मि.	मद्रास उदय घं. मि.	मद्रास अस्त घं. मि.	अग. ८९ ता.
१	५ ०५	१९ ०९	४ ३१	१८ १२	५ ४३	१९ १०	५ २३	१८ ३०	१
२	६ ०६	१९ ४४	५ ३०	१८ ५०	६ ४०	१९ ४९	६ १७	१९ १२	२
३	७ ०४	२० १५	६ २५	१९ २४	७ ३३	२० २५	७ ०८	१९ ५०	३
४	८ ००	२० ४३	७ १७	१९ ५५	८ २४	२० ५८	७ ५६	२० २६	४
५	८ ५४	२१ १०	८ ०८	२० २५	९ १२	२१ ३०	८ ४२	२१ ००	५
६	९ ४६	२१ ३७	८ ५७	२० ५५	१० ००	२२ ०१	९ २७	२१ ३४	६
७	१० ३९	२२ ०५	९ ४७	२१ २६	१० ४८	२२ ३४	१० १३	२२ १०	७
८	११ ३३	२२ ३६	१० ३८	२२ ००	११ ३७	२३ ०९	१० ५९	२२ ४७	८
९	१२ २८	२३ १०	११ ३०	२२ ३६	१२ २८	२३ ४७	११ ४८	२३ २७	९
१०	१३ २४	२३ ४९	१२ २५	२३ १८	१३ २१	— —	१२ ३९	— —	१०
११	१४ २३	— —	१३ २१	— —	१४ १७	० ३०	१३ ३२	० १२	११
१२	१५ २१	० ३५	१४ १८	० ०५	१५ १३	१ १९	१४ २८	१ ०२	१२
१३	१६ १७	१ २८	१५ १३	० ५९	१६ ०९	२ १३	१५ २४	१ ५६	१३
१४	१७ ०८	२ २८	१६ ०६	१ ५८	१७ ०२	३ ११	१६ १९	२ ५४	१४
१५	१७ ५४	३ ३२	१६ ५५	३ ००	१७ ५२	४ १३	१७ ११	३ ५४	१५
१६	१८ ३५	४ ३९	१७ ३९	४ ०४	१८ ३८	५ १६	१८ ००	४ ५४	१६
१७	१९ १२	५ ४७	१८ २०	५ ०८	१९ २१	६ १८	१८ ४५	५ ५३	१७
१८	१९ ४७	६ ५४	१८ ५९	६ ११	२० ०२	७ १८	१९ २९	६ ५१	१८
१९	२० २१	८ ००	१९ ३७	७ १४	२० ४१	८ १९	२० १२	७ ४८	१९
२०	२० ५५	९ ०६	२० १५	८ १६	२१ २२	९ १९	२० ५६	८ ४५	२०
२१	२१ ३२	१० १३	२० ५५	९ १९	२२ ०४	१० २०	२१ ४१	९ ४३	२१
२२	२२ १४	११ २१	२१ ४०	१० २३	२२ ५१	११ २२	२२ ३०	१० ४२	२२
२३	२३ ००	१२ ३०	२२ २९	११ २९	२३ ४१	१२ २६	२३ २३	११ ४४	२३
२४	२३ ५३	१३ ३७	२३ २३	१२ ३४	— —	१३ ३०	— —	१२ ४६	२४
२५	— —	१४ ४०	— —	१३ ३७	० ३७	१४ ३२	० २०	१३ ४७	२५
२६	० ५१	१५ ३७	० २२	१४ ३४	१ ३६	१५ ३०	१ १९	१४ ४५	२६
२७	१ ५३	१६ २६	१ २३	१५ २५	२ ३६	१६ २१	२ १९	१५ ३८	२७
२८	२ ५६	१७ ०८	२ २३	१६ १०	३ ३५	१७ ०७	३ १६	१६ २६	२८
२९	३ ५७	१७ ४४	३ २२	१६ ४९	४ ३२	१७ ४८	४ ११	१७ ०९	२९
३०	४ ५६	१८ १६	४ १७	१७ २४	५ २६	१८ २४	५ ०२	१७ ४९	३०
३१	५ ५२	१८ ४५	५ १०	१७ ५६	६ १७	१८ ५८	५ ५१	१८ २५	३१

सितम्बर सन् १९८९ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में—संवत् २०४६ वि.

सित. ८९ ता.	दिल्ली उदय घं. मि.	दिल्ली अस्त घं. मि.	कलकत्ता उदय घं. मि.	कलकत्ता अस्त घं. मि.	बम्बई उदय घं. मि.	बम्बई अस्त घं. मि.	मद्रास उदय घं. मि.	मद्रास अस्त घं. मि.	सित. ८९ ता.
१	६ ४६	१९ १२	६ ०१	१८ २६	७ ०६	१९ ३०	६ ३७	१८ ६०	१
२	७ ३९	२९ ३९	६ ५१	१८ ५६	७ ५५	२० ०१	७ २३	१९ ३४	२
३	८ ३१	२० ०६	७ ४१	१९ २७	८ ४२	२० ३४	८ ०८	२० ०८	३
४	९ २५	२० ३६	८ ३१	१९ ५९	९ ३१	२१ ०८	८ ५४	२० ४५	४
५	१० १९	२१ ०८	९ २२	२० ३४	१० २१	२१ ४४	९ ४१	२१ २४	५
६	११ १५	२१ ४५	१० १५	२१ १३	११ १३	२२ २५	१० ३१	२२ ०६	६
७	१२ १२	२२ २८	११ १०	२१ ५७	१२ ०६	२३ १०	११ २३	२२ ५३	७
८	१३ ०९	२३ १७	१२ ०६	२२ ४७	१३ ०१	— —	१२ १७	२३ ४४	८
९	१४ ०४	— —	१३ ०१	२३ ४३	१३ ५६	० ०१	१३ ११	— —	९
१०	१४ ५६	० १२	१३ ५४	— —	१४ ५०	० ५६	१४ ०५	० ४०	१०
११	१५ ४४	१ १३	१४ ४४	० ४२	१५ ४०	१ ५५	१४ ५८	१ ३८	११
१२	१६ २७	२ १८	१५ ३०	१ ४५	१६ २७	२ ५७	१५ ४७	२ ३७	१२
१३	१७ ०६	३ २५	१६ १२	२ ४८	१७ ११	३ ५८	१६ ३४	३ ३६	१३
१४	१७ ४२	४ ३२	१६ ५२	३ ५१	१७ ५३	५ ००	१७ १९	४ ३४	१४
१५	१८ १६	५ ३९	१७ ३०	४ ५४	१८ ३४	६ ०१	१८ ०३	५ ३२	१५
१६	१८ ५१	६ ४६	१८ ०९	५ ५८	१९ १५	७ ०२	१८ ४८	६ ३०	१६
१७	१९ २८	७ ५५	१८ ५०	७ ०३	१९ ५८	८ ०५	१९ ३४	७ २९	१७
१८	२० ०९	९ ०५	१९ ३४	८ ०९	२० ४४	९ ०९	२० २३	८ ३०	१८
१९	२० ५५	१० १६	२० २३	९ १७	२१ ३५	१० १५	२१ १६	९ ३३	१९
२०	२१ ४७	११ २७	२१ १७	१० २४	२२ ३१	११ २१	२२ १४	१० ३७	२०
२१	२२ ४७	१२ ३३	२२ १६	११ २९	२३ २५	१२ २५	२३ १३	११ ४०	२१
२२	२३ ४७	१३ ३३	२३ १७	१२ ३०	— —	१३ २५	— —	१२ ४०	२२
२३	— —	१४ २४	— —	१३ २३	० ३१	१४ १९	० १३	१३ ३५	२३
२४	० ५०	१५ ०८	० १८	१४ ०९	१ ३०	१५ ०६	१ १२	१४ २५	२४
२५	१ ५१	१५ ४६	१ १७	१४ ५०	२ २८	१५ ४८	२ ०७	१५ ०९	२५
२६	२ ५०	१६ १९	२ १३	१५ २६	३ २२	१६ २५	२ ५९	१५ ४९	२६
२७	३ ४६	१६ ४८	३ ०६	१५ ५८	४ १३	१६ ५९	३ ४८	१६ २६	२७
२८	४ ४०	१७ १५	३ ५७	१६ २९	५ ०३	१७ ३२	४ ३६	१७ ००	२८
२९	५ ३३	१७ ४२	४ ४७	१६ ५९	५ ५१	१८ ०३	५ २०	१७ ३४	२९
३०	६ २६	१८ ०९	५ ३६	१७ २९	६ ३८	१८ ३५	६ ०५	१८ ०९	३०

अक्टूबर सन् १९८९ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में--संवत् २०४६ वि.

अक्टू. ८९ ता.	दिल्ली उदय घं. मि.	दिल्ली अस्त घं. मि.	कलकत्ता उदय घं. मि.	कलकत्ता अस्त घं. मि.	बम्बई उदय घं. मि.	बम्बई अस्त घं. मि.	मद्रास उदय घं. मि.	मद्रास अस्त घं. मि.	अक्टू. ८९ ता.
१	७ १९	१८ ३८	६ २६	१८ ००	७ २६	१९ ०८	६ ५०	१८ ४५	१
२	८ १३	१९ १०	७ १७	१८ ३४	८ १६	१९ ४४	७ ३७	१९ २३	२
३	९ ०८	१९ ४५	८ ०९	१९ १२	९ ०७	२० २३	८ २६	२० ०४	३
४	१० ०४	२० २५	९ ०३	१९ ५४	१० ००	२१ ०७	९ १७	२० ४९	४
५	११ ०१	२१ ११	९ ५८	२० ४१	१० ५४	२१ ५५	१० ०९	२१ ३८	५
६	११ ५६	२२ ०३	१० ५३	२१ ३३	११ ४८	२२ ४७	११ ०३	२२ ३१	६
७	१२ ४८	२३ ००	११ ४५	२२ ३०	१२ ४१	२३ ४३	११ ५६	२३ २६	७
८	१३ ३६	— —	१२ ३५	२३ २९	१३ ३१	— —	१२ ४८	— —	८
९	१४ १९	० ०२	१३ २१	— —	१४ ३८	० ४२	१३ ३७	० २३	९
१०	१४ ५८	१ ०५	१४ ०३	० ३०	१५ ०२	१ ४१	१४ २३	१ २०	१०
११	१५ ३५	२ १०	१४ ४३	१ ३२	१५ ४४	२ ४१	१५ ०८	२ १७	११
१२	१६ ०९	३ १६	१५ २१	२ ३३	१६ २४	३ ४१	१५ ५१	३ १३	१२
१३	१६ ४४	४ २२	१६ ००	३ ३६	१७ ०५	४ ४१	१६ ३५	४ १०	१३
१४	१७ २०	५ ३०	१६ ४०	४ ४०	१७ ४७	५ ४३	१७ २१	५ ०९	१४
१५	१८ ००	६ ४०	१७ २३	५ ४६	१८ ३२	६ ४७	१८ १०	६ ०९	१५
१६	१८ ४५	७ ५३	१८ ११	६ ५५	१९ २३	७ ५४	१९ ०३	७ १३	१६
१७	१९ ३६	९ ०६	१९ ०५	८ ०५	२० १८	९ ०२	२० ००	८ १९	१७
१८	२० ३४	१० ०७	२० ०४	९ १४	२१ १८	१० १०	२१ ०१	९ २५	१८
१९	२१ ३७	११ २२	२१ ०७	१० १९	२२ २१	११ १४	२२ ०४	१० २९	१९
२०	२२ ४१	१२ १९	२२ १०	११ १७	२३ २३	१२ १२	२३ ०४	११ २८	२०
२१	२३ ४४	१३ ०६	२३ १०	१२ ०७	— —	१३ ०३	— —	१२ २१	२१
२२	— —	१३ ४६	— —	१२ ५०	० २२	१३ ४७	० ०२	१३ ०७	२२
२३	० ४४	१४ २१	० ०८	१३ २७	१ १८	१४ २६	० ५५	१३ ४९	२३
२४	१ ४२	१४ ५१	१ ०२	१४ ००	२ १०	१५ ०१	१ ४५	१४ २७	२४
२५	२ ३६	१५ १९	१ ५४	१४ ३१	३ ००	१५ ३४	२ ३२	१५ ०२	२५
२६	३ २९	१५ ४६	२ ४३	१५ ०१	३ ४८	१६ ०५	३ १८	१५ ३६	२६
२७	४ २१	१६ १३	३ ३३	१५ ३१	४ ३५	१६ ३७	४ ०३	१६ १०	२७
२८	५ १४	१६ ४१	४ २२	१६ ०२	५ २३	१७ १०	४ ४८	१६ ४५	२८
२९	६ ०७	१७ १२	५ १२	१६ ३६	६ १२	१७ ४५	५ ३४	१७ २३	२९
३०	७ ०२	१७ ४६	६ ०५	१७ १२	७ ०३	१८ २३	६ २२	१८ ०३	३०
३१	७ ५८	१८ २५	६ ५८	१७ ५३	७ ५५	१९ ०५	७ १३	१८ ४७	३१

नवम्बर सन् १९८९ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में–संवत् २०४६ वि.

नव. ८९ ता.	दिल्ली उदय घं. मि.	दिल्ली अस्त घं. मि.	कलकत्ता उदय घं. मि.	कलकत्ता अस्त घं. मि.	बम्बई उदय घं. मि.	बम्बई अस्त घं. मि.	मद्रास उदय घं. मि.	मद्रास अस्त घं. मि.	नव. ८९ ता.
१	८ ५५	१९ ०९	७ ५३	१८ ३९	८ ४९	१९ ५२	८ ०५	१९ ३५	१
२	९ ५०	१९ ५९	८ ४७	१९ २९	९ ४३	२० ४३	८ ५८	२० २६	२
३	१० ४३	२० ५४	९ ४०	२० २४	१० ३६	२१ ३७	९ ५१	२१ २०	३
४	११ ३२	२१ ५३	१० ३०	२१ २१	११ २६	२२ ३४	१० ४२	२२ १५	४
५	१२ १५	२२ ५४	११ १६	२२ २०	१२ १३	२३ ३१	११ ३१	२३ ११	५
६	१२ ५५	२३ ५६	११ ५८	२३ १९	१२ ५७	— —	१२ १७	— —	६
७	१३ ३१	— —	१२ ३८	— —	१३ ३७	० २९	१३ ०१	० ०६	७
८	१४ ०५	० ५९	१३ १५	० १८	१४ १७	१ २६	१३ ४३	१ ००	८
९	१४ ३८	२ ०२	१३ ५२	१ १८	१४ ५६	२ २४	१४ २५	१ ५५	९
१०	१५ १२	३ ०७	१४ ३०	२ १९	१५ ३६	३ २३	१५ ०८	२ ५०	१०
११	१५ ५०	४ १४	१५ ११	३ २२	१६ १९	४ २४	१५ ५४	३ ४८	११
१२	१६ ३१	५ २५	१५ ५६	४ २९	१७ ०६	५ २९	१६ ४५	४ ५०	१२
१३	१७ २०	६ ३८	१६ ४७	५ ३८	१८ ००	६ ३६	१७ ४१	५ ५५	१३
१४	१८ १६	७ ५२	१७ ४५	६ ४९	१८ ५९	७ ४६	१८ ४२	७ ०३	१४
१५	१९ १८	९ ०२	१८ ४८	७ ५८	२० ०३	८ ५४	१९ ४६	८ ०९	१५
१६	२० २५	१० ०५	१९ ५४	९ ०२	२१ ०७	९ ५८	२० ५०	९ १३	१६
१७	२१ ३१	१० ५८	२० ५८	९ ५७	२२ १०	१० ५४	२१ ५१	१० ११	१७
१८	२२ ३४	११ ४२	२१ ५९	१० ४४	२३ ०९	११ ४२	२२ ४८	११ ०१	१८
१९	२३ ३४	१२ २०	२२ ५५	११ २५	— —	१२ २८	२३ ४०	११ ४६	१९
२०	— —	१२ ५२	२३ ४८	१२ ०१	० ०४	१३ ०१	— —	१२ २५	२०
२१	० ३०	१३ २१	— —	१२ ३३	० ४५	१३ ३४	० २९	१३ ०२	२१
२२	१ २३	१३ ४९	० ३९	१३ ०३	१ ४४	१४ ०७	१ १५	१३ ३७	२२
२३	२ १६	१४ १६	१ २९	१३ ३३	२ ३२	१४ ३८	२ ००	१४ ११	२३
२४	३ ०९	१४ ४३	२ १८	१४ ०४	३ २०	१५ ११	२ ४५	१४ ४६	२४
२५	४ ०२	१५ १३	३ ०८	१४ ३६	४ ०८	१५ ४५	३ ३१	१५ २२	२५
२६	४ ५६	१५ ४६	३ ५९	१५ १२	४ ५८	१६ २२	४ १८	१६ ०१	२६
२७	५ ५२	१६ २४	४ ५३	१५ ५२	५ ५०	१७ ०३	५ ०८	१६ ४४	२७
२८	६ ४९	१७ ०७	५ ४७	१६ ३६	६ ४४	१७ ४९	६ ००	१७ ३१	२८
२९	७ ४५	१७ ५५	६ ४२	१७ २६	७ ३८	१८ ३९	६ ५४	१८ २२	२९
३०	८ ३९	१८ ५०	७ ३६	१८ २०	८ ३२	१९ ३३	७ ४८	१९ १६	३०

दिसम्बर सन् १९८९ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में—संवत् २०४६ वि.

दिस.	दिल्ली				कलकत्ता				बम्बई				मद्रास				दिस.
८९	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		८९
ता.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	ता.
१	९	२९	१९	४८	८	२७	१९	१७	९	२३	२०	२९	८	३९	२०	११	१
२	१०	१४	२०	४८	९	१५	२०	१५	१०	११	२१	२७	९	२९	२१	०७	२
३	१०	५५	२१	५०	९	५८	२१	१३	१०	५५	२२	२३	१०	१५	२२	०१	३
४	११	३१	२२	५१	१०	३७	२२	११	११	३६	२३	२०	१०	५९	२२	५५	४
५	१२	०५	२३	५२	११	१४	२३	०९	१२	१५	—	—	११	४०	२३	४७	५
६	१२	३७	—	—	११	५०	—	—	१२	५२	०	१५	१२	२१	—	—	६
७	१३	०९	०	५३	१२	२५	०	०७	१३	३०	१	११	१३	०२	०	४०	७
८	१३	४४	१	५७	१३	०३	१	०६	१४	१०	२	०९	१३	४५	१	३५	८
९	१४	२२	३	०३	१३	४५	२	०९	१४	५४	३	१०	१४	३१	२	३२	९
१०	१५	०५	४	१३	१४	३२	३	१५	१५	४३	४	१४	१५	२३	३	३३	१०
११	१५	५७	५	२५	१५	२५	४	२४	१६	३८	५	२१	१६	२०	४	३८	११
१२	१६	५६	६	३७	१६	२६	५	३४	१७	४०	६	३०	१७	२३	५	४५	१२
१३	१८	०१	७	४४	१७	३१	६	४०	१८	४५	७	३६	१८	२८	६	५१	१३
१४	१९	१९	८	४३	१८	३८	७	४१	१९	५१	८	३७	१९	३२	७	५३	१४
१५	२०	१६	९	३३	१९	४२	८	३३	२०	५३	९	३०	२०	३३	८	४८	१५
१६	२१	२०	१०	१४	२०	४२	९	१८	२१	५२	१०	१६	२१	२९	९	३७	१६
१७	२२	१९	१०	५०	२१	३८	९	५७	२२	४६	१०	५६	२२	२०	१०	२०	१७
१८	२३	१५	११	२१	२२	३१	१०	३१	२३	३७	११	३२	२३	०९	१०	५९	१८
१९	—	—	११	४९	२३	२२	११	०३	—	—	१२	०६	२३	५५	११	३५	१९
२०	०	०९	१२	१७	—	—	११	३३	०	२६	१२	३८	—	—	१२	०९	२०
२१	१	०२	१२	४४	०	१२	१२	०४	१	१४	१३	१०	०	४०	१२	४४	२१
२२	१	५४	१३	१४	१	०२	१२	३६	२	०२	१३	४४	१	२६	१३	२०	२२
२३	२	४८	१३	४५	१	५३	१३	१०	२	५२	१४	२०	२	१३	१३	५८	२३
२४	३	४४	१४	२१	२	४५	१३	४८	३	४३	१४	५९	३	०२	१४	४०	२४
२५	४	४०	१५	०२	३	३९	१४	३१	४	३६	१५	४४	३	५३	१५	२६	२५
२६	५	३७	१५	४९	४	३५	१५	१९	५	३०	१६	३३	४	४६	१६	१६	२६
२७	६	३३	१६	४२	५	३०	१६	१२	६	२५	१७	२६	५	४०	१७	०९	२७
२८	७	२५	१७	४०	६	२२	१७	०९	७	१८	१८	२३	६	३४	१८	०५	२८
२९	८	१३	१८	४१	७	११	१८	०८	८	०८	१९	२१	७	२५	१९	०१	२९
३०	८	५४	१९	४३	७	५६	१९	०८	८	५४	२०	१८	८	१३	१९	५७	३०
३१	९	३२	२०	४५	८	३७	२०	०६	९	३६	२१	१५	८	५८	२०	४९	३१

जनवरी सन् १९९० ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में—संवत् २०४६ वि.

जन.	दिल्ली				कलकत्ता				बम्बई				मद्रास				जन.
९०	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		९०
ता.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	ता.
१	१०	०७	२१	४६	९	१५	२१	०४	१०	१६	२२	११	९	४०	२१	४४	१
२	१०	३९	२२	४७	९	५१	२२	०२	१०	५३	२३	०७	१०	२१	२२	३७	२
३	११	११	२३	४९	१०	२६	२३	००	११	३०	—	—	११	०१	२३	३०	३
४	११	४४	—	—	११	०२	२४	००	१२	०९	०	०३	११	४२	—	—	४
५	१२	१९	०	५३	११	४१	—	—	१२	४९	१	०१	१२	२६	०	२५	५
६	१२	५९	१	५९	१२	२४	१	०२	१३	३५	२	०१	१३	१४	१	२२	६
७	१३	४५	३	०७	१३	१३	२	०७	१४	२५	३	०५	१४	०७	२	२३	७
८	१४	३९	४	१७	१४	०९	३	१५	१५	२२	४	११	१५	०५	३	२७	८
९	१५	४१	५	२५	१५	११	४	२१	१६	२५	५	१७	१६	०८	४	३२	९
१०	१६	४७	६	२६	१६	१६	५	२४	१७	३०	६	२०	१७	१२	५	३५	१०
११	१७	५५	७	२०	१७	२१	६	१९	१८	३४	७	१६	१८	१४	६	३३	११
१२	१९	००	८	०६	१८	२४	७	०८	१९	३५	८	०६	१९	१२	७	२५	१२
१३	२०	०३	८	४४	१९	२४	७	५०	२०	३२	८	४९	२०	०८	८	११	१३
१४	२१	०१	९	१८	२०	१९	८	२७	२१	२६	९	२७	२०	५८	८	५२	१४
१५	२१	५७	९	४८	२१	१२	९	००	२२	१६	१०	०२	२१	४६	९	३०	१५
१६	२२	५१	१०	१६	२२	०३	९	३२	२३	०६	१०	३६	२२	३३	१०	०६	१६
१७	२३	४५	१०	४४	२२	५३	१०	०३	२३	५४	११	०८	२३	१९	१०	४१	१७
१८	—	—	११	१३	२३	४४	१०	३४	—	—	११	४२	—	—	११	१७	१८
१९	०	३९	११	४४	—	—	११	०८	०	४४	१२	१७	०	०६	११	५४	१९
२०	१	३३	१२	१८	०	३६	११	४४	१	३४	१२	५५	०	५४	१२	३५	२०
२१	२	२९	१२	५६	१	२९	१२	२५	२	२६	१३	३७	१	४४	१३	१८	२१
२२	३	२६	१३	४१	२	२४	१३	१०	३	२०	१४	२४	२	३६	१४	०६	२२
२३	४	२२	१४	३१	३	१९	१४	०१	४	१४	१५	१५	३	३०	१४	५८	२३
२४	५	१६	१५	२७	४	१३	१४	५७	५	०८	१६	११	४	२४	१५	५३	२४
२५	६	०५	१६	२८	५	०४	१५	५६	६	००	१७	०९	५	१६	१६	५०	२५
२६	६	५०	१७	३१	५	५१	१६	५७	६	४८	१८	०८	६	०६	१७	४७	२६
२७	७	३०	१८	३४	६	३४	१७	५७	७	३३	१९	०७	६	५३	१८	४३	२७
२८	८	०७	१९	३७	७	१४	१८	५६	८	१४	२०	०४	७	३७	१९	३८	२८
२९	८	४१	२०	४०	७	५१	१९	५१	८	५३	२१	०१	८	१९	२०	३२	२९
३०	९	१३	२१	४२	८	२७	२०	४८	९	३१	२१	५८	९	००	२१	२६	३०
३१	९	४६	२२	४६	९	०४	२१	४४	१०	०९	२२	५६	९	४२	२२	२०	३१

फरवरी सन् १९९० ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में—संवत् २०४६-४७ वि.

फर. ९० ता.	दिल्ली उदय घं. मि.	दिल्ली अस्त घं. मि.	कलकत्ता उदय घं. मि.	कलकत्ता अस्त घं. मि.	बम्बई उदय घं. मि.	बम्बई अस्त घं. मि.	मद्रास उदय घं. मि.	मद्रास अस्त घं. मि.	फर. ९० ता.
१	१० २०	२३ ५१	९ ४२	२२ ५६	१० ४९	२३ ५६	१० २५	२३ १७	१
२	१० ५९	— —	१० २३	२४ ००	११ ३३	— —	११ ११	— —	२
३	११ ४२	० ५९	११ ०९	— —	१२ २१	० ५८	१२ ०२	० १७	३
४	१२ ३२	२ ०७	१२ ०१	१ ०५	१३ १५	२ ०२	१२ ५७	१ १९	४
५	१३ २९	३ १३	१३ ००	२ १०	१४ १३	३ ०६	१३ ५७	२ २२	५
६	१४ ३२	४ १६	१४ ०२	३ १३	१५ १६	४ ०८	१४ ५८	३ २४	६
७	१५ ३८	५ ११	१५ ०६	४ १०	१६ १९	५ ०६	१६ ००	४ २२	७
८	१६ ४३	५ ५९	१६ ०९	५ ००	१७ २०	५ ५७	१६ ५९	५ १५	८
९	१७ ४७	६ ४०	१७ ०९	५ ४४	१८ १८	६ ४२	१७ ५५	६ ०३	९
१०	१८ ४७	७ १५	१८ ०६	६ २२	१९ १३	७ २२	१८ ४७	६ ४६	१०
११	१९ ४४	७ ४६	१९ ००	६ ५७	२० ०६	७ ५९	१९ ३७	७ २५	११
१२	२० ३९	८ १६	१९ ५२	७ ३०	२० ५६	८ ३३	२० २४	८ ०२	१२
१३	२१ ३४	८ ४४	२० ४३	८ ०१	२१ ४५	९ ०६	२१ ११	८ ३८	१३
१४	२२ २८	९ १३	२१ ३४	८ ३२	२२ ३५	९ ३९	२१ ५८	९ १४	१४
१५	२३ २२	९ ४२	२२ २६	९ ०५	२३ २५	१० १४	२२ ४६	९ ५१	१५
१६	— —	१० १५	२३ १९	९ ४१	— —	१० ५१	२३ ५५	१० ३०	१६
१७	० १८	१० ५२	— —	१० १९	० १६	११ ३१	— —	११ १२	१७
१८	१ १४	११ ३३	० १३	११ ०२	१ ०९	१२ १५	० २६	११ ५७	१८
१९	२ १०	१२ २०	१ ०७	११ ५१	२ ०३	१३ ०४	१ १९	१२ ४७	१९
२०	३ ०४	१३ १३	२ ०१	१२ ४४	२ ५७	१३ ५७	२ १२	१३ ४०	२०
२१	३ ५५	१४ १२	२ ५३	१३ ४१	३ ४९	१४ ५४	३ ०४	१४ ३६	२१
२२	४ ४२	१५ १३	३ ४२	१४ ४०	४ ३८	१५ ५२	३ ५५	१५ ३३	२२
२३	५ २४	१६ १७	४ २६	१५ ४१	५ २४	१६ ५१	४ ४४	१६ २९	२३
२४	६ ०२	१७ २१	५ ०८	१६ ४१	६ ०७	१७ ५०	५ २९	१७ २५	२४
२५	६ ३८	१८ २५	५ ४७	१७ ४२	६ ४८	१८ ४८	६ १३	१८ २१	२५
२६	७ १२	१९ २९	६ २४	१८ ४२	७ २७	१९ ४७	६ ५५	१९ १६	२६
२७	७ ४५	२० ३४	७ ०२	१९ ४४	८ ०६	२० ४६	७ ३८	२० १२	२७
२८	८ २०	२१ ४१	७ ४०	२० ४७	८ ४७	२१ ४७	८ २१	२१ १०	२८

मार्च सन् १९९० ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में—संवत् २०४६-४७ वि.

मार्च ९० ता.	दिल्ली उदय घं. मि.	दिल्ली अस्त घं. मि.	कलकत्ता उदय घं. मि.	कलकत्ता अस्त घं. मि.	बम्बई उदय घं. मि.	बम्बई अस्त घं. मि.	मद्रास उदय घं. मि.	मद्रास अस्त घं. मि.	मार्च ९० ता.
१	८ ५८	२२ ४९	८ २१	२१ ५१	९ ३१	२२ ५०	९ ०८	२२ १०	१
२	९ ४१	२३ ५९	९ ०७	२२ ५८	१० १८	२३ ५५	९ ५८	२३ १२	२
३	१० २९	— —	९ ५८	— —	११ ११	— —	१० ५३	— —	३
४	११ २४	१ ०६	१० ५४	० ०४	१२ ०८	० ६०	११ ५१	० १५	४
५	१२ २५	२ १०	११ ५५	१ ०७	१३ ०९	२ ०३	१२ ५२	१ १८	५
६	१३ २९	३ ०७	१२ ५८	२ ०५	१४ ११	३ ०१	१३ ५३	२ १७	६
७	१४ ३४	३ ५६	१४ ००	२ ५६	१५ १२	३ ५३	१४ ५२	३ १०	७
८	१५ ३६	४ ३८	१५ ००	३ ४१	१६ १०	४ ३९	१५ ४७	३ ५९	८
९	१६ ३६	५ १४	१५ ५७	४ २१	१७ ०५	५ २०	१६ ४०	४ ४२	९
१०	१७ ३४	५ ४७	१६ ५१	४ ५६	१७ ५७	५ ५७	१७ ३०	५ २२	१०
११	१८ २९	६ १६	१७ ४३	५ २९	१८ ४८	६ ३२	१८ १७	५ ६०	११
१२	१९ २४	६ ४५	१८ ३५	६ ०१	१९ ३७	७ ०५	१९ ०४	६ ३६	१२
१३	२० १८	७ १३	१९ २६	६ ३२	२० २७	७ ३८	१९ ५१	७ ११	१३
१४	२१ १३	७ ४३	२० १७	७ ०४	२१ १७	८ १२	२० ३९	७ ४८	१४
१५	२२ ०८	८ १४	२१ १०	७ ३९	२२ ०८	८ ४८	२१ २७	८ २६	१५
१६	२३ ०४	८ ४९	२२ ०३	८ १६	२३ ००	९ २७	२२ १८	९ ०७	१६
१७	२३ ५९	९ २८	२२ ५७	८ ५७	२३ ५३	१० ०९	२३ ०९	९ ५७	१७
१८	— —	१० १३	२३ ५१	९ ४३	— —	१० ५६	— —	१० ३९	१८
१९	० ५४	११ ०३	— —	१० ३३	० ४६	११ ४७	० ०२	११ ३०	१९
२०	१ ४५	११ ५८	० ४३	११ २८	१ ३८	१२ ४१	० ५४	१२ २३	२०
२१	२ ३३	१२ ५७	१ ३२	१२ २५	२ २८	१३ ३७	१ ४४	१३ १८	२१
२२	३ १६	१३ ५८	२ १७	१३ २४	३ १४	१४ ३५	२ ३३	१४ १४	२२
२३	३ ५६	१५ ०१	३ ००	१४ २३	३ ५८	१५ ३३	३ १९	१५ ०९	२३
२४	४ ३२	१६ ०४	३ ३९	१५ २३	४ ३९	१६ ३१	४ ०३	१६ ०५	२४
२५	५ ०६	१७ ०८	४ १७	१६ २४	५ १९	१७ २९	४ ४८	१७ ००	२५
२६	५ ४०	१८ १४	४ ५५	१७ २५	५ ५९	१८ २९	५ २८	१७ ५६	२६
२७	६ १५	१९ २२	५ ३३	१८ २९	६ ४०	१९ ३१	६ १२	१८ ५५	२७
२८	६ ५३	२० ३२	६ १५	१९ ३५	७ २३	२० ३५	६ ५९	१९ ५६	२८
२९	७ ३५	२१ ४३	७ ००	२० ४३	८ १०	२१ ४१	७ ४९	२० ५९	२९
३०	८ २३	२२ ५४	७ ५१	२१ ५२	९ ०३	२२ ४९	८ ४४	२२ ०५	३०
३१	९ १८	— —	८ ४७	२२ ५९	१० ०१	२३ ५४	९ ४३	२३ १०	३१

संवत् २०४६ विक्रमी का द्वादश राशिफल

लेखक–ज्यो० पं० दामोदर प्रसाद शर्मा, मु० पो० सिमारला, वाया-थोई जिला-सीकर (राजस्थान) पिन. ३३२७१९.

यह राशिफल गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार दिया गया है। जन्मकालीन ग्रहों एवं दशान्तर प्रत्यन्तर दशा का फल मुख्य है। एतदर्थ इस राशिफल का सत्यता की कसौटी पर बिल्कुल खरा उतरना सभी व्यक्तियों के लिये अनिवार्य नहीं है, क्योंकि एक ही राशि के सभी व्यक्तियों के कार्य एवं पेशा एक समान नहीं होते, अतः यह राशिफल एक स्थूल फलादेश मात्र है। मासिक तथा वार्षिक फलादेश, जन्मपत्र, वर्षफल आदि के सूक्ष्म गणित से ही मालूम किया जा सकता है। जिसके लिए लेखक के पते से फीस की जानकारी एवं सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं। अनेक लोगों को अपनी जन्म राशि का या नाम राशि का भी ज्ञान नहीं होता। इसलिए यहाँ प्रत्येक राशि के आगे कोष्ठक में उस राशि के प्रधान अक्षर लिख दिये गये हैं। अपने नाम का प्रधान अक्षर जिस राशि के साथ कोष्ठक में मिले, वही अपनी राशि समझनी चाहिए। व, ब, स, श, तथा ह्रस्व-दीर्घ मात्राओं से राशि जानने में कोई अन्तर नहीं पड़ता।

— सम्पादक

मेष– (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

इस वर्ष मेष राशि वालों को श्रेष्ठफल अधिक होंगे। शरीर सुख तथा स्त्री सुख के साथ कारोबार धन्धों में धन लाभ के चांस प्राप्त होंगे। शनि भाग्य भवन में होने से भाग्य सहारा कम देगा। बुद्धि में कमजोरी तथा कुछ मानसिक अशान्ति रहेगी। नौकरी वालों को स्थानान्तर एवं तरक्की का योग है। इष्ट-मित्र, स्वजन समागम से मन में हर्ष होगा। सर्वोत्तम भोजन शयन, वस्त्राभूषण का सुख मिलेगा। ता० २४ सितम्बर से कौटुम्बिक झंझटों से मन में अशान्ति रहेगी। वृद्धजनों को कष्ट होगा। परिश्रम का लाभ कम होगा। राजभय, उद्योग धन्धों में न्यूनता आयेगी। वर्ष उत्तरार्ध में शनि केतु की शान्ति जपदानादि से करावें। अप्रैल में स्वास्थ्य सुख ठीक तथा कारोबार धन्धों में धनलाभ होगा। स्वजनों से सहयोग भी मिलेगा। मई जून में भाग्य वृद्धि के साथ मान सम्मान बढ़ेगा। सन्तान सुख सहयोग साधारण मिलेगा। जुलाई में पारिवारिक सुख यथावत् मिले किन्तु पुत्रादि से चिन्ता हो। धन खर्चा बढ़ेगा। अगस्त सितम्बर में शत्रु उत्पन्न होकर परास्त होंगे। बुद्धि में मन्दता चलेगी। मित्र बन्धुओं से सहयोग के साथ सेहत ठीक चलेगी। अक्टूबर में स्वास्थ्य में गड़बड़ी चलेगी। स्त्री को कष्ट होगा। कारोबार धन्धों में लाभ सामान्य रूप से होता रहेगा। नवम्बर में धन की कमी से मन चिन्तित रहे। दिनचर्या अव्यवस्थित होगी। लोकापवाद एवं दुर्वचन का भागी होना पड़ेगा। दिसम्बर में प्रथम हानि होकर फिर लाभ होगा। शत्रु हार मानेंगे। भाग्य सहारा से कुछ काम बनेंगे। जनवरी फरवरी ९० से राजकाज में सफलता। भाइयों से सहयोग तथा स्वास्थ्य सुख मध्यम चलेगा। सन्तान पक्ष से चिन्ता रहेगी। मार्च में परिवार सुख सहयोग मिले और रुके काम बनेंगे। मन में उत्साह बढ़ेगा। स्त्री पुत्रादि का सुख मिलेगा। महिलाओं को यह वर्ष अच्छा है। विद्यार्थियों को मध्यम रहेगा।

वृष– (ई, उ, ए, ओ, व, वि, वू, वे, वो)

इस वर्ष आपको ढैयाशनि स्वर्णपाद से चल रहा है। केतु की स्थिति भी अच्छी नहीं है। अतः शरीर कमजोर, पीड़ा, चिन्ता एवं भययुक्त रहे। परिवार में मनमुटाव से मन अशान्त रहे। परिश्रम अधिक करने पर भी लाभ साधारण ही मिलेगा। गुरु की अनुकूलता से कुछ द्रव्यलाभ तथा स्वास्थ्य में आरोग्यता प्राप्त होगी। वर्ष के उत्तरार्ध में वाकपटुता से सभी काम बना लोगे। पराक्रम पुरुषार्थ की भी वृद्धि होगी। मित्र बन्धु सुख सदगुण कीर्ति की वृद्धि, धार्मिक कार्यों में प्रवृति होगी। स्त्री पुत्रादि से सहयोग प्राप्त होगा। अशुभ फल निवारणार्थ रुद्राभिषेक, शिवार्चना, दान, जपादि कराना चाहिए। अप्रैल-मई में परिवार व मित्रों से सहयोग साधारण मिले। अपव्यय, यात्रा में कष्ट तथा अशुभ समाचार से चिन्ता होगी। जून में घरेलू झंझट, धन व्यय होगा। सावधानी से काम-धन्धों में लाभ होना सम्भव है। शत्रु से सावधान रहें। जुलाई-अगस्त में स्वास्थ्य में सुधार व्यापार धन्धों में मन लगेगा। मित्रादि से सहयोग भी मिलेगा। मान-सम्मान यथावत् मिलेगा। सितम्बर में गुप्त शत्रु से सावधान, मानसिक पीड़ा, चिन्ता तथा दौड़ धूप की अधिकता बनेगी। धनलाभ होकर खर्चा बढ़ेगा। अक्टूबर-नवम्बर में अशुभफल कम होकर उत्तम फल होने लगेंगे। शत्रु पराजित होंगे। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। व्यापार में उन्नति होगी। दिसम्बर में स्वजनों से मनमुटाव, सन्तान पक्ष से चिन्ता व्यापेगी। दुष्ट संगति से बचें। जनवरी ९० से अशुभ फलों में कमी आयेगी। मान-सम्मान एवं धन लाभ होगा। शरीर नरम चलेगा। फरवरी-मार्च में पराक्रम वृद्धि से व्यापार में प्रगति, स्वास्थ्य मध्यम तथा मान-सम्मान बढ़ेगा। धन खर्चा बढ़ेगा। महिलाओं के लिए यह वर्ष मध्यम रहेगा। विद्यार्थियों को परिश्रम करने से ही सफलता प्राप्त होगी।

मिथुन– (क, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह)

यह वर्ष मिथुन राशि वालों को सामान्य फलप्रद रहेगा। आलस्य प्रमाद और स्त्री कष्ट से मानसिक अशान्ति रहेगी। व्यर्थ के विवाद एवं अकारण धन का व्यय बढ़ेगा। रोजगार धन्धों में बाधा उत्पन्न होगी। ता० २ जुलाई से गुरु आपकी राशि पर आने से अशुभ फलों में कमी आयेगी। साहसिक प्रवृति प्रबल होगी। निजी पराक्रम से कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। मान-सम्मान धन, यश की वृद्धि होगी। पराक्रम पुरुषार्थ बढ़ेगा। ता० २४ सितम्बर से राहु केतु की प्रतिकूलता बनेगी, जिससे स्वास्थ्य कमजोर चलेगा। वृथा-विवाद एवं लोक निन्दा का भय रहे। दौड़ धूप की अधिकता तथा धन खर्चा बढ़ेगा। अप्रैल में भाग्योन्नति में बाधा होगी। स्वास्थ्य नरम एवं यात्रा होगी। धनलाभ साधारण होता रहेगा। मई-जून में शरीर में रोग पीड़ा तथा आर्थिक हानि से मन अशान्त रहेगा। वृथा कलह बढ़ेगा। स्त्री पुत्रादि से सुख मिलेगा। शुभ कामों में धन व्यय होगा। जुलाई में व्यापार मंदा रहे जिससे ऋण लेने की सम्भावना बढ़ेगी। शुभ विचारों का उदय होगा तथा स्वजनों से मेल जोल बढ़ेगा। अगस्त-सितम्बर में शुभ फलों का संचार होगा। बुद्धि में तीव्रता तथा पराक्रम वृद्धि होगी। व्यापार में धन लाभ के चांस प्राप्त होंगे। खर्चा भी बढ़ेगा। अक्टूबर-नवम्बर में सिर व नेत्र पीड़ा तथा रोग भय बढ़े किन्तु अन्य फल श्रेष्ठ होंगे। उत्साह वृद्धि से सभी काम बना लोगे। दिसम्बर में भाइयों को पीड़ा हो। काम धन्धों में वृद्धि तथा मान सम्मान बना रहे। जनवरी-फरवरी ९० से दौड़ धूप की अधिकता रहेगी। शत्रु से सावधान, स्त्री पक्ष से चिन्ता व्यापेगी। मार्च में शारीरिक कष्ट से चिन्ता, धन व्यय, राजकाज में सफलता मिलेगी। व्यापार में धनलाभ ठीक होता रहेगा। महिलाओं एवं विद्यार्थियों को यह वर्ष मिश्रित फलप्रद रहेगा।

कर्क– (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

कर्क राशि वालों को वर्ष प्रारम्भ के चार महिनों के अलावा नेष्ट फल ही अधिक होंगे। वर्ष प्रारम्भ में गुरु-शनि की अनुकूलता से रोग शत्रु परास्त होंगे। चालु कामों में धनलाभ होता रहेगा। स्वास्थ्य में सुधार तथा संतति सुख, मन में उत्साह बना रहेगा। ता० २ जुलाई से गुरु व्यय भाव में तथा २४ सितम्बर से राहु केतु की स्थिति खराब होने से स्वास्थ्य कमजोर तथा चिन्तायुक्त रहें। स्त्री सुख सहयोग में कमी आयेगी। रोजी रोजगार मध्यम चलेंगे। लाभ कम खर्चा अधिक होगा। स्थानान्तर, पदच्युति, कष्ट-पीड़ा आदि अशुभ फल होंगे। वर्ष उत्तरार्ध में गुरु राहु केतु की शान्ति दुर्गापाठ, गुरुवार के व्रत आदि से कराना जरुरी है। अप्रैल में कारोबार धन्धा अच्छा तथा भाग्योन्नति होगी। शत्रुभय, कलह, व राज्य में विजय होगी। स्त्री पुत्रादि से सहयोग मिलेगा। मई-जून में आमदनी में वृद्धि होगी परन्तु व्यय की अधिकता रहे। मन में अशान्ति होगी। जुलाई में सन्तान सुख ठीक, पत्नी सुख मध्यम मिलेगा। यात्रा में कष्ट तथा उदर विकार से कष्ट होगा। अगस्त-सितम्बर में क्रोध अधिक बढ़ेगा। जिससे वैर विरोध बढ़ेगा। कारोबार में लाभ होता रहेगा। अक्टूबर में शरीर कमजोर, मानसिक अशान्ति, तथा मित्रों से सुख सहयोग मिलेगा। कुछ बाधाएँ आयेंगी, जिन पर आप विजय पा लोगे। नवम्बर-दिसम्बर में व्यवसाय में सुधार होगा. धैर्य से काम करें, सफलता मिलेगी। वृथा वाद-विवाद से बचें। जनवरी ९० से चालू कामों में तरक्की होगी परन्तु धन खर्चा तथा मानसिक चिन्ताएँ उत्पन्न होंगी। फरवरी-मार्च में कारोबार में रुकावटें, असफल योजना, तथा अशुभ समाचारों से मन खिन्न रहेगा। शत्रु पराभूत होंगे। स्वजनों से सहयोग मिलेगा। महिलाओं को यह वर्ष क्रमशः उत्तम-मध्यम है। विद्यार्थियों को सावधानी से सफलता मिल सकती है।

सिंह– (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

इस वर्ष के प्रारम्भ में राहु केतु की स्थिति अच्छी नहीं है। मन में उद्वेग तथा स्वास्थ्य कमजोर, पीड़ा चिन्तायुक्त रहेगा। स्त्री को भी कष्ट होगा, गुरु की स्थिति उत्तम है अतः पराक्रम तथा मान-सम्मान में वृद्धि होगी। अन्न, धन उत्तम भोग पदार्थों की प्राप्ति होगी। ता० २४ सितम्बर से श्रेष्ठफलों में उत्तरोत्तर वृद्धि होगी। उद्योग धन्धो में प्रगति एवं उच्चाधिकारियों से मेलजोल बढ़ेगा। शत्रु परास्त होंगे तथा समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। जमीन, जायदाद, खेती, वाहन से सुख समृद्धि बढ़ेगी। नौकरी पेशा वालों की तरक्की होगी। वर्ष प्रारम्भ में राहु केतु की शान्ति जपदानादि से करावें। अप्रैल में चालू कामों में ही लाभ होता रहेगा। नया काम न करें। मानसिक हिम्मत बनी रहेगी। चोरादि भय, अपमान, बलकान्ति का क्षय होगा। मई-जून में सज्जन व्यक्ति से मेल मिलाप, काम धन्धों में वित्तलाभ, राजकाज में सफलता मिलेगी। जुलाई में धार्मिक कार्यों में रुचि होगी। लाभ होकर खर्चा होगा। बाधाएँ, दौड़ धूप अधिक करनी होगी। अगस्त में धन एवं सुख की हानि, वित्त में उद्विग्नता, स्वास्थ्य

मे कमजोरी होगी। भाग्य सहारा देगा। सितम्बर-अक्टूबर मे रोग व शत्रु पराभूत होंगे। धन खर्चों के साथ लाभ भी होगा। मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी। सन्तान को कष्ट होगा। नवम्बर मे पत्नी और सन्तान की मनमानी से दु:ख होगा। ज्वर या उदर रोग होगा। शत्रु परास्त होंगे। दिसम्बर मे व्यर्थ के कार्यों मे धन का अपव्यय होगा। मित्र बन्धु सुख सन्तान वृद्धि से प्रसन्नता होगी। भाग्य सहारा से कुछ काम बनेंगे। जनवरी ९० से मित्रादि से सहयोग तथा शत्रु उत्पन्न होकर नष्ट होंगे। नवीन कार्यों मे हानि होगी। सन्तान को कष्ट तथा स्त्री को सुख ठीक रहे। फरवरी-मार्च मे अच्छे फल होंगे। लाभ की सम्भावना बनेगी। मन प्रसन्न रहे। शुभ कामो मे व्यय होगा। स्वास्थ्य सुख मध्यम चलेगा। महिलाओ के लिए यह वर्ष उत्तम मध्यम है। विद्यार्थियो को अशुभ रहेगा। मन मे अशान्ति अस्थिरता होगी।

कन्या– (टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

इस वर्ष आपको ढैया शनि रजत पाये से चल रहा है। वर्षारम्भ मे राहु छठे भाव मे और २४ सितम्बर से पञ्चम भाव मे उत्तम मध्यम है। गुरु की स्थिति सानुकूल है अत: वर्ष का पूर्वार्ध शुभ फलप्रद रहेगा। व्यवसाय धन्धो मे लाभ होगा। वाक्पटुता से सभी काम बना लोगे। मित्र बन्धु सुख, सद्गुण कीर्ति की वृद्धि तथा धार्मिक कार्यो मे प्रवृति होगी। भाग्योन्नति, धनलाभ सम्मान प्राप्त होगा। धन खर्चा अवश्य बढेगा। वर्ष उत्तरार्ध मे कलहकारी मिथ्यापवाद और बुद्धि मे स्थूलता से बनते काम बिगड़ेंगे। सन्तान सुख मे बाधा उत्पन्न होगा। स्त्री सुख मध्यम रहेगा। कारोबार धन्धो मे भी बाधा उत्पन्न होगी। अप्रैल मे शरीर मे रोग पीड़ा, स्त्री से सहयोग से कई काम बनेगे। व्यवसाय मे उन्नति होगी। मई जून मे साहसिक कामो मे प्रवृति होगी। दौड धूप अधिक करनी पडेगी। शरीर सुख तथा मकान भूमि का लाभ होगा। जुलाई मे उत्तम-मध्यम फल होंगे। कारोबार मे प्रगति होगी। भाग्य सहारा देगा किन्तु पारिवारिक झझटो से मन अशान्ति रहेगा। अगस्त सितम्बर से सावधानी व धैर्य से समय निकालें। लाभ कम खर्चा अधिक होगा। स्वास्थ्य सुख मध्यम चलेगा। मान-सम्मान यथावत बना रहेगा। अक्टूबर मे रोजगार धन्धो मे लाभ किन्तु मन अशान्त रहे। मित्र बन्धुओ से सहयोग। पत्नी को भी पीड़ा सम्भव है। नवम्बर-दिसम्बर मे धन प्राप्ति सुख लाभ, स्वास्थ्य मे सुधार होगा किन्तु दौड धूप की अधिकता रहेगी। गुप्त शत्रु से सावधान रहे वरना हानि हो सकती है। जनवरी ९० से मित्रवर्ग तथा सन्तान पक्ष से सुख सहयोग मिलेगा। बुद्धि का विकास होगा। साहस न खोये मेहनत करते रहें। फरवरी-मार्च मे काम धन्धा मध्यम चलेगा। दुष्टो से सावधान रहे। परिवारजनो को कष्ट होगा। शत्रु मौका देखकर हानि करेंगे। महिलाओ को इस वर्ष मध्यम फल प्राप्त होंगे। विद्यार्थियो को वर्ष पूर्वार्ध मे श्रेष्ठ तथा नेष्ट फल अधिक होंगे।

तुला– (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते)

इस वर्ष मे तुला राशि वालो को उत्तम-मध्यम फल प्राप्त होंगे। वर्ष प्रारम्भ से १ जुलाई तक गुरु अष्टम भाव मे नेष्ट है। पीड़ा चिन्ता से मन मे अशान्ति रहेगी। सन्तति पीड़ा, विद्या बुद्धि मे कमी तथा सट्टे वायदे से व्यापार मे हानि होगी। पराक्रम स्थान मे शनि होने से पुरुषार्थ से कुछ काम अवश्य बना लोगे। यश प्रतिष्ठा बनी रहेगी। ता० २ जुलाई से गुरु नवम भाव मे आने से भाग्य सहारा देने लगेगा। मित्र बन्धु सुख, धनलाभ तथा बड़े लोगो से मेलजोल बढेगा। रोजगार धन्धा अच्छा चलेगा। ता० २४ सितम्बर से पारिवारिक परेशानियाँ। भोजन-शयन मे बाधा उत्पन्न होगी। मन मे असन्तोष तथा दौडधूप की अधिकता रहेगी। अप्रैल मे व्यवसाय, नौकरी, भूमि, वाहन, जायदाद आदि से सामान्य लाभ होगा। यात्रा मे कष्टानुभूति होगी। मई-जून मे मान-सम्मान बना रहेगा। व्यापारिक दशा एवं लाभ मध्यम होगा। पराक्रम से सफलता के दर्शन हो सकते है। जुलाई-अगस्त मे कामधन्धो से लाभ होगा। बड़े लोगो से मिलकर आनन्दानुभव होगा तथा भाग्य सहारा देगा। सितम्बर मे स्थाई कामो मे लाभ अल्प होगा। स्वास्थ्य मे गिरावट आयेगी। राजपक्ष तथा मित्रवर्ग अनुकूल रहेगा। अक्टूबर-नवम्बर मे यात्रा का विचार न करें। प्रतिष्ठा तो बनी रहेगी तथा लाभ कम रहेगा, चिन्ताओ के बादल दिमाग पर छाये रहेगे। परिवार सुख साधारण है। दिसम्बर से रोगशत्रु, भय, धनलाभ, व्यापार मे प्रगति होगी, किन्तु सेहत नरम चलेगी। जनवरी-फरवरी ९० मे राजकीय तथा आर्थिक क्षेत्रो मे कठोर सघर्ष से सफलता मिलेगी तथा मानप्रतिष्ठा बनेगी। मार्च मे शत्रु निरुत्साह, मेहनत से लाभ अवश्य मिलेगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। स्त्री सुख श्रेष्ट तथा सन्तान सुख मध्यम रहेगा। यह वर्ष महिलाओ के लिए सामान्य से श्रेष्ठ है। विद्यार्थियो को पूर्वार्ध अशुभ रहकर उत्तरार्ध अच्छा रहेगा।

वृश्चिक– (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यु)

इस वर्ष आपको शनि की उतरती साढे साती तथा वर्ष पूर्वार्ध मे चतुर्थ भाव मे राहु नेष्ट फल प्रद है। घर गृहस्थ, भूमि, जायदाद, वाहन, सुख मे विघ्न बाधा उत्पन्न होगी। वर्षारम्भ से तीन माह तक गुरु की श्रेष्ठता से आरोग्यता, मानसम्मान तथा धन लाभ के द्वारा प्राप्त होंगे। स्वय के विवेक से काम करने से कारोबार धन्धो मे प्रगति भी होगी। ता० २ जुलाई से अशुभ फलो मे वृद्धि होगी। सत्व गुणो का क्षय, पत्नी, पुत्र मित्र-बन्धु से सुख मे कमी, परिश्रम की अधिकता, स्वास्थ्य कमजोर होगा। विद्यार्थियो को दिमागी अस्थिरता रहेगी। वर्ष के उत्तरार्ध मे मित्रो तथा स्वजनो से सहयोग प्राप्त होगा। पराक्रम पुरुषार्थ से कुछ काम बनेगे किन्तु यह फल अल्प ही प्राप्त होंगे। अप्रैल-मई मे दौड़धूप की अधिकता मन मे चिड़चिड़ापन, व्यवसाय नौकरी मे निष्फलता तथा धनलाभ सामान्य होगा। जून से शिर मे पीड़ा, गृहक्लेश से मन मे अशान्ति रहेगी। स्त्री से सहयोग तथा धैर्य से शत्रुओ पर काबू पा लोगे। जुलाई मे मित्र तथा अन्य स्वजन आपके हाथ मजबूत करेंगे। वाक्चातुर्य से काम बना लोगे। अगस्त-सितम्बर मे राजकाज मे सफलता तथा मान-सम्मान यथावत् रहेगा। धन व्यय होगा पर उस धन से आगे जाकर प्रचुर मात्रा मे लाभ होगा। अक्टूबर से व्यापार धन्धो मे रुकावटें तथा आर्थिक हानि से मन अशान्ति रहेगा। नवम्बर-दिसम्बर मे अपने लोगो से वैमनस्य तथा राजभय, शत्रुभय से कष्ट होगा। धनलाभ भी होगा लेकिन पीड़ा चिन्ता बनी रहेगी। जनवरी ९० से बड़े अधिकारियो से मेलजोल बढ़ेगा। शरीर मे रोग पीड़ा तथा व्यवसाय मे स्थिरता रहेगी। फरवरी मार्च मे कारोबार मे लाभ ठीक रहेगा। पराक्रम बढ़ेगा और धन खर्चा अधिक होगा। राजकाज मे विजय तथा शत्रुओ पर विजय होगी। स्वास्थ्य मे गड़बड़ रहेगी। महिलाओ को यह वर्ष साधारण रहेगा। विद्यार्थियो को परिश्रम करने से ही सफलता मिलेगी।

धनु– (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे)

इस वर्ष के आरम्भ मे गुरु शत्रुभाव मे और शनि की मध्यकालीन साढे साती स्वर्णपाद से नेष्ट है। शरीर पीड़ा, कर्मक्षेत्र मे विफलता, अव्यवस्थित जीवन बौद्धिक विकास मे बाधा होगी। धन एवं व्यक्तित्व की हानि, शत्रु वृद्धि, स्थानान्तर, स्त्री कष्ट आदि परेशानियो का सामना करना पडेगा। राहु पराक्रम स्थान मे होने से कार्य करने मे उत्साह बना रहेगा। ता० २ जुलाई से गुरु सातवे घर मे आने से अशुभ फलो मे कमी होगी। साथ ही शुभ फलो का संचार होने लगेगा। स्वास्थ्य सुख तथा स्त्री सुख मे सुधार होगा। सद्भावना की उत्पत्ति, धर्मकृत्य, प्रतिभा की वृद्धि होगी। सितम्बर ८९ से राहु केतु की स्थिति भी प्रतिकूल होने से अशुभ फलो मे वृद्धि होगी। बनते कामो मे बाधा उत्पन्न होने लगेगी। अप्रैल-मई मे रोजगार धन्धो मे लाभ कम होगा। अपना स्वास्थ्य तथा स्त्रीसुख सामान्य रहेगा। क्रोधाधिक्य से कई नये शत्रु बन जायेंगे। जून मे पारिवारिक सुख तथा काम धन्धो मे सन्तोष मिलेगा तथा खर्च समान रहेगा। जुलाई अगस्त मे कारोबार सामान्य तथा सट्टे आदि से बचें वरना हानि होगी। स्वास्थ्य मे गडबडी रहेगी। सितम्बर मे मान सम्मान बढेगा। स्त्री पुत्रादि से सहयोग मिलेगा। व्यापार धन्धो मे प्रगति होकर लाभ होगा। अक्टूबर-नवम्बर मे स्वजनो तथा सगे-सम्बन्धियो मे शुभ कार्य होंगे। राजकाज तथा व्यवसाय मे लाभ रहेगा। दिसम्बर मे बुद्धि तथा मन पर सयम रखें। शत्रु दबे रहेंगे। लाभ खर्चा समान रहेगा। जनवरी ९० से कोई नया काम का विचार करेंगे। चित मे उत्साह बढेगा। फरवरी-मार्च मे धार्मिक कृत्यों मे धनव्यय शत्रुओं पर विजय, मान प्रतिष्ठा बढेगी। रुके काम पूर्ण होंगे। मित्रो का सहयोग मिलेगा। महिलाओ को इस वर्ष मे उत्तम फल प्राप्त होंगे। विद्यार्थियो के लिए पूर्वार्ध अशुभ है, उत्तरार्ध श्रेष्ट है

मकर– (भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

मकर राशि वालो को यह वर्ष प्राय: अच्छा नही है। शनि की आरम्भिक साढे साती चालू है तथा राहु केतु की स्थिति भी अच्छी नही है अत: वाद-विवाद, धन हानि, ख्याति-हीनता, रोग-पीड़ा, स्त्रीकष्ट आदि से अशान्ति व्याप्त होगी। वर्षारम्भ से तीन महीनो तक गुरु की अनुकूलता से कुछ श्रेष्ठ फल अवश्य होते प्रतीत होंगे। स्वास्थ्य सुख, आत्मबल, सन्तति सुख, बुद्धि का विकास, प्रयासदक्षता से जीवन यापन होगा। किन्तु २ जुलाई से वर्ष समाप्त तक गुरु छठे भाव मे रहेगा। यह भी अशुभ

फलों को प्रोत्साहन देगा। जिसका भला करोगे वह भी बुरा मानेगा। मानसिक अशान्ति बढ़ेगी। कारोबार धन्धों में रुकावटें पैदा होगी। अशुभ फल निवारणार्थ शिवपूजन, रुद्राभिषेक, दुर्गापाठ, दुर्गामन्त्र का जपादि करावें। अप्रैल में धन व्यय तथा परस्पर वैर विरोध होंगे। मानसिक व्यग्रता छायेगी। मई-जून में व्यापारिक वस्तुओं में लाभ होगा। शत्रु हार मानेंगे। स्वजनों से अनबन होगी। जुलाई से व्यापार में अस्थिरता भावों से लाभ कम ही होगा। परिवार के लोगों से अनबन रहेगी। अगस्त-सितम्बर में परिश्रम करने से कार्य सफल होंगे। काम धन्धों में वृद्धि, शत्रुओं से सावधान रहें। स्वास्थ्य में रोग-पीड़ा बढ़ेगी। अक्टूबर में पाप कर्मों से दूर रहें वरना कष्ट होगा। व्यवसाय में उन्नति तथा भाग्य सहारा देगा। नवम्बर-दिसम्बर में बिगड़े कार्य बनते नजर आयेंगे। भले लोगों की राय से भला होगा। शुभ कृत्यों में धन व्यय होगा। मान-सम्मान घटेगा। जनवरी ९० से शरीर में कमजोरी, घरेलू चिन्ता तथा स्वजनों से मनमुटाव होगा। फरवरी मार्च में मानसिक अवसाद, शत्रुओं से भय पदावनति, आकस्मिक विपत्ति, बुद्धि में कमी व खर्चा अधिक होगा। महिलाओं को यह वर्ष सामान्य फलप्रद है। विद्यार्थियों को मिश्रित फल प्राप्त होंगे।

कुम्भ– (गू, गे, गो, सा, सी, सु, से, सो, दा)

इस वर्ष का पूर्वार्ध आपको मध्यम है। ता० २३ सितम्बर तक आपकी राशि पर राहु और स्त्री भाव में केतु अशुभ है। स्वास्थ्य में नरमी, क्रोध की अधिकता तथा स्त्री की तरफ से चिन्ता रहे। गुरु शनि उत्तम है जो ता० २४ सितम्बर से श्रेष्ठ फलों का संचार करेंगे। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। शत्रु हार मानेंगे। कारोबार धन्धों में धन लाभ तो अच्छा होगा किन्तु खर्चों का भी योग है। शरीर सुख, स्त्री सन्तान सुख प्राप्त होगा। सद्बुद्धि लाभ, भाग्योदय, विवेक प्रतिभा की जागृति होगी। पारिवारिक जनों से सहयोग मिले। व्यवसाय में प्रगति होकर लोगों पर आपका प्रभाव पड़ेगा। अन्न, धन, वस्त्र भूषण संचय का सहयोग सुलभ होगा। अप्रैल में शत्रु की हार तथा कहीं से शुभ समाचार मिलेगा। मान-सम्मान बढ़ेगा। चालू कामों में लाभ होंगे। मई-जून में कामधन्धों में लाभ तथा उत्तम ज्ञान मिलेगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। स्वजनों से सहयोग मिलेगा। जुलाई अगस्त में धन लाभ होकर खर्चा होगा। लाभ का अवसर भी मिलेगा और शत्रु पक्ष में वृद्धि होगी। सितम्बर से स्थायी कामों से लाभ होगा। यात्रा से लाभ कम, दौड़धूप अधिक होगी तथा मन में अस्थिरता रहेगी। अक्टूबर नवम्बर में परिवार सुख द्रव्य प्राप्ति तथा स्वजनों से मिलन होगा। शरीर में रोग पीड़ा से कष्ट होगा। दिसम्बर में भाग्योदय होकर धनलाभ होगा। कारोबार ठीक चलेगा। धन खर्चा का विशेष योग है। जनवरी-फरवरी ९० ई० से शत्रु हार मानेंगे। मान-सम्मान यथावत् मिलेगा। स्त्री पक्ष की तरफ से चिन्ता व्यापेगी। मार्च में व्यापार धन्धों में प्रगति, स्वास्थ्य ठीक तथा श्रेष्ठ विचारों का उदय होगा। महिलाओं को यह वर्ष उत्तम मध्यम तथा विद्यार्थियों के लिए सामान्य है। परिश्रम का फल प्राप्त होगा।

मीन– (दी, दु, थ, झ, दे, दो, च, चा, ची)

इस वर्ष के आरम्भ में गुरु शनि की स्थिति उत्तम मध्यम है तथा राहु की स्थिति नेष्ट है अतः आपको मिश्रित फल होंगे। पराक्रम वृद्धि के साथ यश कीर्ति का विस्तार होगा। प्रतिद्वंदियों पर विजय प्राप्त होगी। उद्योग धन्धों में प्रगति एवं अधिकारियों से मेलजोल बढ़ेगा। ता० २४ सितम्बर से राहु केतु की स्थिति प्रतिकूल आने से मिथ्यापवाद, मानसिक अशान्ति रोगादि से घबराहट पैदा होगी। मार्ग चलते कुमार्ग कुसंगति का योग बनेगा। जिससे धन हानि तथा काम धन्धों में बाधा उत्पन्न होगी। राहु केतु की शान्ति जपदानादि से करना श्रेयष्कर रहेगा। अप्रैल में कामधन्धा ठीक चलेगा। भातृ-सुख मिलेगा तथा धन व्यय होगा। मई-जून में बड़े लोगों से मेलजोल बढ़ेगा। स्थायी कामों में लाभ होगा। शत्रु हार मानेंगे। जुलाई से परिवार सुख समृद्धि में वृद्धि होगी। अगस्त-सितम्बर में बुरे लोगों से बचें वरना हानि होगी। मान-सम्मान में वृद्धि, कोई शुभ संदेश मिलेगा। शत्रु व बीमारी का नाश होगा। अक्टूबर में पूर्ण परिश्रम से लाभ होगा। वृथा यात्रा तथा दौड़धूप से परेशानी होगी। नवम्बर-दिसम्बर में कारोबार ठीक चलेगा तथा शुभ फल ज्यादा, अशुभ फल कम होंगे। जनवरी ९० ई० से धैर्य साहस व बुद्धि की वृद्धि होगी। स्त्री पक्ष संतोष प्रदान करेगा। फरवरी-मार्च में धन मान में वृद्धि होगी। राजकाज में सफलता तथा सेहत ठीक रहेगी। यात्रा में कष्ट होगा। इस वर्ष महिलाओं को उत्तम-मध्यम फल प्राप्त होंगे। विद्यार्थियों के लिए सामान्य से अच्छा है।

नोट : विशेष फल जानना चाहें तो जन्मपत्र तथा वर्षफल बनवायें।

वैज्ञानिक अनुसंधान पर व्यापार भविष्य सं० २०४६ वि०

लेखक : प्रेमचन्द जैन पोरवलि द्वारा ई/एम लाइट मशीनरी टाठीपुर ग्वालियर (म०प्र०)।

संक्षिप्त सार सम्वत् २०४६ सन् १९८९-९० ।

सरसों नवम्बर ८७ में ११२५ के भाव थे। सन् १९८९ में ४१०-४७० अथवा जो फसल पर नीचे भाव बने खरीदें। डेढ़ या पौने दो साल में १२०७ या १४०० का भाव हो सकते है। चांदी अभी जुलाई ८९ में ६५०० का भाव काटे तो ७२०७ हो सकती है। अरहर ८७ में ८००, ९०० वाले सन् ८९ में फसल पर ३९९-४२५ होकर ६०० हो सकती है। - चना जुलाई १९८८ में ७०० के ऊँचे भाव बने है सन् १९८९ में ३९०-४३० होकर सन् १९८९ में ६५०, ७०० होकर दीपावली ८९ से मंदी चालू हो जायेगी। मंदी में १९९० चना ३०० रह सकता है। अतः बड़ी तेजी में नफा लाभ लेना ठीक रहेगा। गुवार सन् १९८७ में टोप के भाव है। सन् १९८९ में भाव घटकर ३५५ होकर १९९० तक ९०० भाव हो सकते है। लाभ-हानि की जिम्मेदारी नहीं होगी।

लहसुन, जो १९८६-८७ में लहसुन का भाव ४५ रुपया किलो खेरिज में बिका जो सन् १९८८ में ५ रुपया किलो, बिका जो सन् १९९० में १५००-२१०० भाव हो सकते है। मोठ सन् ८८ में भाव टोप रहा था १२५० बिक्री १९८९ में घटकर ४५०-५०० हो सकती है। सन् १९८९-९० में तेजी के भाव बन सकते है परन्तु बीच-बीच में तथा १९८९ में जबरदस्त सरसों में २५०-३०० डेढ़ दो महीने में बढ़ेंगे तो-१२५ डेढ़ सौ की मंदी नौ से सोलह दिन में मन्दी आया करेगी। इस घटा बढ़ी को जानने के लिये सन् ८९ की उन महीनों और समय की पत्रिका व पुस्तकों की तेजी मंदी सम्बन्धित लेख पढ़े जिससे नीचे-ऊंचे भाव का समय जान सकें। फिर भी बाजार का रूख देखकर सीमित व्यापार करें।

शेयर मार्केट में अक्टूबर ८८ से दिसम्बर ८९ के मध्य एक जोर दार तेजी आ सकती है। जैसे सन् १९८५ में रिलाइन्स शेयर ३९८ का भाव था। मार्च, अप्रैल १९८८ में घटकर ७० के करीब भाव होकर जून १९८८ में तूफानी तेजी आकर २३४ के भाव हुये। यानी दो महीने में ७००० के २३४०० के रुपये हो गए। भाव शेयर में ऐसी घटाबढ़ी चलती है। अब रिलाईन्स शेयर २०० वाला ३४२ या ४२५ टोप के भाव बन सकते है। औरके शेयर १६५ वाला अभी अगस्त ८८ में २३ के भाव करीब उसके भाव ९९ या १७० के भाव दो साल में कभी भी हो सकती है। अतः १९८९, ९० शेयर में एक बड़ी तेजी आकर बाद में बड़ी मंदी आयेगी। अतः बम्बई-डाईंग, सेन्चूरी, एस० के० एफ०, आर० के०, टिस्को, टेलको, टाटा टी, आयल इत्यादि अच्छी कम्पनियों के शेयरों कि स्थिति देखकर सौदा करें।

जीरा सन् १९८८ ४३०० के करीब सन् १९८९ में १२५०-१८०० हो सकता है। लालमिर्च २८०० वाली। १९८९ में ७००-९०० हो सकती है। लाल मिर्च, जीरा हल्दी में एक बार भयकर मंदी आकर बाद में तेजी आयेगी। चांदी में २७-१२-८८ से १५ मार्च ८९ तक तेजी जून जुलाई तेजी आकर मंदी आयेगी। चांदी सोना १८-७-१९८९ तक कभी एक जोरदार तेजी आ सकती है।

स्पेशल चान्स

इन चान्सों के तिहलने दाल बानों में खतरनाक बाजार चलने की आशा है। अतः चान्स के शुरू व अंत में तेजी मंदी अवश्य लगायें जिम्मेदारी नहीं होगी सीमित सौदा व व्यापार करें

१. ११ अप्रैल १९८९ से या २ मई से ५-१५ दिन में चना मटर अरहर सरसों में जोरदार तेजी की आशा है।

२. ६ जून १९८९ या फिर २५ जून ८९ से १९८७-८९ तक १५ दिन में अलसी बिनौला फली-तेल अरहर चना मू०ग, उड़द, गेहूँ में १००-७५ की तेजी आकर बाद में मंदी आवेगी।

३. १५ अगस्त से किराना हल्दी जीरा धनिया अजवायन २७ अगस्त या १६ सितंबर १९८९ से सरसों, अरहर, मटर, मू०ग, चना, अलसी, बिनौला फली तेल में २५ दिन में धमाके की जोरदार मंदी आ सकती है। तेजी मंदी लगाये बाजार रूख का ध्यान रखें।

४. २१ नवंबर १९८९ या १९ दिसबर ८९ से ५ या ७ दिन में अलसी, सरसों पत्ती तेल बिनौला राजकोट तेलिया में जोरदार मंदी आ सकती है तो बाद में ७ दिन में घटे भाव जोरदार रूप से बढ़ेंगे।

५. १६ दिसंबर १९८९ या ५ जनवरी १९९० से २० दिन में अलसी सरसों बिनौला में जोरदार तेजी आवे तो बाद में ७ दिन में जोरदार मंदी आवेगी।

६. १० फरवरी १९९० या एक मार्च १९९० से १५ दिन में तिलहन तेल में जोरदार तेजी आने की आशा है।
७. ३० मार्च १९९० से या फिर २० अप्रैल १९९० से ७ या ११ दिन में खतरनाक मंदी तिलहन तेल में आ सकती है ७-९ खासों में बाजार तेजी की जगह मंदी चले तब मंदी का व्यापार करें तेजी मंदी संकेत जानने के लिए जवाबी पत्र लिखें।
सन् १९८९ बबई फली तेल नीचे में भाव २००० या नीचे और चला तो १७५१ ऊंचे से भाव २१ जुलाई १९८९ या ३१ सितंबर को २९५० हो सकते हैं। पत्ती तेल २०-८-८७ को करीब २८०० के करीब भाव हो चुके हैं। १९८८ के २०५० के करीब भाव हो चुके हैं। लाल मिर्च २७-७-८८को दिल्ली २८०० के भाव है। शायद १९८८ में ३००५ या होकर सन् १९८९ में ३०० वाले ७०० या ११०० के भाव हो सकते हैं।
बुधग्रह २९-१२-१९८८ से ६-३-१९८९ तक मकर राशि में ६७ दिन २५-४-१९८९ से २-७-१९८९ तक बुध वृषभ राशि में ६७ दिन २१-८-१९८९ से २७-१०-१९८९ तक बुध कन्या राशि में ६७ दिन जब जब इन ६७ दिनों में तिलहन तेल दालवाना में तेजी आवे जब बुध ६७ दिन वाली राशि छोड़ने पर मंदी आती है। चाँदी सोना में भी लाइन बदल कर चलती है। शनि ग्रह १९८९ में धनु राशि में २१-३-१९९० को मकर राशि में प्रवेश करेगा। १०-९-८९ व १४-११-८९ की शनि गुरू प्रतियोग तिलहन दालवाना में एक दो महीने कभी भयंकर तेजी की आशा है। गुरू ग्रह २-७-१९८९ मिथुन राशि में चलेगें जो नवम्बर दिसम्बर १९८९ में दालवाना सरसों अलसी, चाँदी, सोना के रिकार्ड तेजी चलकर बाद में २ महीने में जोरदार मंदी आवेगी। २३ सितम्बर १९८९ राहू ग्रह मकर राशि में जो किराना में जोरदार मंदी की आशा है। बाजार रूख देख कर ही व्यापार करें।

अप्रैल १९८९

२-४-८९ से १२-४-८९ तक फली तेल काली मिरच में तेजी तो सोना चाँन्दी में मन्दी आवेगी। १२ अप्रैल से २१ अप्रैल चान्दी सोना तेजी धंनिया गुवार गेहूँ में तेजी जोरदार आ सकती है २१ से २७ अप्रैल में मन्दी आ सकती है।
४ अप्रैल १९८९ को सूर्य से बुध ग्रह व शुक्र की सुपरियर युति होगी। जो चाँन्दी, सोना, तिलहन में यदि एकाध महीने पहले से तेजी आ गई है तो बाद में एक सवा महीने में जोरदार मन्दी आवेगी। अन्यथा तेजी आवेगी। बाजार की लाइन समझ सोचकर ही व्यापार करें। तेजी मन्दी काफी यदाकदा फलती रहेगी। यहाँ युति से तिलहन में मन्दी चलनी चाहिए। तिलहन चान्दी के विपरीत गुड़, खाड़ के मार्केट चलेंगे। २४ अप्रैल से ३ जुलाई बुध बृष राशि में ६७ दिन भ्रमण चान्दी सोना तिलहन की चलती लाइन ५-७ दिन जोरदार बदलकर चलेगी। २३ अप्रैल को शनिग्रह बक्री है।

मई १९८९

२३ मई से गुरु ग्रह अस्त है। ९ जून १९८९ को सूर्य से गुरु ग्रह की युति होगी। गत साल सन् ८८ में २० दिन की मन्दी तिलहन में आकर बाद में तुरन्त तेजी आई। बुध-शुक्र आपस में दूर है। अतः दालवाना किराना में अच्छी तेजी की आशा है। महीने १५ दिन में कभी एक तेजी आ सकती है।
२७ अप्रैल से ११ मई तक डालडा वनस्पति घी तेल में जोरदार तेजी चीनी फली तेल में जोरदार तेजी काली मिरच जीरा धनियाँ लालमिरच में तेजी आ सकती है।
१७ मई २५ मई तो चीनी, सरसों में मन्दी आवेगी। जिमेदारी नहीं होगी।

गुड़ खाँड़, चीनी :–

(१) १५ जनवरी से ११ मार्च १९८९ तक गुड़ में जोरदार तेजी तब ही ११ अप्रेल १९८९ गुड़ में जोरदार मन्दी २ मई से ५ जुलाई ८९ के बीच जनरल तेजी आवेगी पर बीच-बीच में मन्दी आती रहेगी। २० जुलाई ८९ से ५ सितम्बर ८९ तक तेजी आकर बाद में रुपये के ४१ पैसे रहने वाली मन्दी १५-२-१९९० के मध्य तक जोरदार मंदी गुड़ में आ सकती है। बाजार रूख देख कर व्यापार करें।

जून १९८९

३ जून से ११ जून तक सरसों, अलसी, अरन्ड फली तैल मन्दी, मगर हाजिर बाजार अरहर, मटर, चना में अच्छी तेजी आ सकती है। साथ में किरानी में सुपारी, गोला तैल में तेजी चलने की आशा है। २५ मई से १२ जून के बीच एक चान्दी सोना में मन्दी का धमाका आ सकता है। यदि यह मन्दी आवे तो नीचे भाव बनने पर खरीदें। आगे एकाध महीने में अच्छी तेजी २५० से ५५५ की चान्दी सोना में आ सकती है। व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेदारी कभी भी किसी हालत में नहीं होगी। अतः हमेशा बाजार रूख काध्यान रख कर ही सीमित व्यापार करें २२ जून को गुरू उदय होगा।

जुलाई १९८९

९ जुलाई से १२ जुलाई के मध्य तेजी की स्पेशल लाइन, जैसे बाजार चले वैसा व्यापार करें। हल्दी, काली मिरच में चीनी में तेजी आवेगी। तिलहन दालवाना में एक अच्छी तेजी नजर आती है। २ जुलाई ८९ को बक्री शनि से सूर्य की युति होगी व १८ जुलाई को सूर्य बुध ग्रह से सुपरियर युति होगी जो युति की तारीख के आसपास से तिलहन रूई में ७ दिन मन्दी आवे तो आगे तेजी आवेगी। व चान्दी सोना शेयर्स में तेजी १० दिन पहले व बाद के १० दिन तक तेजी चल सकती है। देसी घी में एक महीने से चली आ रही तेजी और १५ दिन में तेजी चलकर मन्दी देसी घी में आयेगी।

अगस्त १९८९

२ अगस्त ८९ से २५ अगस्त तक चाँन्दी, सोना, अरहर, मटर, मसूर, चना में तेजी आ सकती है। ५ अगस्त से १२ अगस्त के मध्य तिलहन तैल, मन्दी का झटका लग सकता है। तेज मन्दी लगावें। १७ अगस्त ८९ को चन्द्रग्रहण पूर्ण विदेशों में है। जो दालवाना में आगे एकाध महीने में अच्छी तेजी दे सकता है। ३१ अगस्त को सूर्यग्रहण विदेशों में है।

सितम्बर १९८९

२ सितम्बर ८९ से १२ सितम्बर ८९ तक मटर, चना, अरहर, सरसों, अलसी, इत्यादि में अच्छी तेजी आवे तब ही आगे १२ दिन में एक जोरदार मन्दी आवेगी। अन्यथा २७ सितम्बर तक तेजी आवेगी। अगस्त से १५ सितम्बर के मध्य चीनी शक्कर में अच्छी तेजी आने की सम्भावना है। चना, मूगें में जोरदार तेजी चल सकती है। खोपरा नारियल तेल में जोरदार मन्दी तारीख २४ को सूर्य बुद्ध ग्रह बक्री से इनफेरियर को युति व मंगल सूर्य की युति गुड़ बाजारों को शेयर्स मार्केट तेजी की आशा है। मगर लाइन जिधर चले अतः तेजी मन्दी काफी लगाना २-४ दिन यदाकदा फलती रहने की आशा है संभव है चान्दी सोना शायद जोरदार तेजी चल रही हो। सावधानी से व्यापार करें।

अक्टूबर १९८९

३ अक्टूबर से १६ अक्टूबर मध्य सरसों, अलसी, अरन्ड, चीनी, सुपारी जोरदार मन्दी आवेगी १५-१०-८९ से २७ दिसम्बर के मध्य अरहर मूग उड़द चना में जोरदार तेजी १२५-१५० की आ सकती है २० दिन की तेजी आवेगी। ७ अक्टूबर से २५-१०-८९ तक सोना चान्दी में तेजी आ सकती है। ३० अक्टूबर ८९ गुरु वक्री है।

नवम्बर १९८९

२-११-८९ से ६-११-८९ तक पत्ती तेल अलसी सरसों में तेजी चांदी सोना में मंदी आवेगी ६ नवंबर से ११ नवंबर तक मंदी आवेगी १२ नवंबर से १८ नवंबर तक डालडा बिनौला तेल सरसों अचानक बड़ी तेजी आकर बाद बढ़े बाजार घट जावेंगे। लाभ हानि की जिम्मेदारी नहीं होगी।
नोट :– १५ अक्टूबर या १५ सितंबर से एक महीने में सौंठ में जोरदार मंदी आ सकती है। १०-११-८९ को सूर्य बुध सुपरियर युति होगी।

दिसम्बर १९८९

एक दिसंबर से ६ दिसंबर तक पत्ती तेल अलसी, गुड़, खाँड़, सरसों, अरहर, चना, में जोरदार तेजी जावेगी। तो बाद में मंदी जावेगी। गोला में १५०-२५० की भड़कती तेजी १५-२५ दिन में आ सकती है। १२-८-१९८९ से १७-१२-८९ तक पत्ती तेल सरसों वायदों में जोरदार गिरावट यदि तेजी आई तो तेजी भी जोरदार आवेगी। तुअर चना, मुँग में दिसंबर में जोरदार तेजी चल सकती है। ३०-१२-८९ से ७ जनवरी १९९० तक पत्ती तेल में जोरदार तेजी का उछाला आ सकता है। २७-१२ ८९ को सूर्य गुरु प्रति युति होगी।

जनवरी १९९०

६ जनवरी १९९० से १२ जनवरी १९९० तक सरसों, अलसी, अरंड में मंदी का धमाका आकर तो १२-१-९० से २१-१-९० तक जोरदार तेजी का झटका आकर फिर मंदी जावेगी गुड़ में एक जनवरी से १५ जनवरी के मध्य जोरदार मनदी आ सकती है। चांदी सोना में पूरे महीने घट बढ़ से तेजी आ सकती है। लाभ हानि की जिम्मेदारी नहीं होगी। ९-१-९० सूर्य से वक्री बुध की युति एवं १८-१-९० सूर्य से शुक्र इनफीरियर युति होगी। ६ जनवरी को सूर्य शनि युति होगी। २६ जनवरी ९० सूर्यग्रहण विदेशों में है

फरवरी १९९०

एक फरवरी १९९० से १२ फरवरी तक, सरसों, अलसी, एरंड पत्ती तेल राजकोट तैलिया जोरदार तेजी आ सकती है २५ जनवरी से ५ फरवरी के मध्य चाँदी, सोना में जोरदार तेजी तो बाद में १८ फरवरी तक जोरदार मंदी आवेगी १६ या २३ फरवरी से तेल तिलहन में जोरदार मंदी आ सकती। एक फरवरी से ५ मार्च तक काली मिर्च ७०० मंदी किसमिस २५०-५०० की मंदी आ सकती है। ९ फरवरी १९९० खग्रास चन्द ग्रहण चाँदी, सोना में तेजी आ सकती है।

मार्च १९९०

एक मार्च से १५ मार्च १९९० तक चीनी खाँड में १०० की तेजी आ सकती है तो ७ मार्च २१ मार्च से तक मंदी आ सकती है।

तिलहन तेल हाजिर व अन्य मार्केट के चान्स

१. ६ फरवरी १९८९ से २ मार्च तक जोरदार मन्दी तो बाद में तत्काल तेजी आवेगी।
२. ४ अप्रैल १९८९ को सूर्य बुध युति मन्दी ५-७ दिन की आकर बाद में बाजार सुधर जावेगी।
३. १५ अप्रैल ८९ से १०-१२ दिन में दालवाना, तिलहन, गुड़ में जोरदार तेजी आकर बाद में मंदी आवेगी फिर लाइन जिधर चले उधर का व्यापार करें।
४. २३ मई १९८९ सूर्य बुध ग्रह की इनपेरियर युति से ७ दिन पहले व ३ दिन बाद तक एक तेजी दालवाना डालडा टीन में तेजी आकर बाद में मन्दी आवेगी।
५. १ जून से ११ जुलाई के बीच जोरदार तेजी १२-७-८९ से २९-७-८९ तक तब ही मन्दी आवेगी।
६. २१-१०-१९८९ से ९-११-८९ तक तिलहन दालवाना में जोरदार तेजी किराना में जोरदार मन्दी की आशा है।
७. १८ अगस्त से ९-९-८९ तक तिलहन किराना में मन्दी आवेगी।
८. ३ फरवरी १९९० से १८-२-९० तक तिलहन, दालवाना में अस्थाई तेजी आने पर बेचकर लाभ।
९. २१ मार्च १९९० से १ अप्रैल १९९० के मध्य तिलहन तेल में जोरदार मन्दी का धमाका आ सकता है। जिम्मेदारी नहीं होगी बाजार रूख देख कर ही व्यापार करें। दान-पुण्य करें जिससे भाग्य में वृद्धि होकर व्यापार में लाभ संभव है।

साल १९८९ से तेजी आकर मन्दी आया करेगा। अत माल तेजी में बेचना ठीक रहेगा। या पत्र डालकर या अन्य पत्रिकाओं में लेख पढ कर जानकारी हासिल करें। शेयर मार्केट-२३ दिसम्बर १९८८ से २३ जनवरी १९८९ तक जोरदार तेजी। १० मार्च ८९ से १६ अप्रैल १९८९ तक शेयर बाजारों में तेजी का तूफान आने की आशा है। जून जुलाई १९८९ में जोरदार मन्दी की आशा है। बाजार रूख देख कर व्यापार करें। २३ जून १९८८ को चादी ६०१४ के भाव है। २१ नवम्बर १९८७ को ६५०० के करीब थे। -ब यदि ६६१५ का भाव काटे करे तो २१ जुलाई १९८९ के मध्य चादी ७२०५ हो सकती है। सोना अभी ३६९२ रुपये तोला बम्बई तो २१ जुलाई तक तेजी आई तो ४२०० या ४७०० हो सकता है। मगर सोना चादी से एकाध महीने तेजी आकर ४ या ५ महीने कम घट बढ़ या पड़े रहा करेगे सन् १९८९ में। सरसों नवम्बर १९८७ में पोरसा मण्डी ११२५ के करीब थे-२५ मई ८८ को ६००-६२५ के करीब-२२-६-८८ को ७०० के करीब भाव है। २९-३-१९८९ तक ४३० या ५१५ तक नीचे हो कर या जो भी नीचे खरीदें-१५०-२२५ की तेजी-सन् १९९० तक सरसों १२२५ या ५४०० के करीब भाव हो सकते है। परन्तु बीच-बीच में मन्दी के झटके भी खूब लगेंगे। चना लाल मिर्च, गुड़, में भयंकर मन्दी सन् १९८९ तक आ सकती है। सन् १९८९ में वर्षा ठीक होगी। मगर सन् १९८८ से कम होने की आशा है।

व्यापारिक दिग्दर्शन वैज्ञानिक अनुसधान पर (जनवरी १९८९ से जून १९९० तक) स्पेशल एम् पुस्तक मूल्य ६३ रु० डाक खर्च अलग

परिलेख कर्त्ता चम्पा देवी जैन पी०सी० जैन पोरसा

पुस्तक रियायती कीमत ५० रु० डाक व्यय पैकिंग खर्च ६-०० ५६ रु० भेजें।

इस पुस्तक में सरसों, अलसी, अरण्ड, फली, तेल, दानवाना, गुड, खाँड़, चीनी, किराना, सोना, चाँदी, शेयर्स, मार्केट पर स्पेशल लाइने ऊँचे नीचे भाव बनने की तारीखें व समय कई तूफानी चान्स दिए है। इसके साथ-साथ तेजी मन्दी निकालने के सरल तरीके भी दिए है। व्यापार में जिम्मेदारी नहीं होगी। सन् १९८८ सरसों तिलहन इत्यादि मंदी का रहा है। अत लाभ लेने में परेशानी हुई परन्तु सन् १९८९ काफी मंदी आकर तेजी आकर मंदी आवेगी। बड़ी रस्सा कसी चलेगी। पुस्तक मगाए बेहद पसंद आवेगी।

प्रेम चन्द जैन पोरसा वाले लाइट मशीनरी थाटीपुर ग्वालियर

(म०प्र०) ४७४०११ यदि ग्वालियर से बाहर चले गए हो तब पोरसा चम्पा देवी जैन रिखवदास जैन भिन्ड रोड पोरसा जि० मुरेना (म०प्र०) ४७६११५ पर जवाबी पत्र भेज कर पता ज्ञात करें। या फोन ३५ से पोरसा से जानकारी लें। वह पी पी नहीं होगी। मनीआर्डर कूपन पि कोड जिला इत्यादि सहित पता अवश्य लिखें।

व्यापार-भविष्य सन् १९८९ ई०

लेखक : प्रो० बी० सी० मेहता, ज्योतिष-मार्तण्ड, ज्योतिष-सम्राट
संचालक : जैन ज्योतिष ब्यूरो ब्यापार (राजस्थान) पिन-३०५९०१, फोन-२०९२९, तार-मेहता

"श्री विश्व विजय पचांग के प्रिय पाठकों की सेवा करते हुए हमें करीब २५ वर्ष होगये है, तथा हर साल हम व्यापार-भविष्य सम्बन्धी लेख इसमें प्रकाशित करवाते है। व्यापारिक जगत् में हमारा यह लेख तथा बाजारों की घट-बढ़ सम्बन्धी भविष्य-वाणियों का एक विशेष स्थान है, और व्यापारी बड़े चाव व ध्यान से हमारा लेख पढ़ते है तथा उनसे प्रभावित व प्रसन्न होकर आये दिन प्रशंसा-पत्र भेजते रहते है। हम उन सब ही व्यापारी बन्धुओं को हार्दिक-आभार प्रदर्शित करते है, आपके इस तरह के प्रशंसा-पत्रों से हमको अत्यधिक प्रोत्साहन मिलता है, तथा हर वर्ष हम विशेष अच्छे ढंग से इस पञ्चांग में लेख व व्यापारिक भविष्य-वाणियाँ प्रकाशित करवाने का प्रयास करते है। यह बात तो करीब-करीब सही है कि यह "श्री विश्व विजय पञ्चांग" आज कल सब ही अन्य पञ्चांग से सब से ऊपर व टॉप पर आ चुका है तथा इसका सरकुलेशन भी अन्य सभी पञ्चांग से अत्यधिक हो गया है, जिस वर्ष हमारा पहला लेख इसमें निकला था, उस वर्ष से आज इसका सरकुलेशन करीब तीन गुना से भी ज्यादा हो गया है हमने भी निश्चय कर लिया है कि हर वर्ष "श्री विश्व विजय पञ्चांग" में अपना लेख बराबर जीवन-पर्यन्त भेजते रहेंगे आगे भगवान् की मर्जी।--यूँ हमारे लेख अंग्रेजी में **अस्ट्रोलोजिकल--मैगजीन बैंगलूर में ४५ वर्षों से तथा** गुजराती में सन्देश-प्रत्यक्ष पंचांग अहमदाबाद में गत ५ वर्षों से निकलता है, इन्ही को हमारा प्रामाणिक लेख समझना चाहिये।

सन् १९८९ का वर्ष व्यापार-जगत् के लिये एक ऐसा असाधारण वर्ष है, कि ऐसा वर्ष गत १०-१२ वर्षों में पहले कभी नहीं आया, क्योंकि इस १९८९ के वर्ष में करीब-करीब सब ही प्रमुख बाजारों में एक दफे ऊँचा से ऊँचा भाव टच हो सकेगा तथा एक दफे नीचा से नीचा भाव टच हो सकेगा, अर्थात इस वर्ष ऐसी भयानक घटा-बढ़ी बाजारों में आवेगी, कि यदि ध्यानपूर्वक व सावधानी से आप व्यापार करेंगे तो आपके घर में नोटों की बरसात हो जायेगी। सबसे आश्चर्यजनक बात इस वर्ष यह दिखती है कि इस वर्ष सन् १९८९ के साल में तेजी मनोवृत्ति वाले व्यापारी-बन्धुओं को भी बड़ा धन तेजी के धंधे में प्राप्त हो सकेगा तथा मन्दी मनोवृत्ति वाले व्यापारियों को भी बड़ा धन कमाने का सुनहरा अवसर प्राप्त हो सकेगा। क्योंकि इस वर्ष १९८९ के साल में धनु राशि में शनि-हर्शल व नेपच्यून जैसे महान् अशुभ व बड़े ग्रहों का योग बराबर चलता रहेगा तथा राहु ग्रह कुंभ-तथा मकर राशि में प्रसार करेगा एवं गुरु ग्रह वृष-तथा मिथुन राशि में प्रसार करेगा। ता. ३० जून १९८९ तक जो गुरु वृष राशि में प्रसार करेगा, तथा ता. १ जुलाई १९८९ को यह गुरु मिथुन न. ३ की राशि में प्रविष्ट हो जायेगा, तथा आखिरी दिसम्बर १९८९ तक यह इसी मिथुन राशि में चलता रहेगा। मिथुन राशि में गुरु आने से इसका धनु राशि में चलनेवाले तीन ग्रह हर्शल-नेपच्यून एवं शनि से अपोजीशन योग बनेगा, यह योग सब ही बजारों में मन्दी का बड़ा फैक्टर हमको लगता है। अत यह वर्ष १९८९ का हमको बहुत जबरदस्त घटा-बढ़ी व उथल-पुथल का लगता है आपसे हमारी प्रार्थना है कि आप इस वर्ष अपने व्यापार में विशेष सावधानी व सर्तकता रखें।

अब हम कुछ महत्वपूर्ण जिन्स-बाजारों का जिनका हाजिर-तैयारी एवं वायदा का व्यापार प्रचुर मात्रा में होता है तथा जिन चीजों के व्यापार में लाखों व्यापारी दिलचस्पी लेते है--उनका विस्तृतरूप से भविष्य-दिग्दर्शन आपकी सेवा में प्रस्तुत करते है।

तिलहन-बाजार भविष्य : तिलहन-बाजारों का व्यापार आजकल सबसे ज्यादा होता है इसके अन्तर्गत तिलहन सम्बन्धी अनेक चीजें आती है जैसे तेल सींगदाना (मुंगफली) सरसों एरण्डा खली-कपालिया-(बिनौला) वनस्पति वेजीटेबल तथा कोकोनेट ऑयल आदि। तिलहन-बाजारों की बढ़-घट पर हमने वर्षों अध्ययन अनुसन्धान व प्रैक्टिकल अनुभव किया है तथा इस नतीजे पर पहुँचे है कि तिलहन-बाजारों की घटा-बढ़ी का विशेष सम्बन्ध वायुतत्त्व की तीन राशियों मिथुन-तुला तथा कुम्भ से है तथा तिलहन की कुण्डली मिथुन न. ३ की राशि के लग्न से होती है शनि-राहु-गुरु मगल जो इन तिलहन-बाजारों की घटा-बढ़ी पर सबसे ज्यादा असर वर्चस्व व प्रभुत्व रखते है। यदि इन ग्रहों का प्रसार व कृषि सम्बन्ध इन उपरोक्त तीन राशियों से हो जाता है तो इन बाजारों में बड़ी जबरदस्त घटा-बढ़ी आती है क्रूर ग्रहों में तेजी व शुभ ग्रहों के प्रसार से बड़ी मन्दी आ जाती है-यू तो यह फारमुला अत्यन्त साधारण सा दिखता है, लेकिन इसमें पेचीदगियाँ अधिक है तथा जरा सा चूकने पर भयंकर गलती भी हो जाती है, सन् १९८८ के साल में हमसे एक गलती हो गयी, हमने सन् १९८८

के लेख तथा अपने भावी फल १९८८ में यह ऐलान कर रखा है [illegible] करेगा, अत: और की तेजी तिलहन-बाजारों में आवेगी, लेकिन आप को ता. ३१ जनवरी १९८८ तक तेजी में रहना चाहिये तथा फिर तेजी के धंधे से हट जाना चाहिये-क्योंकि १ या २ फरवरी १९८८ को गुरु ग्रह मेष न. १ की राशि में प्रवेश होता है यह बडी मन्दी का फेक्टर है. अत: ता. २ फरवरी १९८८ से ही मन्दी की बडी लाइन चालू हो गयी तथा झटके की मन्दी आयी यहाँ तक तो हम सौ परसेन्ट सही रहे, लेकिन एक गलती हम से यहाँ हो गयी, कारण ता. ५ मार्च १९८८ को कुंभ राशि में राहु का प्रवेश हो गया तथा ता. २८ मार्च १९८८ को मंगल मकर राशि में प्रविष्ट हो गया, अत: हमने ता. २ फरवरी १९८८ से प्रारम्भ हुई मन्दी ता. २८ मार्च १९८८ तक चलने का लिख दिया तथा फिर तेजी शुरु होने का ऐलान कर दिया यहाँ हम चूक गये तथा हमने इस मेष न. १ के गुरु का मन्दी का महत्त्व कम करके आँक दिया, लेकिन गुरु मेष की मन्दी समाप्त नहीं हुई दरअसल हमसे एक गलती यह हो गई कि हमने शनि पर ध्यान नहीं दिया जो धनु राशि गुरु की राशि में बैठा है धनु राशि का शनि मेष राशि के गुरु-प्रवेश से यह शनि नीच राशिस्थ हो गया, अत: गुरु का मेष राशि में मन्दी का पावर डबल हो गया अलावा इसके कुंभ राशि के राहु का तेजी का फेक्टर भी इसलिए तेजी नहीं कर सका, क्योंकि राहु हमेशा उल्टा चलता है अत: यह राहु कुंभ में प्रवेश होते ही पूर्वा भादपद नक्षत्र में आया यह पूर्वा भाद्रपदा नक्षत्र गुरुग्रह का नक्षत्र है अत: यह भी मन्दी सूचक हो गया तथा मेष न. १ के गुरु की मन्दी का सपोर्ट इस राहु ने भी किया। इतनी सूक्ष्म बात हमारे ध्यान में उस वक्त नहीं आयी, अत: हम क्षमा याचना करते हैं। मेष के गुरु की पूर्ण दृष्टि तुला न. २ वायुतत्व की राशि पर पडती रही अत: तेल-दाना सरसों व अन्य तिलहन जिन्सों में तेजी आयी भी तो वह ठहरी नहीं।

ता. २० जून १९८८ को यह गुरु मेष राशि से निकलकर वृष राशि में प्रवेश हो जाता है अत: यह मन्दी का बड़ा फेक्टर समाप्त हो जाता है। अब धनु राशि का शनि भी अपनी नीचस्थ राशि-पोजीशन से हट जाता है। अत: अब तिलहन की मन्दी की बडी लाइन समाप्त होती लगती है तथा तेजी शुरु हो जावेगी। अब धीरे-धीरे बाजार तेजी की तरफ आगे बढने लगते हैं अब केवल दो चीजें मन्दी में हैं। न. १ शनि वक्री जो ता. ३० अगस्त को सीधा होता है, दूसरा कुंभ का राहु ५वीं भाद्रपदा नक्षत्र में यह ता. ११-१२ सितम्बर १९८८ को इस नक्षत्र से निकल जाता है तथा शतभिषा नक्षत्र में प्रवेश होता है अत: असली तेजी इस राहु के कुंभ राशि की यहाँ से शुरु होती लगती है। राहु-कुंभ राशि व शतभिषा नक्षत्र में ता. २०-२१ मई १९८९ तक चलता रहेगा। अत: यह उत्तम-मध्यम तेजी प्रधान ही रहेगा। तेजी का चांस यह काफी लम्बा है अत: विशेष सावधानी से व्यापार करें। क्योंकि इस लम्बे चांस में बीच-बीच में बाजार बढने के बाद मन्दी के रिएक्शन भी समय-समय पर आते रहेंगे। अत: विशेष मार्गदर्शन के लिए हमसे पत्र व्यवहार व सम्पर्क बनाये रखना आवश्यक है। ता. २० मई १९८९ से ता. ३० जून १९८९ तक बाजारों में कभी तेजी कभी मन्दी चल सकेगी, लेकिन ता. ३० जून १९८९ के बाद हमको ऐसा लगता है कि तेजी एकदम समाप्त सी हो जायगी, क्योंकि अब गुरु ग्रह मिथुन राशि में प्रवेश हो जायेगा। इसका असर सब ही तिलहन-बाजारों में बडी मन्दी का पडेगा। अब मन्दी वाले धीरे-धीरे बाजारों पर हावी हो जायेंगे। जुलाई अगस्त सितम्बर इन तीन महीनों में कभी-कभी मन्दी का बडा धडाका तिलहन-बाजार में आ सकेगा, विशेष सावधानी से व्यापार करें

रूई-कपास बाजार-भविष्य : रूई-कपास बाजारों का भी महत्व हमारे देश में कम नहीं है। रूई कपास से कपडा सूत आदि बनता है। अत: कपड़े सूत के भी लाखों व्यापारी रूई-कपास बाजार की घटाबढी व तेजी-मन्दी में विशेष दिलचस्पी रखते हैं। यूँ रूई-कपास का हाजिर व वायदे का धंधा भी बहुत बड़ी व प्रचुर मात्रा में हमारे यहाँ होता है।

रूई-कपास के लिए १९८७ का वर्ष एक यादगार व असाधारण वर्ष सिद्ध हुआ तथा इतनी बडी तेजी इस वर्ष रूई बाजार में आई कि लोग आश्चर्य चकित रह गये। हमने इस तेजी का बहुत ही विश्वासपूर्वक ढंग से अपने लेख व भावी फल १९८७ में ऐलान किया था। हमने तो हिम्मत करके यहाँ तक लिख दिया था कि अपने मकान जमीन व जेवर बेचकर रूई खरीद लें तथा तेजी का धंधा सन् १९८७ साल में कर लें। कितनी बडी बात हमने लिख दी थी। हम आज भी कभी-कभी सोचते हैं तो यह महसूस करते हैं कि ऐसी बात हमें लेख तथा भावी-फल में लिखने की हिम्मत नहीं करनी चाहिए थी। लेकिन कुछ हमें अपने व्यापारिक-ज्योतिष के सिद्धान्त पर इतनी अधिक आस्था है कि ऐसी बात लिख दी तथा भगवान ने हमारी जबरदस्त टेक रख दी तथा इतनी बडी भयंकर तेजी रूई में आई कि हमको भी आश्चर्य हुआ, हमारे इष्ट ने हमारी लाज रख दी वरना हम मुँह दिखलाने लायक भी नहीं रहते, हमारी ऐसी मान्यता थी कि मीन-राशि में गुरु रूई बाजार में तेजी का बड़ा फेक्टर है तथा यह १२ वर्ष में एक बार आता है। इस वर्ष १९८७ के साल में ता. ३ फरवरी १९८७ को गुरु मीन-राशि में प्रवेश हुआ तथा उस वक्त राहु भी मीन में चल रहा था, अत: राहु और गुरु दोनों ही इसमें इकट्ठे हो गये। तथा हमारे दिल में यह स्फुरणा व आवाज हुई कि यह योग रूई के भावों को डबल करने की ताकतवाला में है और इसी विश्वास से ऐसा अनोखा ऐलान हमारे अपने लेख व विशेष वायदा हाजिर बाजार भविष्य १९८७ में लिखने कि हिम्मत या यूं समझो बचपना कर दिया तथा हमारा विश्वास सही निकला। रूई ३३०० के घरों से ७७०० टच हो गई। ऐसी बड़ी व भयंकर तेजी आयी कि व्यापारियों के घर में जिन्होंने हमारी बात पर श्रद्धा रखकर तेजी का व्यापार किया। नोटों की बरसात हो गई। लेकिन कुछ व्यापारी इस तेजी के चांस का पूरा फायदा नहीं उठा सके, क्योंकि हमने १९८८ के लेख में तथा भावी-फल में साफ संकेत दे दिया था कि अब गुरु ता. २ फरवरी १९८८ को मीन राशि छोडकर मेष राशि में प्रवेश होता है। अत: ता. ३१ जनवरी १९८८ के पहले-पहले रूई के सभी व्यापारी भाइयों को तेजी के धंधे से अलग हो जाना चाहिए। जिन व्यापारी बंधुओं ने हमारे उक्त ऐलान को मानकर अपने रूई-बाजार का स्टॉक खत्म कर दिया उनको भारी कमाई हो गई, लेकिन कुछ [illegible] अपनी सनक में रह गये तथा रूई के तेजी के धंधे से अलग नहीं हुए वो आज तक पछताते हैं क्योंकि रूई में १५०० करीब टूट गये। ता. २ फरवरी १९८८ से गुरु चेंज हो कर मेष में प्रवेश हुआ तथा मन्दी चालू हुई और बराबर चलती रही। मेष का गुरु ता. १९ जून १९८८ को हटा है। अत: अब धीरे-धीरे मन्दी में ब्रेक लग जावेगा तथा तेजी की लाइन पुन: शुरु हो सकेगी। ता. १३ अगस्त १९८८ से गुरु वृष-राशि में चढता हुआ रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश होगा तब से यह गुरु तेजी सूचक हो जावेगा। नोट कर लें। यह गुरु ता. २८-२९ जून १९८९ तक वृष में चलता रहेगा। अत: हमको पूरे ही पीरियड में तेजी की प्रधानता ही लगती है। दीपावली १९८८ के बाद अन्धी तेजी का फोर्स आ सकेगा तथा ता. १ जुलाई १९८९ से गुरु मिथुन न. ३ की राशि में आ जावेगा। अत: अब आप भूल कर भी तेजी का धंधा न करें, क्योंकि यह बड़ा मन्दी का फेक्टर है। भारी व भयंकर मन्दी जुलाई १९८९ से अगले कुछ महीनों में आ सकती है। मीन का गुरु सन् १९८७ के साल में जितना बड़ा तेजी का फेक्टर था ठीक उसी प्रकार मिथुन का गुरु जुलाई १९८९ के बाद रूई-बाजार के लिए हमारे हिसाब से बड़ी मन्दी का फेक्टर है। अत: सावधान रहें। तथा विशेष सतर्कता से व्यापार करें। रूई का धंधा बड़ा रिस्की व जोखिम का धंधा है। जरा सी चूक से हजारों बल्कि लाखों का नुकसान हो सकता है। अत: आप अपने इस व्यापार में विशेष सावधान रहने की कृपा करें

गुड़-खाँड़-बाजार-भविष्य : गुड-खाँड-बाजारों की घटा-बढी का सम्बन्ध मुख्य रूप से जल तत्त्व की राशियों से हमारे अनुभव में आया है। मीन-वृश्चिक एवं कर्क ये तीन राशियाँ जलतत्व की हैं। मीन का मालिक गुरु एवं नेपच्यून, वृश्चिक का मालिक मंगल एवं प्लूटो तथा राहु विशेष वर्चस्व इन बाजारों पर रखते हैं। सन् १९८९ का वर्ष गुड़-खाँड बाजारों के लिहाज से विशेष तेजी सूचक है, क्योंकि १९८८ से ही गुरु-वृष राशि में चलता है तथा जून १९८९ तक यह वृष में ही चलेगा। ता. ४ जुलाई १९८८ को मीन राशि में मंगल अतिचारी प्रवेश हुआ है। यहाँ से गुड-खाड में तेजी का फोर्स बढ सकता है। यूँ गुड-खाँड बाजारों में गत २-२॥ वर्षों से मन्दी की प्रधानता ही अनुभव में आई, क्योंकि १९८५-८६ तथा १९८७ में शनि ग्रह का वृश्चिक राशि से प्रसार हो रहा था, लेकिन अब यह मन्दी का बडाफेक्टर रह गया है। गुड़-खाँड़ बाजारों के लिए हमारा एक प्रेक्टिकल अनुभव है कि जब-जब धनु न. ९ की राशि में कोई शुभ ग्रह आता है तो मन्दी की बड़ी लाइन चलती है। धनु राशि में गुरु जब भी आता है गुड़-खाँड के भाव आधे होते देखे गये हैं। अर्थात् जब तक गुरु धनु में चलता है उस पूरे पीरियड में कभी बडी मन्दी आ जाती है लेकिन जब क्रूर ग्रह शनि-राहु हर्षल आदि इस धनु राशि नं. ९ की राशि में आते हैं तो बड़ी तेजी का लम्बा पीरियड आ जाता है।

सन् १९८९ में भी तेजी के कुछ योग बने हैं। अत: जून जुलाई १९८८ से जून १९८९ तक गुड़-खाँड बाजारों में घटाबढ़ी से तेजी की प्रधानता रहेगी। बाजार अच्छे बढ़ने के बाद मन्दी के बीज-बीच में झटके आते रहेंगे लेकिन बाजार अन्दर टोन मजबूत ही रहेगा। दीपावली १९८८ से जून १९८९ तक अच्छी तेजी आ सकती है। लेकिन जून के बाद आपको तेजी के धन्धे से हट जाना चाहिए। जुलाई से अक्टूबर १९८९ के बीच बड़ी मन्दी आ सकती है, क्योंकि गुरु मिथुन राशि में आ जावेगा तथा शनि, हर्षल नेपच्यून जो धनु राशि में बैठे हुए हैं। उससे अपोजीशन इस गुरु का होगा सो अच्छी मन्दी आ सकती है। आप हमसे बराबर पत्रों द्वारा सम्पर्क रखें।

जूट-वारदाना-बाजार-भविष्य : जूट-वारदाना वीट्वील-बाजारों के व्यापारी भी गत २-३ वर्षों से काफी परेशानी का अनुभव कर रहे हैं, क्योंकि गत ३ वर्षों से इन बाजारों में मन्दी का ही वातावरण चल रहा है, तेजी आती है तो ठहरती नहीं। जूट-वारदाना वी. द्वीप बाजारों में भी वायु तत्व की राशियों का विशेष वर्चस्व व असर है तथा शनि-गुरु-राहु-मंगल इस बाजार पर विशेष घटा-बढ़ी लाते हैं, ता. २० दिसम्बर १९८४ को शनि-तुला-राशि अर्थात् वायु तत्व की राशि न. २ से हटा था और वहाँ से ही तेजी का फोर्स इन बाजारों से समाप्त हो गया तथा पूरा ही वृश्चिक राशि का शनि मन्दी प्रधान हो गया यह बात हमने विशेष जोरदार शब्दों में अपने लेखों में दरसा रखी है। अब १९८७ के २० दिसम्बर

को शनि वृश्चिक से निकल कर धनु राशि में प्रवेश हो गया है। अत: जनवरी १९८८ से ही इन बाजारों में तेजी का प्रारम्भ समझना चाहिए। लेकिन १९८८ में तेजी प्रथम छ: महीने समाप्त होने पर विशेष रूप से आ सकेगी—क्योंकि धनु का शनि ता. २० जून १९८८ तक तो गुरु मेष राशि में चलेगा। चूंकि शनि धनु राशि गुरु की राशि में है अत: शनि नीच राशिस्थ हो जायेगा, अत: शनि की तेजी का बड़ा असर नहीं हो सकेगा। दूसरा जूट-बारदाना बाजारों में एक बड़ा तेजी का योग ता. ११-१२ सितम्बर १९८८ को शुरु होगा, जब कुंभ राशि में राहु जो ता. ५-७ मार्च ८८ को प्रवेश हुआ है वह पूर्व भाद्रपदा नक्षत्र को छोड़कर शतभिषा नक्षत्र में प्रवेश हो जावेगा। अत: तेजी की सही लाइन इन बाजारों में ता. १०-१२ सितम्बर ८८ से ही चालू होनी समझनी चाहिए। यह तेजी उत्तम-मध्यम मई १९८९ तक चलती रहेगी, या आखीर जून १९८९ तक इन आठ-नौ महीनों में ऐसी बढ़िया तेजी हमको इन बाजारों में लगती है कि लोग गत २-३॥ वर्ष की मन्दी का दर्द भूल जावेंगे।

लेकिन जुलाई से पुन: मन्दी की बड़ी लाइन चालू होती है, क्योंकि गुरु मिथुन नं. ३ की राशि में प्रवेश हो रहा है—मिथुन नं. ३ की राशि वायु तत्व की पहले नं. की राशि है तथा इस जूट-बारदाना-बाजार की कुण्डली, की पहल घर की है अत: इस राशि में गुरु जैसे महान शुभ ग्रह का प्रवेश, हमारे हिसाब से बड़ी मन्दी का एक महत्व पूर्ण फैक्टर लगता है, यह मन्दी का ट्रेण्ड उत्तम-मध्यम आखिरी दिसम्बर ८९, तक चलता ही रहेगा, इस पीरियड में बीच-बीच में जब भाव विशेष घट जावेंगे तो तेजी के बड़े रियेक्शन भी आ सकेंगे।

उपरोक्त विवेचन से एक बात साफ हो जाती है कि इस वर्ष एक बार भयंकर तेजी प्रथम छ: महीने में तथा एक बार भयंकर मन्दी वर्ष के आखिरी छ: महीने में आ सकेगी आपको इस वर्ष विशेष सावधान अपने व्यापार में रहना चाहिये तथा हमारा १९८९ का भावी-फल पत्र ४०० वाला भी मंगा लेना चाहिये तथा स्पेशियल-मासिक रिपोर्ट हर महीने मँगाते रहना चाहिये जिसमें एक-एक दिन की तारीखवार घटा-बढ़ी व चाँस हर महीने के आप को मिलते रहेंगे। वार्षिक-ग्राहक लवाजम मात्र १२५/ हर जिन्स का है वार्षिक ग्राहक बन जाने पर पूरे अगले १२ महीने तक रिपोर्ट बराबर भेजी जावेगी।

अनाज-दालवाना-बाजार :—सन् १९८९ का वर्ष इन बाजारों में तेजी प्रधान रहेगा, क्योंकि धनु राशि का शनि-कन्या राशि के पृथ्वी तत्व को पूर्ण देखता है—तथा गुरु वृष राशि में ता. २० जून १९८८ को प्रवेश होता है वृष राशि का गुरु अच्छी बरसात का द्योतक है, अब इस वर्ष बरसात की प्राय: सब ही जगह इफरात लगती है। गत वर्ष १९८७ की साल में जहाँ-जहाँ सूखा व अकाल की स्थिति बनी थी तथा पीने के पानी की किल्लत महसूस हुई थी—वहाँ सभी प्रान्तों में ता. २० जून १९८८ के बाद अच्छी बरसात होने की सम्भावना हमको लगती है, तथा अकाल की विभीषिका अब सब जगह से हट जावेगी तथा अनाज व दालवाना बाजारों में काफी अच्छी घटा-बढ़ी चलेगी, हमको कुछ महीने तेजी व बाद में मन्दी की सम्भावना है। दालवाना में भी एक बार अच्छी तेजी दीपावली १९८८ से जून १९८९ तक आ सकेगी, लेकिन १९८९ के पीछे के दो महीने हमको मन्दी प्रधान लगते हैं। विशेष सावधानी से व्यापार करें।

चाँदी-सोना-बाजार : इन बाजारों में हमने सन् १९८७ का साल बहुत बड़ी तेजी का बताया था, क्योंकि ता. ३ फरवरी १९८७ को मीन राशि का गुरु प्रवेश हुआ था तथा राहु, पहले से ही मीन राशि में चल रहा था, दरअसल चाँदी व सोना बाजारों में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण असर मीन-कर्क एव वृश्चिक राशि का है, ये तीनों जल राशि का सम्बन्ध चाँदी सोना बाजारों की घट-बढ़ पर विशेष अनुभव में आया है—तथा इन बाजारों के कारक ग्रह है, वृहस्पति शनि-राहु-एव मंगल, जल तत्व की राशि में जब भी गुरु का प्रसार हुआ, बड़ी तेजी इन बाजारों में अनुभव में आयी है। सन् १९८७ के साल में गुरु-राहु के मीन राशि के योग ने भयंकर तेजी चाँदी सोना बाजारों में कर दी थी। हमने इस तेजी का एलान अपने १९८७ की साल के लेख में इसी पञ्चाग में कर रखा है आज भी देख सकते है, जिन्होंने हमारा १९८७ का व्यापार-भविष्य-फल-मँगवाया उनको भी बड़ा जबर-दस्त लाभ चाँदी सोना बाजारों के तेजी के धन्धे में हो गया। १९८९ का वर्ष भी तेजी प्रधान है, कारण धनु राशिका शनि व वृष राशि का गुरु-जून १९८९ तक चलता रहेगा, अत: बाजारों में तेजी की ही प्रधानता रहेगी, सही तेजी १९८८ की साल में ता. १५ सितम्बर से चालू हुई है, जब राहु कुंभ में चलता हुआ—अपने खुद के नक्षत्र शतभिषा में प्रवेश होगा, तथा यह योग ता. २० मई १९८९ तक चलता रहेगा—विशेष सावधानी से व्यापार करें, ता. २० मई १९८९ के बाद के सन् १९८९ के बचे हुए महीने मन्दी प्रधान लगते है

शेयर-बाजार-भविष्य : शेयर-बाजार का व्यापार भी आज कल बहुत बड़े पैमाने में होने लगा है तथा लाखों व्यापारी इस धन्धे में दिलचस्पी लेते है, शेयर-बाजार की एक जन्म-कुण्डली का अनुसन्धान हमने किया है, वृश्चिक राशि के लग्न की कुण्डली से शेयर-बाजार की घटा-बढ़ी चलती है, गत २० दिसम्बर १९८४ से वृश्चिक राशि में शनि प्रवेश हुआ तथा इसने शेयर-बाजारों में मन्दी का वातावरण शुरू किया तथा जब तक शनि वृश्चिक में रहा शेयर-बाजार ऊँचे उठ नहीं सके, लेकिन ता. २० दिसम्बर ८७ को शनि ने वृश्चिक राशि छोड़ दी है, अत: शेयर में मन्दी का बड़ा फेक्टर समाप्त हो गया है तथा अब धीरे-धीरे तेजी का वातावरण चालू हो जायेगा। १९८८ के सितम्बर महीने से तेजी का पावर विशेष बढ़ता लगता है, तथा मई-जून १९८९ तक तेजी की प्रधानता ही लगती है। जून १६८६ के बाद गुरु ग्रह मिथुन राशि में प्रवेश हो जायेगा अत: यह गुरु इस शेयर की कुण्डली में अष्टम स्थान में आ जायेगा, अत: जुलाई १९८९ के बाद पुन: मन्दी की प्रधानता हमको शेयर-बाजारों में लगती है, विशेष सावधानी से व्यापार करें, क्योंकि १९८९ के पीछे के छ: महीने में कभी बड़ी मन्दी की लहर चल सकेगी ये विवेचन-हर प्रकार के शेयर-बाजार पर उत्तम-मध्यम लागू हो सकेगा,

एक विशेष जरूरी निवेदन:—यदि आप की जन्म कुण्डली में नं. ९ की राशि में सूर्य-चन्दमा-अथवा मंगल बैठे है, अथवा ११ की राशि में सूर्य-चन्द्रमा-मंगल एवं गुरु बैठे है तो आपके इन ग्रहों से शनि तथा राहु का क्रॉस होगा—यह क्रॉस पूरे १९८९ की साल चलता है, यह बात खराब व बाधक है, तथा आपको बड़ा व रिस्की व्यापार नहीं करना चाहिये। वरना व्यापार में भूल हो सकती है तथा नुकसान हो सकता है। आप कृपया अपनी जन्म-कुण्डली खोलकर उसके नं. ९ तथा नं. ११ की फीगर राशि देखें यदि उपरोक्त ग्रह में-से एक भी ग्रह उसके बैठा हो तो आप अपनी जन्म-कुण्डली की नकल हमारे पास भेजने की कृपा करें-तथा एक कुण्डली के साथ २१/- भी भेजें हम आप को खराब योग का उपचार सरल-सा बता देंगे।

आपके लिये एक विशेष लाभ की बात—आपकी विशेष सेवा के उद्देश्य में हमने इस वर्ष भी सन् १९८९ ई. के साल के लिए एक विशाल-पुस्तक-भावी फल प्रकाशित किया है, जिसका नाम वायदा-हाजिर एवं तिलहन-बाजार भविष्य-फल सन् १९८९ है। यह भावी-फल करीब ४०० पृष्ठों का है। इसमें सितम्बर १९८८ से दिसम्बर १९८९ तक के अर्थात् करीब १६ महीनों के सभी २५-२५, जिन्स बाजारों की घटा-बढ़ी का भविष्य-दिग्दर्शन व स्पेशियल चाँस अत्यन्त विस्तृत व खुलासावार ढंग में अलग-अलग करीब १५-१५ स्वतन्त्र पुस्तकों के रूप में प्रस्तुत किया गया है—तिलहन रूई कपास जूट-बारदाना चाँदी-सोना गुड़-खाँड अनाज-दालवाना, शेयर किराना आदि सभी छोटे मोटे बाजारों के—छोटे-बड़े चान्स, मासिक भविष्य व स्पेशियल सुनहरी चान्स आदि बात खुलासेवार समझा कर प्रस्तुत किये है—आपको अत्यधिक पसन्द आवेगा क्योंकि इस लेख में स्थान की कमी के कारण खुलासावार भविष्य बाजारों का हम लाख चाहे तो नहीं दे सकते, अत: व्यापारी बन्धुओं के विशेष आग्रह को ध्यान में रखते हुए हमने इस विशाल भावी-फल का प्रकाशन किया है—यह हमारा भावि-फल (पुस्तक) व्यापारिक जगत में अत्यधिक लोक प्रिय है कीमत इन सभी १५ पुस्तकों के इस भावि-फल की केवल १०५) है, इस पचाग के पाठकों से केवल १०१) है—वी. पी. नहीं करेंगे यदि आप १०१) मनिआर्डर से भेजकर रिजर्व करवा लें तो भावी-फल रजिस्ट्री द्वारा दीपावली के पहले आपको भेज दिया जावेगा, ताकि आप दीपावली की पूजन के साथ इसका भी पूजन कर सकें। मनिआर्डर भेजकर अपना सन् १९८९ की साल का भविष्य-फल फौरन रिजर्व करवा लें। सन् १९८८ की साल में भी कई व्यापारी भावी-फल से महरूम रह गये। क्योंकि उन लोगों का मनिआर्डर बहुत लेट आया था, अत: हमको उनका मनिआर्डर वापिस लौटाना पड़ा, क्योंकि हमारे स्टॉक में भावी-फल शेष नहीं बचा था। इसलिये सन् १९८९ की साल में हमने सितम्बर ८८ से ही चान्स देना सुरु किया है अक्सर दीपावली से शुरू करते है—जिसका मनीआर्डर पहले आवेगा उसको पहले भेजा जा सकेगा-**नोट कर लें।**

उपरोक्त विवेचन व व्यापार भविष्य हमने अपने गत ५० वर्षों के व्यापारिक ज्योतिष के अनुभव अनुसन्धान के आधार पर बहुत ही ईमानदारी से प्रस्तुत किया है, फिर भी आप के किसी प्रकार की रिस्क व नुकसान के जिम्मेवार हम नहीं है-**नोट कर लें।**

कृपया मनिऑर्डर नीचे लिखे पते पर भेजें : **प्रोफेसर वी० सी० मेहता**

फोन. २०९२९ ज्योतिष-मार्तण्ड _ तार-मेहता जैन-ज्योतिष-ब्यूरो-ब्यावर (राज. ३०५९०१)

के लेख तथा अपने भावी फल १९८८ में यह ऐलान कर रखा है कि ता. २० दिसम्बर १९८९ को शनि यह धनु राशि में प्रवेश करेगा, अत: जोर की तेजी तिलहन-बाजारों में आवेगी. लेकिन आप को ता. ३१ जनवरी १९८८ तक तेजी में रहना चाहिये तथा फिर तेजी के धंधे से हट जाना चाहिये-क्योंकि १ या २ फरवरी १९८८ को गुरु ग्रह मेष न. १ की राशि में प्रवेश होता है यह बड़ी मन्दी का फेक्टर है. अत: ता. २ फरवरी १९८८ से ही मन्दी की बड़ी लाइन चालू हो गयी तथा झटके की मन्दी आयी यहाँ तक तो हम सौ परसेन्ट सही रहे. लेकिन एक गलती हम से यहाँ हो गयी, कारण ता. ५ मार्च १९८८ को कुम राशि में राहु का प्रवेश हो गया तथा ता. २८ मार्च १९८८ को मंगल मकर राशि में प्रविष्ट हो गया. अत: हमने ता. २ फरवरी १९८८ से प्रारम्भ हुई मन्दी ता. २८ मार्च १९८८ तक चलने का लिख दिया तथा फिर तेजी शुरु होने का ऐलान कर दिया यहाँ हम चूक गये तथा हमने इस मेष न. १ के गुरु का मन्दी का महत्व कम करके आँक दिया, लेकिन गुरु मेष की मन्दी समाप्त नहीं हुई दरअसल हमसे एक गलती यह हो गई कि हमने शनि पर ध्यान नहीं दिया जो धनु राशि गुरु की राशि में बैठा है धनु राशि का शनि मेष राशि के गुरु-प्रवेश से यह शनि नीच राशिस्थ हो गया, अत: गुरु का मेष राशि में मन्दी का पावर डबल हो गया अलावा इसके कुंभ राशि के राहु का तेजी का फेक्टर भी इसलिए तेजी नहीं कर सका, क्योंकि राहु हमेशा उल्टा चलता है अत: यह राहु कुंभ में प्रवेश होते ही पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में आया यह पूर्वा भाद्रपदा नक्षत्र गुरुग्रह का नक्षत्र है अत: यह भी मन्दी सूचक हो गया तथा मेष न. १ के गुरु की मन्दी का सपोर्ट इस राहु ने भी किया। इतनी सूक्ष्म बात हमारे ध्यान में उस वक्त नहीं आयी, अत: हम क्षमा याचना करते हैं। मेष के गुरु की पूर्ण दृष्टि तुला न. २ वायुतत्व की राशि पर पड़ती रही अत: तेल-दाना सरसों व अन्य तिलहन जिन्सों में तेजी आयी भी तो वह ठहरी नहीं।

ता. २० जून १९८८ को यह गुरु मेष राशि से निकलकर वृष राशि में प्रवेश हो जाता है अत: यह मन्दी का बड़ा फेक्टर समाप्त हो जाता है। अब धनु राशि का शनि भी अपनी नीचस्थ राशि-पोजीशन से हट जाता है। अत: अब तिलहन की मन्दी की बड़ी लाइन समाप्त होती लगती है तथा तेजी शुरु हो जावेगी। अब धीरे-धीरे बाजार तेजी की तरफ आगे बढ़ने लगते हैं अब केवल दो चीजें मन्दी में हैं। न. १ शनि वक्री जो ता. ३० अगस्त को सीधा होता है. दूसरा कुंभ का राहु ५वीं भाद्रपदा नक्षत्र में यह ता. ११-१२ सितम्बर १९८८ को इस नक्षत्र से निकल जाता है तथा शतभिषा नक्षत्र में प्रवेश होता है अत: असली तेजी इस राहु के कुंभ राशि की यहाँ से शुरु होती लगती है। राहु-कुंभ राशि व शतभिषा नक्षत्र में ता. २०-२१ मई १९८९ तक चलता रहेगा। अत: यह उत्तम-मध्यम तेजी प्रधान ही रहेगा। तेजी का चांस यह काफी लम्बा है अत: विशेष सावधानी से व्यापार करें। क्योंकि इस लम्बे चांस में बीच-बीच में बाजार बढ़ने के बाद मन्दी के रिएक्शन भी समय-समय पर आते रहेंगे। अत: विशेष मार्गदर्शन के लिए हमसे पत्र व्यवहार व सम्पर्क बनाये रखना आवश्यक है। ता. २० मई १९८९ से ता. ३० जून १९८९ तक बाजारों में कभी तेजी कभी मन्दी चल सकेगी, लेकिन ता. ३० जून १९८९ के बाद हमको ऐसा लगता है कि तेजी एकदम समाप्त सी हो जावेगी, क्योंकि अब गुरु ग्रह मिथुन राशि में प्रवेश हो जायेगा। इसका असर सब ही तिलहन-बाजारों में बड़ी मन्दी का पड़ेगा। अब मन्दी वाले धीरे-धीरे बाजारों पर हावी हो जायेंगे। जुलाई अगस्त सितम्बर इन तीन महीनों में कभी-कभी मन्दी का बड़ा धड़ाका तिलहन-बाजार में आ सकेगा. विशेष सावधानी से व्यापार करें.

रूई-कपास बाजार-भविष्य : रूई-कपास बाजारों का भी महत्व हमारे देश में कम नहीं है। रूई कपास से कपड़ा सूत आदि बनता है। अत: कपड़े सूत के भी लाखों व्यापारी रूई-कपास बाजार की घटाबढ़ी व तेजी-मन्दी में विशेष दिलचस्पी रखते हैं। यूँ रूई-कपास का हाजिर व वायदे का धंधा भी बहुत बड़ी व प्रचुर मात्रा में हमारे यहाँ होता है।

रूई-कपास के लिए १९८७ का वर्ष एक यादगार व असाधारण वर्ष सिद्ध हुआ तथा इतनी बड़ी तेजी इस वर्ष रूई बाजार में आई कि लोग आश्चर्य चकित रह गये। हमने इस तेजी का बहुत ही विश्वासपूर्वक ढंग से अपने लेख व भावी फल १९८७ में ऐलान किया था। हमने तो हिम्मत करके यहाँ तक लिख दिया था कि अपने मकान जमीन व जेवर बेचकर रूई खरीद लें तथा तेजी का धंधा सन् १९८७ साल में कर लें। कितनी बड़ी बात हमने लिख दी थी। हम आज भी कभी-कभी सोचते हैं तो यह महसूस करते हैं कि ऐसी बात हमें लेख तथा भावी-फल में लिखने की हिम्मत नहीं करनी चाहिए थी। लेकिन कुछ हमें अपने व्यापारिक-ज्योतिष के सिद्धान्त पर इतनी अधिक आस्था है कि ऐसी बात लिख दी तथा भगवान ने हमारी जबदस्त टेक रख दी तथा इतनी बड़ी भयंकर तेजी रूई में आई कि हमको भी आश्चर्य हुआ, हमारे इष्ट ने हमारी लाज रख दी वरना हम मुँह दिखलाने लायक भी नहीं रहते, हमारी ऐसी मान्यता थी कि मीन-राशि में गुरु रूई बाजार में तेजी का बड़ा फेक्टर है तथा यह १२ वर्ष में एक बार आता है। इस वर्ष १९८७ के साल में ता. ३ फरवरी १९८७ को गुरु मीन-राशि में प्रवेश हुआ तथा उस वक्त राहु भी मीन में चल रहा था। अत: राहु और गुरु दोनों ही इसमें इकट्ठे हो गये। तथा हमारे दिल में यह स्फुरणा व आवाज हुई कि यह योग रूई के भावों को डबल करने की ताकतवाला में है और इसी विश्वास से ऐसा अनोखा ऐलान हमारे अपने लेख व किताब वायदा हाजिर बाजार भविष्य १९८७ में लिखने कि हिम्मत या यूं समझें बचपना कर दिया तथा हमारा विश्वास सही निकला। रूई ३३०० के घरों से ७७०० टच हो गई। ऐसी बड़ी व भयंकर तेजी आयी कि व्यापारियों के घर में जिन्होंने हमारी बात पर श्रद्धा रखकर तेजी का व्यापार किया। नोटों की बरसात हो गई। लेकिन कुछ व्यापारी इस तेजी के चांस का पूरा फायदा नहीं उठा सके, क्योंकि हमने १९८८ के लेख में तथा भावी-फल में साफ संकेत दे दिया था कि अब गुरु ता. २ फरवरी १९८८ को मीन-राशि छोड़कर मेष राशि में प्रवेश होता है। अत: ता. ३१ जनवरी १९८८ के पहले पहले रूई के सभी व्यापारी भाइयों को तेजी के धंधे से अवगत हो जाना चाहिए। जिन व्यापारी बंधुओं ने हमारे उक्त ऐलान को मानकर अपने रूई-बाजार का स्टॉक खत्म कर दिया उनको भारी कमाई हो गई, लेकिन कुछ अपनी सनक में रह गये तथा रूई के तेजी के धंधे से अलग नहीं हुए वो आज तक पछताते हैं क्योंकि रूई में १५०० करीब टूट गये। ता. २ फरवरी १९८८ से गुरु चेंज हो कर मेष में प्रवेश हुआ तथा मन्दी चालू हुई और बराबर चलती रही। मेष का गुरु ता. १९ जून १९८८ को हटा है। अत: अब धीरे-धीरे मन्दी में ब्रेक लग जावेगा तथा तेजी की लाइन पुन: शुरु हो सकेगी। ता. १३ अगस्त १९८८ से गुरु वृष-राशि में चढ़ता हुआ रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश होगा तब से यह गुरु तेजी सूचक हो जावेगा। नोट कर लें। यह गुरु ता. २८-२९ जून १९८९ तक वृष में चलता रहेगा। अत: हमको पूरे ही पीरियड में तेजी की प्रधानता ही लगती है। दीपावली १९८८ के बाद अच्छी तेजी का फोर्स आ सकेगा तथा ता. १ जुलाई १९८९ से गुरु मिथुन न. ३ की राशि में आ जावेगा। अत: अब आप भूल कर भी तेजी का धंधा न करें, क्योंकि यह बड़ा मन्दी का फेक्टर है। भारी व भयंकर मन्दी जुलाई १९८९ से अगले कुछ महीनों में आ सकती है। मीन का गुरु सन् १९८७ के साल में जितना बड़ा तेजी का फेक्टर था ठीक उसी प्रकार मिथुन का गुरु जुलाई १९८९ के बाद रूई-बाजार के लिए हमारे हिसाब से बड़ी मन्दी का फेक्टर है। अत: सावधान रहें। तथा विशेष सतर्कता से व्यापार करें। रूई का धंधा बड़ा रिस्की व जोखिम का धंधा है। जरा सी चूक से हजारों बल्कि लाखों का नुकसान हो सकता है। अत: आप अपने इस व्यापार में विशेष सावधान रहने की कृपा करें

गुड़-खाँड़-बाजार-भविष्य : गुड़-खाँड़-बाजारों की घटा-बढ़ी का सम्बन्ध मुख्य रूप से जल तत्व की राशियों से हमारे अनुभव में आया है। मीन-वृश्चिक एवं कर्क ये तीन राशियाँ जलतत्व की है। मीन का मालिक गुरु एवं नेपच्यून, वृश्चिक का मालिक मंगल एवं प्लूटो तथा राहु विशेष वर्चस्व इन बाजारों पर रखते है। सन् १९८९ का वर्ष गुड़-खाँड़ बाजारों के लिहाज से विशेष तेजी सूचक है, क्योंकि १९८८ से ही गुरु-वृष राशि में चलता है तथा जून १९८९ तक यह वृष में ही चलेगा। ता. ४ जुलाई १९८८ को मीन राशि में मंगल अतिचारी प्रवेश हुआ है। यहाँ से गुड़-खाड़ में तेजी का फोर्स बढ़ सकता है। यूँ गुड़-खाँड़ बाजारों में गत २-२॥ वर्षों से मन्दी की प्रधानता ही अनुभव में आई, क्योंकि १९८५-८६ तथा १९८७ में शनि ग्रह का वृश्चिक राशि से प्रसार हो रहा था, लेकिन अब यह मन्दी का बड़ाफेक्टर रह गया है। गुड़-खाँड़ बाजारों के लिए हमारा एक प्रेक्टिकल अनुभव है कि जब-जब धनु नं. ९ की राशि में कोई शुभ ग्रह आता है तो मन्दी की बड़ी लाइन चलती है। धनु राशि में गुरु जब भी आता है गुड़-खाँड़ के भाव आधे होते देखे गये हैं। अर्थात् जब तक गुरु धनु में चलता है उस पूरे पीरियड में कभी बड़ी मन्दी आ जाती है लेकिन जब क्रूर ग्रह शनि-राहु हर्षल आदि इस धनु राशि नं. ९ की राशि में आते हैं तो बड़ी तेजी का लम्बा पीरियड आ जाता है।

सन् १९८९ में भी तेजी के कुछ योग बने है। अत: जून जुलाई १९८८ से जून १९८९ तक गुड़-खाँड़ बाजारों में घटाबढ़ी से तेजी की प्रधानता रहेगी। बाजार अच्छे बढ़ने के बाद मन्दी के बीज-बीच में झटके आते रहेंगे लेकिन बाजार अन्दर टोन मजबूत ही रहेगा। दीपावली १९८८ से जून १९८९ तक अच्छी तेजी आ सकती है। लेकिन जून के बाद आपको तेजी के धन्धे से हट जाना चाहिए। जुलाई से अक्टूबर १९८९ के बीच बड़ी मन्दी आ सकती है, क्योंकि गुरु मिथुन राशि में आ जावेगा तथा शनि, हर्षल नेपच्यून जो धनु राशि में बैठे हुए है। उससे अपोजीशन इस गुरु का होगा सो अच्छी मन्दी आ सकती है। आप हमसे बराबर पत्रों द्वारा सम्पर्क रखें।

जूट-वारदाना-बाजार-भविष्य : जूट-वारदाना पीट्वील-बाजारों के व्यापारी भी गत २-३ वर्षों से काफी परेशानी का अनुभव कर रहे हैं, क्योंकि गत ३ वर्षों से इन बाजारों में मन्दी का ही वातावरण चल रहा है, तेजी आती है तो ठहरती नहीं। जूट-वारदाना वी. द्वीप बाजारों में भी वायु तत्व की राशियों का विशेष वर्चस्व व असर है तथा शनि-गुरु-राहु-मंगल इस बाजार पर विशेष घटा-बढ़ी लाते हैं, ता. २० दिसम्बर १९८४ को शनि-तुला-राशि अर्थात् वायु तत्व की राशि न. २ से हटा था और वहाँ से ही तेजी का फोर्स इन बाजारों से समाप्त हो गया तथा पूरा ही वृश्चिक राशि का शनि मन्दी प्रधान हो गया यह बात हमने विशेष जोरदार शब्दों में अपने लेखों में दरसा रखी है। अब १९८७ के २० दिसम्बर

को शनि वृश्चिक से निकल कर धनु राशि में प्रवेश हो गया है। अतः जनवरी १९८८ से ही इन बाजारों में तेजी का प्रारम्भ समझना चाहिए। लेकिन १९८८ में तेजी प्रथम छः महीने समाप्त होने पर विशेष रूप से आ सकेगी—क्योंकि धनु का शनि ता. २० जून १९८८ तक तो गुरु मेष राशि में चलेगा। चूंकि शनि धनु राशि गुरु की राशि में है अतः शनि नीच राशिस्थ हो जावेगा, अतः शनि की तेजी का बड़ा असर नहीं हो सकेगा। दूसरा जूट-बारदाना बाजारों में एक बड़ा तेजी का योग ता. ११-१२ सितम्बर १९८८ को शुरू होगा, जब कुम राशि में राहु जो ता. ५-७ मार्च ८८ को प्रवेश हुआ है वह पूर्व भाद्रपदा नक्षत्र को छोड़कर शतभिषा नक्षत्र में प्रवेश हो जावेगा। अतः तेजी की सही लाइन इन बाजारों में ता. १०-१२ सितम्बर ८८ से ही चालू होनी समझनी चाहिए। यह तेजी उत्तम-मध्यम मई १९८९ तक चलती रहेगी, या आखीर जून १९८९ तक इन आठ-नौ महीनों में ऐसी बढ़िया तेजी हमको इन बाजारों में लगती है कि लोग गत २-३॥ वर्ष की मन्दी का दर्द भूल जावेंगे।

लेकिन जुलाई से पुनः मन्दी की बड़ी लाइन चालू होती है, क्योंकि गुरु मिथुन नं. ३ की राशि में प्रवेश हो रहा है—मिथुन नं. ३ की राशि वायु तत्व की पहले नं. की राशि है तथा इस जूट-बारदाना-बाजार की कुण्डली, की पहल घर की है अतः इस राशि में गुरु जैसे महान् शुभ ग्रह का प्रवेश, हमारे हिसाब से बड़ी मन्दी का एक महत्व पूर्ण फैक्टर लगता है, यह मन्दी का ट्रेण्ड उत्तम-मध्यम आखिरी दिसम्बर ८९ तक चलता ही रहेगा, इस पीरियड में बीच-बीच में जब भाव विशेष घट जावेंगे तो तेजी के बड़े रिएक्शन भी आ सकेंगे।

उपरोक्त विवेचन से एक बात साफ हो जाती है कि इस वर्ष एक बार भयंकर तेजी प्रथम छः महीने में तथा एक बार भयंकर मन्दी वर्ष के आखिरी छः महीने में आ सकेगी। आपको इस वर्ष विशेष सावधान अपने व्यापार में रहना चाहिये तथा हमारा १९८९ का भावी-फल पत्र ४०० वाला भी मंगा लेना चाहिये तथा स्पेशियल-मासिक रिपोर्ट हर महीने मँगाते रहना चाहिये जिनमें एक-एक दिन की तारीखवार घटा-बढ़ी व चौंस हर महीने के आप को मिलते रहेंगे। वार्षिक-ग्राहक लवाजम मात्र १२५/ हर जिन्स का है वार्षिक ग्राहक बन जाने पर पूरे अगले १२ महीने तक रिपोर्ट बराबर भेजी जावेगी।

अनाज-दालवाना-बाजार :—सन् १९८९ का वर्ष इन बाजारों में तेजी प्रधान रहेगा, क्योंकि धनु राशि का शनि-कन्या राशि के पृथ्वी तत्व को पूर्ण देखता है—तथा गुरु वृष राशि में ता. २० जून १९८८ को प्रवेश होता है वृष राशि का गुरु अच्छी बरसात का द्योतक है, अब इस वर्ष बरसात की प्रायः सब ही जगह इफरात लगती है। गत वर्ष १९८७ की साल में जहाँ-जहाँ सूखा व अकाल की स्थिति बनी थी तथा पीने के पानी की किल्लत महसूस हुई थी—वहाँ सभी प्रान्तों में ता. २० जून १९८८ के बाद अच्छी बरसात होने की सम्भावना हमको लगती है, तथा अकाल की विभीषिका अब सब जगह से हट जावेगी तथा अनाज-व दालवाना बाजारों में काफी अच्छी घटा-बढ़ी चलेगी, हमको कुछ महीने तेजी व बाद में मन्दी की सम्भावना है। दालवाना में भी एक बार अच्छी तेजी दीपावली १९८८ से जून १९८९ तक आ सकेगी, लेकिन १९८९ के पीछे के दो महीने हमको मन्दी प्रधान लगते है। विशेष सावधानी से व्यापार करें।

चाँदी-सोना-बाजार : इन बाजारों में हमने सन् १९८७ का साल बहुत बड़ी तेजी का बताया था, क्योंकि ता. ३ फरवरी १९८७ को मीन राशि का गुरु प्रवेश हुआ था तथा राहु, पहले से ही मीन राशि में चल रहा था, दरअसल चाँदी व सोना बाजारों में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण असर मीन-कर्क एवं वृश्चिक राशि का है, ये तीनों जल राशि का सम्बन्ध चाँदी सोना बाजारों की घट-बढ़ पर विशेष अनुभव में आया है—तथा इन बाजारों के कारक ग्रह है, बृहस्पति शनि-राहु-एवं मंगल, जल तत्व की राशि में जब भी गुरु का प्रसार हुआ, बड़ी तेजी इन बाजारों में अनुभव में आयी है। सन् १९८७ के साल में गुरु-राहु के मीन राशि के योग ने भयंकर तेजी चाँदी सोना बाजारों में कर दी थी। हमने इस तेजी का एलान अपने १९८७ की साल के लेख में इसी पञ्चाग में कर रखा है आज भी देख सकते है, जिन्होंने हमारा १९८७ का व्यापार-भविष्य-फल-मँगवाया उनको भी बड़ा जबर-दस्त लाभ चाँदी सोना बाजारों के तेजी के धन्धे में हो गया। १९८९ का वर्ष भी तेजी प्रधान है, कारण धनु राशिका शनि व वृष राशि का गुरु-जून १९८९ तक चलता रहेगा, अतः बाजारों में तेजी की ही प्रधानता रहेगी, सही तेजी १९८८ की साल में ता. १५ सितम्बर से चालू हुई है, जब राहु कुंभ में चलता हुआ—अपने खुद के नक्षत्र शतभिषा में प्रवेश होगा, तथा यह योग ता. २० मई १९८९ तक चलता रहेगा—विशेष सावधानी से व्यापार करें, ता. २० मई १९८९ के बाद के सन् १९८९ के बचे हुए महीने मन्दी प्रधान लगते है

शेयर-बाजार-भविष्य : शेयर-बाजार का व्यापार भी आज कल बहुत बड़े पैमाने में होने लगा है तथा लाखों व्यापारी इस धन्धे में दिलचस्पी लेते है, शेयर-बाजार की एक जन्म-कुण्डली का अनुसन्धान हमने किया है, वृश्चिक राशि के लग्न की कुण्डली से शेयर-बाजार की घटा-बढ़ी चलती है, गत २० दिसम्बर १९८४ से वृश्चिक राशि में शनि प्रवेश हुआ तथा इसने शेयर-बाजारों में मन्दी का वातावरण शुरू किया तथा जब तक शनि वृश्चिक में रहा शेयर-बाजार ऊँचे उठ नहीं सके, लेकिन ता. २० दिसम्बर ८७ को शनि ने वृश्चिक राशि छोड़ दी है, अतः शेयर में मन्दी का बड़ा फेक्टर समाप्त हो गया है तथा अब धीरे-धीरे तेजी का वातावरण चालू हो जायेगा। १९८८ के सितम्बर महीने से तेजी का पावर विशेष बढ़ता लगता है, तथा मई-जून १९८९ तक तेजी की प्रधानता ही लगती है। जून १६८६ के बाद गुरु ग्रह मिथुन राशि में प्रवेश हो जायेगा अतः यह गुरु इस शेयर की कुण्डली में अष्टम स्थान में आ जायेगा, अतः जुलाई १९८९ के बाद पुनः मन्दी की प्रधानता हमको शेयर-बाजारों में लगती है, विशेष सावधानी से व्यापार करें, क्योंकि १९८९ के पीछे के छः महीने में कभी बड़ी मन्दी की लहर चल सकेगी ये विवेचन-हर प्रकार के शेयर-बाजार पर उत्तम-मध्यम लागू हो सकेगा,

एक विशेष जरूरी निवेदन:—यदि आप की जन्म कुण्डली में नं. ९ की राशि में सूर्य-चन्द्रमा-अथवा मंगल बैठे है, अथवा ११ की राशि में सूर्य-चन्द्रमा-मंगल एवं गुरु बैठे है तो आपके इन ग्रहों से शनि तथा राहु का क्रॉस होगा—यह क्रॉस पूरे १९८९ की साल चलता है, यह बात खराब व बाधक है, तथा आपको बड़ा व रिस्की व्यापार नहीं करना चाहिये। वरना व्यापार में भूल हो सकती है तथा नुकसान हो सकता है। आप कृपया अपनी जन्म-कुण्डली खोलकर उसके नं. ९ तथा नं. ११ की फीगर राशि देखे यदि उपरोक्त ग्रह में-से एक भी ग्रह उसके बैठा हो तो आप अपनी जन्म-कुण्डली की नकल हमारे पास भेजने की कृपा करे-तथा एक कुण्डली के साथ २१/- भी भेजें हम आप को खराब योग का उपचार सरल-सा बता देंगे।

आपके लिये एक विशेष लाभ की बात—आपकी विशेष सेवा के उद्देश्य में हमने इस वर्ष भी सन् १९८९ ई. के साल के लिए एक विशाल-पुस्तक-भावी फल प्रकाशित किया है, जिसका नाम वायदा-हाजिर एवं तिलहन-बाजार भविष्य-फल सन् १९८९ है। यह भावी-फल करीब ४०० पृष्ठों का है। इसमें सितम्बर १९८८ से दिसम्बर १९८९ तक के अर्थात् करीब १६ महीनों के सभी २५-२५, जिन्स बाजारों की घटा-बढ़ी का भविष्य-दिग्दर्शन व स्पेशियल चाँस अत्यन्त विस्तृत व खुलासावार ढंग में अलग-अलग करीब १५-१५ स्वतन्त्र पुस्तकों के रूप में प्रस्तुत किया गया है—तिलहन रूई कपास जूट-बारदाना चाँदी-सोना गुड़-खाँड अनाज-दालवाना, शेयर किराना आदि सभी छोटे मोटे बाजारों के—छोटे-बड़े चान्स, मासिक भविष्य व स्पेशियल सुनहरी चान्स आदि बात खुलासेवार समझा कर प्रस्तुत किये है—आपको अत्यधिक पसन्द आवेगा क्योंकि इस लेख में स्थान की कमी के कारण खुलासावार भविष्य बाजारों का हम लाख चाहे तो नहीं दे सकते, अतः व्यापारी बन्धुओं के विशेष आग्रह को ध्यान में रखते हुए हमने इस विशाल भावी-फल का प्रकाशन किया है—यह हमारा भावि-फल (पुस्तक) व्यापारिक जगत में अत्यधिक लोक प्रिय है कीमत इन सभी १५ पुस्तकों के इस भावि-फल की केवल १०५) है, इस पचाग के पाठकों से केवल १०१) है—वी. पी. नहीं करेंगे यदि आप १०१) मनिआर्डर से भेजकर रिजर्व करवा लें तो भावी-फल रजिस्ट्री द्वारा दीपावली के पहले आपको भेज दिया जावेगा, ताकि आप दीपावली की पूजन के साथ इसका भी पूजन कर सकें। मनिआर्डर भेजकर अपना सन् १९८९ की साल का भविष्य-फल फौरन रिजर्व करवा लें। सन् १९८८ की साल में भी कई व्यापारी भावी-फल से महरूम रह गये। क्योंकि उन लोगों का मनिआर्डर बहुत लेट आया था, अतः हमको उनका मनिआर्डर वापिस लौटाना पड़ा, क्योंकि हमारे स्टॉक में भावी-फल शेष नहीं बचा था। इसलिये सन् १९८९ की साल में हमने सितम्बर ८८ से ही चान्स देना शुरू किया है अक्सर दीपावली से शुरू करते है—जिसका मनीआर्डर पहले आवेगा उसको पहले भेजा जा सकेगा-**नोट कर लें।**

उपरोक्त विवेचन व व्यापार भविष्य हमने अपने गत ५० वर्षों के व्यापारिक ज्योतिष के अनुभव अनुसन्धान के आधार पर बहुत ही ईमानदारी से प्रस्तुत किया है, फिर भी आप के किसी प्रकार की रिस्क व नुकसान के जिम्मेवार हम नहीं है—**नोट कर लें।**

कृपया मनिऑर्डर नीचे लिखे पते पर भेजें : **प्रोफेसर वी० सी० मेहता**

फोन २०९२९ ज्योषित-मार्तण्ड - तार-मेहता जैन-ज्योतिष-ब्यूरो-ब्यावर (राज. ३०५९०१)

सामूहिक व्यापार भविष्य संवत् २०४६ विक्रमी

लेखक : ओंकार प्रसाद विश्वबन्धु शर्मा एवं दैशबंधु वैद्य
(व्यापार अनुसंधान विभाग) २१/२२, ब्रह्मनगर, पो० हापुड़ श्री ओंकार धाम ज्योतिष भवन
फोन : २२३८, पिन-२४५१०१

श्री गणेशाय नमः

संवत् विक्रम २०४६ में वर्ष का राजा एवं मन्त्री दोनों ही पदों पर शुक्र विराजमान है। ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से दोनों पदों पर एक ही ग्रह का होना उत्तम है इसलिए सरकार में मन्त्री मण्डल केन्द्र में तनाव को मतभेद रहेगा। लेकिन सरकारी नीति दृढ़ता रहेगी। वर्ष लग्न में वृहस्पति वृष राशि में छठे स्थान में होने से भारत के शत्रुओं का आक्रमण भारत की समृद्धि पर विशेष ईर्ष्या रहेगी। लेकिन जब वृहस्पति मिथुन राशि पर जुलाई सन् १९८९ में चलेगा तब से और भी दृढ़ता केन्द्र में आयेगी और विपक्ष की कोई बात नहीं चलेगी। संवत् २०४६, सस्येश रवि, धान्येश शुक्र, मेघेश बुध, रसेश मंगल, नीरसेश रवि, फलेश बुध, धनेश शनि दुर्गेश बुध, इन दस पदाधिकारियों में यह अधिकार शुभ ग्रहों ने प्राप्त किये हैं। इनका पृथक-पृथक फल लिखा जाये तो लेख बहुत विस्तार में हो जायेगा इसलिए इतना ही लिखना पर्याप्त है कि शुभ ग्रहों का अधिकार होने से यह वर्ष अच्छा रहेगा। इस वर्ष का नाम कार्तिक है। मेघ नाम सम्वर्त है। शास्त्र में लिखा है कि सम्वर्त जल पूरितः।

रोहिणी निवास सन्धि में होने से इस वर्ष खण्ड वृष्टि होगी यानि देशव्यापि वर्षा का योग नहीं है। समय का निवास बनिये के घर में होने से बहुधा वस्तुओं में जोरदार तेजी आयेगी। राजनीति पर हम विशेष लेख न लिखकर सिर्फ व्यापार पर ही लेख लिख रहे हैं क्योंकि हमारे लेख का उद्देश्य व्यापारी वर्ग को लाभान्वित करना है।

चैत्र शुक्ल पक्ष सं२०४६-हम अपने लेख में विशेष रूप से व्यापारिक वस्तुओं की तेजी मन्दी ही लिखेंगे। कौन ग्रह कब बदलेगा और ग्रह क्या असर करेगा। अगर इस बात को भी लिखा जाएगा तब लेख बहुत बढ़ जाएगा। चैत्र शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा का क्षय होना और पूर्णमासी की वृद्धि होना दुतर्फा असर करेगा यानि चांदी, सोना, पीतल आदि धातु पदार्थों में लम्बी लाईन तेजी की निकलेगी। लेकिन अनाज आदि खाद्य पदार्थों में इस पक्ष में जडमूल से तेजी समाप्त हो कर मन्दी का श्रीगणेश धीरे-धीरे होगा। चैत्र सुदी प्रतिपदा से छठ तक संवत् २०४५ की चालू पिछली लाईन ही ज्यों का त्यों हर वस्तुओं में चलती रहेगी। लेकिन ज्यों ही चैत्र शुदि अष्टमी को मेष की सक्रान्ति ३० मुहूर्ती लगेगी त्यों ही चीनी, गुड, खाण्डसारी में तथा कुछ पसारट्ट की वस्तुओं में जैसे हल्दी में जोरदार तेजी चमकेगी। लाल मिर्च, जीरा, धनियाँ व चावल आलू अवश्य ही खरीद कर लाभ उठायें। लेकिन गेहूँ, चना, जौ आदि की खरीद न करें बल्कि तारुणी करें। चैत्र शुदी त्रयोदशी की रात्रि को बुध के घर में मंगल का प्रवेश होगा और सुपीरियर लाईन के प्रभाव से यह स्पष्ट विशेष चांस है कि जिन वस्तुओं में चैत्र शुदी चौदस बुधवार को पिछले शनिवार के ऊँचे भाव कटेंगे तो भयंकर तेजी आयेगी। अगर एक पैसा भी नीचा भाव कट जाये तो जोरदार मन्दी एक सप्ताह की चलेगी। पर कौपर निकिल, किशमिश खरीदना।

वैशाख, संवत् २०४६—इस माह में पाँच शनिवार और वक्री शनि और शुक्र का उदय आदि भिन्न-भिन्न तेजी-मन्दी असर कारक ग्रहों के परिभ्रमण और सुपीरियर लाईन मीटे में बहुत जोरदार तेजी करने के फलस्वरूप सट्टे वायदे में मार्जिन लगने की सम्भावना होगी। और कहीं-कहीं बडे-बडे सटोरिये बेईमानी पर उतारूँ होंगे। क्योंकि पाप ग्रह जब वक्री होता है तो मार्केटों में बेईमानी, मार्जिन आदि हुआ करते हैं। वैशाख वदी प्रतिपदा शनिवार के ऊँचे और नीचे भाव आगे सोमवार को जिधर भी क्रास होंगे वही लाईन पूरे तमाम पक्ष चलेगी। कुछ मंदी का रियक्शन चांदी, सोना में आयेगा। लेकिन शुक्रोदय वैशाख वदी नवमी के होने के बाद मन्दी के रियक्शन को कतई समाप्त करके वैशाख शुक्ल पक्ष में मगलाचौथ से ९ दिन की तेजी भयंकर चीनी, गुड, खाण्डसारी में आयेगी।

"एक विशेष चांस" जिन व्यापारियों ने सट्टे से लाभ न कमाया हो उनको हम ऐलान करते हैं कि वैशाख शुदि अष्टमी को सोमवार की ५०० तेजी विपक्ष में सिर्फ १० मन्दी लगाकर छोड दीजिये मोटा लाभ अवश्य होगा यह निश्चित है। लेकिन इन तिथियों में चना, गहूँ, जौ, बेझड, हल्दी आदि में जोरदार मन्दी आयेगी तब ही स्टाक करो वायदे में चांदी लेना।

ज्येष्ठ संवत् २०४६ —ज्येष्ठ में पाच रविवार पाच सोमवार होने से बहुत सी वस्तुओं में बहुत जोरदार तेजी आयेगी और बहुत वस्तुओं में मंदी भी आयेगी क्योंकि सूर्य तेजीकारक ग्रह है और चन्द्रमा मन्दी कारक ग्रह है। सूर्य तेल, तिलहनों का स्वामी माना गया है। वैजिटेबिल सोयाबीन मसूर सरसों में भी असर करता है। और चांदी सोना में भी असर करता है। अतः वनस्पति और घी मूंगफली, अरण्डा, अजवाईन, सरसों, सभी वस्तुओं में लगते ही ज्येष्ठ तो मार्केट पडे रहेंगे। लेकिन पचमी से इसी ८ दिन की अच्छी तेजी चना में भी निकलेगी। ज्येष्ठ वदी नवमी पर गुरु का अस्त होना चांदी, सोना, चीनी, आलू, बोरी, जूट, पाट, बारदाना में तेजी आकर ज्येष्ठ वदी त्रयोदशी शुक्रवार पर बुध का उदय होते ही गेहूँ, चना, जौ, मटर, में जोरदार मन्दी की रियक्शन आयेगी। जीरा, धनिया, कालीमिर्च आदि में भी ज्येष्ठ शुदि तीज से जोरदार मन्दी का चांस सम्पन्न होगा।

गंगा दशमी, दशहरे पर चीनी, सरसों, चना, आदि में तेजी का जोर होगा। खास चांस ज्येष्ठ शुदि एकादशी को जिस वस्तुओं में पिछले सोमवार के नीचे भाव क्रौस होंगे उनमें ५ दिन में ही जोरदार मन्दी आयेगी। इस सक्रान्ति के असर से ही भारतीय बासमती चावल की पश्चिमी एशिया के देशों में इंगलैंड और रूस में मांग बढ़ेगी।

आषाढ़ संवत् २०४६—आषाढ़ में ५ मंगल होने से मंगल के अधिकार की तमाम वस्तुओं में बहुत जोरदार तेजी आयेगी। आषाढ़ वदी तीज को उदय गुरु होने पर चीनी, चना, जौ, गेहूँ और हल्दी स्वर्ण में प्रथम तीन दिन मन्दी के आकार बाद में जोरदार तेजी आयेगी। इस माह में मिथुन राशि में बुध होने का ज्योतिष शास्त्र में लेख है-

"बुधौ मिथुन राशिस्थो, महर्घं च चतुष्पदाम् ।
तदा वायु किजानीयात्, मेघश्च प्रचुरौ भवेत्" ॥

इस ग्रह के साथ वृहस्पति और सूर्य साथ होंगे अतः इस माह में भारत सरकार नई फसलों के संयोगों को देखते हुए खाद्य तेलों का आयात करने का निर्णय लेगी। अरण्डा, काली मिर्च, लालमिर्च, हल्दी, खटाई, जीरा, सौंफ, धनिया का स्टाक करना इस माह में आषाढ़ की अमावस्या पर अच्छा रहेगा।

आषाढ़ शुदि में बुधास्त होना तैयारी गुड में १७ से ४२ रुपये की तेजी का चांस सम्पन्न करेगा। लेकिन वायदे सट्टे में मार्केट रुपये धेली में ही घूमता रहेगा। अजवायन, इमली, इलाइची का स्टाक आषाढ़ शुदी दशमी पर करें। एक विशेष चांस ता० ७ जुलाई को ८ के नजराने अथवा १०० तेजी तो ५५ मन्दी डालकर लाभ उठावें।

श्रावण, सम्वत् २०४६—श्रावण में ५ बुधवार है जो भारत के व्यापारियों को मालामाल कर देंगे। इस महीने अरण्डी, गुड, चीनी, खाडसारी आदि की तेजी जोरदार होगी और लौंग, मेथी, सोंठ, अनारदाना, चाय में जोरदार तेजी चमकेगी। वायदा सट्टे आलू में तेजी, गुड के भाव पडे रहेंगे। श्रावण बदि छठ को सिंह का मंगल आते ही खंड वृष्टि के योग सम्पन्न होंगे। और जूटपाट बारदाना मन्दा होगा। श्रावण बदि त्रयोदशी को बुध का उदय होने से हाजिर गुड में जोरदार तेजी आयेगी और चीनी तेल, गुड, खंडसारी, मीठा आदि में चालू तेजी एक सप्ताह चलेगी। सट्टे वायदे में बहुत कम मार्केट चलेगा श्रावण शुदि छठ से एक हप्ते में बहुधा वस्तुएं तेज होंगी और जब-जब अच्छी वर्षा होगी तब-तब गुड तेज होगा और आलू भी तेज होगा।

भाद्रपद सम्वत् २०४६—इस माह में पांच शुक्रवार और दो शुभ ग्रह बुध और शुक्र का कन्जक्शन होना सुभिक्षकारक है। इस माह में सूर्य से आगे मंगल होना ज्योतिषशास्त्र में लिखा है—

"आगे मंगल पीछे भान ।
वर्षा होवे ओस समान ॥"

भाद्रपद बदि में कन्या का बुध बदि चौथ को आते ही सूर्य के रथ से आगे बराबर चलता रहेगा। अतः भादपद बदि पंचमी को ११ ब० ३६ मि० से १ घन्टे में जिस वस्तु में जो लाईन निकलेगी वही लाईन भाद्रपद शुदि सप्तमी तक चलेगी। सप्तमी को शुक्लपक्ष में तुला का शुक्र आते ही धान्यदि में और इस फसल की सर्व बस्तुओं में घोर तेजी की आशंका बनेगी।

आश्विन सम्वत् २०४६—आश्विन में पाँच शनिवार घोर तेजी कारक लेकिन कन्या की ४५ मुहूर्ती संक्राति जोरदार मन्दी कारक है। ऐसे अवसर पर कभी- कभी लिवाल और बिकवाल के सिंडिकेट बन जाते हैं या सरकार के कुछ कन्ट्रोल हो जाते हैं। जिससे व्यापार ठप्प हो जाते हैं। कभी-कभी वायदे सट्टों पर मार्जिन की रूप रेखा भी व्यापारी चाल को ठप्प कर देती है। प्रतिपदा से चौथ तक जोरदार मन्दी हर वस्तु में आयेगी बदि चौथ को रात्रि में बुध का पश्चिम में अस्त होना जोरदार चाल वायदे सट्टों में निकालेगा हमारा खास चांस या सकेत समझिये कि अशौज बदि पंचमी से पूर्व जिन वस्तुओं में मन्दी रही होगी। उनमें जोरदार तेजी बुध वक्री अशौज बदि नवमी पर होने से आयेगी। चाँदी, सोना और शेयर इत्यादि में मन्दी आयेगी। बदि एकादशी को हस्त भौम बदि द्वादशी को हस्त रवि दो ग्रह हस्त नक्षत्र में आने से खरीदार को विशेष लाभ एक सप्ताह में ही होगा। अशौज शुक्ल पक्ष में द्वितीय तिथि बढ गयी है और इसी पक्ष में चौदस तिथि घट गयी है। एक कहावत है कि जिस पक्ष में तिथि बढे और उसी में तिथि घट जाए। तब एक वस्तु तो क्या सभी वस्तु घट जाय। अतः ध्यान रखिये तिलहन आदि की और तेल की ऊंची धार देखकर खरीदें नहीं बल्कि ऊंचे में बेचना ही ठीक रहेगा।

कार्तिक सम्वत् २०४६—इस महीने में ५ रविवार साथ ही कृष्णा प्रतिपदा को चित्राया भौम ३७ घड़ी पर आने से भौम के अधिकार का वस्तुओं में तेजी होगी। बरतनों में कोपर निकिल में तेजी आज की लाइन कार्तिक बदि ४ तक चलेगी सक्रान्ति तुला की भौमवारी रक्तपात और तेजी की सूचना देती है क्योंकि १५ मुहूर्ती होने से खाद्य तेल मीठा व खाँड में जोरदार तेजी होगी। धान्यादि में समभाव पड़े रहेंगे पर मेवों में जोरदार तेजी होगी संक्रान्ति से १ सप्ताह की तेजी आकर बाद दीवाली तक थोक के भाव गिरेंगे। तुला सूर्य तुला भौम तुला बुध और तुला का चंदमा यानि चार ग्रहों का योग दीवाली पर है इसलिए दीपावली बाद २ दिन तेजी रहकर १ दम मंदी का भाव नीचे का शुदि ३ बुध को सम्पन्न होगा। नीचे का भाव सम्पन्न न हो तो मंदी पिट जायेगी। बस इतना ध्यान रखकर व्यापार करना और कार्तिक शुदि ८ से ४ दिन में दाल, तिलहन, गुड़, मेथी, जीरा, सौंठ, अजवायन, हींग, जीरा, धनिया अच्छी तेजी होगी।

मार्गशीर्ष सं २०४६— मार्गशीर्ष में ५ भौमवार होने से साथ ही सूर्य के रथ से बुध का रथ आकाशी चक्र में आगे-आगे चलने से व्यापारी वर्ग को बहुत ही लाभ दायक है इस माह में तारूणी करना ज्यादा लाभ प्रद मार्गशीर्ष बदि ४ से १० दिन में और मार्गशीर्ष शुदि ८ से ६ दिन में हम मानते हैं। कौन ग्रह क्या करते हैं ऐसा लिखने से लेख विस्तार होगा। अतः सारांश रूप में निचोड़ रूप से लिखा जा रहा है। रूई का स्टोक करिये गुड़, मीठा, खंडसारी, चीनी, वैजीटेबिल, घी, देशी-घी, तेल, गोला, अरंडा, भी ले ये संकेत है। पर्याप्त है चांस हाथ से न जाने दें। हमारा इशारा ध्यान में रखना।

पौष सं० २०४६—बुध जिस माह मे अपना अधिकार कर लेता है तो व्यापारियों को मालोमाल कर देता है इस पौष में ५ बुधवार है और सूर्य से अपना रथ आकाशी चक्र में आगे-आगे रखेगा इस वास्ते भारी चाल मंदी में १ जोर की तेजी आयेगी। घी, वैजीटेबिल, चीनी, खाँड इधर लो उधर विक्रय दिशावरों में करो तभी आप माला माल होंगे। इस शीत ऋतुओं की उत्पत्ति की सभी वस्तुओं का स्टॉक करिये।

चालू वादे पौष बदि ४ शनिवार से १ लम्बी लाइन बनायेंगे आज पिछले नीचे भाव १० पैसे से ज्यादा करें तो भारी मंदी, वर्ना भाव न करें तो तेजी का बिगुल बजेगा पर ध्यान रखकर बेधड़क व्यापार करिये किसी से कोई चांस नहीं पूछें बल्कि ता० २१ दिस० मिती बदि ९ को १० बजे ४० या सवा ११ बजे की लाइन ही ५ दिन चलेगी। इसके बाद मार्केट स्थिर होगे।

चाँदी में खास चांस ४० रु० ७८ रु० का पौष बदि १४ से मंदी का सम्पन्न होगा। हमारा ये पक्का विचार है पर दादा के लकीर के फकीर न बने। अगर ता० २८ दिस० अमावस को मंदी न चले तो भयंकर तेजी का यह चांस बनेगा वर्ना नहीं। ये नोट ध्यान रख कर व्यापार करें। रूई का स्टॉक अभी न करें शेयर शैचुरी में तेजी आगे अमावस से ३ दिन बाद चलेगी और खंडसारी गुड़ में शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि से ५ ही दिन में आयेगी सभी वस्तुओं का नाम लेकर चांस लिखेंगे तो लेख का विस्तार बहुत ही होगा। इसलिये हम खास-खास चांस व्यापारियों के लाभार्थ लिख रहे हैं। स्पेशल १ वस्तु का चांस चाहे तो हम सदैव भारत के व्यापारियों को आगाह करते रहे हैं। हमारा ध्येय 'सर्वे सुखिनः सन्तु' का है। इस माह में ता० २ जन० १९९० को ३ की ५०० तेजी तो १०० मंदी सरसों, हल्दी, तेल, गुड़, निकिल, कौपर में डालें, लाखों का लाभ होगा। बस ये ही चांस आप को तथा जिसने कभी सट्टे से लाभ न कमाया हो उन को यह चांस भेंट कर रहे हैं यहीं घी, तेल में लास्ट मन्दी आयेगी।

माघ सं० २०४६ का व्यापार भविष्य— माघ में ५ शुक्र मंदी कारक है इन्फीरियर लाइन में स्टाक के बहुधा चांस मिलेंगे। इस माह में चना तेजी पर चावल भरपूर मन्दा होगा। माघ वदि ३ को बुध पूर्व में उदय होने पर सभी शेयरों में तेजी करेगा हल्दी, सोना व पीली वस्तु मंदी होगी। सुवर्ण की लास्ट मंदी रंग दिखायेगी। वदि ६ को शुक्रास्त्र से रूई व श्रृंगार की वस्तु रूई के गद्दे तकिये तथा जूट बोरी पाट में भारी मंदी १ सप्ताह की निकलेगी पर बदि ११ को भर मंदे में लिवाल करने वाला लखपति बनेगा। नोट करिये। इस चांस पर व्यापार करिये क्योंकि फाल्गुन में आगे ५ शनिवार है।

फागुन सं० २०४६ का भविष्य— इस माह में ५ शनिवार मूंगफली व तेल में लास्ट मंदी करके तेजी का नाम श्री गणेश होगा। कुंभ संक्रान्ति १५ मुहू० बदि ३ पर होने से सूर्य के अधिकार की वस्तु व गुड़ सोना हाजिर सट्टे में लेना बदि षष्ठी पर ४ दिन की मंदी सभी वस्तुओं में आयेगी पर त्रयोदशी का मार्गी गुरु होने पर हल्दी, सोना, गुड़, बारदाना जूट-पाट निकिल में तेजी होगी। चावल का स्टोक कर लो मिर्च लो कपूर सुगंधित पदार्थ भी लो। शुद्धि ३ से १ सप्ताह में भारी तेजी होगी। यदि ७ को १०० तेजी तो १०० मंदी लगाओ देखो ये ही चांस सर्वोत्तम है।

चैत्र कृष्णा २०४६— मार्केट सभी वस्तुओं के पड़े रहेंगे। इस माह बदि ३ को मीन संक्रान्ति भी ३० मु० समता प्रगट करती है। इसलिये वायदे सट्टे में कोई खास चांस हमें नहीं जंचता है स्टोक किया आगे ३ माह में मोटा लाभ देगा। अतः पूर्व संकेतानुसार ही व्यापार करिये। ॥ इति शुभम् ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

चांदी के अचूक चाँस

संवत् २०४६ विक्रमी (१९८९ व ९० ई० के)

लेखक : पं० नरोत्तम देव दीक्षित ज्योतिषी, हाथरस (उत्तरप्रदेश)

चैत्र शुक्ल पक्ष—८ अप्रैल की शाम को चांदी मंदी हो जायेगी। ११ अप्रैल में चांदी पर जोरदार तेजी आवेगी। ध्यान रखें १५ अप्रैल की दोपहर से १७ की शाम तक चांदी पर जोरदार तेजी आवेगी। १८ व १९ अप्रैल में चांदी पर मंदी अवश्य आवेगी।

वैशाख—२३ अप्रैल से २५ अप्रैल तक में चांदी पर तेजी जोरदार आवेगी। ध्यान रखें २७ अप्रैल से १ मई तक चांदी पर घटाबढ़ी से तेजी का ही प्रभाव रहेगा। २७ व ३० अप्रैल की चांदी की तेजी भी फलेगी। ७ मई से ८ मई तक में भी चांदी पर घटाबढ़ी से तेजी ही आवेगी। ११ मई में चांदी पर जोरदार तेजी आवेगी। १२ मई के शाम से १४ तक में चांदी तेज अवश्य होगी। १५ मई के दोपहर से १७ की दोपहर तक चांदी मंदी रहेगी।

ज्येष्ठ—२२मई से २६ मई तक मे चांदी पर घटाबढ़ी होती रहेगी। २८ मई से २९ मई तक में हमारा ध्यान चांदी पर जोरदार मंदी का है और २९ मई की चांदी की मंदी अवश्य फलेगी। ६ जून की चांदी की मंदी फलेगी। ७ जून मे चांदी पर जोरदार घटाबढ़ी होगी। ध्यान रखें ११ जून की दोपहर से १३ जून तक में चांदी पर अच्छी मंदी आवेगी।

आषाढ़—२१ जून से २३ जून तक मे चांदी पर तेजी जरूर आवेगी। २५ जून से २७ तक में चांदी पर मंदी जोरदार आवेगी। ५ जौलाई की दोपहर बाद चांदी पर जोरदार तेजी आवेगी। ८ जौलाई की शाम से १० तक मे चांदी पर मंदी अवश्य आवेगी। ध्यान रखें १६ जौलाई से १८ तक मे चांदी पर जोरदार मंदी आवेगी। चांदी की मंदी का अच्छा चांस है।

श्रावण—१९ जौलाई से २२ तक मे चांदी पर तेजी घटाबढ़ी से अवश्य आवेगी। २७ जौलाई से ३० तक मे चांदी पर तेजी ही आवेगी। ३० की तेजी फलेगी। ३ अगस्त की तेजी फलेगी। ५ से ८ अगस्त में चांदी मंदी होगी। ध्यान रखें १० से १२ अगस्त में चांदी पर तेजी जोरदार आवेगी। १६ अगस्त की तेजी फलेगी।

भाद्रपद—२० अगस्त की शाम को जोरदार मंदी चांदी पर आवेगी। २३ से २६ अगस्त तक मे चांदी पर तेजी घटाबढ़ी से जरूर आवेगी। २७ अगस्त की शाम से २९ तक चांदी मंदी जरूर होगी। ३० अगस्त की चांदी की तेजी फलेगी। २ सितम्बर से ४ तक में चांदी पर मंदी अवश्य आवेगी। १० सितम्बर से १२ तक में चांदी पर जोरदार घटाबढ़ी होगी। १३ व १४ सितम्बर में चांदी पर जोरदार तेजी आवेगी।

आश्विन– १६ सितम्बर चांदी मंदी १८ की तेजी फलेगी। ध्यान रखें १९ सितम्बर की शाम से भी २३ तक में चांदी पर तेजी जोरदार आवेगी। घटाबढ़ी से तेजी का प्रभाव अवश्य रहेगा। २६ सितम्बर से २८ तक में भी चांदी पर तेजी का प्रभाव रहेगा। २८ सितम्बर की शाम से १ अक्टूबर की दोपहर तक चांदी पर मंदी का प्रभाव घटाबढ़ी से रहेगा। ४ व ५ अक्टूबर में चांदी तेज रहेगी। ध्यान रखें ८ अक्टूबर से ११ तक में भी चांदी पर तेजी जोरदार आवेगी।

कार्तिक:– १६ अक्टूबर की शाम से २० तक में चांदी पर तेजी जोरदार का ध्यान है। २३ अक्टूबर की शाम से २५ तक में भी चांदी पर तेजी आवेगी। ४ नवम्बर से ६ तक में भी चांदी पर जोरदार तेजी आवेगी। ७ से १० तक में चांदी पर जोरदार घटाबढ़ी होगी।

मार्गशीर्ष:– १४ व १५ नवम्बर चांदी तेजी। १६ नवम्बर की दोपहर से १९ तक में चांदी पर मंदी घटाबढ़ी से जरूर आवेगी। ध्यान रखें २ दिसम्बर से ४ तक में चांदी पर तेजी जरूर आवेगी लेकिन २ दिसम्बर की तेजी फलेगी। ३ की मंदी है ४ की तेजी फलेगी। वैसे ३ की शाम से ४ तक में चांदी तेज रहेगी। ४ दिसम्बर की शाम से ७ तक में हमारा ध्यान चांदी पर घटाबढ़ी से मंदी का है। ९ दिसम्बर से १२ तक में चांदी पर जोरदार घटाबढ़ी होगी।

पौष– १५ दिसम्बर की शाम से १ महिने तक घटाबढ़ी से चांदी पर हमारा ध्यान तेजी का है। २० दिसम्बर की शाम से २२ तक में चांदी पर मंदी जरूर आवेगी। ध्यान रखें २३ दिसम्बर से २६ तक में हमारा ध्यान चांदी पर तेजी जोरदार का है। २९ दिसम्बर ३१ तक में भी चांदी तेज रहेगी। ३ व ४ जनवरी में चांदी पर मंदी आवेगी। ९ से १० जनवरी (१९९० ई०) चांदी तेज रहेगी।

माघ:– ११ जनवरी से १६ तक मंदी। १७ जनवरी की तेजी फलेगी। २१ जनवरी की मंदी फलेगी। २३ जनवरी में चांदी पर जोरदार तेजी आवेगी [illegible] और २६ जनवरी में भी चांदी पर तेजी जरूर आवेगी। २७ की चांदी की तेजी भी फलेगी। २८ से ३१ जनवरी तक में चांदी पर घटाबढ़ी से मंदी का प्रभाव रहेगा। ध्यान रखें ६ व ७ फरवरी में चांदी पर तेजी जोरदार आवेगी।

फाल्गुन:– १० व ११ फरवरी में चांदी तेज रहेगी। १२ फरवरी की शाम से १४ तक में चांदी पर घटाबढ़ी से मंदी आवेगी। १५ फरवरी से १९ तक में चांदी पर हमारा ध्यान तेजी का है। २२ से २४ में तेजी जोरदार आवेगी। २ मार्च से ६ तक में चांदी पर जोरदार घटाबढ़ी रहेगी। ७ मार्च से ९ तक में चांदी पर मंदी जोरदार आवेगी।

चैत्र कृष्णपक्ष:– १२ व १३ मार्च में चांदी पर हमारा ध्यान मंदी का है। १७ मार्च की शाम को चांदी पर मंदी आवश्य आवेगी। १८ मार्च को भी चांदी पर मंदी दोपहर से अवश्य आवेगी। २१ मार्च की शाम से २३ तक मे चांदी पर तेजी जोरदार आवेगी

॥ इति शुभम् ॥

सूचना :– श्रीमान् व्यापारी महानुभावों को सूचित किया जाता है कि उपरोक्त चांदी की तेजी मंदी के अचूक चास सं० २०४६ वि० (१९८९ व ९० ई०) के हमने ज्योतिक अनुभवी ग्रन्थों व ग्रहगोचरों के द्वारा कठोर परिश्रम करके लिखे हैं। गत वर्षों की भांति इस वर्ष के हमारे व्यापार भविष्य से आपको अति लाभ होगा। श्रीमान् जी व्यापार रूख भी देखते रहें। लाभ-हानि के स्वामी व्यापारी ही होंगे। वैसे हमारे भविष्य से आपको गारन्टी से लाभ होगा। विस्तृत विवरण के लिए सं० २०४६ विक्रमी १९८९ व ९० ई० की हमारे व्यापार भविष्य की पुस्तक **दीक्षित व्यापार दर्शन** प्राप्त कर लें। इस पुस्तक में समस्त व्यापारिक वस्तुओं के अचूक चास दैनिक व लम्बी लाइनों मे प्रकाशित किये गये है। पुस्तक का मूल्य डाक व्यय समेत १४/- रु० चौदह रूपये है। वी० पी० से पुस्तक नही भेजी जावेगी।

पता :

पं० नरोत्तमदेव दीक्षित, ज्योतिषी, मोहल्ला दिल्ली वाला, हाथरस (उत्तरप्रदेश) पिन - २०४१०१



संवत् २०४६ का व्यापारिक भविष्यफल

लेखक : श्री रामावतार गुप्ता मु० पो० - खोरी, जिला-महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) पिन–१२३१०१ ।

चैत्र शुक्ल पक्ष : संवत् के आरम्भ काल में गल्ला आदि अन्य वस्तुओं में जनरल लाईन मन्दी की रहेगी। सुदी पंचमी को रोहिणी, सुदी सप्तमी को आर्द्रा, सुदी नवमी को पुष्य नक्षत्र होने से प्रत्येक रस पदार्थों जैसे : घी, गुड़, मिश्री, बतासा चीनी आदि के भावों मे तेजी की लाइन बनेगी। ता० १३।१४ अप्रैल २ दिनों के अन्तर्गत या शीघ्र ही चांदी में अच्छी मन्दी का धमाका आ सकता है। मन्दी होने से स्टाक करें। सुदी १० शनिवारी मघा नक्षत्र से युक्त है। अनाज, दलहन, धातुएं आदि में मन्दी आ सकती है। राई का स्टाक आगे लाभकारी रहेगा। सुदी १३ मिथुने भौम : तिलहन बाजार में जोरदार घटाबढ़ी चल सकती है। मन्दी होने से स्टाक करके आगे बेचें। पूर्णमासी की वृद्धि जौ, गेहूँ, चावल, मटर, मोठ, उड़द, गुवार, गुड़ आदि में एक सप्ताह के अन्दर अच्छी मन्दी आ सकती है।

बैशाख मास : बदी ३ को शनि वक्री हो रहा है। गेहूँ, मूंग, घी, हल्दी, जीरा आदि किराना सामान में तेजी कारक है। प्राय हर एक व्यापारिक वस्तुओं के भाव धीरे-धीरे तेजी की तरफ अग्रसर होंगे। ता० २६ अप्रैल : यदि आज आकाश बादलों से ढका रहे तो गर्जे या बरसे तो अनाज का स्टाक करें। भादव में बेचने से लाभ होगा। बदी ८ आर्द्रा का मंगल रूई, बारदाना, गुड़, तिलहन पदार्थ सरसों आदि में २० दिन के अन्तर्गत अच्छी तेजी आयेगी। पहले मन्दी में स्टाक करें। बदी ११ योग का क्षय घी, तेल तेज करेगा। बदी १३ रोहिणी बुध : तिल, शेयर्स, रूई, बारदाना के भाव अच्छी लिमिट से बढ़ेंगे। बदी १४ गुरुवारी होने से धान्य की पैदावार श्रेष्ठ होगी। सुदी एकम वृषे शुक्र: अनाज तेज होगा। एवम् तीन सप्ताह तक घटाबढ़ी से शेयर्स के भाव में वृद्दि होगी। व्यापारी अनाज तथा शैयर्स खरीदने से भावों में वृद्धि होगी। व्यापारी अनाज तथा शैयर्स खरीदने से लाभ उठा सकते है। शुक्ल पंचमी का क्षय तेजी कारक लिखा है :

"पड़वा पाचै, चतुर्दशी, शुक्ल पक्ष में तीन ।
बढ़ने पर मन्दी करै, तेजी हो जब छीन ॥

इस योग के अनुसार पक्ष में जनरल लाईन तेज रहेगी। शनिवारी अष्टमी अशुभ कारक है। लिखा है :

"बैसाखी शुक्ला अष्टमी शनिवारी इक संग ।
जल सूखै, दु:खै प्रजा मन्त्री मण्डल भंग" ॥

इसके अनुसार जल का शोषण जनता में दुख एवम् किसी राज्य का मन्त्री मण्डल भंग हो सकता है। सुदी ९ वृष संक्राति ३० मुहूर्ती होने से अन्नादि रसादि के भाव उचे-नीचे चलते सम होंगे। यहाँ वृष राशि में चार ग्रहो बुध–शुक्र–सूर्य–गुरू का राशि योग से वर्षा खूब होती है। अथवा युद्ध होता है। सुदी १३ दो दिन घी चावल की जनरल लाईन मंदी की रहेगी। शनिवारी पूर्णिमा तेजी कारक है। व्यापारिक वस्तुओं मे एक तेजी का उछाला आयेगा। यदि आज आकाश मे बादल बिजली या वर्षा हो या चन्द्रमा पर कुण्ड़ल (घेरा) हो तो समस्त धान्य कपास, मूंग आदि में तेजी आयेगी।

ज्येष्ठ:–बदी ४ रोहिणी का सूर्य ८-१० दिन के अन्तंगत रूई में अवश्य एक तेजी का उछाला आयेगा। चांदी मन्दी होगी। वृषे ५ मृगे शुक्र: फसलों में नुकशान के साथ-साथ बाजार का रूख तेजी की तरफ ले जायेगा बदी ९ अस्त गुरु घी, तेल, गुड़, चांदी, सरसो, गेहूँ अनाज आदि में एक सप्ताह में मन्दी का उछाला आयेगा। फिर तेजी की लाईन बनायेगा। बदी ११ रेवती नक्षत्र युक्त होने से खण्ड वृष्टि का आदेश देती है। योग का क्षय घी, तेल, तेज। बदी १३ पूर्व में बुधोदय सोना, चांदी, गहूं आदि मे तेजी तथा अति वर्षा कारक है। भारत वर्ष में व्यापक वर्षा होगी। परन्तु शनिवारी अमावस्या वर्षा में रूकावट पैदा करेगी।

सुदी दोज को आर्द्रा होने से यदि आज वर्षा होतो जल का शोषण होता है। एवम् यदि आज वर्षा हो जाय तो आगे अन्न में भारी तेजी की उम्मीद हो जायेगी। सुदी ३ कर्के मगल अन्न शेयर्स बारदाना आदि में तेजी कारक है। रूई में अच्छी मन्दी का उछाला आ सकता है। सावधान । सुदी ११ मिथुन सक्रान्ति १५ मुहूर्ती होने से अन्नादि रसादि पदार्थों में तेजी कारक है। संक्रान्ति समय चन्द्रमा का निवास वायु मण्डल में होने से वायु का वेग बढ़ेगा। उपद्रव झगड़े फिसाद से जनता भयभीत रहेगी। सुदी १२ विशाखा युक्त होने से प्राय: व्यापारिक वस्तुओं में एक मंदी का उछाला आयेगा। सोमवारी पूर्णिमा को मूल नक्षत्र होने से वर्ष श्रेष्ठ माना गया है। अनाज के भावों में मन्दी की प्रधानता रहेगी। वर्षा भी अनुकूल होगी। जनता को शुभफल की प्राप्ति होगी।

आषाढ़:–आषाढ़ बदी तीज श्रवण युक्त होने से अन्न संग्रह करने की राय देता है। हर मन्दी के झटकों मे खरीद कर आगे बेचें। गुरु का उदय चांदी मन्दी मोती रत्न आदि तेज रहेंगे। बदी ५ कर्क राशि में मंगल–शुक्र का राशि योग चांदी रूई में विशेष

तेजी कारक माना गया है। अतः चांदी का बाजार रूख देखकर काम करें बारदाना, शेयर्स के भी भावों में वृद्धि होगी। बदी ८ पुष्य शुक्र सोना, लाख, चमड़ा, गुड़ आदि में मन्दी का जोश भर जायेगा। बदी १० मृगे बुध गेहूँ, तिल, सरसों आदि में एक सप्ताह के अन्दर मन्दी आयेगी। मूंगफली के भाव भी गिरेंगे। बदी १२ योग का क्षय घी तेल आदि में एक तेजी का उछाला आयेगा। बदी १३ मिथुने गुरु भयकारक शासन में उपद्रव वर्षा में रूकावट, पश्चिमोत्तर देशों में अकाल सोना, चांदी, ताम्बा, सुपारी, सरसों, मूंगफली, अलसी आदि में अचानक तेजी चलेगी। परन्तु सरसों अलसी में मन्दी भी चल सकती है। बाजार रूख देखें। गेहू आदि तिल का स्टाक तीन महीने बाद बेचने पर लाभकारी रहेगा। सोमवती अमावस्या प्रत्येक व्यापारिक वस्तुओं में मन्दी का प्रभाव तीन दिन पहले से दिखायेगी। आर्द्रा युक्त होने, उत्तम फसल अच्छी वर्षा का संकेत देती है। सुदी ४ पूर्वी बुधास्त घी के भाव मन्दी की तरफ झुक जायेंगे। सोना, चांदी में घटा बढ़ी से तेजी। ता० ११ जुलाई से १४ जुलाई को साढ़े दस बजे तक क्रमशः चित्रा, स्वाती, विशाखा नक्षत्र है। यदि उन दिनों में किसी भी दिन वर्षा न हो तो आगे दुर्भिक्ष का लक्षण समझ कर अनाज का संग्रह करना चाहिए। कर्क की संक्रान्ति १५ मुहूर्ती से अन्न रसादि पदार्थों में तेजी कारक है। सुदी १४ कर्के बुध सोना, चांदी, बिनौला, मूंगफली, सरसों, गुड़, तेल आदि में अच्छी तेजी या मन्दी चलेगी। बाजार रूख देखें। आषाढ़ी पूर्णिमा को वायु परीक्षा अवश्य करनी चाहिए। क्योंकि इसका शुभ अशुभ फल बिल्कुल सटीक निकलता है।

श्रावण मास:—बदी एकम् बुधवारी 'प्रति पत्सर्द मासेषु बुधे दुर्भिक्ष कारिणी' के अनुसार इस पक्ष में सभी खाद्य पदार्थों अनाज, दलहन पदार्थों मसाले, शाक, सब्जी में जनरल लाईन तेज रहेगी। सिंह शुक्र वर्षा में रूकावट पैदा करेगा।

"सावन में हो सिंह पर मघी जू शुक्र सवार ।
वर्षा नाशे मूल से अथवा मेह अपार" ॥ (भविष्य भारती से)

बदी छट – सिंहे मंगल, रूई, सोने के भाव में जबरदस्त उलट फेर करेगा। लाल वर्ण की वस्तुओं के भाव अच्छी लिमिट से बढ़ेंगे। आश्लेषा बुध गुजरात महाराष्ट्र आदि में भारी वर्षा कारक है। बदी १० कृत्तिका युक्त है। यदि आज वर्षा होतो सारे चौमासे अच्छी वर्षा होगी। फसल भी अच्छी होगी। बदी एकादशी रोहिणी युक्त होने से संवत् श्रेष्ठ होगा। अनाज के भावों में मन्दी दिखाई देने लगेगी। बदी १३ बुधोदय सोना, चांदी, रूई आदि में पिछली तेजी का रंग उतरना शुरू हो जायेगा। मतलब मन्दी होगी। राजस्थान में वर्षा होगी। मंगलवारी अमावस्या पुष्य नक्षत्र युक्त होने से वर्षा में रूकावट अशुभकारी है। यहाँ मंगल–बुध–शुक्र का सिंह राशि में मीटिंग होगी। व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का बिल पास होगा। ता० २ अगस्त को वर्षा हो तो अति उत्तम है। इसके प्रभाव से फसल उत्तम होगी। शेयर्स के भाव बढ़ेंगे। ता० ४ अगस्त हिजरी सन् १४१० का शुभारंभ होगा। गुर्रा का मालिक शुक्र है। जो कि शुभ कारक है। लाख, चपड़ा चमड़ा, चना, गुड़, चावल की जनरल लाईन तेज रहेगी। श्रावण शुक्ला पंचमी एवम् छठ दोनों दिन वर्षा हो एवम् दक्षिणी पवन चले निश्चय दुर्भिक्षकारी योग समझें। गल्ला के व्यापारी इस योग के लक्षण देखकर अच्छा लाभ उठा सकते है। इस सम्बन्ध में पूरी जानकारी हमारी पुस्तक भविष्य फल प्रकाश सन् १९८८ ई० में दी गई है। सुदी ६ मंगल अस्त हो रहा है। मन्दी को स्पोर्ट करेगा। कई व्यापारिक वस्तुओं में अच्छी मन्दी भी आ सकती है। श्रावण में मंगल अस्त युद्ध कारक माना गया है अतः कहीं-कहीं युद्ध भी छिड़ सकता है। सुदी १० कन्या का शुक्र चावल में विशेष तेजी भी आ सकती है। लाल की लकड़ी में भयंकर तेजी आयेगी। ता १४ सिंहे संक्रान्ति लाल वस्तुओं गुड़, सरसों, तिलहन आदि में तेजीकारक है। यहाँ सूर्य–बुध–मंगल–केतू का राशि योग तेजी को बढ़ावा देगा। अच्छी तेजी भी आ सकती है। परन्तु तेजी की उम्मीद कम है। क्योंकि मंगल अस्त तेजी में रूकावट पैदा करेगा। फिर भी बाजार का रूख देखें। लाभ-हानि में हमारी जिम्मेदारी नहीं होगी।

भाद्रपद मास : बदी ४ कन्या बुध सोना, खाँड़, शक्कर आदि में तेजी की लम्बी लाईन बन सकती है। चांदी मन्दी। नि १३ के अन्दर जो वस्तुऐं मंदी हो खरीदें। जो तेज हो बेचना लाभकाकरी रहेगा। बदि ११ तीन दिन के अन्तर्गत रूई, सूत, गेहूँ, चना आदि में एक तेजी का उछाला आयेगा। यहाँ बुध–शुक्र एक नक्षत्र एक राशि पर योग करेंगे। जो कि वर्षाकारक है। परन्तु इस दौरान सूर्य के आगे मंगल चल रहा है, जो कि वर्षा में रूकावट पैदा करेगा। बदी १४ पू० फा० सूर्य सोना, चांदी, चावल, गेहूँ, जीरा, घी आदि सरसों के भावों में तेजी का रूख रहेगा। गुरुवारी अमावस्या सुख सुभिक्ष कारक है। सुदी १ चित्रा का सूर्य रूई में मन्दी का ध्यान जमा ले। गुजरात, बम्बई दक्षिणी भारत में वर्षा का योग है। परन्तु खण्ड वृष्टि होगी। सुदी २ आज का चन्द दर्शन एक मास के अन्तर्गत किसी राज्य का मन्त्री मण्डल भंग करेगी। अनाज सस्ता हो तो संग्रह करें। नवम्बर में लाभकारी रहेगा। सुदी ७ अनुराधा युक्त है। यदि आज वर्षा न हो तो आगे भी वर्षा की आशा नहीं करनी चाहिए। तुला शुक्र रूई, सोना, चांदी में मन्दी की तरफ झुकाव रहेगा। सुदी ९ कन्या मंगल लाल रंग की वस्तुओं, लाल मिर्च, गुड़ आदि में तेजी का संचार करेगा। रूई में डेढ़ दो महिने मन्दी चल सकती है। सुदी १० शनि मार्गी होने से बाजार की लाईन पलट जायेगी।

"वक्र चाल चलते हुये शनि मार्गी हो जाय ।
चालू फल बाजार का एक दम पलटा खाय ॥"

सरसों, तोरिया भी मंदी आयेगी। रूई के व्यापारियों शीघ्र रूई बेचें। शुक्रवारी पूर्णिमा पू० भा० युक्त होने से सुख सुभिक्ष मन्दी कारक है। ता १५ सित० बादल बिजली चमकती हो तो अनाज शीघ्र बेच देना चाहिए। आकाश निर्मल रहे तो अनाज का स्टाक लाभकारी रहेगा।

आश्विन मास : बदी एकम् कन्या संक्रान्ति ४५ मुहूर्ती अन्न मन्दा करेगी। बदी ४ पश्चिमी बुधास्त वर्षाकारक है। सोना, चांदी, रूई बारदाना मन्दा होगा। बदी ९ मकरे राहू जो, जना, गेहूँ, कांसी, सूत, रेशम आदि में तीन मास मन्दी की लाईन रहकर भारी तेजी आयेगी। कौंसी (एक प्रकार की धातु) रेशम, सूत का संग्रह चौथे महीने बेचने से अति लाभकारी रहेगा। पूरी जानकारी के लिए भविष्यफल प्रकाश सन् १९८८ ई० का मंगा कर लाभ उठायें। बदी ११ हस्ते भौम फसलों को हानि घी, गुड़, नमक आदि में तेजी कारक है। सुदी एकम् शनिवारी अन्न में भारी तेजी या मन्दी करेगी। तेज होने से बेचें। मन्दा होने से खरीदें। बाजार का रूख देखें। सुदी २ वृषे शुक्र अनाज, रूई के भावों में मंदी कारक शेयर्स चांदी मन्दी होकर तेज। सुदी ३ मार्गी बुध घटा-बढ़ी कारक है। सुपारी नारीयल में तेजी चलेगी। सुदी ५ अनुराधा शुक्र दही, दूध, घी, चावल, चांदी, गुड़ आदि में मन्दी कारक। सुदी १० चित्रा शुक्र गेहूँ आदि अन्न, सोना, चांदी, अरहर, रूई, के भावों में बढ़ोत्तरी होगी। सुदी ११ आर्द्रा के चौथे चरण का गुरु २५ दिन के अन्तर्गत सर्वरस पदार्थ गेहूँ सुगन्धित पदार्थ मंदी करेगी। सुदी १४ का क्षय तीन दिन के अन्दर रूई, चांदी में एक तेजी का उछाला। शनिवारी पूर्णिमा तेजी कारक है। यदि आज वर्षा हो जाये तो वस्तु मात्र में तेजी का रूख हो जायेगा।

कार्तिक मास : बदी एकम् चित्रा मंगल छूत की बिमारियों में जनता परेशान रहेगी। चावल चना धातुऐं तेज। यदि आज सूर्य के कुण्डल (घेरा) दिखाई दे तो तिल, तेल, तिलहन का व्यापार नहीं करना चाहिए। अन्यथा हानि के सिवाय कुछ नहीं मिलेगा। बदी ३ तुला संक्रान्ति ३० मुहूर्ती होने से गल्ला मार्किट ऊँचा नीचा चलता सम रहेगा। बदी ७ अन्न में तेजी कारक है। आगे तेजी होगी। बदी ८ पूर्वी बुधास्त रूई, सोना, चांदी के भावों में घटा बढ़ी से अर्थात् प्रथम करीब एक सप्ताह तेजी। फिर मन्दी। फिर तेजी। इस प्रकार लाईन चलेगी। घी मंदा। बदी ११ तुला का मंगल सभी प्रकार का अन्न तेज करेगा। गेहूँ, गुड़, घी में भारी तेजी आ सकती है। चांदी मंदी। बदी १२ तुला राशि में सूर्य–मंगल–बुध का राशि योग कष्ट तथा तेजी कारक है। रविवारी दीपावली अशुभकारी है। आगे वर्षा काल में ५० दिन वर्षा होने की घोषणा करती है। अन्न में अच्छी तेजीकारक है। सुदी एकम् धनु शुक्र अन्न में तेजी कारक है परन्तु गुरु साथ में वक्री हो रहा है। सुभिक्षकारक है। दो सप्ताह के अन्दर प्रायः व्यापारिक वस्तुओं में मंदी का संचार होगा। मंदी की लम्बी लाईन भी बन सकती है। परन्तु किराने का सामान में तेजी आयेगी। ता० १ नवम्बर से ४ नवम्बर तक तेल, तिलहन, रूई, चांदी, बारदाना, गेहूँ आदि में घटाबढ़ी से जनरल लाईन मन्दी की रहेगी। स्वाति का मंगल दो या तीन सप्ताह के अन्दर रूई में अच्छी तेजी का उछाला लायेगा। सुदी ८ विशाखा बुध अनाज का भाव कई प्रान्तों में मंदा। परन्तु कहीं-कहीं तेज भी रहेगा। दो सप्ताह के अन्दर दक्षिणी प्रान्तों में उपद्रव, सरसों, राई, हींग, शेयर्स के भावों में तेजी का संचार होगा। ता० ९ नवम्बर के दिन आकाश में बादल छाये रहे तो नोट करें कि आगे आषाढ़ में उत्तम वर्षा होगी। सुदी १३ पू० फा० शुक्र तिलहन पदार्थ, मूंग, नमक, उरद आदि दिन १३ में मंदी का धमाका होगा। ता० १३ नव० सोमवारी पूर्णिमा भरणी युक्त है :

"अश्विनी भरणी वर बने, पूनम से संयोग ।
जुवार, गुवार, मकई, मटर महंगाई अरु रोग" ॥ (भविष्य भारती)

इस योग के अनुसार सावनी फसल का सब माल तेज होगा। यदि आज आकाश में बादल हो तो रूई में अवश्य तेजी आयेगी।

मार्ग शीर्ष : बदी एकम् वृश्चिके बुध -समस्त तेलिये पदार्थ घी के मार्किट तेज करेगा। बदी ४ वृश्चिके संक्रान्ति १५ मुहूर्ती होने से अन्न रस पदार्थ तेज। परन्तु संक्रान्ति समय चन्द निवास वारुण मण्डल में होने के कारण सुभिक्ष मन्दी कारक है इस एक महीने के अन्दर अर्थात् अगली संक्रान्ति तक जो माल वस्तुऐं मन्दी हो। खरीदें वह वस्तुऐं छठे महीने बाद बेचने से लाभ होगा। बदी ७ अनुराधा सूर्य दो सप्ताह के अन्दर सब प्रकार के शेयर्स अनाज गुड़ आदि के भाव बढ़ेंगे। बदी ८ मंगलोदय अच्छी वर्षा कारक है। सोना, चांदी, अरण्डी, बिनौला, बारदाना आदि में तेजी कारक। बदी १२ विशाखा मंगल कपास, गेहूँ, रूई आदि का भाव बढ़ने वाला है। सावधानी द्वादशी की वृद्धि रूई में मंदी का झटका देगी। मंगलवारी अमावस्या तेजी कारक है सुदी दो आज का चन्द दर्शन अनाज में घटाबढ़ी करेगा। तिलहन, गुड़, अफीम मन्दे। सुदी ३ मकरे शुक्र फसलों में नुकसान होकर अन्न के भावों में तेजी का संचार होगा। शेयर्स तेज। सुदी ५ धनु बुध सोना, चांदी, रूई, बिनौला आदि के भावों में एक सप्ताह के अन्तर्गत तेजी होगी। सुदी ११ वृश्चिके मंगल सभी द्रव्यो पदार्थों में तेजी। सोना चांदी में तेजी का अवसर न चुकिये। सुदी एकादशी शनिवारी होने से प्रजा में दु:ख तथा किसी राज्य का मन्त्री मण्डल भी भंग हो सकता है। त्रियोदशी का क्षय घी तेल में तेजी कारक। शनिवारी पूर्णिमा अनाज घी में तेजी को स्पोर्ट करेगी। ता १२ यदि आज आकाश निर्मल रहे तो अर्थात बादल आदि न हो तो अन्न का संग्रह करें। आगे उत्तम लाभ मिलेगा।

पौष मास : कृष्ण प्रतिपदा बुधवारी होने से इस पक्ष मे सभी खाद्य पदार्थ नमक, घी, अनाज, दाले, शाक, सब्जी आदि मे जनरल लाइन तेज रहेगी। बदी ३ धनु संक्रान्ति सुभिक्षकारी है तिलहन पदार्थों मे तेजी का रूख। अनाज के भावो मे कोई खास अन्तर नही होगा। यदि आज वर्षा हो तो नोट करें कि गेहूँ, चने की पैदावार उत्तम होगी। ता० २० दि० वर्षा हो तो या आधी रात को मेघ गर्जना करे तो आगे चार्तुमासमें अच्छी वर्षा होगी। नोट करें। बदी ९ अस्त शनि मन्दीकारक है शेयर्स बारदाना, मन्दा होगा। मन्दी वस्तुऐं संग्रह करें। विशेष जानकारी के लिए भविष्यफल मंगा कर लाभ उठायें। जिसमें वर्ष भर के खुलासा तौर पर जानकारी दी गई है। बदी १३ मकरे बुध शुभ-अशुभ दोनों प्रकार के फल होंगे। सौदा बाजार दुतर्फा चलकर समान रहे। शुक्र बक्री होने से बाजार की लाईन बदलने मे सहायक है। भारत के दक्षिणी पूर्वी प्रान्तों मे हड़ताल, दंगे आदि की संभावना रहेगी। अमावस्या को मूल नक्षत्र बहुत ही सुभिक्ष कारक है। सुदी एकम् आज का चन्द्र दर्शन सरसो, तिल, चावल, उड़द, चना, घी, किराने की वस्तुऐं मटर, मूंग आदि के प्रथम मन्दी का झटका आकर तेजी होगी।

सुदी पंचमी ज्येष्ठा का मंगल १२ दिन के अन्तर्गत चांदी मन्दी। रूई मे घटाबढ़ी पश्चिमी बुधास्त व्यापार में अल्प लाभ वर्षा कारक है। सुदी ८ बक्री धनुषि बुध एक सप्ताह के अन्दर सोना, चांदी, रूई, बिनौला आदि मे तेजी आयेगी। सुदी ९ रेवती युक्त होने से रस पदार्थ गुड़, खाँड आदि में मन्दी कारक है। सुदी एकादशी कृतिका युक्त होने से लाल वर्ण की वस्तुओ का स्टाक आगे लाभकारी रहेगा। विशेष जानकारी हमारी पुस्तक मंगा कर पढ़ें। सुदी १३ मंगलवारी घी संग्रह करने की राय देती है। यदि आज आकाश मे बादल खाली मंडरा कर चले जायें। वर्षा न हो तो गेहूँ का संग्रह करना लाभपद है। पौष की पूर्णिमा को चन्द्र दिखाई न दे एवम् उत्तर दक्षिण मे बिजली चमके मेघ युक्त आकाश हो तो नोट करें कि श्रावण की अमावस्या के दिन महा वर्षा होगी।

माघ मास:—बदी दोयज शनिवारी घोर, दुर्भिक्ष युद्धकारी है। लिखा है –

"दुतिया तृतीया माघ बदी शुक्र शनैश्चर वार।
तो पृथ्वी पर युद्ध से बहे रक्त की धार॥" (भविष्य भारती)

बदी ३ मकर सक्रान्ति धान्यों में मंडी तथा तैलिये पदार्थों मे तेजी कारक है। रविवारी होने से युद्ध कारक मानी गई है। पिछली सक्रान्ति कर्क की शनिवारी थी लिखा है –

"कर्क मकर दो बहिने है, बैठे एक ही बार।
कै विरजा को पतिमरै कै पडै अचिन्तो कार॥" (भविष्य भरती)

बदी छट पश्चिमे शुक्रास्त उत्तर मे सुभिक्ष मारवाड मे अन्न तेजी हर वस्तुओं मे तेजी कारक। देवगणो मे होने से युद्ध तेजी कारक। दिल्ली राज्य मे परिवर्तन एक सप्ताह चांदी की जनरल लाईन तेज। बदी ९ मूल धनुधि भौम सर्वमूल पदार्थ हल्दी, प्याज, आलू आदि धातुऐं तिलहन, बारदाना में तेजी का संचार होगा। रूई में भारी तेजी आ सकती है। परन्तु मार्गी बुध अच्छी घटाबढ़ी करेगा। अनाज एक सप्ताह के अर्न्तगत तेज। बदी एकादशी शुक्तोदय पूर्व में पंचवर्ण रेशमी वस्त्रों में भारी तेजी। किसी श्रेष्ठ पुरुष की मृत्यु होना सम्भव है। उपद्रव तेजी कारक आपसी मतभेद पैदा होंगे। एक सप्ताह में उदयास्त होने से उपद्रव शान्ति कारक है। लिखा है –

"उदय अस्त सप्ताह में अगर शुक्र हो जायें।
प्रांत अशान्त प्रजा रहे, दःख नितान्त अधिकाय॥" (भविष्य भारती)

बदी १२ शनि उदय –लहसून, मूंग, चावल आदि में तेजी कारक है। उसका प्रभाव ५ दिन बाद बाजार पर पड़ेगा। मनुष्यो मे कोई विशेष रोग महामारी फैल सकती है। शेयर्स भी तेज होंगे। रूई मन्दी सुदी एकम् शनिवारी घोर दुर्भिक्षकारी है। इसके प्रभाव से आगे वर्षाकाल में वर्षा की कमी रहेगी। सुदी २ का चन्द्र दर्शन दलहन तेज करेगा। सुदी ९ उ० षा० बुध : फसल खूब फैले फुले। इसके प्रभाव से आगे मन्दा रहेगा। सुदी १३ मकरे बुध शुभ अशुभ दोनों प्रकार के फल देगा। सौदा बाजार दुतर्फा चलकर समान रहे। रूई के भावों में तेजी का संचार होगा। शुक्रवारी पूर्णिमा को शुक्र मार्गी होने से एक सप्ताह तक सोना चांदी तिलहन आदि वस्तुओं मे जनरल लाईन मंदी रहेगी। रूई में घटाबढ़ी रहेगी। खग्रास चन्द्रग्रहण रात को हो रहा है। शुक्रवारी चन्द्र ग्रहण सुभिक्ष कारक है। कर्क राशि तथा अश्लेषा नक्षत्र वालो के पीड़ा कारक है। इन्हें ग्रहण नहीं देखना चाहिए। मूंग का स्टाक पांच मास पश्चात् लाभकारी रहेगा। रूई मंदी हो तो स्टाक करें। तीन मास पश्चात् लाभ होगा विशेष जानकारी के लिये हमारी पुस्तक भविष्य-फल प्रकाश सन १९८९ ई० का मंगा कर लाभ उठाये।

फाल्गुन मास:—बदी २ उ० षा० का शनि अनाज आदि में तेजी कारक है। व्यापारिक वस्तुये संग्रह करने पर पहले तीसरे छठे मास मे दुगुना तिगुना तक लाभ हो सकता है। ता० १२ फरवरी को वर्षा हो तो लाल वर्ण की वस्तुयें संग्रह करें। पांच मास पश्चात अच्छा लाभ होगा। बदी छट चित्रा नक्षत्र उपरान्त स्वाती युक्त होने से तीन मास तक मिले जुले फल होंगे। वृद्धि होने से रूई में तेजी। घी, चावल मंदा होगा। बदी दसमी मकरे शुक्र फसलों को प्राकृतिक कारणो से हानि होगी। इसके प्रभाव से अन्न आदि में तेजी का संचार होगा। शेयर्स भी तेज सर्दी बढ़ेगी बदी १३ मार्गी गुरु दिन १३ में सोना चांदी सरसों बिनौला आदि अन्य वस्तुओं मे एक तेजी का उछाला ५ दिन पहले से मारते है। फिर बाजार मन्दा रूई में अच्छी मंदी भी आ सकती है। घी के भाव तेज। रविवारी अमावस्या घी अन्य वस्तुऐ तेज करेगी। रूई चांदी में मंदी कारक है। सुदी एकम् पू० भा० युक्त होने से इस पक्ष मे अनाज आदि कि जनरल लाईन तेजी की रहेगी। रूई में अचानक तेजी या मन्दी चलेगी। चन्द्र-दर्शन एक मास के अन्दर किसी राज्य का मन्त्री मण्डल भंग तथा अन्न में तेजी होगी सुदी ४ चतुर्थी का क्षय –

"किसी मास में तीज या सुदी चौथ घट जाय।
ग्राहक मांगे मूंग घी, विक्रेता नट जाय॥" (भविष्य भारती से)

इस योग के प्रभाव से मूंग घी आदि में अच्छी तेजी आयेगी। सुदी सप्तमी, कृतिका युक्त होने से आगे भादव मास की अमावस्या के दिन प्राय: सभी जगह व्यापक वर्षा होगी। नोट करें। मकरे मंगल तिलहन पदार्थों में तेजी एवम् धान्य में मंदी कारक है। सोना चांदी में अच्छी घटा बढ़ी। वैधृति–रोहिणी के संयोग से शीघ्र ही वस्तु मात्र में भारी मन्दी का झटका। सुदी ८ रोहिणी युक्त होने से अन्न में अच्छी आयेगी। लिखा है –

"कुम मीन के अन्तरे अष्टमी रोहिणी जोय।
दुगनी तिगुनी चोगुनी तेजी अन्न में होय॥"

इस योग के प्रभाव से प्रथम मे एक दम मन्दी आती है फिर बाजार तेज होता जाता है। इस प्रकार अच्छी तेजी होती है। रविवारी पुर्णिमा पू० फा० युक्त होने से सुभिक्षकारी है। हर धातु वस्तु अनाज के भाव गिरते नजर आयेंगे।

चैत्रमास कृष्णपक्ष : बदी ३ मीने संक्रान्ति ३० मुहूर्ती होने से अन्न रस पदार्थों का भाव ऊंचा नीचा चलता सम रहेगा। यदि आज वर्षा हो तो तेल घी कपास आदि का संग्रह पांच महीने बाद बेचने पर लाभकारी रहेगा। बदी पंचमी श्रावणे भौम: सोना, चांदी में अच्छी तेजी आयेगी। लिखा है :

"श्रवण नखत जब कभी हो कोई ग्रह क्रूर।
अन्न भाव महंगा रहैं गेहूं तेज जरूर॥" (भविष्य मारती)

दिन २० के अन्तर्गत गेहूँ आदि में भारी तेजी आ सकती है। यहाँ से मीन राशि में सूर्य बुध का योग शेयर्स मन्दे करेगा। खास कर कपड़ो मिलो के शेयर्स। बदी छट योग की वृद्धि घी, तेल आदि में एक मन्दी का झटका आयेगा। बदी १० उ० षा० २ मकरे शनि-सोना, चांदी, तांबा, सूत, कपास, धान्य के भाव तेज हो। रोग से प्रजा का नाश। शासन कर्त्ताओं को चिन्ता। पृथ्वी पर अन्न की पैदावार कम। लोहा, तेल, पदार्थ मन्दा। सोमवती अमावस्या हर एक वस्तुओ में मन्दी का झटका लायेगी। दो दिन पहले से भी इसका प्रभाव देखा गया है।

नोट : यह लेख ग्रहो की चाल, राशि परिवर्तन उदयास्त बक्री मार्गी तिथिवार योग नक्षत्र आदि अन्य महत्वपूर्ण योगों के आधार पर लिखा गया है। होना या न होना ईश्वराधीन है। अत: बाजार का रूख देखते हुये काम करना चाहिये। लाभ-हानि में हमारी जिम्मेबारी नही होगी।

आवश्यक सूचना : हमारे लेखों से लाभान्वित होने पर अनेक व्यापारियों ने प्रशंसा पत्र भेजे है। हम उनके बहुत आभारी है। यह लेख बहुत ही संक्षेप में लिखा गया है। पूरा व्योरा साल भर का जानने के लिये हमारी सुप्रसिद्ध व्यापार सम्बन्धी पुस्तक भविष्य-फल प्रकाश सन् १९८९ ई० का मंगा कर लाभ उठावें। इस पुस्तक में साल भर की दैनिक तेजी मंदी, तेजी मंदी के पीरीयड, स्टाक करने का उचित मौका माल खरीदने एवम् बेचने की लाभकारी तारीखे, अनाज तिलहन किराना धातुयें शेयर्स, गुड़, खाण्ड, रस पदार्थ, घी, बारदाना, शाक-सब्जी आदि के वार्षिक स्पेशल चांस पुस्तक में अलग से दिये गए है। इसके इलावा शकुन विचार अन्य ज्योतिषियों के स्पेशल लेख भविष्य वाणियों तथा उपयोगी जानकारी दी गई है। पिछले वर्ष से अधिक नवीन जानकारी अधिक पृष्ठ संख्या मूल्य वही ४५) पैतालीस रुपया डाक-खर्च ५ रु० अलग। हमारी दूसरी पुस्तक भविष्य भारती अर्धकाण्ड सम्बन्धि अदभुत कविता पुस्तक है। जिसमें तेजी मन्दी के फारमूले कविता के रूप में अर्थ सहित है। यह लेख इसी पुस्तक के आधार पर दिया गया है। हमेशा काम आने वाली पुस्तक है। मूल्य २५ रु०। दोनों पुस्तक एक साथ मंगाने पर डाक खर्च फ्री। पूरा मूल्य अग्रिम आने पर। एक पुस्तक के लिये १० रु० का एम० ओ० आना अति आवश्यक है। अपना पता साफ साफ पिन कोड सहित लिखें। मनिआर्डर भेजने का पता :
हमारा पता :

प्रकाश पुस्तकालय, पो. औ. - खोरी, जिला - महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) पिन- १२३१०१

वार्षिक व्यापार-दिग्दर्शन संवत् २०४६

लेखक-ज्योतिषरत्न पं. राजाराम जैन फर्जन्य एवं अर्घकाण्ड-वाचस्पति
११९ कटरा स्ट्रीट मैनपुरी सिटी (उ. प्र.) पिन-२०४००१

संवत् २०४६ का प्रारम्भ गुरुवार को होने से संवत् २०२९-२०४०-४३ की भांति वर्षेश गुरु होगा। आज ६ अप्रैल ८९ गुरुवार को रेवती नक्षत्र होने से वर्षाकाल में मेतुकी वर्षा अधिक होगी। अन्न, तिलहन, दलहन के संग्रह से भाद्रपद मास में अच्छा लाभ होगा। संवत् २०४० में पहले हल्दी में तेजी फिर मन्दा चला था। संवत् २०४३ में वर्षा अधिक हुई थी किन्तु यहां गुरु के साथ मन्त्री भी गुरु ही बना है। अस्तु—जो राजा हो वर्ष का, वही बने दिवान। क्षय परजा की जानिये आधा संवत् जान ॥ संवत् २०२९ में वर्षा ओलापात, वृषे गुरु के प्रभाव से यहा देशी घी, तेल, अन्नादि इस शुक्ल पक्ष में तेज हो सकेंगे। शुक्ल १ प्रथम नवदुर्गा के क्षय से पिछले साल की भांति धर्मप्राण जनता को कष्ट होगा। तारीख ७ को शुक्रवार (१५ मुहूर्ता) दक्षिण श्रृंगी मोटा चन्द्रोदय रूई, पाट, रेशम, चांदी के साथ खाद्य वस्तुयें भी तेज करेगा। तारीख ८ को १०।११ बजे सवेरे मृगे भौम से सभी वस्तुयें तेज। ता. ९ को २।१९ बजे मेषे शीघ्री बुध हर्षल वक्री मेषांशे गुरु बुध: ता. १२ को शी. मेषे शुक्र मेषांशे गुरु-बुध बादल वर्षा बुध—शुक्र यहाँ ता. २३ तक चांदी, गुड़, खॉड में मन्दा तिलहन-दलहन तेज सम्भव। ता. १३ की रात को मेषे अर्क: गत संक्रांति से तीसरे बार चौथे नक्षत्र में (३० मुहूर्ती) बैठी अवस्था में गुरुवार को अग्निमण्डल में बुध—शुक्र (दोनों शीघ्री) से युक्त होकर आवेगी। यथा फल-**सूर्यधिष्ण्ये च पूर्वस्मात् यदि वारे तृतीय के संक्रांति-निशि सूर्यस्य सुभिक्षं स्यात्तदोत्तमम्** ।अर्थात् तीसरे बार चौथे नक्षत्र में रात को कभी संक्राति अच्छा-मन्दा लावेगी।। गुरुवारी मेष संक्राति होने से मंत्री गुरु १६ विस्वासंवत् करेगा। ता. १४ को नेपच्यून वक्री मेष नवांश में गुरु—शुक्र-बुध ता. १४ तक बादल वर्षा वायुवेग इस वर्ष की रामनवमी को वर्षा होने की आशा है। ता. १५ को भरणी बुध से मन्दा। ता. १६ को सायं पश्चिमोदयी बुध से बादल वर्षा वायुवेग, ओलापात मौसम में परिवर्तन वस्तुओं में पिछले चलते रूख को ता. १७ को एकदम वदल देगा। ता. १३ को प्रात: मिथुन भौम होकर शनि से प्रतियोग होने से कहीं-कहीं वर्षा, ओलापात तो कहीं सूखा। सभी वस्तुओं के भावों में भयानक तेजी या मन्दा चल पड़ेगा। सावधान गेहूं में तेजी सम्भव है। शुक्ला १४ की वृद्धि तथा चैत्री पूर्णिमा शुभवारी चित्रा संयोगी सभी खाद्य-वस्तुओं में मन्दी का संकेत कर रही है। गुरु वृष राशि में शीघ्री गति आ जाने से रूई, पाट, रेशम, काली मिर्च में तेजी का अवसर देगा। रूख देखकर व्यापार करें।

उत्तर भारतीय वैशाख मास : २२ अप्रैल की रात में कृति बुध भरे शुक्र से बादल वर्षाफल सभी वस्तुओं में मन्दी। ता. २३ को शनि वक्री, गुरु शीघ्री से ऊपज की वस्तुओं का धीरे-धीरे स्टाक करने से अच्छा लाभ होने की आशा है। ता. २५ को वृषे बुध होकर गुरु-बुध योग से सोना, चांदी, सर्वधातु रूई, पाट, रेशम, काली मिर्च में तेजी आने का योग बना है। बादल वर्षा का योग भी होगा। ता. २९ की रात को रौद्रे भौम सभी वस्तुओं में तेजीकारक है। ता ३० को पश्चिमोदयी शुक्र (ऋजुद्वार-छठा मण्डल शुभ राक्षसगण और देव वीथि अशुभ) बादल वर्षा, वायुवेग सभी वस्तुओं में जोरदार कोई चाल निकलेगी। कृष्ण ११ (१ मई) को उ. प्र., हरियाणा, पंजाब, राजस्थान,, म. प्र. में जहां भी बादलों का मण्डान होगा, वहां आगे उपज श्रेष्ठ होगी। कृष्ण १३ गुरुवारी भी समर्थक है। २ मई को कृष्ण १२ को क्षय से मन्दा। ता ३० को रात में रोहि. बुध कृति. शुक्र से कल तक सभी वस्तुयें मन्दी। ता. ५ कृष्ण ३० बुधवारी तो श्रेष्ठ भरणी नक्षत्र शुभ नहीं होगा। आज ही शुक्र-सूर्य-चन्द योग से तेजी छठे मास में मन्दा,सातवें मास जौ, अन्न, मूंग वस्त्रादि तेज होंगे।

गुजराती वैशाख मास : में ५ शनिवार से घी, तेल, बाजरा, कपास, तेज गुजरात में महोत्पात् किन्तु यहा शुक्ल पक्ष में तीन शनिवार से सभी वस्तुयें मन्दी होगी। ता. ६ को शी. वृषे शुक्र होकर शी. गुरु+बुध+शुक्र योग से कहीं-कहीं बादल वर्षा, वायुवेग शेयर्स चांदी में तेजी भी संभव, गुड़, खॉड़, तिलहन, दलहन में मन्दी का दौर चल सकेगा। ता. ७ मई को अक्षय तृतीया रविवारी रोहिणी संयोगी भी समर्थक है। ता. ९ शुक्ल ५ मंगलवारी के क्षय से चांदी के साथ सभी वस्तुयें तेज। ता. ११ शुक्ल ७ की वृद्धि से मन्दा। ता. ११ को कृति. रवि में २४ मई तक जहा भी बादल वर्षा बूंदाबांदी होगी तो उस क्षेत्र में उ. प्र., हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, म.प्र. में आगामी वर्षाकाल भी श्रेष्ठ रहेगा। ता. १२ को सायं वक्री बुध ता. १४ को सायं अस्त से बादल वर्षा वायुवेग हो तो श्रेष्ठ वस्तुओं के चलते भावों में ता. १३-१५ को जोरदार परिवर्तन या मन्दा होगा। ता. १४ को रोहि. शुक्र से कल मन्दा शुक्ला १० रविवार से चौथे मास में चांदी, सोना, तेज, सफेद वस्तुयें कार्तिक मास तक तेज रूई, कपास, शक्कर में तेजी होगी। आज ही शाम को वृषे रविवारात् ४ नक्षत्रात् ४ (३० मुहूर्ती) गुरु+शुक्र से युक्त होकर आगे तेजी मन्दीकारक है। ता. १५ को रोहि. शुक्र से सभी वस्तु यें मन्दी, ता. १८-१९ शुक्ला १३-१४ शुभवारी होना श्रेष्ठ है। वैशाखी पूर्णिमा को विशाखा नक्षत्र भी श्रेष्ठ है किन्तु धनिष्ठायां ४ चरणे राहु से तेजी (भौम-शनि की पारस्परिक दृष्टि) महोत्पातिक है। १९ अप्रैल को वस्तुओं का नया रूख जोर से बदलेगा। गुड़, खॉड़ मेंमन्दा हो सकेगा। कैमीकल्स में भयानक तेजी या मन्दा होगा।

विशेष जानकारी जबाबी कार्ड से भेंट पूछकर प्राप्त कर सकते है।

उत्तर भारतीय ज्येष्ठ मास : में ५ रविवार से घोर गर्मी आगे कहीं अति वृष्टि तो कहीं अनावृष्टि से उपज का नाश, रोगोपद्रव होगा। इस मास में उपर्युक्त क्षेत्रों में जिस तिथि से जिस तिथि तक पूर्वी वायु चले कि जिससे लौकी की उपज बहुत हो तो उस क्षेत्र में श्रावण में वर्षा भी उसी तिथि तक न हो सकेगी।२१ मई को पुनर्वसौ भौम से प्राय: सभी वस्तुएँ में तेज ता० २५ को रोहे रवि में ७ जून तक उपर्युक्त क्षेत्रों में सूर्य का तपना घोर गर्मी जहाँ जिस क्षेत्र में होगी वहाँ आगामी वर्षाकाल भी श्रेष्ठ रहेगा। गर्जना वर्षा होने से आगे अतिवृष्टि अनावृष्टि से उपज का धुर नाश होगा। सभी वस्तुये तेज किन्तु मृगे शुक्र से मन्दा शेयर्स मन्दे भी होंगे। ता० ३० को पश्चिमोत्तर गुरु से भारत के उत्तर दक्षिण में (केरल) में मानसून दो दिन पहले से ही उठता दिखाई देगा। उत्तरी पश्चिमी मध्य हिन्द में जहाँ भी वर्षा होगी वहाँ उपज का नाश होगा। गेहूँ, गुड़, खाँड़, तिलहन-दलहन सोना, चाँदी मन्दे, रूई पाट शेयर्स तेज, वर्षा होने पर खाद्य वस्तुयें तेज। संवत् २०३४ में मन्दा चला था। आज ही कृष्णा १० मंगलवारी से आगे कहीं कहीं वर्षानाश सायं शी० मिथुने शुक्र होकर (मंगल+शुक्र (शनि से प्रतियोग) ६ जून भी शाम तक गुड़ खाँड रूई पाट, रेशम, काली मिर्च, तेल, तिलहन, दलहन तेज शेयर्स सोना, चाँदी मन्दे होंगे। २ जून को कृष्णा १४ का क्षय, साथ ही पूर्वोदयी बुध से दक्षिणी हिन्द में हैदराबाद, आन्ध्र, गुन्टूर, मद्रास में घोर वर्षा आँधी तूफान का जोर सभी वस्तुयें तेज, आज बना रूख ता० ९ को बड़े ही जोर शोर से बदलेगा। ता० ३ को शी० मृगे गुरु देशी घी, तेल, चावल तूअर लाख, सोना, चाँदी सर्वधातु मे मन्दा। दक्षिणी हिन्द में वर्षा भी होगी किन्तु यह अमावस शनिवारी होने से आगे ५-६ मास में घोर दुर्भिक्ष सुपरीक्षित कुयोग है।

गुजराती ज्येष्ठ मास : शुक्ला १ रविवारी ४ जून से हवा का जोर किन्तु मृगशिरा संयोगी होने से आगे वर्षा काल श्रेष्ठ रहेगा। इस मास में ५ रविवार से अन्न तिलहन तेजी अशुभ फल भी होंगे। १५ दिन बाद सार्वत्रिक वर्षा होगी। ता० ५ को रौद्रे शुक्र से आंधी तूफान के साथ कौशल, कलिंग, सिन्धु, गुजरात, कच्छ की नदियों में बाढ़ आवेगी। सोना, चाँदी, रूई, पाट, तिलहन-दलहन नमक मन्दे होंगे। आज ही १।३८ बजे मार्गी बुध से इधर वायुवेग दक्षिणी हिन्द मे घोर वर्षा, वस्तुओं की चलता रूख बदलेगा। सायं सोमवार १५ मुहूर्ता चन्द्रोदय सफेद वस्तुओं के साथ अन्नादि भी तेज करेगा। रूई, पाट, अलसी, गेहूँ, चाँदी, लौकी, कद्दू, काफी तारेई, शक्कर, सूत, कपड़ा मन्दा करेगा। ता० ६ की शाम को कर्के भौम सूर्य से आगे होने से दक्षिणी हिन्द में होती हुई वर्षा पर रोक लगा देगा तो कहीं महान वर्षा होगी। सावधान। रूई पाट ग्वार तिलहन-दलहन शेयर्स सोना, चाँदी मन्दे, गुड़, खांड, काली मिर्च, जौ, चावल, ज्वार, बाजरा, मक्का तेज होंगे। ता० ८ को मृगे रवि में २१ जून तक उत्तरी पश्चिमी मध्य हिन्द मे आँधी तूफान होना आगे वर्षाकाल उत्तम होने की आशा होती है। आज सोने, चाँदी के साथ सभी वस्तुयें तेज होंगी। ता० ९ को शुक्ल ६ शुक्रवारी से १ मास में रूई, पाट, रेशम मन्दे होंगे। ता० १२ को पुष्य भौम से काश्मीर के नेता व जनता को कष्ट चाँदी, मन्दी सोना के साथ सभी वस्तु तेज तस्करों की धर पकड़ जोर-शोर से होगी। घी चावल सरसों तेल तेज होंगे। ता० १३ शुक्ला १० की वृद्धि से सभी वस्तुयें मन्दी, ता० १५ बुधवार की पिछली रात में श्री सूर्यदेव वारान् ४ नक्षत्रात् ५ (१५ मुहूर्ता) में शुक्र से युक्त शनि से प्रतियोग करते हुए वायुमण्डल के नक्षत्र धातु संज्ञक में मिथुन राशिस्थ होते ही शीघ्र ही गुरु का बुध से भी योग चलेगा जो कहीं वायु वेग को दक्षिणी हिन्द में वर्षा रूई, पाट, रेशम, चाँदी तेजी आवेगा। ता० १६ को बरार खान देश हैदराबाद, म० प्र०, वर्धा अमरावती में वर्षा पुनर्वसौ शी० शुक्र के प्रभाव से सभी वस्तुओं में मन्दा होगा। ता० १८ को रोहे बुध से प्राय: सभी वस्तुयें मन्दी होंगी। ता० १९ ज्येष्ठी पुर्णिमा सोमवारी मूल संयोगी से वर्षा की कमी से परेशान करेगी। सूर्य से आगे मंगल भी समर्थक बनेगा।

उत्तर भारतीय आषाढ़ मास :—में ५ मंगलवार होने से ग्रीष्म का भीषण प्रकोप मूंग, गुड़, तेज। २२ जून को बुधवार की रात में ५ बजे रौद्रे रवि उ० षा० नक्षत्र में शुक्र से युत शनि से प्रतियोग करके आर्द्रा नक्षत्र (मीन लग्न) में प्रवेश होगा। वार नक्षत्र मीन लग्न जातीय राशि प्रवेश काल रात्रि में शुभ किन्तु सूर्य पर शनि की दृष्टि (प्रतियोग) महा नेष्ट है। गुरुवार की रात को ता० २३ में बुध से युक्त होकर दिन नक्षत्र श्रवण वृष राशि में गुरु उदय होने से कहीं-कहीं बादल वर्षा, वायु वेग। ३० मई को वस्तुओं के बने रूख को बड़े ही जोर-शोर से बदल देगा। ता० २४ कृष्णा ६ के क्षय से मन्दी। गेहूँ के संग्रह से कार्तिक में लाभ होगा। आज ही कर्क शुक्र होकर भौम+शुक्र योग से शेयर्स, तिलहन, चांदी मन्दे गुड़, खांड में तेजी होगी। आज ही सवेरे शनि-नेपच्यून की युति से अक्रांति तेज सभी वस्तुएँ मन्दी होगी। ता० २६ कृष्णा अष्टमी (बीहरा अष्टमी) सोमवारी उ० प्र०, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, म० प्र० में जहाँ भी आज दिन-रात सूर्य-चंद बादल रहे, सूर्य बादलों में ही रहे वर्षा हो, वहाँ आगामी वर्षा काल भी श्रेष्ठ रहेगा। परीक्षित है। इन्हीं क्षेत्रों में नीम के वृक्षों पर निंबौली अधिक आवे, वर्षा होते ही पकी हुई ढेरी टपक पड़े। बरगद की जटाओं में लाल सफेद अंकुर बहुत निकले तो उस क्षेत्र में वर्षा समयानुकूल होने से उपज भी श्रेष्ठ होती है। सुपरीक्षित सुयोग है ता० २७ को पुष्ये शुक्र से नामी तस्करों की धर-पकड़ होगी। गुड़, कपड़ा, लाख, कपूर, सोना, चांदी, सर्वधातु, देशी घी, चावल, सरसों, तिलहन मन्द होंगे। ता० २८ की रात को मृगे बुध से सोना-चांदी के साथ अन्य सभी वस्तुएँ भी मन्दी होगी। ता० २९ को उपर्युक्त क्षेत्रों में जहाँ भी घनघोर गर्जना बिना वर्षा के होगी तो वहाँ उपज का नाश होगा। ता० २ को मिथुने गुरु रात को मिथुने बुधि से बादल वर्षा वायुवेग (शनि से प्रतियोग महान् वर्षा कारक) रूई, पाट, रेशम, काली मिर्च मन्दे सोना-चांदी सर्वधातु तेज। १ जुलाई को कृष्णा १३ को रोहिणी नक्षत्र से हवा का जोर होगा जो दुर्भिक्ष करेगा। ता० २ कृष्णा ३० रविवारी से धान्योत्पत्ति अधिक होगी किन्तु तत्काल तेजी होगी। मिथुने गुरु के प्रभाव से सोना-चांदी, घी, तेल, सूत, आगे मार्गशीर्ष मास में खरीदने से आगे वैशाख मास में लाभ होगा। ता० ३ को सार्पे भौम से गुड़, खांड, गेहूँ, चावल तिलहन-दलहन शेयर्स तेज रूई, पाट चांदी मन्दे होंगे। किन्तु बुध-गुरु की अंशात्मक युति से घोर वर्षा सभी वस्तुएँ तेज होंगी।

गुजराती आषाढ़ मास : बुधवार की रात को १२ बजे बाद पुनर्वसौ रवि से बादल वर्षा, सभी वस्तुएँ तेज, गुड़, खांड में मन्दा भी हो सकेगा। आज ही रौद्रे बुध से बादल वर्षा सभी वस्तुएँ मन्दी, ता० ७ को पूर्वास्तो बुध से बादल वर्षा और मन्दा रात में सार्पे शुक्र से इलैक्शनें दुष्प्रभाव से मृत्यु संख्या ता० २० तक बढ़ेगी। चांदी तेल सोना के साथ अन्य सभी वस्तुएँ मन्दी होगी। ता० १०।११।१२ (शुक्ला ७।८।९) को जिस क्षेत्र में बादल वर्षा होगी, वहाँ आगामी वर्षा काल भी श्रेष्ठ रहेगा। ता० १२ शुक्ला ९ भड्डली नवमी बुधवारी अशुभ है किन्तु जहाँ सूर्य-चन्द्रमा बादलों में रहेंगे, वहाँ आगामी वर्षा काल भी श्रेष्ठ रहेगा। रात को पुनर्वसौ बुध से ग्वार, मटर, तूअर तेज अन्य वस्तुएँ मन्दी होगी। ता० १३ को भौम शुक्र युति से गुड़, खाड के साथ सभी वस्तुएँ तेज। ता० १४ को देव शयनी एकादशी होना बहुत शुभ है जहाँ बादल वर्षा सहित रहे तो वहाँ का कहना ही क्या है? ता० १६ को श्री सूर्यदेव गत संक्रान्ति से वारान् ५ नक्षत्रात् ४ (१५ मुहूर्ता ऊभी अवस्था) में मंगल-शुक्र से युक्त माहेन्द्र मण्डल के नक्षत्र में रविवार में कर्क राशिस्थ होंगे। फलतः सभी वस्तुओं में तेजी का दौर चले आश्चर्य नहीं। ता० १७ को ३।४० बजे शी० कर्क बुध होकर मंगल+शुक्र+सूर्य+शी० बुध योग (चतुर्ग्रही) से कहीं-कहीं घोर वर्षा सभी वस्तुओं में जोरदार तेजी या मन्दा होगा। ता० १८ मंगलवार को गुरु पूर्णिमा को १ चरण पू० षा०, ३ चरण उ० षा० नक्षत्र शुभ नहीं किन्तु आज दिन-रात सूर्य-चन्द्रमा बादलों में ही रहे। उ० प्र०, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, म०प्र० में जहाँ भी बूँदाबांदी के साथ पूर्वोत्तर कोण पूर्व वा उत्तर की वायु चले तो वहाँ आगामी वर्षाकाल महाश्रेष्ठ। पश्चिम अथवा पश्चिमोत्तर की वायु चले तो खण्ड वृष्टि अन्य दिशाओं की वर्षा नाशक होती है। सूर्यास्तकाल में विचार करना आवश्यक है। इस दिन चतुर किसान ज्योतिषी व्यापारी वायु परीक्षण करते हैं। इस दिन अधिक वर्षा हो तो आगे सभी खाद्य वस्तुओं में अच्छी तेजी आती है।

उत्तर भारतीय श्रावण मास : पश्चिमी वायु उपर्युक्त क्षेत्रों में चलने से अच्छी वर्षा होती है। ५ बुधवार होने से संवत् २० २३।३९।४२ की भांति सोना चांदी सर्वधातु के साथ सभी वस्तुओं में जोरदार तेजी आने की आशा है। कृष्णा १ बुधवार (१९ जुलाई) में पुष्ये बुध से वर्षा विशेष, सोना चांदी के साथ सभी वस्तुओं में अस्थायी मन्दी करेगा। ता० १९ को ही सिंहे शुक्र होकर केतु+शुक्र योग से ग्वार, मटर, अरहर, सोना तेज, चांदी के साथ गुड़, खाँड व अन्य वस्तुएँ मन्दी होगी। बाजार का रूख देखकर ही व्यापार करें। ता० २० को पुष्ये रवि से सोना चांदी के साथ अन्य वस्तुएँ भी तेज किन्तु रूई, पाट, रेशम, सूत में मन्दा चलेगा। यहीं से पञ्चक नक्षत्र (५ दिन) में वर्षा जहाँ भी होगी, वहीं वर्षाकाल भी ठीक ही रहेगा। ता० २४ को सायं सिंहे भौम होकर केतु+शुक्र+भौम योग से सोना चांदी सर्वधातु तेज, तिलहन, गुड़ खाँड में मन्दी सम्भव है। अथवा वस्तुओं का चलता रूख बड़े जोर से बदलेगा। सिंहे भौम का फल **यदा अंगार को सिंहः सदा अंगार वर्षी मही**— भयंकर गर्मी होने की आशंका है। ता० २५ को तिथि क्षय से कहीं-कहीं दुर्भिक्ष आज ही सायं ४ बजे सार्पे बुध से गुजरात सौराष्ट्र में महान् वर्षा प्रायः सभी वस्तुएँ मन्दी सार्वत्रिक वर्षा होना श्रेष्ठ जिधर खुला रहेगा वहाँ तेजी होगी। ता० २८ को कृष्णा ११ को रोहिणी नक्षत्र सुभिक्षकारक है। ता ३० को पूफायां शुक्र से कुरुक्षेत्र, मारवाड़, पंजाब, बिहार में कहीं-कहीं घोर वर्षा जल प्रलय। सभी वस्तुओं को मन्दा करेगा। ता० ३० को सायं पश्चिमोदयी बुध से बादल वर्षा वायुवेग, वस्तुओं के चलते रूख में कल भयानक परिवर्तन होगा।१ अगस्त कृष्णा ३० हरियाली अमावस मंगलवारी पुष्य नक्षत्र संयोगी से कहीं-कहीं [illegible] भी रहेगा। आज ही सायं ४।२९ बजे शीघ्री सिंहे बुध होकर केतु+शुक्र+भौम+बुध से गुड़ खाँड में तेजी सम्भव। रात को शी० रौद्रे गुरु का शनि से प्रतियोग होने से कहीं-कहीं घोर वर्षा जल प्रलय तो कहीं सूखा भी रखेगा। जो तेजी का ही प्रमुख कारण होगा। रूई, पाट, रेशम मन्दे होंगे।

गुजराती श्रावण मास : शुक्ला १ बुधवारी (२ अगस्त) साथ ही शुक्ल पक्ष में ३ बुधवार से सभी वस्तुएँ में तेजी की आशा है। आज ही रात को सार्पे रवि से कहीं-कहीं वर्षा, सभी वस्तुओं में तेज, ता० ३ को सिंहे चन्द्र होकर केतु+शुक्र+भौम+बुध+चन्द (पञ्चग्रही) से कहीं-कहीं जलप्रलय तो कहीं सूखा भी रहेगा। ता० ५ से ता० १० तक मघायां भौम काल में कन्या-तुला के चन्द्रमा से सभी खाद्य वस्तुओं में मन्दा भी सम्भव ता० ८ को तुलसी जयन्ती में जहाँ दिन-रात वर्षा हो तो वहाँ उपज श्रेष्ठ होगी। ता० ९ को बुधाष्टमी व १ बजे पूफायां बुध से सभी वस्तुएँ मन्दी। आज ही पश्चिमास्तो भौम से भयानक बादल वर्षा, वायु वेग, गुड़, खाँड, पाट, हल्दी, काली मिर्च तेज, तिलहन सोना चांदी, रूई, कपास मन्दे, अथवा ता० ४ को बना रूख बड़े जोर-शोर से बदल भी सकेगा। ता० १० को उफायां शुक्र से कुरुक्षेत्र, मारवाड़, पंजाब में भयानक वर्षा उड़द, मूंग, चावल, तिलहन, सोना, चांदी में मन्दा, ता० १३ को शनि दृष्ट कन्यायां शुक्र से चावल विशेष तेज, सोना चांदी तिलहन-दलहन तेज, गुड़, खाँड में अकल्पित तेजी-मन्दा चल पड़ेगा। ता० १५ को पूफाया भौम से सभी वस्तुओं में तेजी, ता० १६ रात में ८।३२ बजे बुधवार को श्री सूर्यदेव गत संक्रान्ति से वारात् ४ नक्षत्रात् ५ (३० मुहूर्ता बैठी अवस्था) माहेन्द्र मण्डल के नक्षत्र में केतु+भौम+बुध से युक्त हो कर सिंह राशिस्थ होंगे। फलतः सभी खाद्य वस्तुओं में जोरदार तेजी-मन्दे का दौर चलेगा। किन्तु अर्घकाण्ड नियम से श्रावणी पूर्णिमा श्रवण संयोगी से (आज बादल रहना शुभ है) जो उपज को श्रेष्ठ बना देगी। रक्षाबन्धन ता० १७ को पञ्चकारम्भ से पहले ही ८ बजे तक कराना चाहिए। पञ्चक में वर्षा हो तो उपज श्रेष्ठ होती है।

उत्तर भारतीय भाद्रपद मास : ता० १७ अगस्त को कृष्णा १ का क्षय, मन्दी कारक, इस मास में पूर्वी वायु जितनी जोर से उपर्युक्त क्षेत्रों में जहाँ भी चलेगी तदनुसार उस क्षेत्र में वर्षा भी होती रहेगी। ता० १८ को २।५० बजे उफाया बुध (धनांशे गुरु-बुध काल तक बादल वर्षा)। ता० २१ को सूर्योदय से पहले कन्ये बुध होकर शनि दृष्ट शुक्र+बुध योग (मकरांशे गुरु-बुध कल तक बादल वर्षा) से भावों में जोरदार परिवर्तन यहीं से सिंह राशि में केतु+भौम+सूर्य योग सोना, गुड़, खाँड, तेल तेज, आज ही सवेरे हस्ते शुक्र से रूई, पाट, रेशम, सुगन्धित व खट्टे पदार्थ ईमली, नीबू मन्दे होंगे। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णव) गुरुवारी (थोड़ी घड़ी) की उपज की कमी-वेशी की धारणा पर तेजी-मन्दी उसी के अनुसार चलनी है। ता० ३० को हस्ते बुध से सभी वस्तुओं में मन्दी का झटका, ता० ३० को ही चतुर्ग्रही से वर्षा, सायं ४।३० बजे पूफायां रवि में १२ सितम्बर तक उपर्युक्त क्षेत्रों में जितनी जोर से पूर्वीवायु चलेगी, उसी के अनुसार वर्षा भी होती रहेगी। जीरा के साथ अन्य वस्तुएँ तेज होंगी। आज बुधवारी अमावस्या संयोगी युवतियों की मृत्यु, प्रायः सभी वस्तुएँ तेज करेगी। जिस वर्ष जिस क्षेत्र में मक्खी, मेंढकी की उत्पत्ति अधिक होने पर फूट कचरी उड़द, मूंग की उपज अधिक होती है।

गुजराती भाद्रपद मास में ५ शुक्रवार से दक्षिणी हिन्द में उपज श्रेष्ठ। शुक्ला १ को (१ सितम्बर) सायं चित्रे शुक्र से गुड़, खाँड, गेहूँ, चना, तुअर, (अरहर) ग्वार, लाख, चपड़ा, तिल, नारियल (खोपरा) तेज सोना, चांदी, रूई, पाट मन्दे, चन्द्रमा बादलों में रहेगा। श्रेष्ठ उपज का सूचक होगा। आज ही सायं शुक्रवार (४५ मुहूर्ता) उत्तरश्रृंगी चन्द्रोदय खाद्य वस्तुएँ मन्दी करेगा। ता० ४ को रात में उफायां भौम से सोना, चांदी, गुड़, खाँड, तिलहन-दलहन तेज किन्तु यदि आज से ता० ६ तक बादल वर्षा होगी तो उपज निश्चित रूप से श्रेष्ठ होगी। ता० ५ शुक्ला ५ स्वाती नक्षत्र संयोगी श्रेष्ठ है। यदि आज बादल वर्षा जहाँ भी होगी वहीं उपज भी श्रेष्ठ होगी। ४ मास बाद रूई में तेजी आवेगी। ता० ७ को (शुक्ला ७ अनुराधा संयोगी) वर्षा हो तो अधिक मन्दा खाद्य वस्तुओं में होगा। आज ही सवेरे गुरु दृष्ट तुले शुक्र से गेहूँ सोना, चांदी तिलहन मन्दे गुड़, खाँड तेज, ता०

९।१० को गुरु-शनि की अशात्मक प्रतियुति से सभी खाद्य वस्तुएं गुड, खांड के साथ मन्दी होगी। ता० १० को शनि दृष्ट शी० कन्या भौम से बादल-वर्षा प्रकोप सम्भव, यहीं से केतु+सूर्य योग से सोना, चांदी तेज रूई, पाट शेयर्स चाय, रेशम, तिलहन-दलहन में मन्दी सम्भव है। आज ही हर्षल मार्गी से वायदों से भयानक चाल निकलेगी। ता० ११ को १२।४३ बजे मार्गी शनि से बादल वर्षा वस्तुओं के चलते रूख में जोरदार परिवर्तन होगा। ता० १२ को वक्री बुध भी समर्थक है। ता० १२ की रात को स्वात्या शुक्र से गुड, खांड तेज गेहूं, तिलहन-दलहन, रूई, पाट, रेशम, सोना, चांदी मन्दे होंगे। आज से उफाया रवि में ता० २६ तक वर्षा हो तो उपज श्रेष्ठ, खुला रहे तो तेजी, वर्षा हो तो मन्दा होगा। ता० १५ को भाद्रपदी पूर्णिमा को पू० भा० नक्षत्र सुभिक्षकारी है।

उत्तर भारतीय आश्विन मास – में पूर्वोत्तर कोण की वायु से वर्षा तथा पश्चिम एवं दक्षिण पूर्व कोण की वायु से भी वर्षा होती है किन्तु आग्नेय (दक्षिण पूर्व कोण) की वायु से घोर गर्मी होते हुए भी वर्षा पूर्वोत क्षेत्रों में हो नहीं पाती। परीक्षित है। इस मास में ५ (शनिवार कृष्णा ९ शनिवारी १६ सितम्बर) से गुड, खांड, तिलहन, दलहन तेज होंगे। ता० १६ की रात को श्री सूर्यदेवगत सक्रान्ति से वारात् ४ नक्षत्रात् ५ (४५ मुहूर्ती) बुध+भौम से युक्त बुध+भौम+सूर्य) शनि की दसवीं दृष्टि से प्रभावित होकर कन्याराशिस्थ होंगे। फलतः सोना चांदी के साथ उपर्युक्त सभी ही वस्तुओं में आसमानी-सुलतानी तेजी मन्दे का दौर बड़े जोर-शोर से चलेगा तदनुसार व्यापार करें। ता० १८ कृष्णा ४ के क्षय से मन्दा ता० १९ को सवेरे पश्चिमास्ती बुध से बादल वर्षा वायुवेग १२ सितम्बर को वस्तुओं के बने रूख को बड़े जोर-शोर से बदल देगा। ता० २२ को १२।३५ बजे नेप्च्यून मार्गी भी वर्षा कारक वस्तुओं के भावों में काफी चढ़ाव-उतार दिखावेगा। ता० २३ की रात को मकरे राहु-कर्क केतु से ५ दिन या १३ दिन में सोना चांदी तिलहन-दलहन मन्दे होकर तेज देशी घी, अन्न, सूत कोरी, तांबा, पीतल, शेयर्स, गेहूं, पटसन, सूत, रेशमी कपड़ा संग्रह करने से दो तीन मास अथवा दूसरे तीसरे मास में काम होगा। इसके भोगकाल (डेढ़ वर्ष) में जब-जब मकर का चन्द्रमा आवेगा। रूई पाट में मन्दा आवेगा। रूई शेयर्स में इसी नक्षत्र में भी अच्छी तेजी आने का चान्स बनेगा। ता० २४ को २ बजे विशाखाया शुक्र से सभी वस्तु में मन्दी। ता० २५ को १।०८ बजे हस्त भौम से सभी-वस्तु में तिलहन-दलहन में अच्छी तेजी रूई पाट के साथ आ सकेगी। ता० २७ को हस्त रवि भी समर्थक है। ता० २९ को रात को सूर्य-भौम युति। ता० ३० को भौम-शनि के अशात्मक केन्द्र योग से महान दुष्प्रभाव अकल्पित तेजी मन्दे से व्यापारियों पर संकट आयेगा। कृष्णा ३ (पितर अमावस) शुक्रवारी/से वर्षा ५। ६ मास में सभी वस्तुओं में भयानक मन्दी आधे भाव तक किसी-किसी वस्तु के कर देगी।

गुजराती आश्विन मास : ३० सितम्बर शुक्ला १ शनिवारी (शुक्ल पक्ष में ३ शनिवार) सभी खाद्य वस्तुओं के स्टाक निकालने की सूचना है। यह योग सन् १९६२ में चीन के युद्ध से पहले २९ सितम्बर को बना था। १ अक्टूबर शुक्ला २ की वृद्धि से मन्दा, आज ही साथ पूर्वोदयी बुध (ता० ४ को मार्गी) से बादल वर्षा वायुवेग, सभी वस्तु में मन्दी अथवा वस्तुओं के चलते रूख को बड़े जोर-शोर से बदल देगा। ता० ३ को वृश्चिक के शुक्र से सोना, चांदी, तिलहन-दलहन गेहूं, गुड, खांड मन्दे। ता ६ को अनुभे शुक्र से सभी वस्तु में मन्दी ता० ९।५० को रूई, चांदी, शेयर मन्दा। ता १० को २।४७ बजे सभी वस्तुओं के घटे भावों को बढ़ा देगा। आज रात को कुम्भे चन्द तथा ता० १४ की रात मेष चन्द्र से शेयर्स में जोरदार तेजी सम्भव है। ता० १२ से ता० १५ तक मीनारी गुरु-बुध ... बादल वर्षा ता० १३ को शुक्ला १० के क्षय से तेजी, ता० १४ को १२ बजे हस्ते बुध से कल तक अनेक वस्तुयें मन्दी होंगी। अश्विनी पूर्णिमा शनिवारी रेवती संयोगी खोटे प्रभाव को अवश्य ही दिखावेगी।

उत्तर भारतीय कार्तिक मास : में ५ रविवार के संयोग से कोई महोत्पात् युद्ध नेताओं का पतन वा अवसान की आशंका है। कृष्णा १ रविवार (१५ अक्टूबर) को सूर्य-चन्द्र पर कुण्डल हो तो तिलहन-दलहन में अचानक ही भयानक तेजी आती है। आज ही रात को चित्र भौम से कल सभी वस्तुएं में तेजी ता० १७ को श्री सूर्य देव गत सक्रान्ति से वारात् ४ नक्षत्रात् ५ (३० मुहूर्ती) गुरु से सदृष्ट होकर सवेरे ८।२६ बजे (तुला लग्न में) तुला राशिस्थ होंगे। सोना, चांदी, सर्वधातु में तूफानी चाल। फलतः तिलहन-दलहन में आसमानी-सुलतानी मन्दी का श्री गणेश हो सकेगा। व्यापारी वर्ग, सावधान! ता० १८ को ज्येष्ठाया शुक्र से भी सभी वस्तुएँ मन्दी, ता० २२ को पूर्वास्ती बुध से बादल वर्षा वायुवेग वस्तुओं के पिछले चलते रूख में जोरदार परिवर्तन कर देगा। ता० २३ को चित्रे बुध से सभी वस्तुयें मन्दी, ता० २४ को स्वात्या रवि से सभी वस्तुयें तेजी, ता० २६ को गुरु दृष्ट शीघ्री तुले भौम से बादल वर्षा वायुवेग। ता० २७ को तुले बुध होकर गुरु दृष्ट सूर्य मंगल बुध योग से बादल वर्षा। वायुवेग वस्तुओं के भावों में अकल्पित तेजी मन्दा चल पड़ेगा। ता० २९ को रविवारी दिवाली वाले दिन प्रातः गुरु वक्री, इस दिन ३।१८ बजे शुक्र वक्री से बादल वर्षा वायुवेग से अनेक स्थानों में दिवाली व्यापारियों केलिये संकट पूर्ण होगी सभी वस्तुओं में मन्दी की आशंका है। रविवारी दिवाली स्वाती संयोगी होने से किसी नयी इमारत या पहाड़ गिरने से त्राहि-त्राहि होगी।

गुजराती कार्तिक मास सं २०४६: ३० अक्टूबर ८९ शुक्ला १ सोमवारी होने से अन्नादि के संग्रह से भाद्रपद शुक्ला से आश्विनी पूर्णिमा तक बेचने से लाभ होता है। आज ही २।४३ बजे धनुषि शुक्र होकर शीघ्री शनि+शुक्र योग के मिथुने गुरु से प्रतियोग होने से गुड, खाड़ के चलते रूख में पलटा, शेयर्स गुड अन्नादि तेज अथवा जोरदार कोई चाल निकलेगी। ता. ३१ को पिछली रात में स्वात्या बुध से सभी वस्तुएं मन्दी साथ ३० मुहूर्ती उत्तर श्रृंगी चन्द्रोदयकाल में सन्ध्या फूले अर्थात् लाल पीले बादल हो तो अगली ऊपज श्रेष्ठ होगी। ता. १ को सभी वस्तुएँ मंदी किन्तु स्वात्या भौम से तेजी होगी। २ नवम्बर शुक्ला ४ गुरूवारी से रूई, पाट, सूत, ऊन, रेशम में तेजी होगी। ता. ३ शुक्ला ५ शुक्रवारी साथ ही इसकी वृद्धि से गत वर्ष की भांति अविश्वसनियों को चुनौती है।–अन्यथा समय तो बता ही देगा। आगे शीतकाल में भी सभी खाद्य वस्तुओं में अच्छा मन्दा होने की आशा है। ता. ५ को मकर राहु+चन्द से शेयर्स चांदी में मन्दा ता. ६ को विशाखाया रवि से सभी वस्तुएँ तेज। ता. ६।७ को बादल चाल तो कहीं-कहीं वर्षा। शुक्ला ९ के क्षय से भी तेजी। ता. ८ को विशाखाया बुध से मन्दा ता. १० से गुरु वक्री शनि और शीघ्री आ जाने से सभी वस्तुएँ मंदी की लाइन में चलेगी। यह योग २४ फरवरी ९० तक चलेगा। ता. १२ को साय पूषाया शुक्र से कल सभी खाद्य वस्तुएं मन्दी। किन्तु ता. १३ को कार्तिकी पूर्णिमा भरणी संयोगी से उत्पात खड़ी फसल को कम कर देगी। दलहन २ दिन पहले से एकदम तेज होंगे।

उत्तर भारतीय मार्गशीर्ष मास : १४ नवम्बर को वृश्चिके बुध से तिलहन-दलहन मन्दे। साथ ही कृष्ण २ का क्षय तथा आज ही सवेरे नेपच्यून मार्गी एवं १२ बजे गुरु-शनि प्रतियुतिसे शेयर्स सोना, चांदी भी मन्दे होंगे। ता. १६ को सवेरे श्री सूर्यदेव वृश्चिक राशि में वरुणमण्डल के नक्षत्र में गुरुवार को बुध युक्त होकर बुध-सूर्य योग से दलहन मन्दे ११।४२ बजे अनुभे बुध भी समर्थक है। यहीं से गुरु दृष्ट तुले भौम से तिलहन-दलहन चांदी में मन्दा बादल चाल भी होगी। ता. १७ कृष्णा ५ शुक्रवारी से गुड, खाड़ में मन्दा, ता. १८ को २।३५ बजे से रात तक बादल चाल शीत वृद्धि, ता. १९ को अनुभे रवि (बुध-सूर्य का नक्षत्र योग ता. २४ तक) दलहन चांदी में मन्दा ता. **२० को पूर्वोदयी भौम से** बादल वर्षा वायु वेग शीतवृद्धि रूई, पाट, रेशम, ऊन, सोना, चांदी शेयर्स तेज, सभी खाद्य वस्तुयें मन्दी किन्तु ता. ११ को वस्तुओं का बना रूख भी बदल सकेगा। ता. २३ कृष्णा १२ की वृद्धि से चावल के साथ प्रायः सभी वस्तुयें आज तेज ता. २४ की शाम को विशाखा में मंगल शीघ्री गति का होने से सभी खाद्य वस्तुओं में तेजी (२।१० १९६३) ता. २५ को कृष्णा १३ को पहाड़ों पर बर्फ गिरे तो पृथ्वी धन-धान्य से पूर्ण होगी। ता. २७ को सवेरे उषाया शुक्र से प्रायः सभी वस्तुयें मन्दी, आज कृष्णा १४ तथा अमावस को जहाँ भी सूर्य-चन्द्र बादलों में रहेंगे तो वहां आगामी वर्षा काल भी श्रेष्ठ रहेगा किन्तु ता. २८ को अमावस मंगलवारी से यहीं तेजी आयेगी।

गुजराती मार्गशीर्ष मास : (शुक्ला १ से पौष कृष्णा ३० बुधवार तक) इस मास में पांच बुधवार से चांदी, कपास, देशी घी, तेल, गुड, खाड़, दलहन रस-कस मन्दे होंगे, किन्तु आलू, हल्दी, अदरख, सोंठ तेज होंगे। ३० नवम्बर से १० दिसम्बर तक मूल नक्षत्र से भरणी पर्यन्त जहाँ भी उ. प्र. हरियाणा, पंजाब व राजस्थान म. प्र. में बादल चाल हो तो वहां आगामी वर्षाकाल भी श्रेष्ठ रहता है। २९ नवम्बर से १ दिसम्बर तक अनेकानेक स्थानों में बादल चाल होने की आशा है। १ दिसम्बर को मकरे शुक्र होकर राहु-शुक्र, भौम से दृष्ट गुड, खाड़, तिलहन, दलहन, सरसों, अलसी, चावल, ज्वार, बाजरा, चना, गुड, खांड़ में तेजी या मन्दी जोर से निकलेगी। सोना मन्दा ता. २ को मकरे चन्द्र होकर राहु-चन्द्र योग ता. ४ तक रूई, पाट शेयर्स मन्दे, ता. २ की रात को ज्येष्ठाया रवि से सभी वस्तुएँ तेज। ता. ३ की शाम को धनुषि बुध होकर शीघ्री शनि+बुध (गुरु दृष्ट) कल सभी वस्तुओं में जोरदार चाल, ता. ४ को पश्चिमोदय बुध से बादल वर्षावायु वेग वस्तुओं के चलते रूख में जोरदार परिवर्तन होगा। ता. ५ की रात से ता. १० तक बादल वर्षा, होगी। ता. ६ को शुक्ला ८ बुधवारी से सभी वस्तुयें मन्दी, ता. ९ को सवेरे श्री वृश्चिक भौम होकर सूर्य+भौम योग से बादल वर्षा अन्नादि तिलहन-दलहन मन्दे सोना, तांबा, जस्ता, पीतल कैडीयम, हिल, लौंग, कैमीकल तेज, शुक्ला १३ रविवारी के क्षय से देशी घी, तिलहन, दलहन में तेजी का उछाला, रूई, पाट, रेशम मन्दे होंगे। यहीं से सवत २०४७ चैत्र के शुक्ल पक्ष में ५ मास तक तिथि क्षय कभी-कभी तिलहन-दलहन अन्नादि में तेजी का माहौल भी बना जाता है। शुक्ला १५ रोहिणी संयोगी रूई, पाट में मन्दी लाती है। आज ही ९।४२ बजे पूषाया बुध सभी वस्तुयें मन्दी करेगा।

उत्तर भारतीय पौष मास : मे पाच बुधवार (कृष्णा १ बुधवारी) से शारदी अन्न हल्दी, सोठ, अदरख आलू सवत् २०२३ की भाति तेज होगे। इस मास मे दक्षिणी वायु जितनी जोर से जिस क्षेत्र मे उ. प्र., हरियाणा, पंजाब राजस्थान मे चलेगी तो वहाँ शीतकाल मे अच्छी वर्षा भी होगी। ता. १४ को शीघ्री अनुभे भौम से लाल मिर्च के साथ सभी वस्तुयें मन्दी दलहन चावल मे तेजी सम्भव है। ता. १५ की रात को श्री सूर्यदेव गत सक्रान्ति से वारात् २ नक्षत्रात् ३ (३० मुहूर्त) शुक्रवार मे शनि बुध से युक्त होकर गुरु से प्रतियोग करके अग्निमण्डल के नक्षत्र मे धनुराशिस्थ होगे। फलत सभी खाद्य वस्तुयें मन्दी, किन्तु कृष्णा ४ शनिवारी तेजी की सूचना देती है। ता. १७ को ९।४८ बजे श्रवणे शुक्र से प्राय सभी वस्तुये मन्दी। ता. २१।२३ (कृष्णा ९।११ कोअथवाशुक्ला ९।११ को उ.प्र., हरियाणा, पंजाब, राजस्थान मे जहाँ भी प्रात पूर्व मे मेघ गर्जन हो तो वहाँ खेती का नाश, धान्यादि तत्काल तेज (सवत् २०१०) केवल पश्चिमी वायु ही जोर से चले तो भी सवत् २०१८ की भाति सरसो मे घोर तेजी किन्तु गुरु वक्रत्व मे ता. २१ को शन्यस्ते से वर्षा होगी, जो ऊपज की श्रेष्ठता के कारण गतवर्ष की भाति मन्दी सभी खाद्य वस्तुओं मे होगी। ता. २२ को २।२५ बजे उषाया बुध अन्य वस्तुओ को भी मन्दा करेगा। ता. २३ कृष्णा ११ को स्वाति नक्षत्र होने से सवत् २०३८ की भाति पूरी वर्षा ऋतु उत्तम वर्षा करती रहेगी। ता. २४ को कृष्णा १३।१४ की वृद्धि से तेजी ता. २६ को मकरे बुध होकर राहु+शुक्र+बुध से ४ जनवरी ९० तक सर्वत्र बादल वर्षा, ओलापात, योग चलेगा। गुड, खाड मे अच्छा मन्दा, तिलहन-दलहन शेयर्स तेज होगे। ता. २७ से मकराशे गुरु-बुध के साथ ही पौष कृष्ण ३० बुधवारी मूल सयोग से आगे माघ शुक्ला मे ऊपज की अधिकता अथवा किसी भी कारण को लेकर अच्छा-मन्दा होने की आशा है। विशेष को तो सर्वज्ञ ही जाने।

गुजराती पौष मास : (२९ दिसम्बर शुक्ला १ शुक्रवार से माघी अमावस शुक्रवार २६ जनवरी ९० तक) ता. २९ को २।१८ बजे मकर राशि मे शुक्र वक्री से बादल वर्षा वायुवेग ढाका, पावना, बगुडा, राजशाही, फरीदपुर, कर्नाटक, गौड, विदर्भ के नेता व प्रजा को कष्ट, अन्नादि मन्दे, घृत तेल, गुड, खाड मे तेजी का उछाला, रूई, पाट, रेशम, सूत, उन, सोना, चादी तेज होगे। यहाँ से १० दिन मे बादल वर्षा दक्षिणी वायु भी चले तो आर्द्रादि १० नक्षत्र मे सूर्य जाने पर इसी क्रम से वर्षा भी होती रहती है। आज ही शुक्रवारा ४५ मुहूर्त उत्तर श्रृंगी चन्द्रोदय से कल सभी वस्तुये मन्दी ता. ३१ को प्रात मकर राशि मे बुध वक्री बादल वर्षा वायुवेग। (गुरु-शुक्र-बुध तीन शुभ ग्रह वक्री) से सभी वस्तुये मन्दी। रात को रविवार मे सन् १९९० का प्रारम्भ होने से शासन सत्ता की शक्ति को बढावेगा। किन्तु शुक्ला ६ के क्षय से तेजी का उछाला, आज ही २ जनवरी को प्रात ज्येष्ठाया शीघ्री मंगल से तिलहन-दलहन गुड, खाड, कपूर, पारा, ग्वार, मटर मे तेजी होगी। ता. ३।४ को शनि-बुध दोनों ही अस्त होने से सभी वस्तुयें मन्दी। बादल वर्षा वायुवेग वस्तुओं के चलते रूख में जोरदार पलटा। ता. ४ की रात को पुन धनुषि बुध से १५ दिसम्बर ८८ से विपरीत चाल भी सम्भव है। ता. ७ को शुक्ला ११ को कृतिका नक्षत्र होने से लाल वस्तुयें किराना मे संवत् २०४०।४३।४५ की भाति सोना के साथ चादी मे भी तेजी की लाइन चलने की आशा है। ता. ०९ शुक्ला १३ मगलवारी होने से गहूँ देशी घी लाल वस्तुयें गुड, मसूर, चना के सग्रह से आगे लाभ होगा। ता. ११ को उषाया रवि से आज सभी वस्तुये तेज होगी।

उत्तर भारतीय माघ मास : मे जितनी जोर से इस मास मे दक्षिणी वायु उ. प्र. हरियाणा, पंजाब, राजस्थान मे चलेगी तदनुसार वर्षा भी होती रहेगी। १२ जनवरी को रात मे पुन आर्द्राया १ चरणे गुरु से २ अगस्त ८९ से यहाँ वस्तुओ की विपरीत चाल निकलेगी। ता. १४ को श्री सूर्यदेव गत सक्रान्ति से दाइव नक्षत्रात् ३ (३० मुहूर्त) बैठी अवस्था मे रविवार को सवेरे ९।३२ बजे राहु व वक्री शुक्र से युक्त होकर धनु संज्ञक अग्निमण्डल के नक्षत्र मे मकर राशिस्थ होगे। रूई, पाट, रेशम, सूत, ऊन मे मन्दा चलेगा। गुड खाड चादी, सोना तेज होगे। यहीं से शनि+बुध योग गुरु से प्रतियोग होकर चलेगा। फलत इस संक्रान्ति मे दो तरफा चाल निकलेगी। बादल वर्षा वायुवेग या शीत वृद्धि होगी। अत आज बना रूख कल सवेरे से बदलेगा। ता. १७ को देवतागण मे मकर राशिस्थ वक्री शुक्र, राहु+सूर्य से युक्त होकर पश्चिम मे अस्त होगा। फलत विश्व के किसी-किसी क्षेत्र मे छह माह तक वर्षा होगी अथवा भारत के गुजरात, कर्नाटक मे वर्षा होने की भी आशका है। रूई, पाट, सोना, चादी, सर्वधातु मे तेजी, शेयर्स मे भी भयानक कोई चाल निकलेगी। नेताओ पर आकस्मिक सकट पतन व अवसान भी सम्भव है। ता. १९ को कृष्णा ८ शुक्रवारी से मूग, मोठ, बाजरा मे तेजी होगी। ता. २० को सवेरे बुध मार्गी से बादल वर्षा वायु वेग या शीत वृद्धि वस्तुओ के चलते रूख मे जोरदार पलटा होगा। ता. २१ शीघ्री धनुषि भौम होकर शनि-बुध-भौम योग से बादल, वर्षा, वायुवेग, ओलापात, व्यापार की सभी वस्तुये तेज, आलू, अदरख, लौंग, काली मिर्च, दालचीनी, कैमीकल्स, शेयर्स, सर्वधातु मे तेजी की आशा है। ता. २१ की रात को पूर्वोदयी शुक्र ज्येष्ठा नक्षत्र (राक्षसगण) मे पाप क्रूराक्रात उदय होने से कहीं-कहीं वर्षा तो कहीं सूखा सभी वस्तुयें तेज। ता. २३ को शन्युदय २१ दिसम्बर ८८ से सभी वस्तुओ की विपरीत चाल देगा। ता. २३।२४ को कृष्णा १२।१३ को बादल वर्षा, ओलापात, आदि हो तो सभी खाद्य वस्तुओ की उत्पत्ति विशेष श्रेष्ठ। किराने की पैदावार भी बहुत होगी। ता. २४ को श्रवण रवि से सभी वस्तुये तेज, आलू भी तेज, रूई पाट मन्द होगे। शुभवारी अमावस से आगे सभी वस्तुयें मन्दी, रूई पाट मे विशेष मन्दा होगा।

गुजराती माघ मास : ता. २७ शुक्ला १ शनिवारी से (दुर्भिक्ष) रात से पुन धनुषि शुक्र होकर (शनि-मगल-शुक्र योग-गुरु से प्रतियोग) मेषाशे गुरु-शुक्र २० फरवरी तक कहीं-कहीं वर्षा तो कहीं बादल चाल। आज से राहु-सूर्ययोग ६ फरवरी तक रूई, पाट मे मन्दा, सोना, चादी तेज गुड, खाड, तिलहन-दलहन, मदे। गहूँ, रूई, पाट, सूत, ऊन, रेशम, तेज होगे। बाजार का रूख देखकर ता. ३० शुक्ला ४ मगलवारी सप्तमी शुक्रवारी से दलहन-चादी तेज। २ फरवरी (शुक्ला ७ से चतुर्दशी तक) से ता. ८ तक उ.प्र., हरियाणा, पजाब, राजस्थान, म. प्र. मे जहाँ भी बादल वर्षा (३० सैन्ट) हो तो वहाँ आगे वर्षाकाल श्रेष्ठ रहता है। अधिक वर्षा या आकाश निर्मल रहे तो वहाँ अतिवृष्टि अनावृष्टि से ऊपज मे कमी अवश्य ही हो। आज जो-जो लक्षण बादल, वर्षा, वायुवेग हो तो वही लक्षण आगे ग्रहण काल मे भी होगे। ता. ४ को २।४४ बजे उषाया बुध से आज सभी वस्तुओ मे मन्दी का झटका। ता. ५ शुक्ला १० रविवारी के क्षय से देशी घी, तिलहन अन्नादि तेज। ता. ६ को सवेर धनिष्ठाया रवि से सभी वस्तुयें तेज। ता. ७ को सवेरे मकरे बुध होकर राहु-सूर्य-बुध से रूई, पाट, रेशम, ऊन, सूत, शेयर्स मे मन्दा। चादी, सोना, सर्वधातु तेज। ता. ८ को २ बजे अतिचारी पूषाया मगल से सभी वस्तुये तेज। आज ही २।५० बजे धनु राशि मे मार्गी शुक्र से बादल वर्षा होते ही सभी वस्तुये मन्दी। ता. ९ को शुक्रवार वारुणमण्डल के आश्लेषा नक्षत्र कर्क राशि मे खग्रास (पूरा) चन्द्रग्रहण रात को ११ बजे से प्रारम्भ २।२४ बजे पर मोक्ष होगा। वारफल से रूई, पाट चार मास तक अथवा चौथे मास मे मन्दे चादी, सोना, सर्वधातु तेज। नक्षत्र फल से हल्दी, धनिया, चना, गहूँ, चावल गुड, खाड, उडद, ज्वार बाजरा मन्दी में संग्रह से आगे लाभ होगा। मास फल से श्रेष्ठ है। यो कि वर्षा होने की आशा है। बुध की दृष्टि से घी, तेल, गुड, खाड, मक्का पीतल की कमी होने पर तेजी आती है। ग्रहण से ४।४ दिन पहले पीछे अथवा ग्रहण काल मे ही बादल या वर्षा हो तो सभी खाद्य वस्तुओ मे मन्दी का दौर चला करता है। इसी अवधि मे सभी शुभ कार्य वर्जित होते है। **नोट : ७-२-८९ को शनि-मंगल-शुक्र वक्री (निर्बल) का योग बनेगा, जो ३० नवम्बर ३१ को आकर सभी वस्तुओं मे तेजी लाया था। यहाँ रूख देखकर ही व्यापार करें**

उत्तर भारतीय फाल्गुन मास : १० फरवरी (कृष्णा १ मघा सयोगी) से सवत् २०१३ की भाति तिलहन-दलहन के स्टाक से लाभ होगा। ता. ११ की रात को शीघ्री उषाया शनि भी सभी खाद्य वस्तुओ को धीरे-धीरे तेज करेगा। ता. १२ की रात्रि को सोमवार मे श्री सूर्यदेव गत सक्रान्ति से वारात २ नक्षत्रात् ३ (४५ मुहूर्त) अग्निमण्डल के नक्षत्र (धातु सज्ञक) मे शनि+गुरु की ३।९ दृष्टि से प्रभावित होकर कुम्भ राशिस्थ होगे। फलत मन्दी तेजी का दो तरफा दौर इस सक्रान्ति मे भी चलेगा। ता. १३ कृष्णा ४ मगलवारी सप्तमी शुक्रवारी से दलहन चादी तेज। ता. १४ की रात मे श्रवणे बुध से कल सभी वस्तुएँ मन्दी। ता. १५ कृष्णा ६ की वृद्धि से आज तेजी, किन्तु इस दिन चित्रा नक्षत्र से (सवत् २०२२) मन्दी की लाइन खाद्य वस्तुओ मे चलेंगी। तीसरे मास मे पुन मन्दी होगी। ता. १९ कृष्णा १० मगलवारी से १ मास मे गुड, खाड मे विशेष तेजी होगी। किन्तु आज १२।१० बजे प्लूटो वक्री वस्तुओ के चलते रूख को बदल देगा। ता. २० को मकरे शुक्र होकर शीघ्री शनि-मगल योग वस्तुओ के चलते रूख मे जोरदार पलटा होगा। चलते रूख का व्यापार करे। गुरु की दृष्टि से मन्दी होगी। ता. २३ की रात्रि को धनिष्ठाया बुध सभी वस्तुओ मे मन्दी कारक, कृष्ण ३० रविवारी से सभी खाद्य वस्तुओ मे तेजी की लाइन देगी। ता. २५ को इसी दिन मगल-शनि से दृष्ट (प्रतियोग) होने से मार्गी गुरु से बादल, वर्षा, वायुवेग तेजी का ही समर्थक बनेगा। ऐसी ही आशा है।

गुजराती फाल्गुन मास : २६ फरवरी की रात को उषाया अतिचारी भौम से कल सभी वस्तुये तेज। ता. २७ को (शुक्ला २ मगलवारी) से रूई कपडा, सूत सफेद वस्तुये तेज। आज ही शुक्ला ३ के क्षय से शारदी दलहन तेज, रूई, पाट मन्दे होगे। ता. २८ को कुम्भे बुध (शीघ्री) होकर सूर्य-बुध योग से देशी घी, गुड, खाड, चादी, मसूर, मटर (बटला) मे मन्दी, गहूँ, जौ, चना, अलसी, मूंग, उडद, रमास (लोबिया) मन्दी के झटको मे खरीदो। आज ही सराकरी बजट से सावधान। १ मार्च को धनु राशि मे शीघ्री शनि-मगल की अशात्मक युति से २० फरवरी से बना रूख यहाँ बड़े जोर से बदलेगा। गुड, खाड मे मन्दा होगा। ता. २ शुक्ला ६ शुक्रवारी से रूई, पाट, रेशम, सूत, १ मास मे मन्दे होगे। ता. ३ को शीघ्री मकरे भौम-(राहु-शुक्र-भौम) बादल वर्षा वायुवेग से रूई, पाट, रेशम, सूत मे अच्छा मन्दा तिलहन-दलहन लोंग कत्था, कैमीकल्स, हाईड्रोकेडियम, गहूँ, अलसी, सरसो, ग्वार, मटर (बटला) मे मन्दी मे खरीदे। ता. ४ को शत. शीघ्री बुध से प्राय सभी वस्तु मे मन्दी, आज ही कुम्भार्क मे शुक्ला ८ रविवारी से नई फसल की वस्तुयें मन्दी मे खरीदे। २।३ मास बाद अच्छी तेजी होगी। सुपरीक्षित योग है। ४-५ मार्च को पूर्वास्ते बुध से बादल वर्षा वायुवेग। १ मार्च को बने रूख को बड़े-जोर-शोर से बदल देगा। ता. ९ को शुक्ला १३ शुक्रवारी से ज्येष्ट मास मे रोग ३ मास मे भोग होगा। आज ही श्रवणे शुक्र से सभी वस्तुये मन्दी। ता. १० चतुर्दशी पश्चात रात को पूर्णिमा शनिवारी को होलिका दहन से तत्काल तथा आगे भी सभी खाद्य वस्तुये तेज

किन्तु पूर्वाफाल्गुनी का संयोग मन्दी का योग है। अतः रूख देखकर ही व्यापार करें। गेहूँ, सौफ, आलू के संग्रह से अगले मास में लाभ होने की आशा है। होली जलने वाले वक्त बादल चाल हो तो तेजी। वायु विचार (अपने क्षेत्र का पिछले पञ्चागों में देखना। वायु शांत होकर अग्नि की लपट सीधी जाने पर महोत्पातिक कुयोग हो जाता है। **नोट : ता. ११ को रविवार को पूषायां बुध के प्रभाव से ता. १२ को बाजार खुलते ही सभी वस्तुओं में मन्दी सम्भव है।**

उत्तर भारतीय चैत्र मास : इस मास में ५ सोमवार होने से सभी वस्तुयें तेज साथ ही पश्चिमी या दक्षिणी वायु चले वर्षा होना नेष्ट वायु जोर से जिस क्षेत्र में पतझड़ होकर वृक्ष नंगे हो जावे वहां आगे वर्षाकाल भी श्रेष्ट रहता है। इस कृष्ण पक्ष में ऊपज की कमी वेशी पर भी खाद्य वस्तुओं के साथ अन्य वस्तुओं में भी जोरदार तेजी या मन्दी का दौर चला करता है। ता. १३।१४ को कहीं बादल तो कहीं-कहीं वर्षा भी होगी।। १४ मार्च को श्रीसूर्यदेव गत सक्रान्ति से वार व नक्षत्रात् ३ (३० मुहूर्ती) बुधवार चित्रा नक्षत्र (वायुमण्डल) में सायं ७।२१ बजे मीन राशिस्थ होंगे। फसल की वस्तुयें बाजार में आते ही खरीदें। ता. १६ की रात को श्रवणे अतिचारी भौम का राहु से नक्षत्र योग गेहूँ, अलसी के साथ सोना चांदी के भी साथ अन्य खाद्य वस्तुयें भी तेज होंगी। ता. १७ को मीने शीघ्री बुध होकर सूर्य-बुध योग से मसूर मटर (बटला) चना मन्दे होंगे। मिल शेयर्स में कोई चाल निकलेगी। ता. १८ को उभाया रवि से सभी वस्तुयें तेज शाम को उभाया बुध से फल सभी वस्तुओं में मन्दी का झटका। आज ही कृष्णा ७ रविवारी को घटाटोप बादल हो तो लाल वस्तुयें गेहूँ, गुड़, मसूर लाल रंग दूसरे मास में मन्दे होंगे। ता. २१ को मकरे शनि होकर राहु-शुक्र-मंगल-शनि-चन्द्र योग पंचग्रही से कहीं-कहीं घोर वर्षा तो कहीं-कहीं रक्तपात भी होगा। गुड़, खांड में मन्दा सोना, चांदी, गेहूँ, अफीम, पोस्ता, रूई, पाट, रेशम तेज होने की आशा है। रूख देखकर ही व्यापार करना उचित होगा। कृष्णा १३ शनिवार संयोगी लाल मिर्च, लाल रंग, सैंधा नमक, लाल चन्दन, पान घास में तेजी का जोरदार रूख बनेगा। ता. २४ को १२।११ बजे धनिष्ठायां शुक्र से सभी वस्तुओं में मन्दी का झटका। ता. २५ को तिथि १४ के क्षय से मन्दा सवेरे रेवती के बुध से भी मन्दा। यहाँ से कल तक धन्वांशे गुरु-बुध से कहीं बादल चाल तो कहीं वर्षा भी होगी। ता. २६ को सोमवती अमावस भी मन्दी कारक है। सैंधा नमक लाल चन्दन पान घास से तेजी का जोरदार रूख बनेगा। ता. २४ को १२।११ बजे धनिष्ठायां शुक्र से सभी वस्तुओं में मन्दी का झटका। ता. २५ को तिथि १४ के क्षय से मन्दा सवेरे रेवती के बुध से भी मन्दा। यहाँ से कल तक धन्वांशे गुरु-बुध से कहीं बादल चाल तो कहीं-कहीं वर्षा भी होगी।। २६ को सोमवती अमावस भी मन्दा कारक है। **लाभ-हानि का पूर्ण उत्तरदायित्व प्रयोक्ता पर ही है। अतः बाजार का रूख देखकर अपनी ताकत के मुताबिक व्यापार करें।**

नोट : पाठकों एवं व्यापारी वर्ग ने "जिस सन् में ४ का भाग लगे पर सन् १९८८ में व्यापार की सभी वस्तुओं में २०४३ के 'श्री विश्वविजय पञ्चांग' 'चिन्ताहरण यन्त्री' व पञ्चांग तथा दिल्ली के राजधानी पञ्चांग में भयानक मन्दी की घोषणा भगवत्कृपा से सत्य निकली। अब सन् १९९२ में भी ऐसी ही मन्दी फिर से आवेगी किन्तु संवत् २०५३ सन् १९९६ में ४ का भाग लग जाने पर मन्दी की बजाय भयानक तेजी होगी, इसमें हमारी गोपनीय जानकारी चमत्कार दिखाई देगा। 'ज्योतिष्मती' एवं पञ्चांग का यह अंक संभाल कर रखना उचित होगा क्योंकि :

मौत मुकदमा मांदगी मन्दा औ मेहमान।
जे, जाके पाछे परें, ताके लेत है प्राण ॥

चेतावनी : चांदी, सोना, तांबा, जस्ता, पीतल, रूई, पाट, रेशम, सूती धागा, काली मिर्च, तिलहन-दलहन, चना, उड़द, मूंग, मोठ, ग्वार, चावल, ज्वार, बाजरा, मक्का, गेहूँ, किराना में जीरा, अजवाइन, धनिया, सौफ, मेथी, सोंठ, हल्दी, गुड़, खाड़, देशी घी शेयर्स आलू पोस्ता में से किसी एक वस्तु की हाजर स्टाक की भेंट वार्षिक अब १ जनवरी ८९ से ४०८/- नौ माह की ३१६/- माह की २२१/- तीन माह की १२६/- तथा वायदे की किसी भी एक वस्तु की मासिक दैनिक टाइम सहित रिपोर्ट ६८/- दो माह की १३१/- ३ माह की १९१/- पाक्षिक नमूनार्थ केवल एक बार ४०/- का मनीआर्डर भेजते समय सबसे नीचे वाले कूपन पर अपना पूरा पता एवं पीन कोड हिन्दी भाषा में अथवा अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में (ब्लॉक लैटर्स) में ऐसा लिखें, जो आसानी से पढ़ा भी जा सके। वी.पी. नये, पुराने किसी भी ग्राहक को नहीं भेजी जाती। पत्रोत्तर चाहें तो जवाबी-कार्ड ही लिखें, अन्यथा उत्तर नहीं मिलेगा।

नोट : "भविष्य-दर्पण" का छपना तथा वर्षफल के सभी कार्य बन्द कर दिये है।

सूचना : यहाँ आने वाले पहले जवाबी-कार्ड भेजें उसका उत्तर पाते ही आने का कष्ट करें। कारण हमें भी कभी-कभी यात्रा करनी होती है।

पता : राजाराम जैन ज्योतिषी (विजय प्रकाश जैन)
जैन मन्दिर के सामने (गली स्व. डा. कपूर) ११९ कटरा मैनपुरी सिटी (उ.प्र.) पिन - २०५००१
फोन - ४२१ पी.पी.

कौआ तन्त्र अर्थात् काला जादू

(भविष्य का हाल बताने वाला संसार भर का माना हुआ पक्षी)

यह वह बढ़िया किताब है जो कि भारत, पाकिस्तान तो क्या संसार भर के किसी भी पुस्तकालय से नहीं मिल सकती। परिन्द कौवे से बड़ी-बड़ी अनोखी भविष्य की बातें मालूम होती हैं, आश्चर्यजनक करामात दिखाई देती है। कौआ तन्त्र के कुछ वशीकरण प्रयोग जैसे कि मनचाही स्त्री से शादी करने का तन्त्र, लोगों की दृष्टि से गुप्त रहकर सबको देखना परंतु स्वयं किसी को नजर न आना, जमीन में गढ़ा धन मालूम करना, चोर को पकड़ने का अमल, इसके द्वारा कौवे को बेखबर कर देना फिर कोई रूह उस पर काबिज हो जायगी और वह आदमियों की तरह बोलने लगेगा, जो सवाल पूछा जावेगा उसका जवाब देगा। कौवे का वाक् सिद्धि तन्त्र अर्थात् कौवे का एक ऐसा प्रयोग जिसके द्वारा मनुष्य जो कुछ मुंह से बोले सच निकले, इसके अतिरिक्त परिन्द कौवे की विचित्र बोलियां तथा उनकी विशेषताएं कोए के रक्त तथा शरीर के हिस्से व परों की विशेषताएं तथा कौवे से सम्बन्धित स्वप्नों का विचित्र स्वप्न फल इस किताब में अंकित है जिसके द्वारा मनुष्य आने वाली मुसीबतों से शीघ्र बच सकता है जैसे कौवे का वह शकुन जिसके द्वारा औरत व मर्द की मृत्यु हो जाती है, इसी के द्वारा मनुष्य की शादी हो जाती है। कौवे का वह शकुन जिससे गर्भवती स्त्री के यहां लड़का पैदा होता है। कौवे का वह शकुन जिसके द्वारा गुमशुदा या परदेश गया हुआ आदमी शीघ्र वापिस आ जाता है आदि २ सारांश यह कि कौवे के विषय में सैंकड़ों तरह के आसान से आसान प्रयोग तथा शीघ्र से शीघ्र असर करने वाले सैंकड़ों अजीब गरीब शकुन तथा भविष्य वाणियां आपको हमारी पुस्तक में लिखी मिलेंगी जिनके अचम्भे में डालने वाले कमालातों से आप घर बैठे काफी रुपया कमा सकते हैं। जिनकी प्रशंसा देखने पर ही मालूम होगी। इतने गुण होने पर भी इस ख्याल से कि हर अमीर गरीब फायदा उठा सके इसका मूल्य प्रति जिल्द हिन्दी में डाक खर्च सहित केवल१६) रुपये रखा गया है। पता साफ लिखें।

आदर्श कृषि विज्ञान

इस पुस्तक में कृषि का महत्व खेती, भूमि की किस्में, खाद, जलवायु, विज्ञान, सिंचाई की रीतियां, कृषि उपयोगी यन्त्र, स्वच्छ बीज की पहचान, बीजों की किस्में, बुवाई की रीति, पैदावार बढ़ाने के उपाय, खरीफ, रबी की फसलें, चारे की फसलें, शाकभाजी, फलों की खेती, पशु पालन, पशुओं की बीमारी तथा फसलों की बीमारी से बचने का उपाय तथा कृषि कहावतें आदि आदि विषय दिये गये हैं, हम यह दावे से कह सकते हैं कि इससे अधिक कृषि सम्बन्धी जानकारी कराने वाली दूसरी कोई पुस्तक नहीं है। अवश्य मंगाकर लाभ उठावें। मूल्य २५) रुपया।

साबुन शिक्षक—यह पुस्तक धन पैदा करने की अद्भुत कला है, इसमें सैंकड़ों प्रकार के देशी तथा विलायती रंगदार और सुगन्धित साबुन बनाने की समस्त गुप्त विधियां अंकित की गई हैं। जिन्हें पढ़कर हर मनुष्य घर बैठे बढ़िया साबुन बना सकते हैं। मूल्य केवल १२)

सुखसागर बड़ा

यह श्रीमद्भागवत का सरल भाषानुवाद है, भाषा इतनी सरल है कि साधारण पढ़ा लिखा भी आसानी से पढ़ और समझ सकता है। पृष्ठ संख्या लगभग १००० बढ़िया कागज विलायती कागज की बढ़िया ठप्पेदार जिल्द। साइज ११ इन्च लम्बा व १० इन्च चौड़ा है, बिल्कुल सफेद ग्लेज कागज पर सुन्दर २ बहुरङ्गे चित्र तथा बहुत मोटा अक्षर है। मूल्य ५८)

कबीर बीजक बड़ा भाषा टीका

यह महान् ग्रन्थ महात्मा कबीरदासजी द्वारा लिखा गया है। मूल ग्रन्थ बड़ी ही जटिल भाषा में लिखा गया है, जिसको सर्वसाधारण आसानी से नहीं समझ पाते इसी कारण इस पुस्तक को सरल भाषा में टीका कराके छापा गया है असली बम्बई छापा जिससे प्रत्येक मनुष्य आसानी से समझ सके। मूल्य ४०)

श्री शिव महापुराण—पं० हरिश्चन्द्र शास्त्री

इसमें शिव चालीसा, शिव ताण्डव, शिव सहस्र नाम तथा शिवार्चन की आरतियां व श्लोक दिए हैं। विश्वेश्वर संहिता, रुद्र संहिता, शत रुद्र संहिता, कोटि रुद्र संहिता, उमा संहिता कैलाश संहिता और वायवीय संहिता का सरस व रोचक वर्णन है। मोटा टाइप व शिव जी के अनेकों रंगीन चित्रों सहित सम्पूर्ण सातों खण्डों का मूल्य ५८)

प्रत्येक हिन्दू परिवार में रामायण का होना अति आवश्यक है

तुलसी कृत रामायण भाषा टीका सचित्र

टीकाकार पं० ज्वाला प्रसाद बम्बई छापो

जिसमें आठों कांडों के प्रत्येक दोहा, चौपाई, सोरठा और छन्दों का अर्थ साथ-साथ अत्यन्त शुद्धतापूर्वक लिखा गया है। गोस्वामी तुलसीदासजी का जीवन चरित्र, श्रीरामशलाका प्रश्नोत्तरी, पारायण विधि, ज्ञातव्य, रामायण माहात्म्य, नवाह्न मास पारायण विश्राम, हनुमान चालीसा, श्रीरामचन्द्र जी के सूर्य वंश का वृक्ष, गूढ़ार्थ शब्दकोष, रामनाम महामन्त्र, सप्तदेवों की आरती, राम कलेवा, श्रवण चरित्र, सुलोचना सती, अहिरावण वध, नारान्तक वध तथा अन्य सभी क्षेपक, टीका सहित दिये गये हैं। मूल्य ५८)

हिन्दू शास्त्रों में महाभारत पांचवां वेद माना जाता है।

बड़ा महाभारत भाषा

(प० श्रीधर शिवलाल कृत सम्पूर्ण अठारहों पर्व केवल भाषा)

इसमें कौरव तथा पाण्डवोंका सम्पूर्ण वृत्तान्त,कौरव पाण्डवों का घोर युद्ध, द्रौपदी पतिव्रत धर्म पालन, युधिष्ठिर के धर्म वाक्य, विदुर जी की राजनीति, भीष्मपितामह जी के धर्मोपदेश, श्रीकृष्ण जी का गीता उपदेश तथा और भी बड़ी-बड़ी सुन्दर कथाएँ हैं जिनके पाठमात्र से पाठकों के सब पाप दूर हो जाते हैं और इसमें स्थान-स्थान पर बहुरंगे और रंगीन चित्र लगाये गये हैं जिनसे इस ग्रन्थ की चौगुनी शोभा हो गई है। इस ग्रन्थ को स्त्रियां भी पढ़ सकती हैं। टाइप बहुत मोटा है। मूल्य केवल ५०)

नोट—सभी पुस्तकों का मूल्य डाक व्यय रहित है। आप केवल एक पोस्टकार्ड पर पुस्तकें लिखकर भेजें तथा मनीआर्डर-द्वारा आधी रकम अवश्य पेशगी भेजदें। आपको घर बैठे ही पुस्तकें वी. पी. द्वारा प्राप्त हो जावेंगी।

मंगाने का पता— ज्योतिषमती प्रकाशन मथुरा

ज्योतिष, तन्त्र-विद्या तथा योग-साधना के अनुपम ग्रन्थ

घर बैठे वी० पी० द्वारा प्राप्त करें !

भारतीय फलित-ज्योतिष : मूल्य 51/-
(आचार्य—दीक्षित)
ज्योतिष ज्ञान के अभिलाषी तथा ज्योतिष के मर्मज्ञ—सभी के लिए परम उपयोगी ग्रन्थ !

भाग्य का प्रतिबिम्ब : मूल्य 51/-
(पं० शत्रुघ्नलाल शुक्ल)
हस्त-रेखाओं की व्यापक जानकारी के साथ ही विद्वान् लेखक ने अनेकानेक ऐसे गूढ़ रहस्यों से भी पर्दा उठाया है, जिनसे प्रायः हस्तरेखा-विद् भी परिचित न थे। हस्त-रेखा की समग्र जानकारी देने वाला पूर्ण ग्रन्थ !

अलौकिक शक्तियों की साधना : मूल्य 30/-
(आचार्य—पं० शत्रुघ्नलाल शुक्ल)
इस पुस्तक में सभी देवी-देवताओं की 'साधना' आराधना-विधि इतने सरल ढङ्ग से विवेचित है कि केवल श्रद्धा-शुचिता के बल पर ही सिद्धि प्राप्त की जा सकती है। चाहिए—बटोरने वाला, मानो रत्नों की पिटारी खुली पड़ी है।

रहस्यमयी गुप्त-विद्याएं (यन्त्र,मन्त्र,तन्त्र) : मू. 25/-
(आचार्य—पं० शत्रुघ्नलाल शुक्ल)
जैसा कि पुस्तक के नाम से स्वतः स्पष्ट है। भारतीय-तन्त्र-साधना के ऐसे-ऐसे गुप्त-प्रयोग, जो लाखों रुपया खर्च करने पर भी सिद्धजन नहीं बताते, इस पुस्तक में स्पष्ट और सरल भाषा में वर्णित हैं। अवश्य पढ़ें।

योग के अद्भुत चमत्कार : मूल्य 24/-
(स्वामी स्वयमानन्द)
बिना गुरु की सहायता के योग-विद्या में पारङ्गत बनाने का पूर्ण-विश्वास के साथ दावा करने वाला—अनुपम ग्रन्थ ! अवश्य पढ़ें।

भाग्योदय तन्त्रम् : मूल्य 25/-
(पं० शंकरदयालु त्रिवेदी)
इस विशाल ग्रन्थ में आकाशीय-पिण्डों—नक्षत्र, ग्रह आदि का साङ्गोपाङ्ग वर्णन करते हुए विद्वान लेखक ने उनके कोप को शान्त करने के सरल उपाय बताकर भाग्य का सितारा चमकाने का मार्ग प्रशस्त किया है।

शक्ति-तन्त्रम् (देव्योपासना) : मूल्य 21/-
(पं० शत्रुघ्नलाल शुक्ल)
माँ दुर्गा के विभिन्न नाम-रूपों का ज्ञान कराकर, उसकी सरलतम-साधना का बोध कराने वाली अनुपम पुस्तक !

सूर्य-तन्त्रम् : मूल्य 21/-
(पं० शत्रुघ्नलाल शुक्ल)
यह तथ्य सर्व विदित है कि भगवान भास्कर के साधक की शुचिता, सौम्यता, सहनशीलता, सत्य-वादिता, स्पष्टवादिता आदि दिव्य गुणों की स्वतः प्राप्ति होकर साधक का व्यक्तित्व परम तेजस्वी हो उठता है। फिर उसे विश्व की कोई सम्पदा अप्राप्य नहीं रहती। उसी साधना का प्रभावशाली चित्रण।

नवग्रह अनुकूलन-तन्त्र : मूल्य 21/-
(पं० शत्रुघ्नलाल शुक्ल)
नवग्रहों की कृपा-प्राप्ति के लिए सरलतम साधना का वर्णन किया गया है। अनेकों पाठकों द्वारा प्रशंसित पुस्तक है।

रत्नों के चमत्कार : (आचार्य—प्रज्ञानिधि) मूल्य 25/-
नवरत्नों, उपरत्नों तथा वास्तविक रत्नों का विशद और प्रामाणिक विवेचन ! अपने ढङ्ग की अमूल्य कृति !

शाबर तन्त्र-विद्या : (आचार्य—प्रज्ञानिधि) मू. 25/-
भगवान शंकर के डमरू-वाद्य से प्रस्फुटित अचूक तन्त्र-प्रयोग। सहज-सिद्ध मन्त्र।

तान्त्रिक सिद्धि-प्रयोग (आचार्य—प्रज्ञानिधि) मू. 21/-
भारतीय वाङ्मय के सुप्रसिद्ध बारह देवी और देवताओं की कृपा-प्राप्ति के अचूक शास्त्रीय-उपायों का विवेचन !

श्री तन्त्रम् (धन-प्रदायक साधनाएं) : मूल्य 21/-
(पं० शत्रुघ्नलाल शुक्ल)
जीवन में सफलता की मूल-आधार धन-सम्पदा है। इस पुस्तक में धन-सम्पदा की प्रदायिनी देवी—श्रीमहालक्ष्मी की आराधना का विवेचन है।

मनोकामनापूरक-मन्त्र : मूल्य 21/-
(पं० शत्रुघ्नलाल शुक्ल)
यश, प्रतिष्ठा तथा धन आदि सभीसद्-इच्छाओं की पूर्ति करने की कामना रखने वाले साधक इस ग्रन्थ को अवश्य पढ़ें।

नोट—पुस्तक का चौथाई मूल्य मनीआर्डर द्वारा अग्रिम भेजना तथा अपना नाम व पता सही, साफ लिखकर भेजना अनिवार्य है। डाक-खर्च अलग।

ज्योतिषमती प्रकाशन, मथुरा—281001 (उ० प्र०) ☎ : 5673

ज्योतिष - तन्त्र - मन्त्र का अनुपम - साहित्य

रमल ज्योतिष शास्त्र —	३५)००
सरल सुगम ज्योतिष	१५)००
सरल ज्योतिष शास्त्र (प्रारम्भिक ज्ञान)	२०)००
शकुन ज्योतिष शास्त्र	३०)००
आयु निर्णय (आयु कितनी होगी ?)	३०)००
आपका भविष्य	३०)००
भृगु संहिता फलित प्रकाश दर्पण	५१)००
वृहदवकहडा चक्रम	२५)००
चमत्कार ज्योतिष	१५)००
प्रश्न ज्योतिष शास्त्र	२५ ००
भृगु गुप्त प्रश्नोत्तरी	२५)००
भृगु मूक प्रश्न दीपिका	[illegible])००
भृगु मूक प्रश्न शिरोमणि	२५)००
हनुमान ज्योतिष	१०)००

अंक ज्योतिष लाटरी	१०)००
अंक ज्योतिर्विज्ञान	१५)००
कलोद सट्टा	३१)००
लाटरी गाइड	३१)[illegible]०
सट्टे का कल्प-वृक्ष	४५)००

स्वर ज्योतिष

स्वर ज्योतिष शास्त्र	२५)२०
ज्ञान स्वरोदय	५)००
शिव स्वरोदय	१०)००
सम्पूर्ण स्वर विज्ञान	[illegible])००

मोहिनीविद्या	२०)००	दत्तात्रेय तंत्र	६)५०
काली उपासना	१७)००	वाञ्छाकल्पलता	८)००
गायत्री तंत्र	८)००	बगलोपासनपद्धति	८)००
तंत्रमहासाधना	१७)००	शारदातिलक	१७)००
षष्टसिद्धि	१७)००	रुद्रयामलतंत्र	८)००
लक्ष्मी सिद्धि	११)७५	महेश्वरीतंत्र	६)००
काली सिद्धि	२०)००	मंत्र और मातृकाओं का रहस्य	२६)००
मन्त्र से रोग निवारण	११)७५	काली तन्त्र	८)००
भृगुसंहिता	२६)००	मंत्र सिद्धि का उपाय	८)००
मंत्रसागर	२६)००	गुप्त साधनतंत्र	८)००
स्वरसिद्धि	८)५०	तंत्र महाविज्ञान (२ खंड)	४३)००
गायत्री महाविज्ञान (३ खण्डों में)	३०)००	हिप्नोटिज्म (सम्मोहन विद्या)	११)००
तंत्रसार भाषा	२६)००	यन्त्र महासिद्धि	११)००
शाक्तप्रमोद (संस्कृत) (तंत्र का दुर्लभ ग्रन्थ)	४८)००	योगसाधना, सिद्धि और ईश्वरी साक्षात्कार	३१)००
बृहद्स्तोत्ररत्नाकर (स्तोत्रों का अनूठा ग्रन्थ)	१७)००	संकल्प सिद्धि	६)००
		मन की अगाधशक्ति और स्वयं सूचना	२०)००
दुर्गार्चनपद्धति	२६)००	आपका भाग्यांक, अंगूठी	६)५०
दुर्गा उपासना	१७)००	संकट निवारक स्तोत्र मंत्र	६)००
सौंदर्य-लहरी	८)५०	श्रीयंत्रशक्ति, मंत्रशक्ति का रहस्य	६)००
उड्डीश तंत्र	७)५०	तंत्रसाधनासार	१७)००

२. मोहिनी विद्या, साधना और सिद्धि---दिन-रात की चिन्ता, भविष्यकालीन संकट आदि बातों के कारण मनुष्य का मन बिलकुल दुर्बल और पंगु बन गया है। ऐसी विषम परिस्थितियों में मन प्रसन्न रखकर उसे बलवान् कैसे बनाया जाय, लोगों पर प्रभाव डालकर उन्हें वश में कैसे किया जाय, संकट के समय मानसिक सन्तुलन कैसे साधा जाय, इच्छा शक्ति को असीम विकसित कर अपने संकल्प को कैसे सिद्ध किया जाय। इसका पूरा विवरण इस पुस्तक में आप पायेंगे।

३. हस्तरेखा दर्पण—इस पुस्तक की रचना अत्यन्त सरल भाषा में तथा ६८ महत्त्वपूर्ण आकृत्तियों के साथ की गई है। यह पुस्तक प्रकाशित होते ही बाम्बे एस्ट्रॉलाजिक सोसायटी ने हस्त सामुद्रिक विज्ञान में सर्वश्रेष्ठ योगदान इस प्रकार गौरान्वित कर इस पुस्तक को १५०० रु० का प्रथम पुरस्कार प्रदान किया।

४. संकल्प सिद्धि—इच्छित कार्य सफल करने के लिए मानस संकल्प विद्या, संकल्प सिद्धिदायक विद्युत मानस यन्त्र तथा उसका प्रयोग। त्रिकाल ज्ञान दर्शक, अन्जन, दर्पण, अंगूठियां आदि बनाने की विधि तथा उसमें इच्छित बातों दर्शन करने की गुप्त विद्या।

५. धन प्राप्ति के लिए प्रभावी देवी साधनाएं तथा व्रत—धन प्राप्ति के लिये मेरे परम आदरणीय गुरु से प्राप्त गुप्त एवं दुर्लभ साधनाओं को जुटाकर मैंने इस पुस्तक की रचना की है। इन सभी साधनाओं की परख अनुभव की कसौटी पर हो चुकी है। इस पुस्तक से हजारों लोग लाभ उठा चुके हैं।

६. आपका भाग्यांक, अंगूठी, रत्न और रंग—हर व्यक्ति का भाग्यांक (याने शुभांक) अलग-अलग होता है। विशिष्ट भाग्यांक का महत्त्व, वह व्यक्ति कौन-सी अंगूठी पहने, कौन-सा रत्न इस्तेमाल करे, किस रंग का वस्त्र पहने आदि का पूरा विवरण इस पुस्तक में दिया है। १५)००

७. श्रीयन्त्र शक्ति-मन्त्र शक्ति का रहस्य और उसकी अद्भुत् फलश्रुति—इस पुस्तक में अनेक गुप्त एवं दुर्लभ मन्त्र तथा यन्त्र दिये हुये हैं। श्रीयन्त्र, श्रीदत्तात्रेय यन्त्र, श्रीगणेश-यन्त्र, श्री व्यापार वृद्धि यन्त्र, श्रीधन प्राप्ति यन्त्र, शत्रुनाशकरण यंत्र, वशीकरण यंत्र, उसकी पाठविधि, फलश्रुति बताई गई हैं।

८. संकट निवारण करने वाले स्तोत्र और मन्त्र---इस पुस्तक में बहुत सारे स्तोत्र और मन्त्र एकत्र किये हैं। इसकी विधि सरल तथा अनुभव पूर्ण है। २५)००

९. प्रश्न ज्योतिष---आपके जीवन में समय-समय नीचे दिये हुए सवाल पैदा होते हैं जैसे कि अचानक संकट, नौकरी, बढ़ती (प्रमोशन), ब्याह, सन्तान प्राप्ति, धन लाभ, ऋण मुक्ति, शत्रु नाश, मुकद्दमे, बीमारी आदि और इन सब सवालों से आप घबरा जाते है। लेकिन इनसे छुटकारा पाने के लिये किसी ज्योतिष का दरवाजा खटखटाने की अब जरूरत नहीं। इस पुस्तक को पास रखिये और आप अपनी सारी कठिनाईयों से छुटकारा पाइये। गत पचास वर्षों से मैं इस प्रणाली से ही लोगों को मार्गदर्शन करता आया हूं। २५)००

१०. योगी अ. ल. भागवत जी की अमृतवाणी प्रथम खण्ड—इस पुस्तक में अ. ल. भागवत जी ने मानवी मन के चमत्कार, रमल विद्या का चमत्कार, धन प्राप्ति के लिये उपासना, पुत्र-प्राप्ति के लिये टोटका, प्राणायाम साधना, त्राटक साधना, परिवार सुख के लिये उपासना, उपासना पंचक निश्चित विचारों के नियम, साधकों द्वारा पूछे गये प्रश्न और उनका समाधान आदि विचार प्रकट है। ११)००

११. योगी अ. ल. भागवत जी की अमृतवाणी द्वितीय खण्ड—इस पुस्तक में अ. ल. भागवत जी ने योगसिद्धि, संकल्पसिद्धि, दूरदर्शनसिद्धि, मृत्यु पर विजय पाने की सिद्धि, अद्भुत, प्राणायाम, सहजसमाधि, सहविकल्प समाधी, जीवन मुक्ति की ओर, समाधि उपासना, मंत्र विद्या का रहस्य, यन्त्रविद्या का चमत्कार, तंत्रविद्या का चमत्कार, तंत्रविद्या का रहस्य और आपके लिये बहुत सारा मार्गदर्शन किया है। ११)००

१२. योग, साधना, सिद्धि और ईश्वरी चमत्कार—मेरी अजोड पुस्तक में मैंने ६८ साल तक जो भी साधनाएं की, मुझे जो अनुभव आये वे सब ग्रन्थित किये हैं मेरे गुरु द्वारा प्राप्त अनेक गुप्त एवं दुर्लभ प्राणायाम, न्यास, रोमानी साधना आदि मैंने इस पुस्तक में दी है इसमें दी गई उच्च-कोटि की गुप्त साधानाओं द्वारा आपकी इच्छा शक्ति प्रबल कैसे बनाई जाये, इसका पुरा विवरण आप पायेंगे। ३१)००

ज्योतिष्मती प्रकाशन, मथुरा

वायदे और तैयारी दोनों काम में सहायक

व्यापार-रत्न

लेखक : १) पं हरदेव त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य
२) पं. गोपेशकुमार ओझा M.A. L.L.B.

जिस ग्रंथ की पाठक प्रतीक्षा कर रहे थे उसका द्वितीय संस्करण प्रकाशित हो गया है। इसमें सोना चांदी, रुई, गुड़, ग्वार, मटर, सरसों तेल तिलहन, अलसी, शेयर, तांबा, लोहा, बारदाना आदि के सदैव के लिये तेजी-मंदी के शास्त्रीय नियम व कुछ उपाय और अपने अनुभव सरल भाषा में लिखे हैं।

जानकारी के लिये कुछ संकेत :

१ प्रत्येक वस्तु की दैनिक, साप्ताहिक, मासिक टक्केवार तेजी-मंदी निकालने की विधि व ग्रहों के योग

२. कुछ विशेष व्यक्तियों के इस लाइन के अनुभव और किस प्रकार वह लोग सफल हुए।

३. जन्मपत्री व राशिज्ञान से वायदे और तैयारी के काम में लाभ होगा या नहीं यदि होगा तो किस वस्तु से?

४. बार-बार असफल रहने वालों के लिये हमारी सलाह।

५. परेशानी दूर करने के लिये कुछ अनुभूत योग, यंत्र, मंत्र-जप आदि।

६. ग्रह स्थिति के अनुसार १२ संक्रांतियों का स्पष्ट फलादेश।

ऐसी ही और भी विशेषतायें हैं, पुस्तक का गुण है कि जहां यह ज्योतिषियों व ज्योतिष प्रेमियों के लिये उपयोगी है, वहां साधारण पढ़े-लिखे व्यापारी भी समझकर लाभ उठा सकते हैं।

पृष्ठ ३४० पक्की जिल्द
मूल्य ८०) डाक खर्च अलग

ज्योतिष-साहित्य

सरल और व्यावहारिक शैली में

उत्तर कालामृत (कवि कालिदास)	रु. २०
वर्षफल विचार	१५
केरलीय ज्योतिष	१५
भुवन दीपक	१५
चुने ज्योतिष योग	१५
भावार्थ रत्नाकर (रामानुजाचार्य)	१५
अनिष्ट ग्रह कारण और निवारण	१२
दशाफल रहस्य	१५
स्वप्न और शकुन	१०
हस्तपरीक्षा (विश्वप्रसिद्ध ज्योतिषीकीरो)	१०
अंक चमत्कार (कीरो)	१०
फलित सूत्र (बारह भावों का फल)	१०
ज्योतिष और रोग	१०
व्यवसाय का चुनाव और आपकी आर्थिक स्थिति, उदाहरणसहित	१०
मूक प्रश्न विचार	१०
भाव दीपिका	१०
गोचर विचार	१२
महिलायें और ज्योतिष	१०
रत्न परिचय	१०
चन्द्रकला नाड़ी	१०
एक मास में ज्योतिष सीखिए	१०
तंत्र शक्ति (डा. रुद्रदेव त्रिपाठी)	१२
मंत्र शक्ति "	१२
यंत्र शक्ति २ भाग "	२४
माहेश्वर तंत्र "	५
मंत्र विद्या (बड़ी पुस्तक)	६०

प्रसव-चिन्तामणी भा. टी.

आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ कृत

प्रत्येक व्यक्ति की यह जानने की इच्छा रहती है कि उसके यहाँ जन्म लेने वाला प्राणी पुत्र होगा या पुत्री इस पुस्तक में इस समस्या के समाधान की कई अनूठी विधियाँ हैं। व अन्य प्रश्नों का भी पूर्ण विवरण मिलेगा। संस्कृत श्लोक, हिन्दी अनुवाद व्याख्यासहित बड़ा आकार, सजिल्द मूल्य ४० रुपये

*** नष्ट-जातकम्** भा. टी.

आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ

जन्म कुंडली न होनेपर बनानेके कई प्रकार ४०

*** दैवज्ञ-वल्लभा** भा. टी.

आचार्य वराह मिहिर कृत

प्रश्न विषय की प्राचीन पुस्तक २५ रुपये

*** दाम्पत्य-सुख** (ज्योतिष के झरोखे से)

डा. सुखदेव चतुर्वेदी

वैवाहिक जीवन पर पूर्ण प्रकाश ४० रुपये

*** रत्न-प्रदीप GEMS**

डा. गौरीशंकर कपूर

रत्नों की जाँच परख व नये तथ्य अल्पमोली रत्नों की अपूर्व जानकारी ४० रुपये

*** प्रश्न-मार्ग** भा. टी.

तीन खण्डों में, पृष्ठ एक हजार दक्षिण भारत का फलित व प्रश्न ज्योतिष का प्रामाणिक और विश्वसनीय ग्रंथ १४५ रुपये

*** महामृत्युंजय** साधना एवं सिद्धि

डा. रुद्रदेव त्रिपाठी

भगवान शिव की आराधना पर विशेष घोर कष्ट से मुक्ति के लिये वरदान ४० रुपये

हिन्दी में सर्वप्रथम प्रकाशित पुस्तक

कीरो (CHEIRO) की हस्त-रेखाएं बोलती हैं

जी हां, यह सत्य है आपकी रेखाओं में सब कुछ है

संसार के प्रसिद्ध भविष्य वक्ता की हस्त रेखा पर यह श्रेष्ठ पुस्तक है, इसको समझने के लिए कुछ समय लगाइए। कुछ ही दिनों में आप किसी भी व्यक्ति का हाथ देखकर उसका भूत, व भविष्य, वर्तमान बतलाकर आश्चर्य चकित कर देंगे। विषय को भली भांति समझाने के लिए ३० सुन्दर चित्रों सहित सरल भाषा, आकार बड़ा, पृष्ठ २१६ मूल्य चालीस रुपये, डाक व्यय अलग अन्य ज्योतिष साहित्य (हिन्दी व अँग्रेजी) भी उपलब्ध।

पत्र व्यवहार करें:-वी० पी० से मंगाने की सुविधा का लाभ उठाइए।

अंक चमत्कार (ज्योतिष)

(कीरो Cheiro)

केवल जन्म तारीख से अपना, अपने परिवार का, मित्रों का, सम्बन्धियों का भविष्य स्वयं जानिये। मूल्य १०) रुपये

पुस्तकें डाक द्वारा वी. पी. से मंगायें, डाक खर्च अलग, मंगाने का पता :-

ज्योतिष्मती प्रकाशन, १०१ सहगलपुरा, मथुरा (उ० प्र०)

कम्प्यूटर द्वारा अपनी जन्म कुण्डली—एवम् वर्षफल बनवायें।

संक्षिप्त जन्म कुण्डली

इस कुण्डली में जन्म समय की ग्रह स्थिति लग्न राशि, सप्तांश, विंशोत्तरी महादशा तथा अन्तर दशा के विवरण होंगे। शुल्क ७१) रु० संक्षिप्त फलादेश सहित १०१) रु०

सप्त वर्गीय जन्म कुण्डली

इस कुण्डली में संक्षिप्त जन्म कुंडली के अतिरिक्त, सप्तवर्ग, (लग्न, राशि भाव होरा द्रेष्काण सप्तांश, नवांश, द्वादशांश त्रिशांश ग्रह स्पष्ट, भाव स्पष्ट और अष्टक वर्ग तथा विंशोतरी दशा-जिसमें महादशा, अंतरदशा व १० वर्षों की प्रत्यन्तर दशा होगी। शुल्क १२१) पूर्ण फलादेश सहित १७१) रु०

षोडश वर्गीय जन्म कुण्डली

इस कुण्डली में सप्त वर्गीय कुण्डली के अतिरिक्त षोडश वर्ग (जिसमें चतुर्थांश, पंचमांश, षष्टांश, अष्टमांश एकादशांश षोडशांश, षष्टशांश तथा नाड़ीय मांश तथा २० वर्षों की प्रत्यन्तर दशा आदि सभी होगी। शुल्क १५१) विस्तृत पूर्णफलादेश सहित २५१) रु०

वर्ष फल—

आने वाले आगामी वर्ष का आपका फलादेश तथा अगले वर्ष में आपका भविष्य क्या होगा सम्पूर्ण जानकारी एक वर्ष की दी जाती है जिससे आपको अपने वर्ष की जानकारी हो सके। शुल्क १०१) रु०

मंगाने का पता—

पूजा ज्योतिष कार्यालय (कुण्डली-विभाग)
४३२ चूना कंकड़, होली गली, मथुरा।२८१-००१

पूजा-यंत्र-भण्डार

पूजा पाठ के लिए शुद्ध

ताम्रपत्र यंत्र अनुभव सिद्ध शास्त्रीय आधार पर विशेष रूप से निर्मित देवी-देवताओं के सुन्दर चित्र से अंकित हमारे यहाँ उपलब्ध है:—

श्री यंत्र।	श्री महालक्ष्मी यंत्र।
श्री बगलामुखी यंत्र।	श्री कुबेर यंत्र।
श्री महाकाली यंत्र।	श्री हनुमत् यंत्र।
श्री दुर्गा यंत्र।	श्री इष्ट सिद्धि यंत्र।
श्री गायत्री यंत्र।	भूत निवारक यंत्र।
श्री गणपति यंत्र।	प्रेतव्याधि निवारक यंत्र।
इन्द्राक्षी कवच यंत्र।	वशीकरण यंत्र।
श्री सूर्य यंत्र।	श्री सिद्ध बीसा यंत्र।
श्री शनि यंत्र।	राहु यंत्र, केतु यंत्र।

उपरोक्त यंत्र शुद्ध किये ताम्र पर बने हैं। मूल्य १०१) प्रत्येक का मनीआर्डर द्वारा अग्रिम भेजें। चांदी पत्र पर बने यंत्र विशेष अनुरोध पर निर्मित किये जाते हैं। आपको रजिस्ट्री द्वारा भेज दिया जावेगा—

मंगाने का पता—

पूजा ज्योतिष कार्यालय (यंत्र-विभाग)
४३२ चूना कंकड़, होली गली, मथुरा।२८१-००१

राशिरत्न-उपरत्न

अशांत वातावरण से शांत वातावरण में आने के लिए व आ[illegible] उन्नति के लिए विख्यात ज्योतिषियों द्वारा आपके ग्रहों की स्थिति का विचार एवं सुविज्ञ जौहरी के परामर्श से सही ग्रह-रत्नों का चयन अ[illegible] आने वाले समय को आनन्दकारी व मंगलमय बनाने में सहायक [illegible] होगा।

राशियों के अनुकूल:—

चाँदी की नवरत्न की अगूँठी, पेण्डल, हर प्रकार के रत्न जैसे—पन्[illegible] माणिक, मूंगा, पुखराज, लहसुनिया, गोमेद, मोती, नीलम, हीरा, एवं [illegible] प्रकार की मालायें—रुद्राक्ष, स्फटिक, चन्दन, तुलसी एवं वैजयन्ती तथा स[illegible] प्रकार के रुद्राक्ष, दक्षिणावर्ती शंख, विद्वान ज्योतिषियों से अनुभव सि[illegible] प्रमाणित कर उचित मूल्य पर हमारे यहाँ उपलब्ध हैं।

वी.पी. डाक द्वारा भेजा जाता है।

मंगाने का पता:—

पूजा ज्योतिष कार्यालय, (रत्न-विभाग)
४३२ चूना कंकड़, होली गली, मथुरा। २८१-००१

नोट— कुण्डली बनवाने के लिए अपना (१) नाम (२) पिताजी का नाम (३) जन्म तिथि (४) स्थान (५) निश्चित जन्म समय-प्रातः-सायं-रात्रि। स्पष्ट लिखकर शुल्क के मनीआर्डर सहित लिख भेजें। आपको कुण्डली रजिस्टर्ड डाक द्वारा आपके पते पर भेज दी जावेगी। हमारे कार्यालय में कुण्डली व[illegible] फल कम्प्यूटर के अतिरिक्त विशिष्ट ज्योतिर्विद विद्वानों द्वारा आंकलन कर प्रेषित की जाती है।

(✻ ज्योतिष की अनुपम पुस्तकें ✻)

सामुद्रिक शास्त्र

[लेखक:—श्री बसन्तलाल व्यास]

पुस्तक में हस्तरेखा के सभी अङ्गों का साङ्गोपांग वर्णन १०० से अधिक सुन्दर चित्रों में किया है। रेखाओं की सत्यता के प्रमाण में भारत के प्रमुख व्यक्तियों के हाथ के चित्र भी दिये गये हैं। मनुष्य जीवन में रेखाओं द्वारा निश्चित की गई घटनाओं की ओर से असावधान रहकर हम क्यों अपनी अवनति का स्वयं कारण बन जाते है इन विषयों पर पूर्ण प्रकाश डाला गया है। इस पुस्तक से मनुष्य जीवन की प्रत्येक घटना का पता रेखाओं द्वारा आसानी से लग सकता है। ग्लेज कागज पर छपी-४०० पृष्ठ मू० केवल २०) रु०

त्रिकालज्ञ ज्योतिष

ज्योतिष विद्या की यह अनुपम पुस्तक है भाषा ग्रन्थों में ज्योतिष का यह निराला ग्रन्थ है हमारा ऐसा विश्वास है कि ज्योतिष में ऐसी बहुत कम किताबें छपी हैं। लेखक ने इसमें ज्योतिष के बड़े-बड़े ग्रन्थों का सार खींचकर रख दिया है. लगभग ६०० पृष्ठ के ग्रन्थ का मूल्य ३०) रु०।

ज्योतिष सर्व संग्रह भाषा टीका

[पं० रामस्वरूप मेरठ निवासी द्वारा लिखित]

यह ज्योतिष विद्या की अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है। भूत, भविष्य, वर्तमान तथा किस ग्रह का किस नक्षत्र पर शुभ अशुभ प्रभाव होगा। यह सब इस पुस्तक में भली प्रकार सरलतापूर्वक बतलाया गया है। मूल्य १५) रु०।

मुहूर्त चिन्तामणि भाषा टीका

किसी भी शुभ कार्य के प्रारम्भ में जैसे—गृह प्रवेश, यज्ञोपवीत विवाह आदि के अवसर पर बार-बार पण्डितों के पास दौड़ना पड़ता है। यदि यह पुस्तक आपके पास है तो छोटे-मोटे आवश्यकीय काम आप स्वयं कर सकते हैं हर घर में इस पुस्तक का होना आवश्यक है। मूल्य १८) रु०।

वृहद ज्योतिषसार भाषा टीका

यह ज्योतिष विद्या की अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है। भूत, भविष्य वर्तमान तथा किस ग्रह का किस नक्षत्र पर शुभ अशुभ प्रभाव होगा। यह सब इस पुस्तक में भली प्रकार सरलतापूर्वक बतलाया गया है। मूल्य ग्लेज कागज २५) रु०।

जन्म पत्री फार्म

जन्मपत्री बनाने के लिए सुन्दर ग्लेज कागज पर छपे हुए सुन्दर अवतारों के चित्रों से सुसज्जित फार्म छपे है। तीन कागज का सैट है। दाम ३०) रु० सैकड़ा।

धार्मिक व ज्योतिष की पुस्तकें

प्रेमसागर	१६)	शीघ्रबोध भा. टी.	१०)
दुर्गासप्तशती भा. टी.	१६)	जातकाभरण भा. टी.	१२)
गरुड़ पुराण भा. टी.	१६)	जातकालंकार भा. टी.	१०)५०
पुरुषोत्तम मास भा. टी.	१६)	भावकौतूहल	१०)००
एकादशी भा. टी.	१६)	चाणक्यनीति भा. टी.	८)५०
माघ माहात्म्य भा. टी.	१६)	विचारचन्द्रोदय पीताम्बरी टीका	१६)५०
कार्तिक माहात्म्य भा. टी.	१६)	संसार के महान साहित्यिक	८)
वैशाख माहात्म्य भा. टी.	१६)	कम्पाउण्डरी शिक्षा	१६)
उपनयन पद्धति मेरठ	८)	इजेक्शन गाइड	१६)
हवन पद्धति मेरठ	८)	बिक्री बढ़ाने के १२६ उपाय	१०)
विवाह पद्धति मेरठ	८)५०	पिंगल प्रकाश बड़ा	१२)
रुद्री ग्लेज	८)५०	मोटर साइकिलस्कूटर गाइड	१६)
नित्यकर्म संग्रह	६)	असली रसराज सुन्दर बड़ा भाषा टीका ग्लेज, बम्बई छापा	४०)
सप्तवार व्रतकथा	४)५०	अमृतसागर	४०)
सोमवार व्रतकथा	२)२५	इलाजुल गुर्बा	२०)
मंगलवार व्रतकथा	२)२५	दीनजन चिकित्सा	२०)
बुधवार व्रतकथा	२)२५	बूंटी प्रचार वैद्यक	१२)
वृहस्पतिवार व्रतकथा	२)२५		
शुक्रवार व्रतकथा	२)२५		
शनिवार व्रतकथा	२)२५		

वृहद रसराज सुन्दर भाषा टीका

यह वैद्यक ग्रन्थ मथुरा निवासी प्रसिद्ध वैद्य श्री चौबे दत्तरामजी द्वारा अनेक प्रामाणिक ग्रन्थों से संग्रह किया गया है। तथा इसकी टीका भी बड़े सुन्दर ढङ्ग पर उन्हीं द्वारा की गई है। इस ग्रन्थ में अनेक प्रकार के रस, भस्में बनाने तथा उनके गुणावगुण लिखे गये हैं तथा किन २ बीमारियों पर लाभप्रद है यह सब दिखाया गया है। वैद्यों के बड़े काम का ग्रन्थ है। अवश्य मंगाना चाहिये। मूल्य ४०) रु०।

भृगु संहिता पद्धति

इस पुस्तक के द्वारा संसार के प्रत्येक स्त्री पुरुष की जन्म कुण्डलियों के समस्त हालात व एक-एक ग्रह का चमत्कारिक विभिन्न फलादेश समस्त जीवन और भाग्य के सम्बन्ध में दर्पण की भाँति सरल हिन्दी भाषा में बगैर ज्योतिष सीखे ही आप स्वयं मालूम कर सकते हैं और उन गलत जन्म कुण्डलियों को आप जरासे इशारे में ठीक कर सकते है जो बच्चों की पैदायश के समय की गड़बड़ व घड़ियों की अशुद्धि के कारण गलत बन गई हैं। पृष्ठ संख्या १०००, ५०० कुण्डलियाँ मूल्य ४०) रु०।

रसराज महोदधि

यह वैद्यक ग्रन्थ सरल भाषा में लिखा गया है पुस्तक पाँच भागों में सम्पूर्ण की गई है, एड़ी से चोटी तक साध्य असाध्य प्रायः सभी रोगों की चिकित्सा बड़ी सरल भाषा में लिखी है हर घर में इस ग्रन्थ का रहना जरूरी है, घर में यह ग्रन्थ अच्छे वैद्य का काम देता है। मूल्य ४०) रु०।

प्रसिद्ध लेखक पं० विशालमणि उपाध्याय की प्रसिद्ध कर्मकाण्ड की पुस्तकें।

पूजाभास्कर—इसमें सभी देवताओं की पूजा, पंचोपचार, षोडशोपचार, वैदिक व पौराणिक विधि से भली प्रकार समझाया गया है तथा अन्याय नित्य नैमित्तिक स्तोत्रपाठ, यज्ञ, दान आदि आदि आवश्यक विषय लिखे हैं, सम्पूर्ण रुद्री सहित ग्लेज कागज गुटकासाइज ३५० पृष्ठ मूल्य १६) रु०।

संस्कारपद्धति—इस पुस्तक में सम्पूर्ण षोडश संस्कार उनका रहस्य, विधि, क्रिया, टिप्पणी सहित दिये हैं। प्रत्येक विद्वान पंडित व गृहस्थ के यहाँ यह पुस्तक अवश्य होनी चाहिए। मूल्य केवल २५) रु०।

कर्मकाण्डभास्कर—इस पुस्तक में सम्पूर्ण कर्मकाण्ड, उनकी विधियाँ, देव पूजा, सम्पूर्ण संस्कार, जप विधियों सहित विस्तृत रूप में दिये हैं। प्रत्येक पंडित जो संस्कार कराते हैं उनके पास इसका होना आवश्यक है। ग्लेज कागज ६०० पृष्ठ मूल्य केवल ३५) रु०।

नोट—सभी पुस्तकों का मूल्य डाक व्यय रहित है। आप केवल एक पोस्टकार्ड पर पुस्तकें लिखकर व मनीआर्डर द्वारा आधी रकम पेशगी अवश्य भेज दें। आपको घर बैठे ही पुस्तकें वी. पी. द्वारा प्राप्त हो जावेंगी।

मंगाने का पता :
ज्योतिषमती प्रकाशन मथुरा

सबके लिए उपयोगी पुस्तकें

सम्भोग आनन्द विज्ञान	१२.००
कामवासना ज्ञान	१०.००
सम्भोग सम्राट बनाने वाली औषधियाँ	७.००
वीर्य व मर्दाना बाँझपन चिकित्सा	४.००
शुक्रकीट एवं वीर्य वृद्धि विज्ञान	२.००
कामवासना उत्पन्न करने वाली औषधियाँ	४.००
पुरुष गुप्त रोग चिकित्सा	१२.००
होमियो० पुरुष गुप्त रोग चिकित्सा	२.५०
स्वप्नदोष एवं शीघ्रपतन चिकित्सा	१.५०
एलोपैथिक मेडिकल प्रैक्टिशनर	३२.००
एलो० पशु चिकित्सा	२२.००
माडर्न पेटेण्ट ड्रग्ज़	२८.००
हार्ट अटैक व हृदय रोग	१०.००
मेडिकल इमर जैन्सी	१५.००
बाल रोग चिकित्सा	२२.००
माडर्न इन्जेक्शन गाईड	२०.००
प्रैस्क्रिप्शन बुक	१२.००
माडर्न चर्म रोग चिकि.	१५.००
जड़ी-बूटियों के चमत्कार तथा साधु सन्यासियों की दवायें	८.००
माईनर सर्जरी	२०.००
माडर्न एलोपैथिक मेटेरिया मेडिका	१६.००
एक हजार यादगारी दवायें	८.००
रत्न सागर व रत्न चिकित्सा	१०.००
माडर्नब्लड प्रैशर गाईड	५.००
बुढ़ापे के रोग	१०.००
एलो. पेटेण्ट चिकित्सा	८.५०
माडर्न डायग्नोसिस	१२.००
विटामिन थैरापी	५.००
राजयक्ष्मा चिकित्सा	७.००
ज्वर चिकित्सा	५.५०
विष चिकित्सा	७.००
संक्रामक रोगों की चिकि.	३.००
यकृत और प्लीहा के रोग	३.००
एलर्जी रिएक्शन करने वाली औषधियों की चिकित्सा	३.००
ल्यूकोरिया चिकित्सा	२.००
मृगी चिकित्सा	३.००
वृक्क और मूत्राशय के रोग	२.५०
जलोदर चिकित्सा	३.००
प्रदर रोग चिकित्सा	२.००
हैजा चिकित्सा	२.५०
एम्पीसिलीन चिकित्सा	२.५०
पक्षाघात चिकित्सा	२.५०
एलोपैथिक मिक्सचर्ज	३.००
मूर्च्छा चिकित्सा	४.५०
पेनीसिलीन चिकित्सा	३.००
हर्निया चिकित्सा	१.५०
सूखा रोग चिकित्सा	५.००
अतिसार चिकित्सा	४.००
सुजाक चिकित्सा	३.००
कैथेटर गाईड	१.००
कुष्ठ रोग चिकित्सा	४.००
आई डाक्टर	२.५०
श्वास रोग चिकित्सा	३.५०
गैस ट्रबल	२.००
ब्लड व ग्लुकोज चढ़ाने की विधियाँ	२.००
खाँसी चिकित्सा	२.००
माडर्न स्टेथस्कोप गाईड	२.००
मोतियाबिन्द बिना ऑपरेशन दूर करने की चिकित्सा	३.२५
मधुमेह चिकित्सा	१.५०
नाड़ी परीक्षा	२.७५
टिटेनस चिकित्सा	५.००
पोलियो चिकित्सा	१.५०
मरहमों द्वारा चिकित्सा	४.००
ग्लैक्सो थैराप्यूटिक्स	१.५०
एम. बी. की औषधियाँ	२.००
हिस्टेरिया चिकित्सा	५.००
मलेरिया चिकित्सा	५.००
सिर दर्द चिकित्सा	५.००
एण्टी बायोटिक ड्रग्ज	५.००
पाचन संस्थान के रोग	४.००
संसार के वैद्यों हकीमों के गुप्त अनुभूत योग	७.००
प्रैक्टीस, रोगी और आय बढ़ाने के रहस्य	५.००
घाव चिकित्सा	७.००
बच्चों के रोगों का निरीक्षण	२.००
बालों के रोग	६.००
मद्यपान छुड़ाना अर्थात् शराबियों की चिकित्सा	५.००
पाकेट प्रैस्क्राईबर	१.७५
कब्ज चिकित्सा	३.००
कम्बीनेशन थैरापी	३.००
हथेली पर सरसों जमाने वाली दवायें	३.००
न्यूमोनिया चिकित्सा	१.२५
पाकेट इन्जेक्शन गाईड	४.००
मेडिकल सर्टिफिकेट बुक	५.००
फिटनैस सर्टिफिके बुक	५.००
साँप, बिच्छू और विषैले जन्तुओं के काटे की चिकि.	२.५०
एबौर्शन गाईड	२५.००
लेडी डॉक्टर	१२.००
होमियो. लेडी डॉ०	२.००
लड़का-लड़की इच्छानुसार उत्पन्न करने के गुप्त भेद	४.००
बाँझपन चिकित्सा	३.००
स्तन सौंदर्य एवं स्तन रोग चिकित्सा	१२.००
गर्भपात व गर्भ निरोध	४.००
गर्भपात चिकित्सा	२.५०
चुम्बक चिकित्सा	७.००
डाक्टर लहसुन	३.००
त्रिफला के चमत्कार	३.५०
सरल देहाती योग	२.००
डॉक्टर प्याज	२.५०
मूत्र चिकित्सा	२.५०
पैसा-पैसा की सफल दवायें	७.००
प्राकृतिक चिकित्सा के चमत्कार	३.००
बिजली चिकित्सा	१.००
२००० आश्चर्यजनक दवायें	७.००
होमियो. मिक्सचर्ज	४.५०
बायोकैमिक जेबी दवाखाना	२.००
होमियो पाकेट गाई	३.००
होमियो. इन्जेक्शन गाईड	३.००
जर्मन डॉक्टरी	३.५०
होमियो. बाल रोग चि.	१.७५
बायोकैमिक मिश्रण	१.००

नोट :

वी० पी० पी० द्वारा भेजने का खर्चा ग्राहक को देना होगा।



मेडिकल हाउस ३६५६ (एम) कुतब रोड, देहली-११०००६

"अब जन्मपत्री पुस्तक रूप में"

जन्म अक्षर पत्रिका

जन्मपत्री (टेवा) पुस्तक रूप में

साइज : ५×७ सम   पृष्ठ संख्या : ८

मूल्य : १·६०   डाक व्यय अलग

प्लास्टिक कवर : २·६०

जन्माक्षर पत्रिका

पुस्तक के मुख पृष्ठ पर गणपतिजी का बहुरङ्गी चित्र है। जन्मपत्री (टेवा) पुस्तक रूप में एक व्यक्ति की जन्मपत्री आसानी से बनाई जा सकती हैं। आवश्यक विवरण के साथ जन्म लग्न कुण्डली तथा चन्द्र लग्न कुण्डली दिये हैं। दस पृष्ठों पर गणित व फलित आदि लिखा जा सकता है। बड़ी जन्मपत्री भी सुगमता से बनाई जा सकती है। जेब में रखने योग्य है।

साइज : ४×६½ सम   पृष्ठ संख्या : १६

मूल्य : १·२५   डाक व्यय अलग   प्लास्टिक कवर : १·७५

जन्मांग पत्रिका :

मुख पृष्ठ पर गणेशजी महाराज का रंगीन नयनाभिराम चित्र से सुशोभित इस पुस्तक में किसी एक व्यक्ति के जन्म का प्रारम्भिक आवश्यक विवरण, सूर्यादि, स्पष्टग्रह, जन्म लग्न, चन्द्र लग्न, विंशोत्तरी-महादशा चक्र, दशा—अन्तर्दशा के कोष्टक तथा फलित लिखने के लिये तीन पृष्ठ दिये गये हैं।

कम काम और यजमान से अधिक पारिश्रमिक प्राप्ति चाहने वालों के लिये अच्छी पुस्तक है।

साइज : ६½×९½ सम   पृष्ठ संख्या : १२

मूल्य : २·००   डाय व्यय अलग

षडवर्गीय जन्मपत्रिका :

इस पुस्तक में जन्म लग्न, चन्द्र लग्न, सूर्यस्पष्टग्रह, द्वादश भाव, चलित भाव, होरा चक्र, द्रेष्काण, सप्तमांश, द्वादशांश, पंचधामैत्री, दशा-अन्तर्दशा के कोष्टक तथा फलित लिखने के लिये पृष्ठ दिये गये हैं। पुस्तक विशेष मोटे-चिकने कागज से तैयार कराई गई है।

साइज : ६½×९½ सम   पृष्ठ संख्या : २८

मूल्य : ६·००   डाक व्यय अलग

प्लास्टिक कवर : ५·००

सप्तवर्गीय जन्मपत्रिका :

षडवर्गीय जन्मपत्रिका में दी गई सभी विशेषताओं के अतिरिक्त नैसर्गिक चक्र, तात्कालिक मैत्री चक्र सप्तवर्गीय कोष्टक आदि एवम् फलादेश लिखने के लिये छः पृष्ठ दिये गये हैं।

विशेष मोटे-चिकने कागज से पुस्तक तैयार की गई है।

साइज : ६½×९½ सम.   पृष्ठ संख्या : ४०

मूल्य : ५·००   डाक व्यय अलग

प्लास्टिक कवर : ६·००

बढ़िया चिकने-मोटे कागज़ पर छपे टेवा, जन्मपत्री, वर्षफल,

"अब जन्मपत्री पुस्तक रूप में"

जन्म अक्षर पत्रिका

जन्मपत्री (टेवा) पुस्तक रूप में

साइज : ५×७ सम पृष्ठ संख्या : ८

मूल्य : १'७० डाक व्यय अलग

प्लास्टिक कवर : २'५०

जन्माक्षर पत्रिका

पुस्तक के मुख पृष्ठ पर गणपतिजी का बहुरङ्गी चित्र है। जन्मपत्री (टेवा) पुस्तक रूप में एक व्यक्ति की जन्मपत्री आसानी से बनाई जा सकती हैं। आवश्यक विवरण के साथ जन्म लग्न कुण्डली तथा चन्द्र लग्न कुण्डली दिये हैं। दस पृष्ठों पर गणित व फलित आदि लिखा जा सकता है। बड़ी जन्मपत्री भी सुगमता से बनाई जा सकती है। जेब में रखने योग्य है।

साइज : ४×६½ सम पृष्ठ संख्या : १६

मूल्य : १'२५ डाक व्यय अलग प्लास्टिक कवर : १'७५

जन्मांग पत्रिका :

मुख पृष्ठ पर गणेशजी महाराज का रंगीन नयनाभिराम चित्र से सुशोभित इस पुस्तक में किसी एक व्यक्ति के जन्म का प्रारम्भिक आवश्यक विवरण, सूर्यादि, स्पष्टग्रह, जन्म लग्न, चन्द्र लग्न, विंशोत्तरी-महादशा चक्र, दशा—अन्तर्दशा के कोष्टक तथा फलित लिखने के लिये तीन पृष्ठ दिये गये हैं।

कम काम और यजमान से अधिक पारिश्रमिक प्राप्ति चाहने वालों के लिये अच्छी पुस्तक है।

साइज : ६½×९½ सम पृष्ठ संख्या : १२

मूल्य : २'०० डाय व्यय अलग

प्लास्टिक कवर : [illegible]'००

षडवर्गीय जन्मपत्रिका :

इस पुस्तक में जन्म लग्न, चन्द्र लग्न, सूर्यस्पष्टग्रह, द्वादश भाव, चलित भाव, होरा चक्र, द्रेष्काण, सप्तमांश, द्वादशांश, पंचधामैत्री, दशा-अन्तर्दशा के कोष्टक तथा फलित लिखने के लिये पृष्ठ दिये गये हैं। पुस्तक विशेष मोटे-चिकने कागज से तैयार कराई गई है।

साइज : ६½×९½ सम पृष्ठ संख्या : २८

मूल्य : [illegible] ०० डाक व्यय अलग

प्लास्टिक कवर : ४'००

सप्तवर्गीय जन्मपत्रिका :

षडवर्गीय जन्मपत्रिका में दी गई सभी विशेषताओं के अतिरिक्त नैसर्गिक चक्र, तात्कालिक मैत्री चक्र सप्तवर्गीय कोष्टक आदि एवम् फलादेश लिखने के लिये छः पृष्ठ दिये गये हैं।

विशेष मोटे-चिकने कागज से पुस्तक तैयार की गई है।

साइज : ६½×९½ सम. पृष्ठ संख्या : ४०

मूल्य : ४'०० डाक व्यय अलग

प्लास्टिक कवर : ६, ००

बढ़िया चिकने-मोटे कागज़ पर छपे टेवा, जन्मपत्री, वर्षफल, विवाह चिट्ठी तथा विवाह लग्न फार्म हर समय तैयार मिलते हैं।

पता—नाथ पुस्तक भण्डार, 194, दरीबा कलां, दिल्ली-110006



देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली द्वारा प्रकाशित

सिद्धियां प्रदान कराने वाली

91 (इक्यानवे) पुस्तकों का सैट



आज की भांति सैकड़ों-हजारों वर्ष पूर्व माइक्रोस्कोप, टेलिस्कोप रॉडार डाइनामाइट, सबमैरिनशिप तथा हाइड्रोजन बम आदि नहीं थे। और यदि किसी के पास थे भी, तो उनका नाम व आकार-प्रकार भिन्न था। हमारे प्राचीन ऋषियों मुनियों ने अपने तपोबल के आधार पर यन्त्र-मन्त्र एवं तन्त्र विद्या द्वारा आकाश से पाताल तक जल, वायु, प्रकाश, नक्षत्र, पशु, पक्षी, जड़ी बूटियों एवं मानव शरीर के सूक्ष्मतम गुप्त रहस्यों का ज्ञान विज्ञान मनुष्य को अजर, अमर एवं अजेय बनाने के लिए निस्वार्थ भाव से प्रदान किया था जो विधि-विधान पूर्वक प्रयुक्त करने से आज भी विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरता है या कामना सिद्धि करने में समर्थ है। संसार में कुछ भी असंभव नहीं है। श्रद्धालु, आत्मविश्वासी, दृढ़निश्चयी एवं उद्यमशील व्यक्ति असंभव को भी संभव कर दिखाते हैं। इसमें हमारी निम्नलिखित पुस्तकें अत्यन्त सहायक सिद्ध होती हैं। परन्तु सिद्धि कार्यकर्त्ता पर निर्भर है।

नाम पुस्तक	मूल्य	नाम पुस्तक	मूल्य	नाम पुस्तक	मूल्य
1. पुस्तक सिद्धि टोना यन्त्र	21-00	32. रावण सिद्धि	21-00	62. चमत्कारी जड़ी-बूटी प्रकाश	21-00
2. लघु मन्त्र महोदधि	21-00	33. हनुमान पूजा सिद्धि	21-00	63. रत्न दीपिका (रत्न प्रदीप)	21-00
3. भाग्य की कसौटी	21-00	34. हनुमान शक्ति	21-00	64. यन्त्र सिद्धि	21-00
4. सिद्धिदाता यन्त्र साधना	21-00	35. हनुमान करामात	21-00	65. तन्त्र-सिद्धि	21-00
5. सिद्ध रुद्राक्ष प्रयोग विधि	21-00	36. काला इल्म	21-00	66. मन्त्र सिद्धि	21-00
6. स्वास्तिक शक्ति ॐ रहस्य	21-00	37. सच्चा फालनामा	21-00	67. यन्त्र विज्ञान	21-00
7. बगला सिद्धि	21-00	38. प्राचीन डामर तन्त्र	21-00	68. तन्त्र विज्ञान	21-00
8. शिवमहिमा	21-00	39. इच्छापूरक सिद्धियां	21-00	69. मन्त्र विज्ञान	21-00
9. लक्ष्मी सिद्धि	21-00	40. रत्न परिचय	21-00	70. शिव पार्वती तन्त्र शास्त्र	21-00
10. कामाख्या सिद्धि	21-00	41. शिव-पूजा पद्धति	21-00	71. शिव पार्वती सम्वाद	21-00
11. ऋद्धि सिद्धि मंत्रावली	21-00	42. शनि ढैया, साढ़े साती	21-00	72. मन्त्रों का आनन्द	21-00
12. हमजाद (छायापुरुष सिद्धि)	21-00	43. मृतक आत्माओं से बातचीत	21-00	73. यन्त्र विद्या	21-00
13. योगिनी सिद्धि	21-00	44. गणेश सिद्धि	21-00	74. तन्त्र विद्या	21-00
14. सचित्र भैरव सिद्धि	21-00	45. शिव सिद्धि	21-00	75. मन्त्र विद्या	21-00
15. हनुमान-सिद्धि	21-00	46. विष्णु सिद्धि	21-00	76. यन्त्र सागर	21-00
16. महाविद्या सिद्धि	21-00	47. अलौकिक शक्तियां	21-00	77. तन्त्र सागर	21-00
17. यन्त्र शक्ति विज्ञान	21-00	48. शिव-पार्वती विवाह	21-00	78. मन्त्र सागर	21-00
18. तन्त्र शक्ति विज्ञान	21-00	49. शिवलीलामृत	21-00	79. दुर्गा देवी सिद्धि	21-00
19. मन्त्र शक्ति विज्ञान	21-00	50. सरस्वती सिद्धि (शक्ति)	21-00	80. मन्त्र शक्ति, चमत्कार	21-00
20. मोहनी विद्या सिद्धि	21-00	51. गायत्री सिद्धि (शक्ति)	21-00	81. यन्त्र चमत्कार	21-00
21. बटुक भैरव सिद्धि	21-00	52. पृथ्वी में गढ़ा धन कहां ?	21-00	82. तन्त्र चमत्कार	21-00
22. महाविकराल भैरव सिद्धि	21-00	53. पौराणिक मन्त्रावली	21-00	83. मन्त्र चमत्कार	21-00
23. किलकारी भैरव सिद्धि	21-00	54. तान्त्रिक सिद्धि	21-00	84. श्मशान साधना	21-00
24. प्रेतात्मा, डाकिनी ओझा	21-00	55. आकर्षण शक्तियां	21-00	85. अष्ट सिद्धियां	21-00
25. भूत-प्रेत, जादू-टोना मंतर-मूठ	21-00	56. सर्वदेवी-देवता सिद्धि साधन	21-00	86. शक्तिशाली यंत्र-मंत्र-तंत्रावली	21-00
26. स्त्री-पुरुष वशीकरण सिद्धि	21-00	57. सर्व मनोकामना पूर्ण यन्त्र	21-00	87. भूत सिद्धि	21-00
27. शिव मंत्रावली तन्त्रावली	21-00	58. हिप्नोटिज्म मेस्मे., शक्तिचक्र	21-00	88. घंटाकर्ण महोदधि	21-00
28. देवी-देवता पूजन यन्त्र	21-00	59. अमलियाते तसखीरें कलूब	21-00	89. नवनाथ चौरासी सिद्धियां	21-00
29. काली तन्त्र	21-00	60. अमलियाते तसखीरें महबूब	21-00	90. नवनिधि मन्त्र सिद्धि	21-00
30. इल्म नजूम	21-00	61. रामायण मन्त्रावली	21-00	91. सोऽहं और प्राणायाम	21-00
31. महाकाली सिद्धि	21-00				

कोई भी 3 पुस्तकें लेने पर 10/- की रियायत अर्थात् 63 + 7 डा. खर्च = 70/- के बजाय 60/- की वी.पी. भेजी जायेगी।
5 पुस्तकें लेने पर 20/- की रियायत अर्थात् 105 + 10 डा. खर्च = 115/- के बजाय 95/- की वी.पी. भेजी जायेगी।

देहाती पुस्तक भण्डार चावड़ी बाजार दिल्ली 6
टेलीफोन-261030

Jai Hind Fine Art Offset Printers, Mat